



THE  
AMARA-KOSHA  
OF  
SHRI AMARA SINHA.

— O —

EDITED WITH

*The Hindi translation known as 'Dharā', and copious social,  
historical, religious, botanical and literary notes,*

BY

SHRI MANNA LAL 'ABHIMANYU'. M. A.

PUBLISHED BY

**MASTER KHELARILAL & SONS.,**

SANSKRIT BOOK DEPOT,

KACHAURI GALI, BENARES CITY

[ *All Rights Reserved for ever by the Publisher* ]

Publisher—J. N. Yadava, Proprietor, Master Khelarilal & Sons,  
Sanskrit Book Depot, Kachaurigali, Benares City

Printer—Bajrang Ball, Visharad,  
Shri Sitaram Press, Talipadoni, Benares City.

‘मास्टर’ मणिमालायाः पञ्चाशीतिसंख्यको मणिः ( कोपविभागे २ )

श्रीमदमरसिंहप्रणीतः

सुप्रसन्नवृत्तः ॥

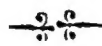


प्राचीनभारतीयेतिहास-मुद्रा-लिपिविशारद-मास्टर-  
प्रिण्टिङ्गवर्कसाभिधमुद्रणागाराधिप-

श्रीमन्नालाल ‘अभिमन्यु’ एम० ए०

इत्यनेन विरचितया ‘धराख्य’ हिन्दीटीकया

संवलितः ।



तेनैव

चोपयुक्तटिप्पण्यादिभिः समलङ्कितः ।



स च

काशीस्थ ‘संस्कृत-बुकडिपो’ इत्यस्याधिपैः

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐराड सन्स

इत्येतैः

श्री सीताराम मुद्रणालये मुद्रापयित्वा  
प्रकाशितः ।



मूल्य राजसंस्करणस्य ३) }

सम्बत् १९९४

{ मूल्यं साधारणसंस्करणस्य २)





## सम्वन्ध ।

संसार की भाषाओं का क्रमिक विकास उनके कोष ग्रन्थों पर निर्भर करता है। जो भाषा जितनी प्रचलित होगी, जितनी प्राचीन होगी, जितनी तीव्रगति से सभ्यता की गगनचुम्बो अट्टालिका पर पहुँची हुई होगी और अन्य राष्ट्रों के साथ जिस भाषा का सम्पर्क मैत्रीपूर्ण रहेगा उसका कोष भरा-पूरा रहेगा, उसका सौभाग्य अचल रहेगा और उसमें नित्यशः नवीन शब्दों की उत्पत्ति भी होती रहेगी। सभ्यता का विकास यन्त्रादि के आविर्भाव पर अवलम्बित है। राष्ट्र के मस्तिष्क की सफलता उसके साहित्य की भित्ति पर है। साहित्य की अभिवृद्धि पर कोष की वृद्धि होती है, यह अटल सिद्धान्त है। जिस भाषा में जितने अधिक कोष प्राप्त होते हैं वही सजीव मानी जाती है। जिस भाषा में जितने कम शब्दकोष मिलते हैं वह उतनी ही मृत और उसकी सभ्यता विकसित अथवा इष्णुमुकुलित मानी जाती है। इसलिए निर्विवाद सिद्ध हुआ कि साहित्य और कोष का पारस्परिक दृढ़ सम्वन्ध है।

कोष निर्माण की ओर भारतीय विद्वानों की पूर्ण अभिरुचि थी। वे जानते थे कि—

‘अवैयाकरणस्त्वन्धः अधिरः कोषविवर्जितः ।’

विना कोष का राजा और विना कोष का विद्वान् निरर्थक है। कविता, वक्त्रता एवं निबन्ध लिखनेवालों के लिए कोष अत्यन्त आवश्यक वस्तु है। भारतवर्ष में वैदिककाल से लेकर आज तक अनेक कोषग्रन्थ रचे गये। यदि इसका अभाव होता तो भिन्न २ काल में प्रचलित भिन्न-भिन्न शब्दों का भिन्न-भिन्न अर्थ मालूम करना दुष्कर कार्य होता। शब्दों का लिङ्ग ज्ञान करना व्याकरण के साथ कोष का भी कार्य है। पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान और एक शब्द के अनेक अर्थ कोष की कृपा से विदित होते हैं। अतः स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य के गहन वन में प्रविष्ट होने के लिए कोषरूपी वन-पथ-प्रदर्शक की नितान्त आवश्यकता है।

प्राचीन काल में कोष श्लोकबद्ध नहीं होते थे, जैसे वैदिक कोष निघण्टु। लौकिक संस्कृत के कोष प्रायः श्लोकबद्ध ही मिलते हैं। कोषकारों ने अधिकतया अनु-ण्डुप् का ही आश्रय लिया है। प्रस्तुत पुस्तक-अमर-कोष के पूर्व व्याडि, वररुचि, भागुरि और धन्वन्तरि ये कोषकार तथा त्रिकाण्ड, उत्पलिनी, रत्नकोष एवं माला ये कोष-ग्रन्थ उपलब्ध थे। अमरकोष के अनन्तर संस्कृत-साहित्य-सरिता में कोषों की बाढ़-सी आ गयी। भारतीय दृष्टिपथ पर शाश्वत कृत अनेकार्थसमुच्चय, हलायुध कृत अभिधानरत्न-माला, यादव प्रकाश की वैजयन्ती, महेश्वर कृत विश्वप्रकाश, हेमचन्द्र की अभिधान-

चिन्तामणि, अनेकार्थ संग्रह, देशी नाम माला ( प्राकृत कोष ), वनस्पति विद्या सम्बन्धी निघण्टु शेष, पुरुषोत्तम देव कृत त्रिकारणकोष आदि अद्विष्ट हुए ।

नव में सर्वश्रेष्ठ एवं लोकोपयोगी 'अमरकोष' सिद्ध हुआ । पूर्ववर्ती कोशकारों की कठिनाइयों का अमरसिंह को पूरा पता था । इसलिए उन्होंने वैसी शैली निकाली जो अद्वितीय ठहरी । अमरकोष की रचना में पूर्व के अनेक कोषों से सहायता ली गयी है ।

चयपि कोष परिणत के अवसर पर—

मेढिन्यमरमाला च त्रिकारणो रत्नमालिका ।

गन्तिदेवो भागुरिश्च व्याडि शब्दार्णवस्तथा ॥

द्विजपथ कलिजश्च रभस पुरुषोत्तम ।

दुर्गोऽभिधानमाला च संसारावर्त-शाश्वती ॥

विरवो बोपालितश्चैव वाचस्पति-हलायुधौ ।

हारावली साहनाहो विक्रमादित्य एव च ॥

हेमचन्द्रश्च रुद्रधाप्यनरोऽयं मनातन ।

—कारणरूपे प्राचीन मिद्ध किया गया है तथापि इनमें से कई कोष उनके समय में विद्यमान थे । अमरकोष के प्राचीन टीकाकार जोरखामो और सर्वानन्द ने इसके पूर्ववर्ती कोष, उनके प्रणेताओं में व्याडि की उपलिनी, कात्यायन का कात्य कोष, वाचस्पति का शब्दार्णव, भागुरि का त्रिकारण कोष, विक्रमादित्य का संसारावर्त, धन्वन्तरि का निघण्टु, अमरदत्त की 'अमरमाला, वगैरह की लिङ्गविशेषविधि आदि का उल्लेख किया है । इन कोषों की विदोषताएँ अमरकोष में पार्थी जाती हैं और स्वयं अमरसिंह ने इसे स्वीकार किया है कि—

'समाहृत्यान्यतन्त्राणि सन्ति नै प्रतिस्फूर्तन' ।

गन्तुर्गम्यते वर्गानामतिशानुशासनम् ॥'

यही कारण है कि इनके बाद कोई कोष इनका प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय न हो सका । हमें यहाँ बताना निरन्तर पड़ती ही गयी और ४० से अधिक टीकाकारों ने टीकाएँ लिखी हैं ।

आधार मानकर कहा जाता है। वे बौद्ध थे क्योंकि 'अमरा निर्जरा-देवास्त्रिदशा विदुषाः सुराः' आदि कहकर ब्रह्मा विष्णु विश्वेश्वर की नाम-गणना के पूर्व 'सर्वज्ञः सुगतो बुद्धः' का वर्णन कर मङ्गलाचरण के अस्पष्ट अंश ज्ञान-दया-सिन्धु को स्पष्ट कर दिया। इसीसे 'अमरसिंहो हि पापीयान्सर्वं भाष्यमचूचुरत्' कहा है। बुद्ध भगवान पीपल के पेड़ के नीचे सम्यक् सम्बुद्ध हुए थे और बौद्ध लोग इस पेड़ को 'बोधिदुम' कहते हैं। उसका उल्लेख अमरसिंह भी करते हैं। बौद्धों के यहाँ त्रिपिटकाचार्य आदि बड़े-बड़े महात्माओं की समाधि होती थी जिसे 'एडुक' कहते थे। गवर्नमेण्ट द्वारा खुदाई कराने पर बहुत से ऐसे स्तूप मिले हैं। इन प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि वे बौद्ध थे। मिस्टर एलन कृत 'गुप्तवंशीय राजाओं के सिक्कों की सूची' नामक ग्रन्थ से पता चलता है कि गुप्तवंशीय नरपतिगणों की मुद्राओं पर 'सिंह विक्रमः', 'सिंहचन्द्रः', 'सिंहमहेन्द्रः' आदि उपाधियाँ मिलती हैं। सम्भवतः 'अमरसिंहः' नाम भी इस प्रकार की उपाधियों में हो।

इसी प्रकार इनके निवास स्थान के सम्बन्ध में भी कई मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि द्वितीय काण्ड में गुजरात की सावरमती (शरावती) नदी को सीमा मानकर जो 'प्राच्य' और 'उदीच्य' देश का उल्लेख किया है इससे वे गुजरात काठियावाड़ के निवासी ठहरते हैं।

विद्वानों ने अमरसिंह का समय निर्णय करके बतलाया है कि वे ई० सन् की चौथी सदी में हुए। कालनिर्णय करने के लिए हमें सर्व प्रथम एकदम अन्तिम अवधि अर्थात् उपलब्ध सर्व प्राचीन टीका को मानना पड़ेगा—

( १ ) क्षीरस्वामी ग्यारहवीं सदी के द्वितीयार्द्ध में हुए। ये अपनी टीका में भोज का उल्लेख करते हैं और गणरत्नमहोदधि में वर्द्धमान इनका जिक्र करते हैं। इससे इनका समय निर्णय हुआ।

( २ ) क्षीरस्वामी के कथनानुसार भागुरि मालाकार के पहले हुए। 'एतच्च द्रष्टुं शरमिति भागुरिपाठे सरमिति बुद्ध्वा मालाकारो भ्रान्तः।' ये टीकाएँ क्षीरस्वामी के समय में उपलब्ध थीं।

( ३ ) शाश्वत का अनेकार्थ समुच्चय अमरकोष के नानार्थवर्ग से अधिक विस्तृत है। यह इस बात का प्रमाण है कि अवशेष अर्थों को भी लिखकर उन्होंने पूरा किया। इससे उनसे भी प्राचीन अमरसिंह हुए। ब्रह्मवर्ग में कहा गया है कि 'आतिथ्य' का मतलब 'अतिथ्यर्थ' है 'क्रमादातिथ्यातिथये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि' (ब्रह्मवर्ग, श्लोक ३) कात्य और माला के अनुसार 'आतिथ्यः = अतिथिः' तथा शाश्वत ने दोनों अर्थ बतलाया है। इसपर क्षीरस्वामी कहते हैं—

'कात्यस्त्वाह—आवेशिक विपश्चिद्विरातिथ्यमभिधीयते,  
आतिथ्योतिथिरागन्तुरिति च माला,

शाश्वतोत्त एवोभयमाह—आतिथ्यं स्यादतिथ्यर्थं आतिथ्यमतिथि विदुः ।'

यह एक जबरदस्त प्रमाण है कि अमर के बाद शाश्वत हुए । -

( ४ ) कालवर्ग में कहा गया है कि 'द्वौ द्वौ मार्गोदिमासौ त्यादतुः ।' इससे स्पष्ट है कि अमरसिंह के समय में अग्रहन मास से वत्सरारम्भ होता था । गणितशास्त्र के अनुसार यह समय आज से १५००-१६०० वर्ष पूर्व का था । अतः अमरसिंह का समय चौथी सदी हुआ ।

( ५ ) यद्यपि वे बौद्ध थे तथापि पाणिनि के व्याकरण के अनुसार चलनेवाले थे । उन्होंने प्रसिद्ध बौद्ध वैयाकरण चन्द्रगोमिन् के सूत्र 'ईश्वरार्थादराज्ञः सभा' का अनुवाद न करके, पाणिनि के सूत्र 'सभाराजामनुष्यपूर्वा' का अनुवाद 'शालार्थापि परा राजा-मनुष्यार्थादराजकान्' किया है । चूँकि चन्द्रगोमिन्—जिनसे वैयाकरण वसुरात ( ४८० ई० सन् ) ने व्याकरण की शिक्षा पाई थी—पाँचवीं सदी में हुए तो अमर उनसे पूर्व चौथी सदी में हुए ही होंगे ।

( ६ ) वे बौद्ध होते हुए भी सांख्यदर्शन के मतानुयायी थे । देखिए, 'क्षेत्रज्ञात्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम्' कपिल के इस सिद्धान्त में ईश्वरकृष्ण ( अथवा विन्ध्यवासिन् ) ने सुधार किया था । अमर कहते हैं—'अन्तराभवसत्त्वेश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने' ( नानार्थ वर्ग ) अन्तराभवसत्त्व गन्धर्व शब्द का वाचक है । कुमारिल भट्ट श्लोकवार्तिक में लिखते हैं—'अन्तराभवसत्त्वोऽहस्तु नेप्यते विन्ध्यवासिना । तदस्ति त्वे प्रमाणं हि न किञ्चिदगम्यते । अर्थात् अन्तराभवसत्त्व के सिद्धान्त को विन्ध्यवासिन् स्वीकार नहीं करते । इसमें स्पष्ट है कि ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रचार किया हुआ सांख्यदर्शन का यह सुधरा रूप अमरसिंह का नहीं मालूम था । अतः इस बात से सिद्ध हुआ कि अमरसिंह ईश्वरकृष्ण के पूर्व अर्थात् ४ वीं सदी में हुए ।

( ७ ) अमरकोष का चीनी और तिब्बती भाषा में छठी सदी में अनुवाद हुआ था । चीनी अनुवाद उच्चयिनी के गुणगत ने किया था । जब इस ग्रन्थ का अनुवाद छठी सदी में हुआ तो सौ दो सौ वर्ष पूर्व उसकी रचना हुई होगी क्योंकि इतना समय इसके प्रचार और लोकप्रिय होने के लिए देना ही पड़ेगा । इससे भी चौथी सदी का समय साबित हुआ ।

( ८ ) वाङ्मय विद्वानों का अनुमान है कि गया के बौद्ध मन्दिर बनवानेवाले थे ही अमरसिंह हैं । यदि इन विद्वानों का सिद्धान्त मान लिया जाय तो भी इनका समय चौथी सदी में होगा, क्योंकि कनिष्कम् आदि पुरातत्त्वविशारदों का कथन है कि गया का बौद्ध मन्दिर श्री गिरिकुण्ड के आधार पर, कहा जा सकता है कि यह राष्ट्रीय पौरुषों का प्रतीक है ।

प्रस्तुत पुस्तक के अमरकोष और नाम लिङ्गानुशासन ये दो नाम हैं । इसमें तीन काण्ड हैं । प्रत्येक काण्ड में कई वर्ग हैं, जैसे—

प्रथम काण्ड में—( १ ) स्वर्ग वर्ग ( २ ) व्योम वर्ग ( ३ ) दिग्वर्ग ( ४ ) कालवर्ग ( ५ ) धीवर्ग ( ६ ) शब्दादिवर्ग ( ७ ) नाट्यवर्ग ( ८ ) पातालभोगिवर्ग ( ९ ) नरकवर्ग ( १० ) वारिवर्ग ।

द्वितीय काण्ड में—( १ ) भूमिवर्ग ( २ ) पुरवर्ग ( ३ ) शैलवर्ग ( ४ ) वनौषधिवर्ग ( ५ ) सिंहादिवर्ग ( ६ ) मनुष्यवर्ग ( ७ ) ब्रह्मवर्ग ( ८ ) क्षत्रियवर्ग ( ९ ) वैश्यवर्ग ( १० ) शूद्रवर्ग ।

तृतीयकाण्ड में—( १ ) विशेष्यनिघ्नवर्ग ( २ ) सङ्कीर्णवर्ग ( ३ ) नानार्थवर्ग ( ४ ) अव्यय वर्ग ( ५ ) लिङ्गादिसंग्रहवर्ग ।

जब तक किसी संस्कृत ग्रन्थ की संकेतमात्र भी हिन्दी नहीं रहती तो जनसाधारण के लिए उसका समझना कठिन हो जाता है । इस अभाव को दूर करने के लिए मैंने कुछ प्रयत्न किया है । जहाँ तक सम्भव हुआ है और ग्रन्थ विस्तृत न हो इसका भी विचार रखते हुए समुचित साहित्यिक, ऐतिहासिक, आयुर्वेदिक आदि टिप्पणियाँ दी गयी हैं । उन्हें आप दूसरे और तीसरे काण्ड में अवलोकन कर सकते हैं । जनता के हृत्तट पर जो विचारधाराएँ टक्कर खाती रहती हैं और जिनसे प्रशान्त मन-सागर क्षुब्ध होता रहता है उसकी शान्ति की निवृत्ति के लिए इस प्रकार को हिन्दी टीका प्रथम बार ही नेत्रों के सम्मुख आ रही है । 'अनुवाद कैसा हुआ' इसका निर्णय अपने सहृदय पाठको पर ही छोड़ता हूँ । इसमें जो कुछ त्रुटि रह गयी हो उसके लिये क्षमा माँगता हूँ तथा आशा करता हूँ कि अग्रिम संस्करण में सूचित करने पर वे दूर कर दी जायँगी ।

अन्त में श्रद्धेय परिणित श्रीरामतेजजी पाण्डेय साहित्य शास्त्री को धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने मुझे समय कम रहने पर, प्रूफ संशोधन कार्य में मेरी बड़ी सहायता की है । तीसरे काण्ड को टीका लिखते समय मुझे ज़रा भी अवकाश नहीं था उस समय क्रापी तैयार करने में भी आपने बड़ी उदारता दिखलायी ।

रथयात्रा,  
संवत् १९९४

}

विदुषामनुचरः—  
मन्नालाल 'अभिमन्यु'

शाश्वतोत एवोभयमाह—आतिथ्यं स्यादतिथ्यर्थं आतिथ्यमतिथिं विदुः ।’

यह एक जबर्दस्त प्रमाण है कि अमर के बाद शाश्वत हुए । -

( ४ ) कालवर्ग में कहा गया है कि ‘द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ त्याद्यतुः ।’ इससे स्पष्ट है कि अमरसिंह के समय में अगहन मास से वत्सरारम्भ होता था । गणितशास्त्र के अनुसार यह समय आज से १५००-१६०० वर्ष पूर्व का था । अतः अमरसिंह का समय चौथी सदी हुआ ।

( ५ ) यद्यपि वे बौद्ध थे तथापि पाणिनि के व्याकरण के अनुसार चलनेवाले थे । उन्होंने प्रसिद्ध बौद्ध वैयाकरण चन्द्रगोमिन् के सूत्र ‘ईश्वरार्थादराज्ञः सभा’ का अनुवाद न करके, पाणिनि के सूत्र ‘सभाराजामनुष्यपूर्वा’ का अनुवाद ‘शालार्थापि परा राजा-मनुष्यार्थादराजकात्’ किया है । चूँकि चन्द्रगोमिन्—जिनसे वैयाकरण वसुरात ( ४८० ई० सन् ) ने व्याकरण की शिक्षा पाई थी—पाँचवीं सदी में हुए तो अमर उनसे पूर्व चौथी सदी में हुए ही होंगे ।

( ६ ) वे बौद्ध होते हुए भी सांख्यदर्शन के मतानुयायी थे । देखिए, ‘चेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम्’ कपिल के इस सिद्धान्त में ईश्वरकृष्ण ( अधवा विन्ध्यवासिन् ) ने सुधार किया था । अमर कहते हैं—‘अन्तराभवसत्त्वेश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने’ ( नानार्थ वर्ग ) अन्तराभवसत्त्व गन्धर्व शब्द का वाचक है । कुमारिल भट्ट श्लोकवार्तिक में लिखते हैं—‘अन्तराभवदेहस्तु नेष्यते विन्ध्यवासिना । तदस्ति त्वे प्रमाणं हि न किञ्चिदवगम्यते । अर्थात् अन्तराभवसत्त्व के सिद्धान्त को विन्ध्यवासिन् स्वीकार नहीं करते । इससे स्पष्ट है कि ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रचार किया हुआ सांख्यदर्शन का यह सुधरा रूप अमरसिंह को नहीं मालूम था । अतः इस बात से सिद्ध हुआ कि अमरसिंह ईश्वरकृष्ण के पूर्व अर्थात् ४ थी सदी में हुए ।

( ७ ) अमरकोष का चीनी और तिब्बती भाषा में छठी सदी में अनुवाद हुआ था । चीनी अनुवाद उज्जयिनी के गुणरात ने किया था । जब इस ग्रन्थ का अनुवाद छठी सदी में हुआ तो सौ दो सौ वर्ष पूर्व उसकी रचना हुई होगी क्योंकि इतना समय इसके प्रचार और लोकप्रिय होने के लिए देना ही पड़ेगा । इससे भी चौथी सदी का समय मालूम हुआ ।

( ८ ) पाश्चात्य विद्वानों का अनुमान है कि गया के बौद्ध मन्दिर बनवानेवाले ये ही अमरसिंह हैं । यदि उन विद्वानों का सिद्धान्त मान लिया जाय तो भी इनका समय चौथी सदी में होगा; क्योंकि कनिंघम आदि पुरातत्त्वविशारदों का कथन है कि गया का बौद्ध मन्दिर फो, शिल्पकला के आधार पर, कहा जा सकता है कि यह स्त्रीष्टीय पाँचवीं सदी के पूर्व में बना होगा ।

प्रस्तुत पुस्तक के अमरकोष और नाम लिङ्गानुशासन ये दो नाम हैं । इसमें तीन काण्ड हैं । प्रत्येक काण्ड में कई वर्ग हैं, जैसे—

प्रथम काण्ड में—( १ ) स्वर्ग वर्ग ( २ ) व्योम वर्ग ( ३ ) दिग्वर्ग ( ४ ) कालवर्ग ( ५ ) धीवर्ग ( ६ ) शब्दादिवर्ग ( ७ ) नाट्यवर्ग ( ८ ) पातालभोगिवर्ग ( ९ ) नरकवर्ग ( १० ) वारिवर्ग ।

द्वितीय काण्ड में—( १ ) भूमिवर्ग ( २ ) पुरवर्ग ( ३ ) शैलवर्ग ( ४ ) वनौषधिवर्ग ( ५ ) सिंहादिवर्ग ( ६ ) मनुष्यवर्ग ( ७ ) ब्रह्मवर्ग ( ८ ) क्षत्रियवर्ग ( ९ ) वैश्यवर्ग ( १० ) शूद्रवर्ग ।

तृतीयकाण्ड में—( १ ) विशेष्यनिघ्नवर्ग ( २ ) सङ्कीर्णवर्ग ( ३ ) नानार्थवर्ग ( ४ ) अव्यय वर्ग ( ५ ) लिङ्गादिसंग्रहवर्ग ।

जब तक किसी संस्कृत ग्रन्थ की संकेतमात्र भी हिन्दी नहीं रहती तो जनसाधारण के लिए उसका समझना कठिन हो जाता है । इस अभाव को दूर करने के लिए मैंने कुछ प्रयत्न किया है । जहाँ तक सम्भव हुआ है और ग्रन्थ विस्तृत न हो इसका भी विचार रखते हुए समुचित साहित्यिक, ऐतिहासिक, आयुर्वेदिक आदि टिप्पणियाँ दी गयी हैं । उन्हें आप दूसरे और तीसरे काण्ड में अवलोकन कर सकते हैं । जनता के हृत्तट पर जो विचारधाराएँ टक्कर खाती रहती हैं और जिनसे प्रशान्त मन-सागर क्षुब्ध होता रहता है उसकी शान्ति की निवृत्ति के लिए इस प्रकार को हिन्दी टीका प्रथम बार ही नेत्रों के सम्मुख आ रही है । 'अनुवाद कैसा हुआ' इसका निर्णय अपने सहृदय पाठको पर ही छोड़ता हूँ । इसमें जो कुछ त्रुटि रह गयी हो उसके लिये क्षमा माँगता हूँ तथा आशा करता हूँ कि अग्रिम संस्करण में सूचित करने पर वे दूर कर दी जायँगी ।

अन्त में श्रद्धेय परिणित श्रीरामतेजजी पाण्डेय साहित्य शास्त्री को धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने मुझे समय कम रहने पर, प्रूफ संशोधन कार्य में मेरी बड़ी सहायता की है । तीसरे काण्ड को टीका लिखते समय मुझे ज़रा भी अवकाश नहीं था उस समय क्रापी तैयार करने में भी आपने बड़ी उदारता दिखलायी ।

रथयात्रा,  
संवत् १९९४

}

विदुषामनुचरः—  
मन्नालाल 'अभिमन्यु'



# अमरकोषस्थवर्गानुक्रमणिका

## प्रथमकाण्डे-

वर्गः	पृष्ठे
स्वर्गवर्गः	३
व्योमवर्गः	११
दिग्गर्गः	१२
कालवर्गः	१७
धीवर्गः	२५
षाढादिवर्गः	२७
नाट्यवर्गः	३३
पातालभोगिवर्गः	४२
नरकवर्गः	४४
वारिवर्गः	४५

## द्वितीयकाण्डे-

भूमिवर्गः	५५
सुरवर्गः	५९

वर्गः	पृष्ठे
शैलवर्गः	६३
वृक्षवर्गः	६५
सिंहादिवर्गः	१०९
मनुष्यवर्गः	११९
ब्रह्मवर्गः	१५८
क्षत्रियवर्गः	१७१
वैश्यवर्गः	१९५
शूद्रवर्गः	२१७

## तृतीयकाण्डे-

विशेष्यनिघ्नवर्गः	२१६
सङ्कीर्णवर्गः	२४६
नानार्थवर्गः	२५५
अव्ययवर्गः	२८९
लिङ्गादिसंग्रहवर्गः	२९४

॥ श्रीः ॥

# अमरकोषः

## भाषाटीकासहितः

### प्रथमं काण्डम्

( मङ्गलाचरणम् )

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानर्घा गुणा ।  
सेव्यतामन्त्रयो धीराः स श्रिये चामृताय च ॥१॥

अन्वय — (हे) धीराः ! सः, अक्षयः, श्रिये,  
च, अमृताय, च, ( भवद्भिः ) सेव्यताम्, ज्ञान  
सिन्धोः, अगाधस्य, यस्य, अनर्घाः, गुणा, च,  
( सन्ति ) ॥१॥

टीका—हे पंडितो ! जिस अगाध ज्ञान और  
दयाके रत्नाकर परमात्मा के ( सत्य, शौच, दया,  
ज्ञान्ति, त्याग आदि ) निर्मल निष्पाप गुणा हैं उस  
अविनाशी ज्ञानप्रद की सेवा संपत्ति तथा अमरत्व  
प्राप्ति के लिये करो ॥१॥

( प्रस्तावना )

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः ।  
सम्पूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥२॥

अन्वय — अन्यतन्त्राणि, समाहृत्य, संक्षिप्तैः,  
प्रतिसंस्कृतैः, वर्गेः, ( युक्तं ),- सम्पूर्णम्, नाम-  
लिङ्गानुशासनम्, ( मया ), उच्यते ॥२॥

टीका—अन्य शास्त्रों को एकत्र कर ( अथवा  
संग्रह कर ) संक्षिप्त ( अर्थात् अल्प विस्तार और

१ सत्य शौच दया ज्ञान्तिस्त्याग सन्तोष आर्जवम् ।  
शमो दमस्तप साम्यं तितिक्षोपरति श्रुतम् ॥  
ज्ञान विक्तिरैश्वर्यं शौर्यं तेजो बलं स्मृतिः ।  
स्वातन्त्र्यं कौशलं कान्तिर्यथं मार्दवमेव च ॥  
श्लादयो गुणाः ।

बहुत अर्थ गर्भित ), प्रति संस्कृत ( अर्थात् प्रति  
पद के प्रकृतिप्रत्यय के विचार से संस्कार किए हुए )  
वर्ग ( सजातीय ) समूहों से परिपूर्ण नाम ( स्वर्ग-  
आदि ) और लिङ्ग ( स्त्री० पुं० नपुंसक ) को प्रति-  
पादित करनेवाला शास्त्र कहता हूँ ॥२॥

( परिभाषा )

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।  
स्त्री-पुं-नपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः कचित् ॥३॥

अन्वय — अत्र, प्रायशः, रूपभेदेन, च,  
( पुनः ), कुत्रचित्, साहचर्यात्, कचित्, तद्वि-  
शेषविधेः, स्त्री-पुं-नपुंसकं ज्ञेयम् ॥३॥

टीका—इस कोश में बहुधा रूपभेद द्वारा स्त्री  
लिङ्ग, पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग मालूम करना ।  
यथा—[‘लक्ष्मी पद्मालया पद्मा’ श्लोक संख्या २८]  
इत्यादि में स्त्रीलिङ्ग के रूप हैं, और ‘पिनाको-  
ऽजगवं धनुः’ श्लोक संख्या ३७ इत्यादि में ‘पिनाक’  
पुल्लिङ्ग का रूप है और ‘अजगवं, धनुः’ ये नपुंसक  
लिङ्ग के रूप हैं ।]

और किसी स्थान में साहचर्य [ अर्थात्  
निकटवर्ती शब्द की समीपता से लिङ्ग जानना  
[यथा—‘अश्वयुगशिवनी’ दिग्वर्ग का २१वाँ श्लोक ।  
इसमें ‘अश्विनी’ स्त्रीलिङ्ग का रूप है इसकी समीपता  
से ‘अश्वयुक्’ को भी स्त्रीलिङ्ग जानना । ]

और कहीं लिङ्गों की विशेष विधि से स्त्री० पुं०  
नपुंसक लिङ्ग जानना [ यथा—‘मेरी स्त्री दुदुभि

पुमान्' नाव्यवर्ग का ६ठा श्लोक यहाँ 'मेरी' के आगे स्त्री और दुंदुभि के आगे पुमान् लिखा है । अतः मेरी स्त्रीलिङ्ग है और दुंदुभि पुल्लिङ्ग है ॥३॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न सङ्करः ।  
कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते ॥४॥

अन्वय — अत्र, अनुक्तानां, भिन्नलिङ्गानां, भेदाख्यानाय, द्वन्द्वः, न, कृतः, एकशेषः, न, (कृतः), क्रमात्, कृते, सङ्करः, न, (कृतः) ॥४॥

टीका—इस कोप में अव्युत्पादित भिन्न-भिन्न लिङ्गवाले नामों का लिंग भेद बतलाने के लिये द्वन्द्व समास नहीं किया गया है [ यथा—'कुलिश-सिदुर पवि' स्वर्गवर्ग का ५० वाँ श्लोक ] इसका 'कुलिश-सिदुर-पवि' नहीं किया, क्योंकि 'कुलिश' और 'सिदुर' नपुंसकलिंग हैं और 'पवि' पुल्लिङ्ग है ।]

और एकशेष द्वन्द्वसमास भी नहीं किया गया है । [यथा—'नमः खं श्रावणो नमः' नानार्थवर्ग का २३२ वाँ श्लोक] इसका 'खं श्रावणौ तु नमसी' नहीं किया; क्योंकि ये प्रत्येक पृथक्-पृथक् लिंगवाचक हैं,

और क्रम के बिना भिन्न लिंगों के पठे में संकर (मिश्रण) नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से साहचर्य द्वारा लिंगका ज्ञान नहीं होता, [यथा—'स्तव स्तोत्र स्तुतिर्नुति' शब्दादि वर्ग का ११ वाँ श्लोक] इसका 'स्तुति स्तोत्रं स्तवो नुति' ऐसा मकर नहीं किया, क्योंकि 'स्तव' पुल्लिङ्ग 'स्तोत्र' नपुंसक, साहचर्य में 'स्तुति' 'नुति' ये स्त्रीलिंग हैं । [ और उक्त भिन्न लिङ्गों का द्वन्द्व और एकशेष द्वन्द्व-समास किया है । [ यथा, 'विद्याधगम्परोयच्छ-स्तेगन्धर्वकिरा' स्वर्ग वर्ग का ११ वाँ श्लोक] इसमें भिन्न भिन्न लिंगवाचकों में 'अप्सरम्' शब्द का समास हुआ है क्योंकि 'स्त्रियां बहुष्व-प्सरम्' स्वर्ग वर्ग के ५५ वें श्लोक में 'अप्सरम्' शब्द का स्त्रीलिंग निश्चित होगया है और [ माता-पितरौ पितरौ' मनुष्य वर्ग का ३७ वाँ श्लोक ]

इसका 'पितरौ' ऐसा विभिन्न लिंगवाचियों का एक शेष द्वन्द्व समास हुआ है क्योंकि 'जनयित्री प्रसू-र्माता' मनुष्य वर्ग के २६ वें श्लोक में मातृशब्द का लिङ्ग निश्चय हो चुका है ] ॥४॥

त्रिलिङ्गधां त्रिविधं पदं मिथुने तु द्वयोरिति ।  
निपिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक् ॥५॥

अन्वयः—त्रिलिङ्गां, 'त्रिषु' इति, पदम्, तु, मिथुने, 'द्वयोः' इति, (पदम्), निपिद्धलिङ्गं, शेषार्थम्, ( ज्ञेयम् ), त्वन्ताथादि, पूर्वभाक्, न, ( इति ज्ञेयम् ) ॥५॥

टीका—जो शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं उनके लिए 'त्रिषु' पद लिखा है, यथा—[ 'त्रिषु स्फुलिङ्गो-ऽग्निकण' स्वर्ग वर्ग का ६०वाँ श्लोक । अर्थात् स्फुलिङ्ग तीनों लिङ्गों में होता है । ]

जो शब्द मिथुन (स्त्रीलिंग-पुल्लिङ्ग) वाचक है उनके आगे 'द्वयो' ऐसा पद लिखा है । [यथा—'वहोर्द्वयोर्ज्वालकीलौ' स्वर्गवर्ग का ६० वा श्लोक अर्थात् 'ज्वाल' और 'कील' ये स्त्री-पुल्लिङ्ग में होते हैं ।] और जहाँ जिस लिङ्ग का निषेध हो वहाँ उसके अतिरिक्त शेषलिङ्ग सम्भनना [ यथा—'व्योम-यानं विमानोऽस्त्री' स्वर्गवर्ग का ५१वा श्लोक । यहाँ 'विमान' शब्द में स्त्रीलिङ्ग का निषेध है । अतः विमान शब्द शेष लिङ्गों (पुल्लिङ्ग नपुंसक) में है । ]

और जिसके अन्त में 'तु' शब्द रहे और जिसके आरम्भ में 'अथ' शब्द रहे वे शब्द पूर्वभाक् ( अर्थात् पूर्व के साथ सम्बन्धित ) नहीं होते । [ यथा—'पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती' स्वर्गवर्ग का ४८वाँ श्लोक । यहाँ 'तु' शब्दान्त से नगरी का सम्बन्ध अमरावती से है, इन्द्राणी से नहीं । और 'नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भर' स्वर्गवर्ग का ६६वाँ श्लोक । यहाँ 'अतिशय' शब्द के पूर्व 'अथ' है जिससे इसका सम्बन्ध आगे वाले शब्द 'भर' से है, 'अजस्र' के साथ नहीं । ] ॥५॥

## अथ स्वर्गवर्गः

( नव नामानि स्वर्गस्य )

स्वरत्ययं स्वर्ग-नाक-त्रिदिव-त्रिदशालया ।  
 सुरलोको द्यो-दिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ।  
 स्वर्ग के ६ नाम—(१) स्व (२) स्वर्ग (३) नाक (४) त्रिदिव (५) त्रिदशालय (६) सुरलोक (७) द्यो (८) दिव (९) त्रिविष्टप । इनमें (१) अव्यय, (२-६ तक) पुल्लिङ्ग, (७-८) स्त्रीलिङ्ग, (९वाँ) नपुंसक लिङ्ग हैं ॥६॥

( षड्विंशतिर्देवानाम् )

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधा सुरा ।  
 सुपर्वाण. सुमनसास्त्रिदिवेशा दिवौकस ॥७॥  
 आदितेया दिविषदो लेखा आदिति नन्दना ।  
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः  
 बर्हिर्मुखा क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारय ।  
 वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवता. स्त्रियाम् ॥८॥  
 देवताओं के २६ नाम—(१) अमर (२) निर्जर (३) देव (४) त्रिदश (५) विबुध (६) सुर (७) सुपर्वन् (८) सुमनस् (९) त्रिदिवेश (१०) दिवौकस् (११) आदितेय (१२) दिविषद् (१३) लेख (१४) अदिति-नन्दन (१५) आदित्य (१६) ऋभु (१७) अस्वप्न (१८) अमर्त्य (१९) अमृतान्धस् (२०) बर्हिर्मुख (२१) क्रतुभुज (२२) गीर्वाण (२३) दानवारि (२४) वृन्दारक (२५) दैवत (२६) देवता । इनमें 'दैवत' शब्द नपुंसक लिङ्ग में है किन्तु विकल्प से पुल्लिङ्ग में भी होता है । 'देवता' शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है । शेष शब्द पुल्लिङ्ग हैं ॥७-८॥

( नव गणदेवानाम् )

आदित्य-विश्व-वसवस्तुषिताभास्वरानिला ।  
 महाराजिक-साध्याश्च रुद्राश्च गणदेवता ॥९॥

१ आदित्या द्वादश प्रोक्ता, विश्वेदेवा दश स्मृता ।  
 वसवश्चाष्टसंख्याता, पट्विंशतुषिना मता ॥ आभास्वराश्चतु  
 षष्टिर्वाता पञ्चाशद्भुनका । महाराजिकनामानो द्वे गते

गणदेवताओं के ६ नाम—(१) आदित्य (२) विश्व (३) वसु (४) तुषित (५) आभास्वर (६) अनिल (७) महाराजिक (८) साध्य (९) रुद्र ।

( दश देवयोनय )

विद्याधराप्सरो-यक्ष-रक्षो-गन्धर्व-किन्नरा ।  
 पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनय ११  
 देवताओं की जातियों के १० भेद—(१) विद्याधर (२) अप्सरस् (३) यक्ष (४) रक्षस् (५) गन्धर्व (६) किन्नर (७) पिशाच (८) गुह्यक (९) सिद्ध (१०) भूत ।

( दश असुराणाम् )

असुरा दैत्य-दैतेय-दनुजेन्द्रारि-दानवा ।  
 शुक्रशिष्या दितिसुता पूर्वदेवा सुरद्विष ॥१२॥  
 असुरों के १० नाम—(१) असुर (२) दैत्य (३) दैतेय (४) दनुज (५) इन्द्रारि (६) दानव (७) शुक्रशिष्य (८) दितिसुत (९) पूर्वदेव (१०) सुरद्विष  
 ( अष्टादश बुद्धस्य )

सर्वज्ञ सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागत ।  
 समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥१३॥  
 पडभिन्नो देशबलोऽद्वयवादी विनायक ।  
 मुनीन्द्र श्रीघन शास्ता मुनि

बौद्धमत प्रवर्तक भगवान् बुद्ध के १८ नाम—

विशतिस्तथा ॥ साध्या द्वादश विख्याता, रुद्रा एकादश स्मृता ॥ अर्थात्—आदित्य १२, विश्वेदेवा १०, वसु ८, तुषित ३६, आभास्वर ६४, अनिल ४६, महाराजिक २२०, साध्य १२, रुद्र ११, हैं ।

२ विद्याधरा जीमूतवाहनादय । अप्सरसो देवाङ्गना । यक्षा कुबेरादय । रक्षासि मायाविनो लङ्कादिवासिन । गन्धर्वास्तुम्युरुप्रभृतयो देवगायना । किन्नरा अश्वादिमुखा नराकृतय । पिशाचा पिशिताशा भूतविशेषा । गुह्यका मण्डिमद्रादय । 'निधिं रक्षन्ति ये रक्षास्ते स्युर्गुह्यसंज्ञका ।' सिद्धा विश्वावसुप्रभृतय । भूता बालग्रहादयो रुद्रा-नुचरा वा ।

३—दान शील क्षमा वीर्य ध्यान-प्रज्ञा-बलानि च ।

उपाय प्रणिधिर्ज्ञान दश बुद्धबलानि वै ॥

(१) सर्वज्ञ (२) सुगत (३) बुद्ध (४) वर्मराज (५) तथागत (६) समन्तभद्र (७) भगवत् (८) मार-  
जित् (९) लोकजित् (१०) जिन (११) षडभिज्ञ  
(१२) दशवत् (१३) अद्वयवादिन् (१४) विनायक  
(१५) मुनीन्द्र (१६) श्रीवन (१७) शास्तृ (१८) मुनि ।  
( सप्त बुद्धावान्तरभेदस्य शाक्यमुने )

शाक्यमुनिस्तु य ॥१४॥

स शाक्यसिंह सर्वार्थसिद्ध शौद्धोदनिश्च स ।  
गौतमाश्चार्कवन्धुश्च मायादेवीसुतश्च स ॥१५॥

बुद्ध के अवान्तर भेद शाक्यमुनि के ७ नाम —

(१) शाक्यमुनि (२) शाक्यसिंह (३) सर्वार्थसिद्ध  
(४) शौद्धोदनि (५) गौतम (६) अर्कवन्धु (७)  
मायादेवीसुत ॥१४-१५॥

( विंशतिर्ब्रह्मण )

ब्रह्माऽऽत्मभू सुरज्येष्ठ परमेष्ठी पितामह ।  
हिरण्यगर्भो लोकेश स्वयम्भुश्चतुरानन ॥१६॥  
धाताऽञ्जयोनिर्दुर्हिणो विरिञ्चि कमलासन ।  
नृपा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृङ् विधि.

ब्रह्माजी के २० नाम—(१) ब्रह्मन् (२)  
आत्मभ (३) सुरज्येष्ठ (४) परमेष्ठिन् (५) पिता-  
मह (६) हिरण्यगर्भ (७) लोकेश (८) स्वयम्भू  
(९) चतुरानन (१०) धातृ (११) अञ्जयोनि (१२)  
दुर्हिण (१३) विरिञ्चि (१४) कमलासन (१५) षष्टृ  
(१६) प्रजापति (१७) वेधम (१८) विधातृ (१९)  
विश्वसृज् (२०) विधि ॥१६-१७॥

( षट्चत्वारिंशद्विणोः )

विष्णुर्नागायण कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्वाः ।  
दामोदगो हृषीकेश केशवो माधव स्वभू ॥१८॥  
दैत्यादि पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वज ।  
पीताम्बरगेऽच्युत शार्ङ्गो विष्वक्सेनो जनार्दन.

१ नाभिः प्रमाणं पुत्राऽन्विष्य कमलोद्भवः । सदा-  
न्तो रमेर्मासः सत्यं धीः समवाहन ॥ अन्य पुराणों में  
एक श्लोक पाया गया है । इससे अनुसार (१) नाभिजन्म  
(२) पण्डित (३) पुत्र (४) अन्विष्य (५) कमलोद्भव (६)  
समन्त (७) रमेर्मास (८) सत्य (९) धी (१०) समवाहन  
दे १०-१८ श्लोकों के अर्थ हैं ।

उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।  
पद्मनाभो मधुरिपूर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥२०॥  
देवकीनन्दन शौरि श्रीपति पुरुषोत्तम ।  
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षज ॥२१॥  
विश्वम्भर कैटभजिद्विधु श्रीवत्सलाञ्छन ।  
पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तक ॥२२॥  
जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दन ।

विष्णुभगवान् के ४६ नाम—(१) विष्णु  
(२) नारायण (३) कृष्ण (४) वैकुण्ठ (५) विष्टर-  
श्चवम् (६) दामोदर (७) हृषीकेश (८) केशव (९)  
माधव (१०) स्वभू (११) दैत्यारि (१२) पुण्डरी-  
काक्ष (१३) गोविन्द (१४) गरुडध्वज (१५)  
पीताम्बर (१६) अच्युत (१७) शार्ङ्गिन् (१८)  
विष्वक्सेन् (१९) जनार्दन (२०) उपेन्द्र (२१)  
इन्द्रावरज (२२) चक्रपाणि (२३) चतुर्भुज (२४)  
पद्मनाभ (२५) मधुरिपु (२६) वासुदेव (२७)  
त्रिविक्रम (२८) देवकीनन्दन (२९) शौरि (३०)  
श्रीपति (३१) पुरुषोत्तम (३२) वनमालिन् (३३)  
बलिध्वंसिन् (३४) कंसाराति (३५) अधोक्षज (३६)  
विश्वम्भर (३७) कैटभजित् (३८) विधु (३९)  
श्रीवत्सलाञ्छन (४०) पुराणपुरुष (४१) यज्ञपुरुष  
(४२) नरकान्तक (४३) जलशायिन् (४४) विश्व-  
रूप (४५) मुकुन्द (४६) मुरमर्दन ॥१८-२२॥

( द्वे कृष्णपितुः )

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभि ॥२३॥

इन (कृष्ण) के पिता के २ नाम—(१) वसु-  
देव (२) एवानकदुन्दुभि ॥२३॥

( सप्तदश बलरामस्य )

बलभद्र प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रज ।  
रेवतीरमणो राम कामपालो हलायुध ॥२४॥  
नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्गो मुसली हली ।  
सङ्कर्षण सौरपाणि कालिन्दीभेदनो बल ॥२५॥

बलराम के १७ नाम—(१) बलभद्र (२)

• अन्य पुराणों में 'पुराणपुरुष' से लेकर 'मुरमर्दन'  
तक श्लोक नहीं मिले हैं वहाँ केवल ३६ ही नाम मिले हैं ।

प्रलम्बघ्न (३) बलदेव (४) अच्युताग्रज (५)  
रेवतीरमण (६) राम (७) कामपाल (८) हलायुध  
(९) नीलाम्बर (१०) रौहिर्योय (११) तालाङ्क  
(१२) मुसलिन् (१३) हलिन् (१४) मङ्कर्षण  
(१५) सीरपाणि (१६) कालिन्दीमेदन (१७) बल  
॥२४-२५॥

( एकविंशतिः कामस्य )

मदनो मन्मथो मार प्रद्युम्नो मीनकेतन ।  
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्ग कामः पञ्चशर स्मर २६  
शम्बरारिर्मनसिज कुसुमेपुरनन्यज ।  
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभू ॥२७॥  
ब्रह्मसूत्रं ऋष्यकेतु स्यात्

कामदेव (प्रद्युम्न) के २१ नाम-(१) मदन (२)  
मन्मथ (३) मार (४) प्रद्युम्न (५) मीनकेतन (६)  
कन्दर्प (७) दर्पक (८) अनङ्ग (९) काम (१०) पञ्चशर  
(११) स्मर (१२) शम्बरारि (१३) मनसिज (१४)  
कुसुमेषु (१५) अनन्यज (१६) पुष्पधन्वन्  
(१७) रतिपति (१८) मकरध्वज (१९) आत्मभू  
(२०) ब्रह्मसू (२१) ऋष्यकेतु ॥२६-२७॥

( द्वे प्रद्युम्नसूते )

अनिरुद्ध उषापति ।

प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध के २ नाम-(१) अनि-  
रुद्ध (२) उषापति ।

( एकादश लक्ष्म्याः )

लक्ष्मी पद्मालया पद्मा कमला श्रीहरीप्रिया २८  
इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदत्तनया रमा ।

लक्ष्मीजी के ११ नाम-(१) लक्ष्मी (२) पद्मा-  
लया (३) पद्मा (४) कमला (५) श्री (६) हरि-  
प्रिया (७) इन्दिरा (८) लोकमाता (९) मा (१०)  
क्षीरोदत्तनया (११) रमा ॥२८॥

( एकं विष्णुशङ्खस्य )

शङ्खो लक्ष्मीपते पाञ्चजन्य

१ 'अरविन्दमशोक च चूत च नवमल्लिका ।  
नोलोत्पल च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायका ॥'  
'उन्मादनस्तापनश्च शोषण स्तम्भनस्तथा ।  
सम्भोहनश्च कामस्य पञ्च बाणा प्रकीर्तिता ॥'

लक्ष्मीपति (विष्णु) के शङ्ख का नाम-(१)  
पाञ्चजन्य ।

( एक विष्णुचक्रस्य )

चक्रं सुदर्शनः ॥२९॥

विष्णु के चक्र का नाम-(१) सुदर्शन । (यह  
पुष्पिण के अतिरिक्त नपुंसक लिंग में भी होता है-  
'सुदर्शनोऽस्त्रिया चक्रे इति नामनिधानात् स्त्रीवेऽपि) ।

( एकं विष्णुगदाया )

कौमोदकी गदा

विष्णु की गदा का नाम (१) कौमोदकी  
(स्त्रीलिंग) ।

( एकं विष्णोः खड्गस्य )

खड्गो नन्दकः

विष्णु के खड्ग का नाम (१) नन्दक ।

( एक विष्णोर्मणे )

कौस्तुभो मणिः ।

विष्णु की मणि का नाम-(१) कौस्तुभ ।

( एकं विष्णोश्चापस्य )

चापः शार्ङ्गं मुरारेस्तु

मुरारि (विष्णु) के धनुष का नाम (१) शार्ङ्ग ।

( एकं विष्णो लाञ्छनस्य )

श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् ॥३०॥

विष्णु के वज्र स्थल पर के चिह्न का नाम-

(१) श्रीवत्स ॥३०॥

( नव गरुडस्य )

गरुत्मान् गरुडस्तादृशो वैनतेयः खगेश्वरः ।

नागान्तको विष्णुरथ सुपर्णः पद्मगाशनः ॥३१॥

गरुड के ९ नाम-(१) गरुत्मत (२) गरुड

(अश्वश्च शैव्य-सुग्रीव-मेघपुष्प-बलाहका ।

सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गद ॥ )

(इनके (१) शैव्य (२) सुग्रीव (३) मेघपुष्प

(४) बलाहक ये चार घोड़े हैं । सारथी का नाम—  
दारुक । मन्त्री का नाम—उद्धव । छोटे भाई का  
नाम गद है ॥ )

(३) ताक्ष्य (४) वैनतेय (५) खगेश्वर (६) नागान्तक (७) विष्णुरथ (८) सुपर्ण (९) पद्मगाशन ॥३१॥

( अष्टचत्वारिंशच्छम्भोः )

शम्भुरीश. पशुपति शिव. शूली महेश्वर ।  
ईश्वरः शर्व ईशान शङ्करश्चन्द्रशेखर ॥३२॥  
भूतेश खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृड ।  
मृत्युञ्जय कृत्तिवासा. पिनाको प्रमथाधिप ३३  
उग्र. कपर्दी श्रीकण्ठ शितिकण्ठ. कपालभृत् ।  
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षत्रिलोचन. ॥३४॥  
रुशानुरेतः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहित ।  
हरः स्मरहरो भर्गस्यम्बकस्त्रिपुरान्तक ॥३५॥  
गङ्गाधरोऽन्धकरिपु क्रतुध्वंसो वृषध्वज ।  
व्योमकेशो भवो भीम स्थाणु रुद्र उमापति ३६  
(अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानट ॥)

शिवजी के ४८ नाम—(१) शम्भु (२) ईश (३) पशुपति (४) शिव (५) शूलिन् (६) महेश्वर (७) ईश्वर (८) शर्व (९) ईशान (१०) शङ्कर (११) चन्द्रशेखर (१२) भूतेश (१३) खण्डपरशु (१४) गिरिश (१५) गिरिश (१६) मृड (१७) मृत्युञ्जय (१८) कृत्तिवामम् (१९) पिनाकिन् (२०) प्रमथाधिप (२१) उग्र (२२) कपर्दिन् (२३) श्रीकण्ठ (२४) शितिकण्ठ (२५) कपालभृत् (२६) वामदेव (२७) महादेव (२८) विरूपाक्ष (२९) त्रिलोचन (३०) रुशानुरेतम् (३१) सर्वज्ञ (३२) धूर्जटि (३३) नीललोहित (३४) हर (३५) स्मरहर (३६)

१. स्कान्दे—

‘न करोमि मदा ध्यानात्परम यन्निगमयम् ।

भूतानाममकृत्स्मात्तेनाह गङ्गा स्मृत ॥’

२. ‘भूत काण्ठे विप घोर ना आकाण्ठनामगात्र  
इति नीलकण्ठस्तव ॥

३. शिवपुराणे—

पूजयेत् यत्कुर्य मर्मज्ञोऽपि प्रमाणतः ।

धातुर्मेति पूजार्थं मदादिस्मृत स्मृत ॥’

४. स्कान्दे—

‘नान्येन ममाह तु स्मृतं सोऽपि त्विषा ।

स्मृतं हि तस्मै तस्मै परीक्षितम् ॥’

भर्ग (३७) त्र्यम्बक (३८) त्रिपुरान्तक (३९) गङ्गाधर (४०) अन्धकरिपु (४१) क्रतुध्वंसिन् (४२) वृषध्वज (४३) व्योमकेश (४४) भव (४५) भीम (४६) स्थाणु (४७) रुद्र (४८) उमापति ॥३२-३६॥

(१ अहिर्बुध्न्य २ अष्टमूर्ति ३ गजारि ४ महानट)

( एकं जटावन्धस्य )

कपर्दोऽस्य जटाजूट.

शिवजीके जटाजूट का १ नाम—(१) कपर्द ।

( द्वे शिवधनुषः )

पिनाकोऽजगवं धनु ।

शिवजी के धनुष के २ नाम—(१) पिनाक (२) अजगव (नपु०) ।

( एकं शिवपरिचराणाम् )

प्रमथाः स्युः पारिषदा.

शिवजी के पारिषद का नाम—(१) प्रमथ ।

( ब्रह्मादिशक्तिदेवतानाम् एकैकम् )

ब्रौह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥३७॥

ब्राह्मी इत्यादि मातृ हैं ॥३७॥

( त्रीणि ऐश्वर्यस्य )

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यम्

ऐश्वर्य के ३ नाम—(१) विभूति (२) भूति

(३) ऐश्वर्य ।

( ऐश्वर्यस्य प्रभेदाः )

अणिमादिकमष्टधा ।

ऐश्वर्य के भेद—(१) अणिमादि ८

( एकविंशति पार्वत्याः )

उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥३८॥

शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।

अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाऽम्बिका ३९

आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।

पार्वती जी के २१ नाम—(१) उमा (२)

५ ब्राह्मी, माण्ड्यवी, चैन्दी, वाराही, वैष्णवी तथा ।

कौमार्यापि, चामुण्डा, चर्चिकेत्यष्टमातर ॥

अर्धात—ब्राह्मी, माण्ड्यवी, चैन्दी, वाराही, वैष्णवी, कौमारी, चामुण्डा, चर्चिका—ये आठ मान हैं ॥

कात्यायनी (३) गौरी (४) काली (५) हैमवती (६)  
ईश्वरी (७) शिवा (८) भवानी (९) रुद्राणी (१०)  
शर्वाणी (११) सर्वमंगला (१२) अपर्या (१३)  
पार्वती (१४) दुर्गा (१५) मृडानी (१६) चंडिका  
(१७) अंबिका (१८) आर्या (१९) दाक्षायणी  
(२०) गिरिजा (२१) मेनकात्मजा ॥३८-३९॥

( अष्टौ गणेशस्य )

विनायको विघ्नराज-द्वैमातुर-गणाधिपा ॥४०॥

अप्येकदन्त-हेरम्ब-लम्बोदर-गजानना ।

गणेशजी के ८ नाम—(१) विनायक (२) विघ्न-  
राज (३) द्वैमातुर (४) गणाधिप (५) एकदन्त  
(६) हेरम्ब (७) लम्बोदर (८) गजानन ॥४०॥

( सप्तदश स्कन्दस्य )

कार्तिकेयो महासेन. शरजन्मा षडानन ॥४१॥

पार्वतीनन्दन. स्कन्द सैनानीरग्निभूर्गुह ।

वाहुलेयस्तारकजिद्विशाख शिखिवाहन ॥४२॥

पाणमातुर शक्तिधर कुमार. क्रौञ्चदारण ।

स्कन्द के १७ नाम—( १ ) कार्तिकेय (२)  
महासेन (३) शरजन्मन् (४) षडानन (५) पार्वती-  
नन्दन (६) स्कन्द (७) सैनानी (८) अग्निभू (९)  
गुह (१०) वाहुलेय (११) तारकजित् (१२) वि-  
शाख (१३) शिखिवाहन (१४) पाणमातुर (१५)  
शक्तिधर (१६) कुमार (१७) क्रौञ्चदारण  
॥४१-४२॥

( पण्णामानि नन्दिनः )

शृङ्गोभृङ्गी रिटिस्तुण्डीनन्दिको नन्दिकेश्वरः ४३

नदियों के ६ नाम—(१) शृङ्गिन् (२) भृङ्गिन्  
(३) रिटि (४) तुण्डिन् (५) नदिक (६) नदि-  
केश्वर ॥४३॥

( पञ्चविंशदिन्द्रस्य )

इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजा पाकशासन. ।

• अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—

कर्ममोटी तु चामुण्डा, चर्ममुण्डा तु चर्चिका ।

चामुण्डा के २ नाम—(१) कर्ममोटी (२) चामुण्डा ।

चर्चिका के २ नाम—(२) चर्ममुण्डा (२) चर्चिका ।

वृद्धश्रवा शुनासीर पुरुहूत. पुरन्दर ॥४४॥  
जिष्णुर्लेखर्षभ शक्र शतमन्युर्दिवस्पति. ।  
सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥४५॥  
वास्तोष्पति सुरपतिर्बलाराति शचीपति. ।  
जम्भभेदी हरिहय स्वाराणमुचिसूदन ॥४६॥  
संकन्दनो दुश्च्यवनस्तुरापाणमेघवाहनः ।  
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुजाः

इन्द्र के ३५ नाम—(१) इन्द्र (२) मरुत्वत्  
(३) मघवन् (४) विडौजस् (५) पाकशासन (६)  
वृद्धश्रवस् (७) शुनासीर (८) पुरुहूत (९) पुरन्दर  
(१०) जिष्णु (११) लेखर्षभ (१२) शक्र (१३)  
शतमन्यु (१४) दिवस्पति (१५) सुत्रामन् (१६)  
गोत्रभिद् (१७) वज्रिन् (१८) वासव (१९) वृत्रहन्  
(२०) वृषन् (२१) वास्तोष्पति (२२) सुरपति  
(२३) बलाराति (२४) शचीपति (२५) जम्भभेदिन्  
(२६) हरिहय (२७) स्वाराट् (२८) नमुचिसूदन  
(२९) संकन्दन (३०) दुश्च्यवन (३१) तुराषाट्  
(३२) मेघवाहन (३३) आखण्डल (३४) सहस्राक्ष  
(३५) ऋभुचन् ॥४४-४६॥

( त्रीणि इन्द्रपत्न्या )

तस्य तु प्रिया ॥४७॥

पुलोमजा शचीन्द्राणी

उस ( इन्द्र ) की प्रिया के ३ नाम—(१)  
पुलोमजा (२) शची (३) इन्द्राणी ॥४७॥

( एकम् इन्द्रपुरस्य )

नगरी त्वमरावती ।

इन्द्र की नगरी का नाम—(१) अमरावती ।

( एकम् इन्द्राश्वस्य )

हय उच्चैः श्रवा.

इन्द्र के घोड़े का नाम—(१) उच्चैः श्रवम् ।

( एकम् इन्द्रसारथेः )

सूतो मातलि.

इन्द्र के सारथी का नाम—(१) मातलि ।

( एकम् इन्द्रोपवनस्य )

नन्दनं वनम् ॥४८॥



इन्द्र के उपवन का नाम (१) नन्दन ॥८॥

( एकम् इन्द्रप्रासादस्य )

स्यात्प्रासादो वैजयन्त

इन्द्र के महल का नाम—(१) वैजयन्त ।

( द्वे इन्द्रपुत्रस्य )

जयन्तः पाकशासनिः ।

इन्द्र के पुत्र के २ नाम—(१) जयन्त (२)

पाकशासनि ।

( चत्वारि इन्द्रराजस्य )

ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुचल्लभा ॥४६॥

इन्द्र के हाथी के ४ नाम—(१) ऐरावत (२)

अभ्रमातङ्ग (३) ऐरावण (४) अभ्रमुचल्लभ ॥४६॥

( दश वज्रस्य )

हादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।

शतकोटिःस्वरु शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयो ५०

वज्र के १० नाम—(१) हादिनी (२) वज्र

(३) कुलिश (४) भिदुर (५) पवि (६) शतकोटि

(७) स्वरु (८) शम्ब (९) दम्भोलि (१०) अशनि ।

इनमें हादिनी स्त्रीलिङ्ग, वज्र ( स्त्रीलिङ्ग वर्जित )

पुलिङ्ग—नपुंसकलिङ्ग, कुलिश, भिदुर नपुंसक लिङ्ग

पवि आदि पुलिङ्ग अशनि दोनों लिंगों ( पुलिङ्ग-

नपुंसक) में होते हैं ॥४७॥

( द्वे विमानस्य )

व्योमयानं विमानोऽस्त्री

विमान के २ नाम—(१) व्योमयान (२)

विमान । इनमें 'विमान', स्त्रीलिङ्ग को स्त्रोत्तर,

पुलिङ्ग और नपुंसक में होता है ।

( एकं सुरपतेः )

नारदाद्याः सुरपतेः ।

देवर्षियों के नाम—(१) नारद आदि ।

( द्वे देवसभाया )

स्यान्सुधर्मा देवसभा

देवताओं की सभा के २ नाम—(१) सुधर्मा

(२) देवसभा ।

( त्रीण्यमृतस्य )

पीयूषममृतं सुधा ॥५१॥

अमृत के ३ नाम—(१) पीयूष (२) अमृत

(३) सुधा ॥५१॥

( चत्वारि मन्दाकिन्याः )

मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णादी सुरदीर्घिका ।

स्वर्गगङ्गा के ४ नाम—(१) मन्दाकिनी (२)

वियद्गङ्गा (३) स्वर्णादी (४) सुरदीर्घिका ।

( पञ्च मेरोः )

मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥५२॥

मेरु पर्वत के ५ नाम—(१) मेरु (२) सुमेरु

(३) हेमाद्री (४) रत्नसानु (५) सुरालय ॥५२॥

( पञ्च देवतरुणाम् )

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।

सन्तान कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ५३

देवताओं के वृक्ष के ५ नाम—(१) मन्दार

(२) पारिजात (३) सन्तान (४) कल्पवृक्ष

(५) हरिचन्दन ॥ इनमें 'हरिचन्दन' नपुंसक है

और विकल्प में पुलिङ्ग भी होता है ॥५३॥

( द्वे ब्रह्मपुत्रस्य )

सनत्कुमारो वैधात्र

ब्रह्मा के पुत्र के २ नाम—(१) सनत्कुमार

(२) वैधात्र ।

( पडशिवनीकुमारयोः )

स्ववैधावश्विनोसुतौ ।

नासत्यावश्विनौ दस्त्रावाश्विनेयौ च तावुभौ ५४

अश्विनीकुमारों के ६ नाम—(१) स्ववैध

(२) अश्विनीसुत (३) नासत्य (४) अश्विन (५)

दस्त्र (६) आश्विनेय ( वे दो हैं अतः द्विवचन का

प्रयोग किया गया है ) ॥५४॥

( द्वे उर्वश्यादेः )

स्त्रियां बहुष्वप्सरसं स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।

उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्याओं के २ नाम—

२ धृताचा मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा ।

मुकेगा मञ्जुघोषाया कथ्यन्तेऽप्सरसो युधे ॥

(१) अप्सरस् (२) स्वर्देश्या ॥ इनमे अप्सरस् शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है । यह जातिवाचक होने के कारण बहुवचनान्त है ।

( एकं देवगायकानाम् )

हाहा ह्रूह्रश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम् ५५  
'हाहा ह्रूह्र' (पु०) इत्यादि देवताओं के गन्धर्व  
( तुम्बरु, विश्रवसु, चित्ररथ प्रभृति ) हैं ॥५५॥

( चतुस्त्रिंशदग्नेः )

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।  
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥५६॥  
वर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिक्लेश उपवुध ।  
आश्रयाशो बृहद्भानु कृशानुः पावकोऽनलः ५७  
रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणि ।  
हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहन ॥५८॥  
सप्तार्चिर्दमुना शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।  
शुचिरपिप्तम्

अग्नि के ३४ नाम—(१) अग्नि (२) वैश्वानर  
(३) वह्नि (४) वीतिहोत्र (५) धनञ्जय (६)  
कृपीटयोनि (७) ज्वलन (८) जातवेदस् (९)  
तनूनपात् (१०) वर्हि (११) शुष्मन् (१२) कृष्ण-  
वर्त्मन् (१३) शोचिक्लेश (१४) उपवुध (१५)  
आश्रयाश (१६) बृहद्भानु (१७) कृशानु (१८)  
पावक (१९) अनल (२०) रोहिताश्व (२१) वायु-  
सख (२२) शिखावत् (२३) आशुशुक्षणि (२४)  
हिरण्यरेतम् (२५) हुतभुज् (२६) दहन (२७)  
हव्यवाहन (२८) सप्तार्चिष् (२९) दमुनम् (३०)  
शुक्र (३१) चित्रभानु (३२) विभावसु (३३)  
शुचि (३४) अपिप्त ॥५६—५८॥

( श्रीणि वाडवाम्नेः )

और्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥५९॥

वडवानल के ३ नाम—(१) और्व (२)  
वाडव (३) वडवानल ॥५९॥

१ 'काली कराली मनोजवा सुलोहिता सुधृग्रवर्णा  
स्फुलिङ्गिनी विश्वदाक्षाल्या सप्त बहे जिह्वा ।'

( पञ्च ज्वालाया )

वहेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेति शिखा स्त्रियाम् ।

अग्नि की ज्वाला के ५ नाम—(१) ज्वाल  
(२) कील (३) अर्चिस् (४) हेति (५) शिखा ।  
इनमें 'ज्वाल' और 'कील' दोनों (स्त्री-पुं) लिङ्गमें,  
'अर्चिस्' स्त्री-नपुंसकलिङ्ग में, 'हेति' और 'शिखा'  
स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे अग्निकणस्य )

त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः

आग की चिनगारी के २ नाम—(१) स्फुलिङ्ग  
(२) अग्निकण । ये तीनों लिङ्गों (पुं-स्त्री-नपुंसक)  
में होते हैं ।

( द्वे सन्तापस्य )

सन्तापः संज्वरः समौ ॥६०॥

सन्ताप के २ नाम—(१) सन्ताप (२)  
संज्वर । ये दोनों समान अर्थ एवं समान  
लिङ्गवाले (पु०) हैं ॥६०॥

( चतुर्दश यमस्य )

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराज् ।  
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराडधमः ॥६१॥  
कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।

यमराज के १४ नाम—(१) धर्मराज (२)  
पितृपति (३) समवर्तिन् (४) परेतराज् (५) कृतान्त  
(६) यमुनाभ्रातृ (७) शमन (८) यमराज् (९)  
यम (१०) काल (११) दण्डधर (१२) श्राद्धदेव  
(१३) वैवस्वत (१४) अन्तक ॥६१॥

( पञ्चदश राक्षसस्य )

राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशर ६२  
रात्रिञ्चरो रात्रिचरः कर्बुरो निकपात्मजः ।

यातुधानः पुरयजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥६३॥

राक्षसों के १५ नाम—(१) राक्षस (२)  
कौणप (३) क्रव्याद् (४) क्रव्याद (५) अस्रप  
(६) आशर (७) रात्रिञ्चर (८) रात्रिचर (९)  
कर्बुर (१०) निकपात्मज (११) यातुधान (१२)  
पुरयजन (१३) नैर्ऋत (१४) यातु (१५) रक्षसी ।

इनमें 'वातु' और 'रक्षस्' ये नपुंसक लिङ्ग हैं  
शेष पुल्लिङ्ग ॥६२-६३॥

( पञ्च वरुणस्य )

प्रचेता वरुणः पाशी यादसाम्पतिरप्पतिः ।

वरुण के ५ नाम—(१) प्रचेतस् (२) वरुण  
(३) पाशिन (४) यादसाम्पति (५) अप्पति ।

( विंशतिर्वायोः )

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ६४  
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहाऽनिलाऽऽशुगाः ।  
समीर-मारुत-मरुज्जगत्प्राण-समीरणाः ॥६५॥  
नभस्वद्वात-पवन-पवमान-प्रभञ्जनाः ।

वायु के २० नाम—(१) श्वसन (२) स्पर्शन  
(३) वायु (४) मातरिश्वा (५) सदागति (६)  
पृषदश्व (७) गन्धवह (८) गन्धवाह (९) अनिल  
(१०) आशुग (११) समीर (१२) मारुत (१३)  
मरुत् (१४) जगत्प्राण (१५) समीरण (१६)  
नभस्वत् (१७) वात (१८) पवन (१९) पवमान  
(२०) प्रभञ्जन ॥६४-६५॥

( वातस्य प्रमेदाः )

प्रकम्पनो महावातो, भञ्जमावातः सवृष्टिकः ६६

आधी के २ नाम—(१) प्रकम्पन (२) महावात ।  
वर्षासहित आधी का नाम—(१) भञ्जमा  
वात ॥६६॥

( पञ्च शरीरस्था वायुभेदाः )

प्राणोऽपानः समानश्चोदान-व्यानौ च वायवः ।  
शरीरस्था इमे

शरीर में स्थित ५ वायुओं के नाम—(१)  
प्राण ( हृदयस्थित वायु का नाम ) । (२) अपान  
( शुदास्थित वायु का नाम ) । (३) समान  
( नाभिस्थित वायु का नाम ) । (४) उदान  
( मूत्रास्थित वायु का नाम ) । (५) व्यान

१ यदि प्राणो, उदानश्च, समानो नाभिस्थितः ।

उदान हृदयेऽथ व्यानश्च सर्वगरीयः ॥

अन्ये प्राणो, मूत्रास्थितश्च वायुश्च ।

अपानादिभिरेवाथ शरीरापास्य प्रमादमा ॥

( समस्त शरीर में फिरनेवाली वायु का नाम ) ।

( पञ्च वेगस्य )

रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥६७॥

जवः

वेग के ५ नाम—(१) रहस् (२) तरस् (३)  
रय (४) स्यद (५) जव । इनमें 'रहस्' 'तरस्'  
ये २ नपुंसक लिङ्ग, और शेष ३ पुल्लिङ्ग हैं ॥६७॥

( एकादश शीघ्रस्य )

अथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ।  
सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ॥६८॥

शीघ्रता के ११ नाम—(१) शीघ्र (२) त्वरित  
(३) लघु (४) क्षिप्र (५) अर (६) द्रुत (७) सत्वर  
(८) चपल (९) तूर्ण (१०) अविलम्बित (११)  
आशु ॥६८॥

( नव निरन्तरस्य )

सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिश्चाम् ।

नित्यानवरताजस्रमपि

निरन्तर ( लगातार ) के ९ नाम—(१) सतत  
(२) अनारत (३) अश्रान्त (४) सन्तत (५)  
अविरत (६) अनिश (७) नित्य (८) अनवरत  
(९) अजस्र ।

( चतुर्दशतिशयस्य )

अथातिशयो भरः ॥६९॥

अतिवेल-भृशात्यर्थ्यातिमात्रोद्गाढ-निर्भरम् ।

तीव्रैकान्त-नितान्तानि गाढ-वाढ-दृढानि च ७०

अतिशय ( बहुत ) के १४ नाम—(१) अति  
शय (२) भर (३) अतिवेल (४) भृश (५)  
अत्यर्थ (६) अतिमात्र (७) उद्गाढ (८) निर्भर  
(९) तीव्र (१०) एकान्त (११) नितान्त (१२)  
गाढ (१३) वाढ (१४) दृढ ॥६९-७०॥

क्षीवे शीघ्राद्यसत्त्वे,

स्यात्क्षीवेऽपि सत्त्वगामि यत् ।

टीका—शीघ्र आदि ( से लेकर दृढ पर्यंत )  
शब्द अमन्व ( विशेष्य वृत्ति न ) होने पर क्षीव  
( नपुंसक ) लिङ्ग में होते हैं [ यथा—शीघ्रं कृत-

वान, भृशं मूर्ख, भृशं याति ] । और जो इन  
( 'शीघ्र' आदि ) शब्दों में सत्वगामी ( विशेष्य  
वाचक ) हैं वे तीनों लिङ्गों में होते हैं [ यथा—  
शीघ्रा धेनु, शीघ्रो वृष, शीघ्र गमनम् ] ।

( 'अतिशय' तथा 'भर' सर्वदा पुल्लिङ्गवाचक हैं )

( सप्तदश कुबेरस्य )

कुबेरस्यम्बकसखो यत्तराङ्गुह्यकेश्वरः ॥७१॥

मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ।

किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥७२॥

यक्षैकपिङ्गलविल-श्रीद-पुरायजनेश्वराः ।

कुबेर के १७ नाम—(१) कुबेर (२) त्र्यम्बक  
सख (३) यत्तराङ्ग (४) गुह्यकेश्वर (५) मनुष्य-  
धर्मन् (६) धनद (७) राजराज (८) धनाधिप  
(९) किन्नरेश (१०) वैश्रवण (११) पौलस्त्य  
(१२) नरवाहन (१३) यक्ष (१४) एकपिङ्ग (१५)  
ऐलविल (१६) श्रीद (१७) पुरायजनेश्वर ॥७१-७२॥

( एकं कुबेराकीडस्य )

अस्योद्यानं चैत्ररथम्

इन ( कुबेर ) के बाग का नाम—(१) चैत्ररथ ।

( एकं कुबेरपुत्रस्य )

पुत्रस्तु नलकूबरः ॥७३॥

( इनके ) पुत्र का नाम—(१) नलकूबर ॥७३॥

( एकं कुबेरस्थानस्य )

कैलासः स्थानम्

( इनके ) स्थान का नाम—(१) कैलास ।

( एकं कुबेरपुर्या )

अलका पुरः

( इनकी ) नगरी का नाम—(१) अलका ।

( एकं कुबेरविमानस्य )

विमानं तु पुष्पकम् ।

( इनके ) विमान का नाम—(१) पुष्पक ।

( चत्वारि किन्नरस्य )

स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ॥७४॥

किन्नरों के ४ नाम—(१) किन्नर (२) किम्पुरुष

(३) तुरङ्गवदन (४) मयु ॥७४॥

( द्वे सामान्यनिधेः )

निधिर्ना शेवधिः

खजाने के २ नाम—(१) निधि (२) शेवधि ।  
ये दोनों शब्द नृ ( पुल्लिङ्ग ) हैं ।

( निधिविशेषस्य प्रत्येकम् )

भेदाः पञ्चशब्दादयो निधेः ।

निधि के भेद—(१) पद्म (२) शंख आदि ।

( इति स्वर्गवर्गः १ )

अथ व्योमवर्गः

( एकोनविंशतिराकाशस्य )

द्यौर्दिवौ द्वे स्त्रियामन्न व्योम पुष्करमम्बरम् ।  
नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥१॥  
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।  
विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् २  
( तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्व च महाविलम् )

आकाश के १९ नाम—(१) द्यौ ( २ ) दिव्  
( ३ ) अन्न ( ४ ) व्योमन् ( ५ ) पुष्कर ( ६ ) अम्बर  
( ७ ) नभस् ( ८ ) अन्तरिक्ष ( ९ ) गगन ( १० ) अनन्त  
( ११ ) सुरवर्त्मन् ( १२ ) ख ( १३ ) वियत् ( १४ )  
विष्णुपद ( १५ ) आकाश ( १६ ) विहायस् ( १७ )  
विहायस ( १८ ) नाक ( १९ ) द्युस् ॥२॥ ( तारापथ,  
अन्तरिक्ष, मेघाध्वन् महाविलम्—ये ४ नाम  
किन्हीं २ पुस्तकों में पाये जाते हैं । ) इनमें 'द्यौ'  
और 'दिव्' ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं;  
'आकाश' और 'विहायस्' नपुंसक लिङ्ग हैं किन्तु  
विकल्प से पुल्लिङ्ग में भी होते हैं, 'विहायस' और  
'नाक' पुल्लिङ्ग में होते हैं, 'द्युस्' अव्यय है, शेष  
स्त्रीव हैं ॥१-२॥

( इति व्योमवर्गः २ )

१ पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ।

मुकुन्द-कुन्द नीलाक्ष खर्वश्च निधयो नव ॥

अर्थात्—पद्म, महापद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द,  
कुन्द, नील, खर्व—ये ६ निधि हैं ॥

## अथ दिग्दर्शः

( पञ्च दिशः )

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ता ।

दिशायाँ के ५ नाम—(१) दिश् (२) ककुभ् (३) काष्ठा (४) आशा (५) हरित् ।

( प्रत्येकं द्वे द्वे चतसृणाम् )

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्व-दक्षिण-पश्चिमा । १  
उत्तरा दिगुदीची स्यात्

पूर्व दिशा का नाम—(१) प्राची । दक्षिणदिशा का नाम—(१) अवाची । पश्चिम दिशा का नाम—(१) प्रतीची । उत्तर दिशा का नाम—(१) उदीची ॥१॥

( एक दिग्भवस्य )

दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।

दिशायाँ में होनेवाली वस्तुयाँ के नाम - (१) दिश्य । (यथा—दिश्यो हस्ती, दिश्या हस्तिनी) यह तीनों लिङ्गों में होना है ।

( दिशां पतीनामेकैकम् )

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैऋतो वरुणो मरुत् ॥२॥  
कुवेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।

१ किन्ती २ पुस्तकों में यह श्लोक मिलता है—

अवाग्भववाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ।

प्रत्यग्भव प्रतीचीन, प्राचीन प्राग्भव त्रिषु ॥१॥

अवाग्भव (दक्षिण दिशा में होनेवाली वस्तु) का नाम—(१) अवाचीन । उदग्भव (उत्तर दिशा में होनेवाली वस्तु) का नाम—(१) उदीचीन । प्रत्यग्भव (पश्चिम दिशा में होनेवाली वस्तु) का नाम—(१) प्रतीचीन । प्राग्भव (पूर्व दिशा में होनेवाले पदार्थ) का नाम—(१) प्राचीन । ये (अवाचीन-उदीचीन-प्रतीचीन-प्राचीन) शब्द नामों लिङ्गों में होने हैं ।

(२) अन्य पुस्तकों में इतना अधिक है—

रवि शुक्रो महीमनु स्वर्मानुर्मानुजो विधु ।

सुषो वृद्धर्षिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहा ॥

पूर्व दिशा में ग्रह का नाम—(१) रवि । आग्नेय का (१) नृक । दक्षिण का—(१) महीमनु (मंगल) । नैऋत्य का—(१) स्वर्मानु (राहु) । पश्चिम का—(१) मनुज (रानेश्वर) । वायव्य का—(१) विधु (चन्द्र) । उत्तर का (१) सुष । ईशान का (१) वृद्धरपति ।

पूर्वादिक दिशायाँ के स्वामियों का क्रम से नाम—पूर्वदिशा का पति—(१) इन्द्र । आग्नेय का (१) अग्नि । दक्षिण का—(१) पितृपति । नैऋत्य का—(१) नैऋत । पश्चिम का—(१) वरुण । वायव्य का—(१) मरुत् (पवन) । उत्तर का—कुवेर । ईशान का—(१) ईश (महादेवजी) ॥२॥

( दिग्गजानां मेकैकम् )

ऐरावतः पुरण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥३॥  
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

पूर्व दिशा के हाथी का नाम—(१) ऐरावत । आग्नेय कोण के हाथी का नाम—(१) पुरण्डरीक । दक्षिण दिशा के हाथी का नाम—(१) वामन । नैऋत्य कोण के हाथी का नाम—(१) कुमुद । पश्चिम दिशा के हाथी का नाम—(१) अञ्जन । वायव्य कोण के हाथी का नाम—(१) पुष्पदन्त । उत्तर दिशा के हाथी का नाम—(१) सार्वभौम । ईशान कोण के हाथी का नाम—(१) सुप्रतीक ॥३॥

( ऐरावतादीनां हस्तिनीनामेकैकम् )

करिष्योऽभ्रमु-कपिला-पिङ्गलाऽनुपमाः क्रमात्  
ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

उपरोक्त ऐरावत आदि हाथियों की हाथिनियों के क्रम से नाम—(१) अभ्रमु । (१) कपिला । (१) पिङ्गला । (१) अनुपमा । (१) ताम्रकर्णी । (१) शुभ्रदन्ती । (१) अङ्गना । (१) अञ्जनावती ॥४॥

( द्वे अग्न्यादिकोणस्य )

क्लीवाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक्स्त्रियाम्

दो दिशायाँ के मध्यभाग [कोण] के २ नाम—(१) अपदिश (२) विदिक् ॥५॥ इनमें 'अपदिश' नपुंसक और अव्यय भी है । 'विदिक्' स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥५॥

( द्वे मध्यमात्रस्य )

अभ्यन्तरं त्वन्तरालम्

बीच के स्थान के २ नाम (१)—अभ्यन्तर (२) अन्तराल ।

( द्वे मण्डलाकारेण परिणतसमूहस्य )

चक्रवालं तु मण्डलम् ।

मण्डलाकार समूह ( घेरा ) के २ नाम (१)  
चक्रवाल (२) मण्डल ।

( पञ्चदश मेघस्य )

अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः॥६॥  
धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ।  
घन-जीमूत-मुदिर-जलमुग्धूमयोत्तयः ॥ ७ ॥

मेघ के १५ नाम—(१) अभ्र (२) मेघ (३)  
वारिवाह (४) स्तनयित्नु (५) बलाहक (६) धारा-  
धर (७) जलधर ( ८ ) तडित्वत् ( ९ ) वारिद  
(१०) अम्बुभृत् (११) घन (१२) जीमूत (१३)  
मुदिर (१४) जलमुग्ध (१५) वूमयोत्तय ॥६-७॥

( द्वे मेघपट्टे )

कादम्बिनी मेघमाला

मेघसमूह के २ नाम—(१) कादम्बिनी (२)  
मेघमाला ।

( एकं मेघभवस्य )

त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।

मेघ में होनेवाली वस्तु का नाम—(१) अभ्रिय ।  
यह तीनों लिङ्गों में होता है ( यथा—अभ्रिया  
आप , अभ्रिय आसार , अभ्रियं जलम् ) ।

( चत्वारि मेघध्वनेः )

स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषो रसितादि च॥८॥

वादल के गरजने की आवाज के ४ नाम—  
(१) स्तनित (२) गर्जित ( ३ ) मेघनिर्घोष (४)  
रसित ॥८॥

( दश विद्युतः )

शम्पा शतहृदा-हादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ।

तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि॥९॥

बिजली के १० नाम—(१) शम्पा (२) शत-  
हृदा (३) हादिनी (४) ऐरावती ( ५ ) क्षणप्रभा  
(६) तडित् (७) सौदामनी ( ८ ) विद्युत् (९) चञ्चला  
(१०) चपला ॥९॥

( द्वे वज्रध्वनेः )

स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषः

बिजली कड़कने के २ नाम—(१) स्फूर्जथु  
(२) वज्रनिर्घोष ।

( द्वे वज्राग्नेः )

मेघज्योतिरिरमदः ।

वादलों की चमक के २ नाम—( १ ) मेघ-  
ज्याति (२) इरमद ।

( द्वे इन्द्रधनुषः )

इन्द्रायुधं शक्रधनुः

इन्द्रधनुष के २ नाम—(१) इन्द्रायुध (२)  
शक्रधनु ।

( एकमृजोरिन्द्रधनुषः )

तदेव ऋजुरोहितम् ॥१०॥

सीधा इन्द्र धनुष का नाम—(१) ऋजुरोहित ॥१०॥

( द्वे वृष्टेः )

वृष्टिर्वर्षम्

वर्षा के २ नाम—(१) वृष्टि (२) वर्ष ।

( द्वे वृष्टिविघातस्य )

तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।

सूखा मेघ के २ नाम—(१) अवग्राह (२)  
अवग्रह । ये दोनों शब्द समान(पुं०) लिङ्गवाचक हैं ।

( द्वे महावृष्टेः )

धारासम्पात आसार

मूसलधार पानी बरसने के २ नाम—(१)  
धारासम्पात (२) आसार ।

( एकमम्बुकणानाम् )

शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥११॥

वायु से प्रक्षिप्त जलकणों ( पानी के बूँद ) का  
नाम—(१) शीकर ॥११॥

( द्वे वर्षोपलस्य )

वर्षोपलस्तु करका

ओला गिरने के २ नाम ( १ ) वर्षोपल (२)  
करका ।

( एकं मेघान्धकारितस्य )

मेघच्छन्नेऽहिर्दुर्दिनम् ।

दिन मे बदली होने का नाम—(१) दुर्दिन ।

( अष्टावाच्छादनस्य )

अन्तर्धा च्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥१२॥

अपिधान-तिरोधान-पिधानाच्छादनानि च ।

ढँकने के ८ नाम—(१) अन्तर्धा (२) व्य-  
वधा (३) अन्तर्धि (४) अपवारण (५) अपिधान  
(६) तिरोधान (७) पिधान (८) आच्छादन । इनमें  
(१-२) स्त्रीलिङ्ग में ( ३ ) पुल्लिङ्ग (४-८) नपुंसक में  
मे होते हैं ॥१२॥

( विशतिश्चन्द्रस्य )

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदवान्धवः ॥१३॥

विधुः सुधांशु शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।

अञ्जो जैवातृक सोमो ग्लौर्मृगाङ्गः कलानिधिः

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेश क्षपाकरः ।

चन्द्रमा के २० नाम—(१) हिमांशु (२)  
चन्द्रमम् (३) चन्द्र (४) इन्दु (५) कुमुदवान्धव  
(६) विधु (७) सुधांशु (८) शुभ्रांशु ( ९ ) ओष-  
धीश (१०) निशापति (११) अञ्ज (१२) जैवा-  
तृक (१३) सोम (१४) ग्लौ (१५) मृगाङ्ग (१६)  
कलानिधि (१७) द्विजराज (१८) शशधर (१९)  
नक्षत्रेश (२०) क्षपाकर ॥१३-१४॥

( एकं चन्द्रपोडशांशस्य )

फल्गु तु पोडशो भागः ।

चन्द्र के सोलहवें भाग का नाम—(१) कला ।

( द्वे रविचन्द्रमण्डलस्य )

विम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥१५॥

मर्यामण्डल—चन्द्रमण्डल के २ नाम—(१)

विम्ब (२) मण्डल ॥१५॥ इनमें 'विम्ब' शब्द स्त्री-  
लिङ्ग को छोड़कर शेष दो लिङ्गों (पु-नपुंसक) में होता  
है । 'मण्डल' शब्द तीनों लिङ्गों में होता है ।

( चत्वारि मण्डमात्रस्य )

मित्तं शक्रलखण्डे या पुंस्यर्थः

दुक्के ( गण्ड ) के ४ नाम—(१) मित्त  
(२) शक्रल (३) मण्ड (४) अर्थ । इनमें 'मित्त'  
नपुंसक लिङ्ग है । 'शक्रल' तथा 'मण्ड' नपुंसक

लिङ्ग होने हुए भी विकल्प से पुल्लिङ्ग में होते हैं ।  
'अर्थ' पुल्लिङ्ग में होता है ( यथा—कम्बलस्यार्ध  
(खण्ड) और वाच्यलिङ्ग भी है ( यथा—अर्द्धा-  
गात्री, अर्द्ध पट, अर्द्ध वस्त्रम् ) ।

( तुल्यखण्डद्वयमध्ये एकं खण्डस्य )

अर्थ समैऽशके ।

दो बराबर टुकड़े में से एक का नाम (१)  
अर्थ । यह नपुंसक लिङ्ग में ही होता है ।

( त्रीणि चन्द्रप्रभायाः )

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना

चौदनी ( चन्द्रमा की प्रभा ) के ३ नाम—  
(१) चन्द्रिका (२) कौमुदी (३) ज्योत्स्ना ।

( द्वे नैर्मल्यस्य )

प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥१६॥

प्रसन्नता के २ नाम—(१) प्रसाद (२)  
प्रसन्नता ॥१६॥ ।

( पट् चिह्नस्य )

कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म चलक्षणम् ।

चिह्न के ६ नाम—(१) कलङ्क (२) अङ्क  
(३) लाञ्छन (४) चिह्न (५) लक्ष्मन् (६) लक्षण ।

( एकमुत्कृष्टशोभायाः )

सुषमा परमा शोभा

परम शोभा का नाम—(१) सुषमा ।

( चत्वारि शोभायाः )

शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥१७॥

शोभा के ४ नाम—(१) शोभा (२) कान्ति  
(३) द्युति (४) छवि ॥१७॥

( सप्त हिमस्य )

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।

प्रालेयं मिहिका च

पाला के ७ नाम—(१) अवश्याय (२)  
नीहार (३) तुषार (४) तुहिन (५) हिम (६)  
प्रालेय (७) मिहिका ।

( द्वे हिमसमूहस्य )

अथ हिमानी हिमसंहतिः ॥१८॥

महापाला समूह के २ नाम—( १ ) हिमानी  
( २ ) हिमसंहति ॥१८॥

( एकं शीतगुणस्य, सप्त शीतलद्रव्यस्य च )  
शीतं गुणो, तद्वदर्थः सुषीमः शिशिरो जडः ।  
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः॥  
ठंड का नाम—( १ ) शीत ।

शीतल द्रव्य के ७ नाम—( १ ) सुषीम ( २ )  
शिशिर ( ३ ) जड ( ४ ) तुषार ( ५ ) शीतल ( ६ )  
शीत ( ७ ) हिम । ये सात तद्वदर्थ ( = शीतगुण  
वाले अर्थ युक्त ) और अन्यलिङ्ग ( = विशेष्य  
लिङ्ग ) के वाचक हैं ॥१९॥

( द्वे ध्रुवस्य )

ध्रुव औत्तानपादिः स्यात्

ध्रुव के २ नाम—( १ ) ध्रुव ( २ ) औत्तानपादि ।  
( त्रीण्यगस्त्यस्य )

अगस्त्य\* कुम्भसम्भवः ।

मैत्रावरुणि\*

अगस्त्य के ३ नाम—( १ ) अगस्त्य ( २ )  
कुम्भसम्भव ( ३ ) मैत्रावरुणि ।

( एकमगस्त्यपत्न्या\* )

अस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥२०॥

अगस्त्य की धर्मपत्नी का नाम—( १ ) लोपा-  
मुद्रा ॥२०॥

( षट् नक्षत्रसामान्यस्य )

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।

तारा के ६ नाम—( १ ) नक्षत्र ( २ ) ऋक्ष  
( ३ ) भ ( ४ ) तारा ( ५ ) तारका ( ६ ) उडु—यह  
नपुंसक लिङ्ग में है किन्तु विकल्प से स्त्रीलिङ्ग  
में भी होता है ।

( एकमश्विन्यादिभानाम् )

दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादिताराः

अश्विनी आदि ( सत्ताइस ) नक्षत्रों का नाम—  
( १ ) दाक्षायण्य । यह स्त्रीलिङ्ग में नित्य बहु-  
वचनान्त होता है ।

( द्वे अश्विन्याः )

अश्वयुगश्विनी ॥२१॥

अश्विनी नक्षत्र के २ नाम—( १ ) अश्वयुक्  
( २ ) अश्विनी ॥२१॥

( द्वे विशाखायाः )

राधा विशाखा

विशाखा नक्षत्र के २ नाम—( १ ) राधा ( २ )  
विशाखा ।

( त्रीणि पुष्यस्य )

पुष्ये तु सिध्य-तिष्यौ

पुष्य नक्षत्र के ३ नाम—( १ ) पुष्य ( २ )  
सिध्य ( ३ ) तिष्य ।

( द्वे धनिष्ठायाः )

श्रविष्ठा ।

समा धनिष्ठा

धनिष्ठा नक्षत्र के २ नाम ( १ ) श्रविष्ठा ( २ )  
धनिष्ठा ।

( द्वे पूर्वभाद्रपदोत्तरभाद्रपदानाम् )

स्युः प्रोष्ठप्रदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥२२॥

पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा के २ नाम—  
( १ ) प्रोष्ठप्रदा ( २ ) भाद्रपदा । ये शब्द स्त्रीलिङ्ग  
नित्य बहुवचनान्त में होते हैं ॥२२॥

( त्रीणि मृगशिरसः\* )

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

मृगशिरा नक्षत्र के ३ नाम—( १ ) मृगशीर्ष  
( २ ) मृगशिरस् ( ३ ) आग्रहायणी ।

मृगशीर्षशिरोदेशस्थानां पञ्चानां स्वल्पतारकाणामेकम्  
इत्वंलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति या ॥२३॥

मृगशिरा नक्षत्र के मस्तक पर स्थित पाँच  
छोटे-छोटे ताराओं का नाम—( १ ) इत्वंल ॥२३॥

( नव बृहस्पतेः )

बृहस्पति\* सुराचार्यो गीर्षतिर्धिषणो गुरुः ।

जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखरिडजः ॥२४॥

बृहस्पति के ९ नाम—( १ ) बृहस्पति ( २ )  
सुराचार्य ( ३ ) गीर्षति ( ४ ) धिषण ( ५ ) गुरु ( ६ )



दिन में बदली होने का नाम—(१) दुर्दिन ।

( अष्टावाच्छादनस्य )

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम् ॥१२॥  
अपिधान-तिरोधान-पिधानाच्छादनानि च ।

ढाँकने के ८ नाम—(१) अन्तर्धा (२) व्यवधा (३) अन्तर्धि (४) अपवारण (५) अपिधान (६) तिरोधान (७) पिधान (८) आच्छादन । इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग में (३) पुलिङ्ग (४-८) नपुंसक में होते हैं ॥१२॥

( विशतिश्चन्द्रस्य )

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदवान्धव ॥१३॥  
विधुः सुधांशु शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।  
अब्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगाङ्कः कलानिधिः  
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

चन्द्रमा के २० नाम—(१) हिमांशु (२) चन्द्रमास् (३) चन्द्र (४) इन्दु (५) कुमुदवान्धव (६) विधु (७) सुधांशु (८) शुभ्रांशु (९) ओषधीश (१०) निशापति (११) अब्ज (१२) जैवातृक (१३) सोम (१४) ग्लौर्मृगाङ्क (१५) कलानिधि (१६) द्विजराज (१७) शशधर (१८) नक्षत्रेश (१९) क्षपाकर ॥१३-१४॥

( एकं चन्द्रपोडशांशस्य )

कला तु षोडशो भागः ।

चन्द्र के सोलहवें भाग का नाम—(१) कला ।

( द्वे रविचन्द्रमण्डलस्य )

विम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥१५॥

सूर्यमण्डल—चन्द्रमण्डल के २ नाम—(१)

विम्ब (२) मण्डल ॥१५॥ इनमें 'विम्ब' गच्छ स्त्री-लिङ्ग को छोड़कर शेष दो लिङ्गों (पु-नपुंसक) में होता है । 'मण्डल' शब्द तीनों लिङ्गों में होता है ।

( चत्वारि खण्डमात्रस्य )

मित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धः

टुकड़े (खण्ड) के ८ नाम—(१) मित्त (२) शकल (३) खण्ड (४) अर्ध । इनमें 'मित्त' नपुंसक लिङ्ग है । 'शकल' तथा 'खण्ड' नपुंसक

लिङ्ग होने हुए भी विकल्प से पुल्लिङ्ग में होते हैं । 'अर्ध' पुल्लिङ्ग में होता है (यथा-कम्बलस्यार्धं (परतः) और वाच्यलिङ्ग भी है (यथा—अर्द्धा-गादी, अर्द्ध पट, अर्द्ध वस्त्रम्) ।

( तुल्यखण्डद्वयमव्ये एकं खण्डस्य )

अर्धं समं ऽशके ।

दो बराबर टुकड़े में से एक का नाम (१) अर्ध । यह नपुंसक लिङ्ग में ही होता है ।

( त्रीणि चन्द्रप्रभायाः )

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना

चौदनी (चन्द्रमा की प्रभा) के ३ नाम—(१) चन्द्रिका (२) कौमुदी (३) ज्योत्स्ना ।

( द्वे नैर्मल्यस्य )

प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥१६॥

प्रसन्नता के २ नाम—(१) प्रसाद (२) प्रसन्नता ॥१६॥ ।

( पट् चिह्नस्य )

कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्मं चलक्षणम् ।

चिह्न के ६ नाम—(१) कलङ्क (२) अङ्क (३) लाञ्छन (४) चिह्न (५) लक्ष्मन् (६) लक्षण ।

( एकमुत्कृष्टशोभायाः )

सुपमा परमा शोभा

परम शोभा का नाम—(१) सुपमा ।

( चत्वारि शोभायाः )

शोभा कान्तिर्द्युतिश्छवि ॥१७॥

शोभा के ४ नाम—(१) शोभा (२) कान्ति (३) द्युति (४) छवि ॥१७॥

( सप्त हिमस्य )

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।  
प्रालेयं मिहिका च

पाला के ७ नाम—(१) अवश्याय (२) नीहार (३) तुषार (४) तुहिन (५) हिम (६) प्रालेय (७) मिहिका ।

( द्वे हिमसमूहस्य )

अथ हिमानी हिमसंहतिः ॥१८॥

महापाला समूह के २ नाम—( १ ) हिमानी  
( २ ) हिमसंहति ॥१८॥

( एकं शीतगुणस्य, सप्त शीतलद्रव्यस्य च )  
शीतं गुणो, तद्वदर्थः सुषीमः शिशिरो जडः ।  
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः॥  
ठंड का नाम—( १ ) शीत ।

शीतल द्रव्य के ७ नाम—( १ ) सुषीम ( २ )  
शिशिर ( ३ ) जड ( ४ ) तुषार ( ५ ) शीतल ( ६ )  
शीत ( ७ ) हिम । ये सात तद्वदर्थ ( = शीतगुण  
वाले अर्थ युक्त ) और अन्यलिङ्ग ( = विशेष्य  
लिङ्ग ) के वाचक हैं ॥१९॥

( द्वे ध्रुवस्य )

ध्रुव औत्तानपादिः स्यात्

ध्रुव के २ नाम—( १ ) ध्रुव ( २ ) औत्तानपादि ।  
( त्रीण्यगस्त्यस्य )

अगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।

मैत्रावरुणिः

अगस्त्य के ३ नाम—( १ ) अगस्त्य ( २ )  
कुम्भसम्भव ( ३ ) मैत्रावरुणि ।

( एकमगस्त्यपत्न्या )

अस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥२०॥

अगस्त्य की धर्मपत्नी का नाम—( १ ) लोपा-  
मुद्रा ॥२०॥

( षट् नक्षत्रसामान्यस्य )

नक्षत्रमृत्तं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।

तारा के ६ नाम—( १ ) नक्षत्र ( २ ) ऋक्ष  
( ३ ) भ ( ४ ) तारा ( ५ ) तारका ( ६ ) उडु—यह  
नपुंसक लिङ्ग में है किन्तु विकल्प में स्त्रीलिङ्ग  
में भी होता है ।

( एकमश्विन्यादिभानाम् )

दाज्ञायण्योऽश्विनीत्यादिताराः

अश्विनी आदि (सत्ताडम) नक्षत्रों का नाम—  
( १ ) दाज्ञायण्य । यह स्त्रीलिङ्ग में नित्य बहु-  
वचनान्त होता है ।

( द्वे अश्विन्याः )

अश्वयुगाश्विनी ॥२१॥

अश्विनी नक्षत्र के २ नाम—( १ ) अश्वयुक्  
( २ ) अश्विनी ॥२१॥

( द्वे विशाखायाः )

राधा विशाखा

विशाखा नक्षत्र के २ नाम—( १ ) राधा ( २ )  
विशाखा ।

( त्रीणि पुष्यस्य )

पुष्ये तु सिध्य-तिष्यौ

पुष्य नक्षत्र के ३ नाम—( १ ) पुष्य ( २ )  
सिध्य ( ३ ) तिष्य ।

( द्वे धनिष्ठायाः )

श्रविष्ठाया ।

समा धनिष्ठा

धनिष्ठा नक्षत्र के २ नाम ( १ ) श्रविष्ठा ( २ )  
धनिष्ठा ।

( द्वे पूर्वभाद्रपदोत्तरभाद्रपदानाम् )

स्युः प्रोष्ठप्रदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥२२॥

पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा के २ नाम—  
( १ ) प्रोष्ठप्रदा ( २ ) भाद्रपदा । ये शब्द स्त्रीलिङ्ग  
नित्य बहुवचनान्त में होते हैं ॥२२॥

( त्रीणि मृगशिरसः )

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

मृगशिरा नक्षत्र के ३ नाम—( १ ) मृगशीर्ष  
( २ ) मृगशिरस् ( ३ ) आग्रहायणी ।

मृगशीर्षशिरोदेशस्थानां पञ्चानां श्वल्पतारकाणामेकम्  
इत्वंलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥२३॥

मृगशिरा नक्षत्र के मस्तक पर स्थित पांच  
छोटे-छोटे ताराओं का नाम—( १ ) इत्वंला ॥२३॥

( नव बृहस्पतेः )

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीर्षतिर्धिषणो गुरुः ।

जीव आह्निरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखरिडजः ॥२४॥

बृहस्पति के ६ नाम—( १ ) बृहस्पति ( २ )  
सुराचार्य ( ३ ) गीर्षति ( ४ ) धिषण ( ५ ) गुरु ( ६ )

१ 'इत्वंला' इति पाठान्तरम् ।

जीव (७) आङ्गिरस ( ८ ) वाचस्पति ( ९ ) चित्र-  
शिखरिण्डज ॥२४॥

( पट् शुक्रस्य )

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।

शुक्र के ६ नाम—( १ ) शुक्र ( २ ) दैत्यगुरु  
( ३ ) काव्य ( ४ ) उशनम् ( ५ ) भार्गव  
( ६ ) कवि ।

( पञ्च मङ्गलस्य )

अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥२५॥

मङ्गल के ५ नाम—( १ ) अङ्गारक ( २ ) कुज  
( ३ ) भौम ( ४ ) लोहिताङ्ग ( ५ ) महीसुत ॥२५॥

( त्रीणि बुधस्य )

रौहिणेयो बुधः सौम्य

बुध के ३ नाम—( १ ) रौहिणेय ( २ ) बुध  
( ३ ) सौम्य ।

( द्वे शने. )

समौ सौरि-शनैश्चरौ ।

शनि के २ नाम—( १ ) सौरि ( २ ) शनैश्चर ।  
ये दोनों शब्द अर्थ एवं लिङ्ग में समान हैं ।

( पञ्च राहोः )

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥२६॥

राहु के ५ नाम—( १ ) तम ( २ ) राहु ( ३ )  
स्वर्भानु ( ४ ) सैहिकेय ( ५ ) विधुन्तुद ॥२६॥

( एकं सप्तर्षीणाम् )

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखरिण्डनः ।

मरीचि-अत्रि प्रमुख सप्तर्षियों का नाम—[ १ ]  
चित्रशिखरिण्डन् । यह पुँल्लिङ्ग और नित्य बहु-  
वचनान्त हैं ।

( एकं राशयुदयस्य )

राशीनामुदयो लग्नं, ते तु मेघ-वृषादयः ॥२७॥

१ मरीचिरद्विरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु ।

वसिष्ठश्चेति सप्तैते शेषाश्चित्रशिखरिण्डन ॥

अर्थात्—( १ ) मरीचि ( २ ) अद्विरा ( ३ ) अत्रि  
( ४ ) पुलस्त्य ( ५ ) पुलह ( ६ ) क्रतु ( ७ ) वसिष्ठ  
ये सप्तर्षि चित्रशिखरिण्डी कहलाते हैं ।

२ मेघो वृषोऽथ मिथुन कर्कट मिह-कन्यके ।

राशियों के उदय का नाम—( १ ) लग्न ।

उन लग्नों के नाम—मेघ, वृष आदि ॥२७॥

( सप्तत्रिंशत् सूर्यस्य )

सूर-सूर्यार्यमाऽऽदित्य-द्वादशात्म-दिवाकराः ।

भास्कराहस्कर-ब्रध्न-प्रभाकर-विभाकराः ॥२८॥  
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्व-हरिदश्वोष्णरश्मयः ।

विकर्तनार्क-मार्तण्ड-मिहिरारुण-पूषण ॥२९॥

द्युमणिस्तरणिमित्रश्चित्रभानुर्विरोचन ।

विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषाम्पतिरहर्पति ॥३०॥

भानुर्हंस सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

सूर्य के ३७ नाम—( १ ) सूर ( २ ) सूर्य ( ३ )  
अर्यमन ( ४ ) आदित्य ( ५ ) द्वादशात्मन् ( ६ )  
दिवाकर ( ७ ) भास्कर ( ८ ) अहस्कर ( ९ ) ब्रध्न  
( १० ) प्रभाकर ( ११ ) विभाकर ( १२ ) भास्वत्  
( १३ ) विवस्वत् ( १४ ) सप्ताश्व ( १५ ) हरिदश्व ( १६ )  
उष्णरश्मि ( १७ ) विकर्तन ( १८ ) अर्क ( १९ )  
मार्तण्ड ( २० ) मिहिर ( २१ ) अरुण ( २२ ) पूषन्  
( २३ ) द्युमणि ( २४ ) तरणि ( २५ ) मित्र ( २६ )  
चित्रभानु ( २७ ) विरोचन ( २८ ) विभावसु ( २९ )  
ग्रहपति ( ३० ) त्विषापति ( ३१ ) अहर्पति ( ३२ )  
भानु ( ३३ ) हंस ( ३४ ) सहस्रांशु ( ३५ ) तपन ( ३६ )  
सवितृ ( ३७ ) रवि ॥२८—३०॥

तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकर कुम्भ-मीनकौ ॥

अर्थात्—( १ ) मेष ( २ ) वृष ( ३ ) मिथुन ( ४ ) मिह  
( ५ ) कन्या ( ७ ) तुला ( ८ ) वृश्चिक ( ९ ) धनु ( १० ) मकर  
( ११ ) कुम्भ ( १२ ) मीन ।

३ कहीं-कहीं ये श्लोक अधिक मिलते हैं—

पञ्चाक्षस्तेजसा राशिश्छायायानाथस्तमिस्रहा ।

कर्मसाक्षा जगच्चतुर्लोकवन्धुस्त्रयीतनु ॥

प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकवान्धव ।

इनो भगो धामनिधिश्चाशुमाल्यव्विनीपति ॥

अर्थात्—सूर्य के १७ और नाम—( १ ) पञ्चाक्ष ( २ )  
तेजसा राशि ( ३ ) छायायानाथ ( ४ ) तमिस्रहन् ( ५ ) कर्म  
साक्षिन् ( ६ ) जगच्चतुष्प ( ७ ) लोकवन्धु ( ८ ) त्रयीतनु ( ९ )  
प्रद्योतन ( १० ) दिनमणि ( ११ ) खद्योत ( १२ ) लोकवान्धव  
( १३ ) इन ( १४ ) भग ( १५ ) धामनिधि ( १६ ) अशुमालिन्  
( १७ ) अग्निनीपति ॥

( सूर्यपार्श्वस्थानां माठरादित्रयाणामेकैकम् )

माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विका

चण्डाशु ( सूर्य ) के पारिपार्श्विक ( समीपवर्ती चारो ओर के ग्रहों ) के एक-एक नाम—( १ ) माठर । ( १ ) पिङ्गल । ( १ ) दण्ड ॥३१॥

( पञ्च सूर्यसारथे. )

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गण्डाग्रजः ।

सूर्य के सारथी के ५ नाम—( १ ) सूरसूत ( २ ) अरुण ( ३ ) अनूरु ( ४ ) काश्यपि ( ५ ) गण्डाग्रज ।

( चत्वारि परिवेशस्य )

परिवेशस्तु परिधिरुपसूर्यक-मण्डले ॥३२॥

परिवेश (= सूर्य के चारो ओर, कभी-कभी दृश्यमान कुण्डलाकार तेज विशेष ) के ४ नाम—( १ ) परिवेश ( २ ) परिवि ( ३ ) उपसूर्यक ( ४ ) मण्डल । यहाँ 'परिवेश' के सादृश्य से 'परिधि' को पुँल्लिङ्ग समझना ॥३२॥

( एकादश किरणानाम् )

किरणोऽस्त्र-मयूखाशु-गभस्ति-घृणि-रश्मयः ।

भानु'करो मरीचिः स्त्री-पुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ३३

किरण के ११ नाम—( १ ) किरण ( २ ) उस्त्र ( ३ ) मयूख ( ४ ) अंशु ( ५ ) गभस्ति ( ६ ) घृणि ( ७ ) रश्मि ( ८ ) भानु ( ९ ) कर ( १० ) मरीचि ( ११ ) दीधिति । इनमें ( १-६ ) शब्द पुँल्लिङ्ग, और ( १० ) 'मरीचि' स्त्रीलिङ्ग-पुँल्लिङ्ग ( ११ ) स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥ ३३ ॥

( एकादश प्रभायाः )

स्युः प्रभा-रुग्धुचिस्त्विङ्भा-भाशुवि-घुतिदीप्तयः । रोचिः शोचिरुभे ह्रीवे

प्रभा के ११ नाम—( १ ) प्रभा ( २ ) रुच् ( ३ ) रुचि

१ उक्त सौरतन्त्रे—

रुक्मिण्य वामपार्श्वे तु दण्डारब्धो दण्डनायक ।

पश्चिस्तु दक्षिणे पार्श्वे पिङ्गलो वामभागत ।

यमोऽपि दक्षिणे पार्श्वे भवेन्माठरसंज्ञया ॥

२ 'धृष्ण्य' इति केचित्, 'वृत्तय' इत्यन्ये पठन्ति ।

( ४ ) त्विष् ( ५ ) भा ( ६ ) भास् ( ७ ) छवि ( ८ ) युति ( ९ ) दीप्ति ( १० ) रोचिष् ( ११ ) शोचिष् । इनमें 'प्रभा' से लेकर 'दीप्ति' शब्द तक स्त्रीलिङ्ग हैं, तथा 'रोचिष्' और 'शोचिष्' ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि आतपस्य )

प्रकाशो द्योत आतपः ॥३४॥

धूप के ३ नाम—( १ ) प्रकाश ( २ ) द्योत ( ३ ) आतप ॥३४॥

( चत्वारि ईपदुष्णस्य )

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

जरा-जरा गरम कुनकुना के ४ नाम—( १ ) कोष्ण ( २ ) कवोष्ण ( ३ ) मन्दोष्ण ( ४ ) कदुष्ण । ये नपुंसक लिङ्ग में हैं किन्तु तद्वान् (= वर्मवान् ) में तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

( त्रीणि अत्युष्णस्य )

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वत्

बहुत तेज गरम के ३ नाम—( १ ) तिग्म ( २ ) तीक्ष्ण ( ३ ) खर । ये तद्वत् ( कोष्ण शब्दकी भाँति ) हैं । तात्पर्य यह है कि नपुंसक लिङ्ग में हैं किन्तु धर्मवान् में तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

( द्वे मृगतृष्णायाः )

मृगतृष्णा मरीचिका ॥३५॥

मृगतृष्णा के २ नाम—( १ ) मृगतृष्णा ( २ ) मरीचिका ॥३५॥

इति दिग्वर्गः ३

अथ कालवर्गः

( चत्वारि सामान्यकालस्य )

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽपि

समय के ४ नाम—( १ ) काल ( २ ) दिष्ट ( ३ ) अनेहस् ( ४ ) समय ।

( द्वे प्रतिपत्तिये. )

अथ पक्षानि ।

प्रतिपद् द्वे इमे स्त्रीत्वे

प्रतिपदा के २ नाम—(१) पक्षति (२) प्रति-  
पद् । ये स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

( एकं सामान्यतिथेः )

तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥१॥

प्रतिपदादि का नाम—(१) तिथि । यह शब्द  
दोनों लिङ्गों (पुं० स्त्री०) में होता है ।

( पञ्च दिनस्य )

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीवे दिवस-वासरौ ।

दिन के ५ नाम—( १ ) घस्र (२) दिन (३)  
अहन् (४) दिवस (५) वासर । इनमें 'दिवस' और  
'वासर' पुंलिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसकलिङ्ग में भी  
होते हैं ।

( पट् प्रभातस्य )

प्रत्यूषोऽर्हमुखं कल्यमुषः प्रत्यूषसी अपि ॥२॥  
प्रभातं च

प्रातः काल के ६ नाम—(१) प्रत्यूष (२) अह-  
मुख (३) कल्य (४) उषस् (५) प्रत्यूषस् (६) प्रभात  
॥२॥ इनमें 'प्रत्यूष' शब्द पुंलिङ्ग के अतिरिक्त  
नपुंसक लिङ्ग में भी होता है ।

( एकं दिनान्तस्य )

दिनान्ते तु साय ।

दिनान्त का नाम—(१) साय ।

( द्वे सन्ध्यायाः )

सन्ध्या पितृप्रसूः ।

सन्ध्या के २ नाम—( १ ) सन्ध्या ( २ )  
पितृप्रसू ।

( एकं दिनाद्यन्तमध्यानाम् )

प्राह्णपराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यम्

प्रातः काल का नाम—(१) प्राह्ण । दोपहर का  
नाम—(१) मध्याह्ण । शाम का नाम—(१) अप-

१ किन्हीं-किन्हीं पुस्तकों में प्रातः काल के ३ और  
नाम मिलते हैं—व्युष्ट विभात द्वे क्लीवे, पुसि गोमर्ग  
इत्यने । अर्थात्—(२) व्युष्ट (२) विभात (३) गोमर्ग ।  
इनमें 'व्युष्ट' और 'विभात' ये दोनों नपुंसकलिङ्ग में और  
'गोमर्ग' पुंलिङ्ग में होते हैं ।

राह । इन तीनों का संयुक्त नाम 'त्रिसन्ध्य' है ।

( द्वादश रात्रेः )

अथ शर्वरी ॥३॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।  
विभावरी-तमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥३॥

रात्रि के १२ नाम—(१) शर्वरी (२) निशा  
(३) निशीथिनी (४) रात्रि (५) त्रियामा (६) क्षणदा  
(७) क्षपा (८) विभावरी (९) तमस्विनी (१०) रजनी  
(११) यामिनी (१२) तमी ।

( एकमत्यन्धकाररात्रेः )

तमिस्रा तामसी रात्रिः ।

अंधियारी रात का नाम—(१) तमिस्रा ।

( एकं ज्योत्स्नावद्वात्रेः )

ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।

चौदनी रात का नाम—( १ ) ज्यौत्स्नी ।

( एकं दिनद्वयमध्यगतरात्रेः )

आगामिवर्तमानाहर्गुण्यकार्या निशि पक्षिणी ॥५॥

आनेवाली और वर्तमान दिनवाली रात का  
नाम—(१) पक्षिणी ॥५॥

( एकं रात्रिसमुदायस्य )

गणरात्रं निशा बहुधः

बहुतसी रात्रियों का नाम—(१) गणरात्र ।

( द्वे रात्रिप्रारम्भस्य )

प्रदोषो रजनीमुखम् ।

रात्रि के पूर्व भाग के २ नाम—( १ ) प्रदोष  
(२) रजनीमुख ।

( द्वे रात्रिमध्यस्य )

अर्धरात्र-निशीथौ द्वौ

आधीरात के २ नाम—(१) अर्धरात्र (२)  
निशीथ ।

( द्वे प्रहरस्य )

द्वौ याम-प्रहरौ समौ ॥६॥

पहर के २ नाम—( १ ) याम ( २ ) प्रहर  
ये दोनों समानलिङ्ग (पुं) हैं ॥६॥

( एकं पर्वसन्धेः )

स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदशोर्यदन्तरम् ।

प्रतिपदा और पञ्चदशी (पूर्णिमा) के बीच वाली सन्धि का नाम—(१) पर्व ।

( एकं पक्षान्तस्य )

पञ्चदश्यौ द्वे

अमावस्या और पूर्णिमा का नाम—(१) पक्षान्त ।

( द्वे पूर्णिमायाः )

पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥७॥

पूर्णिमा के २ नाम—(१) पौर्णमासी (२) पूर्णिमा ॥७॥

( एकमनुमत्याः )

कलाहीने साऽनुमति

क्षीण चन्द्रकलावाली पूर्णिमा का नाम—(१) अनुमति ।

( एकं राकाया )

पूर्णे राका निशाकरे ।

पूर्ण चन्द्रकला सहित पूर्णिमा का नाम—(१) राका ।

( चत्वारि कृष्णपक्षान्ततिये. )

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गम ॥

अमावस्या के ४ नाम—(१) अमावास्या (२) अमावस्या (३) दर्श (४) सूर्येन्दुसङ्गम । इनमें 'दर्श' और 'सूर्येन्दुसङ्गम' ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ॥८॥

( एकं सिनीवाल्याः )

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली

अमावस्या में चन्द्रमा दिखलाई पड़े तो उसका नाम—(१) सिनीवाली ।

( एकं कुहः )

सा नष्टेन्दुकला कुहः ।

नष्ट चन्द्रकलावाली अमावस्या का नाम—(१) कुह ।

( द्वे ग्रहणस्य )

उपरागो ग्रहः

ग्रहण के २ नाम—(१) उपराग (२) ग्रह ।

( द्वे राहुग्रस्तस्येन्दोः सूर्यस्य च )

राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥९॥

सोपस्रवोपरकौ द्वौ

राहु से ग्रस्त हुए चन्द्र या सूर्य के २ नाम—(१) सोपस्रव (२) उपरक्त ॥९॥

( द्वे आकाशादिष्वग्निविकारस्य )

अग्न्युत्पात उपाहितः ।

धूमकेतु के २ नाम—(१) अग्न्युत्पात (२) उपाहित ।

( एकं समुच्चितचन्द्र-सूर्ययोः )

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकर-निशाकरौ ॥१०॥

सूर्य और चन्द्रमा का संयुक्त नाम—(१) पुष्पवन्तौ ॥१०॥

( एकं काष्ठाया )

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा

१८ निमेष = १ काष्ठा । ( 'अक्षिपक्षम-परिक्षेपो निमेष परिकीर्तित' के अनुसार एकबार पलक मारने के समय को 'निमेष कहते हैं )

( एकं कलायाः )

त्रिंशत्तु ना. कला ।

३० काष्ठा = १ कला ।

( एकं क्षणस्य )

तास्तु त्रिंशत्क्षण

३० कला = १ क्षण ।

( एकं मुहूर्तस्य )

ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥११॥

१२ क्षण = १ मुहूर्त । 'मुहूर्त' शब्द खीलिङ्ग को छोड़कर शेष दोनों लिङ्गों में होता है ॥११॥

( एकमहोरात्रस्य )

ते तु त्रिंशदहोरात्र

३० मुहूर्त = १ अहोरात्र ।

( एकं पक्षस्य )

पक्षस्ते दश पञ्च च !

१०+५ (= १५) अहोरात्र = १ पक्ष ।

( एकैकं शुक्ल-कृष्णपक्षयोः )

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्ल-कृष्णौ

मास के पूर्व पक्ष का नाम—(१) शुक्ल ।

मास के अपर पक्ष का नाम—(१) कृष्ण ।

( एकं मासस्य )

मासस्तु तावुभौ ॥१२॥

शुक्लपक्ष+कृष्णपक्ष = १ मास ॥१२॥

( एकस् ऋतोः )

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुः

मार्गशीर्ष आदि दो २ मास = १ ऋतु ।

( एकमयनस्य )

तैरयनं त्रिभिः ।

३ ऋतुओं का १ अयन ।

( एकैकमयनद्वयस्य )

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणाऽर्कस्य वत्सरः ॥१३॥

अयन दो प्रकार का होता है—एक सूर्य की उत्तरागति ( जिसे उत्तरायण कहते हैं ), और दूसरी दक्षिणा गति ( जिसे दक्षिणायन कहते हैं ) ।

२ अयन = १ वर्ष ॥१३॥

( द्वे समरात्रिदिवकालस्य )

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत् ।

जिस ( तुला संक्रान्ति और मेघसंक्रान्ति के ) समय दिन और रात बराबर होता है उस समय को ( १ ) विषुवत् ( २ ) विषुव कहते हैं ।

( चत्वारि मार्गशीर्षस्य )

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च स ॥१४॥

अग्रहण के ४ नाम—( १ ) मार्गशीर्ष ( २ )

सहस्र ( ३ ) मार्ग ( ४ ) आग्रहायणिक ॥ १४ ॥

( त्रीणि पौषस्य )

१ पौषे तैप-सहस्रौ द्वौ

पौष के ३ नाम—( १ ) पौष ( २ ) तैप ( ३ ) महस्य ।

( द्वे माघमासस्य )

तपा माघे

माघ के २ नाम—( १ ) तपस् ( २ ) माघ ।

( त्रीणि फाल्गुनस्य )

अथ फाल्गुने ।

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः

फाल्गुन के ३ नाम—( १ ) फाल्गुन ( २ )

तपस्य ( ३ ) फाल्गुनिक ।

( त्रीणि चैत्रस्य )

स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥१५॥

चैत्र के ३ नाम—( १ ) चैत्र ( २ ) चैत्रिक

( ३ ) मधु ॥ १५ ॥

( त्रीणि वैशाखस्य )

वैशाखे माघवो राधः

वैशाख के ३ नाम—( १ ) वैशाख ( २ )

माघव ( ३ ) राध ।

( द्वे ज्येष्ठमासस्य )

ज्येष्ठे शुक्रः

ज्येष्ठ के २ नाम—( १ ) ज्येष्ठ ( २ ) शुक्र ।

( द्वे आषाढस्य )

शुचिस्त्वयम् ।

आषाढे

आषाढ के २ नाम—( १ ) शुचि ( २ )

आषाढ ।

( त्रीणि श्रावणस्य )

श्रावणे तु स्यान्नभा श्रावणिकश्च सः ॥१६॥

श्रावण के ३ नाम—( १ ) श्रावण ( २ )

नभस् ( ३ ) श्रावणिक ॥ १६ ॥

१ किसी २ पुस्तक में यह श्लोक मिलता है—

पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा ।

नाम्ना न पौषो माघाद्यश्चैवमेकादशपरि ॥

अर्थात्—पुष्यनक्षत्रयुक्त पौर्णमासी को 'पौषी' कहते हैं ।

पौषा पौर्णमासी जिस मास में हो उस मास को पौष कहते

हैं । इसी प्रकार और भी माघ आदि ( १ मघा नक्षत्र २ फल्गुनी नक्षत्र ३ चित्रा ४ विशाखा ५ ज्येष्ठा ६ आषाढ ७ श्रवण ८ मघादश ९ अश्विनी १० कुत्तिका ११ मृग शिरा ) एगारह (=एकादश) महिना जानना ।

( चत्वारि भाद्रपदमासस्य )

स्युर्नभस्य-प्रौष्ठपद-भाद्र-भाद्रपदा समा ।

भाद्र के ४ नाम—(१) नभस्य (२) प्रौष्ठपद  
(३) भाद्र (४) भाद्रपद । ये समान लिङ्गवाचक हैं ।

( त्रीणि आश्विनस्य )

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि

कार के ३ नाम—(१) आश्विन (२) इष (३)  
आश्वयुज ।

( चत्वारि कार्तिकस्य )

स्यात्तु कार्तिके ॥१७॥

बाहुल्योर्जो कार्तिकिक ।

कार्तिक के ४ नाम—(१) कार्तिक (२) बाहुल  
(३) ऊर्ज (४) कार्तिकिक ॥१७॥

( एकं मार्ग-पौषाभ्यां निष्पन्नस्यतोः )

हेमन्त ।

अग्रहन-पौषमहिनेवाली ऋतु का नाम—(१)  
हेमन्त ।

( एकं माघ-फाल्गुनाभ्यामृतोः )

शिशिरोऽस्त्रियाम् ।

माघ-फाल्गुन महिनेवाली ऋतु का नाम—  
( १ ) शिशिर । यह शब्द ( स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर )  
पुंलिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में होता है ।

( त्रीणि चैत्र-वैशाखाभ्यामृतोः )

वसन्ते पुष्पसमय सुरभिः

चैत्र-वैशाख महिनेवाली ऋतु के ३ नाम—  
( १ ) वसन्त ( २ ) पुष्पसमय ( ३ ) सुरभि ।

( सप्त ज्येष्ठाषाढाभ्यामृतोः )

ग्रीष्म ऊष्मकः ॥१८॥

निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

ज्येष्ठ-आषाढ महिनेवाली ऋतु के ७ नाम—  
( १ ) ग्रीष्म ( २ ) ऊष्मक ( ३ ) निदाघ ( ४ )  
उष्णोपगम ( ५ ) उष्ण ( ६ ) ऊष्मागम ( ७ ) तप ॥१८॥

( द्वे आश्विनभाद्राभ्यामृतोः )

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूमि वर्षा

माघ-भाद्र महिनेवाली ऋतु के २ नाम—  
( १ ) प्रावृट् ( २ ) वर्षा । इनमें 'प्रावृट्' शब्द( पान्त ) स्त्रीलिङ्ग में, और 'वर्षा' शब्द स्त्रीलिङ्ग  
नित्य बहुवचनान्तमें होता है ।

( एकम् आश्विन-कार्तिकाभ्यामृतोः )

अथ शरत्स्त्रियाम् ॥१९॥

कार-कार्तिक महिनेवाली ऋतु का नाम—(१)  
शरद् । यह शब्द ( दकारान्त ) स्त्रीलिङ्ग में होता  
है ॥ १९ ॥

( हेमन्तादीना षण्णामेकम् )

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीना युगैः क्रमात् ।

मार्ग-शीर्ष आदि दो-दो महिने के ये हेमन्त  
आदि छ 'ऋतु' होते हैं । यह 'ऋतु' शब्द पुंलिङ्ग  
में होता है ।

( षट् सवत्सरस्य )

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समा

वर्ष के ६ नाम—( १ ) सवत्सर ( २ ) वत्सर  
( ३ ) अब्द ( ४ ) हायन ( ५ ) शरद् ( ६ ) समा ।  
इनमें 'संवत्सर' से लेकर 'हायन' शब्द पर्यन्त  
पुंलिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में, शरद् स्त्रीलिङ्ग में,  
और 'समा' स्त्रीलिङ्ग नित्य बहुवचनान्त है ॥२०॥

( एकमहोरात्रस्य )

मासेन स्यादहोरात्रः पत्र

मनुष्यों का १ महीना = पितरो का १  
अहोरात्र ( दिन-रात )

वर्षेण देवतः ।

मनुष्यों का १ साल = देवताओं का १ दिनरात  
दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मःदेवताओं का २००० युग = ब्रह्मा का १  
अहोरात्र ।

( एकं ब्रह्मणो दिनस्य )

कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥२१॥

• कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की अष्टमी तक  
पितरों का दिन होता है । शुक्लपक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष  
की अष्टमी तक पितरों की रात्रि होती है ।† देवताओं का 'उत्तरायण' दिन है और 'दक्षिणायन'  
रात्रि है ।‡ ब्रह्मा का दिन मनुष्यों का रिश्निकाल और ब्रह्मा की  
रात्रि मनुष्यों का प्रलयकाल है ।



उन देवताओं के २००० युग = ब्रह्मा का १  
अहोरात्र = मनुष्यों का कल्प।

( एकं मन्वन्तरस्य )

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

देवताओं के ७१ युग = १ मन्वन्तर ( नपुंसक  
लिङ्ग ) ।

( पञ्च प्रलयस्य )

संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥

विष्णुपुराण—

कृतं द्वापरं च कलिश्चेति चतुर्युगम् ।

प्रोच्यते तत्समस्तं तु ब्रह्मणो दिनमुच्यते ॥

अर्थात्—( कृत + त्रेता + द्वापर + कलि ) × १००० =  
ब्रह्मा का १ दिन ।

मनु का कथन है—

चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तु कृत युगम् ।

तस्य तावच्छती सख्या मन्व्याशश्च तथाविध ॥

इतरेषु ससन्ध्येषु ससन्ध्याशेषु च त्रिषु ।

एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥

एतद्द्वादशसाहस्रं देवानां युगमुच्यते ।

दैविकानां युगानां तु सहस्रं परिसंख्यया ॥

ब्राह्ममेकमहर्षेयं तावतीं रात्रिमेव च ॥

देववर्ष के अनुसार कृतयुग का मान = ४८००,

मनुष्य वर्षमान ,, ( ४८०० देववर्ष × ३६०  
दिन = ) १७२८०००

देववर्ष के अनुसार त्रेतायुग का मान = ३६००,

मनुष्यवर्षमान ,, = ( ३६०० × ३६० = )  
१२९६०००

देववर्ष के अनुसार द्वापर युग का मान = १४००,

मनुष्य वर्ष मान ,, = ( १४०० × ३६० = )  
५०४०००

देववर्ष के अनुसार कलियुग का मान = १२००

मनुष्य वर्षमान ,, = ( १२०० × ३६० = )  
४३२०००

चारों युगों का देववर्ष = ४८०० + ३६०० + १४००  
+ १२०० = १२०००

,, ,, मनुष्यवर्ष = १७२८००० + १२९६०००  
+ ५०४००० + ४३२०००  
= ४३२००००

देव वर्ष के अनुसार ब्रह्मा का दिन = १२००० × १०००  
= १२००००००

मनुष्य वर्ष ,, ,, ,, = ४३२००००० × १०००  
= ४३२०००००००

प्रलय के ५ नाम—( १ ) संवर्त ( २ ) प्रलय  
( ३ ) कल्प ( ४ ) क्षय ( ५ ) कल्पान्त ॥२२॥

( द्वादश पापस्य )

अस्त्री पङ्कं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिष-कल्मषम्  
कलुषं वृजिनैनोऽघमंहोदुरित-दुष्कृतम् ॥२३॥

पाप के १२ नाम—( १ ) पङ्क ( २ ) पाप्मन्  
( ३ ) पाप ( ४ ) किल्बिष ( ५ ) कल्मष ( ६ )  
कलुष ( ७ ) वृजिन ( ८ ) एनस् ( ९ ) अघ ( १० )  
अहस् ( ११ ) दुरित ( १२ ) दुष्कृत । इनमें ( १ )  
पङ्क ( स्त्रीलिङ्गवर्जित ) पुल्लिङ्ग और नपुंसक में,  
( २ ) पाप्मन् पुल्लिङ्ग में और शेष ( ३-१२ ) नपुं-  
सक लिङ्ग में होते हैं ॥२३॥

( पञ्च धर्मस्य )

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्य-श्रेयसी सुकृतं वृषः ।

धर्म के ५ नाम—( १ ) धर्म ( २ ) पुण्य  
( ३ ) श्रेयस् ( ४ ) सुकृत ( ५ ) वृष । इनमें ( १ )  
'धर्म' पुल्लिङ्ग और नपुंसक में, ( २-४ ) नपुंसक  
में और ( ५ ) वृष पुल्लिङ्ग में हैं ॥

( द्वादश आनन्दस्य )

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोद-सम्मदा ॥२४॥

स्यादानन्दथुरानन्द शर्म-शात-सुखानि च ।

आनन्द के १२ नाम—( १ ) मुद् ( २ ) प्रीति  
( ३ ) प्रमद ( ४ ) हर्ष ( ५ ) प्रमोद ( ६ ) आमोद  
( ७ ) सम्मद ( ८ ) आनन्दथु ( ९ ) आनन्द ( १० )  
शर्मन् ( ११ ) शात ( १२ ) सुख । इनमें ( १-२ )  
साहचर्य से स्त्रीलिङ्ग ( ३-९ ) पुल्लिङ्ग और ( १०  
१२ ) नपुंसक हैं ॥२४॥

( द्वादश कल्याणस्य )

श्व-श्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥२५॥

भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।

शस्तं च

कल्याण के १२ नाम—( १ ) श्व श्रेयस  
( २ ) शिव ( ३ ) भद्र ( ४ ) कल्याण ( ५ )  
मङ्गल ( ६ ) शुभ ( ७ ) भावुक ( ८ ) भविक  
( ९ ) भव्य ( १० ) कुशल ( ११ ) क्षेम ( १२ ) शस्त ।

इनमें (१-१०) नपुंसक में (११-१२) नपुंसक और पुंलिङ्ग में होते हैं ॥२५॥

अथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥२६॥

‘पाप’ ‘पुण्य’ और ‘सुख’ से लेकर ‘शस्त’ शब्द पर्यन्त द्रव्यवाचक होने पर तीनों लिङ्गों में होते हैं [ यथा—पाप पुमान्, पापा स्त्री, पापं कुलम् । ] ॥२६॥

( पञ्च प्रशस्तस्य )

मतल्लिका मचर्चिका प्रकारडमुद्धतल्लजौ ।

प्रशस्तवाचकान्यमूनि

प्रशस्त के ५ नाम—( १ ) मतल्लिका ( २ ) मचर्चिका ( ३ ) प्रकारड ( ४ ) उद्ध ( ५ ) तल्लज । ये पाँचों विशेष्य में अन्य लिङ्ग के समानाधिकरण में होने पर भी अपने लिङ्ग को नहीं छोड़ते । ( यथा—प्रशस्तो ब्राह्मण = ब्राह्मणमतल्लिका = ब्राह्मणोद्ध । प्रशस्ता गौ = गोमचर्चिका = गोप्रकारडम् । प्रशस्ता कुमारी = कुमारीतल्लज । ]

( एकं शुभावहविधेः )

अयः शुभावहो विधिः ॥२७॥

शुभकारक भाग्य का नाम—( १ ) अय । यह पुल्लिङ्ग है ॥ २७ ॥

( पट् भाग्यस्य )

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधि ।

भाग्य के ६ नाम—( १ ) दैव ( २ ) दिष्ट ( ३ ) भागधेय ( ४ ) भाग्य ( ५ ) नियति ( ६ ) विधि । इनमें ‘नियति’ स्त्रीलिङ्ग, ‘विधि’ पुल्लिङ्ग, और शेष नपुंसक हैं ।

( त्रीणि कारणस्य )

हेतुर्ना कारणं बीजम्

कारण के ३ नाम—( १ ) हेतु ( २ ) कारण ( ३ ) बीज । इसमें ( १ ) ‘हेतु’ पुल्लिङ्ग, ( २-३ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे मुख्यकारणस्य )

निदानं त्वादिकारणम् ॥२८॥

मुख्य कारण के २ नाम—( १ ) निदान ( २ ) आदिकारण ॥२८॥

( त्रीणि आत्मनः )

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः

शरीराधिदेवता के ३ नाम—( १ ) क्षेत्रज्ञ ( २ ) आत्मा ( ३ ) पुरुष ।

( द्वे प्रकृतेः )

प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

प्रकृति के २ नाम—( १ ) प्रधान ( २ ) प्रकृति । इनमें ( १ ) नपुंसक ( २ ) स्त्रीलिङ्ग है ।

( एकं कालावस्थायाः )

विशेषः कालिकोऽवस्था

समय द्वारा निर्मित देहादि के विशेष रूप ( बाल, यौवन, वृद्ध ) का नाम—( १ ) अवस्था ।

( त्रयाणां गुणानामप्येकैकम् )

गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥२९॥

गुणों के नाम—( १ ) सत्त्व ( २ ) रजस् ( ३ ) तमस् ॥२९॥

( पट् जननस्य )

जनुर्जनन जन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भव ।

जन्म लेने के ६ नाम—( १ ) जनुप् ( २ ) जनन ( ३ ) जन्मन् ( ४ ) जनि ( ५ ) उत्पत्ति ( ६ ) उद्भव । इनमें ( १-३ ) नपुंसक ( ४-५ ) स्त्रीलिङ्ग ( ६ ) पुल्लिङ्ग है ।

( पट् प्राणिनः )

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुर्जन्त्यु-शरीरिणः ३०

प्राणी के ६ नाम—( १ ) प्राणिन् ( २ ) चेतन ( ३ ) जन्मिन ( ४ ) जन्तु ( ५ ) जन्त्यु ( ६ ) शरीरिन । ( १-६ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥३०॥

( त्रीणि घटत्वादिकातेः )

जातिर्जातं च सामान्यम्

जाति के ३ नाम—( १ ) जाति ( २ ) जात ( ३ ) सामान्य ।

( द्वे घटादिव्यक्तेः )

व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

व्यक्ति के २ नाम—( १ ) व्यक्ति ( २ ) पृथ-  
गात्मता ।

( सप्त मनसः )

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हन्मानसं मनः ॥३१॥

मन के ७ नाम—( १ ) चित्त ( २ ) चेत  
( ३ ) हृदय ( ४ ) स्वान्त ( ५ ) हृद् ( ६ ) मानस  
( ७ ) मनस् । ये ( १ ७ ) नपुंसक हैं ॥३१॥

इति कालवर्गः ४

**अथ धीवर्गः ५**

( चतुर्विंश बुद्धेः )

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धी प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।  
प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संविदप्रतिपज्ज्ञप्तिचेतना ॥३२॥

बुद्धि के १४ नाम ( १ ) बुद्धि ( २ ) मनीषा  
( ३ ) धिषणा ( ४ ) धी ( ५ ) प्रज्ञा ( ६ ) शेमुषी ( ७ )  
मति ( ८ ) प्रेक्षा ( ९ ) उपलब्धि ( १० ) चिद्  
( ११ ) संविद् ( १२ ) प्रतिपद् ( १३ ) ज्ञप्ति ( १४ )  
चेतना ॥ १ ॥

( एकं धारणायुक्तबुद्धेः )

**धीधारणावती मेधा**

वारणा शक्तिवाली बुद्धि का नाम—( १ ) मेधा ।

( एकं मनोव्यापारस्य )

**सङ्कल्प कर्म मानसम् ।**

मानसिक कर्म का नाम—( १ ) सङ्कल्प ।

( द्वे चेतस सुखादौ तत्परतायाः )

**चित्ताभोगो मनस्कार**

सुख आदि में आसक्त मन के २ नाम—  
( १ ) चित्ताभोग ( २ ) मनस्कार ।

( त्रीणि विचारणस्य )

**चर्चा संख्या विचाराणा ॥३३॥**

१ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—

अवधान ममाधान प्रणिधान तथैव च ।

ममाधान के ३ नाम—( १ ) अवधान ( २ ) समा-  
धान ( ३ ) प्रणिधान ।

२ अन्य पुस्तकों में—

विचार ( प्रमाणों द्वारा अर्थ परीक्षा ) के ३  
नाम—( १ ) चर्चा ( २ ) संख्या ( ३ ) विचारणा ॥३॥

( त्रीणि तर्कस्य )

**अध्याहारस्तर्क ऊहः**

तर्क के ३ नाम—( १ ) अध्याहार ( २ ) तर्क  
( ३ ) ऊह ।

( चत्वारि संशयज्ञानस्य )

**विचिकित्सा तु संशयः ।**

**सन्देह-द्वापरौ च**

संशय के ४ नाम—( १ ) विचिकित्सा ( २ )  
संशय ( ३ ) सन्देह ( ४ ) द्वापर ।

( द्वे निश्चयज्ञानस्य )

**अथ समौ निर्णय-निश्चयौ ॥३॥**

निश्चय के २ नाम—( १ ) निर्णय ( २ ) निश्चय ।  
ये दोनों समान लिङ्ग ( पुल्लिङ्ग ) हैं ॥ ३ ॥

( द्वे परलोकाभाववादिज्ञानस्य )

**मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता**

परलोकाभाव ज्ञान के २ नाम—( १ ) मिथ्या-  
दृष्टि ( २ ) नास्तिकता ।

( द्वे परद्रोहचिन्तनस्य )

**व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।**

दूसरे से द्रोह करने का विचार करने के  
२ नाम—( १ ) व्यापाद ( २ ) द्रोहचिन्तन ।  
( इनमें पहला पुल्लिङ्ग और दूसरा नपुंसक है ) ।

( द्वे सिद्धान्तस्य )

**समौ सिद्धान्त-राद्धान्तौ**

सिद्धान्त के २ नाम—( १ ) सिद्धान्त ( २ )  
राद्धान्त । ये दोनों पुल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि भ्रमस्य )

**भ्रान्तिर्मिथ्यामतिभ्रमः ॥३४॥**

भ्रम के ३ नाम—( १ ) भ्रान्ति ( २ ) मिथ्या-  
मति ( ३ ) भ्रम ॥३४॥

विमर्शों भावना चैव वामना च निगद्यते ।

वासना के ३ नाम—( १ ) विमर्श ( २ ) भावना  
( ३ ) वासना ।

( दश अङ्गीकारस्य )

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रव-संश्रवा ।  
अङ्गीकाराभ्युपगम-प्रतिश्रव-समाधय ॥५॥

अङ्गीकार के १० नाम—( १ ) सविद् ( २ )  
आगू ( ३ ) प्रतिज्ञान ( ४ ) नियम ( ५ ) आश्रव  
( ६ ) संश्रव ( ७ ) अङ्गीकार ( ८ ) अभ्युपगम ( ९ )  
प्रतिश्रव ( १० ) समाधि । इनमें ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग  
हैं ॥५॥

( एकं मोक्षोपयोगिबुद्धेः )

मोक्षे धीज्ञानम्

मोक्ष में निरत बुद्धि का नाम—( १ ) ज्ञान ।

( एकं शिल्पादिविषयक बुद्धेः )

अन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयो ।

अन्यत्र ( मोक्षोपयोगि बुद्धि को छोड़कर )  
शिल्प ( कारीगरी ) और शास्त्र में लगनेवाली बुद्धि  
का नाम—( १ ) विज्ञान ।

( अष्टौ मोक्षस्य )

मुक्तिः कैवल्य-निर्वाण-श्रेयोनि श्रेयसामृतम् ॥६॥  
मोक्षोऽपवर्गः

मोक्ष के ८ नाम—( १ ) मुक्ति ( २ ) कैवल्य  
( ३ ) निर्वाण ( ४ ) श्रेयस ( ५ ) नि श्रेयस ( ६ )  
अमृत ( ७ ) मोक्ष ( ८ ) अपवर्ग ॥६॥

( त्रीणि अज्ञानस्य )

अथाज्ञानमविद्याहम्मति स्त्रियाम् ।

अज्ञान के ३ नाम—( १ ) अज्ञान ( २ )  
अविद्या ( ३ ) अहंमति ( स्त्री लिङ्ग ) ।

( रूपादिपञ्चकस्य प्रत्येकं त्रीणि )

रूपं शब्दो गन्ध-रस-स्पर्शाश्च विषया अमरी ॥७॥  
गोचरा इन्द्रियार्थाश्च

विषयों के नाम—( १ ) रूप ( २ ) शब्द  
( ३ ) गन्ध ( ४ ) रस ( ५ ) स्पर्श । इन्हीं को  
विषय, गोचर, इन्द्रियार्थ भी कहते हैं ॥७॥

( त्रीणि इन्द्रियाणाम् )

दृष्योक्तं विषयोन्द्रियम् ।

इन्द्रियों के ३ नाम—( १ ) दृषीक ( २ )  
विषयिन् ( ३ ) इन्द्रिय ।

( एकं गुह्यादीन्द्रियस्य )

कर्मेन्द्रियं तु पायवादि

कर्मेन्द्रिय के नाम—( १ ) गुदा आदि ।

( एकं ज्ञानेन्द्रियस्य )

मनो-नेत्रादि धीन्द्रियम् ॥८॥

ज्ञानेन्द्रिय के नाम—( १ ) मन ( २ ) नेत्र आदि ।

( द्वे कषायरसस्यः )

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री

कसैले रस के २ नाम—( १ ) तुवर ( २ )  
कषाय । इनमें पहला पुल्लिङ्ग, और दूसरा पुं० और  
नपुंसक में होता है ।

( एकं मधुरस्य )

मधुरो

मीठा रस का नाम—( १ ) मधुर ।

( एकं लवणस्य )

लवणः

नमकीन रस का नाम—( १ ) लवण ।

( एकं कटोः )

कटुः ।

कड़वे रस का नाम—( १ ) कटु ।

( एकं तिक्तस्य )

तिक्तः

तीते रस का नाम—( १ ) तिक्त ।

( एकं अम्लस्य )

अम्लश्च

खट्टे रस का नाम—( १ ) अम्ल ।

१ पायूपस्थे पाणि-पादौ वाक् चेतोन्द्रियमग्रहः ।

अर्थात्—( १ ) पायु ( = गुदा ), ( २ ) उपस्थ ( लिङ्ग, मग )  
( ३ ) हाथ ( ४ ) पैर ( ५ ) वाणी—ये ५ कर्मेन्द्रिय हैं ।

२ मन कर्षो तथा नेत्र रमना च त्वचा सट् ।

नामिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥

अर्थात्—( १ ) मन ( २ ) कान ( ३ ) आँख ( ४ ) जीभ  
( ५ ) त्वचा ( ६ ) नाक—ये ६ ज्ञानेन्द्रिय हैं ।

### रसाः पुंसि

‘तुवर’ सेकर ‘अम्ल’ पर्यन्त शब्दों को रस कहते हैं और रसवाचक होने पर ये पुल्लिङ्ग में होते हैं ।

तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥६॥

यदि वे द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥६॥

( एकं परिमलस्य )

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

मनुष्यों के मन हरण करनेवाली ( सुरतादि में वकुल-मालाओं के मर्दन से और चन्दनादि के घिसने से उत्पन्न ) सुगन्धि का नाम—(१) परिमल ।

( एक सुगन्धस्य )

आमोदं सोऽतिनिर्हारी

वह परिमल यदि अत्यन्त मनोहर हो तो उसका नाम—( १ ) आमोद ।

वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥१०॥

यहाँ से लेकर ‘गुणे शुक्लादयः पुंसि ॥१७॥’ तक जो शब्द हैं वे वाच्यलिङ्ग हैं ( अर्थात् विशेष्य के अनुसार तीनों लिङ्गों में होते हैं ) ॥१०॥

( द्वे दूरगामिगन्धस्य )

समाकर्षी तु निर्हारी

वही दूर की खुशबू के २ नाम—(१) समाकर्षिन् ( २ ) निर्हारिन् ।

( चत्वारि शोभनगन्धयुक्तस्य )

सुरभिर्घ्राणतर्पणः ।

इष्टगन्धः सुगन्धि स्यात्

सुगन्धि ( खुशबू ) के ४ नाम—(१) सुरभि (२) घ्राणतर्पण (३) इष्टगन्ध (४) सुगन्धि ।

( द्वे मुखवासनगुटिकादे )

आमोदी मुखवासनः ॥११॥

मुँह को सुगन्धित करनेवाले ‘पान’ आदि के २ नाम—(१) आमोदिन् (२) मुखवासन ॥११॥

( द्वे दुर्गन्धस्य )

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धः

दुर्गन्ध ( बदबू ) के २ नाम—(१) पूतिगन्धि (२) दुर्गन्ध ।

( द्वे अपक्रमांसादिगन्धस्य )

विस्त्रं स्यादामगन्धि यत् ।

कच्चे मास आदि की गन्ध के २ नाम—(१) विस्त्र (२) आमगन्धिन् ।

( त्रयोदश शुक्लवर्णस्य )

शुक्ल-शुभ्र-शुचि-श्वेत-विशद-श्येत-पाण्डुराः ॥१२॥  
अवदातः सितो गौरो वल्लो धवलोऽर्जुनः ।

सफेद रंग के १३ नाम—(१) शुक्ल (२) शुभ्र (३) शुचि (४) श्वेत (५) विशद (६) श्येत (७) पाण्डुर (८) अवदात (९) सित (१०) गौर (११) वल्ल (१२) धवल (१३) अर्जुन ॥१२॥

( त्रीणि पीतसंवर्लितशुक्लवर्णस्य )

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुः

कुछ पीलापन लिए हुए सफेद रंग के ३ नाम—(१) हरिण (२) पाण्डुर (३) पाण्डु ।

( द्वे धूसरवर्णस्य )

ईषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥१३॥

कुछ-कुछ सफेद (मटमैला) रंग के २ नाम—( १ ) ईषत्पाण्डु ( २ ) धूसर ॥१३॥

( सप्त कृष्णवर्णस्य )

कृष्णे नीलासित-श्याम-काल-श्यामल-मेचकाः

काला रंग के ७ नाम—( १ ) कृष्ण ( २ ) नील ( ३ ) असित ( ४ ) श्याम ( ५ ) काल ( ६ ) श्यामल ( ७ ) मेचक ।

( त्रीणि पीतवर्णस्य )

पीतो गौरो हरिद्रामः

पीला ( हरदी की आभा ) रंग के ३ नाम—( १ ) पीत ( २ ) गौर ( ३ ) हरिद्राम ।

( त्रीणि हरितवर्णस्य )

पालाशो हरितो हरित् ॥१४॥

हरा रंग के ३ नाम—( १ ) पालाश ( २ ) हरित ( ३ ) हरित् ॥१४॥

( त्रीणि रक्तवर्णस्य )

रोहितो लोहितो रक्तः

लाल के ३ नाम—( १ ) रोहित ( २ ) लोहित  
( ३ ) रक्त ।

( त्रीणि शोणवर्णस्य )

शोणः कोकनदच्छविः ।

लाल कमल के समान गाढा लाल रंग के २  
नाम—( १ ) शोण ( २ ) कोकनदच्छवि ।

( द्वे अरुणवर्णस्य )

अव्यक्तरागस्वरुण

गुलाबी रंग के २ नाम—( १ ) अव्यक्तराग  
( २ ) अरुण ।

( द्वे श्वेतरक्तवर्णस्य )

श्वेतरक्तस्तु पाटल ॥१५॥

सफेदी लिए हुए लाल रंग के २ नाम—( १ )  
श्वेतरक्त ( २ ) पाटल ॥१५॥

( द्वे कृष्णपीतस्य )

श्यावः स्यात्कपिशः

कालापन लिए हुए पीले रंग ( फीका रंग )  
के २ नाम—( १ ) श्याव ( २ ) कपिश ।

( त्रीणि कृष्णलोहितस्य )

धूम्र-धूमलौ कृष्णलोहिते ।

कालापन लिए हुए लाल रंग ( धूमिल रंग )  
के ३ नाम—( १ ) धूम्र ( २ ) धूमल ( ३ )  
कृष्णलोहित ।

( षट् कपिलवर्णस्य )

कडारः कपिलः पिङ्ग-पिशङ्गौ कद्रु-पिङ्गलौ ॥१६॥

भूरा रंग के ६ नाम—( १ ) कडार ( २ ) कपिल  
( ३ ) पिङ्ग ( ४ ) पिशङ्ग ( ५ ) कद्रु ( ६ ) पिङ्गल ॥१६॥

( षड् विचित्रवर्णस्य )

वित्रं किर्मीर-कल्माष-शवलैताश्च कर्बुरे ।

चित्र-कर्बुर ( चित-कवरा ) रंग के ६ नाम—  
( १ ) चित्र ( २ ) किर्मीर ( ३ ) कल्माष ( ४ ) शवल  
( ५ ) एत ( ६ ) कर्बुर ।

गुणे शुक्लादय पुंसि, गुणिलिङ्गास्तु तद्वति ६७

गुणवाचक होने पर 'शुक्ल' आदि शब्द  
पुंलिङ्ग में होते हैं । और गुणवाचक होने पर  
उनके अनुसार तीनों लिङ्गों में होते हैं [ यथा—  
शुक्लं वस्त्रं, शुक्ल पट, शुक्ला शाटी ] ॥१७॥

( इति धीवर्गः ५ )

## शब्दादिवर्गः ६

( सप्ताधिष्ठातृदेवतायाः )

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाण्वाणी सरस्वती ।

सरस्वती ( वाणी की अधिष्ठात्री देवी ) के  
७ नाम—( १ ) ब्राह्मी ( २ ) भारती ( ३ ) भाषा  
( ४ ) गिर ( ५ ) वाच् ( ६ ) वाणी ( ७ )  
सरस्वती ।

( षट् भाषणस्य )

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥१॥

बोलने के ६ नाम—( १ ) व्याहार ( २ ) उक्ति  
( ३ ) लपित ( ४ ) भाषित ( ५ ) वचन ( ६ )  
वचस् । इनमें ( १ ) पुंलिङ्ग ( २ ) स्त्रीलिङ्ग ( ३-६ )  
नपुंसक हैं ॥ १ ॥

( द्वे अपभ्रंशस्य )

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्यात्

अपभ्रंश शब्द के २ नाम—( १ ) अपभ्रंश  
( २ ) अपशब्द ।

( एक शब्दस्य )

शास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

शास्त्रों ( व्याकरण आदि ) में वाचक का  
नाम—( १ ) शब्द ।

( एक वाक्यस्य )

तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता

तिङन्त-सुबन्त-पदसमूह और वाक्य युक्त क्रिया का

नाम—( १ ) वाक्य ॥ २ ॥

( चत्वारि वेदस्य )

धृति' स्त्री वेद आन्नायत्मयो

वेद के ४ नाम ( १ ) श्रुति ( २ ) वेद  
( ३ ) आम्नाय ( ४ ) त्रयी । इनमें ( १, ४ ) खीलित  
( २-३ ) पुंलिङ्ग हैं ।

( एकं वेदविहितकर्मणः )

**धर्मस्तु तद्विधिः**

( धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुति  
के अनुसार ) उस वेद में कही हुई विधि का  
नाम—( १ ) धर्म ।

( वेदानां प्रत्येकमेकम् )

**ख्रियामृक्सामयजुषी**

वेदत्रयी का नाम—( १ ) ऋच् ( २ ) सामन्  
( ३ ) यजुष् । इनमें ( १ ) खीलित ( २-३ )  
नपुंसक हैं ।

( एकं वेदत्रयसंघातस्य )

**इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥**

इन तीनों वेद का संयुक्त नाम—( १ )  
त्रयी ॥ ३ ॥

( एकं वेदाङ्गस्य )

**शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गम्**

वेद के अङ्ग का नाम—( १ ) शिक्षा ।  
( इत्यादि से कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष,  
छन्दस् का अभिप्राय समझना । )

( द्वे ॐकारस्य )

**ॐकार-प्रणवौ समौ ।**

ॐकार के २ नाम—( १ ) ॐकार ( २ )  
प्रणव । ये दोनों समान अर्थ एव लिङ्ग ( पु० ) वाले हैं ।

( द्वे पूर्वचरितस्य महाभारतादेः )

**इतिहासः पुरावृत्तम्**

पूर्ववृत्तान्त वतलानेवाले ( महाभारत आदि )  
के २ नाम—( १ ) इतिहास ( २ ) पुरावृत्त ।

( एकं स्वराणाम् )

**उदात्ताद्याख्यं स्वराः ॥ ४ ॥**

१ शिक्षा कल्पो व्याकरण निरुक्त ज्योतिषा गतिः ।

छन्दोविचितिरित्येष षडंगो वेद उच्यते ॥

२ उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वराख्यः ।

चतुर्थं प्रश्नो नोक्तो यतोऽसौ छान्दसः स्मृतः ॥

स्वरों के नाम—( १ ) उदात्त । आदि से अनु-  
दात्त और स्वरित समझना ॥ ४ ॥

( एकैकं तर्कविद्यायाः, अर्थशास्त्रस्य )

**आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।**

गौतम आदि की रचित तर्क विद्या का नाम—

( १ ) आन्वीक्षिकी ।

बृहस्पति-कौटिल्य आदि के बनाए हुए अर्थ-  
शास्त्र का नाम—( १ ) दण्डनीति ।

( द्वे ज्ञातसत्यार्थभूतायाः कथायाः )

**आख्यायिकोपलब्धार्था**

कहानी ( यथा वासवदत्ता आदि के ) २ नाम—  
( १ ) आख्यायिका ( २ ) उपलब्धार्था ।

( द्वे व्यासादिप्रणीतभागवतपुराणादेः )

**पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥**

व्यासादि प्रणीत भागवत पुराण आदि के २  
नाम—( १ ) पुराण ( २ ) पञ्चलक्षण ॥ ५ ॥

( द्वे कथायाः )

**प्रबन्धकल्पना कथा**

कथा के २ नाम—( १ ) प्रबन्धकल्पना  
( २ ) कथा ।

( द्वे दुर्विज्ञानार्थप्रश्रयस्य )

**प्रवहिका प्रहेलिका ।**

१ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वशो मन्वन्तराणि च ।

वशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

—वाराहपुराणम् ।

अष्टादश पुराणानि पुराणशा प्रचक्षते ।

पाञ्च ब्राह्म वैष्णव च शैव भागवत तथा ॥

तथाऽन्यन्नारदीयश्च मार्कण्डेयश्च सप्तमम् ।

आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यं नवमं स्मृतम् ॥

दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं तथा ।

वाराहं द्वादशञ्चैव स्कान्दञ्चात्र त्रयोदशम् ॥

चतुर्दशं वामनकं कौर्मं पञ्चदशं स्मृतम् ।

२ प्रहेलिकालक्षणम्—

व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनाय ।

यत्र बाह्यार्थसम्बन्धः कथ्यते सा प्रहेलिका ॥

अस्योदाहरणम्, सुभाषितरत्नभाण्डागारे—

पहेली के नाम—प्रवहलिका ( २ ) प्रहेलिका ।

( द्वे मन्वादिस्मृतेः )

**स्मृतिस्तु धर्मसंहिता**

मनु आदि की स्मृति के २ नाम—( १ ) स्मृति ( २ ) धर्मसंहिता ।

( द्वे संग्रहस्य )

**समाहृतिस्तु संग्रहः ॥६॥**

संग्रह के २ नाम—( १ ) समाहृति ( २ ) संग्रह ॥ ६ ॥

( द्वे समस्यायाः )

**समस्या<sup>३</sup> तु समासार्था**

समस्या के २ नाम—( १ ) समस्या ( २ ) समासार्था ।

( द्वे लोकप्रवादस्य )

**किंवदन्ती जनश्रुतिः ।**

अफवाह के २ नाम—( १ ) किंवदन्ती ( २ ) जनश्रुति ।

( चत्वारि वार्तायाः )

**वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्**

वृत्तान्त के ४ नाम—( १ ) वार्ता ( २ ) प्रवृत्ति ( ३ ) वृत्तान्त ( ४ ) उदन्त ।

एकचतुर्नं आकोऽयं विलमिच्छन्न पन्नग ।

क्षीयते वर्द्धते चैव न समुद्रो न च चन्द्रमा ॥

१ पराशरस्मृति की भूमिका देखिए ।

२ विस्तरेणोपदिष्टानामर्थानां सूत्र-भाष्ययोः ।

निबन्धो यः समासेन संग्रहः तं विदुर्बुधा ॥

—नाट्यशास्त्रम्

३ यथा—‘सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी’ समस्या की पूर्ति

“विलोप्य बालमुखचन्द्रविम्बं कण्ठे च मुक्तावलिहारतारा ।

उन्निरागया भयभीतभीता सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी ॥”

और ‘कुर्वते कुरुते करोति कुरुत कुर्वन्त्यलकुर्वते’

समस्या की पूर्ति इस प्रकार होगी—

“यस्य द्वारि सदा समीर-वरुणौ समार्जनं हव्यवाट्

पक्ष शीतपुरातपप्रकरणं दक्षौ प्रतोहारत नृ ।

देवा सास्यविधिं च दास्यममरा वरुणो दशारय कथं

कुर्वते कुरुते करोति कुरुतः कुर्वन्त्यलकुर्वते ॥”

( षट् नाम्नः )

अथाह्वयः ॥ ७ ॥

**आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।**

नाम के ६ नाम—(१) आह्वय ( २ ) आख्या ( ३ ) आह्वा ( ४ ) अभिधान ( ५ ) नामधेय ( ६ ) नामन् । इनमें ( १ ) पुंलिङ्ग ( २-३ ) स्त्रीलिङ्ग ( ४-६ ) नपुंसक हैं ॥७॥

( त्रीणि आह्वानस्य )

**हृतिराकारणाऽऽह्वानम्**

पुकारने के ३ नाम—(१) हृति (२) आकारणा ( ३ ) आह्वान । इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग (३) नपुंसक हैं ।

( एकं बहुकर्तृकाह्वानस्य )

**संहृतिर्बहुभिः कृता ॥८॥**

बहुत लोगों के पुकारने का नाम—( १ ) संहृति ॥ ८ ॥

( द्वे ऋणदानादिनिमित्तविविधवादस्य )

**विवादो व्यवहारः स्यात्**

कर्ज के देन-लेने के सम्वन्ध में झगड़ा करने के २ नाम—(१) विवाद (२) व्यवहार ।

( द्वे वचनोपक्रमस्य )

**उपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।**

वात आरम्भ करने के २ नाम—(१) उपन्यास (२) वाङ्मुख ।

( द्वे प्रकृतोपपादकस्य दृष्टान्तादेः )

**उपोद्धात उदाहारः**

कही जानेवाली बात की पुष्टि के निमित्त दृष्टान्त, उदाहरण, भूमिका आदि देने के २ नाम—(१) उपोद्धात (२) उदाहार ।

( द्वे शपथस्य )

**शपनं शपथः पुमान् ॥९॥**

कसम खाने के २ नाम—(१) शपन (२) शपथ । इनमें (१) स्त्री (२) नपुंसक, (२) पुंलिङ्ग हैं ॥ ९ ॥

( त्रीणि प्रश्नस्य )

**प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च**



पूछने ( सवाल करने ) के ३ नाम—(१)  
प्रश्न (२) अनुयोग (३) पृच्छा ।

( द्वे उत्तरस्य )

प्रतिवाक्योत्तरे समे ।

जवाब देने के २ नाम—(१) प्रतिवाक्य  
(२) उत्तर । ये दोनों नपुंसक हैं ।

( द्वे मिथ्याविवादस्य )

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानम्

असत्य आक्षेप ( अर्थात् तुम्हारे यहाँ मेरा  
सौ रुपया बाकी है आदि ) के २ नाम—(१)  
मिथ्याभियोग (२) अभ्याख्यान ।

( द्वे सुरापानादि मिथ्यापापोद्भावनस्य )

अथ मिथ्यामिशंसनम् ॥१०॥

अभिशाप.

भूठे दोष ( तोहमत ) लगाने के २ नाम—  
(१) मिथ्यामिशंसन (२) अभिशाप ॥१०॥

( एकं प्रीतिविशेषजनितस्य मुखकण्ठादिशब्दस्य )

प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।

अनुरागज ( प्रेम से उत्पन्न हुए ) शब्द का  
नाम—(१) प्रणाद ।

( त्रीणि कीर्तः )

यश. कीर्तिः समज्ञा च

कीर्ति के ३ नाम—(१) यशस् (२) कीर्ति  
(३) समज्ञा ।

( चत्वारिस्तुते )

स्तव. स्तोत्रं स्तुतिर्नुति. ॥११॥

स्तुति के ४ नाम—(१) स्तव ( २ ) स्तोत्र  
( ३ ) स्तुति ( ४ ) नुति ॥११॥

( एकं द्विविधोक्तस्य )

आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तम्

दो-तीन बार कहे हुए शब्द का नाम—(१)  
आम्नेडित ।

( द्वे उच्चैर्घोषस्य )

उच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।

जोर से चिल्लाए हुए शब्द के २ नाम—(१)  
उच्चैर्घुष्ट (२) घोषणा ।

( एकं शोकादिना विकृतशब्दस्य )

काकु स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वने.

शोक भय आदि से विकृत शब्द का नाम—  
(१) काकु । यह स्त्रीलिङ्ग है ॥१२॥

( दश निन्दायाः )

अवर्णाक्षेप-निर्वाद-परीवादापवादवत् ।

उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे १३

निन्दा के १० नाम—(१) अवर्णा (२) आक्षेप  
(३) निर्वाद (४) परीवाद (५) अपवाद ( ६ ) उप-  
क्रोश (७) जुगुप्सा (८) कुत्सा (९) निन्दा (१०)  
गर्हण । इनमें (१-६) पुल्लिङ्ग, (७-९) स्त्रीलिङ्ग  
(१०) नपुंसक हैं ॥१३॥

( द्वे अप्रियवचसः )

पारुष्यमतिवादः स्यात्

अप्रियवचन के २ नाम—(१) पारुष्य (२)  
अतिवाद ।

( द्वे अपकारार्थवाक्यस्य )

भर्त्सनं त्वपकारणीः ।

अपकारयुक्त वाणी (फटकार) के २ नाम—  
(१) भर्त्सन (२) अपकारणि । इनमें ( १ ला ) नपुं-  
सक, (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

( एकं सन्निन्दभाषणस्य )

य सन्निन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् १४

बुराई के साथ 'उलहना देने का नाम—(१)  
परिभाषण ॥१४॥

( परस्त्रीनिमित्तं पुंसः, परपुरुषनिमित्तं स्त्रियाश्चा-  
क्रोशनस्येकम् )

तत्र त्वाच्चारणा य स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

पराई स्त्री या पर-पुरुष से मैथुन के निमित्त  
वातचीत करने का नाम—( १ ) आच्चारणा ।

१ उलहना दो प्रकार का होता है—

(अ) गुणों को प्रकट करते हुए यथा—

‘महाकुलीनस्य तव किमुचितमिदम् ?’

तुम्हारे जैसे महाकुलीन को क्या यह उचित है ?

( व ) निन्दा करते हुए यथा—

‘वन्धकीमुतस्य तवोचितमेवेदम् ।’

तुम्हारे जैसे कुलदा के पुत्र को यह उचित हो है ।

( द्वे सम्भाषणस्य )

स्यादाभाषणमालापः ।

आपस में मीठी २ बात करने के २ नाम—

( १ ) आभाषण ( २ ) आलाप ।

( एक प्रयोजनशून्यस्योन्मत्तादिवचनस्य )

प्रलापोऽनर्थकं वच ॥१५॥

फजूल वक्तावद करने का नाम—( १ )

प्रलाप ॥ १५ ॥

( द्वे बहुशो भाषणस्य )

अनुलापो मुहुर्भाषा

एक बात को फेट-फेट कर बार-बार कहने के

२ नाम—( १ ) अनुलाप ( २ ) मुहुर्भाषा ।

( द्वे रोदनपूर्वकभाषणस्य )

विलापः परिदेवनम् ।

रोते-रोते बात कहने के २ नाम—( १ )

( १ ) विलाप ( २ ) परिदेवन ।

( द्वे अन्योन्यविरुद्धवचनस्य )

विप्रलापो विरोधोक्तिः

परस्पर विरुद्ध बात कहने के २ नाम—( १ )

विप्रलाप ( २ ) विरोधोक्ति ।

( एकं मिथोभाषणस्य )

संलापो भाषणं मिथः ॥१६॥

प्राइवेट बात-चीत करने का नाम ( १ )

सलाप ॥ १६ ॥

( द्वे शोभनवचनस्य )

सुप्रलापः सुवचनम्

प्यारी बात के २ नाम—( १ ) सुप्रलाप ( २ )

सुवचन ।

( द्वे गोपनकारिवचनस्य )

अपलापस्तु निहवः<sup>१</sup> ।

कही हुई बात को छिपाने के २ नाम—( १ )

अपलाप ( २ ) निहव ।

( द्वे सन्देशवचनस्य )

सन्देशवाग्वाचिकं स्याद्

सन्देश कहने के २ नाम—( १ ) सन्देशवाच्

( २ ) वाचिक । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग, ( २ रा )

नपुंसक है ।

वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥१७॥

आगे के वाग्भेद ( 'रुशती' से लेकर

'सम्यक्' २१ श्लोकपर्यन्त ) तीनों लिङ्गों में

होते हैं ॥ १७ ॥

( एकमकल्याणवाचः )

रुशती वागकल्याणी

अशुभ वाणी का नाम—( १ ) रुशती ।

( एकं शुभवचनस्य )

स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।

शुभ वचन का नाम—( १ ) कल्या ।

( एकं सान्त्ववचनस्य )

अत्यर्थमधुरं सान्त्वम्

बहुत मीठे वचन का नाम—( १ ) सान्त्व ।

( द्वे सम्बद्धवचनस्य )

सङ्गतं हृदयङ्गमम् ॥१८॥

जी में डट जानेवाली बात के २ नाम—

( १ ) सङ्गत ( २ ) हृदयङ्गम ॥१८॥

( द्वे कर्कशवचनस्य )

निष्ठुरं परुषम्

असत्य अभियोग के ३ नाम—( १ ) चोष ( २ )

आक्षेप ( ३ ) अभियोग ।

( त्राणि शापस्य )

शापाक्रोशौ दुरेपणा ।

शाप के ३ नाम—( १ ) शाप ( २ ) आक्रोश

( ३ ) दुरेपणा ।

( त्रीणि चाटो. )

अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकयनम् ॥

चापलूना ( प्रेम के कारण झूठ बोलने ) के ३ नाम—

( १ ) चाटु ( २ ) चटु ( ३ ) श्लाघा । इनमें ( १-२ )

स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर शेष पुं नपुंसक में होते हैं ।

<sup>१</sup> अन्य पुस्तकों में निम्नांकित श्लोक मिलते हैं—

( त्रीणि अभियोगस्य )

चोषमाक्षेपाभियोगौ

कठोर वचन के २ नाम—(१) निष्ठुर  
(२) पुरुष ।

( द्वे भण्डादिवचनस्य )

आस्थमश्लीलम्

भौंड आदि के वचन के २ नाम—(१)  
ग्राम्य (२) अश्लील ।

( एकं प्रियसत्यवचनस्य )

सूनृतं प्रिय ।

सत्ये

प्यारी और सच बात का नाम—(१)  
सूनृत ।

( त्रीणि विरुद्धार्थस्य वचनस्य )

अथ सङ्कुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥१६॥

परस्पर विरोधी बात ( यथा—पश्यत्यनु  
श्रणोत्यकर्ण ) के ३ नाम—(१) सङ्कुल (२)  
क्लिष्ट (३) परस्परपराहते ॥ १६ ॥

( द्वे अशक्त्यादिनासम्पूर्णोच्चारितस्य )

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तम्

अशक्ति आदि से कही गयी अधूरी बात के  
२ नाम—(१) लुप्तवर्णपद (२) ग्रस्त ।

( द्वे शीघ्रोच्चारितवचसः )

निरस्तं त्वरितोदितम् ।

जल्दी से कही गयी बात के २ नाम—(१)  
निरस्त (२) त्वरितोदित ।

( द्वे श्लेषनिर्गमसहितवचनस्य )

अम्बूकृतं सनिष्ठीवम्

थूक का छीटा के सहित निकलनी हुई बात  
के २ नाम—(१) अम्बूकृत (२) सनिष्ठीव ।

( द्वे अर्थशून्यवचनस्य )

अवद्धं स्यादनर्थकम् ॥२०॥

विना मतलब की बात के २ नाम—(१)  
अवद्ध (२) अनर्थक ॥२०॥

( द्वे वक्तुमनर्हस्य वचसः )

अनक्षरमवाच्यं स्याद्

न कहने लायक बात के २ नाम—(१) अन-

क्षर (२) अवाच्य ।

( एकं मृपावचनस्य )

आहतं तु मृपार्थकम् ।

भूठा अर्थ रखनेवाला वचन ( यथा—

एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः ।

मृगतृष्णाम्भसि ज्ञातः शशशृङ्गधनुर्धरः ॥ )

का नाम—(१) आहत ।

( द्वे अप्रकटवचनस्य )

अथ म्लिष्टमविस्पष्टम्

अस्पष्ट वचन के २ नाम—(१) म्लिष्ट (२)  
अविस्पष्ट ।

( द्वे असत्यवचसः )

वितथं त्वनृतं वचः ॥२१॥

भूठ बात के २ नाम—(१) वितथ (२)  
अनृत ॥२१॥

( चत्वारि सत्यवचसः )

सत्यं तथ्यमृतं सम्यग्

सच बात के ४ नाम—(१) सत्य (२) तथ्य  
(३) ऋत (४) सम्यक् ।

अमूनि त्रिषु तद्वति ।

ये ( सत्य आदि ) शब्द विशेष्य वाचक होने  
पर तीनों लिङ्गों में होते हैं ( यथा—सत्या स्त्री,  
सत्य पुमान्, सत्य कुलम् । )

१ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक मिलते हैं—

( द्वे मोपहासस्य )

सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासम्

मजाक की बात के २ नाम—(१) सोल्लुण्ठन (२)  
सोत्प्रास ।

( द्वे रतिकूजितस्य )

भणितं रतिकूजितम् ।

रति समय में किए गये शब्द के २ नाम—(१)  
भणित (२) रतिकूजित ।

( पथ स्पष्टवचनस्य )

आव्यं ह्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥

स्पष्ट बात के ५ नाम—(१) आव्य (२) ह्य (३)  
मनोहारिन् (४) विस्पष्ट (५) प्रकटोदित ॥

( सप्तदश शब्दस्य )

शब्दे निनाद-निनद-ध्वनि-ध्वान-रव-स्वनाः ॥  
स्वान-निर्घोष-निर्हाद-नाद-निस्वान-निस्वनाः ।  
आरवाराव-संराव-विरावाः

शब्द के १७ नाम—(१) शब्द (२) निनाद  
(३) निनद (४) ध्वनि (५) ध्वान (६) रव (७)  
स्वन (८) स्वान (९) निर्घोष (१०) निर्हाद (११)  
नाद (१२) निस्वान (१३) निस्वन (१४) आरव  
(१५) आराव (१६) संराव (१७) विराव ॥२२॥

( एकं वस्त्रपर्णध्वनेः )

अथ मर्मरः ॥२३॥

स्वनिते घस्त्रपर्णानाम्

कपडा और पत्तों की आवाज का नाम—(१)  
मर्मर ॥२३॥

( एकं भूषणध्वनेः )

भूषणानां तु शिञ्जितम् ।

गहनों ( नूपुरादि ) की छमाछम आवाज का  
नाम (१) शिञ्जित ।

( पञ्च वीणादिस्वनितस्य )

निकाणो निकणः काणः कणः कणनमित्यपि ॥  
वीणायाः कणिते प्रादेः प्रकाण-प्रकणादयः ।

वीणा की आवाज के ५ नाम—(१) निकाण  
(२) निकण (३) काण (४) कण (५) कणन । इन  
शब्दों के 'प्र' आदि उपसर्ग जोड़ने से बने हुए  
'प्रकाण' 'प्रकण' आदि शब्द भी वीणा शब्द के  
अर्थ में होते हैं ॥२४॥

( द्वे बहुभिः कृतस्य महाध्वनेः )

कोलाहलः कलकलः

बहुत आदमियों से किए गए शोरगुल का  
नाम—(१) कोलाहल (२) कलकल ।

( एकं पक्षिशब्दस्य )

तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥

चिड़ियों के चहचहाने की आवाज का नाम  
(१) वाशित ॥२५॥

( द्वे प्रतिध्वनेः )

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने

प्रतिध्वनि के २ नाम—(१) प्रतिश्रुत् ( २ )  
प्रतिध्वान । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग, और ( २ रा )  
पुंलिङ्ग है ।

( द्वे गानस्य )

गीतं गानमिमे समे ॥

गाना के २ नाम—(१) गीत (२) गान । ये  
दोनों समान लिङ्ग ( नपुंसक ) हैं ॥

इति शब्दादिवर्गः ६

अथ नाट्यवर्गः ७

( स्वराणां पृथक्पृथक् एकैकम् )

निषादर्षभ-गान्धार-पङ्कज-मध्यम-धैवताः ।

पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकरणोत्थिताः स्वराः

तन्त्री ( वीणा आदि के तार ) और मनुष्यों  
के कण्ठ से उत्पन्न हुए स्वरों के नाम—( १ )  
निषाद (२) ऋषभ (३) गान्धार (४) पङ्कज<sup>२</sup> (५)  
मध्यम<sup>३</sup> (६) धैवत (७) पञ्चम<sup>४</sup> ॥१॥

( एकं सूक्ष्मध्वनेः )

काकली तु कले सूक्ष्मे

१ नाट्यशास्त्रे—

पङ्कजश्च ऋषभश्चैव गान्धारो मध्यमस्तथा ।

पञ्चमो धैवतश्चैव निषादः सप्त च रवरा ॥

२ नामा कण्ठमुरस्तालु जिह्वा दन्ताश्च सरपृष्ठान् ।

पङ्कजं सञ्जायते यस्मात्तस्मात्पङ्कज इति स्मृतम् ॥

३ तद्वदेवोत्थितो वायुरर कण्ठसमाहतः ।

नाभिं प्राप्नो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः ॥

४ वायु समुद्गतो नाभेः सरोद्धृतकण्ठमूर्धसु ।

विचरन्पथमस्थानप्राप्त्या पथम उच्यते ॥

नारदः—

पङ्कजं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्पमन् ।

अजाविकौ च गान्धारः क्रीडौ नर्दति मध्यमम् ॥

पुष्पसाधारण्ये कान्ते कोकिलो रौति पथमन् ।

अश्वस्तु धैवतं रौति निषाद रौति कृश्वरः ॥

मधुर ध्वनि का नाम—(१) काकली । यह स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( एकमव्यक्तमधुरध्वनेः )

ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।

कलः

मधुर और अस्पष्ट ध्वनि का नाम—(१) कल ।

( एक गम्भीरशब्दस्य )

मन्द्रस्तु गम्भीरे

गम्भीर ध्वनि का नाम—(१) मन्द्र ।

( एकमुच्चशब्दस्य )

तारोऽत्युच्चैः

ऊँची आवाज का नाम—(१) तार ।

त्रयस्त्रिंशु ॥२॥

ये तीनो ( कल, मन्द्र, तार ) शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥२॥

( एकं गीतवाद्यलयसाम्यस्य )

समन्वितलयस्त्वेकतालः

समन्वितलय ( गाना और वाजा की लय के साम्य ) का नाम—(१) एकताल ।

( त्रीणि वीणायाः )

वीणा तु घल्लकी ।

विपञ्ची

वीणा के ३ नाम—(१) वीणा (२) वल्लकी (३) विपञ्ची ।

( एकं 'सितार' इति ख्यातस्य )

सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥३॥

सात तारवाली वीणा ( सितार ) का नाम—(१) परिवादिनी ॥३॥

१ अन्य पुस्तकों में—

नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ।

स मन्द्र कण्ठमध्यस्थस्तार गिरसि गीयते ॥

अर्थात्—मनुष्यों के हृदय के बीच में बाह्य प्रकार की ध्वनि स्थित है उनमें कण्ठ के मध्य में स्थित ध्वनि का नाम—(१) मन्द्र, और गिर के मध्य में स्थित ध्वनि का नाम—(१) तार ।

( एकं वीणादिवाद्यस्य )

ततं वीणादिकं वाद्यम्

वीणा ( सितार, सारंगी, बेला, इमराज ) आदि का नाम—(१) तत ।

( एकं मुरजादिवाद्यस्य )

आनद्धं मुरजादिकम् ।

मृदङ्ग ( ढोल, तबला, पखावज ) आदि वाजा का नाम—(१) आनद्ध ।

( एकं वंशवाद्यस्य )

वंशादिकं तु सुषिरम्

बोंसुरी आदि वाजाओं का नाम—(१) सुषिर ।

( एकं कांस्यतालादेः )

कांस्यतालादिकं घनम् ॥४॥

काँसे के ताल ( घराटा, भोंक, मञ्जीरा ) आदि वाजाओं का नाम—(१) घन ॥४॥

( द्वे ततादि चतुष्टयस्य )

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादिनातोद्यनामकम् ।

इन चार प्रकार ( तत, आनद्ध, सुषिर, घन ) के वाजाओं के २ नाम—(१) वादिना (२) आतोद्य ।

( द्वे मृदङ्गस्य )

मृदङ्गा मुरजाः

मृदङ्ग के २ नाम—(१) मृदङ्ग (२) मुरज ।

( त्रीणि मृदङ्गभेदानाम् )

भेदास्त्रिंशद्व्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥५॥

मृदङ्ग के ३ भेद—(१) अङ्कय (२) आलिङ्गय (३) ऊर्ध्वक ॥५॥

२ नाट्यशास्त्रे—

तत चैवावनद्ध च घन सुषिरमेव च ।

चतुर्विधं तु विशेष्यमातोद्य लक्षणान्वितम् ॥

तत तन्त्रीगत शेषमनवद्ध तु पौष्करम् ।

घन तालस्तु विशेष्य सुषिरो वश उच्यते ॥

३ हरीतक्याकृतिस्त्वङ्गयो यवमध्यस्तयोर्ध्वक ।

आलिङ्गयश्चैव गोपुच्छो मध्यदक्षिणवामगा ॥

अर्थात्—हरीतकी की आकृति के समान अङ्कय, यव के मध्य भाग के समान ऊर्ध्वक, गोपुच्छ की आकृति समान आलिङ्गय होता है ।

( द्वे यशःपटहस्य )

स्याद्यशःपटहो ढक्का

नगारा के २ नाम—(१) यश पटह (२) ढक्का ।

( द्वे भेर्याः )

भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।

गुरही ( शहनाई ) के २ नाम—(१) भेरी (२) दुन्दुभि । इनमें (१) ला) स्त्रीलिङ्ग और (२) रा) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे पटहस्य )

आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्

डुग्गी के २ नाम—(१) आनक (२) पटह । इनमें (१) ला) पुल्लिङ्ग और (२) रा) पुल्लिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसक में भी होता है ।

( एकं वीणादिवादनस्य )

कोणो वीणादिवादनम् ॥६॥

वीणा आदि बजाने के लिए काष्ठनिर्मित धनुही का नाम—(१) कोण ॥६॥

( द्वे वीणादण्डस्य )

वीणादण्डः प्रवालः स्यात्

वीणा के दण्ड के २ नाम—(१) वीणा-दण्ड (२) प्रवाल ।

( द्वे वीणादण्डाधःस्थितशब्दगाम्भीर्यार्थ-  
चर्मावनद्धदारुमयभाण्डस्य )

ककुभस्तु प्रसेवकः ।

वीणाकी तूँवी के २ नाम—(१) ककुभ (२) प्रसेवक ।

( एकं तन्त्रीरहितवीणाकायस्य )

कोलम्बकस्तु कायोऽस्या

वीणा के तार रहित दण्ड आदि समुदाय ( टोंचा ) का नाम—(१) कोलम्बक ।

( द्वे यत्र तन्त्र्यो निबध्यन्ते तस्योर्ध्वभागस्य )

उपनाहो निबन्धनम् ॥७॥

१ 'भेर्यामानकदुन्दुभी' इत्यपि पाठ ।

वीणा के ऊपरवाले हिस्से—जिसमें तार बँधते हैं—के २ नाम—(१) उपनाह (२) निबन्धन ॥७॥

( वाद्यविशेषाणां पृथक् पृथक् एकैकम् )

वाद्यप्रभेदा डमरु-मड्डु-डिण्डिम-भर्भरः ।

मर्दलः पणवोऽन्ये च

बाजाओं के भेद—

डमरु का नाम—(१) डमरु ।

जलतरङ्ग का नाम—(१) मड्डु ।

तम्बूरा का नाम—(१) डिण्डिम ।

भौंभ का नाम—(१) भर्भर ।

मशक बाजा का नाम—(१) मर्दल ।

ढोल का नाम—(१) पणव ।

( द्वे नर्तक्याः )

नर्तकी-लासिके समे ॥८॥

नाचनेवाली के २ नाम—(१) नर्तकी (२) लासिका । ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८॥

( विलम्बित-द्रुत-मध्यानां नृत्यगीतवाद्यानां  
तत्त्वादिक्रमेणैकैकम् )

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।

धीरे धीरे नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) तत्त्व ।

जल्दी जल्दी नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) ओघ ।

मध्यम गति से नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) घन ।

( एकं तालस्य )

तालः कालक्रियामानम्

ताल देने और ताल मिनाने का नाम—(१) ताल ।

२ नाट्यशास्त्रे—

लयतालवर्गपदयनिगीत्यक्षरभावक भवेन्नत्वम् ।

आविद्धकरणवदुल उपर्युपरिपात्रिक द्रुतलय च ।

अनपेक्षितगीतार्थ वाप्य चोप्य दुष्प्रेक्ष्यम् ॥

मधुर ध्वनि का नाम—(१) काकली । यह स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( एकमव्यक्तमधुरध्वनेः )

ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।

कलः

मधुर और अस्पष्ट ध्वनि का नाम—(१) कल ।

( एक गम्भीरशब्दस्य )

मन्द्रस्तु गम्भीरे

गम्भीर ध्वनि का नाम—(१) मन्द्र ।

( एकमुच्चशब्दस्य )

तारोऽत्युच्चैः

ऊँची आवाज़ का नाम—(१) तार ।

त्रयस्त्रिंशु ॥२॥

ये तीनों ( कल, मन्द्र, तार ) शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥२॥

( एकं गीतवाद्यलयसाम्यस्य )

समन्वितलयस्त्वेकतालः

समन्वितलय ( गाना और वाजा की लय के साम्य ) का नाम—(१) एकताल ।

( त्रीणि वीणायाः )

वीणा तु वल्लकी ।

विपञ्ची

वीणा के ३ नाम—(१) वीणा (२) वल्लकी (३) विपञ्ची ।

( एकं 'सितार' इति ख्यातस्य )

सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥३॥

सात तारवाली वीणा ( सितार ) का नाम—

(१) परिवादिनी ॥३॥

१ अन्य पुस्तकों में—

नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ।

स मन्द्र कण्ठमध्यस्थस्तार शिरसि गीयते ॥

अर्थात्—मनुष्यों के हृदय के बीच में वाइस प्रकार की ध्वनि स्थित है उनमें कण्ठ के मध्य में स्थित ध्वनि का नाम—(१) मन्द्र, और शिर के मध्य में स्थित ध्वनि का नाम—(१) तार ।

( एकं वीणादिवाद्यस्य )

ततं वीणादिकं वाद्यम्

वीणा ( सितार, सारंगी, बेला, इसराज )

आदि का नाम—(१) तत ।

( एकं मुरजादिवाद्यस्य )

आनद्धं मुरजादिकम् ।

मृदङ्ग ( ढोल, तबला, पखावज ) आदि बाजा का नाम—(१) आनद्ध ।

( एकं वंशवाद्यस्य )

वंशादिकं तु सुषिरम्

बोंसुरी आदि बाजाओं का नाम—(१) सुषिर ।

( एकं कांस्यतालादेः )

कांस्यतालादिकं घनम् ॥४॥

कॉंसे के ताल ( घरटा, भॉंक, मञ्जीरा )

आदि बाजाओं का नाम—(१) घन ॥४॥

( द्वे ततादि चतुष्टयस्य )

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् ।

इन चार प्रकार ( तत, आनद्ध, सुषिर, घन ) के बाजाओं के २ नाम—(१) वादित्र (२) आतोद्य ।

( द्वे मृदङ्गस्य )

मृदङ्गा मुरजा

मृदङ्ग के २ नाम—(१) मृदङ्ग (२) मुरज ।

( त्रीणि मृदङ्गभेदानाम् )

भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्गयोर्ध्वकास्त्रयः ॥५॥

मृदङ्ग के ३ भेद—(१) अङ्कथ (२) आलिङ्गथ (३) ऊर्ध्वक ॥५॥

२ नाट्यशास्त्रे—

तत चैवावनद्ध च घन सुषिरमेव च ।

चतुर्विधं तु विशेष्यमातोद्यलक्षणान्वितम् ॥

तत तन्त्रीगत श्रेयमनवद्धं तु पौष्करम् ।

घन तालस्तु विशेष्यं सुषिरो वरा उच्यते ॥

३ हरीतक्याकृतिस्त्वङ्गयो यवमध्यस्तथोर्ध्वक ।

आलिङ्गथश्चैव गोपुच्छो मध्यदक्षिणवामगा ॥

अर्थात्—हरीतकी की आकृति के समान अङ्कथ, यव के मध्य भाग के समान ऊर्ध्वक, गोपुच्छ की आकृति समान आलिङ्गथ होता है ।

( द्वे यशःपटहस्य )

स्याद्यशःपटहो ढका

नगरा के २ नाम—(१) यश पटह (२) ढका ।

( द्वे भेर्याः )

भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।

तुरही ( शहनाई ) के २ नाम—(१) भेरी (२) दुन्दुभि । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग और (२ रा) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे पटहस्य )

आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्

हुग्गी के २ नाम—(१) आनक (२) पटह । इनमें (१ ला) पुल्लिङ्ग और (२ रा) पुल्लिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसक में भी होता है ।

( एकं वीणादिवादनस्य )

कोणो वीणादिवादनम् ॥६॥

वीणा आदि बजाने के लिए काष्ठनिर्मित धनुही का नाम—(१) कोण ॥६॥

( द्वे वीणादण्डस्य )

वीणादण्डः प्रवालः स्यात्

वीणा के दण्ड के २ नाम—(१) वीणा-दण्ड (२) प्रवाल ।

( द्वे वीणादण्डाधःस्थितशब्दगाम्भीर्यार्थ-  
चर्मावनद्धदारुमयभाण्डस्य )

ककुभस्तु प्रसेवकः ।

वीणाकी तूँवी के २ नाम—(१) ककुभ (२) प्रसेवक ।

( एकं तन्त्रीरहितवीणाकायस्य )

कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः

वीणा के तार रहित दण्ड आदि समुदाय ( दौंचा ) का नाम—(१) कोलम्बक ।

( द्वे यत्र तन्त्र्यो निबध्यन्ते तस्योर्ध्वभागस्य )

उपनाहो निबन्धनम् ॥७॥

१ 'धर्ममानकदुन्दुभि' इत्यपि पाठ ।

वीणा के ऊपरवाले हिस्से—जिसमें तार बँधते हैं—के २ नाम—(१) उपनाह (२) निबन्धन ॥७॥

( वाद्यविशेषाणां पृथक् पृथक् एकैकम् )

वाद्यप्रभेदा डमरु-मड्डु-डिरिडम-भर्भराः ।

मर्दलः पणवोऽन्ये च

वाजाओं के भेद—

डमरु का नाम—(१) डमरु ।

जलतरङ्ग का नाम—(१) मड्डु ।

तम्बूरा का नाम—(१) डिरिडम ।

झोंझ का नाम—(१) झर्झर ।

मशक वाजा का नाम—(१) मर्दल ।

ढोल का नाम—(१) पणव ।

( द्वे नर्तक्याः )

नर्तको-लासिके समे ॥८॥

नाचनेवाली के २ नाम—(१) नर्तकी (२) लासिका । ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८॥

( विलम्बित-द्रुत-मध्यानां नृत्यगीतवाद्यानां  
तत्त्वादिक्रमेणैकैकम् )

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वंमोघो घनं क्रमात् ।

धीरे धीरे नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) तत्त्वं ।

जल्दी जल्दी नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) ओघ ।

मध्यम गति से नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) घन ।

( एकं तालस्य )

तालः कालक्रियामानम्

ताल देने और ताल मिलाने का नाम—(१) ताल ।

२ नाट्यशास्त्रे—

लयतालवर्णपदयतिगीत्यन्तरभावक भवेत्तत्त्वम् ।

आविद्धकरणबहुल उपर्युपरिपाणिक द्रुतलयं च ।

अनपेक्षितगीतार्थ वाद्य चोद्य बुधैर्ज्ञेयम् ॥



( एकं गानतन्त्रीलयस्य )

लयः साम्यम्

लय ( गाना गाने, बजाने, पैर एक साथ उठने आदि को दिखाने के लिए काल और क्रिया साम्य ) का नाम—(१) लय ।

अथास्त्रियाम् ॥६॥

आगे आनेवाला ( तारडव ) शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥६॥

( पट् नृत्यस्य )

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।

नाच के ६ नाम—(१) ताण्डव (२) नटन (३) नाट्य (४) लास्य (५) नृत्य (६) नर्तन ।

( द्वे नाट्यस्य )

तौर्यत्रिकं नृत्य-गीत-चाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥१०॥

नाचने-गाने-बजाने के संयुक्त २ नाम—(१) तौर्यत्रिक (२) नाट्य ॥१०॥

( त्रीणि स्त्रीवेशधारिणो नर्तकस्य )

भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः ।

स्त्रीवेशधारी पुरुषः

स्त्री का वेश धारणकर नाचनेवाले पुरुष ( जनरल ) के ३ नाम—(१) भ्रुकुंस (२) भ्रुकुंस (३) भ्रुकुंस ।

नाट्योक्तौ

‘नाट्योक्तौ’ इस पदका ‘अङ्गहार’ (१६ श्लोक) के पहले तक अधिकार होने से आगामी नामों का प्रयोग नाटक में ही होगा ।

( एकमञ्जुकाया )

गणिकाज्जुका ॥११॥

स्टेज पर नाचनेवाली गणिका का नाम—(१) अञ्जुका ॥११॥

( एकं भगिनीपतेः )

भगिनीपतिरावुचः

वहिनोई का नाम—(१) आवुत्त ।

१ नाट्यशास्त्रे—

त्रयो लयाश्च विधेया दृढ-मध्य-विलम्बिता ॥

( एकं विदुषः )

भावो विद्वान्

विद्वान् का नाम—(१) भाव ।

( एकं जनकस्य )

अथावुकः ।

जनकः

पिता का नाम—(१) आवुक ।

( द्वे युवराजस्य )

युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥१२॥

युवराज ( राजकुमार ) के २ नाम—(१) कुमार (२) भर्तृदारक ॥१२॥

( द्वे राज्ञः )

राजा भट्टारको देवः

राजा के २ नाम—(१) भट्टारक (२) देव ।

( एकं राज्ञः सुतायाः )

तत्सुता भर्तृदारिका ।

राजकुमारी का नाम—(१) भर्तृदारिका ।

( एकं वद्धपट्टाया राज्ञ्याः )

देवी कृताभिषेकायाम्

पटरानी का नाम—(१) देवी ।

( एकमितरराज्ञ्या )

इतरासु तु भट्टिनी ॥१३॥

अन्य साधारण रानियों का नाम—(१) भट्टिनी ॥१३॥

( एकं वध्यस्य ब्राह्मणादेर्दोषोक्ते )

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ

मारने जानेवाले ब्राह्मण आदि को न मारने के लिए कहने का नाम—(१) अब्रह्मण्य ।

( एकं राज्ञः श्यालस्य )

राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।

राजा के शाले का नाम—(१) राष्ट्रिय ।

१ इसका पद वर्तमान शासनपद्धति के गवर्नर की भाँति होता था और श्री अमरसिंह के समय में यह राजा के शाले को मिलता था जो बाद में स्वतन्त्र राष्ट्रीय ( राठौर ) वंश ही हो गया ।

( द्वे मातुः )

अम्बा माता

माता के दो नाम—(१) अम्बा (२) माता ।

( द्वे कुमार्याः )

अथ बाला स्याद्वासू

कुमारी के २ नाम—(१) बाला (२) वासू ।

( द्वे आर्यस्य )

आर्यस्तु मारिष ॥१४॥

सूत्रधार-पार्श्ववर्ती के २ नाम—(१) आर्य (२) मारिष ॥१४॥

( एकं ज्येष्ठभगिन्याः )

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा

जेठी वहिन का नाम—(१) अत्तिका ।

( द्वे निर्वहणस्य )

निष्ठा निर्वहणे समे ।

मुख-प्रतिमुख-गर्भ-विमर्श-निर्वहण नामक नाटकीय सन्धि की ५ वीं सन्धि के २ नाम—(१) निष्ठा (२) निर्वहण । ये समानार्थक हैं, समान लिङ्ग वाले नहीं ।

( एकैकं नीचां चेटीं सखीं प्रति प्रत्याह्वानस्य )

हराडे हज्जे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति १५

नीच स्त्री के पुकारने का संवोधन—(१)

हराडे । चेरी के पुकारने का सम्बोधन—(१) हज्जे ।

सहेली के पुकारने का सम्बोधन—(१) हला ॥१५॥

( द्वे नृत्यविशेषस्य )

अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः

लचक-लचककर नाचने के २ नाम—(१)

अङ्गहार (२) अङ्गविक्षेप ।

( द्वे हस्तादिभिर्मनोगतभावाभिव्यञ्जकस्य )

व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

हाथ और अङ्गुलि के इशारा आदि से दिल

के अन्दर के भाव को प्रकट करने के २ नाम—

(१) व्यञ्जक (२) अभिनय । ये दोनों पुल्लिङ्ग हैं ।

( आङ्गिक-सात्विकगुणयोः क्रमेणैकैकम् )

निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिक-सात्विके

अङ्ग के विकार ( भौंह आदि सटकाने ) का नाम—(१) आङ्गिक ।

अन्त करण के भाव ( स्तम्भ स्वेदोऽथ रोमाञ्च स्वरभङ्गोऽथ वेपथु । वैवर्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्विका गुणा ) का नाम—(१) सात्विक ये दोनों शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥१६॥

( एकैकं शृङ्गारादिरसानाम् )

शृङ्गार-वीर-करुणाद्भुत-हास्य-भयानकाः ।

वीभत्स-रौद्रौ च रसाः

आठ प्रकार के रसों का एक-एक नाम—(१)

शृङ्गार (२) वीर (३) करुण (४) अद्भुत (५) हास्य

(६) भयानक (७) वीभत्स (८) रौद्र ।

( त्रीणि शृङ्गाररसस्य )

शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥१७॥

शृङ्गार रस के ३ नाम—(१) शृङ्गार (२)

शुचि (३) उज्ज्वल ॥१७॥

( द्वे वीररसस्य )

उत्साहवर्धनो वीरः

वीर रस के २ नाम—(१) उत्साहवर्धन (२)

वीर ।

( सप्त कर्णरसस्य )

कारुण्यं करुणा घृणा ।

कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽपि

१—नाट्यशाले—

शृङ्गार-हास्य-करुण-रौद्र-वीर-भयानका ।

वीभत्साद्भुतसङ्गौ चेत्यष्टौ नाट्ये रमा स्मृता ॥

२ शृङ्गाररस का उदाहरण—

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिजन्यै प्रलापैर्दयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवने यम् । अभिनवमदलीलालम् सुन्दरीणा स्तन-भरपरिखिन्न यौवन वा वन वा ।—( मट्टोद्भट्टस्य )

३ वीररस का उदाहरण—

क्षुद्रा सन्त्रासमेते विजडितहृद्यो भिरमस्तेभ्युन्मा युष्मदेहेषु लज्जा दधति परममी नायका निष्पदना । तौमित्रे तिष्ठ पात्र त्वमनि नहि न्पा नवरे मेननाद किधित्तरम्मलीलानियमितजलधि, राममन्दपयामि ॥ ( महा-नाटकस्य )

( एकं गानतन्त्रीलयस्य )

लयः साम्यम्

लय ( गाना गाने, बजाने, पैर एक साथ उठने आदि को दिखाने के लिए काल और क्रिया साम्य ) का नाम—(१) लय ।

अथास्त्रियाम् ॥६॥

आगे आनेवाला ( तारडव ) शब्द पुँलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥६॥

( षट् नृत्यस्य )

तारडवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।

नाच के ६ नाम—(१) तारडव (२) नटन (३) नाट्य (४) लास्य (५) नृत्य (६) नर्तन ।

( द्वे नाट्यस्य )

तौर्यत्रिकं नृत्य-गीत-वाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥१०॥

नाचने-गाने-बजाने के संयुक्त २ नाम—(१) तौर्यत्रिक (२) नाट्य ॥१०॥

( त्रीणि स्त्रीवेशधारिणो नर्तकस्य )

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तकः ।

स्त्रीवेशधारी पुरुषः

स्त्री का वेश धारणकर नाचनेवाले पुरुष ( जनखा ) के ३ नाम—(१) भ्रकुंस (२) भ्रुकुंस (३) भ्रकुंस ।

नाट्योक्तौ

‘नाट्योक्तौ’ इस पदका ‘अङ्गहार’ (१६ श्लोक) के पहले तक अधिकार होने से आगामी नामों का प्रयोग नाटक में ही होगा ।

( एकमज्जुकायाः )

गणिकाज्जुका ॥११॥

स्टेज पर नाचनेवाली गणिका का नाम—(१) अज्जुका ॥११॥

( एकं भगिनीपतेः )

भगिनीपतिरावुचः

वहिनोई का नाम—(१) आवुच ।

१ नाट्यशास्त्रे—

त्रयो लयाश्च विधेया दृत-मध्य-विलम्बिता ॥

( एकं विदुषः )

भावो विद्वान्

विद्वान् का नाम—(१) भाव ।

( एकं जनकस्य )

अथावुकः ।

जनकः

पिता का नाम—(१) आवुक ।

( द्वे युवराजस्य )

युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥१२॥

युवराज ( राजकुमार ) के २ नाम—(१) कुमार (२) भर्तृदारक ॥१२॥

( द्वे राज्ञः )

राजा भट्टारको देवः

राजा के २ नाम—(१) भट्टारक (२) देव ।

( एकं राज्ञः सुतायाः )

तत्सुता भर्तृदारिका ।

राजकुमारी का नाम—(१) भर्तृदारिका ।

( एकं बद्धपट्टाया राज्ञ्याः )

देवी कृताभिषेकायाम्

पटरानी का नाम—(१) देवी ।

( एकमितरराज्ञ्याः )

इतरासु तु भट्टिनी ॥१३॥

अन्य साधारण रानियों का नाम—(१) भट्टिनी ॥१३॥

( एकं वध्यस्य ब्राह्मणादेर्दोषोक्तेः )

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ

मारें जानेवाले ब्राह्मण आदि को न मारने के लिए कहने का नाम—(१) अब्रह्मण्य ।

( एकं राज्ञः श्यालस्य )

राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।

राजा के शाले<sup>१</sup> का नाम—(१) राष्ट्रिय ।

१ इसका पद वर्तमान शासनपद्धति के गवर्नर की भाँति होता था और श्री अमरसिंह के समय में यह पद राजा के शाले को मिलता था जो बाद में क्षत्रियों का एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय ( राठौर ) वंश ही हो गया ।

( द्वे मातुः )

**अम्बा माता**

माता के दो नाम—(१) अम्बा (२) माता ।

( द्वे कुमार्याः )

**अथ बाला स्याद्वासूः**

कुमारी के २ नाम—(१) बाला (२) वासू ।

( द्वे आर्यस्य )

**आर्यस्तु मारिषः ॥१४॥**

सूत्रधार-पार्श्ववर्त्ता के २ नाम—(१) आर्य (२) मारिष ॥१४॥

( एकं ज्येष्ठभगिन्याः )

**अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा**

जेठी बहिन का नाम—(१) अत्तिका ।

( द्वे निर्वहणस्य )

**निष्ठा निर्वहणे समे ।**

मुख-प्रतिमुख-गर्भ-विमर्श-निर्वहण नामक नाटकीय सन्धि की ५ वी सन्धि के २ नाम—(१) निष्ठा (२) निर्वहण । ये समानार्थक हैं, समान लिङ्ग वाले नहीं ।

( एकैकं नीचां चेटीं सखीं प्रति प्रत्याह्वानस्य )

**हरडे हज्जे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति १५**

नीच स्त्री के पुकारने का संबोधन—(१)

हरडे । चेरी के पुकारने का सम्बोधन—(१) हज्जे ।

सहेली के पुकारने का सम्बोधन—(१) हला ॥१५॥

( द्वे नृत्यविशेषस्य )

**अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः**

लचक-लचककर नाचने के २ नाम—(१)

अङ्गहार (२) अङ्गविक्षेप ।

( द्वे हस्तादिभिर्मनोगतभावामिव्यञ्जकस्य )

**व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।**

हाथ और अङ्गुलि के इशारा आदि से दित

के अन्दर के भाव को प्रकट करने के २ नाम—

(१) व्यञ्जक (२) अभिनय । ये दोनों पुल्लिङ्ग हैं ।

( भाङ्गिक-सात्विकगुणयोः क्रमेणैकैकम् )

**निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिक-सात्विके**

अङ्ग के विकार ( भौह आदि भटकाने ) का नाम—(१) आङ्गिक ।

अन्त करण के भाव ( स्तम्भ स्वेदोऽथ रोमाश्च स्वरभङ्गोऽथ वेपथु । वैवर्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्विका गुणा ) का नाम—(१) सात्विक ये दोनों शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥१६॥

( एकैकं शृङ्गारादिरसानाम् )

**शृङ्गार-वीर-करुणाद्भुत-हास्य-भयानकाः ।**

**वीभत्स-रौद्रौ च रसाः**

आठ प्रकार के रसों का एक-एक नाम—(१) शृङ्गार (२) वीर (३) करुणा (४) अद्भुत (५) हास्य (६) भयानक (७) वीभत्स (८) रौद्र ।

( त्रीणि शृङ्गाररसस्य )

**शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥१७॥**

शृङ्गार रस के ३ नाम—(१) शृङ्गार (२)

शुचि (३) उज्ज्वल ॥१७॥

( द्वे वीररसस्य )

**उत्साहवर्धनो वीरः**

वीर रस के २ नाम—(१) उत्साहवर्धन (२)

वीर ।

( सप्त करुणरसस्य )

**कारुण्यं करुणा घृणा ।**

**कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽपि**

१—नाट्यशाले—

शृङ्गार-हास्य- करुणा-रौद्र-वीर-भयानकाः ।

वीभत्स-अद्भुत-सङ्गौ चेत्यष्टौ नाट्ये रमा स्मृता ॥

२ शृङ्गाररस का उदाहरण—

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यै प्रलापैर्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनेयम् । अभिनवमदलीलालालस सुन्दरीणां स्तन-भरपरिखिन्न यौवन वा वन वा ।—( भट्टोद्भटस्य )

३ वीररस का उदाहरण—

क्षुद्रा सन्त्रासमेते विजहितहरयो भिन्नमत्तेभकुम्भा युष्मद्देहेषु लज्जा दधति परममौ सायका निष्पतन्त । सौमित्रे तिष्ठ पात्र त्वममि नहि रूपा नन्वह मेघनाद किञ्चित्तरम्भलीलानियमितजलधिं राममन्वेपयामि ॥ ( महा-नाट्यस्य )

करुण रस के ७ नाम—(१) कारुण्य (२) करुणा (३) घृणा (४) कृपा (५) दया (६) अनु-  
कम्पा (७) अनुक्रोश ।

( त्रीणि हास्यरसस्य )

अथो हसः ॥१८॥

हासो हास्यं च

हास्य रस के ३ नाम—(१) हस (२) हास  
(३) हास्य ॥१८॥

( द्वे बीभत्सरसस्य )

बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।

बीभत्स रस के २ नाम—(१) बीभत्स (२)  
विकृत । ये दोनो शब्द तीनों लिङ्गों ( पुं-स्त्री-नपु )  
में होते हैं ।

( चत्वारि अद्भुतरसस्य )

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमपि

अद्भुत रस के ४ नाम—(१) विस्मय (२)  
अद्भुत (३) आश्चर्य (४) चित्र ।

( नव भयानकरसस्य )

अथ भैरवम् ॥१९॥

१ करुणरस का उदाहरण—

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदय सस्पृष्टमुत्कण्ठया  
कण्ठस्तम्भिनवाष्पवृत्तिकलुपक्षिन्ताजड दर्शनम् ।  
वैकुण्ठ्यमम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकस  
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवै ।

—( अभिज्ञानशाकुन्तलस्य )

२ हास्यरस का उदाहरण—

आदौ वेश्या पुनर्दासी पश्चाद्भवति कुट्टिनी ।  
मर्वोपायपरिच्छीणा वृद्धा नारी पतिव्रता ॥

३ बीभत्स रस का उदाहरण—

उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं प्रथममथ पृथूच्छोमभूयासि  
मांसान्यसरिफण्णपिण्डाद्यवयवसुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा ।  
आत्तलायन्त्रनेत्र प्रकटितदशन प्रेतरङ्ग करङ्गादङ्गस्था-  
दस्थिमस्य स्थपुटगतमपि क्रम्यमव्यग्रमसि ।—( भवभूते )

४ अद्भुत रस का उदाहरण—

स्थाणु न्वय नूलविदिन प्व पुत्रो विरासो रमणी त्वपयां ।  
परोपनर्त कुसुमैरजस्य फलत्यमांष्ट किमिदं विचित्रम् ॥

दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् ।  
भयङ्करं प्रतिभयम्

भयानक रस के ६ नाम—(१) भैरव (२)  
दारुण (३) भीषण (४) भीष्म (५) घोर (६) भीम  
(७) भयानक (८) भयङ्कर (९) प्रतिभय ।

( द्वे रौद्ररसस्य )

रौद्रं तूग्रम्

रौद्र रस के २ नाम—(१) रौद्र (२) उग्र ।

अग्नी त्रिषु ॥२०॥

चतुर्दश

ये ( 'अद्भुत' से लेकर 'उग्र' तक ) १४  
शब्द रस के अर्थ में पुंलिङ्ग हैं और 'रसवाले' के  
अर्थ में तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥२०॥

( षट् भयस्य )

दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।

डर के ६ नाम—( १ ) दर ( २ ) त्रास  
( ३ ) भीति ( ४ ) भी ( ५ ) साध्वस ( ६ ) भय ।

( एकं विकारस्य )

विकारो मानसो भावः

मन के विकार का नाम—(१) भाव ।

( एकं रत्यादिसूचकरोमाञ्चादेः )

अनुभावो भावबोधक ॥२१॥

५ भयानक रस का उदाहरण—

इदं मधोन कुलिश धारासन्निहितानलम् ।  
स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय केवलम् ॥

—( दण्डि )

६ रौद्ररस का उदाहरण—

रे धृष्ट धार्तराष्ट्रा प्रबलभुजवृहत्ताण्डवा पाण्डवा  
रे रे वीर्य्या स-कृष्णा शृणुत मम वचो यद्रवीम्यूर्ध्वं बाहु ।  
एतस्योत्प्लावताहोर्द्धं पदनृपसुतातापिन पापिनो-  
ऽहं पाता हृच्छोषिताना प्रभवति यदि वस्तुक्लिमेत न पाथ ॥

७ नाट्यशास्त्रे—वागङ्गमुपरागैश्च मत्वेनाभिनयेन च ।  
कवेरन्तर्गतं भाव भावयन् भाव उच्यते ॥

८ नाट्यशास्त्रे—वागङ्गाभिनयेनेह यतस्त्वर्थोऽनुभाव्यते ।  
वागङ्गोपाद्गसयुक्तरत्ननुभावस्ततः स्मृत ॥

भाव का बोध करानेवाले ( रोमाञ्च आदि )

का नाम—(१) अनुभाव ॥२१॥

( त्रीणि अहंकारस्य )

गर्वोऽभिमानोऽहङ्कारः

अभिमान के ३ नाम—( १ ) गर्व ( २ ) अभिमान ( ३ ) अहङ्कार ।

( एकं मानस्य )

मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

चित्त की समुन्नति ( वङ्गपन्न ) का नाम—

( १ ) मान ।

( नव परिभवस्य )

अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥२२॥

रीढावमाननाघज्ञावहेलनमसूर्क्षाणम् ।

अपमान के ६ नाम—( १ ) अनादर ( २ )

परिभव ( ३ ) परीभाव ( ४ ) तिरस्क्रिया ( ५ )

रीढा ( ६ ) अवमानना ( ७ ) अवज्ञा ( ८ ) अव-

हेलन ( ९ ) असूर्क्षाण ॥२२॥

( पञ्च लज्जायाः )

मन्दाक्षं हीस्त्रपा व्रीडा लज्जा

लज्जा के ५ नाम—( १ ) मन्दाक्ष ( २ ) द्वी

( ३ ) त्रपा ( ४ ) व्रीडा ( ५ ) लज्जा ।

( एकं पित्रादेः पुरतो जातलज्जायाः )

साऽपत्रपाऽन्यतः ॥२३॥

पिता आदि के सामने लज्जा करने का नाम—

( १ ) अपत्रपा ॥२३॥

( द्वे क्षमायाः )

क्षान्तिस्तितिक्षा

दूसरे की उन्नति देख सकने के २ नाम—

( १ ) क्षान्ति ( २ ) तितिक्षा ।

( एकं परद्रव्येच्छायाः )

१ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक है—

( पट् दर्पस्य )

दर्पोऽञ्जलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः ।

दर्प के ६ नाम—( १ ) दर्प ( २ ) अञ्जलेप ( ३ ) अवष्टम्भ

( ४ ) चित्तोद्रेक ( ५ ) स्मय ( ६ ) मद ।

अभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

पराये विषय ( दूसरे के धन आदि ) में

इच्छा करने का नाम—( १ ) अभिध्या ।

( द्वे पराभ्युदयासहनस्य )

अज्ञान्तिरीर्ष्या

डाह रखने के २ नाम—( १ ) अज्ञान्ति ( २ ) ईर्ष्या ।

( एकमर्थदानादिषु गुणेषु दम्भकत्वादिरूपदोषा-  
रोपणस्य )

असूया तु दोषारोपो गुरोष्वपि ॥२४॥

पै लगाने ( अर्थात् किसी के गुण में दोष

निकालने का नाम—( १ ) असूया ॥२४॥

( त्रीणि वैरस्य )

वैरं विरोधो विद्वेष

वैर करने के ३ नाम—( १ ) वैर ( २ ) विरोध ( ३ ) विद्वेष ।

( त्रीणि शोकस्य )

मन्यु-शोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

अफसोस के ३ नाम—( १ ) मन्यु ( २ ) शोक

( ३ ) शुक् । इनमें ( १-२ ) पुंलिङ्ग और ( ३ ) स्त्री-  
लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि पश्चात्तापस्य )

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥२५॥

पछिताने के ३ नाम—( १ ) पश्चात्ताप ( २ )

अनुताप ( ३ ) विप्रतीसार ॥२५॥

( सप्त क्रोपस्य )

क्रोप-क्रोधामर्ष-रोष-प्रतिघा रुद्-क्रुधौ स्त्रियौ ।

गुस्सा करने ७ नाम—( १ ) क्रोप ( २ ) क्रोध

( ३ ) अमर्ष ( ४ ) रोष ( ५ ) प्रतिघा ( ६ ) रुप् ( ७ )

क्रुध । इनमें ( १-५ ) पुंलिङ्ग, ( ६-७ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकं शीलस्य )

शुचौ तु चरिते शीलम्

शुद्ध आचरण का नाम—( १ ) शील ।

( द्वे चित्तविभ्रमस्य )

उन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥२६॥

पागलपन के २ नाम—(१) उन्माद (२)  
चित्तविभ्रम ॥२६॥

( पञ्च स्नेहस्य )

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहः

प्रेम के ५ नाम—( १ ) प्रेमन् ( २ ) प्रियता  
( ३ ) हार्द ( ४ ) प्रेमन् ( ५ ) स्नेह । इनमें  
( १ ला ) पुँल्लिङ्ग ( ४ था ) नपुंसक है ।

( द्वादश इच्छायाः )

अथ दोहदम् ।

इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा

मनोरथः ॥२७॥

कामोऽभिलाषस्तर्षश्च

इच्छा के १२ नाम—(१) दोहद (२) इच्छा  
(३) काञ्छा (४) स्पृहा (५) ईहा (६) तृप्  
(७) वाञ्छा (८) लिप्सा (९) मनोरथ (१०)  
काम (११) अभिलाष (१२) तर्ष । ( इसमें 'दोहद'  
शब्द गर्भिणी की अभिलाषा वाले अर्थ में भी  
प्रयुक्त होता है ) ॥२७॥

( एकमतिप्रीतेः )

सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।

बड़ी चाहना का नाम—(१) लालसा । यह  
पु०-स्त्री लिङ्गों में होता है ।

( द्वे धर्मचिन्तनस्य )

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता

वार्मिक चिन्ता के २ नाम—(१) उपाधि (२)  
वर्मचिन्ता । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग है ।

( द्वे मनःपीडायाः )

पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥२८॥

मानसिक व्यथा (मन की विथा) के २ नाम—  
(१) आधि (२) मानसी व्यथा । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग  
(२) स्त्रीलिङ्ग है ॥२८॥

( त्रीणि स्मरणस्य )

स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानम्

स्मरण के ३ नाम—(१) चिन्ता (२) स्मृति  
(३) आध्यान ।

( द्वे उत्कण्ठायाः )

उत्कण्ठोत्कलिके समे ।

उत्कण्ठा के २ नाम—( १ ) उत्कण्ठा ( २ )  
उत्कलिका । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे उत्साहस्य )

उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्

उत्साह के २ नाम—( १ ) उत्साह ( २ )  
अध्यवसाय ।

( एकमतिशयिताध्यवसायस्य )

स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥२९॥

बहुत ताकत के साथ उत्साह रखने का नाम—  
(१) वीर्य ॥२९॥

( नव कपटस्य )

कपटोऽस्त्री व्याज-दम्भोपधयश्छद्म-कैतवे ।

कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यम्

कपट के ९ नाम—( १ ) कपट ( २ ) व्याज  
( ३ ) दम्भ ( ४ ) उपधि ( ५ ) छद्मन् ( ६ )  
कैतव ( ७ ) कुसृति ( ८ ) निकृति ( ९ ) शाठ्य ।  
इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर पुँल्लिङ्ग और  
नपुंसक में होता है, (२-४) पुं०, (५-६) नपुंसक  
( ७-८ ) स्त्री, ( ९ ) नपुंसक होते हैं ।

( द्वे कर्तव्यानवधानस्य )

प्रमादोऽनवधानता ॥३०॥

लापरवाही के २ नाम—(१) प्रमाद (२)  
अनवधानता ॥३०॥

( चत्वारि कौतुकस्य )

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।

आश्चर्यजनक खेल-तमाशे के ४ नाम—  
(१) कौतूहल (२) कौतुक (३) कुतुक (४) कुतूहल ।

( षट् स्त्रीणां विलासस्य )

स्त्रीणां विलास-विब्वोक-विभ्रमा ललितं तथा ।

नाट्यशास्त्रे —

स्थानासनगमनाना हस्तभ्रूनेत्रकर्मणा चैव ।

उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु विलासः स्यात् ॥

इष्टानां भावानां प्राप्तवभिमानगर्भसम्भूत ।

स्त्रीणामनादरकृते विब्वोको नाम विज्ञेयः ॥

**हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः ।**

स्त्रियों के शृङ्गार से उत्पन्न हाव-भाव क्रियाओं  
( अर्थात् चोंचले, नखरे ) आदि के ६ नाम—  
(१) विलास (२) विन्वोक (३) विभ्रम (४) ललित  
(५) हेला (६) लीला ॥३१॥

( षट् क्रीडामात्रस्य )

**द्रव-केलि-परीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ३२॥**

क्रीडा मात्र के ६ नाम—(१) द्रव (२) केलि  
(३) परीहास (४) क्रीडा (५) लीला (६) नर्मन् ॥३२॥

( त्रीणि स्वरूपाच्छादनस्य )

**व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च**

बहाना करने के ३ नाम—( १ ) व्याज (२)  
अपदेश (३) लक्ष्य ।

( त्रीणि बाललीलायाः )

**क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।**

लड़कों के खेल-कूद के ३ नाम—(१) क्रीडा  
(२) खेला (३) कूर्दन ।

( त्रीणि प्रस्वेदस्य )

**धर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्**

पसीना ( या घाम ) के ३ नाम—(१) धर्म  
(२) निदाघ (३) स्वेद ।

( द्वे परिस्पन्दननाशस्य )

**प्रलयो नष्टचेष्टता ॥३३॥**

बेहोशी के २ नाम—( १ ) प्रलय ( २ ) नष्ट-  
चेष्टता ॥३३॥

( द्वे आकारगोपनस्य )

**अवहित्याऽऽकारगुप्तिः**

विविधानामर्थानां वागद्वाह्यवसत्युक्तानाम् ।

मदरागहर्षजनितौ व्यत्यासो विभ्रमो नाम ॥

करचरणान्न्यास सञ्चनेत्रोष्ठसप्रयुक्तरु ।

सकुमारविधानेन स्त्रिभिरिदं स्मृतं ललितम् ॥

१ य एव भावाः सर्वेषां शृङ्गारससश्रयाः ।

समाख्याता बुधैर्हेला ललिताभिनयात्मिका ॥

रागमालाद्वारैः श्रितैः प्रीतिप्रयोजितैर्मधुरैः ।

शृङ्गारनस्यानुकूलिर्लोला श्रेया प्रयोगशः ॥

शोक से उतरे हुए चेहरे को छिपाने के २  
नाम—(१) अवहित्या (२) आकारगुप्ति ।

( द्वे हर्षादिना कर्मसु त्वरणस्य )

**समौ संवेग-सम्भ्रमौ ।**

खुशी के कारण जल्दी करने के २ नाम—  
(१) संवेग ( २ ) सम्भ्रम । ये दोनों समान लिङ्ग  
वाले (पुं०) हैं ।

( एकं परस्यामर्षजनकहासस्य )

**स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः**

सामिप्राय ( खिलखिला कर ) हास्य का नाम—  
(१) आच्छुरितक ।

( एकमिपद्धासस्य )

**स मनाक् स्मितम् ॥३४॥**

थोड़ी हँसी ( मुस्कराहट ) का नाम—( १ )  
स्मित ॥ ३४ ॥

( एकं मध्यमहासस्य )

**मध्यमः स्याद्विहसितम्**

मध्यम हास ( साधारण हँसी ) का नाम—  
(१) विहसित ।

( द्वे रोमाञ्जस्य )

**रोमाञ्जो रोमहर्षणम् ।**

रोंगटे खड़े होने के २ नाम—(१) रोमाञ्ज  
(२) रोमहर्षण ।

( त्रीणि रोदनस्य )

**क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टम्**

रोने के ३ नाम—(१) क्रन्दित ( २ ) रुदित  
(३) क्रुष्ट ।

( द्वे मुखदिविकासस्य )

**जृम्भस्तु जिषु जृम्भणम् ॥३५॥**

जम्हाई के २ नाम—( १ ) जृम्भ ( २ )

२ स्मितलक्षणम्—

इपदिकसितैर्देनैः कदाचित् सीष्टयान्वितम् ।

अलचितद्विज्झारमुत्तमानां स्मितं भवेत् ॥

३ विहसितलक्षणम्—

आकुचितकपोलान् नन्वन् नि खन् तथा ।

प्रस्तावोत्थ सानुरागनाहुर्विहसिन् दुषा ॥



जृम्भण । इनमे ( १ ) तीनों लिङ्गों में ( २ )  
नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥३५॥

( द्वे वंचनायुक्तभाषणस्य )

विप्रलम्भो विसंवादः

ठगपने से बातचीत करने के २ नाम—(१)  
विप्रलम्भ (२) विसंवाद ।

( द्वे धर्मादेश्वलनस्य, वालानां हस्तपादगमनस्य  
वा, पिच्छिलादौ पतनस्य वा )

रिङ्गणं स्वलनं समे ।

अपने धर्म से च्युत होने, अथवा वालकों के  
घुटनों के बल से रेंगने, अथवा पैर फिसल जाने  
के २ नाम—( १ ) रिङ्गण ( २ ) स्वलन । ये  
दोनों नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ।

( पञ्च निद्रायाः )

स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ३६

नींद के ५ नाम—(१) निद्रा (२) शयन (३)

स्वाप (४) स्वप्न (५) संवेश ॥३६॥

( द्वे निद्राया आलस्यस्य )

तन्द्री प्रमीला

नींद के कारण आलस आने ( खुमारी ) के  
२ नाम—(१) तन्द्री (२) प्रमीला ।

( त्रीणि क्रोधादिना ललाटसङ्कोचनस्य )

भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।

क्रोध आदि से भौंह टेढ़ी करने के ३ नाम—  
(१) भ्रुकुटि (२) भ्रुकुटि ( ३ ) भ्रूकुटि । ये तीनों  
स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

( एकं क्रूराया दृष्टे )

अदृष्टिः स्यादसौम्येऽदृष्टिः

टेढ़ी नजर करने का नाम—( १ ) अदृष्टि ।

( पञ्च स्वभावस्य )

संसिद्धि-प्रकृती त्विमे ॥३७॥

स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्च

स्वभाव के ५ नाम—(१) संसिद्धि (२) प्रकृति  
(३) स्वरूप (४) स्वभाव (५) निसर्ग ॥३७॥

( द्वे कम्पस्य )

अथ वेपथुः ।

कम्पः

काँपने के २ नाम—(१) वेपथु (२) कम्प ।

( पञ्च उत्सवस्य )

अथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥३८॥

उत्सव के ५ नाम—(१) क्षण ( २ ) उद्धर्ष  
(३) मह (४) उद्धव (५) उत्सव ॥३८॥

इति नाट्यवर्ग ७

अथ पातालभोगिवर्गः द

( पञ्च पातालस्य )

अधोभुवनपातालं वलिसद्व रसातलम् ।

नागलोक

पाताल के ५ नाम—(१) अधोभुवन (२)  
पाताल (३) वलिसद्वन् (४) रसातल (५) नागलोक ।

( एकादश विलस्य )

अथ कुहरं सुषिरं विवरं विलम् ॥३९॥

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा सुषिः ।

विल के ११ नाम—(१) कुहर (२) सुषिर  
(३) विवर (४) विल (५) छिद्र (६) निर्व्यथन (७)  
रोक (८) रन्ध्र (९) श्वभ्र (१०) वपा (११)  
सुषि ॥३९॥

( द्वे भूरन्ध्रस्य )

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे

जमीन के गड्ढे के २ नाम—(१) गर्त (२)  
अवट ।

( एक सरन्ध्रस्य )

सरन्ध्रे शुषिरं त्रिषु ॥४०॥

छेदवाली चीज़ का नाम—(१) शुषिर । यह  
तीनों लिङ्गों में होता है ॥४०॥

( पञ्च अन्धकारस्य )

अन्धकारोऽस्त्रिया ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

अन्धकार के ५ नाम—(१) अन्धकार (२)  
ध्वान्त (३) तमिस्र (४) तिमिर (५) तमस् । इनमें

( १ ला ) पुँक्षिज्ञ और नपुंसक मे , शेष (२-५)  
नपुंसक में होते हैं ।

( एकं घनान्धकारस्य )

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसम्

गाढे अन्धकार का नाम—(१) अन्धतमसम् ।

( एकं क्षीणतमसः )

क्षीणेऽवतमसम्

थोड़ी अंधियारी का नाम—(१) अवतमस ।

( एकं व्यापकतमसः )

तम. ॥३॥

विष्वक् संतमसम्

चारो ओर फैले हुए अन्धकार का नाम—  
(१) संतमस ॥३॥

( द्वे नागानाम् )

नागा. काद्रवेयाः

नागों के २ नाम—(१) नाग (२) काद्रवेय ।

( द्वे नागानां स्वामिनः )

तदीश्वरः ।

शेषोऽनन्तः

नागों के राजा के २ नाम—(१) शेष (२)  
अनन्त ।

( द्वे सर्पराजस्य )

वासुकिस्तु सर्पराजः

सर्पराज के २ नाम—( १ ) वासुकि ( २ )  
सर्पराज ।

( द्वे गोनसस्य )

अथ गोनसे ॥४॥

तिलित्सः स्यात्

गोहुँवन साँप के २ नाम—(१) गोनस (२)  
तिलित्स ।

( त्रीणि अजगरस्य )

अजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।

अजगर के ३ नाम—(१) अजगर (२) शयु  
(३) वाहस ।

( द्वे जलव्यालस्य )

मलगदो जलव्यालः

डोबहा ( पानी के साँप ) के २ नाम—(१)  
अलगरद (२) जलव्याल ।

( द्वे निर्विषस्य द्विमुखसर्पस्य )

समौ राजिल-डुरडुभौ ॥५॥

दुमुँहाँ धारीदार साँप के २ नाम—(१) राजिल  
(२) डुरडुभ ॥५॥

( द्वे चित्रसर्पस्य )

मालुधानो मातुलाहिः

चितकवरे साँप के २ नाम—(१) मालुधानं  
(२) मातुलाहि ।

( द्वे मुक्तत्वचः सर्पस्य )

निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।

कँचुली छोडे हुए साँप के २ नाम—(१)  
निर्मुक्त (२) मुक्तकञ्चुक ।

( पञ्चविंशतिः सर्पस्य )

सर्प. पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ॥६॥

आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरोस्प. ।

कुण्डली गूढपाचक्षुः श्रवाः काकोदर. फणी ७

दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ।

उरगः पन्नगो भोगी जिह्वग. पवनाशन. ॥८॥

सर्प के २५ नाम—(१) सर्प (२) पृदाकु (३)

भुजग (४) भुजङ्ग (५) अहि (६) भुजङ्गम (७)

आशीविष (८) विषधर (९) चक्रिन् (१०) व्याल

१ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक अधिक मिलने हैं—

लेलिहानो द्विरसनो गोकर्ण कञ्चुकी तथा ।

कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥

सर्प के और ८ नाम—(१) लेलिहान (२) द्विरसन

(३) गोकर्ण (४) कञ्चुकिन् (५) कुम्भीनन (६) फणधर

(७) हरि (८) भोगधर ।

( एक भोगस्य )

अहे. शरीरं भोगः स्यात्

सर्प के शरीर का नाम—(१) भोग ।

( द्वे अहिदृष्टिकाया )

आशीरप्यहिदंष्ट्रिणा ।

साँप के दाँत के २ नाम—(१) आशी (२) अहिदृष्टिका ।

(११) सरीसृप (१२) कुरङ्गलिन् (१३) गूढपाद  
(१४) चक्षुश्रवस् (१५) काकोदर (१६) फणिन्  
(१७) दर्वाकर (१८) दीर्घपृष्ठ (१९) दन्दशूक (२०)  
विलेशय (२१) उरग (२२) पन्नग (२३) भोगिन्  
(२४) जिह्मग (२५) पवनाशन ॥६-८॥

( एकं सर्पविषास्थ्यादेः )

**त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि**

साँप के विष, हड्डी आदि का नाम—(१)  
आहेय । यह शब्द तीनों लिङ्गों में होता है ।

( द्वे फणायाः )

**स्फटार्या तु फणा द्वयोः ।**

साँप के फन के २ नाम—(१) स्फटा (२)  
फणा । ये शब्द दोनों लिङ्गों ( पुं० स्त्री० ) में  
होते हैं ।

( द्वे सर्पत्वचः )

**समौ कञ्चुक-निर्मोकौ**

साँप की कँचुली के २ नाम—( १ ) कञ्चुक  
(२) निर्मोक । ये दोनों पुल्लिङ्ग हैं ।

( श्रीणि विषमात्रस्य )

**द्वेडस्तु गरलं विषम् ॥६॥**

जहर के ३ नाम—( १ ) द्वेड ( २ ) गरल  
(३) विष । इसमें (१) पुं०, (२-३) नपुं० में होते  
हैं ॥६॥

( स्थावरविषभेदानां प्रत्येकम् )

**पुंसि क्लीबे च काकोल-कालकूट-हलाहला ।  
सौराष्ट्रिकं शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रं प्रदीपन. १०  
दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।**

सुश्रुत में लिखा है—

स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते ।

वृक्ष, लता-पत्ता और पत्थर आदि जड़ पदार्थों में रहने  
वाले विष को 'स्थावर' कहते हैं । साँप, बिच्छू, बरें, चूहा,  
मकड़ा आदि में रहनेवाले विष को 'जङ्गम' कहते हैं ।

भाव प्रकाश में ६ प्रकार के विष लिखे हैं—

(१) कालकूट (२) हलाहल (३) सौराष्ट्रिक (४) ब्रह्म-  
पुत्र (५) प्रदीपन (६) वत्सनाभ (७) दारिद्र (८) सक्तुक  
(९) शृङ्गिक ।

ये विष के भेद हैं—(१) काकोल (२). काल-  
कूट (३) हलाहल (४) सौराष्ट्रिक (५) शौक्लिकेय  
(६) ब्रह्मपुत्र (७) प्रदीपन (८) दारद (९) वत्स-  
नाभ । इनमें (१-३) पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में  
होते हैं ॥१०॥

( द्वे गारुडिकस्य )

**विषवैद्यो जाडुलिकः**

सर्प के विष को दूर करनेवाले वैद्य के  
२ नाम—(१) विषवैद्य (२) जाडुगुलिक ।

( द्वे सर्पग्राहिणः )

**व्यालाग्राह्यहितुरिडकः ॥११॥**

साँप पकड़नेवाले के २ नाम—(१) व्याल-  
ग्राहिन् (२) अहितुरिडक ॥११॥

( इति पातालभोगिवर्गः ८ )

**अथ नरकवर्गः ६**

( चत्वारि नरकस्य )

**स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।**

नरक के ४ नाम—( १ ) नारक (२) नरक  
(३) निरय (४) दुर्गति । इनमें (१-३) पुं० ( ४ )  
स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( नरकभेदानां पृथक्-पृथक् प्रत्येकम् )

**तद्भेदास्तपनावीचि-महारौरव-रौरवाः ॥१॥**

**संघातः कालसूत्रं चेत्याद्या.**

नरक के भेद—( १ ) तपन ( २ ) अवीचि  
( ३ ) महारौरव ( ४ ) रौरव ( ५ ) संघात ( ६ )  
कालसूत्र इत्यादि ॥१॥

( एकं नरकस्थप्राणिनाम् )

**सत्त्वास्तु नारकाः ।**

**प्रेताः**

१ नरक के भेद का वर्णन अग्निपुराण, ब्रह्माण्डपुराण,  
वामनपुराण, वाराहपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, मार्कण्डेयपुराण  
देवीभागवत, शैवपुराण, विष्णुपुराण, ब्रह्मपुराण आदि में  
सविस्तर मिलता है ।

नरक में रहनेवाले प्राणियों का नाम—(१)  
अत्र ।

( एकं वैतरण्याः )

वैतरणी सिन्धुः

नरक की नदी का नाम—(१) वैतरणी ।

( एकं नारकीयाया अलक्ष्याः )

स्यादलक्ष्मीस्तु निर्मृतिः ॥२॥

नरक की अशोभा का नाम—(१)  
निर्मृति ॥२॥

( द्वे नरके हठावक्षेपस्य )

विष्टिराजः

नरक में जवर्दस्ती ढकेलने के २ नाम—  
( १ ) विष्टि ( २ ) आजू । ये स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि नरकपीडायाः )

कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

नरक की पीडा के ३ नाम—(१) कारणा (२)  
यातना (३) तीव्रवेदना ।

( नव दुःखस्य )

पीडा वाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम् ॥३॥

स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलम्

दुःख के ९ नाम—(१) पीडा (२) वाधा (३)  
व्यथा (४) दुःख (५) आमनस्य (६) प्रसूतिज (७)  
कष्ट (८) कृच्छ्र (९) अभील ॥३॥

त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ।

इनके भेद्यगामि (विशेषण) होने पर ये तीनों  
लिङ्गों में होते हैं ( यथा—दुःख सुतो निर्गुण,  
दुःखा सेवा, सर्व दुःख विवेकिन । )

( इति नरकवर्गः ९ )

१ अत्र पीडादिचतुष्क मन पीटाया । आमनस्यादि  
द्वय वैमनस्य । कष्टादि त्रय शरीरपीडाया इति भेदः ।

अर्थात् (१-४) मानसिक दुःख; (५-६) उदासी (७-९)  
शारीरिक दुःख के नाम हैं ।

अथ वारिवर्गः १०

( पञ्चदश समुद्रस्य )

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।  
उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥१॥  
रत्नाकरो जलनिधिर्यादः पतिरपापतिः ।

समुद्र के १५ नाम—(१) समुद्र (२) अब्धि  
( ३ ) अकूपार ( ४ ) पारावार (५) सरित्पति (६)  
उदन्वत् (७) उदधि (८) सिन्धु (९) सरस्वत् (१०)  
सागर (११) अर्णव (१२) रत्नाकर (१३) जलनिधि  
(१४) याद पति (१५) अपा पति ॥१॥

( समुद्रविशेषाणा पृथक्पृथगेकैकम् )

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥२॥

समुद्र के भेद—(१) क्षीरोद ( २ ) लवणोद  
इत्यादि ( ३ ) दध्यूद ४ घृतोद ५ सुरोद ६ इक्षूद  
७ स्वादूद ) ॥२॥

( सप्तविंशतिर्जलस्य )

आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।  
पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥३॥  
कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।  
अम्भोऽर्णस्तोय-पानीय नीर-क्षीराम्बु-शम्बरम् ४  
मेघपुष्पं घनरसः

जल के २७ नाम—(१) आप (२) वार (३)  
वारि (४) सलिल (५) कमल (६) जल (७) पयम्  
( ८ ) कीलाल (९) अमृत (१०) जीवन (११) भुवन  
(१२) वन (१३) कवन्ध (१४) उदक (१५) पाथम्  
(१६) पुष्कर ( १७ ) सर्वतोमुख ( १८ ) अम्भम्  
(१९) अर्णम् (२०) तोय (२१) पानीय (२२) नीर  
(२३) क्षीर (२४) अम्बु ( २५ ) शम्बर ( २६ )  
मेघपुष्प (२७) घनरस । इनमें आप शब्द निय  
स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त में होता है ( यथा—‘आपो-  
मिर्मर्जिन वृत्वा’ ) और ‘वार’ पूर्वोत्तर में वाच्य  
से स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥३-४॥

( द्वे जलविकारस्य )

त्रिषु द्वे आन्यसम्भयम् ।

जलविकार ( वर्फ, गन्ध, अग्नि ) के २ नाम—

( १ ) आप्य ( २ ) अम्मय । ये तीना लिङ्गों में होते हैं ।

( चत्वारि तरङ्गस्य )

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिः

लहर के ४ नाम—(१) भङ्ग (२) तरङ्ग (३) ऊर्मि (४) वीचि । इनमें (१-२) पुं०, (३) पुं० स्त्री, (४) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे महातरङ्गस्य )

अथोर्मिषु ॥५॥

महत्सल्लोल-कल्लोलौ

बड़ी लहर ( ज्वार ) के २ नाम—(१) उल्लोल (२) कल्लोल ॥५॥

( एकं जलानां भ्रमणस्य )

स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः ।

भेवर ( जल के मण्डलाकार घूमने ) का नाम—(१) आवर्त ।

( चत्वारि जलकणस्य )

पृषन्ति बिन्दुपृषता. पुमांसो विप्रुषःस्त्रियाम् ॥६॥

पानी की बूँद के ४ नाम—( १ ) पृषत् (२) बिन्दु ( ३ ) पृषत (४) विप्रुष । इनमें (१) नपुसक (२-३) पुल्लिङ्ग (४) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ॥६॥

( द्वे चक्राकारेण जलानामधोयानस्य )

चक्राणि पुटभेदा. स्यु

चक्कर काटकर नीचे जानेवाले पानी के २ नाम—(१) चक्र (२) पुटभेद ।

( द्वे जलनि सरणजालकस्य )

भ्रमाश्च जलनिर्गमा. ।

फव्वारा छूटने के २ नाम—(१) भ्रम ( २ ) जलनिर्गम ।

( पञ्च तीरस्य )

कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥७॥

नदी के किनारे के ५ नाम—(१) कूल (२) रोध (३) तीर (४) प्रतीर (५) तट । इनमें 'तट' शब्द तीनों लिङ्गों में होता है ॥७॥

( एकैकं परतीरावरतीरयोः )

पारावारे परार्वाची तीरे

नदी के उस पार वाले किनारे का नाम—(१) पार ।  
नदी के इस पार वाले किनारे का नाम—(१) अवार ।

( एकं कूलयोर्मध्यस्य )

पात्रं तदनन्तरम् ।

पाट ( दोनों किनारों के मध्यभाग ) का नाम—(१) पात्र ।

( द्वे जलमध्यस्थस्थानस्य )

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥८॥

टापू के २ नाम—(१) द्वीप (२) अन्तरीप ।  
ये दोनों शब्द पुल्लिङ्ग और नपुसक लिङ्ग में होते हैं ॥८॥

( एकं जलादचिरनिर्गततटस्य )

तोयोत्थितं तत्पुलिनम्

जल में रेती पड़ जाने का नाम—(१) पुलिन ।

( द्वे वालुकामयतटस्य )

सैकतं सिकतामयम् ।

वालूदार किनारे के २ नाम—(१) सैकत (२) सिकतामय ।

( पञ्च कर्दमस्य )

निषद्वरस्तु जम्बाल पङ्कोऽस्त्री शाद-कर्दमौ ॥९॥

कीचड़ के ५ नाम—(१) निषद्वर (२) जम्बाल (३) पङ्क (४) शाद (५) कर्दम । इनमें ( ३ रा ) पुल्लिङ्ग और नपुसक लिङ्ग में होता है, शेष पुल्लिङ्ग हैं ॥९॥

( द्वे प्रवृद्धजलस्य निर्गममार्गस्य )

जलोच्छ्वासा परीवाहाः

नल के २ नाम—( १ ) जलोच्छ्वास ( २ ) परीवाह ।

( द्वे शुष्कनद्यादौ कृतगतस्य )

कूपकास्तु विदारकाः ।

सूखी नदियों में जल के निमित्त बनाए गए गड्ढे के २ नाम—(१) कूपक (२) विदारक ।

( एक नौतरणयोग्यजलस्य )

नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतायें

नाव से पार होने लायक नदी आदिका नाम—

(१) नाव्य । यह तीनों लिङ्गों में होता है ।

( त्रीणि नौकायाः )

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥१०॥

नाव के ३ नाम—(१) नौ (२) तरणि (३) तरि । ये तीनों शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ॥१०॥

( त्रीणि अल्पनौकायाः )

उडुपं तु क्षवः कोल

घण्डइल के ३ नाम—(१) उडुप ( २ ) क्षव (३) कोल ।

( एकमकृत्रिमजलवहनस्य )

स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।

स्रोता का नाम—(१) स्रोत ।

( द्वे नद्यादितरणे देयमूल्यस्य )

आतरस्तरपरयं स्यात्

उतराई ( खेवाई ) देने के २ नाम—( १ ) आतर (२) तरपरय ।

( एकं 'डोंगी'तिख्यातस्य )

द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥११॥

डोंगी के २ नाम—(१) द्रोणी (२) काष्ठाम्बुवाहिनी ॥११॥

( द्वे नौकया वाणिज्यकारिणः )

सायात्रिक. पोतवणिक्

नाव से व्यापार करनेवालों के २ नाम—(१) सायात्रिक (२) पोतवणिक् ।

( द्वे नाविकस्य, नौपृष्ठदण्डधारकस्य वा )

कर्णधारस्तु नाविकः ।

मल्लाह ( या पतवार पकड़नेवाले ) के २ नाम—(१) कर्णधार ( २ ) नाविक ।

( द्वे वहिर्वाहकस्य )

नियामका. पोतवाहाः

दुष्ट जलजन्तुओं से जहाज की रक्षा करनेवालों के २ नाम—(१) नियामक ( २ ) पोतवाह ।

( द्वे नौमध्यस्थरज्जुबन्धनकाष्ठस्य )

कूपको गुणवृत्तकः ॥१२॥

मस्तूल के २ नाम—( १ ) कूपक ( २ ) गुणवृत्तक ॥ १२ ॥

( द्वे नौकावाहकदण्डस्य )

नौकादण्डं क्षेपणी स्यात्

डोंडे के २ नाम—( १ ) नौकादण्ड ( २ ) क्षेपणी ।

( द्वे नौपृष्ठस्थचालनकाष्ठस्य )

अरित्रं केनिपातकः ।

पतवार के २ नाम—( १ ) अरित्र ( २ ) केनिपातक ।

( द्वे पोतादेर्मलापनयनार्थं काष्ठादिरचितकुद्दालस्य )  
अग्निः स्त्री काष्ठकुद्दाल.

नौका साफ करने के कुद्दाल के २ नाम—( १ ) अग्नि ( २ ) काष्ठकुद्दाल । इनमें 'अग्नि' शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( द्वे नौस्थजलोत्सर्जनपात्रस्य )

सेकपात्रं तु सेचनम् ॥१३॥

डोलची या वाल्टी ( जिनसे नावमें एकत्रित हुआ जल उलीचा जाता है ) के २ नाम—(१) सेकपात्र ( २ ) सेचन ॥१३॥

( एकमर्द्धनौकायाः )

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धे

आधी नाव का नाम—( १ ) अर्धनाव । यह शब्द नपुंसकलिङ्ग में होता है ।

( एक नौकामतिक्रान्तजलाटेः )

अतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।

नावकी अपेक्षा अधिक वेग से तरनेवाला प्राणी ( मनुष्य, जलचर, पानी का वहाव ) आदि का नाम—( १ ) अतिनु । यह तीनों लिङ्गों में होता है ।

त्रिष्वागाधात्

यहाँ में लेकर 'अगाधमनलम्पजं' ( ग्लोक १५ ) तक के शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

( द्वे निर्मलस्य )

प्रसन्नोऽच्छः

अच्छा साफ निर्मल ( जलदि ) के २ नाम—( १ ) प्रसन्न ( २ ) अच्छ ।

( श्रीणि मलिनस्य )

कलुषोऽनच्छ आविलः ॥१४॥

मैला, गंदला ( पानी आदि ) के ३ नाम—

( १ ) कलुष ( २ ) अनच्छ ( ३ ) आविल ॥१४॥

( त्रीणि गम्भीरस्य )

निम्नं गम्भीरं गम्भीरम्

गहिरा के ३ नाम—( १ ) निम्न ( २ )

गम्भीर ( ३ ) गम्भीर ।

( एकमुत्तानस्य )

उत्तानं तद्विपर्यये ।

उथला ( छिछला ) का नाम—( १ ) उत्तान ।

( द्वे अत्यन्तगम्भीरस्य )

अगाधमतलस्पर्श

अथाह के २ नाम—( १ ) अगाध ( २ )

अतलस्पर्श ।

( त्रीणि धीवरस्य )

कैवर्ते दास-धीवरौ ॥ १५ ॥

मल्लाह के ३ नाम—( १ ) कैवर्त ( २ )

दास ( ३ ) धीवर ॥ १५ ॥

( द्वे जालस्य )

आनायः पुंसि जालं स्यात्

जाल के २ नाम—( १ ) आनाय ( २ )

जाल । इनमे ( १ ला ) पुंलिङ्ग और ( २ रा )

नपुंसक होता है ।

( द्वे शणसूत्रजालस्य )

शणसूत्रं पवित्रकम् ।

सुतरी के बने हुए जाल के २ नाम—( १ )

शणसूत्र ( २ ) पवित्रक ।

( द्वे मत्स्यास्थापनपात्रस्य )

मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्

टोकरी के २ नाम—( १ ) मत्स्याधानी ( २ )

कुवेणी ।

( द्वे मत्स्यवेधनस्य )

वलिशं मत्स्यवेधनम् ॥१६॥

वंशी ( मछली फँसाने की कँटिया ) के २

नाम—( १ ) वलिश ( २ ) मत्स्यवेधन ॥१६॥

( अष्टौ मत्स्यस्य )

पृथुरोमा भूपो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः  
विसारः शकुली चमछली के ८ नाम—( १ ) पृथुरोमन् ( २ )  
भूप ( ३ ) मत्स्य ( ४ ) मीन ( ५ ) वैसारिण  
( ६ ) अण्डज ( ७ ) विसार ( ८ ) शकुलिन् ।

( द्वे गडकस्य )

अथ गडकः शकुलार्भकः ॥१७॥

( गडई ) गलफटी मछली के २ नाम—( १ )

गडक ( २ ) शकुलार्भक ॥१७॥

( द्वे बहुदंष्ट्रस्य मत्स्यस्य )

सहस्रदंष्ट्र पाठीनः

पाठी मछली के २ नाम—( १ ) सहस्रदंष्ट्र  
( २ ) पाठीन ।

( द्वे 'सुईस' इतिख्यातमत्स्यविशेषस्य )

उलूपी शिशुक समौ ।

सुईस मछली के २ नाम—( १ ) उलूपिन  
( २ ) शिशुक ।

( द्वे नलवनचारिणो मत्स्यविशेषस्य )

नलमीनश्चिलिचिमः

फिंगवा ( नरकट में रहनेवाली ) मछली  
के २ नाम—( १ ) नलमीन ( २ ) चिलिचिम ।

( द्वे शुभ्रमत्स्यविशेषस्य )

प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥१८॥

सहरी मछली के २ नाम—( १ ) प्रोष्ठी  
( २ ) शफरी । ये दोनों शब्द पुं-स्त्रीलिङ्ग में होते  
हैं ॥१८॥

( द्वे अण्डादचिरनिर्गतमत्स्यसङ्घस्य )

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानम्

अण्डे से तुरत के निकले हुए मछलियों के  
छोटे २ वच्चों के २ नाम—( १ ) क्षुद्राण्डमत्स्य-  
संघात ( २ ) पोताधान ।

( मत्स्यविशेषाणां पृथगेकैकम् )

अथो भूषा ।

रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः

## तिमिगिलादयश्च

मछलियों का वर्णन

रोहू मछली का नाम—(१) रोहित ।

मँगरा मछली का नाम—(१) मदगुर ।

सौरी मछली का नाम—(१) शाल ।

राया मछली का नाम—(१) राजीव ।

सौरा मछली का नाम—(१) शकुल ।

तई मछली ( 'हैल' इति आग्लभाषायाम् )

का नाम—(१) तिमि ।

'हैल' मछली को खा जानेवाली मछली का

नाम—(१) तिमिजिल । आदि

( द्वे जलचरमात्रस्य )

अथ यादांसि जलजन्तवः ।

जलजन्तु के २ नाम—( १ ) यादस् ( २ )

जलजन्तु । इनमें ( १ ला ) नपुंसक और ( २ रा ) पुंल्लिङ्ग है ।

( जलजन्तुविशेषाणां पृथगेकैकम् )

तद्देदा' शिशुमारोद्-शङ्खो मकरादयः ॥२०॥

जलजन्तुओं के भेद—

शिरग का नाम—(१) शिशुमार ।

ऊदविलाव का नाम—(१) उद्ग ।

मकर का नाम—(१) शङ्ख ।

मगर का नाम—(१) मकर ॥२०॥

( द्वे कर्कटस्य )

स्यात्कुलीरः कर्कटकः

केषज्ञा के २ नाम—( १ ) कुलीर ( २ ) कर्कटक ।

( त्रीणि कच्छपस्य )

कूर्मे कसठ-कच्छपौ ।

कच्छपा के ३ नाम—( १ ) कूर्म ( २ ) कसठ

( ३ ) कच्छप ।

( द्वे ग्राहस्य )

ग्राहोऽवहारः

पदिशाल के २ नाम—(१) ग्राह (२) अवहार ।

( द्वे मन्मथस्य )

नक्तस्तु कुम्भीर

नाक ( 'क्रोकोडाइल' अंग्रेजी भाषा ) के २

नाम—(१) नक्र (२) कुम्भीर ।

( त्रीणि 'कैचुवा' इति ख्यातस्य )

अथ महीलता ॥२१॥

गरुडपद किञ्चुलकः

कैचुवा के ३ नाम—(१) महीलता (२) गरुड-पद (३) किञ्चुलक ॥२१॥

( द्वे जलगोधिकायाः )

निहाका गोधिका समे ।

गोह के २ नाम—(१) निहाका (२) गोधिका ।

( त्रीणि जलकायाः )

रक्तपा तु जलौकायां

स्त्रियां भूमि जलौकस ॥२२॥

जोंक के ३ नाम—(१) रक्तपा (२) जलौका

(३) जलौकस् । ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

किन्तु जलौकस् शब्द बहुवचनान्त होता है ॥२२॥

( द्वे शुक्तिकायाः )

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः

सिपी ( नितुही ) के २ नाम—(१) मुक्तास्फोट

(२) शुक्ति । इनमें (१ला) पुं०, (२रा) स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( द्वे शङ्खस्य )

शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ ।

शङ्ख के २ नाम—(१) शङ्ख (२) कम्बु । ये

दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग के शब्द हैं दोनों लिङ्गों (पुं० नपुं०) में होते हैं ।

( द्वे सूक्ष्मशङ्खानाम् )

शुद्धशङ्खाः शङ्खनखाः

छोटे शङ्ख के २ नाम—(१) शुद्धशङ्ख (२)

शङ्खनख ।

( द्वे शम्भूकानाम् )

शम्भूका जलशुक्यः ॥२३॥

घोंघा के २ नाम—(१) शम्भूक (२) जल-

शुक्ति । इनमें (१ला) पुं०-जं. कर्ण (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ॥२३॥



( पट् मण्डूकस्य )

भेके मण्डूक-वर्षाभू-शालूर-स्रव-दर्दुराः ।

भेढक ( दादुर ) के ६ नाम—(१) भेक (२) मण्डूक (३) वर्षाभू (४) शालूर (५) स्रव (६) दर्दुर ।

( द्वे स्वल्पगण्डूपदजाते. किञ्चुलकभार्यायाश्चापि )  
शिली गरड्पदी

छोटे केंचुए और केंचुई के २ नाम—(१) शिली (२) गरड्पदी ।

( द्वे मण्डूक्याः )

भेकी वर्षाभ्वी

भेढकी के २ नाम—(१) भेकी (२) वर्षाभ्वी ।

( द्वे कच्छप्याः )

कमठी डुलिः ॥२४॥

कछुई के २ नाम—(१) कमठी (२) डुलि ॥२४॥

( एकं मद्गुरस्त्रियाः )

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी

मँगरा मछली की स्त्री 'सिंगी' का नाम—(१) शृङ्गी ।

( द्वे जलकाकारजलचरविशेषस्य )

दुर्नामा दीर्घकोशिका ।

मिकवा के २ नाम—( १ ) दुर्नामन् ( २ ) दीर्घकोशिका । इनमें (१ला) पुं, (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

( द्वे तडागादीनाम् )

जलाशया जलाधाराः

तालाव, भील, वावड़ी आदि के २ नाम—  
(१) जलाशय (२) जलाधार ।

( एकमगाधजलाशयस्य )

तत्रागाधजलो ह्रदः ॥२५॥

कुरड (दह) का नाम—(१) ह्रद ॥२५॥

( द्वे निपानस्य )

आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।

कुँए, तालाव वगैर. के नजदीक गौ, घोड़े आदि के पानी पीने के लिए बनाए गए हाँज के २ नाम—(१) आहाव (२) निपान ।

( चत्वारि कूपस्य )

पुंस्येवाऽन्धुः ग्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा

कुँए के ४ नाम—(१) अन्धु (२) ग्रहि (३) कूप (४) उदपान । इनमें ( १-३ ) पुल्लिङ्ग, (४) पुं-नपुंसक में होता है ॥२६॥

( द्वे कूपस्यान्तरे रज्जादिधारणार्थदास्यन्त्रस्य )  
नेमिस्त्रिकाऽस्य

गढ़ारी का नाम—(१) नेमि (२) त्रिका ।

( एकं कूपमुखे दृष्टकादिभिर्बद्धस्य )

वीनाहो मुखवन्धनमस्य यत्

कुँए के जगत का नाम—(१) वीनाह ।

( द्वे पुष्करिण्याः )

पुष्करिण्यां तु खातं स्यात्

पोखरी के २ नाम—( १ ) पुष्करिणी ( २ ) खात ।

( द्वे अकृत्रिमखातस्य, देवद्वारस्थजलाशयस्य वा )

अखातं देवखातकम् ॥२७॥

बिना बनाया पोखरा या देव-मन्दिर के आगे के तालाव के २ नाम—(१) अखात (२) देव-खातक ॥२७॥

( द्वे स-पद्मागाधजलाशयस्य )

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री

कमल पैदा होनेवाले और अथाह तालाव के २ नाम—(१) पद्माकर (२) तडाग । इसमें 'तडाग' शब्द पुं-नपुंसक में होता है ।

( त्रीणि कृत्रिमपद्माकरस्य )

कासारः सरसी सरः ।

खोदवाए हुए कमलवाले तालाव के ३ नाम—(१) कासार (२) सरसी (३) सरस । इनमें (१) पुं, (२) स्त्री, (३) नपुंसक में होता है ।

( त्रीणि स्वल्पसरोवरस्य )

वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरः

थोड़े पानी वाले तालाव (गढ़ही, तलैया) के ३ नाम—(१) वेशन्त (२) पल्वल (३) अल्पसरस ।

( द्वे वाप्याः )

वापी तु दीर्घिका ॥२८॥

वावली के २ नाम—(१) वापी (२) दीर्घिका ॥२८॥

( द्वे दुर्गादिपरितः खातस्य )

खेयं तु परिखा

खाई के २ नाम—(१) खेय (२) परिखा ।

( एकं 'बोध' इति ख्यातस्य )

आधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।

पानी के बोध का नाम—(१) आधार ।

( त्रीणि वृक्षादिमूले कृतजलाधारस्य )

स्यादालवालमावालमावापः

आला ( पौधे के जड़ के चारों तरफ पानी के लिए बनाए गए खंदक ) के ३ नाम—(१) आल-वाल (२) आवाल (३) आवाप ।

( द्वादश नद्याः )

अथ नदी सरित् ॥२९॥

तरंगिणी शैवलिनी तटिनी हादिनी धुनी ।  
स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा

नदी के १२ नाम—(१) नदी (२) सरित् (३) तरंगिणी (४) शैवलिनी (५) तटिनी (६) हादिनी (७) धुनी (८) स्रोतस्विनी (९) द्वीपवती (१०) स्रवन्ती (११) निम्नगा (१२) आपगा ॥२९-३०॥

( अष्टौ गङ्गायाः )

गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा ।  
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥

गङ्गाजी के ८ नाम—(१) गङ्गा (२) विष्णु-पदी (३) जह्नुतनया (४) सुरनिम्नगा (५) भागीरथी (६) त्रिपथगा (७) त्रिस्रोतस् (८) भीष्मसू ॥३१॥

( चत्वारि यमुनायाः )

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।

१ मन्त्र पुराणों में यह श्लोक अधिक मिलता है—

प्राक्प्रा निहिरिणी रोधोयमा सरस्वती ।

अर्थात्—नदी के ४ और नाम—(१) कृष्ण (२)

निहिरिणी (३) रोधोयमा (४) सरस्वती ।

२—यदि भाष्ये भर्तामान्तरस्यैवमर्थः ।

यदि भाष्ये भर्तामान्तरस्यैवमर्थः ।

यमुनाजी के ४ नाम—(१) कालिन्दी (२) सूर्यतनया (३) यमुना (४) शमनस्वसम् ।

( चत्वारि नर्मदायाः )

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥३२॥

नर्मदा नदी के ४ नाम—(१) रेवा (२) नर्मदा (३) सोमोद्भवा (४) मेकलकन्यका ॥३२॥

( द्वे गौरीविवाहे कन्यादानोदकाज्जातनद्याः )

करतोया सदानीरा

पार्वतीजी के विवाह में कन्यादान के जल से पैदा हुई नदी जो प्राचीन समय में बङ्गाल और कामरूप देश की सीमा समझी जाती थी और आज कल बङ्गाल के रंगपुर, दीनाजपुर आदि नगरों में होकर बहती है, उसका २ नाम—(१) करतोया (२) सदानीरा ।

( द्वे कार्तवीर्यावतारितनद्याः )

वाहुदा सैतवाहिनी ।

धवला नदी ( जिसे अब बूढा राप्ती नदी कहते हैं और जो अबध की राप्ती नदी की एक सहायक नदी है ) के २ नाम—(१) वाहुदा (२) सैत-वाहिनी ।

( द्वे शतद्रवाः )

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्

पञ्जाब की सतलज नदी के २ नाम—(१) शतद्रु (२) शुतुद्रि ।

( द्वे विषाशायाः )

विषाशा तु विषाट् स्त्रियाम् ॥३३॥

पञ्जाब की व्यास नदी (जिम्हने वसिष्ठजी के पाश को नष्ट कर दिया जब कि उन्होंने विष्णुमित्र द्वारा सारे गये अपने पुत्र के शोक से संतप्त हो फाँसी लगायी थी ) के २ नाम—(१) विषाशा (२) विषाट् । ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥३३॥

( द्वे गोणभद्रायाः )

गोखो हिरण्यवाहः स्यात्

गोन नदी ( जो अमरकान्तक से निकलकर पञ्जाब में गोन बहने के बाद पञ्जाब के नगर गोन

जी में मिलती है ) के २ नाम—(१) शोण (२) हिरण्यवाह ।

( एकं कृत्रिमस्वल्पनद्याः )

कुल्याऽल्पा कृत्रिमा सरित् ।

नहर ( बनायी गयी छोटी नदी ) का नाम—  
(१) कुल्या ।

( नदी विशेषाणां पृथगेकैकम् )

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥३४॥  
कावेरी

गुजरात की सावरमती नदी का नाम—(१)  
शरावती ।

बुन्देलखण्ड की वेतवा नदी का नाम—(१)  
वेत्रवती ।

पञ्जाब की चेनाव नदी का नाम—(१) चन्द्र-  
भागा ।

दिल्ली की सरस्वती नदी का नाम—(१)  
सरस्वती ।

दक्षिण की कावेरी नदी का नाम—( १ )  
कावेरी ॥३४॥

सरितोऽन्याश्च

इनके अतिरिक्त और भी नदियाँ हैं । यथा—  
कोसा नदी ( यह गङ्गाजी की सहायक नदियों में  
बहुत बड़ी नदी है और इसका सङ्गम गङ्गाजी के  
साथ बगाल में हुआ है और वह स्थान अब तक  
कौशिकी तीर्थ से विख्यात है ) का नाम—कौशिकी ।

उत्तर की गरङ्गी नदी का नाम—गरङ्गी ।

बुन्देलखण्ड की चम्बल नदी का नाम—  
चर्मण्वती ।

दक्षिण की गोदावरी नदी का नाम—गोदावरी ।

( द्वे नदीसङ्गमस्य )

सम्भेदः सिन्धुसङ्गमः ।

नदियों के मिलने के (संगम) के २ नाम—(१)  
सम्भेद (२) सिन्धुसङ्गम ।

( एकं कृत्रिमजलनिःसरणमार्गस्य )

द्वयोः प्रणाली पयसः पद्म्याम्

१ अन्य कौशिकी-गरङ्गी-चर्मण्वती-गोदावर्यादयः ।

जल के निकलने के लिए बनाए गए रास्ते  
( यानी पनाला ) का नाम—(१) प्रणाली । यह  
पुं० और स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( देविकासरयूद्भवयोः क्रमेणैकैकम् )

त्रिषु तूचरौ ॥३५॥

देविकायां सरयू च भवे दाविक-सारवौ ।

देविका और सरयू नदी में होनेवाले पदार्थ के  
क्रमशः एक-एक नाम—(१) दाविक (२) सारव ।  
ये दोनों शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥३५॥

( द्वे सन्ध्याविकासिनः शुक्लकह्लारस्य )

सौगन्धिकं तु कह्लारम्

सन्ध्या समय विकसित होनेवाले सफेद कमल  
के २ नाम—(१) सौगन्धिक (२) कह्लार ।

( द्वे रक्तकह्लारस्य )

हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥३६॥

लाल कमल के २ नाम—(१) हल्लक (२)

रक्तसन्ध्यक ॥३६॥

( द्वे कुवलयस्य )

स्यादुत्पलं कुवलयम्

सफेद कमल ( फफूला ) के २ नाम—(१)  
उत्पल (२) कुवलय ।

( द्वे नीलोत्पलस्य )

अथ नीलाम्बुजन्म च ।

इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्

नीले कमल के २ नाम—(१) नीलाम्बुजन्म  
(२) इन्दीवर ।

( द्वे शुक्लोत्पलस्य )

सिते कुमुद-कैरवे ॥३७॥

सफेद कमल ( कोई ) के २ नाम—(१)  
कुमुद (२) कैरव ॥३७॥

( एकमुत्पलकन्दस्य )

शालूकमेषां कन्दः स्यात्

इन कमलों के जड़ का नाम—(१) शालूक

( द्वे जलकुम्भिकायां )

वारिपणीं तु कुम्भिका

जलकुम्भी (काई) के २ नाम—(१) वारिपर्णी  
(२) कुम्भिका ।

( त्रीणि शैवालस्य )

जलनीली तु शैवालं शैवालः

सेवार के ३ नाम—(१) जलनीली (२) शैवाल  
(३) शैवाल ।

( द्वे कुमुदिन्याः )

अथ कुमुद्वती ॥३८॥

कुमुदिन्याम्

कुमुदिनी ( कोई ) के २ नाम—(१) कुमुद्वती  
(२) कुमुदिनी ॥३८॥

( त्रीणि कमलिन्याः )

नलिन्यां तु विसिनी पद्मिनीमुखाः ।

कमलिनी के ३ नाम—( १ ) नलिनी ( २ )  
विसिनी (३) पद्मिनी । आदि ।

( षोडश कमलस्य )

षा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥३९॥

सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।

पद्मेरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥४०॥

विसप्रसून-राजीव-पुष्कराम्भोरुहाणि च ।

कमल के १६ नाम—(१) पद्म ( २ ) नलिन  
(३) अरविन्द (४) महोत्पल (५) सहस्रपत्र (६)  
कमल (७) शतपत्र ( ८ ) कुशेशय ( ९ ) पद्मेरुह  
(१०) तामरस (११) सारस (१२) सरसीरुह (१३)  
विस-प्रसून (१४) राजीव ( १५ ) पुष्कर ( १६ )  
अम्भोरुह । ये (१-१६) पुं०-नपुंसक में होते हैं ।  
॥३९-४०॥

( द्वे सितसरोरुहस्य )

पुण्डरीकं सिताम्भोजम्

मण्डप कमल के २ नाम—( १ ) पुण्डरीक  
(२) सिताम्भोज ।

( त्रीणि रत्नसरोरुहस्य )

अथ रत्नसरोरुहे ॥४१॥

१-रत्नसरोरुहस्य रत्नं रत्नद्वयं पुनः ।  
रत्नं रत्नं रत्नं रत्नं रत्नं रत्नं रत्नं रत्नं रत्नं ॥

रक्तोपलं कोकनदं

लाल कमल के ३ नाम—( १ ) रक्तसरोरुह  
(२) रक्तोपल (३) कोकनद ॥४१॥

( द्वे पद्मादिदण्डस्य )

नालो नालम्

कमल के डंठल के २ नाम—(१) नाल (२)  
नालम् ।

( द्वे मृणालस्य )

अथास्त्रियाम् ।

मृणालं विसम्

कमल तन्तु के २ नाम—( १ ) मृणाल (२)  
विस । ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग में नहीं होते केवल  
पुंलिङ्ग और नपुंसक में होते हैं ।

( एकमञ्जावीना समूहस्य )

अञ्जादिकदम्बे परडमस्त्रियाम् ॥४२॥

कमल आदि के समुदाय का नाम—(१) परड ।  
यह पुं०-नपुंसक में होता है ॥४२॥

( द्वे पद्मकन्दस्य )

करहाटः शिफाकन्दः

कमल की जड़ के २ नाम—(१) करहाट (२)  
शिफाकन्द ।

( द्वे पद्मकेशरस्य )

किञ्जल्कः केशरोऽस्त्रियाम् ।

कमल के पराग ( केशर ) के २ नाम—(१)  
किञ्जल्क ( २ ) केशर । ये दोनों शब्द पुं० और  
नपुं० में होते हैं ।

( द्वे पद्मादीनां नवपद्मस्य )

संघर्तिका नवदलम्

कमल आदि के नये पत्तों के २ नाम—(१)  
संघर्तिका (२) नवदल ।

( द्वे पद्मलघीजस्य )

धीजकोशो धगगृकः ॥४३॥

कमलगृह के २ नाम—( १ ) धीजकोश (२)  
धगगृक ॥४३॥

( इति वारिवर्गः १० )

( उपसंहारः )

उक्तं स्वर्ग्योमदिक्कालधीशब्दादि स-नाश्र्यकम्  
पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् । १।  
इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।  
स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥

मैं ( अमरसिंह ) ने स्वर्गवर्ग, व्योमवर्ग,  
दिग्वर्ग, कालवर्ग, धीवर्ग, शब्दादिवर्ग, नाश्र्यवर्ग,

पातालभोगिवर्ग, नरकवर्ग, वारिवर्ग और इनके  
प्रसङ्गवश देव, असुर, मेघ आदि का भी वर्णन  
किया ॥ १ ॥

श्रीमदमरसिंह के बनाए हुए नाम (स्वर्, स्वर्ग,  
नाक ) और लिङ्गों ( पुंलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग )  
को बतानेवाले नामलिङ्गानुशासन (अमरकोष) नामक  
ग्रन्थ में स्वरादि वर्गों का पहला काण्ड साङ्गोपाङ्ग  
समाप्त हुआ ॥ २ ॥

इति श्रीमन्नलाल 'अभिमन्यु' एम० ए० विरचितायां  
'धरा'ख्यामरकोषटीकायां प्रथमः काण्डः समाप्तः ॥



# अमरकोषः

## द्वितीयं काण्डम्

( प्रस्तावना )

वर्गाः पृथ्वी-पुर-दमाभृद्वनौपधि-मृगादिभिः ।  
नृ-ग्रह-क्षत्र-विट्-शूद्रैः साङ्गोपांगैरिहोदिताः ॥

टीका—इस ( द्वितीय काण्ड ) में साङ्गोपाङ्ग  
(१) भूमिवर्ग (२) पुरवर्ग (३) शैलवर्ग (४) वनौ-  
पधिवर्ग (५) सिंहादिवर्ग (६) मनुष्यवर्ग (७) ब्रह्म-  
वर्ग (८) क्षत्रियवर्ग (९) वैश्यवर्ग (१०) शूद्रवर्ग  
कहा जायगा ॥१॥

**अथ भूमिवर्गः १**

( सप्तविंशतिभूमेः )

भूर्भूमिरचलाऽनन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा ।  
धरा धरित्री धरणिः क्षोणीर्ज्या काश्यपी क्षितिः ।  
सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुन्धरा ।  
गोश्रा कुः पृथिवी पृथ्वी दमाऽवनिर्मेदिनी मही ॥

पृथ्वी के २७ नाम—(१) भू (२) भूमि (३)  
अचला (४) अनन्ता (५) रसा (६) विश्वम्भरा (७)  
स्थिरा (८) धरा (९) धरित्री (१०) धरणि (११)  
क्षोणि (१२) ज्या (१३) काश्यपी (१४) क्षिति  
(१५) नर्वमहा (१६) वसुमती (१७) वसुधा (१८)  
उर्वी (१९) वसुन्धरा (२०) गोत्रा (२१) कु (२२)  
पृथिवी (२३) पृथ्वी (२४) दमा (२५) अवनि (२६)  
मेदिनी (२७) मही ॥२-३॥

१ अन्य पुराणों में भूमि के ११ नाम अधिक  
लिखे हैं ।

विपुला गह्वरी धात्री गौरिला तुम्बिनी क्षमा ।

भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागरान्धरा ॥

टीका—(१) विपुला (२) गह्वरी (३) धात्री (४) गौ  
रिला (५) तुम्बिनी (६) क्षमा (७) भूतधात्री (८) रत्नगर्भा  
(९) जगती (१०) सागरान्धरा ।

( द्वे मृदः )

**मृन्मृत्तिका**

मिट्टी के २ नाम—(१) मृत् (२) मृत्तिका । ये  
(१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे प्रशस्तमृदः )

**प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।**

अच्छी मिट्टी के २ नाम—( १ ) मृत्सा ( २ )  
मृत्स्ना ।

( एकं सर्वसस्याव्यमृदः )

**उर्वरा सर्वसस्याव्या**

उपजाऊ ( सब अन्न को पैदा करनेवाली )  
मिट्टी का नाम—(१) उर्वरा ।

( द्वे क्षारमृत्तिकायाः )

**स्यादूपः क्षारमृत्तिका ॥४॥**

नोना, खारी मिट्टी के २ नाम—(१) ऊप (२)  
क्षारमृत्तिका । इनमें (१) पुल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

( द्वे क्षारमृद्विशिष्टदेशाभ्याम् )

**ऊपवानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ**

ऊपर जमीन के २ नाम—(१) ऊपवत् (२)  
ऊपर । ये दोनों शब्द किसी के विशेषण होनेपर  
तीनों लिङ्गों में होते हैं । ( यथा—ऊपवती ऊपर  
वा स्थली । ऊपरं स्थलम् ) ।

( द्वे स्थलस्य )

**स्थलं स्थली ।**

स्थान के २ नाम—(१) स्थल (२) स्थली ।

( द्वे निर्जलदेशस्य )

**समानौ मरुधन्वानौ**

निर्जल ( मरु ) देश के २ नाम—(१) मरु  
(२) धन्वन । ये दोनों पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे हलाचकृष्टक्षेत्रादेः )

द्वे खिलाप्रहते समे ॥५॥

त्रिषु

बिना जोते हुए खेत आदि के २ नाम—(१) खिल (२) अप्रहत । ये दोनों समान अर्थ एवं तीनो लिङ्गों में प्रयुक्त होते हैं ॥५॥

( पञ्च भूतलस्य )

अथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।

जगत् के ५ नाम—(१) जगती (२) लोक (३) विष्टप (४) भुवन (५) जगत् ।

( एकं भारतवर्षस्य )

लोकोऽयं भारतं वर्षम्

भारतवर्ष ( हिन्दुस्थान ) का नाम—( १ ) भारतवर्ष ।

( एकं प्राच्यदेशस्य )

शरावत्यास्तु योऽवधे ॥६॥

देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्यः

शरावती नदी के पूर्व-दक्षिणवाले देश का नाम—(१) प्राच्य ॥६॥

( एकमुदीच्यदेशस्य )

उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।

शरावती नदी के पश्चिम-उत्तरवाले देश का नाम—(१) उदीच्य ।

( द्वे म्लेच्छदेशस्य )

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यात्

सीमाप्रान्त ( समतट, डवाक, कामरूप के शक-मुराडों के देश ) के २ नाम—(१) प्रत्यन्त (२) म्लेच्छदेश ।

( द्वे मध्यदेशस्य )

मध्यदेशस्तु मध्यम ॥७॥

१ उत्तर यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र मन्तति ॥

२ चातुर्वर्ण्यव्यवस्थान् यस्मिन्देशे न विद्यते ।

त म्लेच्छविपर्यं प्रादुरार्यावर्तमत परम् ॥

३ हिमवद्भिन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशानादपि ।

मध्यदेश ( हिमालय और विन्ध्याचल के बीच कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिमवाले देश ) के २ नाम—(१) मध्यदेश (२) मध्यम ॥७॥

( द्वे विन्ध्यहिमाचलयोरन्तरस्थे )

आर्यावर्तः पुरायभूमिर्मध्यं विन्ध्य-हिमालयोः ॥

विन्ध्याचल और हिमालय के बीच के देश के २ नाम—(१) आर्यावर्त (२) पुरायभूमि ।

( द्वे जनपदस्य )

नीवृज्जनपदः

देश ( मुल्क ) के २ नाम—(१) नीवृत् (२) जनपद ।

( त्रीणि देशमात्रस्य )

देश-विषयौ तूपवर्तनम् ॥८॥

देश के ३ नाम—(१) देश (२) विषय (३) उपवर्तन ॥८॥

त्रिष्वागोष्ठात्

यहाँ से लेकर 'गोष्ठ' ( श्लोक १३ ) के शब्द तीनो लिङ्गों में होते हैं ।

( द्वे नडाधिकदेशस्य )

नडप्राये नडाङ्गडल इत्यपि ।

नरकट ज्यादा होनेवाले देश के २ नाम—(१) नडवान् (२) नडवल ।

( एकं बहुवेतसदेशस्य )

कुमुद्राङ्कुमुदप्राये

फफूला ( सफेद कमल ) वाले देश का नाम—(१) कुमुद्रत् ।

( एकं बहुवेतसदेशस्य )

वेतस्वान्बहुवेतसे ॥९॥

बहुत वेत वाले देश का नाम—( १ ) वेतस्वत् ॥९॥

प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यप्रदेशः प्रकीर्तितः ॥—मनुः

४ आ समुद्रात्तु वै पूर्वादा समुद्राच्च पश्चिमात् ।

तयोरेवान्तरं गिर्योरायावर्तं विदुर्वुधाः ॥—मनुः

पर्वतयोहिमवद्भिन्ध्ययोर्दन्तरं मध्यं स

आर्यावर्त्तो देशो युधै शिष्टैरुच्यते ।—मेधातिथिः

( एकं हरितवृणप्रचुरदेशस्य )

शाद्वलः शादहरिते

नयी १ हरी घास वाले देश का नाम—(१)

शाद्वल । यह तीनों लिङ्ग में प्रयुक्त होता है ।

( एकं कर्दमयुक्तदेशस्य )

सजम्बाले तु पङ्किलः ।

कीचड़वाले देश का नाम—( १ ) पकिल ।

( पुं-स्त्री-नपुंसक )

( द्वे जलयहुलदेशस्य )

जलप्रायमनूपं स्यात्

तराई के २ नाम—(१) जलप्राय (२) अनूप ।

( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक ।

( एकं नद्यादेरुपान्तदेशस्य )

पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥१०॥

उसी प्रकार ( अनूपसदृश ) नदी आदि के

समीपवर्ती देश ( कछार ) का नाम—(१) कच्छ ।

यह केवल पुंलिङ्ग में ही होता है, न कि उपरोक्त

कथनानुसार तीनों लिङ्ग में ॥१०॥

( चत्वार्यधमप्रायमृदधिकस्य )

श्री शर्करा शर्करिल शर्करः शर्करावति ।

ईद-रोदे रूकड़वाले देश के ४ नाम—(१)

शर्करा (२) शर्करिल (३) शर्कर (४) शर्करावत् ।

इनमें (१) 'शर्करा' शब्द केवल स्त्रीलिङ्ग में होता

है । शेष ( २-४ ) पुं-स्त्री-नपुंसक लिङ्ग में ।

देश पयादिमी

आदि के 'शर्करा' और 'शर्करिल' शब्द देश

के ही नाम हैं ।

( चत्वारि बालुवायहुलदेशस्य )

पचमुन्नेयाः सिक्तावति ॥११॥

१ भनूपदेशजगम्—

नदी-पन्थल-सैलायः शुशोत्ययुर्धुः ॥

२ गम्भारस-पारस-काकाशरिभेदि ॥

३ रात-यसद-मरिप-नर-रोहिणुमाप-कुल ॥

४ मभृगहम-पुष्यकरो-नेलसरसपल-निर ॥

५ भेराता-वि-नेराद-कासी-पुदिमृदिताः ॥

६ भनूपदेशो-रागम्भो-कापर-देभमया-विमार् ॥

बालूवाले देश के ४ नाम—(१) सिकता (२)

सिकतिल (३) सैकत (४) सिकतावत् । इनमें

'सिकता' नित्य स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त होता है ।

किसी आचार्य के मत से 'सिकता' और 'शर्करा' ये

दोनों शब्द बहुवचनान्त होते हैं, शेष पुं-स्त्री-नपुं-

सक में ॥११॥

( एकैकं नद्यम्बुभिर्वृण्यम्बुभिः सम्पन्नदेशस्य )

देशो नद्यम्बुवृण्यम्बुसम्पन्नब्रीहिपालितः ।

स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥१२॥

नदी के जल से उपजे धानों द्वारा पाले गये

देश का नाम—(१) नदीमातृक । ( पुं-स्त्री-नपुं )

वर्षा के जल से उपजे धानों द्वारा पाले गये

देश का नाम—(१) देवमातृक ( पुं-स्त्री-नपुं ) ॥१२॥

( एकं स्वधर्मपरायणसुराजयुक्तदेशस्य )

सुराश्रि देशे राजन्वान्स्यात्

अपने धर्म में परायण अच्छे राजावाले देश

का नाम—(१) राजन्वत् । ( पुं-स्त्री-नपुंसक )

( एकं सामान्यराजयुक्तदेशस्य )

ततोऽन्यत्र राजवान् ।

साधारण राजावाले देश का नाम—( १ )

राजवत् । ( पुं-स्त्री-नपुंसक )

( द्वे गवां स्थानस्य )

गोष्ठं गोस्थानकम्

गौओं के स्थान ( गौओं या यादा, गोशाना )

के २ नाम—(१) गोष्ठ (२) गोस्थानक ।

( एकं भूतपूर्वगोस्थानस्य )

तच्च गोष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥१३॥

पुराना गोवादा का नाम—(१) गोष्ठीन ॥१३॥

( द्वे नदीपर्यन्तादीनानुपान्तस्य )

पर्यन्तम्, परिसरः.

नदी पहाड़ आदि के निम्न की भूमि के २

नाम—(१) पर्यन्तम् (२) परिसर । इनमें (१) न

रसंलित और (२) पुलित है ।

( द्वे संज्ञाः )

सेतुराष्टी स्त्रिया पुमान् ।



पुल के २ नाम—( १ ) सेतु ( २ ) आलि ।  
इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग और ( २ रा ) स्त्रीलिङ्ग है ।

( त्रीणि वल्मीकस्य )

वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥१४॥

व्यमौर ( चींटी, दीमक आदि से बनाया गया मिट्टी का ढेर ) के ३ नाम—( १ ) वामलूर ( २ ) नाकु ( ३ ) वल्मीक । इनमें ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग, ( ३ रा ) नपुंसक के अतिरिक्त पुँल्लिङ्ग में भी होता है ॥१४॥

( द्वादश मार्गस्य )

अयनं वर्त्म मार्गाध्व-पन्थानः पदवी सृतिः ।

सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च ॥१५॥

रास्ता ( राह, मार्ग, सड़क ) के १२ नाम—  
( १ ) अयन ( २ ) वर्त्मन् ( ३ ) मार्ग ( ४ ) अध्वन् ( ५ ) पथिन् ( ६ ) पदवी ( ७ ) सृति ( ८ ) सरणि ( ९ ) पद्धति ( १० ) पद्या ( ११ ) वर्तनी ( १२ ) एकपदी । इनमें ( १-२ ) नपुंसक ( ३-५ ) पुँल्लिङ्ग ( ६-१२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१५॥

( त्रीणि शोभनमार्गस्य )

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेध्वनि ।

पूजित मार्ग ( अच्छी राह ) के ३ नाम—( १ ) अतिपथिन् ( २ ) सुपथिन् ( ३ ) सत्पथ । ये ( १-३ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( पञ्च दुर्मार्गस्य )

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः १६

बुरा रास्ता ( कुपथ, खराब मार्ग ) के ५ नाम—( १ ) व्यध्व ( २ ) दुरध्व ( ३ ) विपथ ( ४ ) कदध्वन् ( ५ ) कापथ । ये ( १-५ ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१६॥

( द्वे अमार्गस्य )

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये

मार्गाभाव ( जहाँ रास्ता न हो उस ) के २ नाम—( १ ) अपथिन् ( २ ) अपथ । इनमें ( १ ) पुँल्लिङ्ग ( २ ) नपुंसक है ।

( द्वे चतुष्पथस्य )

शृङ्गाटक चतुष्पथे ।

चौराहा के २ नाम—( १ ) शृङ्गाटक ( २ ) चतुष्पथ । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( एकं दूरशून्यच्छायाजलादिवर्जितमार्गस्य )

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा

दूर, सूनसान, छाया और जलरहित राह का नाम—( १ ) प्रान्तर ( नपुं० ) ।

( एकं चोरकण्टकाद्युपद्रवयुक्तमार्गस्य )

कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥१७॥

चोर, कोटे वगैर उपद्रवों से युक्त दुर्गम राह का नाम—( १ ) कान्तार ( नपुं०, पुं० ) ॥१७॥

( द्वे क्रोशद्वयपरिमितस्य )

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगम्

दो कोस के २ नाम—( १ ) गव्यूति ( २ ) क्रोशयुग । उनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग ( शब्दार्णव के अनुसार पुँल्लिङ्ग और वाचस्पति के अनुसार नपुंसक भी होता है ), ( २ ) नपुंसक है ।

( एकं चतुःशतहस्तपरिमितस्य )

नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।

( चतुः शत ) ४०० ( किष्कु ) हाथ का नाम—  
( १ ) नल्व ( पुं० ) ।

( द्वे राजमार्गस्य )

घण्टापथः संसरणम्

राजमार्ग ( मुल्क की सबसे बड़ी सड़क यथा 'ग्रैंड ट्रंक रोड' ) के २ नाम—( १ ) घण्टापथ ( २ ) संसरण । इनमें ( १ ला ) पुं०, ( २ ) नपुं० है ।

( एकं पुरमार्गस्य )

तत्पुरस्योपनिर्कारम् ॥१८॥

१ किन्हीं २ पुस्तकों में ये श्लोक मिलते हैं—

( पञ्च धावाभूम्यो )

धावापृथिव्यौ रोदस्यौ धावाभूमी च रोदसी ।

दिवस्पृथिव्यौ

आकाश पृथ्वी के ५ नाम—( १ ) धावापृथिवी ( २ ) रोदमी ( ३ ) धावाभूमी ( ४ ) रोदसी ( ५ ) दिवस्पृथिवी । ये द्विवचनान्त हैं ।

( त्रीणि लवणाकरस्य )

गञ्जा तु रुमा स्याल्लवणाकरः ॥

नमक की खान के ३ नाम—( १ ) गञ्जा ( २ ) रुमा ( ३ ) लवणाकर ।

शहर की सड़क का नाम—( १ ) उपनिष्कर  
( नपुं० ) ॥१८॥

( इति भूमिवर्ग १ )

### अथ पुरवर्गः २

( सप्त नगरस्य )

पूः स्त्री पुरी-नगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।  
स्थानीयं निगमः

शहर (नगर) के ७ नाम—(१) पूर (२) पुरी  
(३) नगरी (४) पत्तन (५) पुटभेदन (६) स्थानीय  
( ७ ) निगम । इनमें ( १ ) खील्लिङ्ग ( २-३ ) खी-  
लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ( ४-६ ) नपुंसकलिङ्ग  
( ७ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( एकं शास्त्रानगरस्य )

अन्यत्तु यन्मूलनगरात् पुरम् ॥१॥

तच्छाखानगरम्

राजधानी के पास के छोटे शहर (उपनगर)  
का नाम—(१) शाखानगर ॥१॥

( द्वे वेश्यानिवासस्य )

वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।

राखी के घर के २ नाम—( १ ) वेश ( २ )  
वेश्याजन-समाश्रय ।

( द्वे हटस्य, मय्यवस्तुशालायाः )

आपणस्तु निषयायाम्

बाजार ( भण्डी, हाट ) के २ नाम—( १ )  
आपण (२) निषया । इनमें (१) पुल्लिङ्ग (२) स्त्री-  
लिङ्ग है ।

( द्वे मय्यवस्तुशालापकेः )

विषणि पर्यवधिक ॥२॥

हुषण के २ नाम—(१) विषणि ( २ ) पर्य-  
वधिका । इनमें (१) पुल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग है ॥२॥

( त्रीणि ग्राममध्यमार्गस्य )

रथ्या प्रतोली विमिश्रया

मर्ली (शहर के बीच का मार्ग) के ३ नाम—  
(१) रथ्या (२) प्रतोली (३) विमिश्रया ।

( द्वे परिशोद्धतमृत्तिकाकूटस्य, प्राकाराधारस्य वा )  
स्याच्चयो वप्रमखियाम् ।

खाई से निकाली गयी मिट्टी की ढेर या कच्चा  
किला के २ नाम—( १ ) चय ( २ ) वप्र । इनमें  
(१) पुल्लिङ्ग (२) पुल्लिङ्ग- नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि यष्टिकाकण्टकादिरचितवेष्टनस्य )

प्राकारो वरणः सालः

लकड़ी-काटे से बनाए गए घेरे के ३ नाम—  
(१) प्राकार (२) वरण (३) साल ।

( एकं ग्रामादेरन्ते कण्टकादिवेष्टनस्य )

प्राचीनं प्रान्ततो वृत्ति ॥३॥

नगर आदि के आसपास कटे के घेरा का  
नाम—(१) प्राचीन ॥३॥

( द्वे भित्तेः )

भित्तिः स्त्री कुड्यम्

भीत ( बीवाल ) के २ नाम—(१) भित्ति (२)  
कुड्य । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) नपुंसक है ।

( एकं बौद्धस्तूपस्य )

एड्ढकं यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।

बौद्धों के स्तूप का नाम—(१) एड्ढक ।

( षोडश गृहस्य )

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सप्त निकेतनम् ॥४॥

निशान्त-पस्त्य-सदनं भयनाऽऽगार-भन्दिरम् ।

गृहा-पुंसि च भूम्न्येव निकाम्य-निलयाऽऽलयाः

१ बौद्ध-धर्मावलम्बी नागरजीन गृह व्यक्ति का घर।  
को पृथो में रखकर उनके चारों ओर ऊँचा दिवार बना  
देने से जिसे स्तूप कहते हैं और वे चर्चा का पूजा करते थे।  
जैसा कि नष्टानागन पनसने में लिखा है कि बौद्धजान  
(सन्निधु) ने लोग गृहों का पूजा करने, और देवताओं का  
पूजा छोड़ देगे। भाग्यवर्ष में देवताओं के मन्दिर न दिख-  
लाई पड़ें किन्तु गृहों से ही देवता पान लेंगे—

एड्ढकम् एड्ढकम् एड्ढकम् एड्ढकम् ॥१२५, ६१॥

एड्ढकम् एड्ढकम् एड्ढकम् एड्ढकम् ॥१२५, ६१॥

Edikas = Buddhist Stupas [ K. P.

Jayawant. History of India, P. 3 A D-  
150 A D., P. 45 ]

घर के १६ नाम—(१) गृह (२) गेह (३) उदवसित (४) वेश्मन् (५) सद्यन् (६) निकेतन (७) निशान्त (८) पस्त्य (९) सदन (१०) भवन (११) आगार (१२) मन्दिर (१३) गृह (१४) निकाय्य (१५) निलय (१६) आलय । इनमें (१-१२) नपुंसक, (२२) पुंल्लिङ्ग मी, (१३) पुंल्लिङ्ग नित्यबहुवचनान्त, (१४-१६) पुंल्लिङ्ग हैं ॥४-५॥

( चत्वारि सभागृहस्य )

वासः कुटी द्वयोः शाला सभा

सभा घर के ४ नाम—(१) वास (२) कुटी (३) शाला (४) सभा । इनमें (१) पुंल्लिङ्ग (२) पुंल्लिङ्ग—स्त्रील्लिङ्ग (३-४) स्त्रील्लिङ्ग हैं ।

( द्वे अन्योन्याभिमुखशालाचतुष्कस्य )

सञ्जवनं त्विदम् ।

चतु शालम्

चौक के २ नाम—(१) सञ्जवन (२) चतु-शाल ।

( द्वे मुनीनां गृहस्य )

मुनीनां तु पर्यशालोऽस्त्रियाम् ।

मुनि लोगो की सोपडियों के २ नाम—(१) पर्यशाला (२) उटज । इनमें (१) स्त्रील्लिङ्ग (२) पुं०-नपुंसक है ।

( द्वे यज्ञस्थानस्य )

चैत्यमायतनं तुल्ये

यज्ञशाला के २ नाम—(१) चैत्य (२) आयतन । दोनों नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( द्वे अश्वशालायाः )

वाजिशाला तु मन्दुरा ।

घुड़शाल या अस्तबल के २ नाम—(१) वाजिशाला (२) मन्दुरा ।

( द्वे स्वर्णकारादीनां शालायाः )

आवेशनं शिल्पिशाला

सुनार—चित्रकार आदि कारीगरो के स्थान के २ नाम—(१) आवेशन (२) शिल्पिशाला ।

( द्वे जलशालायाः )

प्रपा पानीयशालिका ॥७॥

पौमरा, प्याऊ के २ नाम—(१) प्रपा (२) पानीयशालिका ॥७॥

( एकं मठस्य )

मठश्छात्रादिनिलयः

छात्रावास या सन्यासियों के वास स्थान का नाम—(१) मठ ।

( द्वे मध्यगृहस्य )

गञ्जा तु मदिरागृहम् ।

शरावधर ( कलवरिया ) के २ नाम—(१) गञ्जा (२) मदिरागृह ।

( द्वे गृहमध्यभागस्य )

गर्भागारं वासगृहम्

घर के मध्यभाग ( भीतर की कोठरियों ) के २ नाम—(१) गर्भागार (२) वासगृह ।

( द्वे प्रसवस्थानस्य )

अरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥

सौरीघर के २ नाम—(१) अरिष्ट (२) सूतिकागृह ॥ ८ ॥

( द्वे गवाक्षस्य )

वातायनं गवाक्षं

झरोखा के २ नाम—(१) वातायन (२) गवाक्ष ।

( द्वे मण्डपस्य )

अथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

मण्डप ( लोगों के आराम की जगह ) के २ नाम—(१) मण्डप (२) जनाश्रय । इसमें (१) पुं-नपुंसक में, (२) पुंल्लिङ्ग में होता है ।

( एकं धनवतां वासगृहस्य )

हर्म्यादि धनिनां वासः

१ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक अधिक मिलते हैं—

कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भूः

फर्शबन्दी ( तहखाना ) का नाम—(१) कुट्टिम । यह पुं-नपुंसक में होता है ।

चन्द्रशाला शिरोगृहम् ।

अटारो ( घूर ऊपर का वगला ) के २ नाम—(१) चन्द्रशाला (२) शिरोगृह ।

अमीरो के घर का नाम—( १ ) हर्म्य (नपुं-सक) ।

( एकं देवानां राज्ञां च गृहस्य )

प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ६ ॥

देवालय और महल का नाम—( १ ) प्रासाद ॥ ६ ॥

( द्वे राजगृहस्य )

सौधोऽस्त्री राजसदनम्

राजाओं के घर के २ नाम—(१) सौध (२) राजसदन । इनमें (१) पुं-नपुंसक और (२) नपुंसक में होता है ।

( द्वे राजगृहसामान्यस्य )

उपकार्योपकारिका ।

कपड़े के बने हुए राजा के घर ( तम्बू, खेमा, डेरा ) के २ नाम—(१) उपकार्या (२) उपकारिका ।

( एकैकमिष्वरगृहविशेषाणाम् )

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपिच ॥ १०

विच्छन्दकः प्रमेदा हि भवन्तीश्वरसङ्गनाम् ।

राजगृहों के भेद—

चार दरवाजा और तोरणसहित राजघर का नाम—(१) स्वस्तिक । ( पुं०-नपुं० )

एक के ऊपर एक कई मंजिल वाले राजघर का नाम—(१) सर्वतोभद्र । ( पुं०-नपुं० )

गोलघर का नाम—(१) नन्द्यावर्त । ( पुं० नपुं० )

खूब लम्बे-चौड़े और सुन्दर राजघर का नाम—(१) विच्छन्दक । ( पुं०-नपुं० ) ॥ १० ॥

( चत्वारि राज्ञां स्त्रीगृहस्य )

रथगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११

शुद्धान्तश्चावरोधध्व

रथवास के ४ नाम—(१) अन्तःपुर (२)

अवरोधन (३) शुद्धान्त (४) अवरोध ॥ ११ ॥

( द्वे हर्म्याद्युपरिगृहस्य )

स्यादष्टः क्षौममस्त्रियाम् ।

अष्टों के २ नाम—( १ ) अष्ट (२) क्षौम ।

इनमें (१) पुंल्लिङ्ग, (२) पु-नपुंसक में होता है ।

( त्रीणि द्वारप्रकोष्ठाद्विद्वारप्रवर्तिचतुष्करय )

प्रघाण-प्रघणाऽलिन्दा वहिद्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

दरवाजे के बाहर चबूतरे ( या बरामदा ) के ३ नाम—( १ ) प्रघाण ( २ ) प्रघण ( ३ ) अलिन्द ॥ १२ ॥

( द्वे देहल्याः )

गृहावग्रहणी देहली

देहली, ड्योड़ी के २ नाम—( १ ) गृहावग्रहणी ( २ ) देहली ।

( त्रीणि प्राङ्गणस्य )

अङ्गणं चत्वरऽजिरै ।

आँगन के ३ नाम—(१) अङ्गण (२) चत्वर (३) अजिर । ये (१-३) नपुंसक हैं ।

( एकं द्वारस्तम्भाधस्थितकाष्ठस्य )

अधस्तादाखणि शिला

दरवाजे के नीचे के चौकट का नाम—( १ ) शिला ।

( एकं द्वारस्तम्भोपरिस्थितकाष्ठस्य )

नासा दारूपरिस्थितम् ॥ १३ ॥

नास ( दरवाजे के ऊपर के चौकट जिंगो मस्तक पट्टी या गणेशपट्टी कहते हैं ) का नाम—(१) नासा ॥ १३ ॥

( द्वे गुप्तद्वारस्य )

प्रच्छन्नमन्तद्वारं स्यात्

गुप्त दरवाजे के २ नाम—(१) प्रच्छन्न (२) अन्तर्द्वार ।

( द्वे पक्षद्वारस्य )

पक्षद्वारं तु पक्षम् ।

दरवाजे के बगल की छिदरी के २ नाम—(१) पक्षद्वार (२) पक्ष ।

( द्वे पटलप्रान्ते गृहाच्छादनम् )

वलीक-नीध्रे पटल-प्रान्ते

पाटन छाने के सामान के २ नाम—( १ ) वलीक (२) नीध्र । इनमें (१) नपुंसक में (शुद्धि में

(मी) (२) नपुंसक में होता है । कोई-कोई 'पटल' और 'प्रान्त' इनको मिलाकर चार नाम बतलाते हैं ।

( द्वे छादनस्य )

अथ पटलं छुदिः ॥१४॥

छानी-छप्पर के २ नाम—( १ ) पटल (२) छुदि । इनमें ( १ ) नपुंसक, (२) सान्त स्त्रीलिङ्ग है ॥१४॥

( द्वे कुड्येषु छादनार्थं दत्तस्य वक्रकाष्ठस्य )

गोपानसी तु वलमी छादने वक्रदारुणि ।

छाजा के २ नाम—(१) गोपानसी (२) वलमी ।

( द्वे सौधादौ काष्ठादिरचितपक्षिगृहस्य )

कपोतपालिकायां तु विटङ्गं पुं-नपुंसकम् ॥१५॥

कबूतर के गज्ज-दरवा के २ नाम—( १ )

कपोतपालिका (२) विटङ्ग । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२)

पुंलिङ्ग और नपुंसक में हैं ॥१५॥

( त्रीणि द्वारस्य )

स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः

दरवाजे के ३ नाम—(१) द्वार् (२) द्वार (३)

प्रतीहार । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग ( २ ) नपुंसक (३)

पुंलिङ्ग हैं ।

( द्वे वेद्याः, प्राङ्गणादिषु कृतस्योपवेशस्थानस्य वा )

स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।

वेदी या आंगन में बैठने के लिए बनाये गये

चबूतरे के २ नाम—(१) वितर्दि (२) वेदिका । ये

(१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे द्वारबाह्यभागस्य )

तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारम्

घर के बाहर के फाटक के २ नाम—( १ )

तोरण (२) बहिर्द्वार । इनमें (१) पुं-नपुंसक (२)

नपुंसक होता है ।

( द्वे नगरद्वारस्य )

पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥१६॥

नगर के फाटक के २ नाम—(१) पुरद्वार

(२) गोपुर ॥१६॥

( एकं नगरद्वारे सुखेनावतरणार्थं कृतस्य

क्रमनिम्नस्य मृत्कूटस्य )

कूटं पूर्व्वारि यद्वस्तिनखस्तस्मिन्

नगर द्वार में सुख से आने जाने के लिए बनी हुई मिट्टी की सीढ़ी का नाम—(१) हस्तिनख ।

( द्वे कपाटस्य )

अथ त्रिषु ।

कपाटमररं तुल्ये

केवाड़ के २ नाम—(१) कपाट (२) अरर ।

ये दोनों शब्द समान अर्थ वाले और तीनों लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।

( एकं कपाटरोधनकाष्ठस्य )

तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥१७॥

अगरी, वेंवड़ा, सोंकल, सिटकनी का नाम—

(१) अर्गल । यह पुंलिङ्ग में नहीं होता, किन्तु स्त्री-लिङ्ग और नपुंसक में होता है ॥१७॥

( द्वे पापाणादिकृतसौधाचारोहणमार्गस्य )

आरोहणं स्यात्सोपानम्

पथर की सीढ़ी के २ नाम—(१) आरोहण

(२) सोपान ।

( द्वे काष्ठादिकृत्तारोहणमार्गस्य )

निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ।

काठ की सीढ़ी के २ नाम—(१) निश्रेणि

(२) अधिरोहिणी ।

( द्वे सम्मार्जन्याः )

सम्मार्जनी शोधनी स्यात्

बढ़नी, भाड़ के २ नाम—(१) सम्मार्जनी

(२) शोधनी ।

( द्वे अवकरस्य )

संकरोऽवकरस्तथा ॥१८॥

लिप्ते

कूड़ा, करकट के २ नाम—(१) सकर (२)

अवकर ॥१८॥

( द्वे निर्गमनप्रवेशमार्गस्य )

मुखं निःसरणम्

निकलने के द्वार के २ नाम—(१) मुख (२)

निःसरण ।

( द्वे समीचीनवासस्थानस्य )

सन्निवेशो निकर्षणः ।

अच्छे वासस्थान के २ नाम—(१) सन्निवेश  
(२) निकर्षण ।

( द्वे ग्रामस्य )

**समौ संवसथ-ग्रामौ**

गाँव के २ नाम—(१) संवसथ (२) ग्राम ।  
ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे गृहरचनावच्छिन्नभूमेः )

**वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम् ।**

घर बनाने लायक जमीन के २ नाम—(१)  
वेश्मभू (२) वास्तु । इनमें (१) स्त्री लिङ्ग और (२)  
पुँल्लिङ्ग और नपुंसक होते हैं ॥१६॥

( द्वे ग्रामादिसमीपदेशस्य )

**ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्**

गाँव के पास खुली जगह या पड़ोस के २  
नाम—(१) ग्रामान्त (२) उपशल्य ।

( द्वे सीमायाः )

**सीम-सीमे स्त्रियामुभौ ।**

गाँव की सीमा, डँढ़ के २ नाम—(१) सीमन्  
(२) सीमा । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे आभीरग्रामस्य )

**घोष आभीरपल्ली स्यात्**

अहीराना या अहीरों के गाँव के २ नाम—  
(१) घोष (२) आभीरपल्ली ।

( द्वे भिलग्रामस्य )

**पकरणं शवरालयः ॥२०॥**

भीलों मुसहरों-जंगलियों के गाँव के २  
नाम—(१) पकरण (२) शवरालय ॥२०॥

( इति पुरवर्गः २ )

**अथ शैलवर्गः ३.**

( त्रयोदश पर्वतसामान्यस्य )

**महीध्रे शिखरि-दमाभृदहार्य-धर-पर्वताः ।**

**अद्रि-गोत्र-गिरि-प्रावाऽचल-शैल-शिलोच्चयाः ॥१॥**

पहाड़ के १३ नाम—(१) महीध्र (२) शिख-  
र (३) दमान् (४) अहार्य (५) धर (६) पर्वत

(७) अद्रि (८) गोत्र (९) गिरि (१०) प्रावन् (११)  
अचल (१२) शैल (१३) शिलोच्चय ॥१॥

( द्वे लोकालोकस्य )

**लोकालोकश्चक्रवालः**

पृथ्वी को घेरे हुए पर्वत के २ नाम—( १ )  
लोकालोक (२) चक्रवाल ।

( द्वे त्रिकूटाचलस्य )

**त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ ।**

जिस पर्वत पर लट्का वसी हुई है उस त्रिकूट  
पर्वत के ३ नाम—(१) त्रिकूट (२) त्रिककुट । ये  
दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे अस्ताचलस्य )

**अस्तस्तु चरमदमाभृत्**

अस्ताचल के २ नाम—( १ ) अस्त ( २ )  
चरमदमाभृत् । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे उदयाचलस्य )

**उदयः पूर्वपर्वतः ॥२॥**

उदयाचल के २ नाम—( १ ) उदय ( २ )  
पूर्वपर्वत ॥२॥

( सप्त पर्वतविशेषाणाम् )

**हिमवान्निधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः ।  
गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥३॥**

हिमालय पहाड़ (जिसका विस्तार ७५० कोस  
है और श्रीमद्भागवत के कथनानुसार १०,०००  
योजन ऊँचा है, और जिसकी एक चौटी, गौरी-  
शङ्कर, १६३३४ हाथ ऊँची है ) का नाम—(१)  
हिमवत् ।

इलाहृत वर्ष के दक्षिण ह्रिन्वर्ग के तीनापर्वत  
का नाम—(१) निषध ।

विन्ध्याचल ( गुजरात में लेकर पूर्ण की ओर  
३०० कोस फैले हुए पर्वत ) का नाम—(१) विन्ध्य ।

केतुमाल वर्ष के तीनापर्वत ( जो इलाहृत वर्ष

१ मत्स्यपुराणां द्विनि देवतायां त्रिनामो नमः  
नाभिगजः । पूर्वपर्वतो विन्ध्योऽचलः पश्चिमः हिमवत् ।  
मानदण्डः ॥

के पूर्व में स्थित है ) का नाम—( १ ) माल्यवत ।

विन्ध्याचल की पश्चिमी पर्वतमाला ( जिसमें अरावली भी है और जो नर्मदा के मुहाने से खंवात की खाड़ी तक फैली हुई है ) का नाम—( १ ) पारियात्रक ।

भद्राश्ववर्ष ( जो इलाहृत वर्ष के पश्चिम में है ) के सीमापर्वत और सुमेरुपर्वत ( जिसे आजकल रुद्रहिमालय कहते हैं, यही गंगा की प्रादुर्भावस्थली गंगोत्री नामक स्थान है ) के एक भाग का नाम—( १ ) गन्धमादन ( इस पर्वत की श्रेणी बदरिकाश्रम से उत्तर-पूर्व की ओर कुछ ही दूरकर आरम्भ होती है ) ।

किंपुरुषवर्ष ( हिमालय के उत्तर स्थित ) के सीमापर्वत का नाम—( १ ) हेमकूट । आदि<sup>३</sup> ।

( सप्त पाषाणस्य )

पाषाण-प्रस्तर-आग्नेयपलाशमानः शिला दृषत् ।

पत्थरके ७ नाम—( १ ) पाषाण ( २ ) प्रस्तर ( ३ ) आग्न ( ४ ) उपल ( ५ ) अश्मन् ( ६ ) शिला ( ७ ) दृषद् । इनमें ( १-५ ) पुंलिङ्ग ( ६-७ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि शिखरस्य )

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गम्

पहाड़ की चोटी के ३ नाम—( १ ) कूट ( २ ) शिखर ( ३ ) शृङ्ग । इनमें ( १ ) पुंलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग ( २-३ ) नपुंसक हैं ।

( त्रीणि पर्वतात्पतनस्थानस्य )

प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥४॥

बीहड़ या पहाड़ से पानी गिरने के स्थान के ३ नाम—( १ ) प्रपात ( २ ) अतट ( ३ ) भृगु ॥४॥

( एकं पर्वतमध्यभागस्य मेखलाख्यस्य )

२ आदिना मलय-वित्रकूट-मन्दरादयः ।

रजताद्रिस्तु वैलास इन्द्रकीलस्तु मन्दरः ।

अपि किष्किन्ध-किष्किन्धौ वानराणां गिरौ द्वयम् ॥

मलयप्रसा—

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा यन्नाश्रिता हि तरवस्तरवस्त एव । मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण शाखो-  
निम्बकुटजा अपि चन्दनानि ।

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः

पहाड़ के मध्य भाग का नाम—( १ ) कटक । यह पुं-नपुंसक लिङ्ग में होता है ।

( त्रीणि पर्वतसमभूभागस्य )

स्तुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् ।

पहाड़ की समतल भूमि के ३ नाम—( १ ) स्तु ( २ ) प्रस्थ ( ३ ) सानु । ये ( १-३ ) पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे यत्र पानीयं निपत्य बहुली भवति तस्य स्थानस्य )

उत्सः प्रस्रवणम्

जहाँ टपक कर पानी एकट्ठा हो जाता है उस जगह के २ नाम—( १ ) उत्स ( २ ) प्रस्रवण ।

( द्वे उत्साज्जिर्गतजलप्रवाहस्य )

पञ्चापि पर्याया इत्यन्ये )

वारिप्रवाहो निर्भरो भरः ॥१५॥

भरना के ३ नाम—( १ ) वारिप्रवाह ( २ ) निर्भर ( ३ ) भर । [ कोई 'उत्स' 'प्रस्रवण' आदि को इन्हीं शब्दों का पर्यायवाची मानते हैं ] ॥१५॥

( द्वे कृत्रिमगृहाकारगिरिविवरस्य )

दरी तु कन्दरो वा स्त्री

बनाई हुई गुफा के २ नाम—( १ ) दरी ( २ ) कन्दर । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग और ( २ ) पुंलिङ्ग के अतिरिक्त 'कन्दरा' स्त्रीलिङ्ग में भी होता है ।

( द्वे अकृत्रिमगिरिविलस्य )

देवखातविले गुहा ।

गह्वरम्

देवताओं द्वारा खोदे गए बिल ( बिना बनाई गुफा ) के २ नाम—( १ ) गुहा ( २ ) गह्वर ।

( एकं गिरेः पतितस्थूलपाषाणस्य )

गरुडशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥६॥

पहाड़ से गिरे हुए पत्थर की बड़ी २ चट्टान के नाम—( १ ) गरुडशैल ॥६॥

१ दन्तकास्तु वहिस्तिर्यक्प्रदेशाभिर्गता गिरेः ।

पहाड़ के तिरछे प्रदेश से बाहर निकले हुए शून के आकार के पत्थरों का नाम—( १ ) दन्तकाः ।

( द्वे रत्नाद्युत्पत्तिस्थानस्य )

खनिः स्त्रियामाकर. स्यात्

खान के २ नाम—(१) खान (२) आकर ।  
इनमें पहला स्त्रीलिङ्ग, और दूसरा पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे पर्वतसमीपस्थात्पर्वतानाम् )

पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।

पहाड़ के समीप छोटी-छोटी पहाड़ियों के  
२ नाम—(१) पाद (२) प्रत्यन्तपर्वत ।

( एकं पर्वतासन्नभूमेः )

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमि

पहाड़ के नीचे की भूमि का नाम—  
(१) उपत्यका ।

( एकं पर्वतोर्ध्वभूमेः )

ऊर्ध्वमधित्यका ॥७॥

पहाड़ के ऊपर की जमीन का नाम—(१)  
अधित्यका ॥७॥

( एकं मन शिलादिधातोः )

धातुर्मनःशिलाद्यद्रेः

पर्वत की—मैनसिल, हरताल, सुवर्ण, ताया,  
चौदी, गैर, पंजन, कांसी, सीगा, लोहा, हिंगलू,  
गन्धक, अन्नक आदि—रतुथो का नाम—(१) धातु ।

( एकं धातुविशेषस्य )

गैरिकं तु विशेषतः ।

विशेष कर (१) 'गैरिक' (गैर) धातु है ।

( द्वे कृतादिभिः सिंहितस्थानस्य )

निशुब्ज-कुब्जो वा क्लीबे कृतादिपिहितोदरे =

लताओं से घिरे हुए स्थान (कुब्ज) के २  
नाम—(१) निशुब्ज (२) कुब्ज । ये दोनों शब्द  
पुल्लिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसक में भी होते हैं ॥८॥

( इति शैलवर्गः ३ )

## अथ वनौषधिवर्गः ४

( पट् वनस्य )

अटव्यरग्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

जङ्गल के ६ नाम—(१) अटवी (२) अरग्य  
(३) विपिन (४) गहन (५) कानन (६) वन । इनमें  
(१) स्त्रीलिङ्ग (२-६) नपुंसक हैं ।

( द्वे महतो वनस्य )

महारग्यमरग्यानी

भारी जङ्गल के २ नाम—(१) महारग्य (२)  
अरग्यानी । इनमें (१) नपुंसक और (२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे गृहसमीपोपवनस्य )

गृहारामास्तु निष्कुटा ॥९॥

घर के नजदीक के वनीचों के २ नाम—(१)  
गृहाराम (२) निष्कुट ॥९॥

( द्वे कृत्रिमवृक्षसमूहस्य )

आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यन् ।

बाग के २ नाम—(१) आराम (२) उपवन ।  
( एकं मन्त्रिणां वेद्यायाश्च गृहस्थोपवनाय )  
अमात्यगणिकागोपवने वृक्षघाटिका ॥१०॥

राजमन्त्रा य गणिका के बाग का नाम—(१)  
वृक्षघाटिका ॥१०॥

( द्वे राज सर्वोपमोपवनस्य )

पुमानाक्षीट उद्यानं राज्ञः स्वाधारणं वनम् ।

राजा का स्वाधारण बाग ( जगन्निर्देश,  
मन्त्रिणां वा विष्णुस्य कवि के बाग ) में  
प्रत्येक के बहुत बड़े या बहुत ही बड़े वृक्षों का  
उप बाग है । के २ नाम—(१) उद्यान (२)  
उद्यान (१) पुल्लिङ्ग (अमरनाम के अनुसार)  
( नपुंसक में भी ) और (२) नपुंसक है ।

१ धादिना इतितात् खण्ड, प्रादिप्रद । तदुक्त—

इत्यर्थोऽप्यन्यथा हि खनिं मनसिना ।

गैरिकं यथासमीपस्थानस्योदरेऽप्युक्तम् ।

गन्धकोदरेऽप्युक्तम् प्रत्यक्षे विष्णुस्य ।

इत्युक्तं तदर्थं हे विषय मे देवदत्त रो मे लिखत है कि

इति उक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं ।

उक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं ।

इत्युक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं ।

इत्युक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं इत्युक्तं ।



( एकं यत्र स-स्त्रीको राजा क्रीडति तस्य वनस्य )  
स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥३॥

रनिवास की रानियों के साथ विविध प्रकार के मनोरजन जिस वाग में किए जाये उसका नाम—(१) प्रमदवन ॥३॥

( पञ्च सान्तरपङ्केः )

वीथ्यालिरावालः पङ्क्तिः श्रेणी

पङ्क्ति या पॉति के ५ नाम—(१) वीथी (२) आलि (३) अवलि (४) पङ्क्ति (५) श्रेणी ।

( द्वे निरन्तरपङ्क्त्यपङ्क्तिसाधारणायाः )

लेखास्तु राजयः ।

लकीर या रेखा के २ नाम—(१) लेखा (२) राजि । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकं वनसमूहस्य )

वन्या वनसमूहे स्याद्

वन-समूह का नाम—(१) वन्या ।

( द्वे नूतनाङ्कुरस्य )

अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥४॥

नया अङ्गुष्ठा का नाम—(१) अङ्कुर ॥४॥

( त्रयोदश वृक्षस्य )

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तदः ।

अनोकहः कुटः शालः पलाशी द्वु-द्रुमागमाः ॥५॥

पेड़ के १३ नाम—(१) वृक्ष (२) महीरुह (३) शाखिन् (४) विटपिन् (५) पादप (६) तरु (७) अनोकह (८) कुट (९) शाल (१०) पलाशिन् (११) द्रु (१२) द्रुम (१३) अगम ॥५॥

( एकं पुष्पाज्जातफलोपलक्षितवृक्षस्य )

वानस्पत्यः फलः पुष्पात्

फूल कर फलने वाले ( आम, जामुन आदि ) पेड़ों का नाम—(१) वानस्पत्य ।

( एकं पनसोदुम्बरादेः, द्रुममात्रस्य वा )

तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।

बिना फूले फलनेवाले ( कटहल, गूलर आदि ) पेड़ या वृक्षमात्र का नाम—(१) वनस्पति ।

( एकं व्रीहियवादेः )

श्रोषध्यः फलपाकान्ता स्युः

जो फल आने के बाद सूख जाते हैं ( जैसे धान, जौ ) उनका नाम—(१) श्रोषधी ।

( द्वे यथाकालं फलधरस्य )

अवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥६॥

समय के अनुसार फलनेवाले पेड़ों के २ नाम—(१) अवन्ध्य (२) फलेग्रहि । ये (१-२) पुं०-स्त्री०-नपुंसक में होते हैं ॥६॥

( त्रीणि कृतावपि फलरहितस्य )

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च

ऋतु में भी फल रहित अर्थात् न फलने वाले पेड़ों के ३ नाम—(१) अवन्ध्य (२) अफल (३) अवकेशिन् । (१-३) पुं०-स्त्री०-नपुंसक में होते हैं ।

( त्रीणि फलसहितवृक्षस्य )

फलवान्फलिनः फली ।

फलयुक्त पेड़ के ३ नाम—(१) फलवान् (२) फलिन (३) फलिन् । ये (१-३) पुं०-स्त्री०-नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ।

( अष्टौ प्रफुल्लितवृक्षस्य )

प्रफुल्लोत्फुल्ल-संफुल्ल-व्याकोश-विकच-स्फुटाः ७ फुल्लश्चैते विकसिते

फूले हुए पेड़ों के ८ नाम—(१) प्रफुल्ल (२) उत्फुल्ल (३) संफुल्ल (४) व्याकोश (५) विकच (६) स्फुट (७) फुल्ल (८) विकसित । ये (१-८) पुं०-स्त्री०-नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ॥७॥

( २ ) वीरुध ( ३ ) वानस्पत्य ( ४ ) औपधि ।

जिन वृक्षों पर बिना फूल के ही फल लगे उन्हें वनस्पति कहते हैं । जिन वृक्षों पर फूल लगकर फल लगते हैं उन्हें वानस्पत्य कहते हैं । जो फल लगने के अनन्तर सूख जाते हैं उन्हें औपधि कहते हैं । जिनकी बेली शोती है उन्हें वीरुध कहते हैं ।

१ वनस्पतिर्वीरुधश्च वानस्पत्यस्तथौपधि ।

फलैर्वनस्पति पुष्पैर्वानस्पत्य फलैरपि ॥

श्रोषध्यः फलपाकान्ता प्रातानैर्वीरुध स्मृता ॥

वैद्यक ग्रन्थों के अनुसार औद्भिदि ( पृथ्वी को फोड़ कर निकलनेवाले ) द्रव्य की चार जाति है—(१) वनस्पति

स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।

ये 'अग्रन्ध्य' आदि ( श्लोक ६ ) से लेकर 'विकसित' ( श्लोक ७ ) तक के शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

( त्रीणि शाखापत्ररहिततरोः )

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कुः

ढूँट ( डाली और पत्ते से हीन ) पेड़ के ३ नाम—(१) स्थाणु (२) ध्रुव (३) शङ्कु । इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग, नपुंसक में और शेष (२-३) पुँल्लिङ्ग में होते हैं ।

( एकं सूक्ष्मशाखामूलस्य शाखोटकादेः )

ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥८॥

छोटी २ डाली और छोटी २ जड़ वाले पौधा [ जैसे मधुयष्टिका ( मुलेठी ), कण्टकारी ( कटेरी ) ] या नाम—(१) क्षुप ॥८॥

( द्वे स्कन्धरहितस्य )

अप्रकाण्डे स्तम्ब-गुल्मी

तना रहित पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले [ जैसे जटामांसी ( बालछद ), आर्द्रक ( अदरक ) ] के २ नाम—(१) स्तम्ब (२) गुल्म ।

( त्रीणि लतामात्रस्य )

घल्ली तु प्रततिर्लता ।

लता वेलि [ जैसे नागवल्ली ( पान ), गुल्मी ( गिलोय ) ] के ३ नाम—(१) वल्ली (२) वनति (३) लता ।

( त्रीणि शाखादिभिर्विस्मृतमायाः )

लता प्रतानिनी पीयूषं गुल्मिन्युल्लप इत्यपि ॥९॥

शाखा आदि से फैली हुई लता के ३ नाम—(१) पीयूष (२) गुल्मिनी (३) उल्लप । इनमें (१-२) लोपिङ्ग और (३) पुँल्लिङ्ग हैं ॥९॥

( त्रीणि वृक्षादिद्वैतस्य )

महाधारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रायस्तः ।

पेड़ और पहाड़ आदि की छेदों के ३ नाम—(१) उच्छ्राय (२) उत्सेध (३) उच्छ्राय ।

( द्वे वृक्षादेः विधनस्य )

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः

स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥१०॥

तना ( पेड़ की जड़ से लेकर शाखा पर्यन्त भाग ) के २ नाम—(१) प्रकाण्ड (२) स्कन्ध । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में होता है, (२) पुँल्लिङ्ग है ॥१०॥

( द्वे शाखायाः )

समे शाखा-लते

डाली के २ नाम—(१) शाखा (२) लता ।

( द्वे प्रधानशाखायाः )

स्कन्धशाखा-शाले

बड़ी डाली के २ नाम—(१) स्कन्धशाखा (२) शाला ।

( द्वे तरुमूलस्य )

शिफा-जटे ।

जड़ के २ नाम—(१) शिफा (२) जटा ।

( एकं शाखामूलस्य )

शाखाशिफाऽवरोहः स्यात्

डाली की जड़ का नाम—(१) अवरोह ।

( एकं वृक्षामगामिन्या लतायाः )

मूलाद्याग्रं गता लता ॥११॥

पेड़ की जड़ से लेकर आगे या ऊपर की ओर गयी हुई लता या नाम—(१) अवरोह ॥११॥

( त्रीणि त्रिपरस्य )

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना

टहनी या पेड़ के ऊपरी हिस्से के ३ नाम—(१) शिरम् (२) त्रम (३) शिखर । इनमें (१-२) नपुंसक, (३) नपुंसक और पुँल्लिङ्ग में होता है ।

( त्रीणि वृक्षादेर्मूलमात्रस्य )

मूर्लं मुक्षोऽद्विनामक ।

पेड़ के जड़ मात्र के ३ नाम—(१) मूर्ल (२) मुक्ष (३) अद्विनामक । इनमें (१) नपुंसक, (२-३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे वृक्षादेः विधनस्य )

व्यारो मज्जा नरि

पेड़ या वृक्ष के २ नाम—(१) व्यारो (२) मज्जा । ये दोनों शब्द नर ( पुं ) लिंग में होते

हैं । कहीं कहीं 'मज्जा' का टावन्त ( स्त्रीलिङ्ग ) भी किया गया है ।

( त्रीणि त्वच )

त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥१२॥

पेठ की छाल, छिलका, वोकला के ३ नाम—

(१) त्वच् (२) वल्क (३) वल्कल । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२-३) पुंलिङ्ग और नपुंसक में होते हैं ॥१२॥

( द्वे काष्ठमात्रस्य )

काष्ठं दारु

काठ के २ नाम—(१) काष्ठ (२) दारु ।

इनमें (१) नपुंसक (२) नपुंसक और पुंलिङ्ग में होता है ।

( त्रीण्यग्निसन्दीपनतृणकाष्ठादेः )

इन्धनं त्वेध इधमम्

ईधन के ३ नाम—(१) इन्धन (२) एधस् (३) इध्म । ये (१-३) नपुंसक लिङ्ग में हैं ।

( द्वे यागादौ ह्ययमानस्य काष्ठस्य )

एध. समित् स्त्रियाम् ।

यज्ञादि होम के निमित्त समिध आदि के २ नाम—(१) एध (२) समिध् । इनमें (१) अदन्त पुंलिङ्ग, और (२) धान्त स्त्रीलिङ्ग है ।

( द्वे वृक्षगतविवरस्य )

निष्कुहः कोटरं वा ना

खोखला के २ नाम—(१) निष्कुह (२) कोटर । इनमें (१) पुंलिङ्ग, (२) नपुंसक और पुंलिङ्ग में होता है ।

( द्वे तुलस्यादेरभिनवोद्भिदि 'वौर' इति ख्यानस्य )

वल्हारिर्मञ्जरि स्त्रियौ ॥१३॥

वौर के २ नाम—(१) वल्हारि (२) मञ्जरि ।

ये स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १३ ॥

( पट पत्रस्य )

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छद पुमान् ।

पत्ता के ६ नाम—(१) पत्र (२) पलाश

(३) छदन (४) दल (५) पर्ण (६) छद ।

इनमें (१-५) नपुंसक और (६) अदन्त पुंलिङ्ग हैं ।

( द्वे नवपत्रस्य )

पल्लवोऽस्त्री कसलयम्

नये पत्ते के २ नाम—(१) पल्लव (२)

कसलय । ( १-२ ) पुं-नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे शाखादिविस्तारस्य )

विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥१४॥

छार के फैलने के २ नाम—(१) विस्तार

( २ ) विटप । इनमें (१) पुंलिङ्ग ( २ ) पुं-नपुंसक में होता है ॥ १४ ॥

( द्वे फलस्य )

वृक्षादीनां फलं सस्यम्

वृक्षादि के फल के २ नाम—(१) फल ।

( २ ) सस्य ।

( द्वे पुष्पादिमूलाधारस्य )

वृन्तं प्रसववन्धनम् ।

फूल के आधार स्वरूप जड़ के २ नाम—(१)

वृन्त ( २ ) प्रसववन्धन ।

( एकमपक्वफलस्य )

आमे फले शलाटुः स्यात्

कच्चे फल का नाम—( १ ) शलाटु । यह पुं-स्त्री-नपुंसक में होता है ।

( एकं शुष्कफलस्य )

शुष्के वानम्

सूखे फल का नाम—(१) वान । यह शब्द पुं-स्त्री-नपुंसक में होता है ।

उभे त्रिषु ॥१५॥

दोनों ( शलाटु, वान ) तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥ १५ ॥

( द्वे नवकलिकायाः )

क्षारको जालकं क्लीधे

खिली हुई नई कली के २ नाम—(१)

क्षारक ( २ ) जालक । इनमें 'जालक' शब्द नपुंसक ही में होता है ।

( द्वे अविकसितकलिकायाः )

कलिका क्रोरकः पुमान् ।

विना खिली हुई कली के २ नाम—( १ ) कलिका ( २ ) कोरक । ( १ ) खीलित ( २ ) पुल्लित हैं ।

( द्वे कलिकादिभिराकीर्णस्य पल्लवग्रन्थेः )

स्याद्गुच्छकस्तु स्तवकः

फूल के गुच्छे के २ नाम—( १ ) गुच्छक ( २ ) स्तवक ।

( द्वे ईषट्टिकसितकलिकायाः )

कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् । १६॥

फूलती हुई या अधखिली कली के २ नाम—( १ ) कुड्मल ( २ ) मुकुल । ये ( १-२ ) पुल्लित और नपुंसक में होते हैं ॥ १६॥

( पञ्च नामानि पुष्पस्य )

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ।

फूल के ५ नाम—( १ ) सुमनस् ( २ ) पुष्प ( ३ ) प्रसून ( ४ ) कुसुम ( ५ ) सुम । इनमें ( १ ) खीलित, ( २-५ ) नपुंसक लिंग हैं ।

( द्वे पुष्पमयोः )

मकरन्दः पुष्परसः

फूल के रस के २ नाम—( १ ) मकरन्द ( २ ) पुष्परस ।

( द्वे पुष्परेणोः )

परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥

फूल की भुलि के २ नाम—( १ ) पराग ( २ ) सुमनोरजः । इनमें ( १ ) पुल्लित ( २ ) नपुंसक हैं ॥ १७॥

हिहीनं प्रसवे सर्पम्

एक जो परवृत्त, सरिप आदि के प्रसव ( फल, फल, मूल ) को जाबों के रूप में लिंग और पुल्लित से वर्णित केवल नपुंसक लिंग में होते ( यथा चम्पक, आम, चूरास )

हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

हिन्दु हरी-की ( मोरानदी, कर्पूरी, कर्पूर ) आदि रस प्रसव ( फल, फल, मूल ) में भी लोला होती ( यथा हरीतकी का फल हरीतकी ) ।

( अश्वत्थादिफलानां पृथक्पृथगेवैकम् )

आश्वत्थ-वैणव-प्राक्त-नैयग्रोधैर्बुधं फले ॥ १८॥  
बार्हत च

पीपल के फल का नाम—( १ ) आश्वत्थ ( नपु० )  
बांस के फल का नाम—( १ ) वैणव ( नपु० )  
पाकड़ के फल का नाम—( १ ) प्राक्त ( नपु० )  
वड़, चरगद के फल का नाम—( १ ) नैयग्रोध ( नपु० )  
हिंगोट के फल का नाम—( १ ) ऐहुद ( नपु० )  
भटकटैया के फल का नाम—( १ ) बार्हत ( नपु० )  
॥ १८॥

( त्रीणि जम्बूफलस्य )

फले जम्बूया जम्बू स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

जामुन के फल के ३ नाम—( १ ) जम्बू ( २ ) जम्बु ( ३ ) जाम्बव । इनमें ( १ ) खीलित ( २-३ ) नपुंसक हैं ।

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गाः

जाती ( जाही ) यूथिका ( जूही ), नखिलस ( मोनिया ) आदि शब्द फूल के अर्थ में अपने ही लिंग में होते हैं ( जैसे 'जाम्बा, पुष्पं जाती' जाती का फूल जानी, खीलित ) नपुंसक में नहीं ।

ग्रीह्यः फले ॥ १९॥

धान ( उदक, मूंग ) आदि की फलार्थ में अपने ही लिंग में होते हैं ( यथा—यवानां फलानि यवा, माषाणां फलानि माषा, सुधानां फलानि सुधान ) ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मृलेऽपि

विदारी, शालपर्णी आदि जड़ के अर्थ में भी अपने लिंग में होते हैं ( यथा विदार्या मूलं विदारी )

पुष्पे क्लीयेऽपि पाटन्या ।

पाटला का नाम फूल के अर्थ में नपुंसक लिंग में होता है ( यथा—पाटलाका पुष्पं पाटलम् ) ।

( पञ्च पिप्पलाक्षस्य )

पिप्पिलाम्बुलदन्तः पिप्पला कुत्तराजः । २०॥  
अक्षय्ये

१ पीपल के पेड़ के ५ नाम—(१) बोधिद्रुम  
(२) चलदल (३) पिप्पल (४) कुञ्जराशन (५)  
अश्वत्थ ॥२०॥

( सप्त कपित्थस्य )

अथ कपित्थे स्युर्दधित्थ-ग्राहि-मन्मथा ।  
तस्मिन्दधिफलः पुष्पफल-दन्तशठवपि ॥२१॥

२ कैथ के ७ नाम—(१) कपित्थ (२)  
दधित्थ (३) ग्राहिन् (४) मन्मथ (५) दधिफल  
( ६ ) पुष्पफल ( ७ ) दन्तशठ ॥२१॥

( चत्वारि उदुम्बरस्य )

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।

गूलर के ४ नाम—(१) उदुम्बर (२) जन्तु-  
फल (३) यज्ञाङ्ग (४) हेमदुग्धक ।

( चत्वारि कोविदारस्य )

कोविदारे चमरिकः कुहालो युगपत्रकः ॥२२॥

कचनार<sup>३</sup> के ४ नाम—(१) कोविदार (२)  
चमरिक (३) कुहाल (४) युगपत्रक ॥२२॥

( चत्वारि सप्तपर्णस्य )

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।

१ पीपल के पेड़ भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में पाये जाते हैं । इमा के नीचे बुद्ध गया में गौतम बुद्धको बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी । इसी लिये इसे 'बोधिद्रुम' कहते हैं । इसके गोल और अनीदार पत्ते सदैव हिलने रहते हैं । इसी कारण इसे 'चलदल' कहने हैं ।

२ कैथ के पेड़ समस्त भारत में पाये जाते हैं । वर्षा ऋतु में इसकी कली खिलती है और शीत ऋतु में फल पक जाते हैं । इसके पत्ते छोटे और चिकने होते हैं । इसके फल सफेद होते हैं और आकार में बेल से छोटे होते हैं । इसके फूल छोटे और सफेद रंग के हाने हैं । लोग कहते हैं कि हाथी पूरा कैथ बिना चबाए निगल जाता है और कुछ समय बाद उमकी लोद के साथ पूरा कैथ निकलता है, जिसमें गूदे के स्थान में लोद मरी होती है । इसीलिए 'गजकपित्थ' न्याय की सृष्टि हुई ।

३ कचनार लाल और सफेद दो प्रकार का होता है । यह पेड़ जंगल और पहाड़ों में अधिक होता है । एक-एक टाली में दो-दो पत्ते होते हैं ।

छतिवन<sup>४</sup> के ४ नाम—(१) सप्तपर्ण (२)  
विशालत्वक् (३) शारद (४) विषमच्छद ।

( अष्टावारग्वधस्य )

आरग्वधे राजवृक्ष-शम्याक-चतुरङ्गुलाः ॥२३॥

आरेवत-व्याधिघात-कृतमाल-सुवर्णकाः ॥

अमलतास<sup>५</sup> के ८ नाम—(१) आरग्वध  
(२) राजवृक्ष (३) शम्याक [ शम्पाक, सम्पाक ]  
(४) चतुरङ्गुल (५) आरेवत (६) व्याधिघात (७)  
कृतमाल (८) सुवर्णक ॥२३॥

( पञ्च जम्बीरस्य )

स्युर्जम्बीरे, दन्तशठ-जम्भ-जम्भीर-जम्भलाः २४

जमीरी<sup>६</sup> नीबू के ५ नाम—(१) जम्बीर (२)  
दन्तशठ (३) जम्भ (४) जम्भीर (५) जम्भल ॥२४॥

( पञ्च वरणस्य )

वरुणो वरण सेतुस्तिकशाकः कुमारकः ।

वरना<sup>७</sup> पेड़ के ५ नाम—(१) वरुण (२)  
वरण (३) सेतु (४) तिकुशाक (५) कुमारक ।

( पञ्च नागकेसरस्य )

पुत्रागो पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥२५॥

नागकेशर के ५ नाम—(१) पुत्राग (२)  
पुरुष (३) तुङ्ग (४) केसर (५) देववल्लभ ॥२५॥

( चत्वारि निम्बतरोः )

पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।

४ छतिवन के पत्ते सेमर के समान होते हैं, और एक-एक टाली में सात २ पत्ते लगते हैं ।

५ इसका बड़ा पेड़ होता है । पत्ते लाल चन्दन के पत्तों की भाँति होते हैं । फूल पाले, तरबट, अमले की तरह होते हैं । फलो गोल और हाथ-डेढ़ हाथ लम्बो होता है ।

६ इसका पेड़ बड़ा और काँटीला होता है । वसन्त ऋतु में इसमें फूल लगते हैं और बरसात में फल दिखलाई पड़ते हैं जो कार्तिक के उपरान्त खाने योग्य होते हैं ।

७ वरना का बड़ा पेड़ होता है । पत्ते बेल के समान तीन-तीन लगते हैं । फल बेल के समान गोल और सुपारी के आकार का होता है । फूल गुलतरों की तरह होता है ।

[illegible]

( सप्त वेतसस्य )

अथ वेतसे ॥२६॥

रथाऽभ्रपुष्प-विदुल शीत-वानीर-वञ्जुला ।

वेत<sup>१</sup> के ७ नाम—(१) वेतस (२) रथ (३) अभ्रपुष्प (४) विदुल (५) शीत (६) वानीर (७) वञ्जुल ॥२६॥

( चत्वारि जलवेतसस्य )

द्वौ परिव्याध-विदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥३०॥

जलवेत<sup>२</sup> के ४ नाम—(१) परिव्याध (२) विदुल (३) नादेयी (४) अम्बुवेतस । इनमें (३ रा) स्त्री लिङ्ग है, शेष पुल्लिङ्ग है ॥३०॥

( पञ्च इवेतशिग्रोः )

सोभाञ्जने शिग्रु-तीक्ष्णगन्धकाऽक्षीव-मोचका ।

सफेद<sup>३</sup> सैजिना के ५ नाम—(१) सोभाञ्जन (२) शिग्रु (३) तीक्ष्णगन्धक (४) अक्षीव (५) मोचक ।

( एकं मधुशिग्रोः )

रकोऽसौ मधुशिग्रुः स्यात्

लाल सैजिना का नाम—(१) मधुशिग्रु ।

( द्वे अरिष्टस्य )

अरिष्ट. फेनिल. समौ ॥३१॥

रीठा के २ नाम—(१) अरिष्ट (२) फेनिल ॥३१॥

१ जल के समीप की भूमि में वेत होता है । इसकी जड़ बहुत लम्बी लम्बी होती है । इसके पेड़ लता के आकार के होते हैं ।

२ जल में भी वेत होता है । इसके ऊपर का बल्कल बहुत पक्का होता है । इसीसे कुर्सी बुनी जाती है ।

३ सफेद फूल वाला सैहजन अधिकता से बागों और बनों में होता है ।

४ सैहजन के फूल लाल और नीले रंग के भी होते हैं । ये अधिकता से बाग आदि में नहीं पाये जाते । लोग इसकी फलियों को दाल में डालकर खाते हैं ।

५ बनों और उपबनों में रीठे के पेड़ होते हैं । रीठे की एक-एक टोटी में छ.—सात पत्ते होते हैं । रीठे के भागों से वस्त्र साफ़ किया जाता है ।

( पञ्च विल्ववृक्षस्य )

विल्वे शारिडल्य-शैलूपौ मालूर-श्रीफलावपि ।

वेल के ५ नाम—(१) विल्व (२) शारिडल्य (३) शैलूप (४) मालूर (५) श्रीफल ।

( त्रीणि प्लक्षस्य )

प्लक्षो जटी पर्कटी स्यात्

पाखर के ३ नाम—(१) प्लक्ष (२) जटिन् (३) पर्कटिन् । ( वीष प्रत्ययान्त भी )  
( त्रीणि वटस्य )

न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥३२॥

वड़ के पेड़ के ३ नाम (१) न्यग्रोध (२) बहुपाद (३) वट ॥३२॥

( षट् लोघसामान्यस्य )

गालवः शावरो लोघस्तिरीटस्तिल्व-मार्जना ।

लोघ के ६ नाम—(१) गालव (२) शावर (३) लोघ (४) तिरीट (५) तिल्व (६) मार्जन ।

( त्रीणि आम्रस्य )

आम्रश्चूतो रसालः

आम्र के ३ नाम—(१) आम्र (२) चूत (३) रसाल ।

६ भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में वेल के पेड़ पाये जाते हैं । ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में इसके पुराने पत्ते मड़ जाते हैं और एक डठी में तीन त्रिशूलाकार नये निकल आते हैं । इसकी शाखाओं में कांटे होते हैं । इसकी मंहुत्ता धार्मिक ग्रन्थों एवं वैद्यक ग्रन्थों में लिखी हुई है ।

७ जगलों और गाँवों में पाकड़ के पेड़ बहुत होते हैं । इसके पत्ते लम्बे २ आम की तरह होते हैं इसकी भाँति उत्तम एवं मधन छाया अन्य किसी वृक्ष की नहीं होती ।

८ वड़ का पेड़ बहुत ही विराल होता है । इसके फल छोटे-छोटे मड़वेर के बराबर निकलते हैं । इसके पत्ते खूब लम्बे-चौड़े होते हैं ।

९ लोघ दो प्रकार का होता है—एक साधारण और दूसरा पठानी । पठानी लोघ के नाम आगे ४१ वें श्लोक में बतलाये गये हैं ।

१० प्रायः भारत के समस्त प्रान्तों में आम्र के पेड़ पाये जाते हैं । आम्र की अनेक जाति होती है परन्तु आकार सबका एक ही मा होती है ।

( एकमतिमुगन्धाग्रस्य )

असौ सहकारोऽतिसौरभः॥३३॥

खुब महकदार आम ( जैसे लंगड़ा, मालवह, किगुनभोग ) का नाम—( १ ) महकार ॥३३॥

( पञ्च गुग्गुलवृक्षस्य )

कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

गुग्गुल के ५ नाम—( १ ) कुम्भ ( २ ) उलूखलक ( ३ ) कौशिक ( ४ ) गुग्गुलु ( ५ ) पुर ( अदन्त ) । इनमें ( २ ) नपुंसक और शेष ( १, ३-५ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( पञ्च श्लेष्मान्तकस्य )

शेलुः श्लेष्मातकं शीत उद्दालो बहुवारकः३४

श्लेष्मौढा के ५ नाम—( १ ) शेलु ( २ ) श्लेष्मातक ( ३ ) शीत ( ४ ) उद्दाल ( ५ ) बहुवारक ॥ ३४ ॥

( चत्वारि प्रियालस्य )

राजादनं प्रियाल. स्यात्सन्नकदुर्धनुःपटः ।

चिर्राजी के ४ नाम—( १ ) राजादन ( २ ) प्रियाल ( ३ ) सन्नक ( ४ ) धनु पट [ धनुपट ] । इनमें ( १ ) नपुंसक ( २-४ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( सप्त काश्मर्याः )

गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका॥३५॥

श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चापि

४ 'कुम्भेर' सम्भारी के ७ नाम—(१) गम्भारी (२) सर्वतोभद्रा (३) काश्मरी (४) मधुपर्णिका (५) श्रीपर्णी (६) भद्रपर्णी (७) काश्मर्य । इनमें (१-६) स्त्रीलिङ्ग (७) पुल्लिङ्ग है ॥३५॥

( त्रीणि क्षुद्रवदर्याः )

अथ द्वयोः ।

कर्कन्धूर्वदरी कोली

५ छोटे चेर के ३ नाम—(१) कर्कन्धू (२) वदरी (३) कोली । इनमें (१) पुल्लिङ्ग और स्त्री लिङ्ग में, (२-३) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

( पट् वदरस्य )

कोलं कुवल-फेनिले ॥३६॥

सौवीरं वदरं घोण्डाऽपि

६ जो चड़े और पकड़ गूय नीठे हो गये हो, उन चेर के ६ नाम—(१) कोल (२) कुवल (३) फेनिल (४) सौवीर (५) वदर (६) घोण्डा । इनमें (१-५) नपुंसक हैं और (६) स्त्री स्त्रीलिङ्ग है ॥३६॥



( पञ्च स्वादुकण्टकस्य )

अथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।

विकङ्कतः सुवावृत्तो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ३७

<sup>१</sup>कण्टाई के ५ नाम—(१) स्वादुकण्टक (२) विकङ्कत (३) सुवावृत्त (४) ग्रन्थिल (५) व्याघ्रपाद ॥ ३७ ॥

( चत्वारि नागरङ्गस्य )

ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।

<sup>२</sup>नारङ्गी के ४ नाम—(१) ऐरावत (२) नागरङ्ग (३) नादेयी (४) भूमिजम्बुका । इनमें (१-२) पुल्लिङ्ग, (३-४) खील्लिङ्ग हैं ।

( चत्वारि तिन्दुकस्य )

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके

<sup>३</sup>तेन्दू के ४ नाम—(१) तिन्दुक (२) स्फूर्जक (३) कालस्कन्ध (४) शितिसारक ॥ ३८ ॥

( चत्वारि काकतिन्दुकस्य )

काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुकः ।

<sup>४</sup>मकर तेन्दुआ, काकतेन्दू के ४ नाम—

१ कण्टाई के पेड़ जंगलों में बहुत बड़े बड़े होते हैं । प्राचीनकाल में इसकी लकड़ी के यज्ञपात्र बनते थे । उनके पत्ते छोटे-छोटे होते हैं और डालियाँ काँटेदार होती हैं । उसमें बहुत अच्छे अच्छे घेर की तरह गोल-गोल फल लगते हैं ।

२ नारङ्गी के पेड़ बागों में खूब लगाये जाते हैं । इनके पत्ते नीबू की तरह होते हैं । फूल खूब खुशबूदार और सफेद रंग के होते हैं । फल, कच्ची अवस्था में हरे और पकने पर लाल हो जाते हैं ।

३ तेन्दू के पेड़ खूब ऊँचे-ऊँचे होते हैं । जो भारत, लद्दा, बर्मा और पूर्वी बङ्गाल के पहाड़ी जंगलों में पाये जाते हैं । इसकी लकड़ी घर बनाने के काम में आती है । इसके भीतर का सार काला और वज्रनदार होता है, जिसे आवनूस कहते हैं । इसके फल गोल और सुन्दर नीबू की तरह हरे २ होते हैं, जो पकने पर पीले पड़ जाते हैं ।

४ 'तिन्दुकोऽन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रक । काकेन्दुकेन विख्यात कुपीलु काकपीलुक ॥' काकतेन्दू के पेड़ काँटेदार होते हैं । इसका पत्ता गोल गोल

(१) काकेन्दु (२) कुलक (३) काकतिन्दुक (४) काकपीलुक ।

( पञ्च घण्टापाटलेः )

गोलीढो भाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्कौ ॥ ३९ ॥

<sup>५</sup>भोखा, फरवाह के ५ नाम—(१) गोलीढ (२) भाटल (३) घण्टापाटलि (४) मोक्ष (५) मुष्क (१-५) पुल्लिङ्ग में और (३-४) खील्लिङ्ग में भी ॥ ३९ ॥

( त्रीणि तिलकवृक्षस्य )

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्

<sup>६</sup>तिलक पेड़ के ३ नाम—(१) तिलक (२) लुरक (३) श्रीमत् ।

( द्वे क्षावुकस्य )

समौ पिचुल-भावुकौ ।

<sup>७</sup>भाऊ के पेड़ के २ नाम—(१) पिचुल (२) भावुक ।

( पञ्च कट्फलस्य )

श्रीपार्ष्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥

<sup>८</sup>कायफल के ५ नाम—(१) श्रीपार्ष्णिका (२) कुमुदिका (३) कुम्भी (४) कैडर्य [ कैटर्य ] (५) कट्फल । इनमें (१-३) खील्लिङ्ग, (४-५) पुल्लिङ्ग हैं ॥ ४० ॥

नोकदार सीसम की तरह होते हैं । इसके फल तेन्दू के समान किन्तु छोटे होते हैं ।

५ भोखा के पेड़—सफेद और काले—दो प्रकार के होते हैं । इसके पत्ते बड़े-बड़े होते हैं । इसमें से मदार की तरह दूध निकलता है ।

६ तिलक पेड़ का फूल, तिल के फूल की तरह होता है । उसमें महक रहती है । इसका फल, पीपल की तरह, और मीठा होता है ।

७ प्रायः नदियों की रेतों में भाऊ के पेड़ होते हैं । इसके पत्ते सरू की तरह होते तो हैं लेकिन सरू की तरह लम्बे और सीधे नहीं होते । पेड़ भाँदेदार होते हैं । इसकी लकड़ी बहुत गँठिली और मजबूत होती है ।

८ शिमला में सोलम छावनी के नजदीकवाले पहाड़ों पर कायफल के पेड़ होते हैं । इसके फल भी कायफल नाम से प्रसिद्ध हैं और जेठ महीने में वे पकते हैं ।

( चत्वारि पट्टिकाख्यलोध्रस्य )

क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

<sup>१</sup>पठानी लाल लोध के ४ नाम—( १ )क्रमुक ( २ ) पट्टिकाख्य ( ३ ) पट्टिन् ( ४ ) लाक्षा-  
प्रसादन ।

( पट् 'सहस्रत' इति व्यातस्य )

नूदस्तु यूषः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु चा॥४१॥

तूलं च

<sup>२</sup>सहस्रत के ६ नाम—( १ ) नूद ( २ ) यूष

( ३ ) क्रमुक ( ४ ) ब्रह्मण्य ( ५ ) ब्रह्मदारु ( ६ )

तूल । इनमें ( १-४ ) पुष्पिण ( ५-६ ) नपुसक  
लिङ्ग हैं ॥४१॥

( चत्वारि कदम्बस्य )

नीप-प्रियक-कदम्बास्तु हरिप्रियः ।

<sup>३</sup>कदम्ब के ४ नाम—( १ ) नीप ( २ )

प्रियक ( ३ ) कदम्ब ( ४ ) हरिप्रिय [ हलिप्रिय ] ।

( चत्वारि भल्लातक्याः )

धीर्युक्षोऽरुणरोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु४२

<sup>४</sup>भल्लातकी के ४ नाम—( १ ) धीर्युक्ष ( २ )

अरुण ( ३ ) अग्निमुखी ( ४ ) भल्लातकी ।

इनमें ( १-२ ) पुष्पिण, ( ३ ) खानिद ( ४ )

पु-

<sup>५</sup>पारिज पीपल, गजदण्ड के ५ नाम—( १ )

गर्दभारुड ( २ ) कन्दराल ( ३ ) वपीतन ( ४ )

सुपार्वक ( ५ ) प्लज ।

( त्रीणि चिञ्चायाः )

तिन्तिडी चिञ्चाऽस्तिका

<sup>६</sup>इमली के ३ नाम—( १ ) तिन्तिडी ( २ )

चिञ्चा ( ३ ) अम्लिका ।

( पट् 'विजयसार' इति व्यातस्य )

अथो पीतसारके ॥४३॥

सर्जकासन-बन्धूकपुष्प-प्रियक-जीवकाः ।

<sup>७</sup>विजयसार के ६ नाम—( १ ) पीतसारक

( २ ) सर्जक ( ३ ) असन ( ४ ) बन्धूकपुष्प ( ५ )

प्रियक ( ६ ) जीवक ॥४३॥

( पञ्च शालवृक्षस्य )

शाले तु सर्ज-कार्श्याऽश्वकर्णकाः सस्यसंघरः ।

<sup>८</sup>शाल, मनुआ के पेड़ के ५ नाम—( १ )

शाल ( २ ) नर्ज ( ३ ) कार्श्य ( ४ ) अश्वकर्णक ( ५ )

सस्यसंघर ॥४४॥

( पञ्च भर्जुनवृक्षस्य )

नदीस्तर्जो धीरस्तमरिन्द्रदुः ककुभोऽर्जुनः ।

<sup>९</sup>अर्जुन, रोह पेड़ के ५ नाम—( १ ) नदी-

सर्ज (२) वीरतरु (३) इन्द्रदृ (४) ककुभ (५) अर्जुन ।

( त्रीणि क्षीरिकायाः )

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायाम्

<sup>१</sup>खिन्नी, खिरनी के ३ नाम—(१) राजादन  
(२) फलाध्यक्ष (३) क्षीरिका ।

( द्वे इंगुद्याः )

अथ द्वयोः ॥४५॥

इडुदी तापसतरुः

<sup>२</sup>हिंगोट, गोंदी के २ नाम—(१) इडुदी (२)  
तापसतरु । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग, (२)  
पुँल्लिङ्ग में होता है ॥४५॥

( त्रीणि भोजपत्रवृक्षस्य )

भूर्जे चर्मि-मृदुत्वचौ ।

<sup>३</sup>भोजपत्र के ३ नाम—(१) भूर्ज (२) चर्मिन्  
( ३ ) मृदुत्वच ।

( पञ्च शाल्मल्याः )

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ।

<sup>४</sup>सेमर के ५ नाम—(१) पिच्छिला (२)

१ खिरनी के पेड़ बड़े-बड़े ऊँचे होते हैं । इसके पत्ते  
नेवाड़ी के समान होते हैं । इसमें शीतश्रुत में बौर  
और वसन्त में फल लगते हैं । फल निमकौड़ी की तरह  
गुच्छों में होता है । कच्ची अवस्था में वे हरे रहते हैं और  
पकने पर पीले पड़ जाते हैं ।

२ हिंगोट के बड़े-बड़े पेड़ जंगलों में होते हैं । उसमें  
काँटे भी होते हैं । फूल नीबू के समान कुछ लम्बे और गोल  
होते हैं । फल के ऊपर गुठली के माफिक रस लगा रहता  
है, मानो फल रस में तर रहता है ।

३ अधिकतया हिमालय आदि पर्वतीय प्रदेशों में ही  
भोजपत्र के वृक्ष होते हैं । इन पेड़ की छाल की ही  
भोजपत्र कहते हैं । कागज और सूखे केले के पत्ते की  
तरह छाल होती है । इन पर यत्र मत्र लिखे जाते हैं ।

४ प्रायः वनों में सेमर के पेड़ अधिक संख्या में होते  
हैं । इसके एक एक डण्डी में आठ दस पत्ते लगते हैं ।  
इसमें काँटे होते हैं । फूल कमल की तरह लाल रङ्ग का  
होता है । फल मदार की भाँति लगते हैं । इसके भीतर  
से रस निकलता है । इसकी आयु बड़ी लम्बी होती है—  
‘पृथिव्यं महत्याणि वने जावति शाल्मलि ।

पूरणी (३) मोचा (४) स्थिरायु (५) शाल्मलि ।  
इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग, (४ था) पुँल्लिङ्ग, (५ वों)  
पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥४६॥

( द्वे शाल्मलिर्निर्यासस्य )

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे

<sup>५</sup>मोचरस ( सेमर के गोंद ) के २ नाम—  
( १- ) पिच्छा ( २ ) शाल्मलीवेष्ट । इनमें (१ला)  
स्त्रीलिङ्ग और ( २रा ) पुँल्लिङ्ग है ।

( द्वे कृष्णशाल्मलेः )

रोचनं कूटशाल्मलिः ।

<sup>६</sup>काला सेमर के २ नाम—( १ ) रोचन  
( २ ) कूटशाल्मलि । ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( चत्वारि करञ्जवृक्षस्य )

चिरिविल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥४७॥

<sup>७</sup>करञ्ज के ४ नाम—(१) चिरिविल्व (२)  
नक्तमाल (३) करज (४) करञ्जक ॥४७॥

( चत्वारि पूतिकरञ्जस्य )

प्रकीर्यं पूतिकरजः पूतीकः कलिमारकः ।

दुर्गन्धवाली काँटेदार करञ्ज के ४ नाम—  
( १ ) प्रकीर्य ( २ ) पूतिकरज ( ३ ) पूतीक ( ४ )  
कलिमारक ।

( एकैकं करञ्जभेदानाम् )

करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यद्धारवल्लरी ॥४८॥

बड़ी करञ्ज का नाम—( १ ) षड्ग्रन्थ ।

साकड़ करञ्ज का नाम—( १ ) मर्कटी ।

५ सेमर के पेड़—जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका  
है—के गोंद को मोचरस कहते हैं ।

६ काले सेमर के पेड़ जंगलों में अधिकतया होते हैं ।  
इसके पत्ते जिगिनी की तरह और फूल गाढ़ा लाल सुखं रंग  
के होते हैं । एक सफेद रंग का भी होता है ।

७ वनों में कञ्जा के बहुत बड़े-बड़े पेड़ होते हैं । इसके  
पत्ते पाकड़ के पत्तों की तरह गोल और ऊपरी हिस्से में  
चमकदार होते हैं । आसमानी रङ्ग के फूल और फल भी नीले-  
नीले भूभक्तों में पैदा होते हैं । पत्तों में बड़ी दुर्गन्ध होती  
है । करञ्ज ( पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, गुच्छकरञ्ज, षड्ग्रन्थ-  
करञ्ज, इत्यादि ) छद्म-मात तरह की होती है, जिनमें से कुछ  
का वर्णन आगे के श्लोक में लिखा है ।

नाडी करञ्ज का नाम—(१) अक्षार-  
वल्लरी ॥ ४८ ॥

( चत्वारि 'रोहेडा' इति ख्यातस्य )

रोही रोहितकः स्नीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।

<sup>१</sup>रोहेडा के ४ नाम—(१) रोहिन् (२)

रोहितक (३) स्नीहशत्रु (४) दाडिमपुष्पक ।

( चत्वारि खदिरस्य )

गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥४९॥

<sup>२</sup>खैर के ४ नाम—(१) गायत्री (२) बाल-

तनय (३) खदिर (४) दन्तधावन । इनमें (१) स्त्री-  
लिङ्ग, पुं० में 'गायत्रिन्' (२-४) पुल्लिङ्ग हैं ॥४९॥

( द्वे दुर्गन्धिखदिरस्य )

अरिमेढो विट्खदिरे

<sup>३</sup>दुर्गन्धित खैर के २ नाम—(१) अरिमेढ  
(२) विट्खदिर ।

( द्वे श्वेतखदिरस्य )

फदर खदिरे निते ।

सोमपल्लवोऽपि

<sup>४</sup>सफेद खैर, पपड़िया खैर के २ नाम—(१)  
फदर (२) सोमपल्लव ।

( एकादश पृष्ठस्य )

अथ व्याघ्रपुच्छ-गन्धर्व-हस्तयोः ॥५०॥

परशु उरुवृक्ष रुचकधिरुचकस्य ।

वज्रः पञ्चाङ्गुलं मण्ड वर्धमान-व्यडम्बकः ॥५१॥

<sup>५</sup>रेंड, अररड के ११ नाम—(१)  
व्याघ्रपुच्छ (२) गन्धर्व-हस्तक (३) एररड  
(४) उरुवृक्ष (५) रुचक (६) नित्रक (७)  
वज्र (८) पञ्चाङ्गुल (९) मण्ड १०) वर्धमान  
(११) व्यडम्बक ॥५०-५१॥

( एकमल्पशम्याः )

अल्पा शमी शमीरः स्यात्

छोटा छोंकर के पेड़ का नाम—(१) शमीर ।

( त्रीणि शम्याः )

शमी सक्तुफला शिवा ।

<sup>६</sup>छोंकर के पेड़ के ३ नाम—(१) शमी (२)

सक्तुफला (३) शिवा ।

( पट् मयनफलाण्यवृक्षस्य )

पिण्डीतको मरुयक श्वस्तनः फरहाटकः ॥५२॥

शल्यश्च मृदने

<sup>७</sup>मैनफल के ६ नाम—(१) पिण्डीतक  
(२) मरुयक (३) श्वस्तन (४) फरहाटक  
(५) शल्य (६) मृदने ॥५२॥

( अष्टौ देवदारोः )

शक्रपादयः पारिभद्रकः ।

भद्रदाह द्रुमिन्दिमं पीतदाह च द्राव च ॥५३॥

पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुणि

१ देवदार के पेड़ के ८ नाम—( १ ) शक-पादप ( २ ) पारिभद्रक ( ३ ) भद्रदारु ( ४ ) हृक्किलिम ( ५ ) पीतदारु ( ६ ) दारु ( ७ ) पूतिकाष्ठ ( ८ ) देवदारु । इनमें ( १-२ ) पुंल्लिङ्ग, ( ३ ) पुंल्लिङ्ग एवं नपुंसक, ( ४-७ ) नपुंसक, ( ८ ) पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसक है ॥५३॥

( सप्त पाटलायाः )

अथ द्वयोः ।

पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी

२ पाटल के ७ नाम—( १ ) पाटलि ( २ ) पाटला ( ३ ) मोघा ( ४ ) काचस्थाली ( ५ ) फलेरुहा ( ६ ) कृष्णवृन्ता ( ७ ) कुबेराक्षी । इनमें ( १ ला ) पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में, शेष ( २-७ ) स्त्रीलिङ्ग में हैं ॥५४॥

( द्वादश प्रियङ्गुवृक्षस्य )

श्यामा तु महिलाह्वया ।

लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियङ्गु फलिनी फली ५५ विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।

प्रियंगू, फूलफेन, मेंहरी के १२ नाम—( १ ) श्यामा ( २ ) महिलाह्वया ( ३ ) लता ( ४ ) गोवन्दिनी ( ५ ) गुन्द्रा ( ६ ) प्रियङ्गु ( ७ ) फलिनी ( ८ ) फली ( ९ ) विष्वक्सेना ( १० ) गन्धफली ( ११ ) कारम्भा ( १२ ) प्रियक । इनमें ( १-११ ) स्त्रीलिङ्ग, ( १२ वाँ ) पुंल्लिङ्ग है ॥५५॥

१ देवदार के पेड़ बड़े-बड़े होते हैं। निघण्टु रत्नाकर में लिखा है—

देवदारु द्विधा ज्ञेय, तत्राद्य स्निग्धदारुकम् ।

द्वितीय काष्ठदारु स्याद्द्वयोर्नामान्यभेदतः ॥

देवदारु दो प्रकार का होता है—( १ ) एक में तेल के समान चिकनाई सी होती है, ( २ ) दूसरे में सूखापन होता है । दोनों प्रकार के देवदारु पश्चिमी हिमालय पहाड़ पर कुमाऊँ से लेकर काश्मीर तक पाये जाते हैं । इसके पेड़ अस्मी गज तक सीधे ऊँचे चले जाते हैं ।

२ पाटल का फूल लाल होता है । कटपाटल का फूल श्वेत होता है—‘द्वितीया पाटला श्वेता निर्दिष्टा पाटला’ । इसके पत्ते वेल की तरह होते हैं ।

( द्वादश श्योनाकस्य )

मण्डूकपर्ण-पत्रोर्ण-नट-कट्वङ्ग-दुण्डुका ॥५६॥

स्योनाक-शुकनासर्च-दीर्घवृन्त-कुटन्नटाः ।

शोणकश्चारलौ

३ सोनापाठा, अरलु, टेंदू के १२ नाम—( १ ) मण्डूकपर्ण ( २ ) पत्रोर्ण ( ३ ) नट ( ४ ) कट्वङ्ग ( ५ ) दुण्डुका ( ६ ) स्योनाक ( ७ ) शुकनास ( ८ ) ऋक्ष ( ९ ) दीर्घवृन्त ( १० ) कुटन्नट ( ११ ) शोणक ( १२ ) अरलु ॥५६॥

( चत्वारि आमलक्याः )

तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥५७॥

अमृता च वयस्था च

४ आँवला के ४ नाम—( १ ) तिष्यफला ( २ ) आमलकी ( ३ ) अमृता ( ४ ) वयस्था । इनमें ( २ वाँ )

३ सोनापाठा का पेड़ बहुत ऊँचा होता है । इसकी फली तलवार के समान दो-दो फुट लम्बी होती है । फली के भीतर रई और दाने निकलते हैं । एक दूसरी तरह का टेंदू पेड़ होता है, जिसका फूल लाली लिए समुद्रशोष की भाँति होता है ।

कुछ टीकाकारों ने ‘श्योनाक’ का अर्थ ‘सरिवन’ लिखा है । किन्तु निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार शालिपर्णी का अर्थ ‘सरिवन’ होता है और उसके पर्यायवाची ये शब्द हैं, यही श्लोक श्री अमरसिंह आगे चलकर लिखेंगे [ देखिए इसी वर्ग का ११५वाँ श्लोक ]—

‘शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ।

विदारिगन्धा दीर्घाभिर्दीर्घपत्राऽशुमत्यपि ॥

किन्तु ऊपर जो ‘सोना पाठा’ अर्थ लिखा गया है, वह निघण्टु ग्रन्थों के अनुकूल है और उसके पर्यायवाची शब्द भी मिलते हैं—

‘श्योनाक शुकनासश्च कट्वङ्गोऽथ कटम्बरः ।

मयूरजड्वोऽलुक प्रियजीवी कुटन्नटः ॥

दुण्डुको दीर्घवृन्तश्च टिण्डुक कीरनाशन ।

पूतिवृक्ष पूतिनागो भूतिपुष्पो मुनिद्रुम ॥

४ आँवला का पेड़ बागों एवं बनों में होता है । इसके पत्ते छोटे-छोटे इमली की तरह होते हैं । इसकी डालियों पर छोटी छोटी लार्ई के दाने के समान पीले फूल होते हैं । इसके फल भूमकों में तेंदू की तरह गोल होते हैं । फल के ऊपर छ लकीर खूब बारीक होती हैं ।

तीनों लिङ्गों में होता है, शेष स्त्रीलिङ्ग हैं ॥५७॥

( पट् विभीतकस्य )

त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ।

नाऽत्तस्तुपः कर्पफलो भूतावासः कलिद्रुमः ५८

<sup>१</sup>वहेड़ा के ६ नाम—(१) विभीतक (२) अरु (३) तुप (४) कर्पफल (५) भूतावास (६) कलिद्रुम । इनमें (१ला) पुं-स्त्री-नपुंसक में, अरु ( २-६ ) नृ- ( पुं० ) लिङ्ग में होते हैं ॥५८॥

( एकादश हरीतक्याः )

अभया त्वय्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ।

हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥५९॥

<sup>२</sup>हरट, हरें के ११ नाम—( १ ) अभया

<sup>१</sup> बहेड़ा का पेड़ जंगलों और पहाड़ों में होता है । इसके पत्ते पद क पत्तों के समान होते हैं । इसके फूल खूब महीन होते हैं । इसके फल भूमकों में लगते हैं ।

<sup>२</sup> गणपति हरट का पेड़ मय जगह से पाया जाना है

(२) अव्यथा (३) पथ्या (४) कायस्था (५) पूतना (६) अमृता ( ७ ) हरीतकी ( = ) हैमवती ( ८ ) चेतकी (१०) श्रेयसी (११) शिवा ॥५९॥

( त्रीणि सरलवृक्षस्य )

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्टं च

<sup>३</sup>चीड़ के पेड़ के ३ नाम—(१) पीतद्रु (२) सरल (३) पूतिकाष्ट ।

( त्रीणि कर्णिकारस्य )

अथ द्रुमोत्पलः ।

कर्णिकारः परिव्याधो

<sup>४</sup>कर्णिकार के ३ नाम—(१) द्रुमोत्पल (२) कर्णिकार (३) परिव्याध ।

( त्रीणि लकुचस्य )

लकुचो लिकुचो उहुः ॥६०॥

<sup>५</sup>चड़हर के ३ नाम—(१) लकुच (२) लिकुच (३) उहु ॥६०॥

( द्वे पनसस्य )

पनसः कण्टकिफलः

<sup>१</sup>कटहर के २ नाम—(१) पनस (२) कण्ट-  
किफल ।

( त्रीणि समुद्रफलस्य )

निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।

<sup>२</sup>समुद्रशोष के ३ नाम—(१) निचुल (२)  
हिज्जल (३) अम्बुज ।

( चत्वारि काकोदुम्बरिकाणां )

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥६१॥

<sup>३</sup>कठमर के ४ नाम—(१) काकोदुम्बरिका  
(२) फल्गु (३) मलयूर्ज (४) जघनेफला । ये (१-४)  
स्त्रीलिङ्ग हैं ॥६१॥

( पट् निम्बस्य )

अरिष्टः सर्वतोभद्र-हिङ्गुनिर्यास-मालकाः ।

पिचुमन्दश्च निम्बे

<sup>४</sup>नीम के पेड़ के ६ नाम—(१) अरिष्ट (२)  
सर्वतोभद्र (३) हिङ्गुनिर्यास (४) मालक (५)  
पिचुमन्द (६) निम्ब ।

( त्रीणि शिंशपायाः )

अथ पिच्छिलाऽगुरु शिंशपा ॥६२॥

<sup>५</sup>काला सीसम के ३ नाम—(१) पिच्छिला<sup>१</sup>कटहर के पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं । इसके पत्ते  
गोल और लम्बे होते हैं । इसमें फूल आते ही नहीं । कटहर  
पर हेमन्त ऋतु के बाद फल लगते हैं ।<sup>२</sup>समुद्रशोष के सम्बन्ध में निघण्टु ग्रन्थों में लिखा है—  
‘इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा ।  
जलवेतम्बद्वयो हिज्जलोऽयं विपापह ॥’<sup>३</sup>कठमर के पेड़ बड़े-बड़े होते हैं । इस पर फूल नहीं  
आते । इसकी डालियों में से फल पैदा होते हैं । इसके  
पत्त गगेरन के पत्तों से मिलते-जुलते हैं और गूलर के पत्तों  
से बड़े होते हैं । इसके पत्तों के छूने से हाथों में खुजली  
होने लगती है और पत्तों में से दूध निकलता है ।<sup>४</sup>नीम के पेड़ मारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्तों में होते हैं ।  
यसन्त ऋतु के आरम्भ में नये पत्त और अन्त में फूल  
आते हैं ।<sup>५</sup>निघण्टु ग्रन्थों में काले रंग के सीसम के ये पर्याय-  
वाची शब्द बतलाये गये हैं—(२) अगुरु (३) शिंशपा । इनमें (१ला, ३रा)  
स्त्रीलिङ्ग, (२रा) नपुंसक है ॥६२॥

( एकं कपिलशिंशपायाः )

कपिला भस्मगर्भा सा

<sup>६</sup>भूरे रंग के सीसम का नाम—(१) भस्म-  
गर्भा ।

( त्रीणि शिरीषस्य )

शिरीषस्तु कपीतन ।

भरिडलोऽपि

<sup>७</sup>सिरस फूल के ३ नाम—(१) शिरीष (२)  
कपीतन (३) भरिडल ।

( त्रीणि चम्पकस्य )

अथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥६३॥

<sup>८</sup>चम्पा फूल के ३ नाम—(१) चाम्पेय (२)  
चम्पक (३) हेमपुष्पक ॥६३॥

( एकं चम्पककोरकस्य )

एतस्य कलिका गन्धफली स्यात्

चम्पा की कली का नाम—(१) गन्धफली ।

( द्वे वकुलस्य )

अथ केसरे

‘शिंशपा कृष्णसारा च पिपला युगपन्निका ।

पिच्छिला धूम्रिका वीरा कपिलाऽगुरुशिंशपा ॥’

वन में काले रंग के सीसम के पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते  
हैं । इसके पत्ते गोल, नोकदार बेरी के बराबर होते हैं ।  
इसमें छोटे छोटे गुच्छों में बहुत फूल लगते हैं ।<sup>६</sup>निघण्टु ग्रन्थों में भूरे रंग के सीसम के ये पर्याय-  
वाची शब्द बतलाये गये हैं—

‘कपिला शिंशपा चान्या पीता कपिलशिंशपा ।

सारिणी कपिलाची च भस्मगर्भा कुशिंशपा ॥’

<sup>७</sup>सिरस के पेड़ मधन जंगलों में होते हैं । ये बहुत  
कँचे होते हैं । आँवले के समान छोटे-छोटे पत्ते होते हैं जो  
सदैव डाली में लगते हैं । इसके फूल बहुत ही सुन्दर,  
खुराबदार, छोटे छोटे तन्तुओं से युक्त, अतीव कोमल,  
कुछ-कुछ पीलापन लिए हरे रङ्ग के होते हैं ।<sup>८</sup>मफेद चम्पा के पेड़ बड़े होते हैं । इसके पत्ते लम्बे  
होते हैं जिसके तोंड़ने में दूध निकलना है । इसके फूल  
सफेद और थोड़े हिस्से में पीले होते हैं ।

<sup>१</sup>वकुल, मौलसिरी के २ नाम—(१) केसर  
(२) वकुल ।

( द्वे भक्षोकस्य )

वञ्जुलोऽशोके

<sup>२</sup>अशोक के २ नाम—( १ ) वञ्जुल ( २ )  
अशोक ।

( द्वे दाडिमस्य )

समौ करक-दाडिमौ ॥६४॥

<sup>३</sup>अनार के २ नाम—(१) करक (२) दाडिम  
॥६४॥

( चत्वारि नागकेसरस्य )

चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।

<sup>४</sup>नागकेशर के ४ नाम—(१) चाम्पेय ( २ )  
केसर (३) नागकेसर (४) काञ्चनाह्वय ।

( दश 'अरणी' इति ख्याताया. )

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥६५॥  
श्रीपर्णमग्निमन्थ. स्यात्कर्णिका गणिकारिका ।  
जयः

<sup>५</sup>अरणी के १० नाम—( १ ) जया ( २ )  
जयन्ती (३) तर्कारी (४) नादेयी (५) वैजयन्तिका  
(६) श्रीपर्ण (७) अग्निमन्थ (८) कर्णिका (९) गणि-  
कारिका (१०) जय ॥६५॥

( चत्वारि कुटजस्य )

अथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥६६॥

<sup>६</sup>कुड़ा, कौरैया के ४ नाम—(१) कुटज (२)  
शक्र (३) वत्सक (४) गिरिमल्लिका ॥६६॥

( त्रीणिन्द्रयवस्य )

पतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयव-भद्रयवं फले ।

<sup>७</sup>इन्द्रजौ के ३ नाम—( १ ) कलिङ्ग ( २ )  
इन्द्रयव (३) भद्रयव । ये (१-३) शब्द तीनों लिङ्गों  
में प्रयुक्त होते हैं ।

( चत्वारि करमर्दकस्य )

कृष्णपाकफलाऽविश-सुषेणाः करमर्दके ॥६७॥

<sup>४</sup> कुछ टीकाकार 'जया' आदि ५ नाम के अर्थ 'जाहो'  
बतलाते हैं, किन्तु चोरस्वामी ने दशों को 'अरणी' का  
पर्यायवाची शब्द बतलाया है । जिसकी पुष्टि निघण्टु ग्रन्थों  
के निम्नलिखित श्लोक से होती है—

'अग्निमन्थो हविर्मन्थ कर्णिका गिरिकर्णिका ।

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥'

अरणी, गणिकारी के पेड़ हिमालय के वनों में होते हैं ।  
हैं । इनके पत्ते गोल और चारीक फलकयुक्त होते हैं ।  
इनका फल सफेद होता है और फल छोटे पत्तों के मनुष्य  
होते हैं । यह में इनका लकड़ा से मन्थन कर अग्नि  
निकाली जाती है ।



१ करोंदा के ४ नाम—(१) कृष्णापाकफल (२) अविम (३) सुषेण (४) करमर्दक ॥६७॥

( त्रीणि तमालस्य )

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽपि

तमाल के ३ नाम—( १ ) कालस्कन्ध ( २ ) तमाल ( ३ ) तापिच्छ ।

( पञ्च सिन्दुवारस्य 'निर्गुण्डी' इति ख्यातस्य )  
अथ सिन्दुकै ।

सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ६८

२समहालू, निर्गुण्डी के ५ नाम—( १ ) सिन्दुक ( २ ) सिन्दुवार ( ३ ) इन्द्रसुरस ( ४ ) निर्गुण्डी ( ५ ) इन्द्राणिका । इनमें (१-३) पुंलिङ्ग, (४-५) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥६८॥

( पञ्च देवताडस्य )

वेणी गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।

३घघर बेल, सौनैया, वन्दाल के ५ नाम—  
(१) वेणी (२) गरा (३) गरी (४) देवताड (५) जीमूत । इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग, (४-५) पुंलिङ्ग हैं ।

१ अधिकतया करोंदे के पेड़ बागों में लगाये जाते हैं । ये दो जाति के होते हैं । एक जाति के वे करोंदे होते हैं जिनके नोकों पर लाली रहती है और अग सफेद रहता है । दूसरी जाति के वे होते हैं जो कच्ची अवस्थामें हरे और आधे लाल रहते हैं और पकने पर काले पड़ जाते हैं । करोंदे के फूल जूही के तुल्य सुगन्धित और सफेद होते हैं । फलों के गुच्छे वेर की तरह लगते हैं ।

२ समहालू अनेक जाति की होती है । एक जाति की वह है जिसपर सफेद फूल लगते हैं और जिसे 'मिन्धुवार श्वेतपुष्प सिन्दुक सिन्धुवारित' कहते हैं । दूसरी उम जाति की है जिसपर काले फूल लगते हैं और जिसे 'नील-पुष्प मोतमहो निर्गुण्डी नीलमिन्धुक' कहते हैं । इन दोनों का पृथक् पृथक् उल्लेख ७० वें श्लोक में अन्यकर्ता ने किया है ।

३ घघर बेल, वन्दाल का बेल बढ़ी होती है जिसे किमान लोग खेतों के बाँध पर लगा देते हैं । इसके फूल—सफेद, पीला, लाल—तीन रंगके होते हैं । इसके फल के ऊपर बहुत छोटे-छोटे काँटे होते हैं ।

( द्वे हस्तिकर्णपत्रशाकविशेषस्य 'घुइयाँ' इति ख्यातायाः, मापादिक्षेत्रभवाया वकुलपुष्पाभलोहित पुष्पाया वा, सिरीहथिनी इति ख्यातायाः )  
श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी

घुइयाँ, उड़द आदि के खेतों में पैदा हुई रक्त पुष्पी, या हाथी शुरुण्ड के २ नाम—( १ ) श्रीहस्तिनी ( २ ) भूरुण्डी ।

( चत्वारि मल्लिकायाः )

तृणशून्यं तु मल्लिका ॥६९॥

भूपदी शीतभीरुश्च

४मोतिया के ४ नाम—( १ ) तृणशून्य (२) मल्लिका ( ३ ) भूपदी ( ४ ) शीतभीरु । इनमें (१) नपुंसक (२-३) स्त्रीलिङ्ग, (४) पुंलिङ्ग हैं ॥६९॥

( एकं वनमल्लिकायाः )

सैवाऽस्फोटा वनोद्भवा ।

५जंगली मोतिया, नेवारी के नाम—( १ ) आस्फोटा ।

( चत्वारि कृष्णपुष्पाया निर्गुण्ड्याः )

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ७०

६काले फूल वाली समहालू के ४ नाम—  
(१) शेफालिका ( २ ) सुवहा ( ३ ) निर्गुण्डी ( ४ ) नीलिका ॥७०॥

( द्वे श्वेतनिर्गुण्ड्याः )

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेशी

४ मोतिया के फूल खूब खुशबूदार, सफेद रंग के होते हैं । इसके फल खूब गोल होते हैं । इसके पत्ते वेरी के पत्तों से कुछ छोटे-छोटे और अधिक लकीरवाले होते हैं ।

५. नेवारी, जंगली मोतिया के पेड़ वन में बहुत बढ़े-बढ़े होते हैं । इसके फूल आम के बौर के समान गुच्छों में लगते हैं ।

६ निर्गुण्डी के पेड़ बागों और वनों में पाये जाते हैं । इसके पत्ते अरहर के समान एक-एक टहनी में पाँच होते हैं । इसके पत्ते नीले और नाचे की ओर सफेद होते हैं । इसके फल आम के बौर के समान गुच्छेदार और केसरिया रंग के होते हैं ।

सफेद फूलवाली सम्हालू ( जिसे कर्तरी निर्गुण्डी कहते हैं ) के २ नाम—(१) श्वेतसुरना ( २ ) भूतवेशी ।

( चत्वारि यूथिकायाः )

अथ मागधी ।

गणिका यूथिकाश्म्यष्टा

<sup>१</sup>जड़ी के ४ नाम—( १ ) मागधी ( २ )

गणिका ( ३ ) यूथिका ( ४ ) अश्म्यष्टा ।

( एकं पीतपुष्पयूथिकायाः )

सा पीता हेमपुष्पिका ॥७१॥

<sup>२</sup>पीली जड़ी का नाम—(१) हेमपुष्पिका ॥७१॥

( पञ्च घामन्तीरुनाया )

अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्दासन्ती माधवी लता ।

<sup>३</sup>माधवी के ४ नाम—( १ ) अतिमुक्त ( २ )

पुण्ड्रक ( ३ ) घामन्ती ( ४ ) माधवी ( ५ ) लता ।

( त्रीणि जातं )

सुमना मालती जाति.

<sup>४</sup>मालती के ३ नाम—(१) सुमनस (सुमना)

( २ ) मालती ( ३ ) जाति ।

( द्वे मयमालिकायाः )

ससला मयमालिका ॥७२॥

"भोगरा के २ नाम—( १ ) ससला ( २ )

नवमालिका ॥७२॥

( द्वे कुन्दस्य )

माघ्यं कुन्दम्

<sup>५</sup>कुन्द, कुन्दे के फूल के २ नाम—(१) माघ्य (२) कुन्द । ये ( १-२ ) नपुंनक और पुल्लिङ्ग में होते हैं ।

( त्रीणि बन्धूकस्य )

रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।

<sup>६</sup>गुल दुपहरिया के ३ नाम—( १ ) रक्तक ( २ ) बन्धूक ( ३ ) बन्धुजीवक ।

( त्रीणि कुमारीयाः )

सहा कुमारी तराण.

<sup>७</sup>घिकुनार के ३ नाम—( १ ) महा (२) कुमारी ( ३ ) तराणि । ये ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे 'कटसरैया'-मामान्यस्य )

अम्बानस्तु महासदा ॥७३॥

<sup>८</sup>कटसरैया के २ नाम—(१) अम्बान (२) महासदा । इनमें (१ला) पुल्लिङ्ग और (२रा) स्त्री लिङ्ग हैं ।

( एकं 'कटसरैया' इति ग्याताया )

तत्र शोणे कुरयक

सुरा फूलवाली कटसरैया का नाम—( १ ) कुरयक ।

( एकं पीत 'कटसरैया' इति ग्याताया )

तत्र पीते कुरयक ।

पीले फूलवाली कटसरैया का नाम—  
( १ ) कुरण्टक ।

( त्रीणि नीलस्रिण्टिकायाः )

नीलीभिराटी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा ।

नीले फूलवाली कटसरैया के ३ नाम—(१) बाणा [बाण] (२) दासी (३) आर्तगल । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग, ( २ ) स्त्रीलिङ्ग ( ३ ) पुँल्लिङ्ग में होता है ॥७४॥

( द्वे श्वेत 'कटसरैया' इति ख्याताया. )

सैरेयकस्तु भिराटी स्यात्

सफेद फूलवाली कटसरैया के २ नाम—  
( १ ) सैरेयक ( २ ) भिराटी ।

( एकं रक्तसैरेयकस्य )

तस्मिन् कुरवकोऽरुण ।

गुलाबी कटसरैया का नाम—( १ ) कुरवक ।

( द्वे पीतसैरेयकस्य )

पीता कुरण्टको भिराटी तस्मिन्सहचरी द्वयो

पीले फूलवाली कटसरैया के २ नाम—( १ ) कुरण्टक ( २ ) सहचरी । इनमें ( १ ) पुँल्लिङ्ग, ( २ ) दोनों लिङ्गो पुं० स्त्री० में होता है ॥७५॥

( द्वे जवाकुसुमस्य )

ओड़पुष्पं जवापुष्पम्

जवा, गुब्बहल, ओड़हुल के २ नाम—(१) ओड़पुष्प ( २ ) जवापुष्प ।

१ विभिन्न कटसरैया के नाम निघण्टु ग्रन्थों में यों मिलते हैं ।

‘रक्तपुष्प कुरवकः, पीतपुष्प कुरण्टकः ।

नीलपुष्पश्चार्तगलः, सैरेयः श्वेतपुष्पक ॥

अर्थात्—लाल फूलवाली कटसरैया ‘कुरवक’

पीले फूलवाली कटसरैया ‘कुरण्टक’

नीले फूलवाली कटसरैया ‘आर्तगल’

सफेद फूलवाली कटसरैया ‘सैरेय’ सशक है ।

२ ये उपवर्णों एवं वाटिकाओं में लगाए जाते हैं । इसके पेड़ ममोले वृक्ष के होते हैं । इसके पत्ते अट्टसे के तुल्य बड़े-बड़े होते हैं । इसमें लाल रंग के बड़े-बड़े फूल लगते हैं ।

( एकं तिलपुष्पस्य )

वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।

तिल के फूल का नाम—( १ ) वज्रपुष्प ।

( पञ्च करवीरस्य )

प्रतिहास-शतप्रास-चण्डात-हयमारकाः ॥७६॥  
करवीरे

कनेर, कनइल के ५ नाम—( १ ) प्रतिहास ( २ ) शतप्रास ( ३ ) चण्डात ( ४ ) हयमारक ( ५ ) करवीर ॥७६॥

( त्रीणि करीरस्य )

करीरे तु क्रकर-ग्रन्थिलाघुभौ ।

करील के ३ नाम—( १ ) करीर ( २ ) क्रकर ( ३ ) ग्रन्थिल ।

( सप्त धत्तूरस्य )

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ॥७७॥  
मातुलो मदनश्च

धत्तूरा के ७ नाम—( १ ) उन्मत्त ( २ ) कितव ( ३ ) धूर्त ( ४ ) धत्तूर ( ५ ) कनकाह्वय ( ६ ) मातुल ( ७ ) मदन ॥७७॥

३ वनों, उपवनों, वाटिकाओं में कनेर के पेड़ लगते हैं । लाल, पीले, सफेद फूल वाली कनेर सब जगह पाई जाती है । एक काले रंग की फूल वाली भी होती है । कनेर में जहर होता है इसलिए बिना विचारे मुँह में नहीं डालना चाहिए ।

४ करील के पेड़ वृक्षों के ऊपर और मारवाड़ में ज्यादा होते हैं । इसकी डठो नीले रंग की और फूल गुलाबी रङ्ग का होता है । इसमें फल-फूल फागुन चैत में लगते हैं । ‘पत्र नैव यदा करीर विटपे दोषो वसन्तस्य किम्’ किसे नहीं मालूम है ? पत्ते न होने के कारण पेड़ में फूल ही फूल दिखलाई पड़ते हैं ।

५ ‘कनकाह्वय’ सुवर्णपर्यायवाची नाम है । अर्थात् सुवर्ण के जो जो नाम ( कलधौत, जाम्बूनद, कार्तस्वर ) हैं वे इसके भी हो सकते हैं । फूलों के भेद में धत्तूरा कई रङ्ग का होता है । यह प्रायः जङ्गलों में होता है । काले और सुनहरे फूल का धत्तूरा बागों में होता है । पत्ते न बहुत छोटे और न बहुत बड़े ही होते हैं । फल गोल काटिदार और भीतर बहुत बीजवाला होता है । इन बागों में जहर बहुत होता है ।

( एकं धत्तूरफलस्य )

अस्य फले मातुलपुत्रकः ।

धत्तूर के फल का नाम—(१) मातुलपुत्रक ।

( चत्वारि बीजपूरस्य )

फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ॥७८॥

त्रिजोरा नीबू के ४ नाम—(१) फलपूर

(२) बीजपूर (३) रुचक (४) मातुलुङ्गक ॥७८॥

( पञ्च मरुवकस्य )

समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः ।

जम्बीरोऽपि

मरुवा के ५ नाम—(१) समीरण (२)

मरुवक (३) प्रस्थपुष्प (४) फणिज्जक (५)

जम्बीर ।

( त्रीणि पर्णासस्य )

अथ पर्णासे फटिञ्जर-कुठेरकौ ॥७९॥

क्षुद्र वन तुलसी के ३ नाम—(१) पर्णास

(२) फटिञ्जर (३) कुठेरक ॥७९॥

( एकं द्वेतेपर्णासस्य )

मितेऽर्जफोऽत्र

रामपेठ वनतुलसी का नाम—(१) अर्जक ।

( त्रीणि चित्रकवृक्षस्य )

पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।

चीता पेड़ के ३ नाम—(१) पाठिन (२)

चित्रक (३) वह्निसंज्ञक । ये (१-३) पुंलिङ्ग हैं ।

( सप्त मन्दारस्य )

अर्काह्व-वसुकाऽऽस्फोट-गणरूप-विकीरणाः ८०  
मन्दारश्चार्कपर्यं

मन्दार के ७ नाम—(१) अर्काह्व (२)

वसुक (३) आस्फोट (४) गणरूप (५) विकी-

रण (६) मन्दार (७) अर्कपर्यं ॥८०॥

( द्वे श्वेतमन्दारस्य )

अत्र शुक्लेऽलर्क-प्रतापसौ ।

सफेद मन्दार के २ नाम—(१) अलर्क  
(२) प्रतापस ।

( पञ्च 'वृहन्मौलसिरी' इति ख्यातायाः )

शिवमल्ली पाशुपत एकांष्ट्रीलो वुको वसुः ॥८१॥

वनहुला, वृहन्मौलसिरी के ५ नाम—(१)

'मितार्जकस्तु वैकुण्ठो वटपत्र' कुठेरक ।

जम्बीरो गन्धवहुल सुमुखः कटुपत्रक ॥ ८१

६ निषण्ड ग्रन्थों में चीता पेड़ के नाम ये बतलाये हैं—

चित्रकोऽनलनामा च पाठी व्याख्यानशेषेण ।

यह 'वह्निसंज्ञक' है अर्थात् अग्नि के जितने पर्यायवाची नाम ( कृष्णवर्त्मन्, जातवेदम, वैश्वानर आदि ) होते हैं वे इनके भी हो सकते हैं ।

चीता या जुप होता है । चीता सफेद फूल वाला, लाल फूल वाला, काला फूल वाला, पीला फूल वाला होता है । इसमें सफेद फूल वाला बहुतायत में होता है । काला, चीना के बारे में कहा जाता है कि इसे खाने से बाल काले हो जाते हैं—'वेगा. कृष्णा प्रजायन्ते कृष्णाचित्रक-मदग्नात् ।'

७ यह 'अर्काह्व' है अर्थात् सूर्य के पर्यायवाची नाम ( प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विवस्वत आदि ) इनके भी होते हैं । मन्दार के पेड़ इहाँ और जंगलों में अधिकता से पाये जाते हैं । इसके पत्ते दूर की तरफ और फूल तोते की तरफ होते हैं । इनके अन्तर में बड़े निकलनी हैं ।

८ गण प्रयोग में वृद्ध वृक्ष ( वनहुला, वृहन्मौलसिरी ), जिनमें छोटे बतलाये हैं वे वनहुला श्लोक के ही मन्दार हैं—'दि इन्धो पशुपत एवमन्यो वुको वसुः ।'



कटुम्भरा ( ३ ) अशोक रोहिणी ( ४ ) कटुरोहिणी  
( ५ ) मत्स्यपिता ( ६ ) कृष्णमेदी ( ७ ) चक्राक्षी  
( ८ ) शकुलादनी ॥८५॥

( नव मर्कट्याः )

आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यरडा करडुरा प्रावृषायणी  
ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटौ ।

<sup>१</sup>कैवैच के ६ नाम—( १ ) आत्मगुप्ता ( २ )  
अजहा ( ३ ) अव्यरडा ( ४ ) करडुरा ( ५ )  
प्रावृषायणी ( ६ ) ऋष्यप्रोक्ता ( ७ ) शूकशिम्बि  
( ८ ) कपिकच्छु ( ९ ) मर्कटी ॥८६॥

( दश मूषिकपर्ण्याः )

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ८७  
प्रत्यक्ष्णैः सुतश्चैः रराडा मूषिकपर्यपि ।

<sup>२</sup>मूसाकानी के १० नाम ( १ ) चित्रा ( २ )  
उपचित्रा ( ३ ) न्यग्रोधी ( ४ ) द्रवन्ती ( ५ )  
शम्बरी ( ६ ) वृषा ( ७ ) प्रत्यक्ष्णैः ( ८ )  
सुतश्चैः ( ९ ) रराडा ( १० ) मूषिकपर्ण्या ॥८७॥

( अष्टावषामार्गस्य )

अषामार्गः शैखरिको धामार्गव-मयूरकौ ॥८८॥  
प्रत्यक्ष्णैः केशपर्णी किण्विही खरमञ्जरी ।

<sup>३</sup>चिरचिरा, लट्जरी, आंगा के ८ नाम—

( १ ) अषामार्ग ( २ ) शैखरिक ( ३ ) धामार्ग  
( ४ ) मयूरक ( ५ ) प्रत्यक्ष्णैः ( ६ ) केशपर्णी  
( ७ ) किण्विही ( ८ ) खरमञ्जरी ॥८८॥

( नव 'भारङ्गी' इतिरयाताया )

हज्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥  
अद्धारवल्ली बालेयशाक-वर्वर-वर्धका ।

<sup>४</sup>भारङ्गी के ६ नाम—( १ ) हज्जिका ( २ )  
ब्राह्मणी ( ३ ) पद्मा ( ४ ) भार्गी ( ५ ) ब्राह्मण-  
यष्टिका ( ६ ) अद्धारवल्ली ( ७ ) बालेयशाक ( ८ )  
वर्वर ( ९ ) वर्धका ॥८९॥

( नव मञ्जिष्ठाया )

मञ्जिष्ठा विकसा जिह्वा समङ्गा कालमेपिका ९०  
मण्डूकपर्णी भण्डोरी भण्डो योजनवल्लपि ।

<sup>५</sup>मञ्जीठ के ६ नाम—( १ ) मञ्जिष्ठा ( २ )  
विकसा ( ३ ) जिह्वा ( ४ ) समङ्गा ( ५ ) काल-  
मेपिका ( ६ ) मण्डूकपर्णी ( ७ ) भण्डोरी ( ८ )  
भण्डो ( ९ ) योजनवल्ल ॥९०॥

( दस यवामस्य, धन्वयानस्य च )

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयान कुनाशकः ॥  
रोक्ष्णी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।

<sup>६</sup>जवाना आंग भामा के नाम—( १ ) यास

शिवमल्ली ( २ ) पाशुपत ( ३ ) एकाष्टील ( ४ )  
बुक ( ५ ) वसु । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग है और शेष  
पुंलिङ्ग हैं ॥८१॥

( चत्वारि वन्दायाः )

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।

<sup>१</sup>वन्दा, वन्दाल के ४ नाम—( १ ) वन्दा  
( २ ) वृक्षादनी ( ३ ) वृक्षरुहा ( ४ ) जीवन्तिका ।  
( नव गुडूच्याः )

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृतः ॥८२॥  
जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्यपि ।

<sup>२</sup>गिलोय, गुडूच के ६ नाम—( १ ) वत्सा-  
दनी ( २ ) छिन्नरुहा ( ३ ) गुडूची ( ४ ) तन्त्रिका  
( ५ ) अमृता ( ६ ) जीवन्तिका ( ७ ) सोमवल्ली  
( ८ ) विशल्या ( ९ ) मधुपर्णी ॥८२॥

( दश मूर्वायाः )

मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा ॥८३॥  
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्यपि ।

<sup>१</sup> वन्दा का कोई एक किस्म नहीं होती । यह पेड़ में  
पैदा हो जाता है । इसका जड़ पृथक् नहीं होता । किसी किमी  
को तो मन है कि कौआ वगैर किसी पेड़ की डाली लाकर  
पेड़ पर रख देते हैं तो उसी में पत्ते निकल आते हैं और  
वही फल फूलकर वन्दा हो जाता है । इसलिए इसके पत्ते  
भी एक से नहीं होने । फूल भी-लाल, पीला, सफेद कई  
किस्म के होते हैं ।

<sup>२</sup> गिलोय की बेलि होती है जो पेड़ों पर फैल जाती  
है । इसके गाँठों से दो भाग निकलते हैं । क्रमशः उनकी  
भाँदरी और उनकी ही जड़ हो जाती है । इसके पत्ते कुछ  
पान के सट्टरा और गहरे नीले होते हैं । फूल छोटे-छोटे  
गुच्छों में लगते हैं । इसके फल मटर के तुल्य होते हैं जो  
पकने पर लाल हो जाते हैं । गिलोय कैसे पैदा हुई और  
इसका नाम 'अमृता' क्यों पड़ा ? इस मन्वन्ध में निम्न-  
लिखित कथा पढ़ने योग्य है—

अथ लङ्केश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिप ।  
रामपत्नीं बलात्पीता जहार मदनातुर ॥  
ततस्त बलवान् रामो रिपुं जायापहारिणम् ।  
युतो वानरसैन्येन जवान् रणमूर्धनि ॥  
हते तस्मिन् सुरागतौ रावणो बलगविते ।  
देवराजः महाराजः परितुष्टस्तु राधवे ॥  
तत्र ये वानरा केचिद्राक्षसैर्निहता रणे ।

<sup>३</sup>मुरहरी, चुरनहार के १० नाम—( १ )  
मूर्वा ( २ ) देवी ( ३ ) मधुरसा ( ४ ) मोरटा  
( ५ ) तेजनी ( ६ ) स्रवा ( ७ ) मधूलिका ( ८ )  
मधुश्रेणी ( ९ ) गोकर्णी ( १० ) पीलुपर्णी ॥८३॥

( दश पाठायाः )

पाठाऽम्बुष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसाऽथ  
एकाष्टीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।

<sup>४</sup>पाठा, पाढ के १० नाम—( १ ) पाठा  
( २ ) अम्बुष्ठा ( ३ ) विद्धकर्णी ( ४ ) स्थापनी  
( ५ ) श्रेयसी ( ६ ) रसा ( ७ ) एकाष्टीला ( ८ )  
पापचेली ( ९ ) प्राचीना ( १० ) वनतिक्तिका ॥८४॥

( अष्टौ कटुरोहिण्याः )

कटुः कटम्बराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥८५॥  
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चकाङ्गी शकुलादनी ।

<sup>५</sup>कुटकी के ८ नाम—( १ ) कटु ( २ )

तानिन्द्रो जीवयामास सिधित्वाऽमृतवृष्टिम् ॥

ततो येषु प्रदेशेषु कपिगान्धात् परिच्युता ।

पीयूषविन्दवः पेतुस्तैर्भ्यो जाता गुडूचिका ॥

अर्थात्—राक्षसराज, अहङ्कारी, लकाधीश रावण ने मदनो-  
न्मत्त हो हठात् राम की स्त्री सीता को हरण  
किया । तब रणभूमि में बलवान् राम ने स्त्री को  
चुरानेवाले शत्रु को वानर सेना की सहायता से  
मार डाला । उस बलामिमानी, देवताओं के शत्रु  
रावण के मारे जाने पर देवराज इन्द्र रामचन्द्र के  
ऊपर अत्यन्त सन्तुष्ट हुए । तब रण में राक्षसों द्वारा  
जो वानर मारे गए थे उन्हें अमृत वर्षा से सिक्तकर  
इन्द्र ने जिलाया । वानरों के शरीर के ऊपर से गिर  
कर जिन-जिन जगहों पर अमृत की बूँद गिरी  
उन्हीं से गिलोय पैदा हुई । इसीलिए इसका नाम  
'अमृता' पड़ा ।

<sup>३</sup> मूर्वा, चूर्णहार की बेलि वन में पायी जाती है ।  
इसके पत्ते घोकुआर की तरह चिकने और कुछ मोटे-मोटे  
होते हैं । इसमें छोटे-छोटे और मीठे-मीठे फल लगते हैं ।

<sup>४</sup> पाढ की बेलि होता है । इसके पत्ते कुछ गोल होते  
हैं । इसके फलों के अन्दर से सफेद और बाह्य बौर की  
तरह फूल निकलता है । इसका फल मकोय की भाँति लाल  
रंग का होता है ।

<sup>५</sup> कुटकी एक बड़ी जड़वाली गुल्म है । यह हिमालय

कटन्मरा ( २ ) अशोक रोहिणी ( ४ ) कटुरोहिणी  
( ५ ) मत्स्यपित्ता ( ६ ) कृष्णमेदी ( ७ ) चकाङ्गी  
( ८ ) शकुनादनी ॥८५॥

( नव मर्कट्याः )

आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यरडा कण्डुरा प्रावृषायणी  
ऋष्यप्रोक्ता शकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटौ ।

<sup>१</sup>केवाँच के ६ नाम—( १ ) आत्मगुप्ता ( २ )  
अजहा ( ३ ) अव्यरडा ( ४ ) कण्डुरा ( ५ )  
प्रावृषायणी ( ६ ) ऋष्यप्रोक्ता ( ७ ) शकशिम्बि  
( ८ ) कपिकच्छु ( ९ ) मर्कटौ ॥८६॥

( दश मूषिकपर्ण्याः )

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषाऽ७  
प्रत्यक्ष्णैणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यापि ।

<sup>२</sup>मूसाफानी के १० नाम ( १ ) चित्रा ( २ )  
उपचित्रा ( ३ ) न्यग्रोधी ( ४ ) द्रवन्ती ( ५ )  
शम्बरी ( ६ ) वृषा ( ७ ) प्रत्यक्ष्णैणी ( ८ )  
सुतश्रेणी ( ९ ) रण्डा ( १० ) मूषिकपर्ण्या ॥८७॥

( अष्टावपामार्गस्य )

अपामार्गः शैखरिको धामार्गव-मयूरकौ ॥८८॥  
प्रत्यक्ष्णैणी केशपर्णी किण्विही खरमञ्जरी ।

<sup>३</sup>चिरचिरा, लट्जीरा, ओगा के ८ नाम—

( १ ) अपामार्ग ( २ ) शैखरिक ( ३ ) धामार्गव  
( ४ ) मयूरक ( ५ ) प्रत्यक्ष्णैणी ( ६ ) केशपर्णी  
( ७ ) किण्विही ( ८ ) खरमञ्जरी ॥८८॥

( नव 'भारङ्गी' इतिग्यातायाः )

हज्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मण्यष्टिका ॥  
अङ्गारवल्ली चालेयशक-वर्वर-वर्धका ।

<sup>४</sup>भारङ्गी के ६ नाम—( १ ) हज्जिका ( २ )  
ब्राह्मणी ( ३ ) पद्मा ( ४ ) भार्गी ( ५ ) नाकश-  
यष्टिका ( ६ ) अङ्गारवल्ली ( ७ ) चालेयशक ( ८ )  
वर्वर ( ९ ) वर्धक ॥८९॥

( नव मञ्जिष्ठायाः )

मञ्जिष्ठा विकसा जिह्वी समझा कान्तमेपिकाऽ०  
मण्डकपर्णी भण्डोरी भण्डो योजनवल्लपि ।

<sup>५</sup>मञ्जिठ के ६ नाम—( १ ) मञ्जिष्ठा ( २ )  
विकसा ( ३ ) जिह्वी ( ४ ) नमता ( ५ ) कान्त-  
मेपिका ( ६ ) मण्डकपर्णी ( ७ ) भण्डोरी ( ८ )  
भण्डो ( ९ ) योजनवल्ली ॥९०॥

( दस यवानस्य, धन्वयानस्य च )

यासो यवानसो दु रूपशो धन्वयास' कुनाशक ॥  
रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरात्मना ।

<sup>६</sup>जवाना सौं भनाजा के नाम—( १ ) यास



( २ ) यवास ( ३ ) दुस्पर्श ( ४ ) धन्वयास ( ५ )  
कुनाशक ( ६ ) रोदनी ( ७ ) कच्छुरा ( ८ )  
अनन्ता ( ९ ) समुद्रान्ता ( १० ) दुरालभा ॥६१॥

( नव पृश्निपर्णाः )

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णीचित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका ६२  
क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा ।

<sup>१</sup>पिठवन के ६ नाम—( १ ) पृश्निपर्णा ( २ )  
पृथक्पर्णी ( ३ ) चित्रपर्णा ( ४ ) अङ्घ्रिपर्णिका  
( ५ ) क्रोष्टुविन्ना ( ६ ) सिंहपुच्छी ( ७ ) कलशि  
( ८ ) धावनि ( ९ ) गुहा ॥६२॥

( दश कण्टकारिकायाः )

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका  
प्रचोदिनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।

<sup>२</sup>कटेरी, भटकटैया के १० नाम—( १ ) निदि-  
ग्धिका ( २ ) स्पृशी ( ३ ) व्याघ्री ( ४ ) बृहती  
( ५ ) कण्टकारिका ( ६ ) प्रचोदिनी ( ७ ) कुली  
( ८ ) क्षुद्रा ( ९ ) दुःस्पर्शा ( १० ) राष्ट्रिका ॥६३॥

( एकादश नीलवृक्षस्य )

नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका  
रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी

<sup>३</sup>नील के पेड़ के ११ नाम—( १ ) नीली  
( २ ) काला ( ३ ) क्लीतकिका ( ४ ) ग्रामीणा  
( ५ ) मधुपर्णिका ( ६ ) रञ्जनी ( ७ ) श्रीफली  
( ८ ) तुत्था ( ९ ) द्रोणी ( १० ) दोला ( ११ )  
नीलिनी ॥६४॥

( अष्टौ वाकुच्याः )

अवलगुज. सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका

१. बगाल और पश्चिम में पिठवन बहुत पैदा होता है। इसके पत्ते बेलदार होते हैं। जय महित गोल-गोल इसके फूल नीलापन लिए हुए सफेद रङ्ग के होते हैं।

२ कटेरी का छुप पृथ्वी पर फैला हुआ होता है। इसके पत्ते चितले और बहुत काँटेदार होते हैं। इसका फूल बैंगनी रङ्ग का और केशर पीले रङ्ग का होता है।

३ रेत में कृपक लोग नील का छुप बो देने हैं। मरफोंक की तरह कुछ कालापन लिए हुए नीले रङ्ग के इसके पत्ते होते हैं। इसकी फली टेढ़ी और गोल होती है।

कालमेपी कृष्णफला वाकुची पूतिफल्यपि ।

<sup>४</sup>वावची, वकुची के ८ नाम—( १ )  
अवलगुज ( २ ) सोमराजी ( ३ ) सुवल्लि ( ४ ) सोम-  
वल्लिका ( ५ ) कालमेपी ( ६ ) कृष्णफला ( ७ )  
वाकुची ( ८ ) पूतिफली ॥ ६५ ॥

( दश पिप्पल्याः )

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥६६॥  
उपणा पिप्पली शौण्डी कोला

<sup>५</sup>पीपर के १० नाम—( १ ) कृष्णा ( २ )  
उपकुल्या ( ३ ) वैदेही ( ४ ) मागधी ( ५ )  
चपला ( ६ ) कणा ( ७ ) उपणा ( ८ ) पिप्पली  
( ९ ) शौण्डी ( १० ) कोला ॥ ६६ ॥

( पञ्च गजपिप्पल्याः )

अथ करिपिप्पली  
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ६७

<sup>६</sup>गजपीपर के ५ नाम—( १ ) करिपिप्पली  
( २ ) कपिवल्ली ( ३ ) कोलवल्ली ( ४ ) श्रेयसी  
( ५ ) वशिर। इनमें ( १-४ ) खीलिङ्ग ( ५ )  
पुल्लिङ्ग हैं ॥ ६७ ॥

इसको डाली और पत्ती का नीला रङ्ग बनाते हैं।

४ वकुची का स्वरूप शोडल निषण्ड में इस प्रकार वर्णन किया गया है—

‘लुपो वाकुचिकायाश्च गोवारो मदुरो भवेत् ।

कृष्णपुष्पो गुच्छफलो दुर्गन्ध कृष्णबीजक ॥

अर्थात्—वाकुची का छुप होता है। जिसके पत्तों की आकृति ग्वार के सदृश होती है। इसके फूल का रङ्ग काला होता है। गुच्छों में फल लगता है। इनके अन्दर से काले बीज निकलते हैं। इनमें से दुर्गन्ध आती है।

५ पीपर को ‘मागधी, मागधी’ कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि बिहार प्रान्त से यह आती है। इसके पत्तों का आकार पान का मा होता है।

६ निषण्ड ग्रन्थों में कहा गया है कि—

‘चविकाया फल प्रायै कथिता गजपिप्पली ।

कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च मा ॥’

अर्थात्—वैद्य लोग चव्य के फल को ही गजपीपर कहते हैं और उसी के पर्यायवाची नाम हैं—कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर।

( द्वे चव्यस्य )

चव्यं तु चविका

<sup>१</sup>चव्य के २ नाम—(१) चव्य (२) चविका ।

( त्रीणि गुञ्जायाः )

काकचिञ्चा-गुञ्जे तु कृष्णला ।

<sup>२</sup>धुपची के ३ नाम—(१) काकचिञ्चा (२) गुञ्जा (३) कृष्णला ।

( सप्त गोक्षुरकस्य )

पलङ्कपा त्विभुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ६ =  
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।

<sup>३</sup>गोरु के ७ नाम—( १ ) पलङ्कपा ( २ )  
इभुगन्धा ( ३ ) श्वदंष्ट्रा ( ४ ) स्वादुकण्टक  
( ५ ) गोकण्टक ( ६ ) गोक्षुरक ( ७ ) वनशृङ्गाट ॥ ६ ॥

( अष्टावतिविपाया )

विष्या विपा प्रतिविपाऽतिविपोपविपाऽरुणा ६६  
शृङ्गी महौषधं च

<sup>४</sup>अतीय के ८ नाम—(१) विष्या ( २ ) विपा  
( ३ ) प्रतिविपा ( ४ ) अतिविपा ( ५ ) उपविपा ( ६ )  
अरुणा ( ७ ) शृङ्गी ( ८ ) महौषध ॥ ६ ॥

( द्वे दुग्धिकायाः )

अथ क्षीराची दुग्धिका समे ।

<sup>५</sup>दुग्धी के २ नाम—(१) क्षीराची (२) दुग्धिका ।  
ये दोनों स्त्रीलिङ्ग ह ।

( दश शतावरी )

शतमूली बहुसुताऽभीरुर्दिग्वरी वरी ॥ १०८  
ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्री-नारायण्य. शतावरी ।  
अहेरुः

<sup>६</sup>शतावर के १० नाम—(१) शतमूली (२)  
बहुसुता (३) अभीरु (४) दिग्वरी (५) वरी (६)  
ऋष्यप्रोक्ता (७) अभीरुपत्री ( ८ ) नारायणी ( ९ )  
शतावरी ( १० ) अहेरु । ये ( १-१० ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १०८  
( सप्त दान्दन्दिद्राया )

अथ पीतद्रु-कालीयक-हरिद्रव. ॥ १०९ ॥  
दार्वा पचम्पचा दाहहरिद्रा पर्जन्यपि ।

<sup>७</sup>दाहहरिद्रा के ७ नाम—( १ ) पीतद्रु ( २ )  
कालीयक ( ३ ) हरिद्र ( ४ ) दार्वा ( ५ ) पचम्पचा  
( ६ ) दाहहरिद्रा ( ७ ) पर्जन्य । इनमें ( १-३ ) पुल्लिङ्ग  
और ( ४-७ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १०९ ॥

( पञ्च यक्षायाः )

वचोग्रगन्धा पटुग्रन्था गोलोमी शतपर्जिका १०९

<sup>८</sup>यक्ष के ५ नाम—(१) वचा (२) उग्रगन्धा  
( ३ ) पटुग्रन्था ( ४ ) गोलोमी ( ५ ) शतपर्जिका ॥ १०९ ॥

( एकं पारसीकवचायाः )

शुक्ला हैमवती

<sup>१</sup>खुरासानी ( सफेद ) वच का नाम—( १ ) हैमवती ।

( अष्टावटरूपस्य )

वैद्यमातृ-सिंहौ तु वाशिका ।

वृषोऽटरूपः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः १०३

<sup>२</sup>अट्टसा के ८ नाम—( १ ) वैद्यमातृ ( २ ) सिंह ( ३ ) वाशिका ( ४ ) वृष ( ५ ) अटरूप ( ६ ) सिंहास्य ( ७ ) वासक ( ८ ) वाजिदन्तक । इनमें ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग और ( ४-८ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥ १०३ ॥

( चत्वारि विष्णुकान्तायाः )

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुकान्ताऽपराजिता

<sup>३</sup>कोयली के ४ नाम—( १ ) आस्फोटा ( २ ) गिरिकर्णी ( ३ ) विष्णुकान्ता ( ४ ) अपराजिता ।

मङ्गल्या जटिला तीक्ष्णा गालिनी लोमशा तथा ॥'

वच पानी की जगह और रेतीली जमीन में पैदा होती है । इसका गुण बतलाया जाता है कि—

‘अङ्गिर्वा पयसाज्येन मासमेकन्तु सेविता ।

वचा कुर्यान्नर प्राश्न श्रुतिधारणसंयुतम् ॥

चन्द्रसूर्यग्रहे पीत पलमेक पयोऽन्वितम् ।

वचायास्तत्त्वण कुर्यान्महाप्रक्षान्वित नरम् ॥

अर्थात्—वच के चूर्ण को जल के साथ या दूध के साथ एक महोने तक सेवन करने से मनुष्य बुद्धिमान और मेधावी होता है । यदि चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण के समय दूध के साथ इसके एक पल चूर्ण को खा ले तो मनुष्य उसी क्षण अत्यन्त बुद्धिमान हो जाता है ।

१ निषण्ड ग्रन्थों में यह लिखा गया है कि—

‘पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हैमवतीति सा ।’

अर्थात्—खुरासानी वच सफेद होता है और उसे हैमवती कहते हैं ।

२ अट्टसे का छुप कालका के निकट बहुत होता है । चैत्र में इसमें सफेद फूल लगते हैं । इन फूलों की जड़ में मधु की एक बूँद रहती है, जिसको दालक और बानर चूसते हैं । इसके पत्ते अमरुद के तुल्य लम्बे और अनीदार होते हैं । दूमरा लाल फूलवाला भी अट्टसा होता है ।

३. उपवन, बाटिका और खेत में कोयल होती है ।

( पञ्च कोकिलाक्षस्य )

इक्षुगन्धा तु कारण्डेक्षु-कोकिलाक्षेक्षुर-क्षुराः ॥

<sup>४</sup>तालमखाना के ५ नाम—( १ ) इक्षुगन्धा ( २ ) कारण्डेक्षु ( ३ ) कोकिलाक्ष ( ४ ) इक्षुर ( ५ ) क्षुर । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग, और ( २-५ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥ १०४ ॥

( पट् मधुरिकायाः )

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः । मिश्रेयाऽपि

<sup>५</sup>सौंफ के ६ नाम—( १ ) शालेय ( २ ) शीतशिव ( ३ ) छत्रा ( ४ ) मधुरिका ( ५ ) मिसि ( ६ ) मिश्रेया । इनमें ( १-२ ) पुल्लिङ्ग, ( ३-६ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( पट् सीहुण्डस्य )

अथ सोहुण्डो वज्र. स्नुक् स्नुही गुडा ॥ समन्तदुग्धा

<sup>६</sup>सेंहुड़ और थूहर के ६ नाम—( १ ) सीहुण्ड ( २ ) वज्र [ वज्रहृ ] ( ३ ) स्नुहू ( ४ ) स्नुही ( ५ ) गुडा ( ६ ) समन्तदुग्धा । इनमें ( १-२ ) पुल्लिङ्ग और ( ३-६ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ १०५ ॥

एक सफेद फूलवाली और दूसरी लाल फूलवाली कोयल होती है । इसके पत्ते छोटे गुलाब की तरह होते हैं । इस पर लम्बी फली लगती है ।

४ कैलया के छुप अधिकतया जल के समीप या चोमासे की ताल तलैयाँ में पैदा होते हैं । इन छुपों पर काँटे होते हैं । इसके पत्ते लम्बे-लम्बे होते हैं । गूमे की तरह गोंठें होती हैं जिनके अन्दर से बीज निकलते हैं । इन्हीं बीजों को तालमखाना कहते हैं ।

५ सौंफ के छुप खेतों और बागों में होते हैं ।

६ इसमें सेंहुड़ और थूहर के संयुक्त नाम दिये गये हैं । शोढल निषण्ड में लिखा है—

‘सुही समन्तदुग्धा च नागदुर्वहुदुग्धिका ।

महावृक्ष सुधा वज्रा शीहुण्डो दण्डवृक्षक ॥’

सेंहुड़ और थूहर दोनों एक ही जाति के पेड़ हैं । सेंहुड़ की टण्डो काँटेदार और मोटी होती है । इसके पत्ते कोमल पत्थरचट्टे की तरह होते हैं । हर शाखा और हर पत्तों में से दूध निकलता है । थूहर की टण्डो पतली होती

( षट् विडङ्गस्य )

अथो वेल्लममोघा चित्रतरण्डुला ।

तरण्डुलश्च कृमिम्रश्च विडङ्गं पुं-नपुंसकम् १०६

वायविडङ्ग के ६ नाम—( १ ) वेल्ल ( २ )  
अमोघा ( ३ ) चित्रतरण्डुला ( ४ ) तरण्डुल  
( ५ ) कृमिम्र ( ६ ) विडङ्ग । इनमें ( १ ) पुंल्लिङ्ग-नपुं-  
सकलिङ्ग, ( २-३ ) स्त्रीलिङ्ग, ( ४-५ ) पुल्लिङ्ग  
( ६ ) पुंल्लिङ्ग-नपुंसक में होते हैं ॥१०६॥

( द्वे खरयष्टिकायाः )

पला घाट्यालका

१ निरेडी, धदियरा के २ नाम—( १ ) चला  
( २ ) घाट्यालका ।

( द्वे शणपुष्पिकायाः )

घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।

१ सनई, सनगुली के २ नाम—( १ ) घण्टा-  
रवा ( २ ) शणपुष्पिका ।

( पञ्च द्राक्षायाः )

गृहीता गोस्तनी द्राक्षा रधाक्षी मधुरसेति च

नाम, अंगूर के ५ नाम—( १ ) गृहीता

( २ ) गोस्तनी ( ३ ) द्राक्षा ( ४ ) स्वाक्षी ( ५ )  
मधुरसा ॥१०७॥

( सप्त शुक्लत्रिवृतायाः )

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।  
त्रिभण्डी रोचनी

१ सफेद निसोत या निसोत सामान्य के ७  
नाम—( १ ) सर्वानुभूति ( २ ) सरला ( ३ )  
त्रिपुटा ( ४ ) त्रिवृता ( ५ ) त्रिवृत् ( ६ ) त्रिभण्डी  
( ७ ) रोचनी । ये ( १-७ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( सप्त कृष्णवर्णायास्त्रिवृतायाः )

श्यामा-पालिन्धौ तु सुपेणिका ॥१०८॥  
काला मसूरविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेपिका ।

१ काला निनोत के ७ नाम—( १ ) श्यामा  
( २ ) पालिन्धी ( ३ ) सुपेणिका ( ४ ) काला  
( ५ ) मसूरविदला ( ६ ) अर्धचन्द्रा ( ७ ) काल-  
मेपिका ॥१०८॥

( चत्वारि मधुयष्टिकायाः )

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका १०९

१ मुलेठी के ४ नाम—( १ ) मधुक ( २ )  
क्रीतक ( ३ ) यष्टीमधुक ( ४ ) मधुयष्टिका ॥१०६॥

( चत्वारि भूमिकूष्माण्डस्य )

विदारो क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्टी तु यासिता ।

२ विदारिकन्द, विलाई कन्द के ४ नाम—

( १ ) विदारो ( २ ) क्षीरशुक्ला ( ३ ) इक्षुगन्धा  
( ४ ) क्रोष्टी ।

( त्रीणि क्षीरकन्दस्य )

अन्या क्षीरविदारो स्यान्महाश्वेतर्जगन्धिका ॥

३ दूध विदारो के ३ नाम—( १ ) क्षीर-  
विदारो ( २ ) महाश्वेता ( ३ ) ऋक्षगन्धिका ॥११०॥

( चत्वारि जलपिप्पल्याः )

लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।

४ जलपीपर, पनिसिगा, गंगतिरिया के ४  
नाम—( १ ) लाङ्गली ( २ ) शारदी ( ३ ) तोय-  
पिप्पली ( ४ ) शकुलादनी ।

१ 'मधुवल्ली द्विप्रकारा—'जलजा' च 'स्थलोद्भवा' ।

मुलेठी का छुप होता है। इसमें छोटे २ और गोल २  
पत्ते लगते हैं। इसकी फली छोटी बारीक होती है। फूल का  
रंग लाल होता है ।

२ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार विदारिकन्द के नाम—

'विदारो वृष्यकन्दा च क्षीरशुक्ला सिता स्मृता ।

इक्षुगन्धा त्रिपर्णा च शुक्ला गजद्वयप्रिया ॥'

विदारिकन्द की बेल अनूप देश के वनों में होती है ।  
यह कन्द शूकर के तुल्य रोमयुक्त पैदा होता है। घुड़ियों की  
तरह इसके पत्ते बड़े-बड़े होते हैं। इसके नीचे जड़ में बहुत  
बड़ा कन्द निकलता है। उसका रंग लालो लिए होता है ।

३ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार दूधविदारो के नाम—

अन्या क्षीरविदारो स्याद्विष्णुगन्धेक्षुवल्ली ।

इक्षुवल्ली क्षीरकन्द क्षीरवल्ली पयस्विनी ॥

क्षीरशुक्ला क्षीरलता पयःकन्दा पयोलता ।

पयोविदारिका चेति विशया द्वादशाह्वया ॥'

दूध विदारो कन्द की भी बेल होती है। इसका कन्द  
मूली की तरह होता है। कन्द का रंग लाल और सफेद  
होता है। एक-एक शाखा में सात-आठ पत्ते होते हैं ।

४ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार जलपीपर के नाम—

'जलपिप्पल्यभिहिता शारदी शकुलादनी ।

मृत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गलीत्यपि कतिपिता ॥'

( पञ्च शिखिमोदायाः )

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥

५ अजमोदा के ५ नाम—( १ ) खराश्वा  
( २ ) कारवी ( ३ ) दीप्य ( ४ ) मयूर ( ५ )  
लोचमस्तक ॥१११॥

( पञ्च शारिवायाः )

गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।

६ सरिवन, सालसा, कालीसर-गौरीसर के ५  
नाम—( १ ) गोपी ( २ ) श्यामा ( ३ ) शारिवा  
( ४ ) अनन्ता ( ५ ) उत्पलशारिवा ।

( चत्वारि ऋद्धयाख्यौपधेः )

योग्यमृद्धिः सिद्धि-लक्ष्म्यौ

७ ऋद्धिकन्द के ४ नाम—( १ ) योग्य ( २ )  
ऋद्धि ( ३ ) सिद्धि ( ४ ) लक्ष्मी । इनमें ( १ )  
नपुसक ( २-४ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( पञ्च वृद्धयाख्यौपधेः )

वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥११२॥

८ वृद्धिकन्द के ५ नाम—( १ ) योग्य ( २ )  
ऋद्धि ( ३ ) सिद्धि ( ४ ) लक्ष्मी ( ५ ) वृद्धि ॥११२॥

प्रायः सजल भूमि पर जलपीपल के छुप निकलते  
हैं। इसके पत्ते बड़े नोनिया की तरह नौकदार होते हैं।  
इसमें पीपल की तरह एक बाल निकलती है ।

५ यूरोप और एशिया में इसका छुप होता है। आज-  
कल सहारनपुर की ओर अधिक होती है ।

६ कालो सारिवा और सफेद सारिवा की बेल काली  
होती है। इसके पत्ते अनार की तरह होते हैं। उन पत्तों  
में मफेद छींटे होते हैं। कितने लोग सारिवा को 'सारसा  
पेरिला' कहते हैं ।

७ निघण्टु ग्रन्थों में भी ऋद्धि वृद्धि के ये ही नाम  
दिए गये हैं। दोनों के विषय में कहा गया है कि—

'ऋद्धिवृद्धिश्च कन्दौ च भवत कोशलेऽचले ।

श्वेतलोमान्वित कन्दो लताजात स-रन्ध्रक ॥

स एव ऋद्धिवृद्धिश्च भेदमप्येतयोर्बुधे ।

तूलग्रन्थिसमा ऋद्धिर्वाभावर्तफला च सा ॥

वृद्धिस्तु दक्षिणावर्तफला प्रोक्ता महर्षिभिः ।'

अर्थात्—ऋद्धि, वृद्धि दोनों कन्द हैं। ये कोशल पर्वत पर पैदा  
होते हैं। ये दोनों काद लता जाति के हैं। इनपर

( पट् कदल्याः )

कदली वारणवुसा रम्भा मोचाऽशुमत्फला ।

काष्ठीला

<sup>१</sup>बैला के ६ नाम—( १ ) कदली ( २ )  
वारणवुसा ( ३ ) रम्भा ( ४ ) मोचा ( ५ ) अशु-  
मत्फला ( ६ ) काष्ठीला ।

( श्रीणि काकमुद्गायाः )

मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥११३॥

<sup>२</sup>मुगवन के ३ नाम—( १ ) मुद्गपर्णी ( २ )  
मृगमुद्गा ( ३ ) सहा ॥११३॥

( पञ्च भण्टाक्याः )

वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुप्रधर्षिणी ।

<sup>३</sup>भण्टा, वैंगन के ५ नाम—( १ ) वार्ताकी  
( २ ) हिङ्गुली ( ३ ) सिंही ( ४ ) भण्टाकी ( ५ )  
दुप्रधर्षिणी ।

( नव रास्नायाः )

नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ।

नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राक्षी सुवहा च सा ।

<sup>४</sup>रावसन, रास्ना के ६ नाम—( १ ) नाकुली  
( २ ) सुरसा ( ३ ) रास्ना ( ४ ) सुगन्धा ( ५ )  
गन्धनाकुली ( ६ ) नकुलेष्टा ( ७ ) भुजङ्गाक्षी  
( ८ ) छत्राक्षी ( ९ ) सुवहा ॥११४॥

( पञ्च गालपर्ण्याः )

विदारीगन्धाऽशुमती लालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥

<sup>५</sup>सरिवन के ५ नाम—( १ ) विदारीगन्धा  
( २ ) अशुमती ( ३ ) गालपर्णी ( ४ ) स्थिरा  
( ५ ) ध्रुवा ॥११५॥

( चत्वारि कार्पास्याः )

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी ददरेति च ।

<sup>६</sup>कपास के ४ नाम—( १ ) तुण्डिकेरी ( २ )  
समुद्रान्ता ( ३ ) कार्पासी ( ४ ) ददरेति ।

( एकं वनकर्पास्या )

भारह्वाजी तु सा वन्या

<sup>७</sup>वन रूपाम का नाम—( १ ) भारह्वाजी ।

( श्रीणि ऋषभाक्षयौषधेः )

शृङ्गी तु ऋषभो वृषः ॥११६॥

<sup>८</sup>ऋषभक के ३ नाम—( १ ) शृङ्गी ( २ )  
ऋषभ ( ३ ) वृष । इनमें ( १ ) नीति ( २ )  
पुंक्षिप्त ह ॥ ११६ ॥

( चत्वारि नागबलायाः )

गाङ्गेरुकी नागबला भूषा ह्रस्वगवेधुका ।

<sup>१</sup>गंगेरुन के ४ नाम—( १ ) गाङ्गेरुकी ( २ )

नागबला ( ३ ) भूषा ( ४ ) ह्रस्वगवेधुका ।

( द्वे हस्तिघोषायाः )

धामार्गवो घोषकः स्यात्

<sup>२</sup>धियातोरई, नेनुआ के २ नाम—( १ )

धामार्गव ( २ ) घोषक ।

( एकं पीत-धामार्गवस्य )

महाजाली स पीतकः ॥११७॥

<sup>३</sup>तोरई का नाम—( १ ) महाजाली । यह स्त्रीलिङ्ग है ॥ ११७ ॥

( त्रीणि पटोलिकायाः )

ज्यौत्स्नी पटोलिका जाली

<sup>४</sup>चिचिड़ा के ३ नाम—( १ ) ज्यौत्स्नी ( २ ) पटोलिका ( ३ ) जाली ।

( द्वे भूमिजम्बुकायाः )

नादेयी भूमिजम्बुका ।

वनमूर्द्धजा, शृङ्गी, शिखरी । अतः निघण्टु ग्रन्थों के अनुकूल मैंने उपरोक्त अर्थ लिखा ।

१ बला के सम्बन्ध में पीछे ( श्लोक १०७ में ) लिख आया हूँ । गंगेरुन का पेड़ महाबला ( सहदेई ) की तरह होता है । गंगेरुन के पत्ते मोटे और दो अनीवाले होते हैं । इसका फूल गुलाबी रंग का होता है । फल बड़ा होता है और जो सूखने पर आप-से-आप पाँच टुकड़ा हो जाता है । अतिबला को कभी कहते हैं ।

२ धिया तोरई का रंग नीला होता है । इसे नेनुआ कहते हैं । यह तोरई का एक भेद है । निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार इसके नाम—

‘महाकोशातकी प्रोक्ता हस्तिघोषा महाफला ।

धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च स स्मृत ॥’

३ तोरई के नाम निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार—

‘कोशातकी स्वादुफला सुपुष्पा कर्कोटपि स्यादपि पीत-पुष्पा’ । तोरई सफेद रंग की धारीदार होती है । यह पीले फूलवाली होती है ।

४ चिचिड़ा की वेल तोरई की तरह होती है । इसके फल बढ़े-बढ़े लम्बे सर्प के आकार के होते हैं ।

<sup>५</sup>छोटी जामुन के २ नाम—( १ ) नादेयी ( २ ) भूमिजम्बुका ।

( द्वे लाङ्गल्या )

स्याल्लाङ्गालक्यशिशिखा

कलिहारी के २ नाम—( १ ) लाङ्गलिकी ( २ ) अशिशिखा ।

( द्वे काकजंघाख्यौपधिविशेषस्य )

काकाङ्गी काकनासिका ॥११८॥

<sup>६</sup>काकजंघा, कौआ ठोठी के २ नाम—( १ )

काकाङ्गी ( २ ) काकनासिका ॥ ११८ ॥

( द्वे हंसपादिकायाः )

गोधापदी तु सुवहा

<sup>७</sup>हंसपदी के २ नाम—( १ ) गोधापदी ( २ ) सुवहा ।

५ ‘नादेयी’ काली जामुन को कहते हैं । यथा—

काकजम्बूः काकफला नादेयी काकवल्लभा ।

‘भूमिजम्बूका’ छोटी कठजामुन को कहते हैं । यथा—

‘अन्या च भूमिजम्बूहृस्वफला भृङ्गवल्लभा ह्रस्वा ।

भूजम्बूर्जमरेष्टा पिकमन्ना काष्ठजम्बूश्च ॥’

जामुन के पेड़ तीन-चार तरह के होते हैं । फूल के स्थान पर जामुन में घेर ही लगते हैं । जामुन के आकार-प्रकार सुप्रसिद्ध हैं ।

६ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार ‘काकजंघा’ ( मसी ) के नाम—

‘काकजंघा च काकाङ्गी काकाङ्गी काकनासिका ।’

निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार ‘कौआ ठोठी’ के नाम—

‘काकनासा तु काकाङ्गी काकतुण्डफला च सा ।’

जंगलों में काकजंघा के छुप पाये जाते हैं । इसके पत्ते लम्बे-लम्बे, हरे और काले रंग के होते हैं । फूल का रंग काला और आकार छोटा होता है । इसके पत्तों पर खर-खरापन और वारोक रोम सदृश होता है । इसकी डालियाँ गोंठदार और थोड़ा-थोड़ा दूर पर टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं ।

जंगलों और कठैर की भूमि में कौआठोठी अधिकतया पैदा होती है । इसके पत्ते गुलाब के पत्तों से छोटे होते हैं । इसके फूल नीले और सफेद रंग के, कौए को नाक के समान, होते हैं ।

७ हंस पदों के छुप अतोव शीतल स्थानों—कुएँ, बावड़ी, तालाब, कुण्ड आदि के समीप—में बहुत पैदा होते हैं । इसकी जड़ लाल और कोमल होती है । इसके पत्ते हरे हरे और बहुत छोटे होते हैं ।

( द्वे 'मुसली' इति ख्यातायाः )

मुसली तालमूलिका ।

<sup>१</sup>मुसली के २ नाम—( १ ) मुसली ( २ ) तालमूलिका ।

( द्वे 'मेदासिद्धी' इति ख्यातायाः )

अजयङ्गी विपाणी स्यात्

<sup>२</sup>मेदासिद्धी के २ नाम—( १ ) अजयङ्गी ( २ ) विपाणी ।

( द्वे गोजिह्वायाः )

गोजिह्वा-दार्विके समे ॥११६॥

<sup>३</sup>गोमी के २ नाम—( १ ) गोजिह्वा ( २ ) दार्विका । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥११६॥

( त्रीणि नागवल्लीयाः )

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्लीपि

<sup>४</sup>नागरवेल, पान के ३ नाम—( १ ) ताम्बूलवल्ली ( २ ) ताम्बूली ( ३ ) नागवल्ली ।

<sup>१</sup>मुसली दो प्रकार की काली और सफेद होती है ।  
<sup>२</sup>यह मुसली के छुप के नीचे अगुली की तरह जड़ होती है ।  
इसके ऊपर की छाल का रंग भूरा होता है, भीतर के गर्भ का रंग सफेद होता है । इसमें बहुत छोटे-छोटे पाले फूल रहते हैं ।

( पट् रेणुकारयगन्धद्रव्यस्य )

अथ द्विजा ।

हरेणु रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिना १२०

<sup>५</sup>रेणुका ( अर्थात् गन्धालु के बीज ) के ६ नाम—( १ ) द्विजा ( २ ) हरेणु ( ३ ) रेणुका ( ४ ) कौन्ती ( ५ ) कपिला ( ६ ) भस्मगन्धिनी ॥१२०॥

( पञ्च बालुकारयगन्धद्रव्यस्य )

एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।

वालुकं च

<sup>६</sup>एलुआ के ५ नाम—( १ ) एलावालुक ( २ ) ऐलेय ( ३ ) सुगन्धि ( ४ ) हरिवालुक ( ५ ) वालुक । ये ( १-५ ) नपुंसक हैं ।

( चत्वारि शलजनिर्गन्धस्य )

अथ पालङ्क्या मुकुन्द कुन्द-कुन्द ॥१२१॥

<sup>७</sup>कुन्दरु ( गलई के गोष्ठ ) के नाम—

अर्थात्—जो व्यक्ति बिना पान के केवल गन्धालु खाती है, जब तक गन्धास्नान नहीं करते तब तक जागता है ।

जो मनुष्य बिना पान के सुपारी खाती है तब तक जागता है, बेगियारी छोड़ती है और पान में नारियल हो जाते हैं ॥



( १ ) पालङ्की ( २ ) मुकुन्द ( ३ ) कुन्द ( ४ ) कुन्दुरु । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग, ( २-३ ) पुल्लिङ्ग ( ४ ) पुल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ॥१२१॥

( पञ्च बालस्य )

बालं द्वीवेर-वर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।

<sup>१</sup>नेत्रवाला, गन्धवाला के ५ नाम—( १ ) बाल ( २ ) द्वीवेर ( ३ ) वर्हिष्ठ ( ४ ) उदीच्य ( ५ ) केशाम्बुनामन् । ये ( १-५ ) नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( पञ्च शिलापुष्पस्य )

कालानुसार्य-वृद्धाऽश्मपुष्प-शीतशिवानितुः १२२ शैलेयम्

<sup>२</sup>पत्थर का फूल, भूरि छरीला के ५ नाम—( १ ) कालानुसार्य ( २ ) वृद्ध ( ३ ) अश्मपुष्प ( ४ ) शीतशिव ( ५ ) शैलेय ॥१२२॥

( पञ्च मुराख्यसुगन्धिद्रव्यस्य )

तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।

गन्धिनी

<sup>३</sup>एकाङ्गी मुरा के ५ नाम—( १ ) तालपर्णी ( २ ) दैत्या ( ३ ) गन्धकुटी ( ४ ) मुरा ( ५ ) गन्धिनी ।

इसका रंग सफेद और कुछ महक लिए होता है । इसके पर्यायवाची शब्द निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार ये हैं—

‘पालङ्क्या कुन्दुरु कुन्दु सौराष्ट्री शिखरी वली ।’

कुछ लोगों ने इसका अर्थ ‘पालक का साग’ बतलाया है । यद्यपि ‘पालङ्क्या’ का अर्थ ‘पालक का साग’ होता है तथापि इसके पर्यायवाची शब्द कुन्दुरु के पर्यायवाची शब्द से नहीं मिलते । अतः उपरोक्त अर्थ मैंने लिखा ।

१ नेत्रवाला को ‘केशाम्बुनामन्’ कहते हैं अर्थात् बाल और पानी के नितने नाम हैं वे इसके भा पर्यायवाची हैं ।

२ यद्यपि ‘शैलेय’ का अर्थ ‘शिलाजीत’ होता है किन्तु अन्य नामों की तुलना करने में निघण्टु ग्रन्थों के अनुकूल ‘पत्थर का फूल’ ही ठीक जँचता है ।

३ इस एकाङ्गी मुरा का उल्लेख भावप्रकाश और निघण्टुरत्नाकर में पाया जाता है । मैपज्यरत्नावली में लिखा है ‘किञ्चित् पीता मुरा शस्ता, माम्नी पिङ्गजटा-कृतिः ।’ वैयक शब्दसिन्धु में लिखा है—‘गुर्जरदेशे म्बनामख्यातगन्धद्रव्ये ।’

( अष्टौ शल्लव्याः )

गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥१२३॥  
महेरुणा कुन्दुरुकी शल्लकी ह्लादिनीति च ।

<sup>४</sup>मलाई के ८ नाम—( १ ) गजभक्ष्या ( २ ) सुवहा ( ३ ) सुरभी ( ४ ) रसा ( ५ ) महेरुणा ( ६ ) कुन्दुरुकी ( ७ ) शल्लकी ( ८ ) ह्लादिनी ॥१२३॥

( चत्वारि धातव्याः )

अग्निज्वाला-सुभिज्ञे तु धातकी धातुपुष्पिका

<sup>५</sup>धाय, ववाई के ४ नाम—( १ ) अग्नि-ज्वाला ( २ ) सुभिज्ञा ( ३ ) धातकी ( ४ ) धातु पुष्पिका [ धातुपुष्पिका ] ॥१२४॥

( पञ्च स्थूलैलायाः )

पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्बहुला

बड़ी इलायची के ५ नाम—( १ ) पृथ्वीका ( २ ) चन्द्रवाला ( ३ ) एला ( ४ ) निष्कुटि ( ५ ) बहुला ।

( पञ्च सूक्ष्मैलायाः )

अथ सा ।

सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः १२५

<sup>६</sup>गुजराती इलायची, छोटी इलायची, सफेद इलायची के ५ नाम—( १ ) उपकुञ्चिका ( २ ) तुत्था ( ३ ) कोरङ्गी ( ४ ) त्रिपुटा ( ५ ) त्रुटि ॥१२५॥

( षट् कुष्ठस्य )

व्याधि कुष्ठं पारिभाव्य चाप्यं पाकलमुत्पलम् ।

४ सलई का पेड़ बहुत बड़ा होता है । इसके पत्ते नीम के पत्तों की तरह होते हैं । फल में तीन रेखाएँ होती हैं । इसी पेड़ के गोंद को कुन्दुरु कहते हैं ।

५ धाय के पेड़ के पत्ते अनार के पत्तों की तरह होते हुए भी उनमें किञ्चित् विभिन्नता रखते हैं । अनार के पत्ते अधिक नीलिमा वाले होते हैं किन्तु इसके पत्ते कुछ पीला-पन लिए खरखरे होते हैं । फूल में कलौ नहीं होती और उसका रंग लाल होता है ।

६ छोटी इलायची का झुप होता है । इसके फूल श्वेत और लाल इलायची की सुगन्ध के सदृश होते हैं । इसके बीज काले और रमदाग होने हैं ।

‘कट’ के ६ नाम—( १ ) कर्मा ( २ )  
कृष्ट ( ३ ) कर्मिण्य ( ४ ) काल ( ५ ) कालन  
( ६ ) कालन । इनमें ( १ ) पुंलिंग, ( २-६ ) स्त्रु-  
लिंग मिले हैं ।

( श्रीणि प्रह्विषाः )

शक्तिनीं श्रोतृपुष्पीं स्यात्केशिनीं

‘श्रोतृपुष्पी’ के ३ नाम—( १ ) शक्तिनी  
( २ ) श्रोतृपुष्पी ( ३ ) केशिनी ।

( पठ् भूयामलव्या )

अथ विनुप्रकः ॥१२६॥  
भट्टामयाऽऽमट्टा तालीं शिवा तामलकीति च ।

‘भट्टा’ के ६ नाम—( १ ) विनुप्रक  
( २ ) भट्टामया [ अमट्टा ( अ ) भट्टा ( ३ )  
अमया ] ( ४ ) अमट्टा ( ५ ) भट्टा ( ६ )  
भट्टा ( ६ ) भट्टा ॥३-६॥

( द्वे ‘पृष्ठरिया’ इति श्यामप )

अपीगष्टरीयां पुनर्गष्टीं

‘अपीगष्टरी’ के ३ नाम—( १ ) अपी  
गष्टरी ( २ ) अपीगष्टरी ( ३ ) अपीगष्टरी ।

( पठ् भूयामलव्या )

‘तुल’ के ६ नाम—( १ ) तुल ( २ )  
तुल्य ( ३ ) तुल्य ( ४ ) तुल्य ( ५ ) तुल्य-  
तुल ( ६ ) तुल्यतुल । ये ( १-६ ) पुल्लिंग हैं । ॥२७॥  
( पठ् चोराभ्यगन्धव्यस्य )

अथ गजली ।

चण्डा धनहरी क्षेम दुष्पत्र गणहासकाः ॥१२७॥

‘चण्डा’ के ६ नाम—( १ ) चण्डा  
( २ ) चण्डा ( ३ ) धनहरी ( ४ ) क्षेम ( ५ )  
दुष्पत्र ( ६ ) गणहासका ॥१२७॥

( अथारि श्यामपमासवगन्धव्यस्य )

श्यामपुष्पं श्यामपुष्पं कर्ज गजहासकम् ।

‘श्यामपुष्प’ के ६ नाम—  
( १ ) श्यामपुष्प ( २ ) श्यामपुष्प ( ३ ) श्याम  
( ४ ) श्यामपुष्प ( ५ ) श्यामपुष्प ( ६ ) श्यामपुष्प ।

( सप्त वर्णानामसवगन्धव्यस्य )

शुभिरा विद्रुमलता कपोलाऽग्निर्मट्टा नली ॥२८॥

धमन्यप्रजनदेशां च

‘शुभिरा’ के ६ नाम—( १ ) शुभिरा  
( २ ) विद्रुमलता ( ३ ) कपोला ( ४ )  
अग्निर्मट्टा ( ५ ) नली ( ६ ) नली ( ६ ) नली ।

**शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखम्**

<sup>१</sup>नखी, छोटनखा नामक गन्ध द्रव्य के ७ नाम—(१) हनु (२) हृष्टविलासिनी (३) शुक्ति (४) शङ्ख (५) खुर (६) कोलदल (७) नख । इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग, (४-५) पुल्लिङ्ग, (६-७) नपुंसक हैं ।

( पट् तुवरिकायाः )

**अथाढकी ॥१३०॥**

**काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालक-सुराष्ट्रजे ।**

<sup>२</sup>अरहर के ६ नाम—(१) आढकी (२) काक्षी (३) मृत्स्ना (४) तुवरिका (५) मृत्तालक (६) सुराष्ट्रज । इनमें (१-४) स्त्रीलिङ्ग, (५-६) नपुंसक हैं ॥१३०॥

( अष्टौ कैवर्तीमुस्तकस्य )

**कुटभटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥१३१॥**

**स्रव-गोपुर-गोनर्द-कैवर्तीमुस्तकानि च ।**

<sup>३</sup>केवटी मोथा के ८ नाम—(१) 'कुटभट' (२) दाशपुर (३) वानेय (४) परिपेलव (५) स्रव (६) गोपुर (७) गोनर्द (८) कैवर्तीमुस्तक । ये (१-८) नपुंसक हैं ॥१३१॥

( पञ्च ग्रन्थिपर्णस्य )

**ग्रन्थिपर्णं शुक्रं वह्निपुष्पं स्थौलेय-कुक्कुरे ॥१३२॥**

१ छोटा नख—जिसे नखी कहते हैं—के पर्यायवाची शब्द भावप्रकाश के अनुसार—

नख रत्नप नखी प्रोक्ता, हनुहृष्टविलासिनी ।

'नखी' गन्धद्रव्य नदी के जीवों का नख होता है । इसे धूप में और सुगन्धि तैलादि में देते हैं । 'नखी' पाँच प्रकार की होती है—

'नखा पञ्चविधा ज्ञेया गन्धार्था गन्धवत्परैः ।

कचिद्वदरपत्रामा तथोत्पलदला मता ॥

काचिदश्वखुराकारा गजकर्णसमाऽपरा ।

वराहकर्णसकाशा पथमे परिकीर्तिता ॥'

२. अरहर की छेती सुप्रसिद्ध है ।

३. केवटीमोथा तृण जाति की है । इसकी जड़ के अन्दर से सुगन्धि आती है ।

<sup>४</sup>गठिवन के ५ नाम—(१) ग्रन्थिपर्ण (२) शुक्र (३) वह्निपुष्प (४) स्थौलेय (५) कुक्कुर । ये (१-५) नपुंसक हैं ॥१३२॥

( दश 'असवरग' इति ख्यातस्य )

**मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ।  
समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि ॥१३३॥**

<sup>५</sup>असवरग के १० नाम—(१) मरुन्माला (२) पिशुना (३) स्पृक्का (४) देवी (५) लता (६) लघु (७) समुद्रान्ता (८) वधू (९) कोटिवर्षा (१०) लङ्कोपिका । ये (१-१०) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१३३॥

( पञ्च जटामास्याः )

**तपस्विनी जटामासी जटिला लोमशा मिशी ।**

<sup>६</sup>वालछड़, जटामासी के ५ नाम—(१) तपस्विनी (२) जटामासी (३) जटिला (४) लोमशा (५) मिशी ।

( पट् त्वक्पत्रस्य )

**त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥१३४॥**

<sup>७</sup>तज, दालचीनी के ६ नाम—(१) त्वक्पत्र

४. निघण्टु ग्रंथों के अनुसार गठिवन के नाम—

'ग्रन्थिपर्णं वह्निपुष्पं स्थौलेयं ग्रन्थिपर्णकम् ।

यह सुगन्धित पदार्थ है । शरीर पर लेप करने से यह खुशबू फैला करता है ।

५. निघण्टु ग्रंथों के अनुसार अनवरग के नाम—

'स्पृक्का लता कोटिवर्षा मरुन्माला लता मरुत् ।

लङ्कारिका समुद्रान्ता कुटिला देवपुत्रिका ॥'

६ जटामासी गुल्मजाति की वनस्पति है । यह हिमालय के जङ्गलों में पैदा होता है । इसके पत्ते सरजीवन की तरह होते हैं । फूल का रंग गुलाबी होता है । इसकी जड़ में धूसर वर्ण के रोपें जमे रहते हैं ।

७. सिहलद्वीप, सुमात्रा टापू, जावा टापू, मलाबार, कोचीन, चीन आदि में तज बहुत होता है । इसके छोटे-छोटे पेड़ होते हैं । इसके पत्तों की आकृति तमालपत्रों की तरह होती है । जिनमें से, सूख जाने पर, लींग की तरह महक आती है । वृक्ष का डंठि के ऊपर सफेद फूल लगते हैं । जिनमें से गुलाब के फूल की तरह महक आती है । कहीं-कहीं इसकी फल होते हैं । पेड़ की पतनी ध्यान को दो दालचानों कहते हैं ।

( २ ) उक्कट ( ३ ) मृह ( ४ ) लज ( ५ ) चोच  
( ६ ) वराहक ॥१३४॥

( अथानि कर्चूरस्य )

कर्चूरको द्राघिडक. काल्पको घेधमुष्यकः ।

'कचूर, काली हल्ली के ४ नाम—( १ )  
कर्चूरक ( २ ) द्राघिडक ( ३ ) काल्पक ( ४ )  
घेधमुष्यक ।

श्लोषयो जातिमाध्रे स्युः

जैसा पहले ६६ श्लोक में बताया है कि  
'श्लोषि' प्रजापतिनाम है अर्थात् जो इस एक  
भाग के अन्तर्गत गुरु माने हैं, उनमें 'श्लोषि'  
भर्त्ता हैं जिन्हें मोक्ष दी जाती है। जो जाति माध्रे  
में ही 'श्लोषि' नाम का प्रयोग होता है, ऐसा  
मान्यता है। यह भी स्मरण रखना कि यहाँ यह  
बहुवचन में लिखा है। में 'श्लोषि' कहा गया  
है, मत कि यह बहुवचन नहीं होता ।

( एकं भोजनमाधनम् सुप्तादेः )

शुक्राभयं पत्रपुष्पादि

पत्र-गुण ( मूल, वंशादकर, प्रम, कद, नन.

पीजान्तर न्यक्, धनाक ) अर्थः सा नाम—( १ )

शुक्र । ( नपुंसक )

( द्वे सप्तदलीयस्य )

तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

'श्लोषि' के नाम से २ नाम—( १ ) तण्डु-

लीय ( २ ) अल्पमारिष ।

( पञ्चासिगिराः )

विश्वराऽतिथिगिऽनन्ता फलिनी अत्रपुष्पिका

'अतिथिगिरि' के ४ नाम—( १ ) विश्वरा

( २ ) अतिथिगिरि ( ३ ) अन्तर्गिरि ( ४ ) फलिनी

( ५ ) अत्रपुष्पिका ॥१३५॥

( पत्र पृष्ठमरुतस्य )

स्याद्विषमन्धा शुक्रान्धपाथिगो मुखदारकः ।

हृत्

( चत्वारि ब्राह्मणाः )

ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥१३७॥

<sup>१</sup>ब्राह्मी के ४ नाम—(१) ब्राह्मी (२) मत्स्याक्षी (३) वयस्था (४) सोमवल्लरी ॥१३७॥

( चत्वारि 'सत्यानासी' इति ख्यातायाः )

पटुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।

<sup>२</sup>सत्यानासी कटेरी के ४ नाम—( १ ) पटुपर्णी ( २ ) हैमवती ( ३ ) स्वर्णक्षीरी ( ४ ) हिमावती ।

( चत्वारि मापपर्ण्याः )

हयपुच्छी तु काम्बोजी मापपर्णी महासहा ॥

<sup>३</sup>जङ्गली उडद ( मषवन ) के ४ नाम—( १ ) हयपुच्छी ( २ ) काम्बोजी ( ३ ) मापपर्णी ( ४ ) महासहा ॥१३८॥

( चत्वारि 'कन्दूरी' इति ख्यातायाः )

तुरिण्डकेरी रक्तफला विम्बिका पीलुपर्यपि ।

<sup>४</sup>कन्दूरी के ४ नाम—( १ ) तुरिण्डकेरी ( २ ) रक्तफला ( ३ ) विम्बिका ( ४ ) पीलुपर्णी ।

१ ब्राह्मी के नाम—'ब्राह्मी वयस्था मत्स्याक्षी सुरसा सोमवल्लरी ।' ब्राह्मी के छुप का छत्तासा प्रायः नम जमीन या सरोवर आदि के सन्निकट होता है । इसके पत्ते छोटे-छोटे गोल एक ओर से खिले हुए होते हैं । यह स्मरण-शक्तिवर्द्धक है ।

२ सत्यानासी कटेरी के पर्यायवाची शब्द निषण्ड ग्रन्थों में ये हैं—

'स्वर्णक्षीरी हैमशिखा पटुपर्णी हिमावती ।

हैमवती पीतपुष्पा तन्मूल चोक उच्यते ॥'

काँटेदार इसका छुप होता है । पत्तों के ऊपर और फलों पर काँटे होते हैं । फूल पीला होता है । दूध का रंग स्वर्ण के रंग का होता है, यथा—

कण्टकी कण्टपत्रा च, पीतपुष्पा क्षुपा भवेत् ।

स्वर्णक्षीरी कण्टफला कृष्णबीजा च सुस्थिरा ॥

३ समतल देश की मापपर्णी के नीचे साधारण जड़ होती है । पत्ते बगैर मूँग की तरह होते हैं ।

४ निषण्ड ग्रन्थों के अनुसार कन्दूरी के नाम—

विम्बी रक्तफला तुरिण्टी तुरिण्डकेरी च विम्बिका ।

ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥

कन्दूरी बागों में बोई जाती है । इसके पत्ते तीन अनो वाले होते हैं ।

( पञ्च वनतुलसिकायाः )

वर्बरा कवरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका ॥१३९॥

<sup>५</sup>वनतुलसी के ५ नाम—(१) वर्बरा (२) कवरी (३) तुङ्गी (४) खरपुष्पा (५) अजगन्धिका ॥१३९॥

( चत्वारि एलापर्ण्याः )

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।

<sup>६</sup>रास्ना के ४ नाम—( १ ) एलापर्णी ( २ ) सुवहा ( ३ ) रास्ना ( ४ ) युक्तरसा ।

( पञ्च 'अम्ल लोनिया' इति ख्यातायाः )

चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाऽम्ललोणिका ॥१४०॥

<sup>७</sup>अम्ल लोनिया, चाङ्गेरी के ५ नाम—( १ ) चाङ्गेरी ( २ ) चुक्रिका ( ३ ) दन्तशठा ( ४ ) अम्बष्ठा ( ५ ) अम्ललोणिका ॥१४०॥

( चत्वारि अम्लवेतसस्य )

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतस शतवेध्यपि ।

<sup>८</sup>अमलवैत के ४ नाम—( १ ) सहस्रवेधिन ( २ ) चुक्र ( ३ ) अम्लवेतस ( ४ ) शतवेधिन । ये ( १-४ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( चत्वारि 'लज्जावन्ती' इति ख्यातायाः )

नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि ॥१४१॥

<sup>९</sup>लज्जावन्ती, छुईसुई के ४ नाम—( १ )

५ वनतुलसी जगलों में होती है । इसके पत्ते पियावाँसे की तरह छोटे और नीम के पत्तों की तरह क्यूरेवाले होते हैं । पीलापन लिए और सुगन्धित इसका फूल होता है ।

६ रास्ना के लिए ११४ वें श्लोक की टिप्पणी देखिए ।

७ अमलवैत के पेड़ बागों में बहुत होते हैं । इसका आकार मध्यम होता है । इसमें सफेद रंग के फूल लगते हैं । इसका चिकना फल खरबूजे के आकार की तरह गोल होता है, जो कच्ची अवस्था में हरे और पक जाने पर पीले हो जाते हैं ।

८ लज्जावन्ती के छुप वेल की तरह होते हैं । मनुष्य को स्पर्श करते ही लज्जा के मारे मिकुड़ कर नीचे की ओर झुक जाते हैं । इसी में इसे लज्जावन्ती कहते हैं । इसकी जड़ लाल होती है । इसके पत्ते छोंकर या खैर के पत्तों की तरह होते हैं । इसके फूल नीला रंग मिला हुआ गुलाबी रंग के होते हैं ।

नमस्वरी ( २ ) नमस्वरी ( ३ ) नमस्वरी ( ४ )  
गोविता ॥१८१॥

( पञ्च जीवन्त्याः )

जीवन्ती जीवन्ती जीवा जीवन्तीया मधुसूया ।

जीवन्ती के १ नाम—( १ ) जीवन्ती ( २ )  
जीवन्ती ( ३ ) जीवा ( ४ ) जीवन्तीया ( ५ ) मधु-  
सूया ।

( पञ्च जीवकम्प )

कूर्चशीर्षो मधुसूयः शृङ्गद्वयस्य जीवकाः ॥१८२॥

जीवक के १ नाम—( १ ) कूर्चशीर्ष ( २ )  
मधुसूय ( ३ ) शृङ्ग ( ४ ) शृङ्गा ( ५ ) जीवक ॥१८३॥

( त्रीणि त्रिगणितानि )

विराजतिषो भूमिगोऽनार्यनितः

विराजति के ३ नाम—( १ ) विराजति ( २ )  
भूमिग ( ३ ) अनार्यनितः ।

( पञ्च समन्तावाः )

सप्त समन्ता ।

विमल्य मातुष्य भूमिगोऽनार्यनितः ॥१८४॥

समानता के १ नाम—( १ ) समता ( २ )

विमल्य ( ३ ) मातुष्य ( ४ ) भूमिगो ( ५ )

नमस्वरी ॥१८५॥

( त्रीणि चापनोत्वा )

चायसोलो स्यादुत्सा वयस्या

चायसोलो के ३ नाम—( १ ) चायसोलो  
( २ ) स्यादुत्सा ( ३ ) वयस्या ।

( पञ्च नक्षत्रकम्प )

वयस्य मक्षत्रकः ।

निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्षेण शृङ्गद्वयस्यपि ॥

निकुम्भ के १ नाम—( १ ) निकुम्भ  
( २ ) दन्तिका ( ३ ) प्रत्यक्षेण ( ४ ) शृङ्गद्वयस्य  
( ५ ) शृङ्गद्वयस्य ॥१८६॥

( त्रै सामोपगता )

अजसोरा नृप्रगन्ता

अजसोरा के ३ नाम—( १ ) अजसोरा  
( २ ) नृप्रगन्ता ।

( द्वै यथाविकल्पाः )

प्रत्यक्षेण यथाविकल्पाः ।

( त्रीणि पुष्करमूलस्य )

मूले पुष्कर-काशमीर-पद्मपत्राणि पौष्करे ॥१४५॥

<sup>१</sup>पोहकर-मूल के ३ नाम—( १ ) पुष्कर ( २ ) काशमीर ( ३ ) पद्मपत्र ॥१४५॥

( पद्म उत्तरदेशे प्रसिद्धायाः 'पद्मचारिण्याः स्थल-कमलिनी' इति ख्यातायाः )

अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

<sup>२</sup>स्थल कमलिनी के ५ नाम—(१) अव्यथा ( २ ) अतिचरा ( ३ ) पद्मा ( ४ ) चारटी ( ५ ) पद्मचारिणी ।

( पद्म काम्पिल्यस्य )

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि

<sup>३</sup>कवीला के ५ नाम—(१) काम्पिल्य ( २ ) कर्कश (३) चन्द्र (४) रक्ताङ्ग (५) रोचनी ॥१४६॥

( पट् पद्माटस्य )

प्रपुष्पाडस्त्वेडगजो ददुघ्नश्चक्रमर्दकः ।

पद्माट उरणाख्यश्च

<sup>४</sup>चक्रवड ( पवाड, पमार ) के ६ नाम—( १ ) प्रपुष्पाड ( २ ) एडगज ( ३ ) ददुघ्न ( ४ ) चक्रमर्दक ( ५ ) पद्माट ( ६ ) उरणाख्य ।

'यवानो दीप्यको दीप्यो भूतिकश्च यवानिका ।'

कोई कोई 'अजमोदा यवानिका' इन चारों को अजवायन के पर्यायवाची शब्द मानते हैं । पारसी और खुरासानी अजवायन प्रसिद्ध हैं ।

<sup>१</sup> यह पुष्कर औषधि की सुगन्धयुक्तजड़ है ।<sup>२</sup> स्थलकमल भी कमल की तरह होता है । किन्तु इसमें यह विशेषता है कि यह जमीन पर होता है । आकृति कमल के तुल्य होती है । परन्तु इसके पत्ते, फूल, फल उससे छोटे होते हैं ।<sup>३</sup> पहाड़ों पर इसके पेड़ बहुत होते हैं । इसके पत्ते गूलर की तरह होते हैं । इसके फल छोटे वेर के आकार के होते हैं । उन पर लाल धूलि जमी रहती है, जिन्हें कवीला कहते हैं ।<sup>४</sup> चक्रवड का छुप होता है । इसके पत्ते गोल-गोल और एक-एक डण्ठी में पौंच होते हैं । इसका साग खाया जाता है । इसका फूल पीला होता है । उस पर फलो लगती है ।

( द्वे पलाण्डोः )

पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥१४७॥

प्याज के २ नाम—( १ ) पलाण्डु ( २ ) सुकन्दक ॥१४७॥

( द्वे हरिद्वर्णपलाण्डोः )

लतार्क-दुद्रुमौ तत्र हरिते

हरे रंग के प्याज के २ नाम—( १ ) लतार्क ( २ ) दुद्रुम ।

( षट् लशुनस्य )

अथ महौषधम् ।

लशुनं गृञ्जनारिष्ट-महाकन्द-रसोनका ॥१४८॥

<sup>५</sup>लहसुन के ६ नाम—( १ ) महौषध ( २ ) लशुन ( ३ ) गृञ्जन (४) अरिष्ट (५) महाकन्द (६) रसोनक ॥१४८॥

( द्वे 'गदहपूर्णा' इति ख्यातायाः )

पुनर्नवा तु शोथघ्नी

<sup>६</sup>गदहपुत्रा, विषखपरा के २ नाम—( १ ) पुनर्नवा ( २ ) शोथघ्नी ।

( द्वे वितुन्नस्य )

वितुन्नं सुनिपराणकम् ।

<sup>७</sup>चौपतिया, उटिंगन के २ नाम—( १ ) वितुन्न ( २ ) सुनिपराणक ।

( चत्वारि शणपर्ण्याः )

स्याद्वातक. शीतलोऽपराजिता शणपरार्यपि १४९

<sup>५</sup> भावप्रकाश में लिखा है कि लहसुन भक्षण करने-वालों को चाहिए कि निम्नलिखित बातों को छोड़ दें—( १ ) कसरत ( २ ) धूप में घूमना ( ३ ) क्रोध करना ( ४ ) बहुत पानी पीना ( ५ ) दुग्धपान ( ६ ) गुड ।

'व्यायाममातप रोपमतिनीर पयो गुडम् ।

रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् ॥'

<sup>६</sup> गदहपूर्णा का छुप पृथ्वी पर फैला हुआ होता है । इसके पत्ते गोल और लाल किनारेदार होते हैं । इसका फूल लाल होता है । सफेद फूलवाले छुप को विषखपरा कहते हैं ।<sup>७</sup> चौपतिया के साग का छत्ता छुप के समान नम जमीन पर होता है । इसके पत्ते चार और चागेरी की तरह होते हैं ।

अमनस्यो, पट्टन के ८ नाम—( १ )  
मन्त्र ( २ ) शक्ति ( ३ ) अमनसि ( ४ )  
अमनस्यो ॥१४१॥

( पत्र ज्योतिष्माः )

पत्रावतः शिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।

१ नाम ज्योतिष्मती के ५ नाम—( १ ) पत्राव-  
तः ( २ ) कटभी ( ३ ) पण्या ( ४ ) ज्योति-  
ष्मती ( ५ ) लता । ये ( १-५ ) व्योक्त हैं ।

( चरारि प्रायमाणाः )

चरारि प्रायमाणा स्यात्प्रायस्मती घनमद्रिका ॥

१ प्रायस्मती के ४ नाम—( १ ) चरारि ( २ )  
प्रायमाणा ( ३ ) प्रायसी ( ४ ) घनमद्रिका  
॥१४०॥

( चरारि प्रायमाः )

चिपचिपमेनमिषा गृष्टिर्वासादा पदरेत्यपि ।

१ चरारिपद के ८ नाम—( १ ) चिप-  
चिपमेनमिषा ( २ ) गृष्टि ( ३ ) वासादा ( ४ ) पदरे  
॥१४१॥

( के भृङ्गाः )

माषादी भृङ्गाः स्यात्

१ माषादी के ३ नाम—( १ ) माषा ( २ )  
॥१४१॥

१ मन्त्र के २ नाम—( १ ) मन्त्र ( २ )  
मन्त्रो ॥१४१॥

( सह मन्त्राः )

शतपुष्पा मितच्छुभातिच्छुभा मन्त्रा मितिः ।

अत्राक्षुष्पी फारसी च

१ मन्त्र के ७ नाम—( १ ) मन्त्र ( २ )  
मितच्छुभा ( ३ ) अतिच्छुभा ( ४ ) मन्त्रा ( ५ )  
मिति ( ६ ) अक्षुष्पी ( ७ ) फारसी ।

( पत्र प्रसारिष्माः )

मन्त्रा तु प्रसारिष्मा ॥१४२॥

तन्वा पटम्बरा राजयन्ता भद्रकनेत्यपि ।

१ पटम्बरा के ५ नाम—( १ ) मन्त्रा ( २ )  
प्रसारिष्मा ( ३ ) पटम्बरा ( ४ ) राजयन्ता ( ५ )  
भद्रकनेत्यपि ॥१४२॥

( पत्र लक्षणाः )

जनी जनुका रजनी जनुकाकार्पिनी ॥१४३॥  
मन्त्रा

१ जनी, जनुका के ४ नाम—( १ ) जनी  
( २ ) जनुका ( ३ ) रजनी ( ४ ) जनुकाकार्पिनी  
॥१४३॥



( पञ्च गन्धमूल्याः )

अथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।

कर्चूरोऽपि पलाशः

१ छोटा कचूर, कपूर कचरी, गन्धपलाशी के ५ नाम—( १ ) शटी ( २ ) गन्धमूली ( ३ ) षड्ग्रन्थिका ( ४ ) कर्चूर ( ५ ) पलाश ।

( त्रीणि कारवेल्स्य )

अथ कारवेल्सः कठिलकः ॥१५४॥

सुषवी च

करैला के ३ नाम—( १ ) कारवेल्स ( २ ) कठिलक ( ३ ) सुषवी ॥१५४॥

( चत्वारि तिक्कपटोलस्य )

अथ कुलकं पटोलस्तिककः पटुः ।

२ कड़वा परवल के ४ नाम—( १ ) कुलक ( २ ) पटोल ( ३ ) तिक्कक ( ४ ) पटु ।

( द्वे कूष्माण्डस्य )

कूष्माण्डकस्तु कर्कारुः

३ कोहड़ा के २ नाम—( १ ) कूष्माण्ड ( २ ) कर्कारु ।

( द्वे कर्कट्याः )

उर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥१५५॥

४ ककड़ी के २ नाम—( १ ) उर्वारु [ ईर्वारु, ईर्वारु ईर्वालु, एर्वारु ] ( २ ) कर्कटी इनमें ( १ ला ) पुंस्त्रियौ

१ भावप्रकाश में गन्धपलाशी के पर्यायवाची शब्द ये बतलाये गये हैं—

‘शटी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिका ।

गन्धारिजा गन्धर्वधूर्धू पृथुपलाशिका ॥’

इसकी बेल होती है। सुगन्धियुक्त कन्द की तरह इसकी जड़ होती है। टुकड़ा-टुकड़ा करके जब उसे सुखा लेते हैं तब उसे कपूरकचरी कहते हैं ।

२ परवल—मीठा, कड़वा—दो प्रकार का होता है। कड़वा परवल का उपयोग औषधि में होता है। इसके फूल मफेद होते हैं। फल नीले और पकने पर लाल हो जाते हैं।

३ कोहड़ा की बेल होती है। यह सब जगह बोया जाता है। इसका बड़ा और नीला फल होता है।

४ ककड़ी अनेक जाति की होती है, किन्तु सबसे उत्तम औष्मकतु की ककड़ी होती है।

में भी होता है ) । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१५५॥

( द्वे कटुतुम्ब्याः )

इच्चाकुः कटुतुम्बी स्यात्

५ तितलौकी, कढवी लौआ के २ नाम—( १ ) इच्चाकु ( २ ) कटुतुम्बी । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे ‘लौकी’ इति ख्याताया )

तुम्ब्यलावूरुमे समे ।

६ लौकी, लौआ, कदू के २ नाम—( १ ) तुम्बी ( २ ) अलावू । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि गोडुम्बायाः )

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा

७ गोमा ककड़ी के ३ नाम—( १ ) चित्रा ( २ ) गवाक्षी ( ३ ) गोडुम्बा ।

( द्वे इन्द्रवारुण्याः )

विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥१५६॥

८ इन्द्रायन के २ नाम—( १ ) विशाला ( २ ) इन्द्रवारुणी ॥१५६॥

( त्रीणि सूरणस्य )

अशोऽन्नः सूरणः कन्दः

सूरन के ३ नाम—( १ ) अशोऽन्न ( २ ) सूरण ( ३ ) कन्द ।

( द्वे गण्डीराख्यशाकभेदस्य, कटुसूरणस्य वा )

गराडीरस्तु समष्टिला ।

९ गराडीर साग वा कड़वे सूरन के २ नाम—( १ ) गराडीर ( २ ) समष्टिला ।

५ तितलौकी की बेल होती है। फूल सफेद होते हैं।

६ इसकी भी बेल तितलौकी की तरह होती है। फूल और फल भी उसी प्रकार लगते हैं।

७ यह औष्मकतु में उत्पन्न होती है।

८ इन्द्रायन अधिकतया खारी जमीन में होता है। इसके फूल काँटेदार और लाल रङ्ग के होते हैं। इसके फल पीले रङ्ग के और लम्बे पत्ते बीच-बीच में कटे हुए होते हैं। इन्द्रायन जुलाव देने के काम में आता है।

९ गराडीर नाम का साग भी होता है और यह वैद्यक निषण्ड के अनुसार कड़वे सूरन का भी नाम है।

( एकं 'करं' इति ग्यातम्य )

कलम्यी

'करं' के नाम का नाम—( १ ) कलम्यी ।  
( जीनि )

( एकं 'पोंई' इति ग्यातम्य )

उपोयिका

'पोंई' के नाम का नाम—( १ ) उपोयिका ।

( एकं 'मूली' इति ग्यातम्य )

अम्ली तु मूलफं

मूली के नाम का नाम—( १ ) मूलफं  
( पुंलिङ्ग-नपुंसक ) ।

( एकं 'हरद्व' इति ग्यातम्य )

दिनमोचिका ॥१४३॥

'हरद्व' के नाम का नाम—( १ ) दिनमो-  
( १४३ ) ॥१४३॥

( एकं 'क्युआ' इति ग्यातम्य )

क्युआ

सहेत्रयोर्था-भार्गव्यो महाऽनन्ता

'अन्' के ६ नाम—( १ ) सहे ( २ ) भार्ग-  
व्यो ( ३ ) महाऽनन्ता ( ४ ) सहे ( ५ ) अनन्ता ।

( चत्वारि ध्वेतृनां )

अथ मा मित्ता ॥१४४॥

गोलोमी शत्रयोर्था च गण्डान्ते शकुलान्तरः ।

'गण्ड' के ४ नाम—( १ ) गोलोमी  
( २ ) शत्रयोर्था ( ३ ) गण्डान्ते ( ४ ) शकुलान्तरः ॥१४४॥

( चत्वारि लुप्ताणां )

कुक्षयिन्तो मेगनामा मुन्नामुन्तकमग्निमान् ॥१४५॥

'मेग' के ४ नाम—( १ ) कुक्षयिन्तो ( २ )  
मुन्ना ( ३ ) मुन्तकमग्निमान् ( ४ ) मेगनामा  
( १-२ ) इति, ( ३ ) इति, ( ४ ) इति ।  
( १-२ ) इति, ( ३ ) इति, ( ४ ) इति ।

( ३ ) गण्डान्तरम्य )

( त्रीणि नागरमुस्तकस्य )

चूडाला चक्रलोच्चटा ।

<sup>१</sup>नागरमोथा के ३ नाम—(१) चूडाला (२) चक्रला (३) उच्चटा ।

( दश वेणोः )

वंशे त्वक्सार-कर्मार-त्वचिसार-तृणध्वजाः १६०  
शतपर्वा यवफलो वेणु-मस्कर-तेजना ।

<sup>२</sup>वॉस के १० नाम—(१) वंश (२) त्वक्सार (३) कर्मार (४) त्वचिसार (५) तृणध्वज (६) शत-पर्वन् (७) यवफल (८) वेणु (९) मस्कर (१०) तेजन ॥१६०॥

( एकं कीटादिकृतरन्ध्रगतवाताहतवेणूनाम् )

वेणव. कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः १६१

कीचों से खाए हुए छेद में घुसी हुई हवा से बजनेवाले-रन्ध्रवॉस-का नाम—( १ ) कीचक ( पुँल्लिङ्ग ) ॥१६१॥

( त्रीणि वंशादिग्रन्थे- )

ग्रन्थिर्ना पर्व-परुषी

गोंठ या पोर के ३ नाम—( १ ) ग्रन्थि (२) पर्वन् (३) परुष । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और (२-३) नपुंसक हैं ।

( त्रीणि 'रामसर' इति ख्यातस्य )

गुन्द्रस्तेजनक शरः ।

<sup>३</sup>सरपत, रामसर के ३ नाम—( १ ) गुन्द्र (२) तेजनक (३) शर ।

१ वैद्यकनिघण्टु के अनुसार नागरमोथा के नाम—

'नागरमुस्ता नादेयो वृषध्वार्ची कच्छरुहा ।

चूडाला पिण्डमुस्ता च नागरोत्था कलापिनी ॥'

बरसात में माधारण खेतों में यह उत्पन्न होता है ।

वैद्यकग्रन्थों में इसको बड़ी प्रशंसा है ।

२ वॉस गोंठों, जगलों, पर्वतों की तलेटियों में उत्पन्न होते हैं । इसमें सफेद फूल लगते हैं । इसमें से बरालोचन निकलता है ।

३ यह पानी में होता है । इसके पत्ते बहुत लम्बे ( करीब ४-५ फुट ) और एक ड्य चौड़े होते हैं । इसकी चटाई बनती है ।

( त्रीणि धमनस्य )

नडस्तु धमनः पोटगल.

<sup>४</sup>नरसल के ३ नाम—(१) नड (२) धमन (३) पोटगल ।

( त्रीणि काशस्य )

अथो काशमस्त्रियाम् ॥१६२॥

इक्षुगन्धा पोटगलः

<sup>५</sup>कास के ३ नाम—(१) काश (२) इक्षुगन्धा (३) पोटगल । इनमें ( १ला ) पुं-नपुंसक, ( २रा ) स्त्रीलिङ्ग, (३रा) पुँल्लिङ्ग है ॥१६२॥

( एकं बल्वजतृणस्य )

पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।

बल्वज तृण, बगई का नाम—(१) बल्वज । यह पुँल्लिङ्ग में बहुवचनान्त होता है ।

( द्वे इक्षोः )

रसाल इक्षुः

ईख के २ नाम—(१) रसाल (२) इक्षु । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( एकैकमिक्षुभेदानाम् )

तद्भेदा. पुण्ड्र-कान्तारकादयः ॥१६३॥

<sup>६</sup>पौडा का नाम—( १ ) पुण्ड्र ।

काले पौडा का नाम—(१) कान्तारक ॥१६३॥

( द्वे गण्डदूर्वायाः )

स्याद्वीरयं वीरतरम्

४ यह जलाशय क करीब जगलों में होता है । इसके पत्ते और आकृति ईख की तरह होती है ।

५ कास नदियों के किनारे कीचड़ में पैदा होते हैं । इसमें सफेद फूल लगते हैं । ये देखने में बहुत ही सुन्दर लगते हैं । शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं—'फूले कास सकल महि छार्ई । जिमि वर्षा कृत प्रकट बुझार्ई ।'

६ ईख के द्वादश भेदों का वर्णन भावप्रकाश में मिलता है—

'पौण्ड्रको मोरुकश्चापि वशक शतपोरक ।

कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षु सूचिपत्रकः ॥

नैपालो दोर्वपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत् ।

श्वेता जानयस्नेपां कथयामि गुणानपि ॥'



( त्रीणि नागरमुस्तकस्य )

चूडाला चक्रलोच्चटा ।

<sup>१</sup>नागरमोथा के ३ नाम—(१) चूडाला (२) चक्रला (३) उच्चटा ।

( दश वेणोः )

वंशे त्वक्सार-कर्मार-त्वचिसार-तृणध्वजाः १६०  
शतपर्वा यवफलो वेणु-मस्कर-तेजनाः ।

<sup>२</sup>वॉस के १० नाम—(१) वंश (२) त्वक्सार (३) कर्मार (४) त्वचिसार (५) तृणध्वज (६) शत-पर्वन् (७) यवफल (८) वेणु ( ९ ) मस्कर (१०) तेजन ॥१६०॥

( एकं कीटादिकृतरन्ध्रगतवाताहतवेणूनाम् )

वेणव. कीचकास्ते स्युर्ये रवनन्त्यनिलोच्छ्रिताः १६१

कीचों से खाए हुए छेद में घुसी हुई हवा से बजनेवाले-रन्ध्रवॉस-का नाम—( १ ) कीचक ( पुंलिङ्ग ) ॥१६१॥

( त्रीणि वंशादिग्रन्थेः )

ग्रन्थिर्ना पर्व-परुषो

गोंठ या पोर के ३ नाम—( १ ) ग्रन्थि (२) पर्वन् (३) परुष । इनमें (१) पुंलिङ्ग और (२-३) नपुंसक हैं ।

( त्रीणि 'रामसर' इति ख्यातस्य )

गुन्द्रस्तेजनकं शरं ।

<sup>३</sup>सरपत, रामसर के ३ नाम—( १ ) गुन्द्र (२) तेजनक (३) शर ।

१ वैथकनिघण्टु के अनुसार नागरमोथा के नाम—

'नागरमुस्ता नादेयो वृषध्वाची कच्छरुहा ।

चूडाला पिण्डमुस्ता च नागरमोथा कलापिनी ॥'

बरसात में साधारण खेतों में यह उत्पन्न होता है । वैथकग्रन्थों में इसको बड़ी प्रशंसा है ।

२ वॉस गोंठों, जगलों, पर्वतों की तलेटियों में उत्पन्न होते हैं । इसमें सफेद फूल लगते हैं । इसमें से वशलोचन निकलता है ।

३ यह पानी में होता है । इसके पत्ते बहुत लम्बे ( करोब ४-५ फुट ) और एक इंच चौड़े होते हैं । इसकी चट्टाई बनती है ।

( त्रीणि धमनस्य )

नडस्तु धमनः पोटगलः

<sup>४</sup>नरसल के ३ नाम—(१) नड (२) धमन (३) पोटगल ।

( त्रीणि काशस्य )

अथो काशमस्त्रियाम् ॥१६२॥

इक्षुगन्धा पोटगलः

<sup>५</sup>कास के ३ नाम—(१) काश (२) इक्षुगन्धा (३) पोटगल । इनमें ( १ला ) पुं-नपुंसक, ( २रा ) स्त्रीलिङ्ग, (३रा) पुंलिङ्ग है ॥१६२॥

( एकं वल्वजतृणस्य )

पुंसि भूस्त्रि तु वल्वजाः ।

वल्वज तृण, वगई का नाम—(१) वल्वज । यह पुंलिङ्ग में बहुवचनान्त होता है ।

( द्वे इक्षोः )

रसाल इक्षुः

ईख के २ नाम—(१) रसाल (२) इक्षु । ये (१-२) पुंलिङ्ग हैं ।

( एकैकमिक्षुभेदानाम् )

तद्भेदाः पुण्ड्र-कान्तारकादयः ॥१६३॥

<sup>६</sup>पौडा का नाम—( १ ) पुण्ड्र ।

काले पौडा का नाम—(१) कान्तारक ॥१६३॥

( द्वे गण्डदूर्वायाः )

स्याद्वीरणं वीरतरम्

४ यह जलाशय क करोब जगलों में होता है । इसके पत्ते और आकृति ईख की तरह होती है ।

५ कास नदियों के किनारे कीचड़ में पैदा होती है । इसमें सफेद फूल लगते हैं । ये देखने में बहुत ही सुन्दर लगते हैं । शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं—'फूले कास सकल मदि छार्ई । जिमि वर्षा कृत प्रफट बुदाई ।'

६ ईख के द्वादश भेदों का वर्णन भावप्रकाश में मिलता है—

'पौण्ड्रकी मोरुकश्चापि वशक शतपोरक ।

कान्तारस्तापमेक्षुश्च काण्डेक्षु सूचिपत्रक' ॥

नैपालो दोर्ध्वपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत् ।

इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥'

१गाडर दूब के २ नाम—( १ ) वीरण  
( २ ) वीरतर ।

( दश 'खश' इतिख्यातस्य )

मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।

अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥१६४  
लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

२खस (गाडर दूब की जड़) के १० नाम—  
( १ ) उशीर ( २ ) अभय ( ३ ) नलद ( ४ )  
सेव्य ( ५ ) अमृणाल ( ६ ) जलाशय ( ७ )  
लामज्जक ( ८ ) लघुलय ( ९ ) अवदाह ( १० )  
इष्टकापथ । इनमें ( १ ला ) पुंलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग  
में और शेष ( २-१० ) नपुंसक लिङ्ग में होते  
हैं ॥१६४॥

( एकैकं नडादिगर्मुच्छ्रयामादिकानाम् )

नडादयस्त्वृणं गर्मुच्छ्रयामाकप्रमुखा अपि ॥१६५

ये नड, ( काश ) आदि का नाम—( १ )  
तृण ( नपुंसक ) ।

तृणधान्य का नाम—( १ ) गर्मुत् ( स्त्रीलिङ्ग ) ।

„ सवा का नाम—( १ ) श्यामाक  
( पुंलिङ्ग ) ।

‘प्रमुख’ शब्द से वक्ष्यमाण ‘कुश’ आदि  
का तृणत्व ग्रहण करना । तृणधान्य में ‘नीवार’  
आदि का ग्रहण करना ॥१६५॥

( चत्वारि कुशस्य )

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रम्

३कुशा, दाभ के ४ नाम—( १ ) कुश ( २ )

१ वैषक शब्दसिन्धु में लिखा है कि ‘गण्डदूर्वेति  
वीरणम्’ । यह एक प्रकार की घास होती है । इसके चुप  
दो-दो, तीन-तीन फुट ऊँचे होते हैं । जलाशय के समीप  
लगातार कोसों तक इसके खेत होते हैं । इसके तृण  
कास की तरह लम्बे होते हैं । इसी के तृण से मकानों के  
छप्पर ढाले जाते हैं ।

२ ‘वीरणस्य तु मूल स्यादुशीर नलद च तत् ।’

अर्थात्-गाडर घास की जड़ को ‘उशीर’, ‘नलद’  
कहते हैं ।

३ वैषक शब्दसिन्धु में लिखा है—

कुथ ( ३ ) दर्भ ( ४ ) पवित्र । इनमें ( १ ) पुं-  
नपुंसक, ( २-३ ) पुंलिङ्ग, ( ४ ) नपुंसक है ।

( पट् रोहिषाख्यतृणविशेषस्य )

अथ कत्तणम् ।

पौर-सौगन्धिक-ध्याम-देवजग्धक-रौहिर्पम् १६६

४रोहिस तृण, गधेज घाम के ६ नाम—  
( १ ) कत्तण ( २ ) पौर ( ३ ) सौगन्धिक ( ४ )  
ध्याम ( ५ ) देवजग्धक ( ६ ) रौहिष ॥१६६॥

( द्वे छत्राकारजलजतृणविशेषस्य )

छत्रातिच्छत्र-पालघ्नौ

५काश्मीर के दिव्य सरोवर में उत्पन्न होने  
वाले और छत्राकार सुगन्धि तृण के २ नाम—  
( १ ) छत्रातिच्छत्र ( २ ) पालघ्न । ये ( १-२ )  
पुंलिङ्ग हैं ।

( द्वे भूतृणस्य )

मालातृणक-भूस्तृणे ।

६सुगन्धित भूतृण के २ नाम—( १ ) माला-  
तृणक ( २ ) भूस्तृण । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

‘कुशो द्विविध हर्षदीर्घमेदेन । तयोर्दीर्घपत्रकुश एव  
सितदर्भ उच्यते । स एवाधिकगुणः । हर्षोऽपि प्रायेण  
सितदर्भतुल्यगुणः । ‘दर्भौ द्वौ च गुणतुल्यो तथापि च  
सिताधिक । यदि श्वेतक्रशामावे त्वपर योजयेद्भिपक् ॥’  
यद्यपि-कुशा और दाभ-दोनों एक ही जाति के तृण हैं  
तथापि कुशा अधिक गुण वाला है । यह रेतीली जमीन,  
झाड़ों और जगलों में पैदा होती है । इसके पत्ते काम ही  
की तरह होते हैं ।

तृणगणपरिगणन—

‘कुश काशश्च दर्भश्च कत्तृण भूतृण तथा ।

शेतदूर्वा नीलदूर्वा गण्डदूर्वेति वीरणम् ॥’

४ मालवा और राजपूताना के जगलों में रोहिस तृण  
बहुत होते हैं । इसके पत्ते छोटे और हरे होते हैं जो देखने  
में बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं । इसके प्रत्येक अङ्ग से  
सुगन्धि निकलती रहती है ।

५ वैषक शब्दसिन्धु में लिखा है—

‘छत्रातिच्छत्र’—स जलज, छत्राकारश्च भवति,  
काश्मीरस्थदिव्यसरसि दृश्यते ।

६ ये अधिकतया बागों एव उपवनों में उत्पन्न होते हैं  
इसके बीज बहुत-छोटे छोटे होते हैं ।

( द्वे कोमलतृणस्य )

शष्पं बालतृणम्

मुलायम और नये तृण के २ नाम—( १ )

शष्प ( २ ) बालतृण ।

( द्वे गवादीनां भक्ष्यतृणस्य )

घासो यवसम्

घास के २ नाम—( १ ) घास ( २ ) यवस ।

इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग और ( २ ) नपुंसक है ।

( द्वे तृणमात्रस्य )

तृणमर्जुनम् ॥१६९॥

सर्व प्रकार के तृणों के २ नाम—( १ ) तृण

( २ ) अर्जुन ॥१६७॥

( एकं तृणसमुदायस्य )

तृणानां संहतिस्तृण्या

<sup>१</sup>तृणों के समूह या घूर का नाम—( १ ) तृण्या

( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( एकं नडसमुदायस्य )

नड्या तु नडसंहतिः ।

नरकुल की ढेर का नाम—( १ ) नड्या

( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( द्वे तालस्य )

तृणराजाह्वयस्तालः

<sup>१</sup>ताड़ के २ नाम—( १ ) तृणराज ( २ ) ताल ।

( द्वे नारिकेलस्य )

नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥१६८॥

<sup>२</sup>नारियल के २ नाम—( १ ) नालिकेर

<sup>१</sup> वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार ताड़ के नाम—

‘तालस्तु लेख्यपत्र स्यात्तृणराजो महोन्नत ।’

ताड़ के पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इसके पत्ते खजूर की अन्नी की तरह कौटले और चार-चार फुट लम्बे चौड़े होते हैं। पेड़ के रस को ताड़ी कहते हैं। ताड़के पत्ते की महत्ता अनेक ग्रन्थों में मिलती है। इसके सम्बन्ध में अधिक जानने के लिए ‘मनुष्यवर्ग’ के अन्तिम श्लोक की टिप्पणी देखिए। प्राचीन काल में ताड़ पत्रों पर ग्रन्थ लिखे जाते थे ।

<sup>२</sup> वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार नारियल के नाम—

( २ ) लाङ्गली । इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग, ( २ रा ) स्त्रीलिङ्ग है । यह इन्नन्त पुँल्लिङ्ग ( लाङ्गलिन् ) में भी होता है ॥१६८॥

( पञ्च पूगवृक्षस्य )

घोरटा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरः

<sup>३</sup>सुपारी के पेड़ के ५ नाम—( १ ) घोरटा

( २ ) पूग ( ३ ) क्रमुक ( ४ ) गुवाक ( ५ )

खपुर । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग, ( २-५ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( एकं क्रमुकफलस्य )

अस्य तु ।

फलमुद्वेगम्

<sup>४</sup>सुपारी के फल का नाम—( १ ) उद्वेग ।

( एकैकं तृणद्रुमभेदानाम् )

पते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥१६९॥

खजूरः केतकी ताली खजूरी च तृणद्रुमाः ।

हिन्ताल वृक्ष के सहित ये तीन ( ताल-नारियल-सुपारी ) वृक्ष, खजूर, केतकी, ताली और खजूरी को मिलाकर कुल ये ८ तृणवृक्ष कहलाते हैं ।

<sup>५</sup>हिन्ताल का नाम—( १ ) हिन्ताल ( पुं० ) ।

“नारिकेलो इदमलो लाङ्गली कूर्चशीर्षकः ।

जुह्व स्कन्धफलश्चैव तृणराज सदाफल ॥”

नारियल नदी या समुद्र के नजदीक बहुत होते हैं। इसके पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इनमें शाखाएँ नहीं होतीं। ऊपर के हिस्से में खजूर की तरह पत्ते होते हैं जिनके मध्य में नारियल पैदा होते हैं। नारियल के फल की आवश्यकता प्रत्येक मादलिक कृत्यों में पड़ती है ।

३ वागों में सुपारी के बड़े-बड़े पेड़ होते हैं। इसके पेड़ खम्भा की तरह सीधे ऊपर की ओर चले जाते हैं । इसके पत्ते नारियल के पत्तों की तरह बड़े होते हैं ।

४ इसके ऊपर कुछ लम्बाई लिए गोल-गोल फल लगते हैं जिनके छिलने से भीतर से सुपारी निकलती है ।

‘फल पूगीफल प्रोक्तमुद्वेग च तदोरितम् ।’

५ यह ताड़ के पेड़ की एक जाति होती है। इसके पेड़ बहुत ही बड़े-बड़े और पत्ते बहुत ही लम्बे चौड़े होते हैं। यह दक्षिण देश में प्रसिद्ध है ।

१ खजूर का नाम—( १ ) खर्जूर ( पुं० ) ।  
 केतकी के पेड़ का नाम—( १ ) केतकी  
 ( स्त्रीलिङ्ग ), ( पुंलिङ्ग मे केतक ) ।  
 छोटे ताड़ का नाम—( १ ) ताली ( स्त्रीलिङ्ग ) ।  
 २ छुहारा का नाम—( १ ) खर्जूरी ( स्त्रीलिङ्ग ) ।  
 ( इति वनौषधिवर्ग ४ )

### अथ सिंहादिवर्गः ५

( पट् सिंहस्य )

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी<sup>३</sup> हरिः ।

शेर के ६ नाम—( १ ) सिंह ( २ ) मृगेन्द्र  
 ( ३ ) पञ्चास्य ( ४ ) हर्यक्ष ( ५ ) केसरिन् ( ६ )  
 हरि ।

( त्रीणि व्याघ्रस्य )

शार्दूल-द्वीपिनौ व्याघ्रे

४ बाघ के ३ नाम—( १ ) शार्दूल ( २ )  
 द्वीपिन् ( ३ ) व्याघ्र ।

१ खजूर के पेड़ और छुहारे के पेड़ सीधे ऊपर की  
 ओर बढ़ते हैं । इनके पत्ते लम्बे होते हैं । इनमें शाखाएँ  
 नहीं होतीं । ऊपर की ओर फल लगते हैं ।

२ निघण्टु ग्रन्थों में कहा गया है कि—

‘खर्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ।

जायते पश्चिमे देशे सा छोहारेति कोर्यते ॥’

अर्थात्—खर्जूरी और गोस्तनाकारा—ये दो नाम  
 छुहारा के हैं । इसकी आकृति गौ के थन की तरह होती  
 है । यह दूसरे टापू से भारत में आया है और पश्चिम देश  
 में होता है ।

३ अन्य पुस्तकों में ये ८ नाम शेर के अधिक  
 मिलते हैं—

कण्ठीरवो मृगरिपुमृगदृष्टिर्मुगाशनः ।

पुण्डरीकः पञ्चनख-चित्रकाय-मृगाद्विपः ॥

शेर के और ८ नाम—( १ ) कण्ठीरव ( २ ) मृग-  
 रिपु ( ३ ) मृगदृष्टि ( ४ ) मुगाशन ( ५ ) पुण्डरीक  
 ( ६ ) पञ्चनख ( ७ ) चित्रकाय ( ८ ) मृगाद्विप ।

४ बाघ भारतीय जंगलों में पाया जाता है । परन्तु  
 इस जाति के सबसे बड़े और बलवान् जन्तु उत्पन्न करने  
 का गौरव बंगाल प्रान्त को है । इसके शरीर का रंग

( द्वे कुक्कुराकृतेः कृष्णरेखाचित्रितमृगविशेषस्य )  
 तरक्षुस्तु मृगादनः ॥१॥

५ चीता, लकड़ बग्घा, तेंदुआ के २ नाम—

( १ ) तरक्षु ( २ ) मृगादन ॥ १ ॥

( द्वादश सूकरस्य )

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः ।  
 दंष्ट्री घोणि स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥

६ सूअर के १२ नाम—( १ ) वराह ( २ )  
 सूकर ( ३ ) घृष्टि ( ४ ) कोल ( ५ ) पोत्रिन्  
 ( ६ ) किरि [ किर ] ( ७ ) किटि ( ८ ) दंष्ट्रिन्  
 ( ९ ) घोणिन् ( १० ) स्तब्धरोमन् ( ११ )  
 क्रोड ( १२ ) भूदार । ये ( १-१२ ) पुंलिङ्ग  
 हैं ॥ २ ॥

( नव वानरस्य )

कपि-प्लवङ्ग-प्लवग-शाखामृग-वलीमुखाः ।

मर्कटो वानरः कीशो वनौकाः

बन्दर के ६ नाम—( १ ) कपि ( २ )  
 प्लवङ्ग ( ३ ) प्लवग ( ४ ) शाखामृग ( ५ )  
 वलीमुख ( ६ ) मर्कट ( ७ ) वानर ( ८ ) कीश  
 ( ९ ) वनौकस् ।

( चत्वारि भल्लुकस्य )

अथ भल्लुके ॥३॥

ऋक्षाच्छभल्ल—भाल्लुकाः

भाल्लू, रीछ के ४ नाम—( १ ) भल्लुक  
 ( २ ) ऋक्ष ( ३ ) अच्छभल्ल ( ४ ) भल्लुक ॥३॥

हलका पीला होता है जिस पर बादामी या काली धारियाँ  
 होती हैं । भारतवर्ष में ये तीन प्रकार के होते हैं—( १ )  
 लोदिया बाघ ( २ ) ऊँदिया बाघ और ( ३ ) नर-  
 भोजी बाघ ।

५ एक कवि चीता का कैसा स्वभाविक वर्णन करता है—  
 लांगूलेनामिहत्य क्षितितलमसकृद्धारयन्नप्रपद्भ्या—

मात्यन्येवावलीय द्रुतमथ गगन प्रोत्पतन्निक्क्रमेय ।

सूर्जदधुङ्कारघोष प्रतिदिशमखिलान्द्रावयन्नेय जन्तु—

न्कोपाविष्ट प्रविष्ट प्रतिवनमरुणोच्छूनचक्षुस्तरक्षु ॥

६ सूअर के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन ‘जन्तु जगद्’  
 ( पृष्ठ १७७ १८४ ) में पढ़िए ।



( त्रीणि गण्डशृङ्गस्य )

गरुडके खड्ग-खड्गिनौ ।

गैडा के ३ नाम—( १ ) गरुडक ( २ ) खड्ग ( ३ ) खड्गिन ।

( पञ्च महिषस्य )

लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासर-सैरिभाः ॥४॥

भैसा के ५ नाम—( १ ) लुलाय [ लुलाप ] ( २ ) महिष ( ३ ) वाहद्विषत् ( ४ ) कासर ( ५ ) सैरिभ ॥ ४ ॥

( दश जम्बुकस्य )

स्त्रियां शिवा भूरिमाय-गोमायु-मृगधूर्तकाः ।  
शृगाल-वञ्चक-क्रोष्टु-फेरु-फेरव-जम्बुकाः ॥५॥

सियार, गीदड़ के १० नाम—( १ ) शिवा ( २ ) भूरिमाय ( ३ ) गोमायु ( ४ ) मृगधूर्तक ( ५ ) शृगाल ( ६ ) वञ्चक ( ७ ) क्रोष्टु ( ८ ) फेरु ( ९ ) फेरव ( १० ) जम्बुक । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग, ( २-१० ) पुल्लिङ्ग हैं ॥ ५ ॥

( पञ्च विडालस्य )

ओतुर्विडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।

विलार के ५ नाम—( १ ) ओतु ( २ ) विडाल ( ३ ) मार्जार ( ४ ) वृषदंशक ( ५ ) आखुभुक् । ये ( १-५ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि गोधिकात्मजस्य )

त्रयो गौधेर-गौधार-गौधेया गोधिकात्मजे ॥६॥

गोह के वच्चे के ३ नाम—( १ ) गौधेर ( २ ) गौधार ( ३ ) गौधेय ॥ ६ ॥

१ भारतवर्ष में दो जाति के गँड़े पाये जाते हैं । एक बृहत्काय जाति का होता है जो हिमालय की तराई में नैपाल से भूटान तक पाया जाता है । आसाम में भी होते हैं और प्रायः घने जंगलों में दलदलों के समीप वास किया करते हैं । दूसरा सुद्रकाय जाति का होता है । यह बंगाल प्रान्त में सुन्दर वन में अधिकता से पाया जाता है । इसकी नाक की हड्डी बड़ी मजबूत होती है और उस पर एक पैना साँग होता है जो चमड़े और वालों से ढका रहता है । गंडे के विषय में विस्तृत वर्णन जन्तुजगत् नामक ग्रन्थ ( पृष्ठ १४१-१५४ ) में पढ़िए ।

२ नर साँप और मादा गोह के संयोग से गोधिका-

( द्वे शल्यस्य )

श्वाविच्छु शल्यः

साही के २ नाम—( १ ) श्वाविध् ( २ ) शल्य ।

( त्रीणि शल्यलोम्नः )

तल्लोम्नि शललो शललं शलम् ।

साही के रोएँ के ३ नाम—( १ ) शलली ( २ ) शलल ( ३ ) शल । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग, ( २-३ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे वातमृगस्य )

वातप्रमीर्वातमृगः

दौड़ने में हवा से वात करनेवाले मृग के २ नाम—( १ ) वातप्रमी ( २ ) वातमृग । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि वृकस्य )

कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥७॥

भेड़िया, हुँदार के ३ नाम—( १ ) कोक ( २ ) ईहामृग ( ३ ) वृक ॥ ७ ॥

( पञ्च हरिणस्य )

मृगे कुरङ्ग-वातायु-हरिणाऽजिनयोनयः ।

हरिन के ५ नाम—( १ ) मृग ( २ ) कुरङ्ग ( ३ ) वातायु ( ४ ) हरिण ( ५ ) अजिनयोनि । ये ( १-५ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( एक हरिणीचर्माद्यस्य )

ऐरोयमेण्याश्चर्माद्यम्

रमज पदा होता है । गोह द्विपक्षी की जाति का एक जगली जन्तु होता है । यह आकार में नेवले से कुछ बड़ा होता है ।

३ यह एक प्रकार का जानवर होता है और हिन्दुस्तान में सब जगह पाया जाता है । यह खरगोश के आकार का होता है । इसके सारे शरीर पर काँटे होते हैं जो साही के काँटे के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हैं । इसके काँटे के सम्बन्ध में किम्बदन्ती भी सुनी जाती है । जब साही अपने नुकीले काँटे खड़े कर लेती है तो माँसभोजी जन्तु सहज ही उस पर मुँह मारने का साहस नहीं करते । यह प्रायः नदियों और तालाबों के डालू किनारों में माँस खोद लिया करती है ।

काली हरिनी के चमड़े ( मांस आदि ) का नाम—( १ ) ऐणोय ( पुं०-स्त्री-नपुंसक ) ।

( एकं हरिणचर्मार्थस्य )

एणस्यैणम्

काले हरिन के चमड़े, मांस आदि का नाम—( १ ) ऐण ( पुं०-स्त्री-नपुंसक ) ।

उभे त्रिषु ॥ ८॥

ये दोनों ( ऐणोय, ऐण ) तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥ ८ ॥

( हरिणभेदानां पृथक्पृथगेकैकम् )

कदली कन्दली चीनश्चमूरु-प्रियकावपि ।

समूरुश्चेति हरिणा, अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

चिकारा, चौसिंगा हरिणों किस्म के ६ नाम—( १ ) कदलिन् ( २ ) कन्दलिन् ( ३ ) चीन ( ४ ) चमूरु ( ५ ) प्रियक ( ६ ) समूरु । ये ( १-६ ) पुल्लिङ्ग हैं । इनमें कोई-कोई इन्त ( १-२ ) को लीपन्त-स्त्रीलिङ्ग ( कदली, कन्दली ), कहते हैं । ये छ और आगे के कृष्णसार आदि 'अजिनयोनि' कहलाते हैं क्योंकि इनकी मृगछाला अच्छी होती है ॥ ९ ॥

( मृगभेदानां पृथक्पृथगेकैकम् )

कृष्णसार-रुह-न्यंकु-रंकु-शम्बर-रौहिषाः ।

गोकर्ण-पृषतैर्गर्ह्य-रोहिताश्वमरो मृगाः ॥ १० ॥

१ लाल वारहसिंगा, साँभर, चीतल, माहा, काश्मीरी, पारा, काकुर, कस्तूरा आदि वारहसिंगों के किस्म के नाम—( १ ) कृष्णसार ( २ ) रुह ( ३ ) न्यंकु ( ४ ) रंकु ( ५ ) शम्बर ( ६ ) रौहिष ( ७ ) गोकर्ण ( ८ ) पृषत ( ९ ) एण ( १० ) ऋश्य ( ११ )

१ अनृचो माणवो ज्ञेय एणः कृष्णमृगः स्मृत ।

रुहगौरमुखः प्रोक्त, शम्बरः शोण उच्यते ॥

रोहित-लाल वारहसिंगा का रंग हलकी सुर्खी लिए यदामी होता है ।

शम्बर-साँभर वारहसिंगा भारतीय वारहसिंगों में सुप्रसिद्ध है ।

गोकर्ण-गोहन वारहसिंगा हिमालय की तराई में पाया जाता है ।

रोहित ( १२ ) चमर । ये ( १-१२ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥ १० ॥

( मृगभेदानामेकैकम् )

गन्धर्वः शरभो रामः स्मररो गवयः शशः ।

इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

मृगों के भेद—( १ ) गन्धर्व ( २ ) शरभ ( ३ )

राम ( ४ ) स्मर ( ५ ) गवय ( ६ ) शश । इत्यादि

( गन्धर्वादि ) जो यहाँ कहे गये हैं, और जो

'सिंह' से लेकर 'चमर' शब्द पर्यन्त पहले कहे

गये हैं, और जो 'गो-मेघ-हस्त्यश्व' आदि अब कहे

जायेंगे वे पशुजाति के कहलाते हैं अर्थात् उनका

सामूहिक नाम—( १ ) पशु ( पुल्लिङ्ग ) ॥ ११ ॥

( त्रीणि भूपकस्य )

उन्दुरुर्मूपकोऽप्याखुः २

चूहे के ३ नाम—( १ ) उन्दुरु ( २ ) भूपक

( ३ ) आखु । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे बालमूपिकायाः )

गिरिका बालमूपिका ।

चूहिया के २ नाम—( १ ) गिरिका ( २ ) बाल-मूपिका ।

( द्वे सरटस्य )

सरटः कृकलासः स्यात्

३ गिरिगिट के २ नाम—( १ ) सरट ( २ ) कृक-लास ।

( द्वे गृहगोधिकायाः )

मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

छिपकली के २ नाम—( १ ) मुसली ( २ ) गृह-गोधिका ॥ १२ ॥

२ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक पाया जाता है—

( पञ्च नामानि भूपकस्य )

अधोगन्ता तु खनको वृकः पुन्ध्वज उन्दुरः ।

चूहे के और ५ नाम—( १ ) अधोगन्तु ( २ ) खनक

( ३ ) वृक ( ४ ) पुन्ध्वज ( ५ ) उन्दुर ।

३ गिरिगिट छिपकली को जाति का प्राय एक बालिशत

लम्बा जन्तु होता है । यह सूर्य की किरणों की सहायता

से अपने शरीर के अनेक रंग बदल सकता है ।

( चत्वारि ऊर्णनाभस्य )

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभ-मर्कटकाः समाः ।

मकड़ी के ४ नाम—( १ ) लूता ( २ ) तन्तु-  
वाय ( ३ ) ऊर्णनाभ ( ४ ) मर्कटक । इनमें ( १ )  
स्त्रीलिङ्ग, और ( २-४ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे क्षुद्रकीटमात्रस्य )

नीलंगुस्तु कृमिः

छोटे कीड़े के २ नाम—( १ ) नीलङ्गु ( २ )  
कृमि । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे कर्णजलौकाया )

कर्णजलौका शतपद्युभे ॥१३॥

कनखजूरा के २ नाम—( १ ) कर्णजलौ-  
कस् ( २ ) शतपदी । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१३॥

( द्वे ऊर्णादिभक्षककृमिविशेषस्य )

वृश्चिकः शूककीटः स्यात्

ऊन और रेशमी कपड़े को खा जानेवाले  
कीड़े के २ नाम—( १ ) वृश्चिक ( २ ) शूककीट ।

( त्रीणि वृश्चिकस्य )

अलि-द्रुणौ तु वृश्चिके ।

विच्छू के ३ नाम—( १ ) अलि ( २ ) द्रुण  
( ३ ) वृश्चिक । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं । इनमें  
( १ ला ) इदन्त इन्नन्त ( अलिन् ) भी है ।

( त्रीणि कपोतस्य )

पारावतः कलरव कपोत

कवूतर के ३ नाम—( १ ) पारावत ( २ )  
कलरव ( ३ ) कपोत ।

( त्रीणि श्येनस्य )

अथ शशादनः ॥१४॥

पत्री श्येनः

वाज पक्षी के ३ नाम—( १ ) शशादन  
( २ ) पत्रिन् ( ३ ) श्येन । ये ( १-३ )  
पुल्लिङ्ग हैं ॥१४॥

( त्रीणि घूकस्य )

उलूके तु वायसाराति-<sup>१</sup>पेचकौ ।

<sup>१</sup> अन्य पुस्तकों में उलू के ये नाम और मिलते हैं—  
दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशादन ।

उलू के ३ नाम—( १ ) उलूक ( २ )

वायसाराति ( ३ ) पेचक । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे भरद्वाजपक्षिणः )

व्याघ्राट् स्याद्भरद्वाजः

भरदूल, लवा चिड़िया के २ नाम—( १ )  
व्याघ्राट् ( २ ) भरद्वाज ।

( द्वे खञ्जनस्य )

खञ्जरीटस्तु खञ्जन ॥१५॥

<sup>२</sup>खञ्जन, खेड़रैच के २ नाम—( १ )

खञ्जरीट ( २ ) खञ्जन ॥१५॥

अर्धोद—उलू के और ५ नाम—( १ ) दिवान्ध  
( २ ) कौशिक ( ३ ) घूक ( ४ ) दिवाभीत ( ५ )  
निशादन ।

‘वायसाराति’ की कथा जानने के लिए पञ्चतन्त्र का  
‘काकोलूकीय’ तन्त्र पढ़िए ।

२ खञ्जन पक्षी का दर्शन करना कल्याणदायक  
माना गया है । इस पर कवि-कुल-कुमुद-कलाधर कालि-  
दास कहते हैं—

‘ये ये खञ्जनमेकमेव कमले पश्यन्ति दैवात्कचि-

त्ते सर्वे कवयो भवन्ति सुतरा प्रख्यातभूमीभुज ।

त्वद्वक्त्राम्भुजनेत्रखञ्जनयुग पश्यन्ति ये जना-

स्ते ते मन्मथवाणजालविकला मुग्धे । किमत्यद्भुतम् ॥

इस श्लोक का पूर्ण आशय समझने के लिए ‘मास्टर’  
मणिमाला सीरीज में प्रकाशित ‘शृङ्गारतिलक’ नामक  
ग्रन्थ देखिए ।

इमकी अनेक जातियाँ एशिया, युरोप और अफ्रीका  
में पायी जाती हैं । इनमें से भारतवर्ष का खञ्जन मुख्य  
और असली माना जाता है । भारत में हिमालय की  
तराई, आसाम और ब्रह्मदेश में अधिकता से पाया जाता है ।  
इसका रंग बीच-बीच में कहीं सफेद, कहीं काला होता  
है । यह प्रायः एक वालिशत लम्बा होता है और इसकी  
चोंच लाल और दुम हलकी काली भाई लिए सफेद और  
बहुत सुन्दर होती है । यह प्रायः निर्जनस्थानों में और  
अप्रेता ही रहता है और जाड़े के आरम्भ में पहाड़ों से  
नीचे उतर आता है । लोगों का विश्वास है कि यह पाला  
नहीं जा सकता, और जब इसके सिर पर चोटी निक-  
लती है तब यह क्षिप जाता है और किसीकी दिशाई नहीं  
देता । यह पक्षी बहुत चंचल होता है, इसीलिए कवि  
लोग इसमें नेत्रों की उपमा देने हैं । जैसा कि ऊपरवाले  
श्लोक में कविसम्राट् कालिदास ने कहा है ।

( द्वे कङ्कस्य )

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यात्

सफेद चील के २ नाम—( १ ) लोहपृष्ठ  
( २ ) कङ्क ।

( द्वे चापस्य )

अथ चापः किकीदिविः ।

नीलकण्ठ के २ नाम—( १ ) चाप ( २ )  
किकीदिवि । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि भृङ्गस्य )

कलिङ्ग-भृङ्ग-धूम्याटाः

भुजङ्गा पक्षी के ३ नाम—( १ ) कलिङ्ग  
( २ ) भृङ्ग ( ३ ) धूम्याट ।

( द्वे दार्वीघाटस्य )

अथ स्याच्छ्रुतपत्रकः ॥१६॥

दार्वीघाटः

कठफोरवा पक्षी के २ नाम—( १ ) शत-  
पत्रक ( २ ) दार्वीघाट ॥१६॥

( त्रीणि चातकस्य )

अथ सारङ्गस्तोककश्चातकः समाः ।

पपीहा के ३ नाम—( १ ) सारङ्ग ( २ )  
तोकक [ स्तोकक ] ( ३ ) चातक । ये ( १-३ )  
पुल्लिङ्ग हैं ।

( चत्वारि कुक्कुटस्य )

कुक्कुटाकुस्ताम्रचूड कुक्कुटश्चरणायुधः ॥१७॥

मुर्गा के ४ नाम—( १ ) कुक्कुटाकु ( २ )  
ताम्रचूड ( ३ ) कुक्कुट ( ४ ) चरणायुध ॥१७॥

१ देश भेद से पपीहा कई रंग, रूप और आकार का पाया जाता है । उत्तर भारत में इसका डील प्रायः श्यामा पक्षी के बराबर और रंग हलका काला या मटमैला होता है । दक्षिण भारत का पपीहा डील में इससे कुछ बड़ा और रंग में चित्रविचित्र होता है । पपीहा पेड़ के नीचे प्रायः बहुत कम उतरता है । इसकी बोली 'पी कहीं' बहुत रसमय होती है और उसमें कई स्वरों का समावेश रहता है । यह प्रवाद है कि यह केवल स्वाती नक्षत्र में होने-वाली वर्षा का ही जल पीता है ।

२ जिन्होंने मुर्गों की लड़ाई देखी होगी उन्हें अथो-लिखित कविता में बड़ा आनन्द मिलेगा—

( द्वे चटकस्य )

चटकः कलविङ्कः स्यात्

गौरा पक्षी के २ नाम—( १ ) चटक ( २ )  
कलविङ्क ।

( एकं चटकस्त्रियाः )

तस्य स्त्री चटका

गौरैया का नाम—( १ ) चटका ।

( एकं चटकपुमपत्यस्य )

तयोः ।

पुमपत्ये चाटकैरः

उन दोनों ( गौरा-गौरैया ) के पुरुष बच्चे  
का नाम—( १ ) चाटकैर ।

( एकं चटकस्त्र्यपत्यस्य )

स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥१८॥

उन दोनों ( गौरा-गौरैया ) की स्त्री बच्ची का  
नाम—( १ ) चटका ॥१८॥

( द्वे अशुभवादिपक्षिभेदस्य )

कर्करेडुः करेडुः स्यात्

कौङ्किला के २ नाम—( १ ) कर्करेडु ( २ )  
करेडु । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे 'क्रकर' इतिख्यातस्य )

कृकण-क्रकरौ समौ ।

करया पक्षी के २ नाम—( १ ) कृकण ( २ )  
क्रकर । इन दोनों का समान लिङ्ग ( पुल्लिङ्ग ) है ।

( चत्वारि कोकिलस्य )

वनप्रियः परभृतः कोकिलः । पक इत्यपि ॥१९॥

'न्यधच्चलचन्नुचुम्बनचलच्वुडाग्रमुग्रपत—

चक्राकारकालकेसरमदास्फारस्फुरत्कन्धरम् ।

वारम्भारमुदङ्घ्रिचण्डलघनअश्वत्थखल्लुण्णयो—

वृष्टा कुक्कुटयोर्द्वयो स्थितिरिति क्रूरक्रम युध्यते ॥'

३ नगर के प्रायः सभी मकानों में गौरा-गौरैया पक्षी अपना घोंसला बनाते हैं । इनके स्वभाव से सभी लोग परिचित होते हैं । ये गरमी के दिनों में हिमालय की ओर चले जाते हैं और मादा वहाँ चट्टानों के नीचे या पेड़ों पर अण्डे देती है ।

४ कौङ्किला एक प्रकार की चिड़िया होती है जो मड़लियों को पकड़-पकड़ कर खा जाती है ।

१ कोयल पक्षी के ४ नाम—( १ ) वनप्रिय  
( २ ) परभृत ( ३ ) कोकिल ( ४ ) पिक ॥१६॥

( दश काकस्य )

काके तु करटाऽरिष्ट-बलिपुष्ट-सकृत्प्रजाः ।

ध्वाक्षात्मघोष-परभृद्वलिभुग्वायसा<sup>२</sup> अपि २०

कौआ के १० नाम—( १ ) काक ( २ )  
करट ( ३ ) अरिष्ट ( ४ ) बलिपुष्ट ( ५ ) सकृत्प्रज  
( ६ ) ध्वाक्ष ( ७ ) आत्मघोष ( ८ ) परभृत ( ९ ) बलि-  
भुज् ( १० ) वायस । ये ( १-१० ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥२०॥

( द्वे द्रोणकाकस्य )

द्रोणकाकस्तु काकोलः

डोम कौआ के २ नाम—( १ ) द्रोणकाक  
( २ ) काकोल ।

( द्वे जलकाकस्य, श्यामकाकस्य वा )

दात्यूहः कालकण्ठकः ।

१ कोयल अपने अण्डे को कौए के घोंसले में रख  
आती है । इस तरह कौए द्वारा लालन पालन कराती  
है । इसी को लक्ष्य कर अभिज्ञानशाकुन्तल ( पंचम अङ्क )  
में राजा दुष्यन्त ने कहा है । कोयल को 'वसन्तदूत' कहते  
हैं यह वसन्त के आगमन पर ही बोलती है, अन्यथा  
कवि के शब्दों में—

'काक कृष्ण' पिक, कृष्ण, को भेद पिक-काकयोः ।

वसन्तसमये प्राप्ते काक' काक पिक पिक ॥'

इसकी आँखें लाल, चोंच कुछ भुकी हुई और दुम  
चौड़ी तथा गोल होती है ।

२ अन्य पुस्तकों में कौए के नाम इतने अधिक  
मिलते हैं—

स एव च चिरञ्जीवी चैकदष्टिश्च मौकुलिः ।

कौआ के ३ और नाम—( १ ) चिरञ्जीविन् ( २ )  
एकदृष्टि ( ३ ) मौकुलि ।

माधारण कौआ आकार में डेढ़ बालिशत होता है । यह  
वैशाख से भादों तक अण्डे देता है । पक्षियों में कौआ  
धूर्त माना गया है । यह भी कहावत प्रसिद्ध है कि क्या  
कौआ कभी हँस हो सकता है ?—

काकस्य गात्र यदि काष्णस्य, माणिक्यरत्न यदि चञ्चुदरो ।  
एकैकपक्षे ग्रथित मणीनां तथापि काको न तु राजहसः ॥

दूसरा डोम कौआ आकार में बड़ा और प्रायः एक  
हाथ लम्बा होता है । यह पूस से फागुन तक अण्डे देता है ।

जल कौआ या काला कौआ के २ नाम—  
( १ ) दात्यूह ( २ ) कालकण्ठक ।

( द्वे चिल्लस्य )

आतायि-चिल्लौ

३ चील के २ नाम—( १ ) आतायिन् ( २ )  
चिल्ल । ये ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे गृध्रस्य )

दाक्षाय्य-गृध्रौ

गिद्ध के २ नाम—( १ ) दाक्षाय्य ( २ )  
गृध्र ।

( द्वे शुकस्य )

कीर-शुकौ

तोता, सुग्गा के २ नाम—( १ ) कीर  
( २ ) शुक ।

समौ ॥ २१ ॥

( 'आतायि-चिल्लौ', 'दाक्षाय्य-गृध्रौ', 'कीर-  
शुकौ' ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ २१ ॥

( द्वे क्रौञ्चस्य )

क्रुङ् क्रौञ्चः

४ ढेक, करालपक्षी के २ नाम—( १ ) क्रुङ्  
( २ ) क्रौञ्च ।

( द्वे बकस्य )

अथ बकः कङ्कः

बगला के २ नाम—( १ ) बक ( २ ) कङ्क ।

( द्वे सारसस्य )

पुष्कराहस्तु सारसः ।

सारस के २ नाम—( १ ) पुष्कराह ( २ )  
सारस ।

३ यह 'ची' 'ची' बहुत जोर से करती है, इसलिये इसे  
चील कहते हैं ।

४ यह एक प्रकार का पक्षी है जो बगला जाति का  
होता है । इसी क्रौञ्च को एक व्याध ने मारा था जिससे  
दुःखित होकर महर्षि वाल्मीकि के मुँह से अचानक यह  
श्लोक निकल गया ।

'मा निपाद प्रतिष्ठां त्वमगम' शारवती' समाः ।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमबधी, काममोहितम् ॥'

( चत्वारि चक्रवाकस्य )

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥२२॥

चक्रवा के ४ नाम—( १ ) कोक ( २ )

चक्र ( ३ ) चक्रवाक ( ४ ) रथाङ्ग ॥ २२ ॥

( द्वे कादम्बस्य )

कादम्बः कलहंसः स्यात्

वत्सल के २ नाम—( १ ) कादम्ब ( २ )

कलहंस ।

( द्वे कुररस्य )

उत्क्रोश-कुररौ समौ ।

कुररी के २ नाम—( १ ) उत्क्रोश ( २ )

कुरर । ये ( १-२ ) पुंलिङ्ग हैं ।

( चत्वारि हंसस्य )

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः ॥२३॥

हंस के ४ नाम—( १ ) हंस ( २ ) श्वेत-

गरुत् ( ३ ) चक्राङ्ग ( ४ ) मानसौकस् ( बहुवचन

की विवक्षा में बहुवचनान्त दिए गये हैं ) ॥२३॥

( एकं राजहंसस्य )

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः ।

सफेद शरीरवाले, लाल चोंच और लाल

पैर वाले हंस का नाम—( १ ) राजहंस ।

( एकमिषदधून्नचञ्चुचरणयुतसितहंसस्य )

मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते

जिस हंस का शरीर सफेद, चोंच और

चरण का रंग मटमैला हो उसका नाम—( १ )

मल्लिकाक्ष ( या मल्लिकाक्ष्य ) ।

( एकं कृष्णचञ्चुचरणयुतसितहंसस्य )

धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥

१ जटायु ने श्रीरामचन्द्रजी से कहा था कि रावण

सीता को 'लै दच्छिन दिसि गयो गुसाई ।'

विलपति अति कुररी की नाई ॥'

२ यह एक प्रकार का हंस है जिसे सोना पक्षी भी कहते हैं। यह प्रायः भुण्ड बाँध कर उड़ता है और भीलों के किनारे रहता है। इसके अनेक भेद हैं। इसके पैर और चोंच लाल रंग की होती है। यह अगहन-रूस में उत्तरीय भारत में उत्तर के शीत प्रदेशों से आता है।

जिस हंस का शरीर सफेद, चोंच और चरण का रंग काला हो उसका नाम—( १ ) धार्तराष्ट्र ॥ २४ ॥

( त्रीणि 'आढी' इति ख्यातायाः )

शरारिराटिराडिश्च

आढी, तीतर के ३ नाम—( १ ) शरारि ( २ ) आटि ( ३ ) आडि । ये ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे वकस्त्रियाः, वकमेदस्य वा )

बलाका विसकरिठका ।

अबगला की स्त्री वा दूसरी जाति के बगले

२ नाम—( १ ) बलाका ( २ ) विसकरिठका ।

( एकं हंसस्त्रियाः )

हंसस्य योषिद्वरटा

हंस की स्त्री का नाम—( १ ) वरटा ।

( एकं सारसपत्न्याः )

सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥२५॥

सारस की स्त्री का नाम—( १ ) लक्ष्मणा ॥२५॥

( द्वे जतुकायाः )

जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्

चमगीदब के २ नाम—( १ ) जतुका ( २ )

अजिनपत्रा ।

( द्वे तैलपायिकायाः )

परोष्णी तैलपायिका ।

चपड़ा के २ नाम—( १ ) परोष्णी ( २ )

तैलपायिका ।

३ मेघदूत नामक खण्डकाव्य में यक्ष ने मेघ से कहा है—

'गर्भाधानचरणपरिचयान्नूनमावद्धमाला ।

सेविष्यन्ते नयनसुभग खे भवन्त बलाकाः ।'

उक्त कर्णोदये—

'गर्भे बलाका दधतेऽभ्रयोगात्राके निबद्धावलय समन्तात् ।'

मेघदूत के कई टीकाकारों ने 'बलाका' का अर्थ 'वक्रपत्न्य' बतलाया है।

( त्रीणि मक्षिकायाः )

वर्वणा मक्षिका नीला

मक्खी के ३ नाम—( १ ) वर्वणा ( २ )

मक्षिका ( ३ ) नीला ।

( द्वे मधुमक्षिकायाः )

सरघा मधुमक्षिका ॥२६॥

शहद की मक्खी के २ नाम—( १ ) सरघा

( २ ) मधुमक्षिका ॥२६॥

( द्वे स्वल्पमधुमक्षिकायाः )

पतङ्गिका पुत्तिका स्यात्

छोटी शहद की मक्खी के २ नाम—( १ )

पतङ्गिका ( २ ) पुत्तिका ।

( द्वे वनमक्षिकायाः )

दशस्तु वनमक्षिका ।

वनमक्खी, डँस या मच्छर के २ नाम—

( १ ) दंश ( २ ) वनमक्षिका ।

( एकं 'मसा' इति ख्यातस्य )

दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्

'मसा' का नाम—( १ ) दशी ।

( द्वे वरटस्य )

गन्धोली वरटा द्वयोः ॥२७॥

वरें के २ नाम—( १ ) गन्धोली ( २ )

वरटा । इनमें ( १ ) खील्लिङ्ग ( २ ) पुँल्लिङ्ग—

खील्लिङ्ग हैं ॥२७॥

( चत्वारि झिल्लिकायाः )

भृङ्गारी चीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमा ।

झिगुर के ४ नाम—( १ ) भृङ्गारी ( २ )

चीरुका ( ३ ) चीरी ( ४ ) झिल्लिका । ये ( १-४ )

खील्लिङ्ग हैं ।

( द्वे पतङ्गस्य )

समौ पतङ्ग-शलभौ

पतङ्गा के २ नाम—( १ ) पतङ्ग ( २ )

शलभ । ये ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे 'सोनकोडा' इति ख्यातायाः )

खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥२८॥

जुगन्, पटबीजना, सोनकिरवा के २ नाम—

( १ ) खद्योत ( २ ) ज्योतिरिङ्गण ॥२८॥

( एकादश भ्रमरस्य )

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिरमधुपालिनः ।

द्विरेफ-पुष्पलिङ् भृङ्ग-षट्पद-भ्रमरालयः ॥२९॥

मौरा के ११ नाम—( १ ) मधुव्रत ( २ )

मधुकर ( ३ ) मधुलिङ् ( ४ ) मधुप ( ५ )

अलिन् ( ६ ) द्विरेफ ( ७ ) पुष्पलिङ् ( ८ ) भृङ्ग

( ९ ) षट्पद ( १० ) भ्रमर ( ११ ) अलि । ये

( १-११ ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥२९॥

( नव मयूरस्य )

मयूरो वह्निणो वर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।

शिखावल. शिखा केकी मेघनादानुलास्यपि ३०

मोर के ९ नाम—( १ ) मयूर ( २ ) वह्निण

( ३ ) वह्निन् ( ४ ) नीलकण्ठ ( ५ ) भुजङ्गभुज

( ६ ) शिखावल ( ७ ) शिखिन् ( ८ ) केकिन्

( ९ ) मेघनादानुलासिन् । ये ( १-९ ) पुँल्लिङ्ग

हैं ॥३०॥

( एकं मयूरवाण्याः )

केका वाणी मयूरस्य

मोर की कूक ( बोली ) का नाम—( १ )

केका ।

( द्वे मयूरपिच्छस्य नेत्राकारचिह्नस्य )

समौ चन्द्रक-मेचकौ

मोरपख पर के चिह्न के २ नाम—( १ )

चन्द्रक ( २ ) मेचक । ये ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे मयूरशिखायाः )

शिखा चूडा

मोर के शिर पर की चोटी के २ नाम—

( १ ) शिखा ( २ ) चूडा । ये ( १-२ )

खील्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि मयूरपिच्छस्य )

शिखण्डस्तु पिच्छ-वर्हे नपुंसके ॥३१॥

मोरपख के ३ नाम—( १ ) शिखण्ड

( २ ) पिच्छ ( ३ ) वर्ह । इनमें ( १ ) पुँल्लिङ्ग

( २-३ ) नपुंसक हैं ॥ ३१ ॥

( सप्तविंशतिः पक्षिमात्रस्य )

खगे विहङ्ग-विहग-विहङ्गम-विहायसः ।

शकुन्ति-पक्षि-शकुनि-शकुन्त शकुन द्विजाः ३२

पतत्रि-पत्रि-पतग-पतत्-पत्ररथाऽण्डजाः ।

नगौक्री-वाजि-विकिर-वि-विष्किर-पतत्रयः ३३

नीडोद्भव गस्तमन्तः पित्सन्तो नभसङ्गमाः ।

चिड़ियों, पक्षियों के २७ नाम—( १ )

खग ( २ ) विहङ्ग ( ३ ) विहग ( ४ ) विहङ्गम

( ५ ) विहायस् ( ६ ) शकुन्ति ( ७ ) पक्षिन्

( ८ ) शकुनि ( ९ ) शकुन्त ( १० ) शकुन

( ११ ) द्विज ( १२ ) पतत्रिन् ( १३ ) पत्रिन्

( १४ ) पतग ( १५ ) पतत् ( १६ ) पत्ररथ

( १७ ) अण्डज ( १८ ) नगौकस् ( १९ )

वाजिन् ( २० ) विकिर ( २१ ) वि ( २२ )

विष्किर ( २३ ) पतत्रि ( २४ ) नीडोद्भव ( २५ )

गस्तमत् ( २६ ) पित्सत् ( २७ ) नभसङ्गम ।

ये ( १-२७ ) पुंलिङ्ग हैं ॥३२-३३॥

( एकैकं पक्षिभेदानाम् )

तेषां विशेषाहारीतो मद्गुः कारण्डवः स्रवः ३४

तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवजीवश्चकोरकः ।

कोयष्टिकृष्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥३५॥

पक्षियों के विशेष भेद—

हारिल चिड़िया नाम—( १ ) हारीत ।

जल मुर्ग का नाम—( १ ) मद्गु ।

कौवे के समान ठोर, काले रंग और बड़े २

पाव वाली चिड़िया का नाम—( १ ) कारण्डव ।

एक प्रकार के सारस का नाम—( १ ) स्रव ।

तीतर का नाम—( १ ) तित्तिरि ।

जङ्गली मुर्ग का नाम—( १ ) कुक्कुभ ।

लावा चिड़िया का नाम—( १ ) लाव ।

जिसके दर्शनमात्र से जहर का असर दूर

हो जाता है उस जीवाजीव चिड़िया का

नाम—( १ ) जीवजीव ।

चकोर का नाम—( १ ) चकोरक ।

१ यह एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर है जो

कोइहा चिड़िया का नाम—( १ ) कोयष्टिक ।

रिट्टिहरी का नाम—( १ ) रिट्टिभक ।

वटेर का नाम—( १ ) वर्तक ।

भरुई चिड़िया का नाम—( १ ) वर्तिका  
( स्त्रीलिङ्ग ) ।'आदि' शब्द से 'सारिका' 'कपिञ्जल' आदि  
का ग्रहण करना ॥३४-३५॥

( पट् पक्षस्य )

गस्तपक्ष-च्छदा पत्रं पतत्र च तनूरुहम् ।

डैना, पंख, पर के ६ नाम—( १ ) गस्त

( २ ) पक्ष ( ३ ) छद ( ४ ) पत्र ( ५ ) पतत्र

( ६ ) तनूरुह । इनमें ( १-३ ) पुंलिङ्ग, केवल

( ३ रा ) नपुंसक में भी, ( ४-६ ) नपुंसक लिङ्ग

में होते हैं ।

( द्वे पक्षमूलस्य )

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलम्

पंख की जड़ के २ नाम—( १ ) पक्षति ( २ )

नैपाल, नैनीताल, आदि स्थानों तथा पञ्जाब और अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ी जंगलों में बहुत पाया जाता है । इसके ऊपर का रङ्ग काला होता है, जिम पर सफ़ेद-सफ़ेद चित्तियाँ होती हैं । पेट का रङ्ग कुछ सफ़ेदी लिए होता है । इसको चोंच और आँखें बहुत लाल होती हैं । यह पक्षी झुण्डों में रहता है और बैसाख-जेठ में बारह-बारह अण्डे देता है । भारत में चिरकाल से प्रसिद्ध है कि यह चन्द्रमा का बड़ा भारी प्रेमी है और उसकी ओर एक टुक देखा करता है, यहाँ तक की यह आग की चिनगारियों को चन्द्रमा की किरणें समझ कर खा जाता है ।

२ यह पानी के किनारे रहने वाला एक छोटी चिड़िया है जिमका सिर लाल, गरदन सफ़ेद, पर चितकनरे, पीठ खैरे रङ्ग की, दुम मिले जुले रङ्ग की और चोंच काली होती है । इसकी बोली कटुई होती है और सुनने में 'टीं टीं' की ध्वनि के समान जान पड़ती है । इस चिड़िया के सम्बन्ध में ऐमा कहा जाता है कि यह रात को श्म मय से कि कहीं आकाश न टूट पड़े उसे रोकने के लिए दोनों पैर ऊपर करके चित सोती है । गो० तुलसीदास जी के शब्दों में—'उमा । राखनहि अस अभिमाना । जिमि टिट्ठि खग सूत उनाना ॥'



पक्ष्मूल । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग ( २ ) नपुंसक है ।

( द्वे पक्षितुण्डस्य )

चञ्चुखोटिखभे स्त्रियौ ॥३६॥

चोंच, ठोर के २ नाम—( १ ) चञ्चु ( २ ) त्रोटि । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥३६॥

( पक्षिणां गतिविशेषाणां पृथक्पृथगेकैकम् )

प्रडीनोड्डीन-सरडीनान्येताः खगगतिक्रियाः ।

चिड़ियों के उड़ने की चाल—

तिरछे उड़ने का नाम—( १ ) प्रडीन ( नपुं० ) ।

ऊपर की ओर उड़ने का नाम—( १ ) उड्डीन ( नपुं० ) ।

सीधे उड़ने का नाम—( १ ) सरडीन ( नपुं० ) ।

( त्रीणि अण्डस्य )

पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डम्

अण्डा के ३ नाम—( १ ) पेशी ( २ ) कोश ( ३ ) अण्ड । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग ( २ ) पुल्लिङ्ग और नपुंसक, और ( ३ ) द्विहीन ( पुं० और स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता ) है अर्थात् केवल नपुंसक लिङ्ग में ही होता है ।

( द्वे पक्षिगृहस्य )

कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥३७॥

घोंसला, खोंता के २ नाम—( १ ) कुलाय ( २ ) नीड । इनमें ( १ ) पुल्लिङ्ग ( २ ) पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥३७॥

( सप्त शिशुमात्रस्य )

पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकः शिशुः ।

वच्चा के ७ नाम—( १ ) पोत ( २ ) पाक ( ३ ) अर्भक ( ४ ) डिम्भ ( ५ ) पृथुक ( ६ ) शावक ( ७ ) शिशु ।

( त्रीणि मिथुनस्य )

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वम्

स्त्री और पुरुष के जोड़े के २ नाम—( १ ) मिथुन ( २ ) द्वन्द्व ।

( त्रीणि यमलस्य )

युग्मं तु युगलं युगम् ॥ ३८ ॥

जुड़वा, जोड़ा के ३ नाम—( १ ) युग्म ( २ ) युगल ( ३ ) युग ॥३८॥

( द्वाविंशतिः समूहस्य )

समूहो निवह व्यूह-सन्दोह-विसर-व्रजाः ।

स्तोमौघ-निकर-व्रात-वार-संघात-सञ्चयाः ३६

समुदायः समुदयः समवायश्च यो गणः ।

स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ४०

समूह ( ढेर, राशि, झुण्ड ) के २२ नाम—

( १ ) समूह ( २ ) निवह ( ३ ) व्यूह ( ४ )

सन्दोह ( ५ ) विसर ( ६ ) व्रज ( ७ ) स्तोम

( ८ ) औघ ( ९ ) निकर ( १० ) व्रात ( ११ )

वार ( १२ ) संघात ( १३ ) सञ्चय ( १४ )

समुदाय ( १५ ) समुदय ( १६ ) समवाय ( १७ )

चय ( १८ ) गण ( १९ ) संहति ( २० ) वृन्द

( २१ ) निकुरम्ब ( २२ ) कदम्बक । इनमें

( १-१८ ) पुल्लिङ्ग, ( १९ ) स्त्रीलिङ्ग, ( २०-२२ ) नपुंसक में होते हैं ॥ ३९-४० ॥

( समुदायविशेषा उच्यन्ते )

वृन्दभेदाः

अब समूहों के विशेष भेद बतलाते हैं—

( एकं वर्गस्य )

समैर्वर्गः

सजातीय प्राणियों या अप्राणियों के समूह ( यथा—मनुष्यवर्ग, शैलवर्ग ) का नाम—( १ ) वर्ग ।

( द्वे सङ्घस्य )

संघ-सार्थौ तु जन्तुभिः ।

सजातीय और विजातीय प्राणियों के समूह ( यथा—पशुसंघ, वणिक्सार्थ ) के २ नाम—( १ ) संघ ( २ ) सार्थ ।

( एकं कुलस्य )

सजातीयैः कुलम्

सजातीयप्राणियों के समूह ( जिसे वंश, घराना, खानदान कहते हैं, यथा विप्रकुल ) का नाम—( १ ) कुल ।

( एकं यूथस्य )

यूथं तिरश्चा पुं-नपुंसकम् ॥४१॥

१ सजातीय पशु-पक्षुओं के झुण्ड ( यथा मृगयूथ ) का नाम—( १ ) यूथ । यह पुल्लिङ्ग और नपुंसक में होता है ॥ ४१ ॥

( एकं समजस्य )

पशूनां समजः

पशुवृन्द का नाम—( १ ) समज ।

( एक समाजस्य )

अन्येषां समाजः

पशु-व्यतिरिक्त औरों के समुदाय का नाम—

( १ ) समाज ।

( एकं निकायस्य )

अथ सधर्मिणाम् ।

स्यान्निकायः

एक धर्मवालों ( यथा २ वौद्धधर्म ) के समूह का नाम ( १ ) निकाय ।

( चत्वारि धान्यादिराशेः )

पुञ्ज-राशी तूत्करं कूटमस्त्रियाम् ॥४२॥

अनाज आदि की ऊँची और बड़ी ढेरी के ४ नाम—( १ ) पुञ्ज ( २ ) राशि ( ३ ) उत्कर ( ४ ) कूट । इनमें ( १ ) पुल्लिङ्ग, ( २ ) पुल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग, ( ३ ) पुल्लिङ्ग, ( ४ ) पुल्लिङ्ग और नपुंसक में होता है ॥ ४२ ॥

( कपोतादीनां गणस्य पृथक्पृथगैकैकम् )

कापोत-शौक-मायूर-तैत्तिरादीनि तद्गणे ।

कबूतरों के समूह का नाम—( १ ) कापोत ( नपुं० ) ।

तोतों के समूह का नाम—( १ ) शौक ( नपुं० ) ।

१ मनुष्य को छोड़ पशु पक्षी आदि जीव तिर्यक् कहलाते हैं क्योंकि खड़े होने में उनके शरीर का विस्तार ऊपर की ओर नहीं रहता, आड़ा होता है । इनका खाया हुआ अन्न सीधे ऊपर से नीचे की ओर नहीं जाता बल्कि आड़ा होकर पेट में जाता है ।

२ बीदों के सूतपिटक में कई निकायाँ—दोग्व निकाय, मज्झिम निकाय, सयुक्त निकाय, अगुत्तर निकाय, खुदक निकाय—का वर्णन है ।

मोरों के समूह का नाम—( १ ) मायूर ( नपुं० ) ।

तीतरों के समूह का नाम—( १ ) तैत्तिर ( नपुं० ) ।

( द्वे गृहासक्तपक्षिमृगाणाम् )

गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्चेकास्ते गृह्यकाश्च ते४३

घर के पालतू पशुपक्षी के २ नाम—( १ )

छेक ( २ ) गृह्यक । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥ ४३ ॥

( इति सिंहादिवर्गः ५ )

अथ मनुष्यवर्गः ६

( षट् मनुष्यमात्रस्य )

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।

मनुष्य मात्र के ६ नाम—( १ ) मनुष्य ( २ ) मानुष ( ३ ) मर्त्य ( ४ ) मनुज ( ५ ) मानव ( ६ ) नर ।

( पञ्च मनुष्यजातौ पुरुषस्य )

स्युः पुर्मांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥१॥

पुरुष जाति के ५ नाम—( १ ) पुंस् ( २ ) पञ्चजन ( ३ ) पुरुष ( ४ ) पूरुष ( ५ ) नृ ( प्रथमा एकवचन 'नार' ) ।

( एकादश स्त्रीमात्रस्य )

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।

प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥२॥

स्त्री के ११ नाम—( १ ) स्त्री ( २ ) योषित् ( ३ ) अबला ( ४ ) योषा ( ५ ) नारी ( ६ ) सीमन्तिनी ( ७ ) वधू ( ८ ) प्रतीपदर्शिनी ( ९ ) वामा ( १० ) वनिता ( ११ ) महिला ॥ २ ॥

( स्त्रीणां विशेषा भेदाः )

विशेषास्तु

स्त्रियों के विशेष भेद ये हैं—

( द्वादशभेदाः स्त्रीणाम् )

अङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।

प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥३॥

सुन्दरी रमणी रामा

अच्छे अङ्गवाली औरत का नाम—( १ ) अङ्गना ।

डरनेवाली औरत का नाम—( १ ) भीरु ।

कामयुक्त स्त्री का नाम—( १ ) कामिनी ।

तिरछी चितवनवाली औरत का नाम—( १ )  
वामलोचना ।

मद में भरी हुई औरत का नाम—( १ ) प्रमदा ।

प्यार के समय रूठने वाली औरत का नाम—( १ )  
मानिनी ।

मनको हरलेनेवाली स्त्री का नाम—( १ ) कान्ता ।

दुलारी औरत का नाम—( १ ) ललना ।

अच्छे नितम्बवाली स्त्री का नाम—( १ )  
नितम्बिनी ।

गोरे अंगवाली स्त्री का नाम—( १ ) सुन्दरी ।

रमण करनेवाली स्त्री का नाम—( १ ) रमणी ।

विहार के योग्य स्त्री का नाम—( १ ) रामा ।

( द्वे कोपशीलायाः )

कोपना सैव भामिनी ।

गुस्सावर औरत के २ नाम—( १ ) कोपना  
( २ ) भामिनी ।

( चत्वारि गुणैरुत्कृष्टायाः स्त्रियाः )

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा <sup>१</sup>वरवर्णिनी ॥५॥

गुणों के कारण उत्कृष्ट स्त्री के ४ नाम—  
( १ ) वरारोहा ( २ ) मत्तकाशिनी ( ३ ) उत्तमा  
( ४ ) वरवर्णिनी ॥४॥

( एकं पट्टाभिषिक्तराजपत्न्याः )

कृताभिषेका महिषी

<sup>२</sup>पटरानी का नाम—( १ ) महिषी ।

( एकमन्यराजस्त्रियाम् )

भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।

१ रुद्रक्रीश के अनुसार 'वरवर्णिनी' का लक्षण—

'शोते मुखोष्णसर्वाङ्गो, ग्रीष्मे वा मुखशीतला ।

मर्तुभक्ता च वा नारी, विज्ञेया वरवर्णिनी ॥'

२ भारतीय राजनाति शास्त्र में 'महिषी' को अत्यन्त उच्च आसन प्रदान किया गया है । 'राजस्य' आदि यज्ञों में उसकी अत्यन्त आवश्यकता पड़ती है ( देखिए पञ्च-विंश ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि )

अनभिषिक्त अन्य रानियों का नाम—( १ )  
भोगिनी ।

( सप्त परिणीतायाः स्त्रियाः )

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥५॥  
भार्या जायाऽथ पुंभूम्नि दाराः

<sup>३</sup>विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री के ७ नाम—  
( १ ) पत्नी ( २ ) पाणिगृहीती ( ३ ) द्वितीया  
( ४ ) सहधर्मिणी ( ५ ) भार्या ( ६ ) जाया  
( ७ ) दारा । इनमें ( १-६ ) स्त्रीलिङ्ग और  
( ७ वां ) 'दारा' शब्द पुल्लिङ्ग और नित्य  
बहुवचनान्त होता है ॥५॥

( द्वे पतिपुत्रादिमत्याः )

स्यात्तु कुटुम्बिनी ।

पुरन्ध्री

पति-पुत्रादि से युक्त स्त्री के २ नाम—( १ )  
कुटुम्बिनी ( २ ) पुरन्ध्री ।

( चत्वारि पतिसेवातत्परायाः )

सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥६॥

<sup>४</sup>पतिव्रता स्त्री के ४ नाम—( १ ) सुचरित्रा  
( २ ) सती ( ३ ) साध्वी ( ४ ) पतिव्रता ।

( त्रीणि कृतानेकविवाहस्य पुंसो या प्रथमोदा  
स्त्री तस्याः )

कृतसापालकाऽध्युदाऽधिविज्ञा

पहिली स्त्री, जिसके पति ने उसके जीवन

३ 'जायायास्तद्धि जायात्व यदस्या जायते पुन'  
इति मनु ( ६, ८ ) तथा च बह्वचब्राह्मणम्—  
'पतिर्जाया प्रविशति गर्भो भूत्वेह मातरम् ।  
तस्या पुनर्नवो भूत्वा दशमे मासि जायते ।  
तज्जाया जाया भवति यदस्या जायते पुनः ॥'  
अपि च—

'क्रीता द्रव्येण या नारी, सा न पत्नी विधीयते ।'

४ साध्वीलक्षण—( मनुस्मृति ६, २६ )

'पति या नाभिचरति मनो-वाक्-काय-सयता ।

मा भर्तुलोकानामोति सद्भि साध्वीति चोच्यते ॥'

पतिव्रतालक्षण—

आर्तात्ते मुदिते दृष्टा प्रोषिते मलिना कुशा ।

मृते त्रियते या पत्यु सा स्त्री श्रेया पतिव्रता ॥

काल में ही दूसरा विवाह कर लिया हो, के ३ नाम—( १ ) कृतसापत्निका ( २ ) अर्धयूढा ( ३ ) अधिविन्ना ।

( त्रीणि स्वेच्छाकृतपतिवरणायाः )

अथ स्वयम्बरा ।

पतिवरा च वर्या च

स्वयं पति चुनने वाली स्त्री के ३ नाम—

( १ ) स्वयम्बरा ( २ ) पतिवरा ( ३ ) वर्या ।

( द्वे कुलवत्याः )

अथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥७॥

कुलवन्ती स्त्री, मर्यादा से रहनेवाली कुलवधू के २ नाम—( १ ) कुलस्त्री ( २ ) कुलपालिका ॥७॥

( द्वे प्रथमवयसि वर्तमानायाः )

कन्या कुमारी

लड़की के २ नाम—( १ ) कन्या ( २ ) कुमारी ।

( त्रीणि अष्टष्टरजस्कायाः )

गौरी तु नम्रिकाऽनागतार्तवा ।

रजस्वला न हुई स्त्री के ३ नाम—( १ ) गौरी ( २ ) नम्रिका ( ३ ) अनागतार्तवा ।

( द्वे प्रथमप्राप्तरजोयोगायाः )

स्यान्मध्यमा दृष्टरजाः

प्रथम रजस्वला स्त्री के २ नाम—( १ ) मध्यमा ( २ ) दृष्टरजस् । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे तरुण्याः )

तरुणी युवतिः समे ॥८॥

जवान स्त्री के २ नाम—( १ ) तरुणी ( २ ) युवति । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८॥

( त्रीणि पुत्रभार्यायाः )

समाः स्नुषा-जनी-वधू

पतोहू ( पुत्रवधू ) के ३ नाम—( १ ) स्नुषा ( २ ) जनी ( ३ ) वधू । ये ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे पितृगेहस्थायाः किञ्चिल्लब्धयौवनायाः )

चिरिगटी तु सुवासिनी ।

पिता के घर रहने वाली उठती जवानी की

सयानी लड़की के २ नाम—( १ ) चिरिगटी ( २ ) सुवासिनी ।

( द्वे धनादीच्छायुक्तायाः )

इच्छावती कामुका स्यात्

धन आदि की चाहना रखने वाली के २ नाम—( १ ) इच्छावती ( २ ) कामुका ।

( द्वे भववृषवन्मैथुनेच्छावत्याः )

वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥९॥

मैथुन की ही चाहना रखने वाली के २ नाम—( १ ) वृषस्यन्ती ( २ ) कामुकी ॥९॥

( एकं भर्त्रिच्छया रतिस्थानं गच्छन्त्याः )

कान्तार्थिनी तु या याति सङ्केतं साऽभिसारिका

नियत समय पर अपने थार से उसके वतलाए हुए इशारे पर मिलने के लिए जानेवाली औरत का नाम—( १ ) अभिसारिका ।

( अष्टौ कुलदायाः )

पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलदेत्वरी ॥१०॥

स्वैरिणी पांसुला च स्यात्

छिनाल, व्यभिचारिणी, वदचलन औरत के ८ नाम—( १ ) पुंश्चली ( २ ) धर्षिणी ( ३ ) बन्धकी ( ४ ) असती ( ५ ) कुलदा ( ६ ) इत्वरी ( ७ ) स्वैरिणी ( ८ ) पांसुला ॥१०॥

१ स्त्रियां द्विगुणाहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणा ।

साहस पदगुणञ्चैव कामाश्चाष्टगुणा स्मृताः ।

२ या कान्तार्थिनी भर्तुः सङ्केतस्थान गच्छति सा अभिसारिका । यदुक्तम्—

‘हित्वा लज्जामये क्षिप्वा मदनेन मदेन या ।

अभिसारयते कान्त मा भवेदभिसारिका ॥’

वासकसज्जा विरहोत्कण्ठिता खण्डिता विप्रलब्धा कलहान्तरिता तथा प्रोषितमर्तुका स्वाधीनदयितेत्यन्या सप्तान्वर्थत्वाच्च दर्शिताः ।

३ कुल में दाग लगना, लोकनिन्दा, बन्धन और जिन्दगी को खतरे में डालना—इन सबको परपुरुषता कहते हैं—

‘कुलपतन जनगर्हा बन्धनमपि जीवितव्यसन्नेहः ।  
अङ्गीकरोति कुलदा सतत परपुरुषमसह’

( एकं शिशुरहितायाः )

अशिश्वी शिशुना विना ।

विना वच्चेवाली औरत का नाम—( १ ) अशिश्वी ।

( एकं पतिपुत्ररहितायाः )

अवीरा निष्पतिसुता

पति और पुत्र से रहित स्त्री का नाम—  
( १ ) अवीरा ।

( द्वे धवरहितायाः )

विश्वस्ता-विधवे समे ॥११॥

रौंड़, विधवा के २ नाम—( १ ) विश्वस्ता  
( २ ) विधवा । ये ( १-२ ) समान लिङ्गवाले  
( स्त्रीलिङ्ग ) हैं ॥ ११ ॥

( त्रीणि सख्याः )

आलिः सखी वयस्या च

सखी, सहेली के ३ नाम—( १ ) आलि  
( २ ) सखी ( ३ ) वयस्या ।

( द्वे जीवन्नर्तकायाः )

पतिवत्नी सभर्तृका ।

सोहागिन या अहिवातिन के २ नाम—( १ )  
पतिवत्नी ( २ ) सभर्तृका ।

( द्वे वृद्धायाः )

वृद्धा पलिकी

बूढ़ी औरत के २ नाम—( १ ) वृद्धा ( २ )  
पलिकी ।

( द्वे स्वयं ज्ञायाः )

प्राज्ञी तु प्रज्ञा

खुद जानकार औरत के २ नाम—( १ )  
प्राज्ञी ( २ ) प्रज्ञा ।

( द्वे बुद्धिमत्याः )

प्राज्ञा तु धीमती ॥१२॥

बुद्धिमती, समझदार या अकृमन्द औरत के  
२ नाम—( १ ) प्राज्ञा ( २ ) धीमती ॥१२॥

( एकं भिन्नजातीयया अपि शूद्रभार्यायाः )

शूद्रा शूद्रस्य भार्या स्यात्

विजातीय होने पर भी शूद्र की स्त्री का नाम—

( १ ) शूद्रा ।

( एकमन्यभार्याया अपि शूद्रजातीययाः )

शूद्रा तज्जातिरेव च ।

उस ( शूद्र ) जाति की होकर, अन्य जाति  
के पुरुष की स्त्री होने पर उसका नाम होगा—  
( १ ) शूद्रा ।

( द्वे आभीर्याः )

आभीरी तु महाशूद्रा जाति-पुंयोगयोः समा

महाशूद्र की आभीरजातीया स्त्री के २ नाम—  
( १ ) आभीरी ( २ ) महाशूद्रा । जाति ( अर्थात्  
महाशूद्र की जाति ) पुंयोग ( अर्थात् महाशूद्र  
की स्त्री ) में नामद्वय ङीष्प्रत्ययान्त है ॥१३॥

( द्वे वैश्यजातीययाः )

अर्याणी स्वमर्या स्यात्

वैश्य जाति में पैदा हुई स्त्री के २ नाम—  
( १ ) अर्याणी ( २ ) अर्या ।

( द्वे क्षत्रियजातीययाः )

क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।

क्षत्रिय जाति में पैदा हुई क्षत्राणी के २  
नाम—( १ ) क्षत्रिया ( २ ) क्षत्रियाणी ।

( द्वे विद्योपदेशिन्याः )

उपाध्यायाप्युपाध्यायी

‘स्वयं विद्या पढानेवाली स्त्री के २ नाम—  
( १ ) उपाध्याया ( २ ) उपाध्यायी ।

( एकं स्वयं मन्त्रन्याख्यायाः )

स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥१४॥

मन्त्र का अर्थ करनेवाली स्त्री का नाम—  
( १ ) आचार्या ॥ १४ ॥

१ ‘पुरा कल्पे तु नारीणां व्रतबन्धनमिष्यते ।

अध्यापन च वेदानां सावित्रीवाचनं तथा ॥’ इति  
पाराशरमाधवेयम् ।

‘पत्नीमध्यापयेत् । कस्मात् ? ‘पत्नी जुहुयादि’ ति वचनात् ।  
नहि खल्वनवीत्य शक्तौति होतुमिति ।’

( एकमाचार्यभार्यायाः )

आचार्यानी तु पुंयोगे

१ आचार्य की स्त्री का नाम—(१) आचार्यानी ।

( एकं वैश्यपत्न्याः )

स्यादर्या

वैश्य की स्त्री का नाम—( १ ) अर्या ।

( एकं क्षत्रियपत्न्याः )

क्षत्रियी तथा ।

क्षत्रिय की स्त्री का नाम—(१) क्षत्रियी ।

( द्वे उपाध्यायस्य भार्यायाः )

उपाध्यायुपाध्यायी

उपाध्यायनेवाले की स्त्री के २ नाम—(१) उपाध्यानी ( २ ) उपाध्यायी ।

( एकं स्त्रीपुंसयोः स्तनश्मश्र्वादिलक्ष्युक्तायाः )

पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥१५॥

जिसमें स्त्री और पुरुष के लक्षण ( कुच-सूख-दाढ़ी ) पाये जायें उस औरत का नाम—( १ ) पोटा ॥१५॥

( द्वे वीरस्य भार्यायाः )

वीरपत्नी वीरभार्या

शूर वीर की स्त्री के २ नाम—(१) वीरपत्नी ( २ ) वीरभार्या ।

( द्वे वीरमातुः )

वीरमाता तु वीरसूः ।

वीर की माता, बहादुर की माँ के २ नाम—( १ ) वीरमातृ ( २ ) वीरसू ।

( चत्वारि प्रसूतायाः )

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥१६॥

प्रसूता, सौरिही औरत के ४ नाम—( १ ) जातापत्या ( २ ) प्रजाता ( ३ ) प्रसूता ( ४ ) प्रसूतिका ॥ १६ ॥

( द्वे नश्यायाः )

स्त्री नशिका कोटवी स्यात्

१-२ 'आचार्य' और 'उपाध्याय' किसे कहते हैं यह जानने के लिए ब्रह्मवर्ग का ७वाँ श्लोक देखिए ।

नक्षी स्त्री के २ नाम—( १ ) नशिका ( २ ) कोटवी । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे दूतिकायाः )

दूती-सञ्चारिके समे ।

३ प्रेमी का सन्देशा प्रेमिका तक या प्रेमिका का संदेशा प्रेमी तक पहुँचानेवाली स्त्री के २ नाम—( १ ) दूती ( २ ) सञ्चारिका ।

( एकं विशेषत्रयविशिष्टायाः )

कात्यायन्यर्द्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा १७

गेरुआ कपड़ा पहिरनेवाली अधेड़ विधवा स्त्री का नाम—( १ ) कात्यायनी ॥१७॥

( एकं विशेषणत्रयवत्याः )

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।

४ बाल सँवारने वाली, चोटी गूँथनेवाली, पराये घर में रहते हुए भी स्वतन्त्र, नौकरानी का नाम—( १ ) सैरन्ध्री ।

( एकं कृष्णकेशादित्रिविशेषणायाः )

असिकनी स्यादवृद्धा या प्रेप्यान्तःपुरचारिणी १८

रनिवास में रहनेवाली जवान या अधेड़ लौंडी या मजदूरनी का नाम—(१) असिकनी ॥१८॥

( चत्वारि वेश्यायाः )

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा

रगड़ी या पतुरिया के ४ नाम—( १ ) वारस्त्री ( २ ) गणिका ( ३ ) वेश्या ( ४ ) रूपाजीवा ।

३ साहित्य में दूतियों तीन प्रकार की मानी गयी हैं—उत्तमा, मध्यमा और अधमा । उत्तमा दूती वह कहलाती है जो मोठी-मोठी बातें कहकर अच्छी तरह समझाती हो । मध्यमा दूती उसे कहते हैं जो कुछ मोठी और कुछ कड़वी बातें सुनाकर अपना काम निकालना चाहती हो । केवल डाँट-फटकार की बातें कहकर अपना काम निकालनेवाली दूती को अधमा दूती कहते हैं ।

४ सैरन्ध्री का लक्षण—

चतु पट्टिकलाभिषा शीलरूपादिसेविनी ।

प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्तिता ॥

( एकं जनैः सत्कृतवेश्यायाः )

अथ सा जनैः ।

सत्कृता वारमुख्या स्यात्

इज्जतदार ररणी का नाम—(१) वारमुख्या ।

( द्वे परनारीं पुंसा संयोजयिष्याः )

कुट्टनी शम्भली समे ॥१६॥

स्त्रियों को बहका कर उन्हें परपुरुष से मिलानेवाली औरत 'कुट्टनी' के २ नाम—( १ ) कुट्टनी ( २ ) शम्भली ॥१६॥

( त्रीणि शुभाशुभनिरुपिष्याः )

विप्रश्निका त्वीक्षिका दैवज्ञा

लक्षण देखकर शुभ और अशुभ बतलानेवाली औरत के ३ नाम—( १ ) विप्रश्निका ( २ ) ईक्षिका ( ३ ) दैवज्ञा ।

( अष्टौ रजस्वलायाः )

अथ रजस्वला ।

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि २० ऋतुमत्यप्युदक्याऽपि

१ रजस्वला के ८ नाम—( १ ) रजस्वला ( २ ) स्त्रीधर्मिणी ( ३ ) अवि ( ४ ) आत्रेयी ( ५ ) मलिनी ( ६ ) पुष्पवती ( ७ ) ऋतुमती ( ८ ) उदक्या ॥ २० ॥

( क्षीणि स्त्रीरजसः )

स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।

२ स्त्रियों के योनि-मार्ग से प्रतिमास निकलने वाले रक्त के ३ नाम—( १ ) रजस् ( २ )

१ राजनिघण्टु में लिखा है—

द्वादशाद्वत्सरादूर्ध्वमापन्चाशत्समा स्त्रिय ।

मासि मासि भगद्वारा प्रकृत्यैवार्चव स्रवेत् ॥

आर्तवस्रावदिवसादृतुः षोडशरात्रय ।

गर्भग्रहणयोग्यस्तु स एव समय स्मृत ।

तथा च मदनपारिजाते दक्ष —

अञ्जनाभ्यञ्जने स्नान प्रवासं दन्तधावनम् ।

न कुर्यात्सार्तवा नारी ग्रहाणामोक्षण तथा ॥

२ सुश्रुतसंहिता में लिखा है—

रसादेव रम स्त्रीणां मासि मासि श्रवह स्रवेत् ।

पुष्प ( ३ ) आर्तव । ये ( १-३ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे गर्भवशादन्नादिविशेषाभिलाषिण्याः )

श्रद्धालुर्दोहदवती

अमिलाषा वाली गर्भिणी स्त्री के २ नाम—( १ ) श्रद्धालु ( २ ) दोहदवती ।

( द्वे हीनरजस्कायाः )

निष्कला विगतार्तवा ॥२१॥

जिस स्त्री का रजोधर्म रुक गया हो उसके २ नाम—( १ ) निष्कला ( २ ) विगतार्तवा ॥२१॥

( चत्वारि गर्भिण्याः )

आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी

गर्भवती के ४ नाम—( १ ) आपन्नसत्त्वा ( २ ) गुर्विणी ( ३ ) अन्तर्वत्नी ( ४ ) गर्भिणी ।

( एकैकं गणिकानां, गर्भिणीनां, युवतीनाञ्च समूहस्य )

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे २२

गणिका समूह का नाम—( १ ) गाणिक्य ।

गर्भिणी समूह का नाम—( १ ) गार्भिण ।

युवती समूह का नाम—( १ ) यौवत ॥२२॥

( द्वे द्विवारं वृतायाः )

पुनर्भूदिधिषूख्ण्डा द्वि.

उदरी ( वह स्त्री जिसके दो ब्याह हुए हों ) के २ नाम—( १ ) पुनर्भू ( २ ) दिधिषू । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकं द्विरूढायाः पत्युः )

तस्या दिधिषुः पतिः ।

उदरा ( पहले एकवार ब्याही हुई स्त्री का दूसरा पति ) का नाम—( १ ) दिधिषु ( पुं० ) ।

( एक द्विरूढायाः प्रधानपत्युः )

स तु द्विजोऽग्रेदिधिषुः सैव यस्य कुटुम्बिनी २३

लड़का—लड़की पैदा कर चुकने पर दूसरे के साथ विवाही गयी उदरी स्त्री के पहले द्विज पति का नाम—( १ ) अग्रेदिधिषु ॥ २३ ॥

( एकमनूढापत्यस्य )

कानीनः कन्यकाजातः सुतः

१ बिना व्याही कन्या के पुत्र का नाम—  
( १ ) कानीन ।

( द्वे सुभगापुत्रस्य )

अथ सुभगासुतः ।

साभागिनेयः

सुलक्षणा स्त्री के पुत्र के २ नाम—( १ )  
सुभगासुत ( २ ) सौभागिनेय ॥२४॥

( एकं परभार्यापुत्रस्य )

स्यात्पारस्त्र्येयस्तु परस्त्रियाः ॥२४॥

पराई स्त्री के ( व्यभिचार के ) पुत्र का  
नाम—( १ ) पारस्त्र्येय ।

( द्वे पितृभगिन्या सुतस्य )

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्वसुतः ।  
सुतः

बुआ या फूफी के लड़कों के २ नाम—  
( १ ) पैतृष्वसेय ( २ ) पैतृष्वस्त्रीय ।

( द्वे मातृष्वसुः पुत्रस्य )

मातृष्वसुश्चैवम्

इसी प्रकार मौसी के लड़कों का भी जानना,  
अर्थात् मौसी के लड़कों के २ नाम—( १ )  
मातृष्वसेय ( २ ) मातृष्वस्त्रीय ।

( द्वे अपरमातृसुतस्य )

वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

सौतेली माँ के लड़कों के २ नाम—( १ )  
वैमात्रेय ( २ ) विमातृज ॥२५॥

( पञ्च कुलटापुत्रस्य )

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ।  
कौलटेरः कौलटेयः

व्यभिचारिणी, छिनाल या वदचलन औरत  
के लड़कों के ५ नाम—( १ ) बान्धकिनेय ( २ )  
बन्धुल ( ३ ) असतीसुत ( ४ ) कौलटेर ( ५ )  
कौलटेय ।

१ मनुस्मृति ( १७२ ) में लिखा है—

पितृवेश्मनि कन्या तु य पुत्र जनयेद्रह ।

त कानीनं वदेन्नाम्ना बोद्धुं कन्यासमुद्भवम् ॥

( द्वे भिक्षार्थं गेहं गेहमदन्याः सत्याः पुत्रस्य )  
भिक्षुकी तु सती यदि ॥२६॥

तदा कौलटेनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।

पतिव्रता भिखारिन के पुत्रों के २ नाम—

( १ ) कौलटेनेय ( २ ) कौलटेय ॥२६॥

( पञ्च पुत्रस्य )

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः

२ पुत्र, बेटा के ५ नाम—( १ ) आत्मज

( २ ) तनय ( ३ ) सूनु ( ४ ) सुत ( ५ ) पुत्र ।

( पट् पुत्रिकायाः )

स्त्रियां त्वमी ॥२७॥

आहुर्दुहितरं सर्वं

पुत्री, लड़की के ६ नाम—( १ ) आत्मजा  
( २ ) तनया ( ३ ) सूनु ( ४ ) सुता ( ५ ) पुत्री  
( ६ ) दुहितृ । ( ये १-५ शब्द 'आत्मज' आदि  
के स्त्रीलिङ्ग में होने पर होते हैं । ) ॥२७॥

( द्वे पुत्र-कन्ययोः )

अपत्यं तोकं तयोः समे ।

इन दोनों ( पुत्र-पुत्री ), सन्तान, के २ नाम—  
( १ ) अपत्य ( २ ) तोक । ये ( १-२ ) नपुंसक  
लिङ्ग हैं ।

( द्वे स्वस्माज्जातपुत्रस्य )

स्वजाते त्वारसोरस्यौ

असवर्णा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न पुत्र के २  
नाम—( १ ) औरस ( २ ) उरस्य ।

२ मनु भगवान् ( ६, १३८ ) कहते हैं—

पुत्रासौ नरकाथस्मात्त्रायते पितर सुत ।

तरमात्पुत्र इति प्रोक्त स्वयमेव स्वयम्भुवा ।

३ मनुस्मृति ( ६, १६६ )

स्वक्षेत्रे सस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धि यम् ।

तमौरसं विजानोयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् ॥

निरुक्त ( ३, ४ ) में—

अज्ञादज्ञात्सम्भवति हृदयादधिजायसे ।

आत्मा वै पुत्रनामासि सजीव शरद शतम् ॥

भवभूति ने उत्तररामचरित ( ६, २२ ) में 'अज्ञा-  
दज्ञात्सुत इव' इत्यादि लिखा है ।



( त्रीणि पितुः )

तातस्तु जनकः पिता ॥२८॥

पिता, बाप के ३ नाम—( १ ) तात ( २ )  
जनक ( ३ ) पितृ ॥२८॥

( चत्वारि जनन्याः )

जनयित्री प्रसूर्माता जननी

माता, माँ के ४ नाम—( १ ) जनयित्री ( २ )  
प्रसू ( ३ ) मातृ ( ४ ) जननी ।

( द्वे भगिन्याः )

भगिनी स्वसा ।

वहिन के २ नाम—( १ ) भगिनी ( २ ) स्वसृ ।

( एकं भर्तृभगिन्याः )

ननान्दा तु स्वसा पत्यु

ननद ( पति के वहिन ) का नाम—( १ )  
ननान्द ।

( त्रीणि सुतस्य सुतायाश्चात्मजायाः )

नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥२९॥

पोती या नतिनी के ३ नाम—( १ ) नप्त्री  
( २ ) पौत्री ( ३ ) सुतात्मजा ॥२९॥

( एकं भ्रातृवर्गभार्यायाः )

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातर. स्यु परस्परम् ।

देवरानी-जेठानी का नाम—( १ ) यातृ  
( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( द्वे भ्रातृपत्न्याः )

प्रजावती भ्रातृजाया

भावज, भौजाई, भाभी के २ नाम—( १ )  
प्रजावती ( २ ) भ्रातृजाया ।

( द्वे मातुलभार्यायाः )

मातुलानी तु मातुली ॥३०॥

मामी के २ नाम—( १ ) मातुलानी ( २ )  
मातुली ॥३०॥

( एकं श्वश्र्वाः )

पति-पत्न्यो. प्रसू श्वश्रू.

सास, पति और पत्नी की माता, का नाम—  
( १ ) श्वश्रू ( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( एकं श्वशुरस्य )

श्वशुरस्तु पिता तयोः ।

ससुर (पति और पत्नी के पिता) का नाम—  
( १ ) श्वशुर ।

( एकं पितृव्यस्य )

पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यात्

चाचा, काका, पितिया का नाम—( १ )  
पितृव्य ।

( एकं मातुलस्य )

मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥३१॥

मामा का नाम—( १ ) मातुल ॥३१॥

( एकं श्यालस्य )

श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्या

साला ( अपनी स्त्री के भाई ) का नाम—  
( १ ) श्याल ।

( द्वे पत्युः कनिष्ठभ्रातुः )

स्वामिनो देव-देवरौ ।

देवर ( पति के छोटे भाई ) के २ नाम—( १ )  
देवृ ( २ ) देवर ।

( द्वे भगिनीसुतस्य )

स्वस्त्रीयो भागिनेय. स्यात्

भाज्जा, भयने के २ नाम—( १ ) स्वस्त्रीय ।  
( २ ) भागिनेय ।

( एकं जामातुः )

जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥

दामाद, जेवाई का नाम—( १ ) जा-  
मातृ ॥ ३२ ॥

( एकं पितामहस्य )

पितामहः पितृपिता

दादा का नाम—( १ ) पितामह ।

१ शास्त्रों के अनुसार दामाद के लक्षण—

‘विद्याशौर्यधनश्रयो गुणनिधि ख्याता युवा सुन्दर,  
सच्चार सुकुलोद्भवो मधुरवाग् दाता दयासागर’ ।  
भोगो भूरिकुटुम्बवान् स्थिरमति. पापक्षिणो वली,  
जामाता परिवर्णित. कविवरैरेवविध सत्तमः ॥’

( एकं प्रपितामहस्य )

तत्पिता प्रपितामहः ।

बाबा, आजा, परदादा का नाम—( १ )  
प्रपितामह ।

( एकैकं मातामहस्य )

मातुर्मातामहाद्येवम्

माता के पिता, नाना, का नाम—( १ )  
मातामह ।नाना के पिता, पर-नाना, का नाम—( १ )  
प्रमातामह ।

( द्वे सपिण्डस्य )

सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥

१ जिनके जन्म और मरण में अशौच लगता  
है उन बान्धवों के २ नाम—( १ ) सपिण्ड ( २ )  
( २ ) सनाभि ॥ ३३ ॥

( चत्वारि एकोदरोत्पन्नभ्रातुः )

समानोदर्य-सोदर्य-सगर्भ्य-सहजाः समाः ।

१ निम्नाङ्कित व्यक्ति सपिण्ड कहे गये हैं—

पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र, विधवा, कन्या, कन्यापुत्र,  
पिता, माता, भ्राता, भतीजा, भाई का पोता, नाती,  
चचेरा भाई, चचेरे भाई का लड़का, दादा की लड़की  
का लड़का, दादा, दादी, दादा का भाई, दादा के भाई  
का लड़का, दादा के भाई का पोता, परदादा की लड़की  
का लड़का ।विष्णु ( १५, ४० ) ने बतलाया है—‘यश्चार्थहरः  
स पिण्डदायी ।’ मिताक्षरा और दायमाग के अनुसार  
उत्तराधिकारियों का क्रम मित्र २ है । मनु ने अथर्ववेद  
( १८, ४, ३५ ) के मन्त्र—‘वैश्वानरे हविरिद जुहोमि  
साहस्र शतधारसुतसम् । स विमर्ति पितर पितामहान्  
प्रपितामहान् विमर्ति पिन्वमान ॥’ के अनुसार ६, १८६ में  
लिखा है—

‘त्रयाणामुदक कार्य त्रिषु पिण्ड प्रवर्तते ।

चतुर्थं सम्प्रदातैर्षा पञ्चमो नोपपद्यते ॥’

गौतमधर्मसूत्र ( १४, १३ ) में लिखा है—‘पिण्ड-  
निवृत्तिः सप्तमे पञ्चमे वा ।’ एक स्थान पर, मनुस्मृति  
( ५, ६० ) और विष्णु ( २०, ५ ) में लिखा है—‘सपि-  
ण्डता तु पुरुर्ये, सप्तमे विनिवर्तते ।’ शाखलिखित ‘मपि-  
ण्डता तु सर्वेषां गोत्रत सासपौरुषी ।’सगा भाई के ४ नाम—( १ ) समानोदर्य  
( २ ) सोदर्य ( ३ ) सगर्भ्य ( ४ ) सहज । ये  
( १-४ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( षट् सगोत्रस्य )

सगोत्र-बान्धव-ज्ञाति-वन्धु-स्व-स्वजनाः समाः ३४

३ गोतिया, भाई, बन्ध के ६ नाम—( १ )  
सगोत्र ( २ ) बान्धव ( ३ ) ज्ञाति ( ४ ) बन्धु  
( ५ ) स्व ( ६ ) स्वजन । ये समान अर्थ और  
समान लिङ्ग ( पुं० ) वाले हैं ॥ ३४ ॥

( एकैकं ज्ञातिभावस्य, बन्धुसमूहस्य च )

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भाव-समूहयोः ।

ज्ञाति-भाव का नाम—( १ ) ज्ञातेय ( नपुं० ) ।  
बन्धु-समूह का नाम—( १ ) बन्धुता ( स्त्री० ) ।

( चत्वारि पत्युः )

धवः प्रियः पतिर्भर्ता

पति के ४ नाम—( १ ) धव ( २ ) प्रिय  
( ३ ) पति ( ४ ) भर्तृ ।

( द्वे मुख्यादन्यस्य भर्तुः )

जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥

यार, गुप्तपति के २ नाम—( १ ) जार  
( २ ) उपपति ॥ ३५ ॥

( एकं जीवति पत्यौ जारजातस्य )

अमृते जारजः कुरण्डः

अपति के रहते उपपति से उत्पन्न सन्तान  
का नाम—( १ ) कुरण्ड ।

( एक विधवायां जारजातस्य )

मृते भर्तरि गोलकः ।

३ पञ्चपुराण में लिखा है—

मुनीश ! जातय प्रोक्ता धर्मशास्त्रेषु सर्वत ।

सपिण्डा गोत्रसम्बन्धप्रवरस्थानदायिनः ॥

येषां जन्मविरामादिमृतकारौचवृत्तयः ।

दायित्वेन भवेयुस्ते ज्ञातयश्चैकवराणा ॥

‘बन्धु’ के लिए गौतमधर्मसूत्र ( ४, ३, ५, ६, ३ ) और  
आपस्तम्बधर्मसूत्र ( २, ५, ११, १७ ) देखिए ।

१ विधवा के जार से उत्पन्न पुत्र का नाम—  
( १ ) गोलक ।

( द्वे भ्रातृपुत्रस्य )

**भ्रात्रीयो भ्रातृजः**

भतीजा के २ नाम—( १ ) भ्रात्रीय ( २ ) भ्रातृज ।

( द्वे भ्रातृ-भगिन्योः )

**भ्रातृ-भगिन्यौ भ्रातराबुभौ ॥३६॥**

भाई-बहिन के २ नाम—( १ ) भ्रातृ-भगिन्यौ ( २ ) भ्रातरौ । यहाँ भाई और बहिन दोनों का ग्रहण होने से द्विवचन है ॥३६॥

( चत्वारि माता-पित्रोः )

**मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ ।**

माता-पिता के संयुक्त ४ नाम—( १ ) माता-पितरौ ( २ ) पितरौ ( ३ ) मातरपितरौ ( ४ ) प्रसूजनयितारौ ।

( द्वे श्वश्रू-श्वशुरयोः )

**श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ**

सास-ससुर के संयुक्त २ नाम—( १ ) श्वश्रूश्वशुरौ ( २ ) श्वशुरौ ।

( एकं कन्या-पुत्रयोः )

**पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥३७॥**

बेटा-बेटी का संयुक्त नाम—( १ ) पुत्रौ । ३७ ।

( चत्वारि जायापत्योः )

**दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ ।**

पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष, जोरु-खसम के संयुक्त ४ नाम—( १ ) दम्पती ( २ ) जम्पती ( ३ ) जायापती ( ४ ) भार्यापती । ( १-४ ) शब्द द्विवचनान्त पुल्लिङ्ग में होते हैं ।

( त्रीणि गर्भवेष्टनचर्मणः )

**गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्यं च**

जिसमें गर्भस्थ बालक बँधा हुआ होता है

३, १ परदारसु जायेते द्वौ सुतौ कुण्ड-गोलकौ ।

पत्यौ जीवति कुण्डः स्यान्मृते मर्तरि गोलकः ॥

—मनुस्मृतिः ( ३, १७४ )

उस फिल्ली ( आँवल या खेड़ी ) के ३ नाम—  
( १ ) गर्भाशय ( २ ) जरायु ( ३ ) उल्व ।

( एकं मिश्रितशुक्रशोणितरूपगर्भस्य )

**कललोऽस्त्रियाम् ॥३८॥**

प्रथम दिन वीर्य और रज के संयोग से जिस सूक्ष्म पिरण्ड की सृष्टि होती है, उसका नाम—  
( १ ) कलल । यह पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥ ३८ ॥

( द्वे प्रसवमासस्य )

**सूतिमासो वैजननः**

प्रसवमास ( गर्भस्थ बालक के पैदा होने के ६ वें या १० वें महिने ) के २ नाम—( १ ) सूतिमास ( २ ) वैजनन ।

( द्वे कुक्षिस्थस्य प्राणिनः )

**गर्भो भ्रूण इमौ समौ ।**

हमल, गर्भ के २ नाम—( १ ) गर्भ ( २ ) भ्रूण । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( पञ्च नपुंसकस्य )

**तृतीयाप्रकृतिः षण्ढः क्लीवः परण्डो नपुंसके ३६**

रहिजड़ा, नामर्द के ५ नाम—( १ ) तृतीया-प्रकृति ( २ ) षण्ढ ( ३ ) क्लीव ( ४ ) परण्ड ( ५ ) नपुंसक । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग, ( २, ४ ) पुल्लिङ्ग, ( ३, ५ ) पुल्लिङ्ग और नपुंसक, में होते हैं ॥ ३६ ॥

( त्रीणि शैशवस्य )

**शिशुत्वं शैशवं बाल्यम्**

लड़कपन के ३ नाम—( १ ) शिशुत्व ( २ ) शैशव ( ३ ) बाल्य । ये ( १-३ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे यौवनस्य )

**तारुण्यं यौवनं समे ।**

जवानी, तरुणाई के २ नाम—( १ ) तारुण्य

२ उदाहृतत्वे—

न मूत्र कणिल यस्य विष्ठा वाप्सु निमज्जति ।

मेदश्चोन्मादशुक्राभ्यां हीन क्लीवः स उच्यते ॥

( २ ) यौवन । ये ( १-२ ) नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ।-

( त्रीणि वार्धकस्य, एकं वृद्धसमूहस्य च )  
स्यात्स्याविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् २०

बुढ़ापा, वृद्धावस्था के ३ नाम—( १ )  
स्थाविर ( २ ) वृद्धत्व ( ३ ) वार्धक ।

वृद्धों के समूह का नाम—( १ ) वार्धक ॥ ४० ॥

( एकं पलितस्य )

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ

बुढ़ापा के कारण बाल, रोएँ आदि के पकने  
( सफेद होने ) का नाम—( १ ) पलित । यह  
पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ।

( द्वे जरायाः )

विस्त्रसा जरा ।

बुढ़ाई के २ नाम—( १ ) विस्त्रसा ( २ )  
जरा । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( चत्वारि स्तनन्धयस्य )

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी ४१

दूध पीने वाले बच्ची-बच्चे के ४ नाम—  
( १ ) उत्तानशया ( २ ) डिम्भा ( ३ ) स्तनपा  
( ४ ) स्तनन्धयी । ये ( 'त्रिषु जरावरा' ४६ वाँ  
श्लोक ) और आगे के सब शब्द तीनों लिङ्ग में  
कहे जायेंगे । यहाँ जो स्त्रीत्व है वह स्त्रीत्व में  
रूप-भेद के प्रदर्शन के लिए है । यद्यपि 'डिम्भा'  
शब्द पहले ( सिंहादिवर्ग, श्लोक ३८ में ) लिख  
आये हैं तथापि पुनः यहाँ स्त्रीलिङ्ग में रूप दिख-  
लाने के लिए लिखा है ॥ ४१ ॥

( द्वे बालस्य )

बालस्तु स्यान्माणवकः

सोलह वर्ष की उम्र तक के बालक के २  
नाम—( १ ) बाल ( २ ) माणवक ।

१ 'बाल' के सम्बन्ध में कहा गया है—

'आपोटश भवेद्बालः तरुणस्तत उच्यते ।'

एक आचार्य के मत से—

'आपण्वर्षाद्वा स्यात्तौगण्ड नववर्षतः ।

( त्रीणि यूनः )

वयस्थस्तरुणो युवा ।

जवान आदमी के ३ नाम—( १ ) वय-  
स्थ ( २ ) तरुण ( ३ ) युवन् ।

( षट् वृद्धस्य )

प्रवयाः स्थावरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ४२

बुढ़ा के ६ नाम—( १ ) प्रवयस् ( २ )  
स्थविर ( ३ ) वृद्ध ( ४ ) जीन ( ५ ) जीर्ण  
( ६ ) जरत् ॥ ४२ ॥

( त्रीण्यतिवृद्धस्य )

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्

बहुत बुढ़ा के ३ नाम—( १ ) वर्षीयस् ( २ )  
दशमिन् ( ३ ) ज्यायस् ।

( त्रीणि ज्येष्ठभ्रातुः )

पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।

बड़े ( जेठे ) भाई के ३ नाम—( १ ) पूर्वज  
( २ ) अग्रिय ( ३ ) अग्रज ।

( पञ्च कनिष्ठभ्रातुः )

जघन्यजे स्युः कनिष्ठ-यवीयोऽवरजाऽनुजाः ४३

छोटे ( लहुरे ) भाई के ५ नाम—( १ )  
जघन्यज ( २ ) कनिष्ठ ( ३ ) यवीयस् ( ४ )  
अवरज ( ५ ) अनुज ॥ ४३ ॥

( त्रीणि निर्बलस्य )

अर्मासो दुर्वलश्छातः

कमज़ोर ( दुबला-पतला ) के ३ नाम—( १ )  
अर्मास ( २ ) दुर्वल ( ३ ) छात ।

आपोडशाच्च कैशोर यौवन च ततः परम् ॥'

१ 'बाल' के सम्बन्ध में राजनिघण्टु में लिखा है—

'बालेति गीयते नारी यावद्वर्षाणि षोडश ।

सा ग्रीष्म-शरत्कालयोः प्रशस्ता हर्षदा च ॥'

२ सोलहवर्ष के बाद से ५० वर्ष तक की उम्रवाला  
व्यक्ति, राजनिघण्टु के अनुसार, युवा है । और १६  
वर्ष के बाद ३२ वर्ष तक की स्त्री, भावप्रकारा के अनु-  
सार, युवती है ।

३ राजनिघण्टु के अनुसार ५१ वें वर्ष से वृद्धावस्था  
शुरू होती है ।

( त्रीणि बलवतः )

बलवान्मांसलोऽसलः ।

बलवान् ( मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट ) के ३ नाम—( १ ) बलवत् ( २ ) मांसल ( ३ ) अंसल ।

( पञ्च स्थूलोदरस्य )

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचरिडलः

तौदवाले, निकले हुए पेटवाले व्यक्ति के ५ नाम—( १ ) तुन्दिल ( २ ) तुन्दिभ ( ३ ) तुन्दिन् ( ४ ) बृहत्कुक्षि ( ५ ) पिचरिडल ॥४४॥

( चत्वारि चिपिटनासिकस्य )

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।

नक-चिपटा आदमी के ४ नाम—( १ ) अवटीट ( २ ) अवनाट ( ३ ) अवभ्रट ( ४ ) नतनासिक ।

( त्रीणि प्रशस्तकेशस्य, स्थूलकेशस्य वा )

केशवः केशिकः केशी

सुन्दर बाल या लम्बे बालवाले व्यक्ति के ३ नाम—( १ ) केशव ( २ ) केशिक ( ३ ) केशिन् ।

( द्वे जरया इलथचर्मणः )

बलिनो बलिभः समौ ॥४५॥

बुढ़ाई के कारण शिकन ( सिकुड़न ) पड़े हुए चमड़े वाले व्यक्ति के २ नाम—( १ ) बलिन ( २ ) बलिभ । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥ ४५ ॥

( द्वे निसर्गतो न्यूनाधिकावयवस्य )

विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः ।

जिसके स्वाभाविक ही कोई अङ्ग कम या ज्यादा हों उसके २ नाम—( १ ) विकलाङ्ग ( २ ) अपोगण्ड ।

( त्रीणि ह्रस्वस्य )

खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।

बौना, नाटा आदमी के ३ नाम—( १ ) खर्व ( २ ) ह्रस्व ( ३ ) वामन ।

( द्वे तीक्ष्णनासिकस्य )

खुरणाः स्यात्खुरणसः

खड़ी नाक वाले व्यक्ति के २ नाम—( १ )

खुरणस् ( २ ) खुरणस ।

( द्वे गतनासिकस्य )

विग्रस्तु गतनासिकः ॥४६॥

नकटा ( जिसकी नाक कट गयी हो उस ) के २ नाम—( १ ) विग्र ( २ ) गतनासिक ॥४६॥

( द्वे पशुखुरसदृशनासिकस्य )

खुरणाः स्यात्खुरणसः

पशुओं के खुर की तरह फैली हुई नाकवाले आदमी के २ नाम—( १ ) खुरणस् ( २ ) खुरणस ।

( द्वे वातादिना विरलजानुकस्य )

प्रभुः प्रगतजानुकः ।

टेढा मेढा घुटनावाले ( लचरा ) व्यक्ति के २ नाम—( १ ) प्रभु ( २ ) प्रगतजानुक ।

( द्वे ऊर्ध्वजानुकस्य )

ऊर्ध्वबुध्वजानुः स्यात्

ऊँचे घुटनेवाले व्यक्ति के २ नाम—( १ ) ऊर्ध्वजु ( २ ) ऊर्ध्वजानु ।

( द्वे संलग्नजानुकस्य )

संजुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

मिले हुए जाघवाले पुरुष के २ नाम—( १ ) संजु ( २ ) संहतजानुक ॥४७॥

( द्वे श्रवणेन्द्रियहीनस्य )

स्यादेडे वधिरः

बहिरा आदमी के २ नाम—( १ ) एड ( २ ) वधिर ।

( द्वे कुब्जस्य )

कुब्जे गडुलः

<sup>१</sup>कुबड़ा (वह पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो या मुक गयी हो) के २ नाम—( १ ) कुब्ज ( २ ) गडुल ।

१ इसका लक्षण माधवनिदान में लिखा गया है कि—  
'हृदय यदि वा पृष्ठमुज्जत क्रमशः सरुक् ।  
क्रद्धो वायुर्यदा कुर्यात्तदा तत्कुब्जमादिशेत् ॥' ।

( द्वे रोगादिना चक्रकरस्य )

कुकरे कुणिः ।

टूटे के २ नाम—( १ ) कुकर ( २ ) कुणि ।  
ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे अल्पशरीरस्य )

पृश्निरल्पतनौ

छोटी देहवाले के २ नाम—( १ ) पृश्नि ( २ ) अल्पतनु । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे जंवाविकलस्य )

श्रोणः पङ्क्तौ

पङ्कुले के २ नाम—( १ ) श्रोण ( २ ) पङ्कु ।

( द्वे कृतवपनस्य )

मुण्डस्तु मुरिडते ॥४८॥

मुँड़े हुए, घुटे हुए के २ नाम—( १ ) मुण्ड  
( २ ) मुरिडत ॥४८॥

( द्वे नेत्रवियुक्तस्य )

वलिरः केकरे

कजा, भेंगा, ऐंचा के २ नाम—( १ ) वलिर  
( २ ) केकर ।

( द्वे गतिविकलस्य )

खोडे खञ्जः

१ लङ्ग के २ नाम—( १ ) खोड ( २ ) खञ्ज ।

त्रिषु जरावराः ।

‘जरा’ शब्द के बाद ‘उत्तानशया’ ( श्लोक ४१वाँ ) से लेकर ‘खञ्ज’ पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे कृष्णवर्णस्य देहगतचिह्नविशेषस्य )

जडुलः कालकः पिप्पुः

लहसन, महोसा ( शरीर के ऊपर, जन्म से उत्पन्न चिह्न विशेष ) के ३ नाम—( १ ) जडुल  
( २ ) कालक ( ३ ) पिप्पु ।

१ खञ्ज एक प्रकार का रोग होता है, जिसमें मनुष्य का पैर जकड़ जाता है और वह चल फिर नहीं सकता । वैद्यक के अनुसार इस रोग में कमर की वायु जाँघ की नमों को पकड़ लेती है, जिससे पैर स्तम्भित हो जाता है ।—

( माधवनिदान )

( द्वे आकृतितो वर्णतश्च कृष्णतिलतुल्यस्य देहगतचिह्नस्य )

तिलकस्तिलकालकः ॥४९॥

तिल ( काले-काले शरीर के दाग ) के २ नाम—  
( १ ) तिलक ( २ ) तिलकालक ॥४९॥

( द्वे रोगभावस्य )

अनामयं स्यादारोग्यम्

नीरोग्य, रोगहीनता ( तन्दुरुस्ती ) के २ नाम—( १ ) अनामय ( २ ) आरोग्य ।

( द्वे रोगप्रतीकारस्य )

चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।

२ इलाज ( रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया ) के २ नाम—( १ ) चिकित्सा ( २ ) रुक्प्रतिक्रिया ।

( पञ्चौषधस्य )

मेषजौषध-मैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥५०॥

दवा के ५ नाम—( १ ) मेषज ( २ ) औषध ( ३ ) मैषज्य ( ४ ) अगद ( ५ ) जायु ।  
इनमें ( १-३ ) नपुंसक, ( ४-५ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥५०॥

( सप्त रोगमात्रस्य )

रुजो रुजुजा चोपताप-रोग-व्याधि-गदाऽऽमयाः

३ बीमारी, रोग, व्याधि के ७ नाम—( १ ) रुज् ( २ ) रुजा ( ३ ) उपताप ( ४ ) रोग ( ५ )

२ आयुर्वेद के दो विभाग हैं, एक तो निदान जिसमें पहचान के लिए रोगों के लक्षण आदि का वर्णन रहता है और दूसरा चिकित्सा जिसमें भिन्न-भिन्न रोगों के लिए भिन्न-भिन्न औषधों की व्यवस्था रहती है । चिकित्सा तान प्रकार की मानी गयी है—दैवी, मानुषी, और आसुरी । जिसमें पारे की प्रधानता हो वह दैवी, जो द्र. रसों के द्वारा की जाय वह मानुषी, और जो चौरपाङ्क ( ‘आपरे-रान’ ) के द्वारा हो वह आसुरी कहलाती है ।

भावप्रकाश में लिखा है—

‘या क्रिया व्याधिहरणो सा चिकित्सा निगद्यते ।’

सा त्रिधा यथा—

आसुरी मानुषी दैवी चिकित्सा त्रिविधा मता ।

रुस्त्रै कपायैर्लोहाद्यै क्रमेणान्या सुपूजिता ॥ ( भै० २० )

३ ‘रोगस्तु दोषवपम्य, दोषमान्यमरोगता ।’

व्याधि ( ६ ) गद ( ७ ) आमय । इनमें ( १-२ )  
स्त्रीलिङ्ग, ( ३-७ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि क्षयरोगस्य )

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च

<sup>१</sup>क्षयी रोग के ३ नाम—( १ ) क्षय ( २ )  
शोष ( ३ ) यक्ष्मन् । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे नासारोगस्य )

प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥५१॥

<sup>२</sup>पीनस रोग के २ नाम—( १ ) प्रतिश्याय  
( २ ) पीनस ॥५१॥

( त्रीणि क्षुत्तरोगस्य )

स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसि

<sup>३</sup>क्षीक के ३ नाम—( १ ) क्षुत् ( २ ) क्षुत  
( ३ ) क्षव । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग, ( २ रा )  
नपुंसक, ( ३ रा ) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे कासरोगस्य )

कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।

<sup>४</sup>खासी के २ नाम—( १ ) कास ( २ )  
क्षवथु । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

१ यक्ष्मा का निदान—

‘वेगरोधात् क्षयाच्चैव साहसाद्विषमारानात् ।  
त्रिदोषो जायते यक्ष्मा गदो हेतु चतुष्टयात् ॥’

यक्ष्मा शब्द की निरुक्ति—

‘वैद्यो व्याधिमता यस्माद्व्याधिर्यत्नेन यक्ष्यते ।

स यक्ष्मा प्रोच्यते लोके शब्दशास्त्रविशारदै ॥

राशश्चन्द्रमसो यक्ष्मादभूदेव किलामय ।

तस्मात्त राजयक्ष्मेति प्रवदन्ति मनीषिण ॥

क्रियाक्षयकरत्वात् क्षय इत्युच्यते बुधै ।

सरोपणाद्बलादीनां शोष इत्यभिधीयते ॥’

२ क्षुत् के अनुसार पीनस रोग का लक्षण—

आनक्षते यस्य विधूयते च पापच्यते क्षियति चापि नासा ।

न वेत्ति यो गन्धरसाश्च जन्तुर्जुष्ट व्यस्येत् तमपीनसेन ॥

तथाविलश्लेष्मभव विकार मृत्वात् प्रतिश्यायसमानलिङ्गम् ।’

३ शार्ङ्गधरसहिता में लिखा है—

‘उदानप्राणयोरुर्ध्वयोगान्मौलिकफस्तवात् ।

शब्द सञ्जायते तेन क्षुत् तत्कथ्यते बुधै ॥’

४ भावप्रकाश में लिखा है—

( त्रीणि शोथस्य )

शाफस्तु श्वयथुः शोथः

<sup>५</sup>सूजन के ३ नाम—( १ ) शोफ ( २ )  
श्वयथु ( ३ ) शोथ । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे पादस्फोटस्य )

पादस्फोटो विपादिका ॥५२॥

<sup>६</sup>विवाई के २ नाम—( १ ) पादस्फोट ( २ )  
विपादिका । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग, और ( २ रा )  
स्त्रीलिङ्ग है ॥५२॥

( द्वे सिध्मस्य )

किलास-सिध्मे

<sup>७</sup>सेहुआँ रोग के २ नाम—( १ ) किलास  
( २ ) सिध्म । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( चत्वारि क्षुद्रकुष्ठरोगविशेषस्य )

कच्छा तु पाम पामा विचर्चिका ।

‘धूमोपघाताद्रजसरतथैव व्यायामरुक्षान्निषेवनाच्च ।  
विमार्गगत्वादपि सोजनस्य वेगावरोधात् क्षवथोस्तथैव ॥  
प्राणो ह्युदानानुगतः प्रदिष्ट सम्भिन्नकास्यस्वनतुल्यधोप ।  
निरेति वक्त्रात्सहसा सदोषो मनोपिभिः कास इति प्रदिष्टः ॥’

५ सुश्रुतसहिता में लिखा है—

‘शुद्धयामयाऽमुक्तकृशाबलानां क्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरुपसेवा ।  
दध्याममृच्छाक विरोधि-पिष्ट-गरोपसृष्टान्ननिषेवणाच्च ॥  
अर्शास्यचेष्टा वपुषो ह्यशुद्धिर्मर्माभिघातो विपमा प्रसूतिः ।  
मिथ्योपचार प्रतिकर्मणाच्च निजस्य हेतु इवयथोः प्रदिष्टः ॥

६ सुश्रुतसहिता के कथनानुसार विवाई का लक्षण—

‘स्विन्नस्यास्नाप्यमानस्य कण्ठ रक्तकफोद्भवा ।

कण्ठ्यनात्तत क्षिप्र स्फोट स्रावश्च जायते ॥’

कहा जाता है कि—‘जाके पॉव न फटी विवाई, सो  
क्या जाने पीर पराई ।’

७ सुश्रुतसहिता के अनुसार श्मका लक्षण—

‘कण्ठवन्वितं श्वेतमपायि सिध्म विधातनुप्रायश ऊर्ध्वकाये ।’

माषवनिदान में लिखा है—

‘श्वेत ताम्र तनु च यत् रजो घृष्ट विमुषति ।

प्रायश्चोरसि तत् सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ॥’

१खाज-खसरा के ४ नाम—(१) कच्छू (२) पामन् (३) पामा (४) विचर्चिका । इनमें (२ रा) नपुंसक है, और शेष स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि गात्रविघर्षणस्य )

कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया

खुजली के ३ नाम—(१) कण्डू (२) खर्जू (३) कण्डूया । ये (१-३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे दुष्टस्फोटस्य )

विस्फोटः पिट्कस्त्रिषु ॥५३॥

२फोड़ा के २ नाम—(१) विस्फोट (२) पिट्क । इनमें (१ ला) पुल्लिङ्ग में, और (२ रा) पुं०-स्त्री-नपुं० लिङ्ग में होता है ॥५३॥

( त्रीणि व्रणस्य )

व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीवे

३घाव के ३ नाम—(१) व्रण (२) ईर्म

१ माधवनिदान और सुश्रुत निदानस्थान अ० १३ के कथनानुसार—

‘सूक्ष्मा बह्व्य पिडका स्नावत्य पामेत्युक्ता कण्डुमत्य सदाह ।

सैब स्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेता श्लेया पाणयो कच्छुरुग्रास्त्रिचोश्वा ।’

‘राज्योऽतिकण्ड्वर्त्तिरुजः सुरुक्षा भवन्ति गात्रेषु विचर्चिकायाम् हिन्दी का मुहाविरा ‘कोढ़ में खाज निकलना’ सुप्रसिद्ध है । गो० तुलसीदास जी कहते हैं—‘एक तो कराल कलिकाल सूल मूल तामें, कोढ़ में की खाज सी सनी-चरी है मौन की ।’

२ तस्य निदानपूर्वा सम्प्राप्तिमाह—

‘कटुम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरुक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च ।’

तथर्तुदोषेण विपर्ययेण कुप्यन्ति दोषाः पवनादयस्तु ॥

त्वचमाश्रित्य ते रक्त मासारथीनि प्रदूष्य च ।

पोरान् कुर्वन्ति विस्फोटान् सर्वाञ्ज्वरपुरःसरान् ॥ भा प्र. ३ सुश्रुतसंहितायाम्—

‘व्रणः द्विविधः (१) शारीर (२) आगन्तुश्चेति । तयो

शारीरः पवन-पित्त-कफ-शोणित-सन्निपातनिमित्त ।

आगन्तुरपि पुरुषपशुपक्षिम्यालसरीसृप-पीडनप्रहारा-

प्रिघारविषतीक्ष्णौषधराक्षसकपालशृङ्गचक्रेषु-परशु-शक्तिकुन्ता-

बाधुषाणमिषातनिमित्तः ।’

( ३ ) अरुस् । इनमें (१) पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में, (२-३) नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ।

( एकं सदा गलतो व्रणस्य )

नाडीव्रणः पुमान् ।

४नासूर का नाम—(१) नाडीव्रण (पुल्लिङ्ग) (द्वे पिट्कवन्मण्डलयुक्तक्षुद्ररोगान्तर्गतचर्मरोगस्य) कोठो मण्डलकम्

५एक प्रकार का कोढ़ जो चकते की तरह होता है उसके २ नाम—(१) कोठ (२) मण्डलक ।

( द्वे श्वेतकुष्ठस्य )

कुष्ठ-श्वित्रे

६सफेद कोढ़ के २ नाम—(१) कुष्ठ (२) श्वित्र । ये (१-२) नपुंसक हैं ।

( द्वे अर्शाख्यगुदरोगविशेषस्य )

दुर्नामकाऽर्शसी ॥५४॥

४ वाग्मट्ट में लिखा है—

अभेदात्पक्रोफस्य व्रणे चापथ्यसेविनः ।

अनुप्रविश्य मासादीन् दूर पूयोऽभिधावति ॥

गति सा दूरगमनाच्च नाडी नाडीव सन्नुते ।

नाभ्येकान्जुरन्येषां सैवानेकगतिर्गति ॥

५ तस्य लक्षण माधवनिदाने —

‘असम्यग्बमनोदीर्घपित्तश्लेष्मान्ननिग्रहैः ।

मण्डलानि सकण्डूनि रागवन्ति बहूनि च ॥

उत्कोठ सानुबन्धस्तु कोठ इत्यभिधीयते ।’

६ सुश्रुतसंहिता में लिखा है—

‘मिथ्याहारविहाराचारस्य विशेषाद्गुरुविरुद्धामात्म्या-जीर्णाहिताशिनः स्नेहपीतस्य वान्तस्य वा व्यायामग्राम्य-धर्मसेविनो ग्राम्यान्पौदकमासानि वा पयसाभीक्ष्णमशनतो यो वा मज्जत्यप्सूमाभितप्त सहसा हर्दि वा प्रतिहन्ति तस्य पित्तश्लेष्माणौ प्रकुपितौ परिगृह्यानि ल प्रवृद्धस्ति-ज्यैर्गा शिरा सम्प्रतिपद्य समुद्भूय बाह्य मार्गं प्रति समन्ता-द्विचिपति, यत्र यत्र च दोषो विचिस्रो नि सरति, तत्र तत्र मण्डलानि प्रादुर्भवन्ति, एवमुत्पन्नस्त्वचि दोषस्तत्र च परिवृद्धि प्राप्याप्रतिक्रियमाणोऽन्यन्तरं प्रतिपद्यते धातु-न्दूपयन् ।



१ववासीर के २ नाम—( १ ) दुर्नामक  
( २ ) अर्शस् । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ॥ ५४ ॥

( द्वे विण्मूत्रनिरोधस्य )

आनाहस्तु विबन्धः स्यात्

क्रब्जियत ( मलवद्ध रोग ) के २ नाम—( १ )  
आनाह ( २ ) विबन्ध ।

( द्वे संग्रहणीरोगस्य )

ग्रहणीरुक् प्रवाहिका ।

२संग्रहणी के २ नाम—( १ ) ग्रहणीरुक्  
( २ ) प्रवाहिका । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि वमनरोगस्य )

प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमास्तु वमथुः समाः ५५

कै, उलटी, छोट, वमन के ३ नाम—( १ )  
प्रच्छर्दिका ( २ ) वमि ( ३ ) वमथु । इनमें  
( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं, और ( ३ रा ) पुल्लिङ्ग  
॥ ५५ ॥

( विद्रध्यादीनां रोगप्रमेदानां प्रत्येकमेकैकम् )

व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वर-मेह-३ भगन्दराः ।

१ अर्शनिदानम्—

‘दोषास्त्वङ्माममेदांसि सन्दूष्य विविधाकृतीन् ।  
मासाङ्कुरानपानादौ कुर्वन्त्यर्शांसि तां जगु ॥  
पृथग्दोषैः समस्तैश्च शोणितान्सहजानि च ।  
अर्शांसि पट् प्रकाराणि विद्याद्गुदवलित्रये ॥  
कर्मविपाकसंहितायाम्—

‘दत्त्वाथ वेतन योऽध्येत्यादायापि च वेतनम् ।

अध्यापयेच्च जुहुयाज्जपेद्वाऽर्शोयुतो भवेत् ॥’

२ सुश्रुत में लिखा है—

पष्ठी पित्तधरा नाम या कला परिकर्तिता ।

पक्वामाशयमध्यस्था ग्रहणी सा प्रकीर्तिता ॥

ग्रहणी बलमग्निर्हि स चापि ग्रहणी मत ।

तस्मादग्नौ प्रदुष्टे तु ग्रहण्यपि प्रदुष्यति ॥

३ किन्हीं २ पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—

( द्वे पादरोगविशेषस्य )

श्लीपदं पादवल्मीकम्

पैर फूलजाने के रोग के २ नाम—( १ ) श्लीपद  
( २ ) पादवल्मीक ।

( द्वे केशन्त्ररोगस्य )

केशान्त्रस्विन्दलसकः ।

४ व्यरथिया रोग का नाम—( १ ) विद्रधि  
( स्त्रीलिङ्ग )

५ बुखार का नाम—( १ ) ज्वर ( पुं० )

६ प्रमेह, बहुमूत्र रोग का नाम—( १ )  
मेह ( पुं० )

७ भगन्दर ( गुदारोग विशेष ) का नाम—( १ )  
भगन्दर ( पुं० )

( द्वे अश्मर्याः )

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्

८ पथरी रोग के २ नाम—( १ ) अश्मरी  
( २ ) मूत्रकृच्छ्र । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग,  
और ( २ रा ) नपुंसक है ।

चदलाई ( एक रोग का नाम जिसमें सिर के बाल  
उड़ जाते हैं और फिर नहीं जमते ) के २ नाम—( १ )  
केशघ्न ( २ ) इन्द्रलुप्तक ।

४ माधवनिदान में लिखा है—

‘त्वग्रक्तमांसमेदांसि सन्दूष्यास्थिसमाश्रिताः ।

दोषा शोथ शनैर्घोर जनयन्त्युच्छ्रितामृशम् ॥

महाशूल रुजावन्त वृत्त वाप्यथवायतम् ।

स विद्रधिरिति ख्यातो विज्ञेय पट्विधश्च सः ॥’

५ ज्वर कई प्रकार का होता है—साधारण, सक्षिपात  
आदि । इसके सम्बन्ध में कहा जाता है—

यथा मृगानां मृगयुर्वलिष्ठ तथा गदानां प्रकलो ज्वरोऽयम् ।  
नान्योऽपि शक्तो मनुज विहाय सोढुं भुवि प्राणमृतः सुराद्याः ।

६ माधवनिदान में प्रमेह के सम्बन्ध में कहा गया है—

आस्यासुख स्वप्नसुख दधीनि ग्रान्थोदकानूपरसाः पर्याप्ति ।  
नवान्नपान गुडवैकृतञ्च प्रमेहहेतुः कफकृच्च सर्वम् ।

मेदश्च मांसश्च शरीरजञ्च छेदं कफो वस्तिगतः प्रदूष्य ।  
करोति मेहान् समुदीर्णमुष्णैस्तानेन पित्त परिदूष्य चापि ॥

इत्यादि ।

७ भगुदवस्तिप्रदेशदारुणाङ्गन्दरा इत्युच्यन्ते ।

गुदस्य द्वयक्षुले क्षेत्रे पार्श्वतः विद्रकात्तिकृतः ।

मित्रो भगन्दरो ज्ञेयः स च पञ्चविधो मतः ॥ ५

८ असशोधनशीलस्यापथ्यकारिणः प्रकुपितः श्लेष्मा

मूत्रसम्पृक्तोऽनुप्रविश्य वस्तिमश्मरीं जनयति ।

कहा जाता है—अश्मरी दारुणो व्याधिरन्तकः प्रतिमो मतः ।

तरुणो भेषजैः साध्यः प्रवृद्धश्चेदमर्हति ॥

पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ॥५६॥

‘वार्त’ से आरम्भ होकर, शुक्र के पूर्व ‘मूर्च्छित’ ( श्लोक ६१ ) तक के शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥ ५६ ॥

( पञ्च वैद्यस्य )

रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ।

वैद्य के ५ नाम—( १ ) रोगहारिन् ( २ ) अगदङ्कार ( ३ ) भिषज् ( ४ ) वैद्य ( ५ ) चिकित्सक ।

( चत्वारि रोगमुक्तस्य )

वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात्

रोगमुक्त के ३ नाम—( १ ) वार्त ( २ ) निरामय ( ३ ) कल्य ( ४ ) उल्लाघ । ये ( १-४ ) पुं० स्त्री-नपुंसक में होते हैं । किन्हीं के मत से ( १-३ ) नीरोगी के नाम हैं और ( ४ था ) उस व्यक्ति का नाम है जिसका रोग छूट गया हो ॥ ५७ ॥

( द्वे रोगादिवशात् हर्षरहितस्य )

ग्लान-ग्लास्तू

रोग से दुःखी के २ नाम—( १ ) ग्लान

१ वैद्यलक्षणम्—

आयुर्वेदकृताभ्यासो धर्मशास्त्रपरायण ।

अध्याप्योऽध्यापनञ्चैव चिकित्सा वैद्यलक्षणम् ॥

सद्वैद्यलक्षणम्—

विप्रो वैद्यरूपारगः शुचिरनूचान कुलीन कृती  
धीर कालकलाविदोऽऽस्तिकमतिर्दक्षः सुधीर्धार्मिक ।

स्वाचारः समदृग्दयालुरखलो यः सिद्धमन्त्रजम्.  
शान्तः काममलोलुप कृतयशा वैद्य स विद्योत्तरे ॥

कुवैद्यलक्षणम्—

अधीरः कर्करा स्तब्धः सरोगी न्यूनशिक्षित ।

पथं वैद्या न पूज्यन्ते धन्वन्तरिस्मा अपि ॥

अपि च मैषज्यरत्नावल्याम्—

अशपेस्तत्त्वपरिज्ञान वेदनायाश्च निग्रहः ।

एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्य प्रमुरायुष ॥

एक कवि वैद्यजी को नमस्कार कर कहते हैं—

वैद्यराज ! नमस्तुभ्य यमराजसहोदर ।

यमस्तु प्राणान्धरते वैद्यः प्राणान्धनानि च ॥

( २ ) ग्लास्तू । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( सप्त रोगिणः )

ग्रामयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।

आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः

रोगी के ७ नाम—( १ ) ग्रामयाविन् ( २ ) विकृत ( ३ ) व्याधित ( ४ ) अपटु ( ५ ) आतुर ( ६ ) अभ्यमित ( ७ ) अभ्यान्त । ये ( १-७ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे पामायुक्तस्य )

समौ पामन-कच्छुरौ ॥५८॥

खाज-खसरावाले के २ नाम—( १ ) पामन ( २ ) कच्छुर । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥ ५८ ॥

( द्वे दद्रुयुक्तस्य )

दद्रुणो दद्रुरोगी स्यात्

दादवाले के २ नाम—( १ ) दद्रुण ( २ ) दद्रुरोगिन् । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे अशोयुक्तस्य )

अशोरो गयुतोऽर्शसः ।

वचासीर वाले के २ नाम—( १ ) अशोरो ग-युत ( २ ) अर्शस । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे वातरोगयुक्तस्य )

वातकी वातरोगी स्यात्

वायुरोग ( वादी ) वाले के २ नाम—( १ ) वातकिन् ( २ ) वातरोगिन् । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे अतिसारयुक्तस्य )

सातिसारोऽतिसारकी ॥५९॥

संग्रहणी रोगवाले के २ नाम—( १ ) साति-सार ( २ ) अतिसारकिन् । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥ ५९ ॥

( चत्वारि क्लिन्नेत्ररोगयुक्तस्य )

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्ल-चिल्ल-पिल्लाः क्लिन्नेऽक्षि चाप्यमी ।

चोंधराई आँख वाले ( जिसकी आँख में से पीव की तरह पदार्थ निकला करता है उस ) के ४ नाम—( १ ) क्लिन्नाक्ष ( २ ) चुल्ल ( ३ ) चिल्ल ( ४ ) पिल्ल । ये ( १-४ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे उन्मादयुक्तस्य )

उन्मत्त उन्मादवत्ति

बौरहा, पागल के २ नाम—( १ ) उन्मत्त ( २ ) उन्मादवत् । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( त्रीणि कफयुक्तस्य )

श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफो ॥६०॥

कफ ( बलगम ) वाले के ३ नाम—( १ ) श्लेष्मल ( २ ) श्लेष्मण ( ३ ) कफिन् । ये ( १-३ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥६०॥

( एकं कुब्जस्य )

न्युब्जो भुग्ने रुजा

कुवड़ा ( जिसकी पीठ रोग से टेढ़ी हो और मुँह नीचे की ओर झुक जाता है उस ) का नाम—( १ ) न्युब्ज । यह पुं-स्त्री-नपुंसक में होता है ।

( त्रीणि वातादिनोष्ठनाभियुक्तपुरुषस्य )

वृद्धनाभौ तुन्दिल-तुन्दिभौ ।

वायु के प्रकोप के कारण जिसकी नाभि बड़ जाती है उस पुरुष के ३ नाम—( १ ) वृद्धनाभि ( २ ) तुन्दिल ( ३ ) तुन्दिभ । ये ( १-३ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे क्षुद्रकुष्ठरोगयुक्तपुरुषस्य )

किलासी सिध्मलः

सेहुआँ के २ नाम—( १ ) किलासिन् ( २ ) सिध्मल । ये ( १-२ ) तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे नेत्रहीनस्य )

अन्धोऽहक्

अन्धा के २ नाम—( १ ) अन्ध ( २ ) अहक् । ये ( १-२ ) तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

( त्रीणि मूर्च्छायुक्तस्य )

मूर्च्छाले मूर्त मूर्च्छितौ ॥६१॥

गश में पड़े हुए, बेहोश के ३ नाम—( १ ) मूर्च्छाल ( २ ) मूर्त ( ३ ) मूर्च्छित । ये ( १-३ ) तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥ ६१ ॥

( षट् रेतसः )

शुक्रं तेजो-रेतसी च बीज-वीर्येन्द्रियाणि च ।

१वीर्य, धातु के ६ नाम—( १ ) शुक्र ( २ ) तेजस् ( ३ ) रेतस् ( ४ ) बीज ( ५ ) वीर्य ( ६ ) इन्द्रिय । ये ( १-६ ) नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे पित्तस्य )

मायुः पित्तम्

२पित्त के २ नाम—( १ ) मायु ( २ ) पित्त । इनमें ( १ ला ) पुंलिङ्ग और ( २ रा ) नपुंसक है ।

( द्वे कफस्य )

कफः श्लेष्मा

१ हमारे खाए हुए भोजन का अन्तिस परिणाम वीर्य ही है । हम जो कुछ खाते-पीते हैं, उसी में से क्रमशः रस, खून मांस, चर्बी, अस्थि, मज्जा और वीर्य बनता है । भावप्रकाश में लिखा है—

रसाद्रक्तं, ततो मांसं, मांसाग्नेदं प्रजायते ।

मेदसोऽस्थि, ततो मज्जा, मज्जनं शुक्रस्य सम्भव ॥

खाये भोजन का, एक मान और ६ घड़ी बाद वीर्य बनता है । २० रतल खुराक में से २ रतल खून बनता है और २ रतल खून से २॥ तोला वीर्य बनता है । दो मन भोजन जितने दिनों में मनुष्य खाता है, उतने ही दिनों में यह २॥ तोला वीर्य पैदा होता है । यदि ताजे शुक्र की ज़ख्खुबीचण यन्त्र ( Microscope ) द्वारा, परीक्षा का जावे तो उसमें बड़ी फुरती से इधर उधर फिरते हुए कीट सदृश चीज दिखाई देंगी । इसको शुक्राणु या शुक्रकीट कहते हैं । ( देखिए हमारे शरीर की रचना, द्वितीयभाग, पृष्ठ ७६५ ) ।

२ यकृत में जो पाचक रस बनता है उसको पित्त कहते हैं । पित्त के ५ प्रकार—पाचक पित्त, रजक पित्त, साधक पित्त, आलोचक पित्त और आजक पित्त ।

<sup>१</sup>कफ के २ नाम—( १ ) कफ ( २ ) श्लेष्मन् । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे चर्मणः )

स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥

<sup>२</sup>चाम, खाल के २ नाम—( १ ) त्वच् ( २ ) असृग्धरा । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ६२ ॥

( षट् मांसस्य )

पिशितं तरसं मांसं पल्लं क्वयमामिषम् ।

<sup>३</sup>मांस के ६ नाम—( १ ) पिशित ( २ ) तरस ( ३ ) मांस ( ४ ) पल्ल ( ५ ) क्वय ( ६ ) आमिष ।

( त्रीणि शुष्कमांसस्य )

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ६३

सूखा मांस के ३ नाम—( १ ) उत्तप्त ( २ ) शुष्कमांस ( ३ ) वल्लूर । इनमें ( १-२ ) नपुंसक, ( ३ रा ) पुं०-स्त्री-नपुंसक है ॥ ६३ ॥

( सप्त रक्तस्य )

राधरेऽसृग्लोहितान्न-रक्त-क्षतज-शोणितम् ।

<sup>४</sup>लोहू, खून के ७ नाम—( १ ) रुधिर ( २ ) असृज् ( ३ ) लोहित ( ४ ) अन्न ( ५ ) रक्त ( ६ ) क्षतज ( ७ ) शोणित । ये ( १-७ ) नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ।

<sup>१</sup> अवलम्बक इत्येकं क्लेदक श्लेष्मकोऽपरः ।

बोधकरतर्पकरचेति श्लेष्मा पञ्चविधः स्मृतः ॥

<sup>२</sup> हाड-पिण्डर के सबसे ऊपरी भाग को चाम कहते हैं । इसके द्वारा शरीर के भीतरी अङ्गों की रक्षा होती है । रसी में से पसीना निकलता है ।

<sup>३</sup> मांसस्वरूप—

शोणित स्वाग्निना पक्व वायुना च घनीकृतम् ।

तदेव मांसं जानीयात् ॥

रक्त में रहनेवाली अग्नि द्वारा पके और वायु द्वारा गाढ़ हुए रुधिर का नाम मांस है । रक्ताशय में गया हुआ रक्त, रक्त हो जाता है और मांस के स्थान में गया हुआ रुधिर, मांस बन जाता है ।

<sup>४</sup> रक्तस्वरूप शार्द्धरसहितायाम्—

रसस्तु हृदयं याति समानमावृतेति ।

रञ्जितः पातितस्तत्र पिचेनायाति रक्तायाम् ॥

( द्वे हृदयान्तर्गतमांसविशेषस्य )

बुक्काऽग्रमांसम्

<sup>५</sup>कलेजा के २ नाम—( १ ) बुक्का ( २ ) अग्र-मांस । इनमें ( १ ला ) पुं-स्त्री-नपुं०, ( २ रा ) नपुं० है ।

( द्वे हृदयस्य )

हृदयं हृत्

<sup>६</sup>हृदय के २ नाम—( १ ) हृदय ( २ ) हृत् । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( त्रीणि मेदस्य )

मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥

<sup>७</sup>चर्बी के ३ नाम—( १ ) मेदस् ( २ ) वपा ( ३ ) वसा । इनमें ( १ ला ) नपुं-पुं०, ( २-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ६४ ॥

( एकं त्रीवायाः पश्चाद्भागे स्थितशिरायाः )

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या

<sup>८</sup>गले के पीछे की नस का नाम—( १ ) मन्या ।

( त्रीणि धमन्याः )

नाडी तु धमनिः शिरा ।

रक्त सर्वशरीरस्थ जीवस्थाधारमुत्तमम् ।

स्निग्धं गुरु चल स्वादु विदग्धं पित्तवद्भवेत् ॥

अर्थात्—आमाशय से जब भोजन का रस कलेजे में जाता है, तब पित्त के सयोग द्वारा, वह रगदार धनता है । फिर परिपक्व हो जाने से इसे रक्त की सजा मिल जाती है । रक्त सारे शरीर में रहता है । यही जीव का सर्वोत्तम आहार है । यह स्निग्ध, भारी, गतिवाला तथा मधुर है ।

<sup>५</sup> 'बुक्कोऽथ पार्श्वभागे'—वैद्यकराशब्दसिन्धु ।

<sup>६</sup> रक्त परिचालक यन्त्र का नाम हृदय है । यह अग्नौष्णिक मांस से निर्मित है और दोनों फुफ्फुसों के बीच में वक्ष के भीतर रहता है । हृदय नियमानुसार सिकुड़ता और फैलता रहता है । फैलने पर उसमें रक्त का प्रवेश होता है और सिकुड़ने पर उसमें से रक्त बाहर निकलता है । सकोच और प्रसार से एक शब्द उत्पन्न होता है जो लूब-डप, लूब-डप जैसा सुनाई दिया करता है ।

<sup>७</sup> 'कारवन' और 'हाडोजन' के सयोग से चर्बी बनती है ।

<sup>८</sup> कानों के पीछे मध्यरेखा में जो शिर का नीचे का भाग है वह 'गुदी' ( Nape of neck ) कहलाता

१ नाडी के ३ नाम—( १ ) नाडी ( २ ) धमनि ( ३ ) शिरा । ये ( १-३ ) त्रीलिङ्ग हैं ।  
( द्वे मांसपिण्डविशेषस्य 'फुफ्फुस' इति ख्यातस्य )  
तिलकं क्लोम

२ क्लोम या फुफ्फुस के २ नाम—( १ ) तिलक ( २ ) क्लोमन् । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे मस्तकसम्भूतघृताकारस्नेहस्य )  
मस्तिष्कं गोर्दम्

३ गुरदा के २ नाम—( १ ) मस्तिष्क ( २ ) गोर्दम् ।

( द्वे कर्णादिगतमलस्य )

किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥६५॥

४ कान आदि के मल के २ नाम—( १ ) किट्ट ( २ ) मल । इनमें ( १ ला ) नपुंसकलिङ्ग में और ( २ रा ) पुंलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग में होता है ॥६५॥

( द्वे अन्नस्य )

अन्नं पुरीतत्

१ शरीर में रक्त, नलियों के भीतर रहता है । रक्त की नलियाँ दो प्रकार की हैं—( अ ) वे नलियाँ जिनकी दीवारें मोटी होती हैं और जिनके भीतर शुद्ध रक्त रहता है । इन्हें धमनियाँ कहते हैं ।

( व ) वे नलियाँ जिनकी दीवारें पतली होती हैं और जिनमें अशुद्ध रक्त रहता है । ये शिराएँ कहलाती हैं ।

२ भावप्रकाश में लिखा है—'अधस्तु दक्षिणे भागे हृदयात् क्लोम तिष्ठति ।' यह ग्रन्थि उदर में रीढ़ के सामने आमाशय और अन्न के पीछे रहती है । इसका रस एक नली द्वारा पकाशय में जाता है और भोजन को पचाता है ।

फुफ्फुस या फेफड़े ( Lungs ) दो होते हैं । वे छाती में हृदय के दाहिनी ओर बाईं ओर रहते हैं । भारतीयों के दोनों फुफ्फुसों का भार एक सेर के लगभग होता है ।

३ शिर के ऊपर का भाग भीतर से खोखला होता है, इसके भीतर मस्तिष्क या दिमाग रहता है । ऊपरी हिस्से पर कभी २ चिकनाहट लिए एक पदार्थ उत्पन्न होता है जिसे गुरदा कहते हैं ।

४ 'वमा शुक्रमसृक् मज्जा कर्णवियमूत्रविणखा ।

श्नेष्माश्रुपिका स्वेदो दादशैते नृणां मलाः ॥'

५ अन्न के २ नाम—( १ ) अन्न ( २ ) पुरीतत् । इनमें ( १ ला ) नपुंसक में, और ( २ रा ) पुंलिङ्ग—नपुंसक में होता है ।

( द्वे वामकुक्षिस्थमांसपिण्डविशेषस्य )

गुल्मस्तु प्लीहा पुंसि

६ तिल्ली के २ नाम—( १ ) गुल्म ( २ ) प्लीहन् । ये ( १-२ ) पुंलिङ्ग हैं । किसी २ आचार्य के मत से 'प्लीहा' शब्द त्रीलिङ्ग भी है ।

( द्वे अन्नप्रत्यङ्गसन्धिवन्धनरूपायाः स्नायोः )

अथ वस्नसा ।

स्नायुः स्त्रियाम्

७ नस, मास के डोरे के २ नाम—( १ ) वस्नसा ( २ ) स्नायु । ये ( १-२ ) त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे दक्षिणकुक्षिगतमांसपिण्डस्य )

कालखण्ड-यकृती तु समे इमे ॥६६॥

'पेट के दाहिने ओर का मासखण्ड (जिगर, जिसे अंग्रेजी में 'लिवर' Liver कहते हैं) के

५ अन्ननली में आमाशय के नीचे के भाग से जो नली जुड़ी हुई है, उसे अन्न कहते हैं । यह अन्न ३० फीट लम्बी होती है ।

६ प्लीहा या तिल्ली ( spleen ) उदर में बायीं ओर रहती है, कोई प्रणाली नहीं होती । ज्वरों में विशेष कर मलेरिया ज्वर ( मौसिमी बुखार ) और काला अजार में यह बहुत बढ़ी हो जाया करती है । स्वस्थ मनुष्य में इसका भार ५ छट्ठी के लगभग होता है । तिल्ली का काम खून को शुद्ध करना है ।

७ शरीर की प्रत्येक हरकत इन मास के डोरों द्वारा होती है । चलना, खाना, हाथ हिलाना, बोलना और आँख फेरना—इन सब शरीर के कामों में स्नायुओं की ही पारूरत होती है । शारीरिक तत्ववेत्ताओं का मत है कि शरीर में इनकी संख्या ५०० है ।

८ जिगर शरीर भर में सबसे बड़ा ग्रन्थि है और उदर के ऊपर के भाग वक्षउदरमध्यस्थ पेशी के नीचे पसलियों की आड़ में रहता है ।

'अथो दक्षिणतश्चापि हृदयाह्वयकृतस्थितिः ।

तत्तु रज्जकपित्तस्यास्थानं शोणितज मतम् ॥-

—( भा० प्र० )

२ नाम—( १ ) कालखण्ड ( २ ) यकृत । ये  
( १-२ ) नपुंसक हैं ॥६६॥

( त्रीणि लालायाः )

सृणिका स्यन्दिनी लाला ।

लार के ३ नाम—( १ ) सृणिका ( २ )  
स्यन्दिनी ( ३ ) लाला ।

( एकं नेत्रमलस्य )

दूषिका नेत्रयोर्मलम् ।

आँख के कीचड़ का नाम—( १ ) दूषिका ।

( द्वे मूत्रस्य )

मूत्रं प्रसावः

मूत्र, पेशाब के २ नाम—( १ ) मूत्र ( २ )  
प्रसाव । इनमें ( १ ला ) नपुंसक और ( २ रा )  
पुल्लिङ्ग है ।

( नव विद्यायाः )

उच्चारवस्करौ शमलं शकृत् ॥६७॥

गूथं पुरीषं वर्चस्कमस्त्री विष्टा-विशौ स्त्रियौ ।

गूह, पाखाना, विष्टा के ६ नाम—( १ ) उच्चार  
( २ ) अवस्कर ( ३ ) शमल ( ४ ) शकृत् ( ५ )  
गूथ ( ६ ) पुरीष ( ७ ) वर्चस्क ( ८ ) विष्टा ( ९ )  
विशौ । इनमें ( १-२ ) पुल्लिङ्ग, ( ३-६ ) नपुं-  
सक, ( ७ वाँ ) पुल्लिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग, ( ८-९ )  
त्रीलिङ्ग में होते हैं ॥ ६७ ॥

( द्वे शिरोस्थिखण्डस्य )

स्यात्कर्पूरः कपालोऽस्त्री

१ दाँतों की जड़ों से रस या लार-निकलती है और  
यही रस भोजन पचाने में सहायक होता है । इसीलिए  
वैद्यक ग्रन्थों में खूब चबा-चबा कर भोजन करने के लिए  
आदेश है ।

२ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—

( एक नासामलस्य )

नासामलं तु सिंघाणम्

नाक की मूँल, नकटी, का नाम—( १ ) सिंघाण ।

( एक कर्णमलस्य )

पिञ्जष कर्णयोर्मलम् ।

कान की मूँल, खूँट, का नाम—( १ ) पिञ्जष ।

३ खोपड़ी, कपार के २ नाम—( १ ) कर्पूर  
( २ ) कपाल । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग, और  
( २ रा ) पुल्लिङ्ग—नपुंसक है ।

( त्रीणि अस्थिमात्रस्य )

कीकसं कुल्यमस्थि च ॥६८॥

४ हाड, हड्डी के ३ नाम—( १ ) कीकस  
( २ ) कुल्य ( ३ ) अस्थि । ये ( १-३ ) नपुंसक  
हैं ॥ ६८ ॥

( एकं त्वङ्मांसरहितशरीरास्थनः )

स्याच्छरीरास्थि कङ्कालः

५ षोँजर, अस्थिपञ्जर ( जिसे अंग्रेजी में  
'स्केलिटन' skeleton कहते हैं ) का नाम—  
( १ ) कङ्काल ।

( एकं पृष्ठमध्यगतास्थिदण्डस्य )

पृष्ठास्थि तु कशेरुका ।

६ रीढ़ का नाम—( १ ) कशेरुका ।

( एकं शिरोऽस्थनः )

शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री

३ खोपड़ी में २२ अस्थियाँ होती हैं । इसका वह  
भाग जो आठ अस्थियों के परस्पर मेल से बना है कपाल  
कहलाता है ।

४ मेद अपनी अन्दर की अग्नि से पकता और वायु  
उसका रस सोखता है । इसके इस रूपान्तर को ही हाड  
कहते हैं । शरीर में हाडों की संख्या ३०० है ।

अस्थिस्वरूपम्—

५ मेदो यत्स्वाग्निना पक्व वायुना चातिशोधितम् ।

तदास्थिसंज्ञा लभते च सारः सर्वविग्रहे ॥ ( वै० श० नि )

५ यदि त्वचा, मांस, वसा के मांस और सौषिक  
तत्त्व से निर्मित कोमल अङ्गों को काट-छाँट कर शरीर से  
निकाल दिया जाय तो शरीर का दृढ़ ढाँचा बाकी रहेगा ।  
इस कुल ढाँचे को कंकाल कहते हैं । शरीर के १००  
भागों में १६ भाग कंकाल के होते हैं ।

६ ओवा, पीठ और कमर की मध्य रेखा में अगुला में  
टोलने से जो ढलने जैसी कड़ी चीज मालूम होती है,  
उसको रीढ़, पृष्ठवशा या कशेरु कहते हैं । यह २६  
अस्थियों से बना है ।

खोपड़ी की हड्डी का नाम—( १ ) करोटि ( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( एकं पादार्वास्थनः )

पाश्वार्वास्थनि तु पर्शुका ॥६६॥

<sup>१</sup>पसली का नाम—( १ ) पर्शुका ॥६६॥

( चत्वारि देहावयवस्य )

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनः

<sup>२</sup>अङ्ग, जिस्म के ४ नाम—( १ ) अङ्ग ( २ ) प्रतीक ( ३ ) अवयव ( ४ ) अपघन ।

( द्वादश देहस्य )

अथ कलेवरम् ।

गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्णं विग्रहः ॥७०॥

कायो देहः क्लीब-पुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः

<sup>३</sup>देह के १२ नाम—( १ ) कलेवर ( २ )

गात्र ( ३ ) वपुष् ( ४ ) संहनन ( ५ ) शरीर

( ६ ) वर्णम् ( ७ ) विग्रह ( ८ ) काय ( ९ ) देह

( १० ) मूर्ति ( ११ ) तनु ( १२ ) तनू । इनमें

( १-६ ) नपुंसक, ( ७-८ ) पुल्लिङ्ग, ( ९-१० )

पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग, ( १०-१२ ) स्त्रीलिङ्ग

में होते हैं ॥७०॥

( द्वे पादाग्रस्य )

पादाग्रं प्रपदम्

<sup>४</sup>पैर की अँगुलियों के पीछे वाले भाग के २ नाम—( १ ) पादाग्र ( २ ) प्रपद ।

( चत्वारि चरणस्य )

पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥७१॥

पाद, पैर के ४ नाम—( १ ) पाद ( २ )

पद ( ३ ) अङ्घ्रि ( ४ ) चरण । इनमें ( १-३ )

पुल्लिङ्ग, ( ४ था ) पुं-नपुंसक में होता है ॥७१॥

१ दोनों ओर बारह-बारह पसलियाँ होती हैं ।

२ अवयव को अंग्रेजी में Organ (आर्गन) कहते हैं ।

३ देह को अंग्रेजी में Body (बाडी) कहते हैं ।

४ राजनिघण्टु में लिखा है—‘पादाग्र प्रपद मतम् ।’

त्रिपाश्विक वा घन अस्थियों के सामने और अंगुलियों के पीछे पैर का जो भाग है वह प्रपद या प्रपाद कहलाता है ।

( द्वे पादग्रन्थोः )

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ

<sup>५</sup>गट्टे के २ नाम—( १ ) घुटिका ( २ )

गुल्फ । गट्टे दो होते हैं इसलिए द्विवचन में रूप

दिया गया है । इनमें ( १-ला ) स्त्रीलिङ्ग, ( २ रा )

पुल्लिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में होता है ।

( एकं पादपश्चाद्भागस्य )

पुमान्पार्श्विस्तयोरधः ।

<sup>६</sup>एड़ी का नाम—( १ ) पार्श्वि ( पुल्लिङ्ग ) ।

( द्वे जङ्घायाः )

जङ्घा तु प्रसृता

जङ्घा के २ नाम—( १ ) जङ्घा ( २ )

प्रसृता । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि जान्वोः )

जानूरुपर्वोऽष्टीवदस्त्रियाम् ॥७२॥

<sup>७</sup>घुटना के ३ नाम—( १ ) जानु ( २ )

ऊरुपर्वन् ( ३ ) अष्टीवत् । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग

और नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ॥७२॥

( द्वे जानूपरिभागस्य )

सक्थि क्लीबे पुमानूरुः

घुटना के ऊपर के हिस्से के २ नाम—( १ )

सक्थि ( २ ) ऊरु । इनमें ( १ला ) नपुंसक, और

( २रा ) पुल्लिङ्ग, है ।

( एकमूरुसन्धेः )

तत्सन्धिः पुंसि वंक्षणः ।

<sup>८</sup>जङ्घासा का नाम—( १ ) वंक्षण ( पुल्लिङ्ग )

५ जिस स्थान पर टॉग पैर से जुड़ी रहती है और जहाँ इन दोनों में गति होती है वह स्थान ‘टखना’ कहलाता है । टखने में इधर उधर दो उभार होते हैं जो ‘गट्टे’ कहलाते हैं ।

६ टखने के नीचे जो पीछे की निकला हुआ पैर का भाग है वह एड़ी कहलाता है ।

७ जिस स्थान पर टॉग जाँघ पर पीछे की मुड़ जाती है वह जानु है । इसे अंग्रेजी में Knee (नी) कहते हैं ।

८ घुटने और उदर के बीच में जो भाग है उसको ऊरु कहते हैं । जाँघ उदर पर मुड़ जाती है । जिस स्थान से

( श्रीणि विष्टानिर्गमद्वारस्य )

**गुदं त्वपानं पायुर्ना**

<sup>१</sup>मलद्वार, गुदा के ३ नाम—( १ ) गुद ( २ ) अपान ( ३ ) पायु । इनमें ( १-२ ) नपुंसक, ( ३ रा ) पुल्लिङ्ग है ।

( एकं मूत्राशयस्य )

**वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥**

<sup>२</sup>मूत्राशय, मसाना का नाम—( १ ) वस्ति । यह पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥ ७३ ॥

( द्वे कटीफलकस्य )

**कटो ना श्रोणिफलकम्**

कमर के दोनों बगल के २ नाम—( १ ) कट ( २ ) श्रोणिफलक । ( १ ला ) पुं०, ( २ रा ) नपुं० ।

( श्रीणि कटेः )

**कटिः श्रोणि ककुद्वाती ।**

कमर के ३ नाम—( १ ) कटि ( २ ) श्रोणि ( ३ ) ककुद्वाती । ये ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकं स्त्रीकट्याः पश्चाद्भागस्य )

**पश्चाश्रितम्बः स्त्रीकट्याः**

<sup>३</sup>स्त्री के चूतड़ का नाम—( १ ) नितम्ब ।

जॉब का आरम्भ होता है वह भाग कुछ दबा रहता है, यह स्थान भग या शिशन के अधर उभर होता है और इसको बघासा ( वक्ष्य ) कहते हैं ।

१ जनन इन्द्रियों के पीछे पुरुष और स्त्री दोनों में चूतड़ों के बीच में एक छिद्र होता है उसमें से मल निकलता है, इसको मलद्वार या चूति कहते हैं । मलद्वार से ऊपर एक या डेढ़ इंच लम्बा भाग गुदा कहलाता है । गुदा से ऊपर का चार या पाँच इंच लम्बा भाग मलाशय कहलाता है ।

२ उदर के नीचे का भाग एक कटोरे की शक्ल का है इसमें अंत का नीचे का या अन्तिम भाग और मूत्र की थैली और ऐसे अंग जो उत्पादन सस्थान के हैं, रहते हैं । मूत्राशय ( urinary bladder ) वस्तिगृह में विटप-सन्धि ( भगसन्धि ) के पीछे रहता है ।

३ चूतड़ों के पाम जो जॉब का पिछला मोटा भाग है वह नितम्ब कहलाता है । अधिक चर्बी के कारण स्त्रियों के नितम्ब पुरुषों से कहीं ज्यादा मोटे होते हैं ।

( एक स्त्रीकट्याः पुरोभागस्य )

**क्लीवे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥**

<sup>४</sup>स्त्री के कोख का नाम—( १ ) जघन ( नपुंसक ) ॥ ७४ ॥

( एकं पृष्ठवंशाधोर्गतयोः )

**कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ।**

<sup>५</sup>चूतड़ में स्थित और पीठ की रीढ़ के अधो भाग में विद्यमान, कूप सदृश गड्ढों का नाम—( १ ) कुकुन्दर । यह द्वयहीन ( पुं-स्त्रीलिङ्ग वर्जित ) केवल नपुंसक में होता है ।

( द्वे कटिदेशस्थमासपिण्डयोः )

**स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथौ**

कूल्हे के २ नाम—( १ ) स्फिच ( २ ) कटिप्रोथ । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग ( २ रा ) पुल्लिङ्ग है ।

( एकं भगशिशनयोः )

**उपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥**

वक्ष्यमाण भग और लिङ्ग का संयुक्त नाम—( १ ) उपस्थ ( पुल्लिङ्ग ) ॥ ७५ ॥

( द्वे स्मरमन्दिरस्य )

**भगं योनिर्द्वयोः**

<sup>६</sup>भग के २ नाम—( १ ) भग ( २ ) योनि । इनमें ( १ ला ) नपुंसकलिङ्ग में और ( २ रा )

४ जघन प्रदेश को अंग्रेजी में Iliac Region कहते हैं ।

५ कोख ( जघन ) के नीचे टडोलने से जो अस्थि मालूम होती है वह इमी अस्थि का ऊपरी किनारा ( जघन चूड़ा ) है । कूल्हे में यह अस्थि मोटी-मोटी पेशियों से ढकी रहती है, इस कारण इसको आसानो से टडोल कर स्पर्श नहीं कर सकते । चूतड़ में दबाने से जो अस्थि मालूम होती है वह इमी अस्थि का निचला भाग है । जब हम बैठते हैं तब इसीके सहारे बैठते हैं । नितम्बास्थियों के ऊपर की त्वचा बहुत कड़ी होती है । इस उमार को कुकुन्दरपिण्ड कहते हैं ।

६ जिम स्थान में पुरुष में शिशन और अण्डकोप होते हैं उम स्थान में स्त्री में जो अंग दिखाई देते हैं वे सब मिलकर भग कहलाते हैं ।



पुल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( चत्वारि लिङ्गस्य )

- शिशनो मेढ्रो मेहन-शेफसी ।

लिङ्ग के ४ नाम—( १ ) शिशन ( २ ) मेढ्र ( ३ ) मेहन ( ४ ) शेफस् । इनमें ( १-२ ) पुल्लिङ्ग ( केवल दूसरा नपुंसक में भी ), ( ३-४ ) नपुंसक हैं ।

( त्रीणि वृषणस्य )

मुष्कोऽरण्डकोशो वृषणः

<sup>१</sup>अरण्डकोष के ३ नाम—( १ ) मुष्क ( २ ) अरण्डकोश ( ३ ) वृषण ।

( एकं पृष्ठवशाधरे त्रिभिरस्थिभिर्घटितस्थानस्य )

पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥७६॥

<sup>२</sup>त्रिक ( पीठ की रीढ़ का निचला हिस्सा जिसकी शकल तिकोनी होती है और जिसे अंग्रेजी

१ शिश के नीचे एक थैली होती है जिसको अण्ड-कोष कहते हैं । थैली की त्वचा बहुत पतली होती है और उसमें बाल होते हैं । त्वचा के नीचे वसा नहीं रहती, वसा के जगह अनैच्छिक मांस की एक तह रहती है । इस मांस के सङ्कोच और प्रसार से थैली छोटी और बड़ी हो जाती है ।

२ कहा गया है कि—‘स्फिक्सकन्थो. पृष्ठवशास्थन्यं सन्धिस्तत्रिक मतम् ।’ त्रिक देश में दो अस्थियाँ हैं जिनमें से ऊपर की बड़ी होती है और नीचे की छोटी । बड़ी अस्थि वास्तव में पाँच मोहरों के आपस में जुड़ जाने से बनी है, इस बात के चिह्न स्पष्ट दिखाई देते हैं । अस्थि के अगले पृष्ठ पर चौड़ाई के रख चार उमरी रेखाएँ होती हैं, यहाँ पर इन मोहरों के गात्र आपस में जुड़े हैं । गात्रों के श्वर, उधर अस्थि का जो भाग है वह पार्श्व प्रवर्तनों के आपस में मिल जाने से बना है, इनके आपस में जुड़ जाने से एक नली बन जाती है जिसके भीतर नाड़ियाँ रहती हैं । ऊपर वाले मोहरों के नीचे वालों से बड़े होने के कारण इस अस्थि की शकल तिकोनी होती है । इस अस्थि के अगले और पिछले पृष्ठों पर ८, ८ छिद्र होते हैं, चार मध्य रेखा के एक ओर, चार दूसरी ओर । इन छिद्रों में से होकर नाड़ियाँ बाहर निकलती हैं और रक्त की नलियाँ आती जाती हैं । इस अस्थि के पार्श्वों से नितम्बास्थियाँ जुड़ी रहती हैं । ( हमारे शरीर की रचना, प्रथम भाग, १००-१०१ पृष्ठ )

में Sacral कहते हैं ) का नाम—( १ ) त्रिक ॥७६॥

( पञ्च जठरस्य )

पिचण्ड-कुक्षी जठरोदरं तुन्दम्

पेट के ५ नाम—( १ ) पिचण्ड ( २ ) कुक्षि ( ३ ) जठर ( ४ ) उदर ( ५ ) तुन्द । इनमें ( १-२ ) पुल्लिङ्ग, ( ३ ) पुं०-नपुंसक, ( ४-५ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे वक्षोजस्य )

स्तनौ कुक्षौ ।

<sup>४</sup>स्तन के २ नाम—( १ ) स्तन ( २ ) कुक्ष ।

( द्वे स्तनाग्रस्य )

चूचुकं तु कुचाग्रं स्यात्

<sup>५</sup>चूची की ढेपनी के २ नाम—( १ ) चूचुक ( २ ) कुचाग्र । इनमें ( १ ला ) पुं०-नपुंसक में, ( २ रा ) नपुंसक में होता है ।

( द्वे भक्षस्य )

न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥७७॥

<sup>६</sup>गोद, कोरा के २ नाम—( १ ) क्रोड ( २ ) भुजान्तर । इनमें ( १ ला ) नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग में होता है ( न ना=पुल्लिङ्ग में नहीं ), ( २ रा ) नपुंसक है ॥७७॥

( त्रीणि वक्षसः )

उरो वत्सं च वक्षश्च

<sup>७</sup>छाती के ३ नाम—( १ ) उरस् ( २ ) वत्स ( ३ ) वक्षस् । ये ( १-३ ) नपुंसक हैं ।

४ स्त्री के दो स्तन या दुग्ध ग्रन्थियाँ होती हैं । ग्रन्थि कुछ-कुछ अर्ध गोलाकार होती है और त्वचा से ढकी रहती है, उसके पीछे बना और मांस पेशियाँ होती हैं ।

५ ग्रन्थि के मध्य में एक वेलनाकार उमार होता है जिसको चूचुक या स्तनधृन्त कहते हैं । चूचुक के शिखर में दुग्ध स्रोतों के १२-२० छिद्र होते हैं ।

६ वह स्थान, जो वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने में बनता है और जिसमें प्रायः बालकों को लेते हैं, गोद कहलाता है ।

७ गरदन के नीचे जो थड़ का ऊपरी भाग है उसको वक्षस्थल कहते हैं ।

( एकं तनोः पश्चाद्भागस्य )

पृष्ठं तु चरमं तनोः ।

पीठ ( शरीर का पिछला भाग ) का नाम—

( १ ) पृष्ठ ।

( त्रीणि स्कन्धस्य )

स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री

कन्धा के ३ नाम—( १ ) स्कन्ध ( २ )

भुजशिरस् ( ३ ) अंस । इनमें ( १ ला ) पुं०, ( २ रा ) नपुंसक, ( ३ रा ) पुं०-नपुंसक है ।

( एकमंसकक्षयोः सन्धेः )

संधी तस्यैव जव्रुणी ॥७८॥

हंसली ( गले के सामने की दोनों और की वह हड्डी जो कन्धे तक कमानी की तरह लगी रहती है ) का नाम—( १ ) जव्रु ( नपुंसक ) ७८

( द्वे कक्षस्य )

बाहुमूले उभे कक्षौ

कौल के २ नाम—( १ ) बाहुमूल ( २ ) कक्ष ।

इनमें ( १ ला ) नपुंसक, ( २ रा ) पुल्लिङ्ग है ।

( एकं कक्षयोरधोभागस्य )

पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।

बगल ( कन्धा के नीचे का भाग ) का नाम—

( १ ) पार्श्व ( पुं०-नपुं० ) ।

( त्रीणि देहमध्यभागस्य )

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री

मध्यदेह, कमर के ३ नाम—( १ ) मध्यम ( २ ) अवलग्न ( ३ ) मध्य । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ।

( चत्वारि भुजस्य )

द्वौ परौ द्वयोः ॥७९॥

भुज-बाहु प्रवेष्टो दोः स्यात्

बाँह, भुजा के ४ नाम—( १ ) भुज ( २ )

बाहु ( ३ ) प्रवेष्ट ( ४ ) दोस् । इनमें ( १-२ )

पुल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग, ( ३-४ ) पुल्लिङ्ग, हैं ॥७९॥

( द्वे कूर्परस्य )

कफोणिस्तु कूर्परः ।

केहुनी के २ नाम—( १ ) कफोणि ( २ ) कूर्पर । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग के अतिरिक्त स्त्रीलिङ्ग में भी होते हैं ।

( एकं कूर्परोपरिभागस्य )

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्

मुख ( केहुनी का ऊपरी हिस्सा ) का नाम—

( १ ) प्रगण्ड ।

( एकं कफोणेरधो मणिवन्धपर्यन्तस्य )

प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

हाथ का पहुँचा ( कलाई और केहुनी के बीच का भाग ) का नाम—( १ ) प्रकोष्ठ ॥८०॥

( एकं करपृष्ठस्य )

मणिवन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो वहिः ।

कलाई से लेकर सबसे छोटी उँगली तक हाथ के बाहरी हिस्सा (Dorsum of hand) का नाम—( १ ) करभ ।

( त्रीणि करस्य )

पञ्चशाखः शयः पाणिः

हाथ के ३ नाम—( १ ) पञ्चशाख ( २ ) शय ( ३ ) पाणि । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे अङ्गुष्ठसमीपाङ्गुल्याः )

तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

अँगूठे के पास की अँगुली के २ नाम—( १ ) तर्जनी ( २ ) प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

( द्वे अङ्गुलिमात्रस्य )

अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः

अङ्गुली के २ नाम—( १ ) अङ्गुली ( २ ) करशाखा । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकैकं क्रमेण समस्ताङ्गुलीनाम् )

पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी ।

मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात्

अँगूठा का नाम—( १ ) अङ्गुष्ठ ( पुं० ) ।

अँगूठे के पास की अँगुली Index finger का नाम—( १ ) प्रदेशिनी ।

बीचवाली अँगुली का नाम—( १ ) मध्यमा ।

कानी अंगुली के पास की अंगुली Ring finger का नाम—( १ ) अनामिका ।

छिगुनी का नाम—( १ ) कनिष्ठा ॥८२॥

( चत्वारि नखस्य )

पुनर्भवः कररुहो नखोऽखी नखरोऽस्त्रियाम् ।

नाखन, नह के ४ नाम—( १ ) पुनर्भव ( २ ) कररुह ( ३ ) नख ( ४ ) नखर । इनमें ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग, ( ३-४ ) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( तर्जन्यादिसहिते विस्तृतेऽङ्गुष्ठे क्रमेणैकैकम् )  
प्रादेश-ताल-गोकर्णस्तर्जन्यादियुते तते ॥८३॥

तर्जनी सहित फैला हुआ अंगूठा का नाम—( १ ) प्रादेश ( पुं० ) ।

मध्यमा सहित फैला हुआ अंगूठा का नाम—ताल ( पुं० ) ।

अनामिका सहित फैला हुआ अंगूठा का नाम—( १ ) गोकर्ण ( पुं० ) ॥८३॥

( द्वे वितस्तेः )

अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ।

वालिशत, वित्ता ( कानी अंगुली से लेकर फैले अंगूठे तक के परिमाण ) के २ नाम—( १ ) वितस्ति ( २ ) द्वादशाङ्गुल । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग-पुँल्लिङ्ग, ( २ रा ) पुँल्लिङ्ग है ।

( त्रीणि विस्तृताङ्गुलिहस्तस्य )

पाणौ चपेट-प्रतल-प्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ ॥८४॥

भापड, थप्पड, तमाचा के ३ नाम—( १ ) चपेट ( २ ) प्रतल ( ३ ) प्रहस्त ॥८४॥

( द्वे वामदक्षिणयोः पाण्योर्मिलितयोर्विस्तृताङ्गुल्योः )  
द्वौ संहतौ संहतल-प्रतलौ वाम-दक्षिणौ ।

दुहत्या चटकना के २ नाम—( १ ) संहतल ( २ ) प्रतल ।

( एकं प्रसृतेः )

पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिः

पसर का नाम—( १ ) प्रसृति ( पुँल्लिङ्ग ) ।

( एकमङ्गलेः )

तौ युतावञ्जलिः पुमान् ॥८५॥

दो पसर = ( १ ) अञ्जलि ( पुँल्लिङ्ग ) ॥८५॥

( एकं विस्तृतकरस्य )

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तः

केहुनी से लेकर बीचवाली अंगुली तक के नाप ( जो चौबीस अंगुल या लगभग १८ इंच होता है ) का नाम—( १ ) हस्त ।

( एकं वद्धमुष्टिहस्तस्य )

मुष्ट्या तु वद्ध्या ।

सरतिः स्यात्

केहुनी से लेकर बँधी मुठ्ठी के अन्तभाग तक के नाप का नाम—( १ ) सरति ( पुं०-स्त्रीलिङ्ग ) ।

( एकमरत्निहस्तस्य )

अरत्तिस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥८६॥

केहुनी से लेकर खुली हुई कानी अंगुली तक के परिमाण का नाम—( १ ) अरत्ति ( पुं०-स्त्रीलिङ्ग ) ॥८६॥

( एकं स्वे स्वे पाद्वे प्रसारितयोर्बाह्वोर्मध्यस्य )

व्यामो बाह्वोः स-करयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।

हाथों के आधा फैलाने पर दोनों हाथ की अंगुलियों की अन्तिम सीमा तक के नाप का नाम—( १ ) व्याम ।

( एकमूर्ध्वविस्तृतदोःपाणिपुरुषपरिमाणस्य )

ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥८७॥

पुरसा ( पाँच हाथ का माप, हाथ ऊपर फैलाने पर अंगुली से लेकर पैर की अंगुली तक का माप ) का नाम—( १ ) पौरुष ( पुं०-स्त्री-नपुंसक ) ।

( द्वे ग्रीवाप्रभागस्य )

करटो गलः

गला के २ नाम—( १ ) करट ( २ ) गल ।

( त्रीणि ग्रीवायाः )

अथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।

१ ऊपर वाले श्लोक में 'मुष्ट्या' का प्रयोग है और इस श्लोकमें 'मुष्टिना' है । इससे स्पष्ट है कि 'मुष्टि' शब्द पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

गरदन के ३ नाम—( १ ) ग्रीवा ( २ ) शिरोधि ( ३ ) कन्धरा । ये ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकं शङ्खाकृतिरेखात्रयाख्यग्रीवायाः )

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा

जिस गरदन का आकार शङ्ख की तरह होता है और उस पर तीन लकीर खींची हुई होती है उसका नाम—( १ ) कम्बुग्रीवा ( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( त्रीणि ग्रीवापश्चाद्भागस्य )

अवटुर्घाटा कृकाटिका ॥८८॥

गरदन के पिछले भाग ( किसी के मत से 'गले की घाटी' ) के ३ नाम—( १ ) अवटु ( २ ) घाटा ( ३ ) कृकाटिका । इनमें ( १ ला ) पुं-स्त्री-लिङ्ग, ( २-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८८॥

( सप्त मुखस्य )

षक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।

मुँह के ७ नाम—( १ ) वक्त्र ( २ ) आस्य ( ३ ) वदन ( ४ ) तुण्ड ( ५ ) आनन ( ६ ) लपन ( ७ ) मुख । ये ( १-७ ) नपुंसक हैं ।

( पञ्च नासिकायाः )

क्लीवे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका

नाक के ५ नाम—( १ ) घ्राण ( २ ) गन्धवहा ( ३ ) घोणा ( ४ ) नासा ( ५ ) नासिका । इनमें ( १ ला ) नपुंसक, ( २-५ ) स्त्री-लिङ्ग हैं ॥८९॥

( चत्वार्युत्तराधरोष्ठमाग्रेत्य )

आष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।

ओठ, होठ के ४ नाम—( १ ) ओष्ठ ( २ ) अधर ( ३ ) रदनच्छद ( ४ ) दशनवाससी ।

१ गरदन के पिछले भाग को कृकाटिका कहते हैं ( हमारे शरीर को रचना, प्रथम भाग, पृष्ठ ३१ )

२ चच्छास क्रिया से हवा नासार्न्ध्रों द्वारा नासिका में प्रवेश करती है, मध्य और अधो सुरगों में होती हुई पश्चिम द्वारों द्वारा वह कण्ठ में पहुँचती है, कण्ठ से स्वर-यन्त्र और टडवे में से श्लोक फुस्फुनों में जाती है । प्रत्येक नासागुहा में ऊर्ध्व शुक्तिका तथा उसके सम्मुख परदे की रैखिक काना का काम गन्ध पहचानने का है ।

इनमें ( १-३ ) पुंलिङ्ग, ( ४था ) नपुंसक है ।  
( एकमोष्ठाधोभागस्य )

अधस्ताच्चिबुकम्

छुट्टी, ठेढ़ी का नाम—( १ ) चिबुक ।

( द्वे कपोलस्य )

गरडौ कपोलौ

गाल के २ नाम—( १ ) गरड ( २ ) कपोल ।

( द्वे कपोलाधोभागस्य )

तत्परो हनुः ॥९०॥

जवड़ा का नाम—( १ ) हनु ( पुं-स्त्रीलिङ्ग ) ॥ ९० ॥

( चत्वारि दन्तस्य )

रदना दशना दन्ता रदाः

दाँत के ४ नाम—( १ ) रदन ( २ ) दशन ( ३ ) दन्त ( ४ ) रद । ( १-४ ) पुंलिङ्ग हैं, इनमें केवल ( २रा ) नपुंसक में भी होता है ।

( द्वे तालुनः )

तालु तु काकुदम् ।

तालु के २ नाम—( १ ) तालु ( २ ) काकुद । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( त्रीणि जिह्वायाः )

रसज्ञा रसना जिह्वा

जीभ के ३ नाम—( १ ) रसज्ञा ( २ ) रसना ( ३ ) जिह्वा ।

( एकमोष्ठप्रान्तयोः )

प्रान्तावोष्ठस्य सृक्कणी ॥९१॥

ओठों के दोनों कोनों का नाम—( १ ) सृक्कणी ॥९१॥

३ निम्न ओष्ठ के नीचे जो उमरा हुआ भाग दिखाई देता है वह छुट्टी कहलाता है ।

४ दोनों जवड़ों में दाँत जड़े रहते हैं ।

५ मुँह के भीतर दाँतों की जड़ों में लाल मसूदे होते हैं । मुँह खोला जाय तो ऊपर के दाँतों के पीछे पका लाल दिखाई देगी । इसको तालु कहते हैं ।

( त्रीणि भालस्य )

ललाटमलिकं गोधिः

भाल के ३ नाम—( १ ) ललाट ( २ ) अलिक ( ३ ) गोधि । इनमें ( १-२ ) नपुंसक, ( ३ रा ) पुल्लिङ्ग है ।

( एकं नेत्रोपरिभागस्थरोमराजेः )

ऊर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ।

भौह का नाम—( १ ) भ्रू ( स्त्रीलिङ्ग ) ।  
श्लोक में द्विवचनान्त प्रयोग है ।

( एकं नासोपरिभ्रूद्वयमध्यस्य )

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यम्

दोनों भौहों के बीच के स्थान का नाम—  
( १ ) कूर्च ( पुल्लिङ्ग-नपुंसक ) ।

( द्वे नेत्रकनीनिकायाः )

तारकाक्षः कनीनिका ॥६२॥

आँखों की तारा ( पुतली ) के २ नाम—  
( १ ) तारका ( २ ) कनीनिका ॥६२॥

( अष्टौ नेत्रस्य )

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ।

दृग्दृष्टी च

आँख के ८ नाम—( १ ) लोचन ( २ ) नयन ( ३ ) नेत्र ( ४ ) ईक्षण ( ५ ) चक्षुष् ( ६ ) अक्षि ( ७ ) दृश् ( ८ ) दृष्टि । इनमें ( १-६ ) नपुंसक, ( ७-८ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( पञ्च नेत्रोदकस्य )

अस्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥६३॥

आँसू के ५ नाम—( १ ) अस्रु ( २ ) नेत्राम्बु ( ३ ) रोदन ( ४ ) अस्र ( ५ ) अश्रु ।  
ये ( १-५ ) नपुंसक हैं ॥६३॥

( एकं नेत्रप्रान्तयो )

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ

आँखों के कोनों ( नेत्र-कोण ) का नाम—  
( १ ) अपाङ्ग ।

( एकं कटाक्षस्य )

कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

तीरछी नज़र से देखने का नाम—( १ ) कटाक्ष ।

( षट् कर्णस्य )

कर्ण-शब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ६४

कान के ६ नाम—( १ ) कर्ण ( २ ) शब्द-ग्रह ( ३ ) श्रोत्र ( ४ ) श्रुति ( ५ ) श्रवण ( ६ ) श्रवस् । इनमें ( १-२ ) पुल्लिङ्ग, ( ३ रा ) नपुंसक, ( ४ था ) स्त्रीलिङ्ग, ( ५ वाँ ) नपुंसक-पुल्लिङ्ग, ( ६ ठा ) नपुंसक है ॥ ६४ ॥

( पञ्च शिरसः )

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम्

शिर, माथा के ५ नाम—( १ ) उत्तमाङ्ग ( २ ) शिरस् ( ३ ) शीर्ष ( ४ ) मूर्धन् ( ५ ) मस्तक । इनमें ( १-३ ) नपुंसक, ( ४ था ) पुल्लिङ्ग, ( ५ वाँ ) पुल्लिङ्ग-नपुंसक है ।

( षट् केशस्य )

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥

शिर के बाल के ६ नाम—( १ ) चिकुर ( २ ) कुन्तल ( ३ ) बाल ( ४ ) कच ( ५ ) केश ( ६ ) शिरोरुह ॥ ६५ ॥

( द्वे केशसमूहस्य )

तद्वृन्दे कैशिकं कैश्यम्

बालों के झुण्ड के २ नाम—( १ ) कैशिक ( २ ) कैश्य ।

( द्वे कुटिलकेशानाम् )

अलकाश्चूर्णकुन्तलाः ।

जुल्फ, टेढीलटों, घूँघराले बालों के २ नाम—  
( १ ) अलक ( २ ) चूर्णकुन्तल ।

( एकं ललाटगतकेशानाम् )

ते ललाटे भ्रमरकाः

ललाट पर झुकी हुई जुल्फों का नाम—  
( १ ) भ्रमरक ।

१ एक कविजो जाँते को सम्बोधन कर कहते हैं—  
‘रे रे घरट्ट ! मा रोदी, क क न भ्रामयन्त्यमू ।  
कयववीचयादेव, कराकृष्टस्य का कथा ॥’

( द्वे बालानां शिखायाः )

काकपक्षः शिखण्डकः ॥६६॥

लङ्कों की बुलबुली के २ नाम—( १ )

काकपक्ष ( २ ) शिखण्डक ॥ ६६ ॥

( द्वे केशवन्धरचनायाः )

कवरी केशवेशः

बालों में पटिया सँवारने के २ नाम—( १ )

कवरी ( २ ) केशवेश । इनमें ( १ ला ) खीलिङ्ग, ( २ रा ) पुँक्षिङ्ग है ।

( एकं मौक्तिकदामादिबद्धकेशसमूहस्य )

अथ धम्मिल्ल. संयता कचाः ।

मोती की माला आदि से गूथी हुई चोटी या जूड़ा का नाम—( १ ) धम्मिल्ल ।

( त्रीणि शिरोमध्यस्थचूडायाः )

शिखा चूडा केशपाशी

चुरकी, चुन्दी, चोटी के ३ नाम—( १ )

शिखा ( २ ) चूडा ( ३ ) केशपाशी । ये ( १-३ ) खीलिङ्ग हैं ।

( द्वे व्रतिनः शिखायाः )

व्रतिनस्तु जटा सटा ॥६७॥

साधुओं की जटा ( एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल ) के २ नाम—( १ ) जटा ( २ ) सटा ॥ ६७ ॥

( द्वे सर्पाकाररचितकेशवेशस्य )

वेणिः प्रवेणी

वेनी ( सर्प के आकार की तरह सजाकर गूथी गयी या लुटरी चोटी ) के २ नाम—( १ ) वेणि ( २ ) प्रवेणी । ये ( १-२ ) खीलिङ्ग हैं ।

( द्वे विस्तृतकचस्य )

शीर्षण्य-शिरस्यौ विशदे कचे ।

विस्तृत, विशाल एवं सुन्दर बाल के २ नाम—( १ ) शीर्षण्य ( २ ) शिरस्य । ये ( १-२ ) पुँक्षिङ्ग हैं ।

( त्रीणि केशसमूहस्य )

पाशः पक्ष्म हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ।

‘कच’ पर्याय ( चिकुर, कुन्तल, बाल, कच, केश, शिरोरुह ) से परे ये तीन शब्द कलापार्थ ( केशसमूहवाचक, जैसे कचपाश, कचपक्ष, कच-हस्त, केशपाश, कुन्तलहस्त ) हैं—( १ ) पाश ( २ ) पक्ष ( ३ ) हस्त ॥ ६८ ॥

( त्रीणि रोमणः )

तनूरुहं रोम लोम

रोआँ, रोंगटा के ३ नाम—( १ ) तनूरुह ( २ ) रोमन् ( ३ ) लोमन् । इनमें ( १ ला ) नपुंसक-पुँक्षिङ्ग, ( २-३ ) नपुंसक हैं ।

( एक दादिकायाः )

तद्वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे ।

दाढ़ी-मूँछ का नाम—( १ ) श्मश्रु ( नपुंसक ) ।

( पञ्चालङ्कारचनादिकृतशोभायाः )

आकल्प-वेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ६८

सजावट के ५ नाम—( १ ) आकल्प ( २ )

वेष ( ३ ) नेपथ्य ( ४ ) प्रतिकर्मन् ( ५ ) प्रसाधन । इनमें ( १-२ ) पुँक्षिङ्ग, ( ३-५ ) नपुंसक हैं ॥ ६८ ॥

दशैते त्रिषु

ये दश ( ‘अलङ्कर्ता’ से लेकर ‘रोचिष्णु’ तक ) शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

( द्वे अलङ्करणशीलस्य )

अलङ्कर्ताऽलङ्कारिष्णुश्च

सजानेवाले के २ नाम—( १ ) अलङ्कर्तृ ( २ ) अलङ्कारिष्णु । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( पञ्चालङ्कृतस्य )

मंडितः ।

प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥

सजे हुए के ५ नाम—( १ ) मण्डित ( २ ) प्रसाधित ( ३ ) अलङ्कृत ( ४ ) भूषित ( ५ ) परिष्कृत । ये ( १-५ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥ १०० ॥

( त्रीण्यलङ्कारादिनाऽतिशयेन शोभमानस्य )

विभ्राद् भ्राजिष्णु-रोचिष्णु

आभूषण द्वारा अत्यन्त दीप्तिमान् के ३ नाम—( १ ) विभ्राज् ( २ ) आजिष्णु ( ३ ) रोचिष्णु । ये ( १-३ ) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे भूपायाः )

भूषणं स्यादलङ्क्रिया ।

शृङ्गार के २ नाम—( १ ) भूषण [ भूषा ] ( २ ) अलङ्क्रिया ।

( पञ्चालङ्कारस्य )

अलङ्कारस्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् १०१ मण्डनं च

गहना, जेवर के ५ नाम—( १ ) अलङ्कार ( २ ) आभरण ( ३ ) परिष्कार ( ४ ) विभूषण ( ५ ) मण्डन । इनमें ( १, ३ ) पुल्लिङ्ग, ( २, ४-५ ) नपुंसक हैं ॥ १०१ ॥

( द्वे किरीटस्य )

अथ मुकुटं किरीटं पुं-नपुंसकम् ।

मुकुट, ताज के २ नाम—( १ ) मुकुट ( २ ) किरीट । इनमें ( १ ला ) नपुंसक, ( २ रा ) पुल्लिङ्ग-नपुंसक है ।

( द्वे शिरोरत्नयोः )

चूडामणिः शिरोरत्नम्

सिर में पहनने का 'शीश फूल' नामक गहना के २ नाम—( १ ) चूडामणि ( २ ) शिरोरत्न । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग, ( २ रा ) नपुंसक है ।

( एकं हारमध्यमणेः )

तरलो हारमध्यगः ॥१०२॥

हार के बीच की बड़ी मणि 'टिकड़ा' का नाम—( १ ) तरल ॥१०२॥

( द्वे सीमन्तभूषणस्य )

बालपाश्या पारितथ्या

बेंदी ( महिलाओं की मोंग में पहनने का आभूषण विशेष ) के २ नाम—( १ ) बालपाश्या ( २ ) पारितथ्या ।

( द्वे ललाटभूषणस्य )

पत्रपाश्या ललाटिका ।

सोने का टीका ( महिलाओं के मस्तक पर धारण करने वाला आभूषण विशेष ) के २ नाम—( १ ) पत्रपाश्या ( २ ) ललाटिका ।

( द्वे ताटङ्गस्य )

कर्णिका तालपत्रं स्यात्

तरकी, कर्णफूल, ऐरन ( Ear-ring ) के २ नाम—( १ ) कर्णिका ( २ ) तालपत्र ।

( द्वे कुण्डलस्य )

कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥१०३॥

कुण्डल ( पुरुषों का कर्ण भूषण विशेष, या पहिए के आकार का गोल गहना जो सींग, लकड़ी, काँच या गैड़े की खाल, या सोने का बना होता है और जिसे आजकल गोरखनाथी साधु कानों में पहनते हैं ) के २ नाम—( १ ) कुण्डल ( २ ) कर्णवेष्टन ॥ १०३ ॥

( द्वे ग्रीवाभरणस्य )

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा

हँसुली, हुमेल, चम्पाकली, कण्ठमाला, टीक आदि के २ नाम—( १ ) ग्रैवेयक ( २ ) कण्ठभूषा । इनमें ( १ ला ) नपुंसक, ( २ रा ) स्त्रीलिङ्ग है ।

( द्वे भानाम्बिलम्बितकण्ठिकायाः )

लम्बनं स्याललन्तिका ।

गले से लेकर नाभिपर्यन्त लम्बी कंठी के २ नाम—( १ ) लम्बन ( २ ) ललन्तिका ।

( एकं स्वर्णरचितकण्ठिकायाः )

स्वर्णैः प्रालम्बिका

गले से लेकर नाभिपर्यन्त लम्बी सोने की बनी हुई कण्ठी का नाम—( १ ) प्रालम्बिका ।

( एकं मुक्ताग्रथितकण्ठिकायाः )

अथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥१०४॥

गले से लेकर नाभिपर्यन्त लम्बी मोती की बनी हुई कण्ठी का नाम—( १ ) उरःसूत्रिका ॥१०४॥

( द्वे मुक्ताहारस्य )

हारो मुक्तावली

मोतियों के हार के २ नाम—( १ ) हार  
( २ ) मुक्तावली । इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग,  
( २ रा ) स्त्रीलिङ्ग है ।

( एकं शतलतिकहारस्य )

देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

सौ लड़ीवाले हार का नाम—( १ ) देव-  
च्छन्द ।

( हारभेदानां प्रत्येकमेकैकम् )

हारभेदा यष्टिभेदाद् गुच्छ-गुच्छार्द्ध-गोस्तनाः  
अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।

सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः १०६

लड़ी के भेद से हार के किस्म में विभिन्नता  
होती है, यथा—

३२ लड़ी के हार का नाम—( १ ) गुच्छ ( पुं० ) ।

२४ लड़ी के हार का नाम—( १ ) गुच्छार्द्ध ( पुं० ) ।

४ लड़ी के हार का नाम—( १ ) गोस्तन ( पुं० ) ।

१२ लड़ी के हार का नाम—( १ ) अर्धहार ( पुं० ) ।

२० लड़ी के हार का नाम—( १ ) माणवक ( पुं० ) ।

१ लार के हार का नाम—( १ ) एकावली ( स्त्री० ) ।

२७ मोतियों की एकावली हार का नाम—

( १ ) नक्षत्रमाला ( स्त्री० ) ॥ १०५-१०६ ॥

( चत्वारि प्रकोष्ठाभरणस्य )

आवापकः पारिहार्य कटक वलयोऽस्त्रियाम्

पहुँची ( आभूषण विशेष, जिसे अंग्रेजी में  
Bracelet कहते हैं ) के ४ नाम—( १ )  
आवापक ( २ ) पारिहार्य ( ३ ) कटक ( ४ )  
वलय । इनमें ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग, ( ३-४ )  
पुँल्लिङ्ग-नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे प्रगाण्डभूषणस्य )

केयूरमङ्गदं तुल्ये

बिजायठ, भुजचन्द के २ नाम—( १ )  
केयूर ( २ ) अङ्गद । ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग और  
नपुंसक में होते हैं ।

( द्वे अङ्गुल्याभरणस्य )

अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

अंगूठी, मुँदरी, छल्ला के २ नाम—( १ )

अंगुलीयक ( २ ) ऊर्मिका । इनमें ( १ ला )

पुँल्लिङ्ग-नपुंसक, ( २ रा ) स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥ १०७ ॥

( एकं रामनामाद्यङ्किताङ्गुलीयस्य )

साक्षराङ्गुलिमुद्रा

मोहर करनेवाली अंगूठी ( Seal Ring )

का नाम—( १ ) अङ्गुलिमुद्रा ।

( द्वे मणिबन्धभूषणस्य )

कङ्कणं करभूषणम् ।

कंगन, ककनी के २ नाम—( १ ) कङ्कण

( २ ) करभूषण । इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग और

नपुंसक में, ( २ रा ) नपुंसक में होता है ।

( पञ्च स्त्रीकटिभूषणस्य )

स्त्रीकट्या मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ।

क्लृप्ते सारसन च

स्त्रियों के कमर का गहना, करधनी, के ५

नाम—( १ ) मेखला ( २ ) काञ्ची ( ३ )

सप्तकी ( ४ ) रशना ( ५ ) सारसन । इनमें

( १-४ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ( ५ वाँ ) नपुंसक ॥ १०८ ॥

( एक पुरुषकटिभूषणस्य )

अथ पुंस्कट्या शृङ्खलं त्रिषु ।

आदमियों के कमर का गहना, करधन,

का नाम—( १ ) शृङ्खल ( पु-स्त्री-नपुंसक ) ।

( षट् नूपुरस्य )

पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्

हंसकः पादकटकः ।

पायजेव ( पैजनी, पायल ), बिछिया के ६

नाम—( १ ) पादाङ्गद ( २ ) तुलाकोटि ( ३ )

मञ्जीर ( ४ ) नूपुर ( ५ ) हंसक ( ६ ) पादक-

टक । इनमें ( १ ला ) नपुंसक, ( २ रा ) पुँल्लिङ्ग,

१ एकयष्टिर्मेखलाञ्ची, मेखला त्वष्टयष्टिका ।

रसना योदश देवा, कलापः पञ्चदिगकः ॥

• 'विराटिपट्टो हारो माणवः परिकीर्तितः ।'



( ३-४ ) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक, ( ५-६ ) पुँल्लिङ्ग हैं  
॥ १०६ ॥

( द्वे किङ्किण्याः )

किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।

‘धुँधुर’ ( पैर का गहना जो छुम-छुम शब्द करने के लिए नाचने के समय पहना जाता है ) के २ नाम—( १ ) किङ्किणी ( २ ) क्षुद्रघण्टिका

( एकं वस्त्रयोनेः )

त्वक्-फल-कृमि-रोमाणि वस्त्रयोनिः

वृक्षों की छाल, फल, कीड़े और जानवरों के रोंए वस्त्रों के उत्पन्न होने के कारण हैं, अर्थात् इन चार उत्पत्तिकारकों का नाम—( १ ) वस्त्र-योनि ( स्त्रीलिङ्ग ) ।

दश त्रिषु ॥११०॥

ये दश ( ‘वाल्क’ से लेकर ‘निष्प्रवाणि’ तक ) और ‘तन्त्रक’ तीनोंलिङ्ग में होते हैं ॥११०॥

( एकं त्वज्जायस्य )

घाल्कं क्षौमादि

अलसी और सन आदि के रेशों से बुने हुए कपड़ों का नाम—( १ ) वाल्क ( पुं-स्त्री-नपुंसक ) ।

( त्रीणि फलविकारस्य कार्पासवस्त्रस्य )

फालं तु कार्पासं वादरं च तत् ।

सूती-कपास के बने हुए-कपड़ों के ३ नाम—फाल ( २ ) कार्पास ( ३ ) वादर । ये ( १-३ ) पुं-स्त्री-नपुंसक हैं ।

( द्वे कृमिकोशोद्भववस्त्रस्य )

कौशेयं कृमिकोशोत्थम्

रेशमी कपड़ों—पीताम्बर, बनारसी साड़ी आदि-के २ नाम—( १ ) कौशेय ( २ ) कृमिकोशोत्थ । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक हैं ।

( द्वे पशुरोमरचितवस्त्रस्य )

राङ्गवं मृगरोमजम् ॥१११॥

१ केशव कवि कहते हैं—

‘बिद्धिया अनौट बाँके घूँघरी, जराय जरी, जेहरि छवीली क्षुद्रघण्टिका की जालिका ।’

ऊनी कपड़ों—दुशाला, कम्बल आदि—के २ नाम—( १ ) राङ्गव ( २ ) मृगरोमज । ये ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक हैं ॥१११॥

( चत्वारि नूतनवस्त्रस्य )

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।

कोरा कपड़ा—विना धुला हुआ नयनसुख आदि-के ४ नाम—( १ ) अनाहत ( २ ) निष्प्रवाणि ( ३ ) तन्त्रक ( ४ ) नवाम्बर । इनमें ( १-३ ) पुं-स्त्री-नपुंसक हैं, और ( ४ था ) नपुंसक ।

( एकं धौतवस्त्रयुगस्य )

तत्स्यादुद्गमनीयं यद्भौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ११२

धुला हुआ जोड़ा कपड़ा का नाम—( १ ) उद्गमनीय ॥११२॥

( द्वे प्रक्षालितकौशेयस्य )

पत्रोर्यं धौतकौशेयम्

धुले हुए रेशमी कपड़ों के २ नाम—( १ ) पत्रोर्य ( २ ) धौतकौशेय ।

( द्वे बहुमूल्यस्य )

बहुमूल्यं महाघनम् ।

कीमती कपड़ों—जैसे जरी का दुशाला, काश्मीरी शाल आदि—के २ नाम—( १ ) बहुमूल्य ( २ ) महाघन ।

( द्वे पट्टवस्त्रस्य )

क्षौमं दुकूलं स्यात्

रेशमी दुपट्टा, सिल्क के २ नाम—( १ ) क्षौम ( २ ) दुकूल ।

( द्वे प्रावृतवस्त्रस्य )

द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥११३॥

कपड़ों के किनारे, गोट के २ नाम—( १ ) निवीत ( २ ) प्रावृत । ये ( १-२ ) तीनोंलिङ्ग में होते हैं ॥११३॥

( द्वे वस्त्रान्तावयवानाम् )

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः ।

दसी ( छोर, कपड़े के छोर पर का सूत,

कपड़े का पल्ला, धान का आम्बल ) के २ नाम—  
( १ ) दशा ( २ ) वस्ति । इनमें ( १ ला ) स्त्री-  
लिङ्ग नित्य बहुवचनान्त है और ( २ रा ) पुल्लिङ्ग-  
स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

( त्रीणि वस्त्रादेर्दैर्घ्यस्य )

**दैर्घ्यमायाम आरोहः**

कपड़ों की लम्बाई के ३ नाम—( १ )  
दैर्घ्य ( २ ) आयाम ( ३ ) आरोह ( आनाह ) । इनमें  
( १ ला ) नपुंसक, ( २-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे परिणाहस्य )

**पारणाहा विशालता ॥११४॥**

पनहा, कपड़ों की चौड़ाई, के २ नाम—( १ )  
परिणाह ( २ ) विशालता ॥११४॥

( द्वे जीर्णवस्त्रस्य )

**पटञ्चरं जीर्णवस्त्रम्**

पुराना कपड़ा के २ नाम—( १ ) पटञ्चर  
( २ ) जीर्णवस्त्र ।

( द्वे जीर्णवस्त्रखण्डस्य )

**समौ नक्तक-कर्पटौ ।**

चिथड़ा के २ नाम—( १ ) नक्तक ( २ )  
कर्पट । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( पट वस्त्रस्य )

**वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैल वसनमंशुकम् ११५**

कपड़ा के ६ नाम—( १ ) वस्त्र ( २ )  
आच्छादन ( ३ ) वासस् ( ४ ) चैल ( ५ ) वसन  
( ६ ) अंशुक । ये ( १-६ ) नपुंसक हैं ॥११५॥

( द्वे शोभनवस्त्रस्य )

**सुचेलकः पटोऽस्त्री स्यात्**

अच्छा कपड़ा के २ नाम—( १ ) सुचेलक  
( २ ) पट । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग, ( २ रा )  
पुं०-नपुंसक है ।

( द्वे स्थूलवाससः )

**वराशिः स्थूलशाटक ।**

मोटा कपड़ा के २ नाम—( १ ) वराशि  
( २ ) स्थूलशाटक । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग-

नपुंसक में ( २ रा ) पुल्लिङ्ग-स्त्री-नपुंसक में  
होता है ।

( द्वे डोलिकाधावरणपटस्य )

**निचोलः प्रच्छदपटः**

ओहार, परदा, बेंठन, आच्छादन वस्त्र, पलंग  
पोश आदि के २ नाम—( १ ) निचोल ( २ )  
प्रच्छदपट । इनमें ( १ ला ) पुं०-स्त्री-नपुंसक में,  
( २ रा ) पुल्लिङ्ग में होता है ।

( द्वे कम्बलस्य )

**समौ रत्नक-कम्बलौ ॥११६॥**

कम्बल के २ नाम—( १ ) रत्नक ( २ )  
कम्बल । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥११६॥

( चत्वारि परिधानवस्त्रस्य )

**अन्तरीयोपसव्यान-परिधानान्यधोऽंशुके ।**

धोती के ४ नाम—( १ ) अन्तरीय ( २ )  
उपसव्यान ( ३ ) परिधान ( ४ ) अधोऽंशुक ।  
ये ( १-४ ) नपुंसक हैं ।

( पञ्चोत्तरीयस्य )

**द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ११७**  
**संव्यानमुत्तरीयं च**

अंगौछा या दुपट्टा के ५ नाम—( १ ) प्रावार  
( २ ) उत्तरासङ्ग ( ३ ) बृहतिका ( ४ ) संव्यान  
( ५ ) उत्तरीय । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग, ( ३ रा )  
स्त्रीलिङ्ग, ( ४-५ ) नपुंसक हैं ॥११७॥

( द्वे स्त्रीणां स्तनादिपिधायकस्य )

**चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।**

अगिया, चोली (Breast supporter)  
के २ नाम—( १ ) चोल ( २ ) कूर्पासक । इनमें  
( १ ला ) पुल्लिङ्ग के अतिरिक्त स्त्रीलिङ्ग में भी,  
( २ रा ) पुं०-नपुंसक में होता है ।

( एकं हिमानिलनिवारकवस्त्रस्य )

**नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ११८**

रजाई, दुलाई, ओदना, लिहाफ का नाम—  
( १ ) नीशार ॥११८॥

( एकं वरस्त्रीणामर्द्धोरुपिधायिकवस्त्रस्य )  
अर्द्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ।

स्त्रियों की कुरती, जाकेट, जम्पर का नाम—  
( १ ) चण्डातक ( पुं०-नपुंसक ) ।

( एकं पादाग्रपर्यन्तलम्बमानवस्त्रस्य )  
स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत्  
शाया, लहंगा का नाम—( १ ) आप्रपदीन  
( पुं०-स्त्री-नपुंसक ) ॥११६॥

( द्वे आतपाद्यपनयार्थमुपरिवद्धस्य चन्द्रकाख्यस्य  
वाससः )

अस्त्री वितानमुल्लोचः

चंदवा के २ नाम—( १ ) वितान ( २ )  
उल्लोच । इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक में,  
( २ रा ) पुँल्लिङ्ग में होता है ।

( एकं वस्त्ररचितगृहस्य )  
दूष्याद्यं वस्त्रवेशमनि ।

तम्बू, खेमा, रावटी का नाम—( १ ) दूष्य  
( नपुंसक ) ।

( त्रीणि जवनिकायाः )  
प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा  
परदा, कनात के ३ नाम—( १ ) प्रतिसीरा  
( २ ) जवनिका ( ३ ) तिरस्करिणी ॥१२०॥

( द्वे कुङ्कुमादिना शरीरे संस्कारमात्रस्य )  
परिकर्माङ्गसंस्कारः

देह में चन्दन, केसर आदि लगाने के २  
नाम—( १ ) परिकर्मन् ( २ ) अङ्गसंस्कार ।  
इनमें ( १ ला ) नपुंसक, ( २ रा ) पुँल्लिङ्ग है ।

( त्रीणि प्रोक्षणादीना देहनिर्मलीकरणस्य )  
स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।

पोंछने आदि से देह को निर्मल करने के ३  
नाम—( १ ) मार्ष्टि ( २ ) मार्जना ( ३ ) मृजा ।  
ये ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे उद्वर्तनद्रव्येण शरीरमलापकरणस्य )  
उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे

उबटन से शरीर के मैल दूर करने के २

नाम—( १ ) उद्वर्तन । ( २ ) उत्सादन । ये ( १-२ )  
नपुंसक हैं ।

( त्रीणि स्नानस्य )

आम्नाव आप्लवः ॥१२१॥

स्नानम्

नहाने के ३ नाम—( १ ) आम्नाव ( २ ) आम्नव  
( ३ ) स्नान । इनमें ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग हैं और ( ३ रा )  
नपुंसक ॥१२१॥

( त्रीणि चन्दनादिना देहविलेपनस्य )

चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकः

लेपन के ३ नाम—( १ ) चर्चा ( २ )  
चार्चिक्य ( ३ ) स्थासक ।

( द्वे गतगन्धस्य पुनर्गन्धव्यक्तीकरणस्य )

अथ प्रबोधनम् ।

अनुबोधः

गयी सुगन्ध के फिर प्रकट करने के २  
नाम—( १ ) प्रबोधन ( २ ) अनुबोध । इनमें  
( १ ला ) नपुंसक, ( २ रा ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे स्तनकपोलादौ केसरादिना रचितपत्रवल्याः )  
पत्रलेखा पत्राङ्गुलिर्निमे समे ॥१२२॥

स्तन और कपोल आदि पर की जानेवाली  
चित्रकारी, कस्तूरी, चन्दन आदि से रचित बेल  
वूटे के २ नाम—( १ ) पत्रलेखा ( २ ) पत्रा-  
ङ्गुलि । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१२२॥

( चत्वारि कस्तुर्यादिना ललाटे कृततिलकस्य )

तमालपत्र-तिलक-चित्रकाणि विशेषकम् ।

द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियाम्

तिलक, टीका ( वह चिह्न जिसे गीले-चन्दन  
केसर आदि से मस्तक पर शोभा के लिए लगाते  
हैं ) के ४ नाम—( १ ) तमालपत्र ( २ ) तिलक  
( ३ ) चित्रक ( ४ ) विशेषक । इनमें ( द्वितीय )  
'तिलक' और ( तुरीय=४था ) 'विशेषक' पुँल्लिङ्ग-  
नपुंसक में होते हैं, शेष ( १ ला, ३ रा ) नपुं-  
सक में ।

( एकादश कुङ्कुमस्य )

अथ कुङ्कुमम् ॥१२३॥

काश्मीरजन्माऽग्निशिखं वरं बाह्यीक-पीतने ।

रक्त-सङ्कोच-पिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् ॥१२४॥

<sup>१</sup>केसर, कुङ्कुम के ११ नाम—( १ )

कुङ्कुम ( २ ) काश्मीरजन्मन् ( ३ ) अग्निशिख

( ४ ) वर ( ५ ) बाह्यीक ( ६ ) पीतन ( ७ ) रक्त

( ८ ) संकोच ( ९ ) पिशुन ( १० ) धीर ( ११ )

लोहितचन्दनम् ॥ १२३-१२४ ॥

( पट् लाक्षायाः )

लाक्षा राक्षा जटु क्लीवे यावोऽलको द्रुमामयः

<sup>२</sup>लाह, अलता, महावर के ६ नाम—( १ )

लाक्षा ( २ ) राक्षा ( ३ ) जटु ( ४ ) याव ( ५ )

अलक्त ( ६ ) द्रुमामय । इनमें ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग,

( ३ रा ) नपुंसक, ( ४-६ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

१ भावप्रकाश में लिखा है—

‘काश्मीरदेशजन्मे कुङ्कुम यद्भवेद्धि तत् ।

सूक्ष्मकेशरमारक्त पद्मगन्धि तदुत्तमम् ॥

बाह्यीकदेशसज्जात कुङ्कुमं पाण्डुर भवेत् ।

केतकीगन्धयुक्त तन्मध्यम सूक्ष्मकेशरम् ॥

कुङ्कुम पारसीकेयं मधुगन्धि तदीरितम् ।

ईरपाण्डुरवर्णं तदधमं स्थूलकेशरम् ॥’

२ एक प्रकार के बहुत छोटे कीड़े होते हैं, जिनकी कई जातियाँ होती हैं । ये कीड़े पीपल, पलास, कुसुम, बेर, अरहर आदि अनेक प्रकार के वृक्षों पर आप से आप हो जाते हैं । वृक्षों पर ये अपने शरीर से एक प्रकार का समदार लाल पदार्थ निकाल कर उसमें घर बनाते हैं और उसीमें बहुत अधिक अण्डे देते हैं । लोग वैशाख और अगहन में वृक्षों की शाखाओं पर से खुरच कर यह लाल द्रव्य निकाल लेते हैं और तब इसे कई तरह से साफ करके काम में लाते हैं । इससे कई प्रकार के रंग, तेल, चारनिरा, और चूड़ियाँ, कुमकुमे आदि द्रव्य बनते हैं । चपड़ा भी इसीसे तैयार होता है । लाख केवल भारत में ही होती है और कहीं नहीं होती । यहाँ ने यह मारे ससार में जानी है । यहाँ इसका व्यवहार बहुत प्राचीन-काल से, सम्भवतः वैदिककाल से, होता आया है । पहले यहाँ इससे कपड़े और चमड़े आदि रंगने थे और पैर में रंगाने के लिए भस्मता या महावर बनाते थे ।

( त्रीणि लवङ्गस्य )

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञम्

<sup>३</sup>लौंग के ३ नाम—( १ ) लवङ्ग ( २ )

देवकुसुम ( ३ ) श्रीसंज्ञ ।

( त्रीणि पीतचन्दनस्य )

अथ जायकम् ॥१२५॥

कालीयकं च कालानुसार्यं च

<sup>४</sup>कलम्बक, पीलाचन्दन के ३ नाम—( १ )

जायक ( २ ) कालीयक ( ३ ) कालानुसार्य ॥१२५॥

( पट् अगुरुणः )

अथ समार्थकम् ।

वंशिकाऽगुरु-राजार्ह-लोहं कृमिज-जोङ्गकम् ॥१२६॥

<sup>५</sup>अगर के ६ नाम—( १ ) वंशिक ( २ )

अगुरु ( ३ ) राजार्ह ( ४ ) लोह ( ५ ) कृमिज

( ६ ) जोङ्गक । ये ( १-६ ) नपुंसक हैं, किन्तु

केवल ( २ रा ) पुल्लिङ्ग में भी होता है ॥१२६॥

( द्वे कृष्णागुरुणः )

कालागुर्वगुरुः

३ नियण्ड ग्रन्थों के अनुसार लौंग के पर्यायवाची शब्द—लवङ्ग देवकुसुम श्रीसंज्ञ कलिकोत्तमम् ।

चुम्कार सुपिर तोचण वारिज शेखर लवम् ॥

लौंग के वृक्ष मालावार, जजीबार, मलाया, जावा, अफ्रिका के समुद्र तट आदि में होते हैं । लौंग की खेती क लिए कालोमिट्टी और विशेषतः वह मिट्टी जो उमालामुखों की राख हो या जिसमें बालू मिली हो, अच्छी मानी जाती है । लौंग का प्रयोग विशेष कर ममाले में होता है । श्रीसंज्ञ में स्पष्ट है कि लक्ष्मी के पर्यायवाची शब्द अितने हैं, वे इसके भी हैं ।

४ पीलाचन्दन के पर्यायवाची शब्द—

‘नारायणप्रिय पीत पाताम हरिचन्दनम् ।

कालोयक पोतकाष्ठ जायक कान्तिदायकम् ॥’

५ भावप्रकाश के अनुसार अगर के पर्यायवाची शब्द—

अगर कृमिज लोह राजार्ह वंशिक एव ।

लोहाख्य जोङ्गक चापि वृष्णं वणप्रसादनम् ॥

अगर के पेड़ आमाम के पहाड़ी जंगलों और प्रद्वान्त-सागर के टापुओं में पाये जाते हैं ।

<sup>१</sup>काली अगर के २ नाम—( १ ) काला-  
गुरु ( २ ) अगुरु । इनमें ( १ ला ) नपुंसक,  
( २ रा ) पुं-नपुंसक है ।

( एकं स्वनाम्ना केदारदेशे प्रसिद्धागुरुणः )

स्यात्तन्मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।

<sup>२</sup>मङ्गलागुरु का नाम—( १ ) मङ्गल्या  
( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( पञ्च रालस्य )

यत्तद्धूपः सर्जरसो राल-सर्वरसावपि ॥१२७॥  
बहुरूपोऽपि

<sup>३</sup>राल के ५ नाम—( १ ) यत्तद्धूप ( २ )  
सर्जरस ( ३ ) राल ( ४ ) सर्वरस ( ५ ) बहुरूप  
॥ १२७ ॥

( द्वे अनेकपदार्थकृतधूपस्य )

अथ वृकधूप-कृत्रिमधूपकौ ।

<sup>४</sup>दशाङ्ग धूप के २ नाम—( १ ) वृकधूप  
( २ ) कृत्रिमधूपक ।

१ अगर अनेक प्रकार की होती है । उनमें काली  
अगर ही उत्तम और वैद्यक में लिखित औषधियों के साथ  
व्यवहृत होती है । भारा होने के कारण यह जल में  
डूब जाती है और नरम ऐसी होती है कि दाँतों में रखकर  
खाने से चिपक जाती है । इसको पीसकर जलाने से  
सुगन्ध निकलती है । कृष्णागुरु के नाम—

कृष्णागुरु स्यादक्षुप्त मङ्गल्य विश्वरूपकम् ।

२ मङ्गलागुरु के नाम—

मङ्गल्या मल्लिका गन्धमङ्गलाऽगुरुवाचका ।

३ राल के पेड़ देहरादून में पाये जाते हैं । इसकी  
लकड़ी किसी काम की नहीं होती है । पर इसकी  
गोंद जिसे राल कहते हैं, बहुत काम का होता है । इसका  
व्यवहार प्रायः वार्निश आदि के काम में होता है, और  
अतिसार प्रदर आदि रोगों में भी दिया जाता है । राल के  
तेल को 'तारपिन' कहते हैं ।

४ कृत्रिम अर्थात् कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई  
धूप कई प्रकार की होती है, जैसे पद्याङ्ग धूप, अद्याङ्ग  
धूप, दशाङ्ग धूप, द्वादशाङ्ग धूप, षोडशाङ्ग धूप । इनमें से  
दशाङ्ग धूप अधिक प्रसिद्ध है जिसमें दम चोखों का मेल  
होता है । ये दस चोखें क्या क्या होनी चाहिए इनमें मत-  
भेद है । पद्यपुराण के अनुसार कपूर, कृष्ण, अगर, गुग्गुलु,

( चत्वारि सिंहाख्यगन्धद्रव्यस्य )

तुरुष्कः पिरडकः सिंहो यावनोऽपि

<sup>५</sup>लोवान के ४ नाम—( १ ) तुरुष्क—(२)  
पिरडक (३) सिंह (४) यावन ।

( पञ्च सरलद्रवस्य )

अथ पायसः ॥१२८॥

श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्ट-सरलद्रवौ ।

चीड़ के धूप के ५ नाम—( १ ) पायस (२)  
श्रीवास (३) वृकधूप (४) श्रीवेष्ट (५) सरलद्रव १२८

( त्रीणि कस्तूर्याः )

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी च

<sup>६</sup>कस्तूरी के ३ नाम—(१) मृगनाभि (२)  
मृगमद (३) कस्तूरी । इनमें (१-२) पुंलिङ्ग हैं और  
(३रा) स्त्रीलिङ्ग ।

( त्रीणि कङ्कोलकस्य )

अथ कोलकम् ॥ १२९ ॥

कङ्कोलकं कोशफलम्

<sup>७</sup>शीतल चीनी, कवाव चीनी के ३ नाम—  
(१) कोलक (२) कंकोलक (३) कोशफल ॥१२९॥

चदन, केसर, सुगन्धवाला, तेजपत्ता, खस और जायफल-  
ये दस चोखें होनी चाहिए । साराश यह कि साल और  
सलई का गोंद, मैनसिल, अगर, देवदार, पञ्चाख, मोचरस,  
मोथा, जटामांसी शत्यादि सुगन्धित द्रव्य धूप देने के काम  
में आते हैं ।

५ यह एक वृक्ष का सुगन्धित गोंद है । यह वृक्ष  
अफ्रीका के पूर्वी किनारे पर, सुमालीलेण्ड में और अरब  
के दक्षिणी तट पर होता है । और वहाँ से लोवान भारत  
में आता है । लोवान प्रायः जलाने के काम में लाया जाता  
है, जिससे सुगन्धित धुआँ निकलता है ।

६ कस्तूरी हिरन की नाभि में होती है । हिरन को  
मार कर उसकी नाभि को काट लेते हैं । उसको कस्तूरी  
का नामा कहते हैं । वह आकार में गोल होता है । उस  
नामा को चीरकर कस्तूरी निकालते हैं । जिन हिरनों की  
नाभि से कस्तूरी निकलती है, वे काश्मीर, नेपाल और  
कामरूप देश में पाये जाते हैं ।

७ वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार शीतलचीनी के  
पर्यायवाची शब्द—'कङ्कोलक कोशफल कोलक तैलसाधनम् ।'

( पञ्च कर्पूरस्य )

अथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।

घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥३०॥

१ कर्पूर के ५ नाम—( १ ) कर्पूर ( २ )

घनसार ( ३ ) चन्द्रसंज्ञ ( ४ ) सिताभ्र ( ५ )

हिमवालुका । इनमें ( १ ला ) पुंल्लिङ्ग-नपुंसक,

( २-४ ) पुंल्लिङ्ग, ( ५ वाँ ) स्त्रीलिङ्ग है ॥१३०॥

( चत्वारि चन्दनस्य )

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्

२ चन्दन के ४ नाम—( १ ) गन्धसार ( २ )

मलयज ( ३ ) भद्रश्री ( ४ ) चन्दन । इनमें

( १ ) पुंल्लिङ्ग, ( २ ) पु-नपुंसक ( ३ ) स्त्रीलिङ्ग,

( ४ ) पुं-नपुंसक है ।

( एकं धवलशीतलचन्दनविशेषस्य )

तैलपर्णिक—

उज्ज्वल और शीतल चन्दन का नाम—

( १ ) तैलपर्णिक ( नपुंसक ) ।

( एकमुत्पलगन्धिचन्दनस्य )

गोशीर्षं

कमल की तरह गन्धवाले चन्दन का नाम—

( १ ) गोशीर्ष ( नपुंसक ) ।

( एकं कपिलवर्णचन्दनस्य )

हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥१३१॥

१ 'चन्द्रसंज्ञ' से स्पष्ट है कि इसके नाम चन्द्र के पर्यायवाची शब्द के अनुसार होते हैं—

ओषधाराश्च कर्पूर सोमसंज्ञ सिताभ्रकम् ।

शिला हिर्माशु शीताशुश्चन्द्रमस्म निशापतिः ॥

कर्पूर के वृत्त भारत के अतिरिक्त चीन और जापान में भी होते हैं । कर्पूर की अनेक जाति होती है जैसे भामत्तेनी कर्पूर, चिनियाकर्पूर आदि ।

२. भावप्रकारा में लिखा है—

'स्वादे तिक्त, वापे पीतं, क्षेदे रक्त, तनौ मितम् ।

ग्रन्थिघोटस्तुक्त चन्दन श्रेष्ठमुच्यते ॥'

अर्थात्—जो स्वाद में कड़वा हो, पित्तने में पीला हो, तोड़ने में लाल हो, देखने में नफेद हो, और गाँठदार, घोटस्तुक्त हो वह चन्दन श्रेष्ठ होता है ।

३ पीले रंग के चन्दन का नाम—( १ ) हरि-चन्दन ( पुं-नपुंसक ) ॥ १३१ ॥

( पञ्च रक्तचन्दनस्य )

तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जन रक्तचन्दनम् ।  
कुचन्दनं च

४ लाल चन्दन के ५ नाम—( १ ) तिल-पर्णी ( २ ) पत्राङ्ग ( ३ ) रञ्जन ( ४ ) रक्त-चन्दन ( ५ ) कुचन्दन । इनमें ( १ ला ) स्त्री-लिङ्ग, ( २-५ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे जातीफलस्य )

अथ जातीकोश-जातीफले समे ॥१३२॥

५ जायफल के २ नाम—( १ ) जातीकोश ( २ ) जातीफल । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ॥१३२॥

( एकं कर्पूरादिभिः समभागैः पिण्डीकृतलेपविशेषस्य )

कर्पूरागुरु-कस्तूरी-कङ्कोलैर्यक्षकर्मः ।

६ महासुगन्धित लेप विशेष—जो कर्पूर, अगूर, कस्तूरी, और शीतलचीनी के सम भाग से बनता है—का नाम—( १ ) यक्षकर्म ।

३ हरिचन्दन के सम्बन्ध में कहा जाता है—

हरिचन्दन सुरार्ह हरिगन्ध चन्द्रचन्दन दिव्यम् ।

दिविज च महागन्ध नन्दनज लोहितज नवसंघम् ॥

हरिचन्दन तु दिव्य तिक्तहिम तदिह दुर्लभ मनुजैः ।

पित्तादोषविलेपि चन्दनवच्छ्रमहर च शोषहरम् ॥(रा०नि०६)

४ लाल चन्दन के सम्बन्ध में राजनिघण्टु में लिखा है—

रक्तपित्तहर वल्य चक्षुष्य रक्तचन्दनम् ।

५ जायफल को उत्पत्ति जावा, बताविया और पिनाङ्ग के टापुओं में होती है । इसको उल्म जानि होती है और फल जानुन की तरह होता है । इसको छाल के मानर लाल गुच्छा होता है, जिसे जावित्री कहते हैं । कुछ समय के बाद उसका रङ्ग पीला हो जाता है । उसके भीतर कठिन बल्कल का बोज होता है जो तोड़ जाने पर गायन कहलाता है ।

६ कर्पूरागुरु-कस्तूरी-कङ्कोल-मुच्यते च ।

एकं कृतमिदं नवै यक्षकर्म इत्येते ॥ इति च्याङि ।

कुङ्कुमागुरु-कस्तूरी-कर्पूर-चन्दन तथा ।

(चत्वारि गात्रानुलेपनयोग्यस्य घृष्टपिष्टसुगन्धिद्रव्यस्य)

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् १३३

शरीर पर अनुलेप के योग्य पीसे हुए और धिसे हुए सुगन्धित द्रव्य—जिसे 'चोआ' कहते हैं—के ४ नाम—( १ ) गात्रानुलेपनी ( २ ) वर्ति ( ३ ) वर्णक ( ४ ) विलेपन । इनमें ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग, ( ३ रा ) पुं-नपुंसक, ( ४ था ) नपुंसक, है ॥ १३३ ॥

( द्वे पटवासादिचूर्णमात्रस्य )

चूर्णानि वासयोग्याः स्युः

सुगन्धित 'पाउडर' (Powder बुकनी) के २ नाम—( १ ) चूर्ण ( २ ) वासयोग्य । इनमें ( १ ) नपुं०, ( २ ) पुं० है ।

( द्वे गन्धद्रव्येन वासितस्य वस्तुनः )

भावितं वासितं त्रिषु ।

गन्धद्रव्य से सुगन्धित की गयी चीज के २ नाम—( १ ) भावित ( २ ) वासित । ये ( १-२ ) पु-स्त्री-नपुंसक हैं ।

( एकं गन्धपुष्पोपचारस्य )

संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्य स्यात्तदधिवासनम्

कपड़ा, पान आदि की सुगन्धि बढ़ाने के लिए जो अंतर, फूलमाला, धूप आदि से संस्कार

महासुगन्धमित्युक्त नामतो यक्षकर्दमः । इति धन्वन्तरिः

कर्पूरागुरुकस्तूरीकोलैर्यक्षधूपक ।

चन्दनागुरुकुरङ्गनाभिकाचन्द्रचन्दनसमाशसम्पृतम् ।

व्यक्षपूजनपरैकगोचर यक्षकर्दममिमं प्रचक्षते ॥

इति राजनिघण्टुः ।

१ एक प्रकार का सुगन्धित द्रव पदार्थ जो कई गन्ध-द्रव्यों को एक साथ मिलाकर गरमी की सहायता से उसका रस टपकाने से तैयार होता है । इसके तैयार करने की कई रीतियाँ हैं—( क ) चन्दन का बुरादा, देवदार का बुरादा और मरसे के फूलों को एक में मिलाते और गरम करके उनमें से रस टपकाते हैं । ( ख ) केमर, कस्तूरी आदि को मरसे के फूलों के रस में मिलाते और गरम करके उसमें से रस टपकाते हैं ।

किया जाता है उसका नाम—( १ ) अधिवासन ॥ १३४ ॥

( त्रीणि मूर्ध्नि धृतायाः कुसुमावलेः )

माल्यं माला-स्रजौ मूर्ध्नि

सिर पर की धरी हुई पुष्पमाला के ३ नाम—( १ ) माल्य ( २ ) माला ( ३ ) स्रज् । इनमें ( १ ला ) नपुंसक, ( २-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकं केशमध्यस्थितमाल्यस्य )

केशमध्ये तु गर्भकः ।

सिर के बीचोबीच रखी हुई माला का नाम—( १ ) गर्भक ।

( एकं शिखालम्बिमाल्यस्य )

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि

सिर से चोटी तक लटकती हुई माला का नाम—( १ ) प्रभ्रष्टक ।

( एकं पुरस्थललाटपर्यन्तमाल्यस्य )

पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥१३५॥

सिर से ललाट तक की माला का नाम—( १ ) ललामक ॥ १३५ ॥

( एकं कण्ठे सरललम्बमानमाल्यस्य )

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कराठात्

कराठ से सीधी लटकनेवाली माला का नाम—( १ ) प्रालम्ब ।

( एकमुरसि यज्ञोपवीतवर्तिर्यगृष्टमाल्यस्य )

वैकक्षिकं तु तत् ।

यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि

जनेव की तरह छाती पर टेढ़ी लटकती हुई माला का नाम—( १ ) वैकक्षिक ।

( द्वे शिखासु न्यस्तमाल्यस्य )

शिखास्वापीड-शेखरौ ॥१३६॥

शिखा में पहनी हुई माला के २ नाम—( १ ) आपीड ( २ ) शेखर ॥ १३६ ॥

( द्वे माल्यादिरचनायाः )

रचना स्यात्परिस्स्यन्दः

फूलों से माला या गुच्छे आदि बनाने वा

गूँथने की क्रिया के २ नाम—( १ ) रचना ( २ )  
परिस्थन्द ।

( द्वे सर्वोपचारपरिपूर्णतायाः )

आभोगः परिपूर्णता ।

परिपूर्णता सम्पूर्णता के २ नाम—( १ )  
आभोग ( २ ) परिपूर्णता ।

( द्वे शिरोनिधानस्य )

उपधानं तूपवर्हः

तकिया ( कपड़े का बना हुआ वह लम्बोतरा,  
गोल या चौकोर थैला जिसमें रुई, पर आदि  
भरते हैं और जिसे सोने लेटने आदि के समय  
सिर के नीचे रखते हैं ) के २ नाम—( १ )  
उपधान ( २ ) उपवर्ह ।

( त्रीणि शय्यायाः )

शय्यायां शयनीयवत् ॥१३७॥

शयनम्

सेज ( बिछौना, विस्तर ) के ३ नाम—( १ )  
शय्या ( २ ) शयनीय ( ३ ) शयन । इनमें  
( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग, ( २-३ ) नपुंसक हैं ॥१३७॥

( चत्वारि पर्यङ्कस्य )

मञ्च-पर्यङ्क-पल्यङ्काः खट्वया समाः ।

मँचिया, खटिया, पलङ्ग, चारपाई, मशहरी  
के ४ नाम—( १ ) मञ्च ( २ ) पर्यङ्क ( ३ ) पल्यङ्क  
( ४ ) खट्वा । इनमें ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं,  
( ४ था ) स्त्रीलिङ्ग ।

( द्वे कन्दुकस्य )

गेन्दुकः कन्दुकः

गेंद, गेन्दवा ( छोटी तकिया ) के २ नाम—  
( १ ) गेन्दुक ( २ ) कन्दुक ।

( द्वे दीपस्य )

दीप प्रदीपः

दीया, चिराम, लालटेन के २ नाम—  
दीप ( २ ) प्रदीप ।

( द्वे भासनस्य )

पीठभासनम् ॥१३८॥

आसन, पीढ़ा के २ नाम—( १ ) पीठ  
( २ ) आसन ॥ १३८ ॥

( द्वे सम्पुटस्य )

समुद्रकः सम्पुटकः

डब्बा, चौघड़ा ( विलहरा ) के २ नाम—( १ )  
समुद्रक ( २ ) सम्पुटक ।

( द्वे पतद्ग्रहस्य )

प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।

पीकदानी के २ नाम—( १ ) प्रतिग्राह ( २ )  
पतद्ग्रह ।

( द्वे केशमार्जन्याः )

प्रसाधनी कङ्कतिका

कट्टी के २ नाम—( १ ) प्रसाधनी ( २ )  
कङ्कतिका ।

( द्वे पिष्टातस्य )

पिष्टातः पट्वासकः ॥१३९॥

बुकवा ( सुगन्धित पाउडर ) के २ नाम—  
( १ ) पिष्टात ( २ ) पट्वासक ॥१३९॥

( त्रीणि दर्पणस्य )

दर्पणे मुकुराऽऽदर्शौ

शीशा, ऐना के ३ नाम—( १ ) दर्पण ( २ )  
मुकुर ( ३ ) आदर्श । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग-  
नपुंसक, ( २-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे तालपत्रादिनिर्मितव्यजनस्य )

व्यजनं तालवृन्तकम् ।

रवेना, ताड़ के पंखे के २ नाम—( १ )  
व्यजन ( २ ) तालवृन्तक ॥

( इति मनुष्यवर्गः ६ )

१ विचलितकुललक्ष्मीसम्भनायोद्यतेन

क्षितितलशयनीये येन नीता प्रियामा ।

समुदितवलकोपानुप्यमिर्माध जिखा

क्षितीपचरखपीठे रथापितो वानपादः ॥

स्कन्दपुराण का शिलालेख ( पन्नीट न० १३ )

= बौद्धकालीन तथा गुप्तकालन पथर की चित्रकारी में  
ऐसे कई प्रकार के मिलते हैं। उनसे स्पष्ट है कि प्राचीनकाल  
में कोई पत्ते गोल, कोई लम्बे, कोई खट्टीदार, कोई बीच



अथ ब्रह्मवर्गः ७

( नव वंशस्य )

सन्ततिर्गोत्र-जनन-कुलान्यभिजनान्वयौ ।

वंशोऽन्ववायः सन्तानः ।

वश, खानदान के ६ नाम—( १ ) सन्तति ( २ ) गोत्र ( ३ ) जनन ( ४ ) कुल ( ५ ) अभिजन ( ६ ) अन्वय ( ७ ) वंश ( ८ ) अन्ववाय ( ९ ) सन्तान । इनमें ( १ ता ) स्त्रीलिङ्ग, ( २-४ ) नपुंसक, ( ५-९ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( एकं वर्णस्य )

वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

<sup>१</sup>ब्राह्मण आदि का नाम—( १ ) वर्ण ॥१॥

( एकं चातुर्वर्ण्यस्य )

विप्र-क्षत्रिय-विद्-शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम्

<sup>२</sup>चारो वर्ण का नाम—( १ ) चातुर्वर्ण्य ।

( द्वे राजवंशोत्पन्नस्य )

राजवीजी राजवंश्यः

राजकुल में उत्पन्न हुए के २ नाम—( १ ) राजवीजिन् ( २ ) राजवंश्य । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

में सुराख वाले होते थे । वैद्यक ग्रंथों में लिखा है कि ताड़ के पत्ते की हवा त्रिदोषनाशक और हल्की होती है । यथा—‘तालवृन्तमवो वातस्त्रिदोषशमनो लघु ।’

१ पहले आर्यों का रंग गोरा होता था और यहाँ की आदिम निवासी अनार्यों—जिन्हें ऋग्वेद में ‘दास’ ‘दस्यु’ आदि नामों से सम्बोधित किया गया है—का रंग काला था । आर्यों अनार्यों में न केवल रंग में वल्कि धर्म, संस्कृति एवं सामाजिक प्रथाओं में भी भिन्नता थी । इसलिए इन्द्र के सम्बन्ध में ऋग्वेद ( १, १२, ४ ) में कहा गया है कि—‘यो दास वर्णमधर शुभाक ।’ तदन्तर आर्यों में तीन रंग के हिसाब से तीन वर्ण हुए—‘ब्राह्मणानां सितो वर्णः, क्षत्रियाणां च लोहित । वैश्यानां पीतको वर्णः, शूद्राणामसित-स्तथा ॥ ( महाभारत, शान्तिपर्व ) ।

२ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यं कृतः ।

ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्मं शूद्रोऽजायत ( यजुर्वेद )

राष्ट्र रूपी शरीर को रक्षा के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों ( मुख-बाहु-ऊरु-पद ) की नितांत आवश्यकता होती है ।

( द्वे कुलमात्रोत्पन्नस्य )

वीज्यस्तु कुलसम्भवः ॥ २ ॥

कुल में उत्पन्न हुए के २ नाम—( १ )

वीज्य ( २ ) कुलसम्भव ॥ २ ॥

( षट् सज्जनस्य )

महाकुल-कुलीनाऽऽर्य-सभ्य-सज्जन-साधवः ।

उत्तम कुल में उत्पन्न, सज्जन, के ६ नाम—( १ ) महाकुल ( २ ) कुलीन ( ३ ) आर्य ( ४ ) सभ्य ( ५ ) सज्जन ( ६ ) साधु ।

( एकैकं ब्रह्मचार्यादीनाम् )

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥३॥

आश्रमोऽस्त्री

<sup>३</sup>यज्ञोपवीत के अनन्तर नियमपूर्वक गुरुकुल में पचीस वर्ष की अवस्थातक वेदाभ्यास करनेवाले का नाम—( १ ) ब्रह्मचारिन् ( पुल्लिङ्ग ) ।

ब्रह्मचर्य के उपरान्त विवाह करके स्त्री-पुत्र आदि के साथ रहनेवाले गृहस्थ का नाम—( १ ) गृहिन् ( पुं० ) ।

पुत्र-पौत्रादि उत्पन्न हो जाने पर एकान्त ध्यान के लिए वन में निवास करनेवाले का नाम—( १ ) वानप्रस्थ ( पुं० ) ।

संन्यासी, मीख से जीनेवाले ( या बौद्धभिक्षु ) का नाम—( १ ) भिक्षु ( पुं० ) ।

ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास-इन चार प्रकार की अवस्थाओं का संयुक्त नाम—( १ ) आश्रम ( पुं-नपुंसक ) ॥३॥

( षट् ब्राह्मणस्य )

द्विजात्यग्रजन्म-भूदेव-वाडवाः ।

विप्रश्च ब्राह्मणः

ब्राह्मण के ६ नाम—( १ ) द्विजाति ( २ ) अग्रजन्मन् ( ३ ) भूदेव ( ४ ) वाडव ( ५ ) विप्र ( ६ ) ब्राह्मण । ये ( १-६ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( एकं षट्कर्मणो विप्रस्य )

असौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥४॥

३ कर्मणा मनसा वाचा सर्वव्याप्त्य सर्वदा ।  
सर्वत्र मैयुनत्यागो ब्रह्मचर्यं तदुच्यते ॥

अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान  
और प्रतिग्रह इन ६ कर्मों को करनेवाले ब्राह्मण  
का नाम—(१) षट्कर्मन् (पुं०) ॥४॥

( द्वाविंशतिः पण्डितस्य )

विद्वान् विपश्चिदोपज्ञः सन्सुधीः कोविदो बुधः  
धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्परिडतः कविः  
धीमान्सूरिः कृती कृष्टिलब्धवर्णो विचक्षणः ।  
दूरदर्शी दीर्घदर्शी

परिडत के २२ नाम—(१) विद्वस् (२)  
विपश्चित् (३) दोषज्ञ (४) सत् (५) सुधी  
(६) कोविद (७) बुध (८) धीर (९)  
मनीषिन् (१०) ज्ञ (११) प्राज्ञ (१२) संख्या-  
वत् (१३) परिडत (१४) कवि (१५) धीमत्  
(१६) सूरि (१७) कृतिन् (१८) कृष्टि (१९)  
लब्धवर्ण (२०) विचक्षण (२१) दूरदर्शिन्  
(२२) दीर्घदर्शिन् ॥ ५ ॥

( द्वे वेदाध्यायिनः )

श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥६॥

वेदपाठी के २ नाम—(१) श्रोत्रिय (२)  
छान्दस । ये (१-२) पुंल्लिङ्ग हैं ॥६॥

१ इत्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा ।

प्रतिग्रहश्च तैर्लुक्त षट्कर्मो विप्र उच्यते ॥

भाग तमाहात्म्य ( अ० ६, २२ ) के अनुसार  
'पण्डित' शब्द की परिभाषा—

'पण्डित सशयच्छेत्ता लोकबोधनतत्पर ।'

गता के अनुसार 'पण्डित' शब्द की परिभाषा—

'यस्य सर्व समारम्भा कामनद्वलपविता ।

ज्ञानाग्निदग्धकर्माण तमाहु पण्डित बुधा ॥'

२ कुछ पुस्तकों में इतने श्लोक अधिक मिलते हैं—

( द्वे मोमासाशास्त्रवेत्तु )

मीमांसको जैमिनीये

मीमांसा (जैमिनि कृत पूर्वमीमांसादर्शन) शास्त्र के  
जाननेवाले के २ नाम—(१) मीमांसक (२) जैमिनीय ।

( द्वे वेदान्तशास्त्रज्ञस्य )

वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ।

वेदान्त ( व्यापकतन्त्रात्मक वेदान्त दर्शन ) के जानने  
वाले के २ नाम—(१) वेदान्तिन् (२) ब्रह्मवादिन् ।

( द्वे उपाध्यायस्य )

उपाध्यायोऽध्यापक

अवेद पढ़ाने वाले के २ नाम—(१) उपा-  
ध्याय (२) अध्यापक ।

( एकं सस्कारादिकर्तुर्गुरोः )

अथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः

निषेक (गर्भाधान) आदि (पुंसवन इत्यादि

( द्वे वैशेषिकशास्त्रवेत्तु )

वैशेषिके स्यादौलूक्ष्यः

परमाणुवाद (कणाद, उलूक कृत वैशेषिकदर्शन) ।  
जाननेवाले के २ नाम—(१) वैशेषिक (२) औलूक्ष्य  
[ द्वे बौद्धशास्त्रज्ञस्य ]

सौगतः शून्यवादिनि ॥१॥

शून्यवाद (बौद्धदर्शन) के जानने वाले के २ नाम—  
(१) सौगत (२) शून्यवादिन् ॥१॥

( द्वे न्यायशास्त्रज्ञस्य )

नैयायिकस्त्वक्षपाद स्यात्

न्यायशास्त्र (अक्षपादगौतम कृत न्यायदर्शन) विशार  
के २ नाम—(१) नैयायिक (२) अक्षपाद ।  
( द्वे जैनशास्त्रज्ञस्य )

स्याद्वादिक आर्हक

स्याद्वाद (जैनदर्शन) के जाननेवाले के २ नाम—  
(१) स्याद्वादिक (२) आर्हक (आर्हन्) ।  
( द्वे चार्वाकशास्त्रज्ञस्य )

चार्वाकलौकायतिकौ

अनोश्वरवाद (बृहस्पति के शिष्य चार्वाक का शास्त्र  
जिनके मत का उल्लेख सर्वदर्शनसंग्रह, सर्वदर्शनशिरो  
मणि, बृहस्पतिस्मृत और नेपथ के १७ वें सर्ग में मिलता  
है) के जानने वाले के २ नाम—(१) चार्वाक (२)  
लौकायतिक ।

( द्वे सांख्यशास्त्रज्ञस्य )

सांख्ये सांख्य-कापिलौ ॥२॥

प्रकृति—पुरषवाद (महर्षि कपिलकृत सांख्यदर्शन)  
के जानने वाले के २ नाम—(१) सांख्य (२) कापिल ॥२॥

३ एकदेश तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुन ।

वेदध्यापनित्वत्वेनमुपाध्यायः स उच्यते [मनु २।१४]

४ निषेकादीनि कर्माणि च करोति यथाविधि ।

सन्भावयति ज्ञानेन स विप्रो गुरुस्त्वयं ॥ [मनु-

संस्कारों के करनेवाले ( पिता आदि ) का नाम—  
( १ ) गुरु ।

( एकमाचार्यस्य )

**मन्त्रव्याख्याकृदाचार्यः**

वेद की व्याख्या करनेवाले का नाम—  
( १ ) आचार्य ।

( त्रीणि यजमानस्य )

आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥७॥

**यष्टा च यजमानश्च**

यजमान के ३ नाम—( १ ) व्रतिन् ( २ )  
यष्टृ ( ३ ) यजमान । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥७॥

( एकं सोमयाजियजमानस्य )

स सोमवति दीक्षितः ।

सोम यज्ञ करने वाले यजमान का नाम—  
( १ ) दीक्षित ।

( द्वे यजनशीलस्य )

**इज्याशीलो यायजूकः**

बार बार यज्ञ करने वाले के २ नाम—( १ )  
इज्याशील ( २ ) यायजूक ।

( एकं सविधियज्ञकर्तृकस्य )

यज्वा तु विधिनेष्टवान् ।

विधि पूर्वक यज्ञ कर लेने वाले का नाम—  
( १ ) यज्वन् ( पुं० ) ॥८॥

( एकं बृहस्पतियागकर्तुः )

**स गीष्पतीष्टया स्थपतिः**

बृहस्पति यज्ञ के करने वाले का नाम—( १ )  
( १ ) स्थपति ।

१ उपनीय तु य शिष्य वेदमध्यापयेद् द्विज ।

साङ्ग'च सरइस्य च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ ( मनु २।१४० )  
व्याख्यानलक्षणं तु—

पदच्छेद पदार्थोक्तिविग्रहो वाक्ययोजना ।

आक्षेपोऽथ समाधान व्याख्यान पदविध मतम् ॥

गीता प्रस द्वारा प्रकाशित 'कृष्णाङ्क' ( वर्ष ६, सं०

१, पृ० ६७ ) में—आचिनोति हि शास्त्राणि स्वाचारे  
स्थापयत्यपि । आचारयति त लोके तमाचार्यं प्रचक्षते ॥

( द्वे सोमयाजिनः )

**सोमपीथी तु सोमपाः ।**

सोमयज्ञ करनेवाले के २ नाम—( १ ) सोम-  
पीथिन् ( २ ) सोमपा ।

( एकं सर्वस्वदक्षिणयागकर्तृकस्य )

सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥९॥

सर्वस्व दक्षिणा से विश्वजित् आदि यज्ञ के  
करनेवाले का नाम—( १ ) सर्ववेदस् ( पुं० ) ॥९॥

( एकं साङ्गवेदविशारदस्य )

**अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती**

साङ्ग ( शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष,  
व्याकरण, छन्द सहित ) प्रवचन ( वेद ) पढे  
हुए का नाम—( १ ) अनूचान ।

( एकं गुरुकुलवासान्निवृत्तस्य )

**गुरोस्तु यः ।**

**लब्धानुज्ञः समावृत्तः**

जिस अनूचान ने गुरु से गृहस्थादि आश्रमों  
के लिए आज्ञा पायी है उसका नाम—( १ )  
समावृत्त ।

( एकं स्नातकस्य )

सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥१०॥

अभिषव स्नान करनेवाले का नाम—( १ )  
सुत्वन् ( पुं० ) ॥१०॥

( त्रीणि शिष्यस्य )

**छात्राऽन्तेवासिनौ शिष्ये**

शिष्य, विद्यार्थी, चेला के ३ नाम—( १ )  
छात्र ( २ ) अन्तेवासिन् ( ३ ) शिष्य ।

( द्वे भारवाध्यायनानां बट्टनाम् )

**शैक्षा. प्राथमकलिपिका. ।**

वेद पढना शुरु करनेवाले लड़कों के २ नाम—  
( १ ) शैक्ष ( २ ) प्राथमकलिपिक ।

( एकं समानशाखाध्येतृणाम् )

**एकब्रह्मव्रताचारा मिथ. सत्रह्यचारिणः ॥११॥**

एक शाखा के पढ़नेवाले ब्रह्मचारियों का

आपस में ( सपाठी ) का नाम—( १ ) सग्रह-  
चारिन् ॥११॥

( एकं सहाध्यायिनाम् )

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवः ।

एक गुरु के यहाँ के पढनेवालों का पारस्परिक  
नाम—( १ ) सतीर्थ्य ।

( एकं कृतान्निचयनस्य )

चित्तवानग्निमग्निचित् ।

अग्नि संग्रह करनेवाले का नाम—( १ )  
अग्निचित् ( पुं० ) ।

( द्वे पारम्पर्योपदेशस्य )

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहास्यम् १२

परम्परा से प्राप्त उपदेश के २ नाम—( १ )  
ऐतिह्य ( २ ) इतिह । इनमें ( १ ) नपुंसक, ( २ )  
अव्यय है ॥१२॥

( एकमाद्यज्ञानस्य )

उपज्ञा ज्ञानमाद्य स्यात्

( उपदेश के बिना, ईश्वरदत्त ) प्रथम ज्ञान  
का नाम—( १ ) उपज्ञा ( स्त्री० ) ।

( एकं ज्ञात्वा प्रथमारम्भस्य )

ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।

समझकर ग्रन्थ के आरम्भ करने का नाम—  
( १ ) उपक्रम ।

( सप्त यज्ञस्य )

यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः

यज्ञ के ७ नाम—( १ ) यज्ञ ( २ ) सव  
( ३ ) अध्वर ( ४ ) याग ( ५ ) सप्ततन्तु ( ६ )  
मख ( ७ ) क्रतु । ये ( १-७ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥१३॥

( पञ्चमहायज्ञानामेकम् )

पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।

एते पञ्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामका १४

पाठ, होम, अतिथियों की सेवा, तर्पण,

१ ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, तर्पणम् ।

होमो वैषो बलिर्मीनो नृपज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥

( मनुस्मृति, ३।७० )

बलि—इन ब्रह्मयज्ञ आदिकों का नाम—( १ )  
महायज्ञ ।

अर्थोत्—पाठ ( विधिपूर्वक वेदाध्ययन ) का  
नाम—( १ ) ब्रह्मयज्ञ ।

( वैश्वदेव का ) हवन का नाम—( १ ) देवयज्ञ ।

अतिथि-सपर्या ( गृहागत अतिथियों को अन्न  
आदि से सन्तुष्ट करने ) का नाम—( १ ) मनुष्ययज्ञ ।

तर्पण ( पितरों को अन्न जल से सन्तुष्ट करने  
का नाम—( १ ) पितृयज्ञ ।

बलि ( जीवों को अन्न दानादि से सन्तुष्ट  
करने ) का नाम—( १ ) भूतयज्ञ ॥१४॥

( नव सभायाः )

समज्या परिषद्गोष्ठी सभा-समिति-संसद ।

आस्थानी क्षीवमास्थान स्त्रीनपुंसकयोःसदः १५

२ सभा के ६ नाम—( १ ) समज्या ( २ ) परि-

षद् ( ३ ) गोष्ठी ( ४ ) सभा ( ५ ) समिति ( ६ )

संसद् ( ७ ) आस्थानी ( ८ ) आस्थान ( ९ ) सदस् ।

इनमें ( १-७ ) स्त्रीलिङ्ग हैं, ( ८ ) नपुंसक, ( ९ )

स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकमे होता है ॥१५॥

( एकं द्विवर्गैः शतपूर्वदेशे स्थितस्य सदस्यगृहस्य )

प्राग्वंशः प्राग्धविर्गैः शत

हविर्गृह के सामनेवाली कोठरी—जिसमें यज्ञ-  
कर्ता के परिवारवाले और गृहद्वर्ग बैठते हैं—का

नाम—( १ ) प्राग्वंश ।

( द्वे सदस्यानाम् )

सदस्या विधिदर्शिनः ।

२ वैदिक काल में 'सभा' और 'नमिति' के कार्य पृथक्  
थे । दोनों प्रजापति की लड़कियों कड़ी गयीं हैं ( 'सभा च  
मा समितिश्चावता प्रजापतेर्दुहितरौ नविदाने'—अथर्ववेद,  
७, १२ ) । नमिति में उपस्थित रहना राजा या परम  
कर्तव्य था । सभा में प्रजापति पर नन्द रहस दोनों थे  
और अन्त में जो निर्णय होता था उसे सब लोग मानते  
थे ( 'विद्यते सभा नात्र नरिहानाम वा क्षतिः । ये ते क  
न सभासदस्ते ते सन्तु मन्वस'—अथर्ववेद ) । नमिति  
और सभापति को सभा अथवा को दृष्टि से देखनी थी  
( 'नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः'—तृष्ण यजुर्वेद, १६, २८ ) ।

यज्ञ के प्रत्येक कार्य विधिपूर्वक सम्पादित होते हैं या नहीं, यह देखनेवाले और विपरीत होने पर संशोधन करनेवाले यज्ञदर्शक ऋत्विग्विशेष के २ नाम—(१) सदस्य (२) विधिदर्शिन् ।

( चत्वारि सामाजिकानाम् )

**सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते**

सभा में बैठनेवालों के ४ नाम—(१) सभासद (२) सभास्तार ( ३ ) सभ्य (४) सामाजिक ॥१६॥

( ऋत्विग्विशेषाणां क्रमादेकैकम् )

**अध्वर्यूद्गातृ-होतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात्**

यजुर्वेद के जाननेवाले ऋत्विज का नाम—

(१) अध्वर्यु ( पुं० ) ।

सामवेद के जाननेवाले ऋत्विज का नाम—

( १ ) उद्गातृ ( पुं० ) ।

ऋग्वेद के जाननेवाले ऋत्विज का नाम—

(१) होतृ ( पुं० ) ।

( द्वे ऋत्विजाम् )

**आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते**

यजमान धन से जिन आग्नीध्र आदि (ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु आदि १६) को यज्ञ में वरण करता हैं उन ऋत्विजों के २ नाम—

( १ ) ऋत्विज् ( २ ) याजक ॥१७॥

( एकं यज्ञवेदिकायाः )

**वेदिः परिष्कृता भूमिः**

होम करने के चबूतरे का नाम —( १ ) वेदि ( स्त्री० ) ।

( द्वे यज्ञार्थं संस्कृतस्य भूभागस्य )

**समे स्थण्डिल-चत्वरे ।**

होम के लिए साफ किए हुए स्थान के २ नाम—( १ ) स्थण्डिल ( २ ) चत्वर । ये (१-२) नपुंसक हैं ।

( द्वे यूपकटकस्य )

**चपालो यूपकटकः**

यज्ञ के यूप में लगी हुई पशु बाँधने की गरादी के २ नाम—( १ ) चपाल (२) यूपकटक ।

( एकं यागभूमावन्त्यजादिदर्शनवारणाय निविडवेष्टनस्य )

**कुम्वा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥**

यज्ञभूमि में अन्त्यजों को देखने से रोकने के लिए लगायी गयी घनी टट्टी का नाम—( १ ) कुम्वा ( स्त्री० ) ॥१८॥

( द्वे यूपान्नभागस्य )

**यूपान्नं तर्म**

यज्ञस्तम्भ के अगले हिस्से ( सिर ) के २ नाम—( १ ) यूपान्न ( २ ) तर्मन् । ये (१-२) नपुंसक हैं ।

( एकमरणेः )

**निर्मन्थ्यादारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।**

जिस काष्ठविशेष को घिसकर अग्नि निकालते हैं उस लकड़ी का नाम—( १ ) अरणि ( पुं०, स्त्रीलिङ्ग )

( एकैकमग्निविशेषस्य )

**दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥**

यज्ञाग्नि विशेषों के एक-एक नाम—( १ ) दक्षिणाग्नि ( २ ) गार्हपत्य ( ३ ) आहवनीय । ये ( १-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥ १९ ॥

( एकमग्नित्रयस्य )

**अग्नित्रयमिदं त्रेता**

तीनों अग्नियों का संयुक्त नाम—( १ ) त्रेता ( स्त्रीलिङ्ग ) ।

( एकं संस्कृतानलस्य )

**प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।**

यज्ञमन्त्र द्वारा संस्कृत ( प्रज्वलित ) अग्नि का नाम—( १ ) प्रणीत ।

( त्रीणि यज्ञाग्निधारणार्थस्य स्थलविशेषस्य )

**समूहः परिचार्योपचार्यावग्नौ प्रयोगिणः २०**

यज्ञाग्निधारणार्थ स्थलविशेष के ३ नाम—( १ ) समूह ( २ ) परिचार्य ( ३ ) उपचार्य ।

( एकं गार्हपत्यानीताग्निविशेषस्य )

**यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।**

**तस्मिन्नानाद्यः**

गार्हपत्याग्नि से निकालकर जो दक्षिणाग्नि स्थापित की जाती है उसका नाम—( १ ) आनाद्य ।

( त्रीण्यग्नेः प्रियायाः )

**अथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥२१॥**

अग्नि की स्त्री 'स्वाहा' के ३ नाम—( १ ) अग्नायी ( २ ) स्वाहा ( ३ ) हुतभुक्प्रिया ॥२१॥  
( द्वे 'समिप्रक्षेपेण वह्निज्वलने या ऋक् प्रयुज्यते' तस्याः )

**ऋक्सामिधेनी धारया च या स्यादग्निसमिन्धने**  
समिधाओं को फेंकते हुए अग्नि के जलाने में जो ऋचा पढ़ी जाती है उसके २ नाम—( १ ) सामिधेनी ( २ ) धारया ।

( एकं गायत्र्यादीनाम् )

**गायत्री प्रमुखं छन्दः**

गायत्री ( उष्णिक्, अनुष्टुप्, वृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती ) आदि का नाम—( १ ) छन्दस् ( नपुंसक ) ।

( एकं हविष्यान्नस्य )

**हव्यपाके चरुः पुमान् ॥२२॥**

हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ ( चावल, घृत, तिल, जौ आदि ) अन्न का नाम—( १ ) चरु ( पु० ) ॥२२॥

( एकं 'पक्वोष्णाक्षीरे दधियोगतो या विकृति' तस्याः )  
**आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः**

औंटे हुए गरम दूध में दही के मिलाने से जो विकार होता है उसका नाम—( १ ) आमिक्षा ( स्त्री० ) ।

( एकं मृगचर्मणा रचितव्यजनस्य )

**धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥२३॥**

मृग के चमड़े से बने हुए पत्ते का नाम—( १ ) धवित्र ॥ २३ ॥

( एकं दधियुक्तघृतस्य )

**पृषदाज्यं सदस्याज्ये**

दही मिला घी का नाम—( १ ) पृषदाज्य ।

( द्वे क्षीराश्वस्य )

**परमान्नं तु पायसम् ।**

खीर के २ नाम—( १ ) परमात्र ( २ ) पायस । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं, ( केवल २ रा पुंल्लिङ्ग में भी ) ।

( द्वे हव्यकव्ययोः )

**हव्यकव्ये दैवपिड्ये अन्ने**

देवताओं को दिये जानेवाले अन्न का नाम—( १ ) हव्य ( नपु० )

पितरों को दिए जानेवाले अन्नका नाम—( १ ) कव्य ( नपु० )

( एकं सुवादिकस्य )

**पात्रं सुवादिकम् ॥ २४ ॥**

यज्ञीय पात्र ( स्रव, चमसा, उलूखलादि ) का नाम—( १ ) पात्र ॥ २४ ॥

( चत्वारि स्रवभेदानाम् )

**ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुवः स्त्रियः ।**

'यज्ञपात्र जो बैकंड की लकड़ी का बनता है, उसका नाम—( १ ) ध्रुवा ( स्त्रीलिङ्ग ) ।

गोलाकार यज्ञपात्र का नाम—( १ ) उपभृत् ( स्त्री० )

अर्ध चन्द्रमा के समान शकलवाले यज्ञपात्र का नाम—( १ ) जुहू ( स्त्री० )

स्रुवा का नाम—( १ ) स्रुव । यह पुंल्लिङ्ग में ( और स्त्रीलिङ्ग में भी ) होता है ।

( एकं क्रतावभिमन्त्रिणपशोः )

**उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः २५**

जो पशु यज्ञ में अभिमन्त्रित कर मारा जाता है उसका नाम—( १ ) उपाकृत ॥२५॥

१ खादरो वाहुमायत् 'सुहृस्वस्तंजक.' स्रुव ।

आग्निमात्रो एमाश्चो वतुनोऽदुष्टपर्वद्वय ।

मर्षवर्षणतया च युच्ये नासाहविभवेत् ॥

'टपभृत्' 'ध्रुवास्' च 'उपभृत्' तपे च ।

'अग्निहोत्रस्य इवणो' तथा धैकृत् स्रुव ॥

एते चान्ये च दश च समेद प्रदेहिताः ॥

( त्रीणि यागार्थपशुहननस्य )

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।

यज्ञ के लिए पशुओं के वध के ३ नाम—  
( १ ) परम्पराक ( २ ) शमन ( ३ ) प्रोक्षण ।

( त्रीणि यज्ञहृतपशोः )

वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसम्पन्न-प्रोक्षिता हते<sup>२६</sup>

यज्ञ के निमित्त मारे गये पशुमात्र के ३ नाम—  
( १ ) प्रमीत ( २ ) उपसम्पन्न ( ३ ) प्रोक्षित ।  
ये ( १-३ ) वाच्यलिङ्ग हैं, अतः पु०, स्त्री०, नपुंसक में होते हैं ॥ २६ ॥

( द्वे हविषः )

सान्नायं हविः

हविविशेष, साकल्य के २ नाम—( १ ) सान्नाय ( २ ) हविष् । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( एकं हुतस्य )

अग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।

अग्नि में हूनी वस्तु का नाम—( १ ) वषट्कृत यह पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसक में होता है ।

( एकमिष्टिपूर्वकस्नानविशेषस्य )

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे

यज्ञ में दीक्षान्त ( दीक्षा की समाप्ति ) का बोधक इष्टिपूर्वक स्नान विशेष का नाम—( १ ) अवभृथ ।

( एकं यज्ञकर्मयोग्यद्विजद्रव्यादे )

तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥२७॥

त्रिषु

यज्ञ कर्म के योग्य वस्तु का नाम—( १ ) यज्ञिय । यह तीनों लिङ्गों में होता है ॥२७॥

( एक यज्ञकर्मणः )

अथ क्रतुकर्मैष्टम्<sup>१</sup>

यज्ञादि कर्म का नाम—( १ ) इष्ट (नपुंसक) ।

( एकं खातादिकर्मणः )

<sup>२</sup>पूतं खातादिकर्मणि ।

<sup>१</sup> एकाम्रिकर्मैष्टवन वेताया यच्च हूयते ।

अन्तर्वेद्यां च यज्ञानभिष्ट तदभिधीयते ॥ इति मनुः ॥

तालाव-कुआ-वावडी-देवालय आदि कर्म का नाम—( १ ) पूत ( नपु० ) ।

( एकैकं यज्ञशेष-भोजनशेषयोः )

अमृतं विधसो<sup>३</sup> यज्ञशेष-भाजनशेषयोः ॥२८॥

यज्ञ से बचे हुए ( पुरोडाश आदि ) का नाम—( १ ) अमृत ।

( देव पितर के ) भोजन से बचे हुए का नाम—( १ ) विधस ॥२८॥

( त्रयोदश दानस्य )

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जन-विसर्जने ।

विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥२९॥

प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहति ।

दान के १३ नाम—( १ ) त्याग ( २ ) विहा-पित ( ३ ) दान ( ४ ) उत्सर्जन ( ५ ) विस-र्जन ( ६ ) विश्राणन ( ७ ) वितरण ( ८ ) स्पर्शन ( ९ ) प्रतिपादन ( १० ) प्रादेशन ( ११ ) निर्वपण ( १२ ) अपवर्जन ( १३ ) अहति । इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग, ( २-१२ ) नपुंसक, ( १३ ) स्त्रीलिङ्ग है ॥ २९ ॥

( एकमौर्ध्वदैहिकदानस्य )

मृतार्थं तदहे दान त्रिषु स्यादौर्ध्वदैहिकम् ॥३०॥

मृतक के निमित्त मरण दिन से लेकर दशाह पर्यन्त पिरुडादिक दान का नाम—( १ ) और्ध्व-दैहिक ( पुं-स्त्री-नपुंसक ) ॥ ३० ॥

( द्वे सपिण्डनादूर्ध्वं पित्रुद्देशेन दानस्य )

पितृदानं निवापः स्यात्

पितरों के निमित्त जो दान किया जाता है उसके २ नाम—( १ ) पितृदान ( २ ) निवाप । इनमें ( १ ला ) नपुंसक और ( २ रा ) पुँल्लिङ्ग है ।

( एकं आह्वस्य )

आह्वं तत्कर्म शास्त्रतः ।

<sup>२</sup> पुष्करिण्य समा वापी देवतायतनानि च ।

आरामश्च विशेषेण पूतं कर्म विनिर्दिशेत् ॥

<sup>३</sup> विधसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चाऽमृतभोजन ।

विधसो भुक्तशेष तु यज्ञशेष तथाऽमृतम् ॥ (मनुः ३।२८५)

‘शास्त्र के अनुसार पितरो की तृप्ति के लिए तर्पण, पिरडदान आदि का नाम—( १ ) आद्र (नपुं०) ।

( द्वे मासिकश्चाद्रस्य )

अन्वाहार्य मासिके

२ मासिक ( अमावस्याके ) आद्र के २ नाम—( १ ) अन्वाहार्य ( २ ) मासिक । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( एकं आद्रकालविशेषस्य )

अशोऽष्टमोऽहः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥३१॥

३ दिन के आठवें सुहूर्त ( जो मध्याह्न समय में होता है ) का नाम—( १ ) कुतप । यह पुँस्त्रिज-नपुंसक में होता है ॥३१॥

( द्वे आद्वे द्विजभक्तिशुश्रूषायाः )

पर्येषणा परीष्टिश्च

आद्र में ब्राह्मणों की भक्तिपूर्वक शुश्रूषा के २

१ माकेण्डेय पुराण में लिखा है कि—

कन्यागते सवितरि दिनानि दश पञ्च च ।

पार्वणेनैव विधिना तत्र आद्र विधीयते ॥

यम महाराज कहते हैं—

नित्य नैमित्तिक काग्य वृद्धिआद्र तथापरम् ।

पार्वण चेति विशेष्य आद्र पञ्चमिद युधैः ॥

आद्र की प्रथा बहुत प्राचीन है । पितर लोग की पूजा का उल्लेख ऋग्वेदादि में मिलता है । यह प्रथा केवल भारत ही में नहीं बल्कि ससार भर में उन दिनों प्रचलित थी । चीन, जापान, रोग, ग्रीस आदि देशों में पितृ पूजा होती थी ।

२ ‘शिरान्वाहार्यक आद्रं कुर्यान्मासानुमासिकम्’—मनुः ।

३ मिताररा के अनुसार आद्र में आठ वस्तुओं की भावश्यकता होती है—मध्याह्न, खट्वापात्र या गंदे के चमड़े वा पात्र, नेपाली कन्दल, चाँदी का दरतन, कुश, तिल, गाय और दौष्टि । मनु ( ३, २३५ ) महाराज कहते हैं—

‘श्रीणि आद्वे पवित्राणि दीहित्र कुनपरितला ।’

मरपि शान्ताप का कथन है—

दिवसस्याष्टौ मागे मन्दोमबनि मास्करे ।

म बाह् शुश्रूषो रेप पितृणा दत्तमष्टयम् ॥

नाम—( १ ) पर्येषणा ( २ ) परीष्टि । ये स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे धर्मादिमार्गणस्य )

अन्वेषणा च गवेषणा ।

धर्म के अन्वेषण करने के २ नाम—( १ )

अन्वेषणा ( २ ) गवेषणा ।

( द्वे गुर्वदिः क्वचिदर्थे प्रार्थनया नियोजनस्य )

सनिस्त्वध्वेषणा

गुरु आदि से किसी निमित्त प्रार्थना-पूर्वक विनती करने के २ नाम—( १ ) सनि ( २ ) अध्वेषणा । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( चत्वारि याचनायाः )

याञ्चाऽभिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥३२॥

याचना ( माँगने ) के ४ नाम—( १ ) याच्ना ( २ ) अभिशस्ति ( ३ ) याचना ( ४ ) अर्थना । ये ( १-४ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ ३२ ॥

षट् तु त्रिषु

ये ( अर्घ्य, पाय, आतिथ्य, आतिथेय, आवेशिक, आगन्तु ) छ शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ( अर्थात् वाच्यलिङ्ग हैं ) ।

( एकमर्घ्यस्य )

अर्घ्यमर्घार्थ

पूजोपचारार्थ जल का नाम—( १ ) अर्घ्य ( पुं-स्त्री-नपुंसक )

( एकं पाद्यस्य )

पाद्यं पादाय धारिणि ।

पाँव धोने के निमित्त जल का नाम—( १ ) पाय ( पुं-स्त्री नपुंसक )

( एकैकमतिथ्यर्थं कर्मस्याऽतिथिनिमित्तसिद्धस्य च ) क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥

अतिथि के निमित्त कर्म ( नेहमान के लिए भोजन आदि के पदार्थ ) का नाम—( १ ) आतिथ्य ( पुं० स्त्री० नपुंसक ) ।

अतिथिसेवाकरक का नाम—( १ ) आतिथेय ( पुं० स्त्री० नपुंसक ) ॥३३॥



( चत्वारि गृहागतस्य )

स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।

<sup>१</sup>मेहमान ( जिनके आने की तिथि नियत न हो ) के ४ नाम—( १ ) आवेशिक ( २ ) आगन्तु ( ३ ) अतिथि ( ४ ) गृहागत । इनमें ( १-२ ) पुं-स्त्री-नपुंसक, ( ३-४ ) पुंल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे अभ्यागतस्य )

प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्च

<sup>२</sup>पाहुन, अभ्यागत के २ नाम—( १ ) प्राघूर्णिक ( २ ) प्राघुणक ।

( द्वे उत्थानपूर्वकसत्कारस्य )

अभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥३४॥

किसी आए हुए पुरुष के सम्मानार्थ उठ खड़े होने के २ नाम—( १ ) अभ्युत्थान ( २ ) गौरव ॥ ३४ ॥

( षट् पूजायाः )

पूजानमस्याऽपचितिः सपर्याऽर्चाऽर्हणाः समाः

पूजा के ६ नाम—( १ ) पूजा ( २ ) नमस्या ( ३ ) अपचिति ( ४ ) सपर्या ( ५ ) अर्चा ( ६ ) अर्हणा । ये ( १-६ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( चत्वारि शुश्रूषायाः )

वरिवस्यां तु शुश्रूषा परिचर्याण्युपासना ५

सेवा, टहल के ४ नाम—( १ ) वरिवस्या ( २ ) शुश्रूषा ( ३ ) परिचर्या ( ४ ) उपासना ॥ ३५ ॥

( चत्वारि पर्यटनस्य )

ब्रज्याऽटाऽथ्या पर्यटनम्

घूमने के ४ नाम—( १ ) ब्रज्या ( २ ) अटा ( ३ ) अथ्या ( ४ ) पर्यटन । इनमें ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं, ( ४ ) था ) नपुंसक ।

( एकमीर्यापथे ध्यानाद्युपाये परिव्राजकादीनां स्थितेः

चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥

<sup>१</sup> दूराच्छोपगत आन्त वैश्वदेव उपस्थितम् ।

अतिथिं त विज्ञानोयान्नातिथि पूर्वमागत ॥ इति व्यासः ।

<sup>२</sup> तिथिपूर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महारमना ।

सोऽतिथिः सर्वभूतानां शोपानभ्यागतान्विदुः ॥ इति यमः ।

<sup>३</sup>ईर्यापथ ( ध्यान-मौनादि योग मार्ग ) में जो स्थिति है उसका नाम—( १ ) चर्या ।

( द्वे आचमनस्य )

उपस्पर्शस्त्राचमनम्

आचमन ( नित्य किए जानेवाले कर्मों के पहले थोड़ा जल हथेली पर रखकर पीने ) के २ नाम—( १ ) उपस्पर्श ( २ ) आचमन । इनमें ( १ ला ) पुंल्लिङ्ग, ( २ रा ) नपुंसक है ।

( द्वे मौनस्य )

अथ मौनमभाषणम् ॥३६॥

मौन ( चुपचाप ) रहने के २ नाम—( १ ) मौन ( २ ) अभाषण ॥ ३६ ॥

( पञ्च अनुक्रमस्य )

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः । पर्यायश्च

परिपाटी, रीति-भाँति के ५ नाम—( १ ) 'आनु-पूर्वी' ( २ ) आवृत् ( ३ ) परिपाटी ( ४ ) अनुक्रम ( ५ ) पर्याय । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसक, में ( २-३ ) स्त्रीलिङ्ग ( ४-५ ) पुंल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीण्यतिक्रमस्य )

अतिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥३७॥

क्रम-भङ्ग करने के ३ नाम—( १ ) अतिपात ( २ ) पर्यय ( ३ ) उपात्यय ॥ ३७ ॥

३ हिन्दुओं में दिनचर्या-रात्रिचर्या पृथक् २ हैं । बौद्धों में उनके आचरणों का वर्णन 'चर्यापिटक' में मिलता है ।

४ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक अधिक पाये जाते हैं—

प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः ।

वाल्मीकिश्च

वाल्मीकि मुनिके ४ नाम—( १ ) प्राचेतस ( २ ) आदिकवि ( ३ ) मैत्रावरुणि ( ४ ) वाल्मीकि ।

अथ ग.धेयो विश्वामित्रश्चः कौशिकः ।

विश्वामित्रके ३ नाम—( १ ) ग.धेय ( २ ) विश्वामित्र ( ३ ) कौशिक । व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवती-सुतः ॥ व्यास मुनि के ४ नाम—( १ ) व्यास ( २ ) द्वैपायन ( ३ ) पाराशर्य ( ४ ) सत्यवतीसुत ।

( द्वे व्रतमात्रस्य )

**नियमो व्रतमस्त्री**

व्रत मात्र के २ नाम—( १ ) नियम ( २ ) व्रत । इनमें ( १ला ) पुंलिङ्ग ( २रा ) पुं-नपुंसक है ।

( एकमुपवासादेर्विहितव्रतस्य )

**तच्चोपवासादि पुरयकम् ॥**

चान्द्रायण आदि उपवास का नाम—( १ ) पुरयक ।

( द्वे उपवासस्य )

**औपवस्तं तूपवासः**

उपवास ( भूखा रहने ) के २ नाम—( १ ) औपवस्त ( २ ) उपवास ।

( द्वे विवेकस्य )

**विवेकः पृथगात्मता ॥३८॥**

चैतन्य और जड़ पदार्थों की निर्णयात्मिका बुद्धि के २ नाम—( १ ) विवेक ( २ ) पृथगात्मता । इनमें ( १ला ) पुं०, ( २ ) स्त्रीलिङ्ग है ॥३८॥

( एक सदाचारपालन वेदाभ्यासयोः सम्पत्ते )

**स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिः**

सदाचार और वेदाभ्यास की सम्पत्ति ( या नेज ) का नाम—( १ ) ब्रह्मवर्चस ।

( एकं वेदाध्ययने कृताऽञ्जलिः )

**अथाऽञ्जलिः ।**

**पाठे ब्रह्माञ्जलि**

वेदपाठ के आरम्भ में प्रणवोच्चारपूर्वक शान्ति-पाठ की अञ्जुली का नाम—( १ ) ब्रह्माञ्जलि ( पुंलिङ्ग ) ।

( एकं वेदपाठे मुखनिर्गतजलविन्दूनाम् )

**पाठे विप्रुपो ब्रह्मविन्दव ॥३९॥**

वेदपाठ के समय मुंह से निकले हुए जलविन्दु का नाम—( १ ) ब्रह्मविन्दु ( पुंलिङ्ग ) ॥३९॥

( एकं ध्यानयोगयोरसनस्य )

**ध्यानयोगासने ब्रह्मासनम्**

ध्यान ( एकाग्र मन से स्मरण करने ) और

योग ( चित्त की वृत्तियों के निरोध करने ) के आसन का नाम—( १ ) ब्रह्मासन ।

( त्रीणि विधानस्य )

**कल्पे विधिकमौ ॥**

वैदिक विधान ( अमुक कार्य करना ) के ३ नाम—( १ ) कल्प ( २ ) विधि ( ३ ) क्रम । ये ( १-३ ) पुंलिङ्ग हैं ।

( एकमाद्यविधेः )

**मुख्यं स्यात्प्रथमः कल्प**

मुख्य विधि ( जैसे 'ब्रीहिभिर्यजेत' ) का नाम—( १ ) मुख्य ।

( एकं गौणविधेः )

**अनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥**

गौण विधि ( जैसे 'ब्रीह्यभावे नीवारैर्यजेत' ) का नाम—( १ ) अनुकल्प ॥ ४० ॥

( एकं संस्कारपूर्वकश्रुतिग्रहणस्य )

**संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ।**

उपनयन संस्कार पूर्वक वेदाध्ययन का नाम—( १ ) उपाकरण ।

( द्वे नामगोत्रोक्तिपूर्वकनमस्कारविशेषस्य )

**समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ॥ ४१ ॥**

नाम और गोत्र बतलाते हुए पादग्रहणपूर्वक प्रणाम 'पालागन' के २ नाम—( १ ) पादग्रहण ( २ ) अभिवादन । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ॥४१॥

( पञ्च सन्यासिनाम् )

**भिभ्रुः पग्निवात् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करो ॥**

परिव्राजक (सन्यासी) के ५ नाम—( १ ) भिभ्रु ( २ ) परित्राज् ( ३ ) कर्मन्दिन् ( ४ ) पाराशरिन् ( ५ ) मस्करिन् । ये ( १-५ ) पुंलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि तपस्विनः )

**तपस्वी तापसः पारिकाञ्ची**

तपस्वी के ३ नाम—( १ ) तपस्विन् ( २ ) तापस ( ३ ) पारिकाञ्चिन् ।

( द्वे मौनप्रतिनः )

**वाचंयमो मुनिः ॥४२॥**

१ 'एकस्मान्नेन मनसा स्मरणं ध्यानमुच्यते ।

चित्तवृत्तिनिरोधस्तु मद्भिर्वाग' इति स्मृतम् ॥

सौनी तपस्वी के २ नाम—(१) वाचयम (२)

मुनि ॥४२॥

( एकं तपःक्लेशसहस्य )

तपःक्लेशसहो दान्तः

तपस्या के कष्टों के सहन करनेवाले का नाम—(१) दान्त ।

( द्वे ब्रह्मचारिणः )

वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ।

ब्रह्मचारी के २ नाम—(१) वर्णिन् (२) ब्रह्मचारिन् ।

( द्वे ऋषिसामान्यस्य )

ऋषयः सत्यवचसः

ऋषि के २ नाम—(१) ऋषि (२) सत्यवचस् ।

( एकं कृतसमावर्तनस्य )

स्नातकस्त्वाप्नुतो व्रती ॥४३॥

<sup>१</sup>स्नातक ( वेदव्रत धारणकर गुरु की आज्ञा से समावर्तन सस्कार किए गए ) का नाम—(१) स्नातक ॥४३॥

( द्वे यतीनाम् )

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥

जितेन्द्रिय के २ नाम—(१) यतिन् (२) यति । ये (१-२) पुंलिङ्ग हैं ।

( द्वे नियमवशाद्भूमिविशेषशायिनः )

यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशायसौ ।  
स्थण्डिलश्च

नियम के कारण भूमि विशेष (चवृतरा आदि) पर शयन करनेवाले के २ नाम—स्थण्डिलशायिन् (२) स्थण्डिल ॥४४॥

( द्वे निवृत्तरजस्तमोगुणानां व्यासादीनाम् )

अथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगा ।

रजोगुण और तमोगुण से रहित ऋषियों ( मत्त्वगुणपरायण व्यासादिकों ) के २ नाम—विरजस्तमस् (२) द्वयातिग ।

१ गुरवे तु वर दत्त्वा स्नायाद्वा तदनुश्रया ।

वेदव्रतानि वा पा ज्ञोत्वा धृ भयमेव वा ॥

( त्रीणि पवित्रस्य )

पवित्रः प्रयतः पूतः

पवित्र के ३ नाम—(१) पवित्र (२) प्रयत (३) पूत ।

( द्वे दुश्शास्त्रवर्तिनां बौद्धक्षपणकादीनाम् )

पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः ॥४५॥

<sup>२</sup>पाखण्डी के २ नाम—(१) पाखण्ड (२) सर्वलिङ्गिन् । ये (१-२) पुंलिङ्ग हैं ४५

( एकं पालाशदण्डस्य )

पालाशो दण्ड आपाढो व्रते

पलाश—( ढाक, टेसू )—दण्ड का नाम—(१) आपाढ ।

( एकं वैणवदण्डस्य )

राम्भस्तु वैणवः ।

वॉस के दण्ड का नाम—(१) राम्भ ।

( द्वे व्रतिनां जलपात्रस्य )

अस्त्री कमण्डलुः कुराडी

कमण्डल के २ नाम—(१) कमण्डलु (२) कुराडी । इनमें (१ ला) पुंलिङ्ग-नपुंसक, (२ रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

( एकं व्रतिनामासनस्य )

व्रतिनामासनं वृषी ॥४६॥

व्रतधारियों के आसन का नाम—(१) वृषी ( स्त्रीलिङ्ग ) ॥ ४६ ॥

( त्रीणि भृगुचर्मणः )

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री

( भृगा के ) चाम ( भृगुछाला ) के ३ नाम—

२ प्रसिद्ध बौद्ध राजा अशोक के पञ्चम तथा द्वादश शिलालेखों में 'पापण्ड' का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया गया है । यह कहा जाता है कि—

'पालनाच्च त्रयीधर्मे पा शब्देन निगद्यते ।

त खण्डयन्ति ते तस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना ॥'

मनु महाराज ( ६।२२५ ) कहते हैं कि—

'कितवान्कुशीलवान्क्रूरान्पापण्डस्थांश्च मानवान् ।

विकर्मस्थाञ्छौण्डिकाश्च क्षिप्र निवामयेत्पुरात् ॥'

पापण्डस्थान्—श्रुतिस्मृतिवाक्यव्रतधारिण ( कुक्कूक )

( १ ) अजिन ( २ ) चर्मन् ( ३ ) कृत्ति । इनमें  
( १-२ ) नपुसक हैं और ( ३ रा ) स्त्रीलिङ्ग ।

( एकं भिक्षासमूहस्य )

भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥

भिक्षा के समूह का नाम—( १ ) भैक्ष ।

( द्वे वेदाध्ययनस्य )

स्वाध्यायः स्याज्जपः

वेदाभ्यास के २ नाम—( १ ) स्वाध्याय  
( २ ) जप ।

( त्रीणि सोमलताकण्डनस्य )

सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ॥४७॥

सोमलता या यज्ञौषधी के कूटने के ३ नाम—  
( १ ) सुत्या ( २ ) अभिषव ( ३ ) सवन । इनमें  
( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग, ( २ रा ) पुल्लिङ्ग, ( ३ रा )  
नपुंसक है ।

( एकं सर्वपापनाशनमन्त्रस्य )

सर्वेनसामपञ्चसि जप्य त्रिष्वधमर्पणम् ॥

सर्वपापों के नाश करनेवाले मन्त्र का नाम—  
( १ ) अघमर्पण ( पुं-स्त्री-नपु सक ) ॥४७॥

( अमावस्यापौर्णमासयागयो-

यथाक्रममेकैकम् )

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयो पृथक् ४८

अमावस्या के दिन किए जानेवाले यज्ञ का  
नाम—( १ ) दर्श ।

पूर्णिमा के दिन किए जानेवाले यज्ञ का  
नाम—( १ ) पौर्णमास ॥४८॥

( एक शरीरमात्रसाध्यनित्यकर्मण )

शरीरसाधनापेक्षं नित्य यत्कर्म तद्यमः ।

शरीर मात्र से साध्य नित्य कर्म का नाम—  
( १ ) यम ।

१ वेदभ्यास्यमेनित्य यथाकालमतन्द्रित ।

स स्वाध्याय पर धर्मानुपपन्नोऽन्य उच्यते ॥ मनु० ४।१।४७

२ पातञ्जल सूत्र [ २-३० ] में कहा गया है—‘कृत्तिमा  
सत्याऽस्तेष्वग्नाद्यर्थाऽपस्त्रिणा यमा ।’ मनुजो [ ४, २०४ ]  
कहते हैं—‘यमान्तेष्वेन सततम्’ ।

( एक बाह्यसाधननित्यकर्मणः )

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ४९

बाह्य ( मिट्टी-जलादि ) साधनों से साध्य  
कृत्रिम कर्म का नाम—( १ ) नियम ॥४९॥

( द्वे वामस्कन्धार्षितयज्ञोपवीतस्य )

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्ध ते दक्षिणे करे ।

बाँए कंधे पर रखे हुए और दहिने हाथ  
के नीचे लटकते हुए जनेव के २ नाम—( १ )  
उपवीत ( २ ) ब्रह्मसूत्र ।

( एकं विपरीतघृतब्रह्मसूत्रस्य )

प्राचीनाधीतमन्यस्मिन्

दहिने कंधे पर रखे हुए और बाँए हाथ

३ यह श्लोक कहीं कहीं अधिक पाया जाता है—

‘क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु ।’

मुण्डन के ४ नाम—[ १ ] क्षौर [ २ ] भद्राकरण  
[ ३ ] मुण्डन [ ४ ] वपन । ये तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

४ पातञ्जल सूत्र [ २।३२ ] में लिखा है—‘शौच-  
सन्तोषतप स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा ।’

५ उपनयन की प्रथा श्रत्यन्त प्राचीन काल से है ।  
हमारे यहाँ उपनयन के समय जैमा मन्त्र ‘ओं यज्ञोपवीत  
परम पवित्र प्रजापतेर्वैदमहज पुरस्ताद आयुष्यमग्र्य  
प्रतिमुष शुभ्र यज्ञोपवीतं वलमस्तु तेज ’ है वैमा ही परस्ता  
लोगों को यहाँ-जो ईरान में बन गये हैं—पाया जाता है ।  
यथा-‘प्राते मज्जदाओ वरु पौरवनिन् आयभ्य ओधनेन  
स्तेहर पाए सपेम् मैत्युतस्तेम । वधुदिम दायनग् गज्जया  
स्तिम् ।’ अर्थात् है मज्जदा यासनिन धर्म के चिह्न । तारों मे  
जड़े यज्ञोपवीत । तुम्हें पूर्वकाल में मज्जदाने धारण किया था ।’

उपनयन काल	कारण	कृत्य	कारण	गीय काल	६६ नीशा का रहस्य
माघशुक्ल त्रि ११	गायत्री	वमन्त ओष्म	गान्नि मृत्यताप	१६ हि २० अ	तियि वां/क्षनव तय वेदा पुण-
वैश्व १०	जगता	गरुड	कृषि	२४ हि २८ अ	नयन् । कान- प्रयथ मामाक्ष मन्त्रसूत्रं पयनव

गानिन् सूत्र [ १।२।१० ] में लिखा है—‘दक्षिणं दाह-  
नुदृत्य शिरोऽधश्चाय मन्त्रेऽस्ते प्रतिष्ठापयन् दक्षिणकष  
मन्त्रेण मन्त्रेण दर्शयन्ती भवति ।’

६ गोभिलसूत्र [ १।२।२ ] में लिखा है—

के नीचे लटकते हुए जनेव का नाम—( १ )  
प्राचीनावीत ।

( एकं कण्ठलम्बितयज्ञसूत्रस्य )

निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥५०॥

कण्ठ में सीधा लटकते हुए जनेव का नाम—  
( १ ) निवीत ॥५०॥

( एकं देवतीर्थस्य )

अंगुल्यग्रे ती<sup>०</sup> दैवम्

<sup>१</sup>अंगुलियों के आगे ( से देवताओं का तर्पण  
करना चाहिए ) के तीर्थ का नाम—( १ ) दैव ।

( एकं कायतीर्थस्य )

स्वल्पांगुलोर्मूले कायम् ।

अनामिका और कनिष्ठिका के मूल के तीर्थ  
का नाम—( १ ) काय ।

( एकं पितृतीर्थस्य )

मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्याः पित्र्यम्

अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य भाग का नाम—  
( १ ) पित्र्य ।

( एकं ब्राह्मतीर्थस्य )

मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥५१॥

अंगुष्ठ के मूल भाग का नाम—( १ ) ब्राह्म ॥५१॥

( त्रीणि ब्रह्मसायुज्यस्य )

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।

ब्रह्म में लय होने ( मिल जाने ) के ३ नाम—  
( १ ) ब्रह्मभूय ( २ ) ब्रह्मत्व ( ३ ) ब्रह्मसायुज्य ।

( त्रीणि देवसायुज्यस्य )

देवभूयादिकं तद्वत्

देवताओं में लय होने के ३ नाम—( १ )  
देवभूय ( २ ) देवत्व ( ३ ) देवसायुज्य ।

( एकं सान्तपनादेः )

कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ॥५२॥

सव्य बाहुमुद्धृत्य शिरोऽवधाय दक्षिणैऽसे प्रतिष्ठापयति  
सव्य कक्षमन्ववलम्ब्य भवत्येव प्राचीनावीतीभवति ।

१ याज्ञवल्क्य —

कनिष्ठा-तर्जन्यङ्गुष्ठ-मूलान्यत्र करस्य च ।

प्रजापति-पितृ-ब्रह्म-देवतीर्थान्यनुक्रमात् ॥

<sup>२</sup>सान्तपन ( चान्द्रायण-प्राजापत्य-पराक )

आदि का नाम—( १ ) कृच्छ्र ॥५२॥

( एकं प्रायोपवेशस्य )

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायः

संन्यासपूर्वक भोजनत्यागने का नाम—( १ )  
प्राय ( पुल्लिङ्ग ) ।

( द्वे नष्टाग्नेः )

अथ वीरहा ।

नष्टाग्नि

नष्टाग्नि वाले के २ नाम—( १ ) वीरहन् ( २ )  
नष्टाग्नि । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( एकं परधनाद्यभिलाषाद्दम्भेन कृतध्यानमौनादेः )

कुहना लोभान्मिथ्यैर्यापथकल्पना ॥५३॥

लोभ से ( परधन की अभिलाषा से ) दम्भ-  
पूर्वक ध्यान-मौनादि करने ( मक्कारी, वगुलाभगती )  
का नाम—( १ ) कुहना ( स्त्री० ) ॥५३॥

( एकमुपनयनसंस्कारहीनस्य )

व्रात्यः संस्कारहीनः स्यात्

<sup>३</sup>गौणकाल के अनन्तर भी उपनयन संस्कार  
से रहित व्यक्ति का नाम—( १ ) व्रात्य ।

( द्वे वेदाध्ययनरहितस्य )

अस्वाध्यायो निराकृतिः ।

वेदाभ्यास रहित के २ नाम—( १ ) अस्वा-  
ध्याय ( २ ) निराकृति । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे जीविकार्थं जटादिधारिणः )

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिः

जीविका के निमित्त जटादि धारण करनेवाले  
( बहुरूपिया, ठग ) के २ नाम—( १ ) धर्मध्वजिन्  
( २ ) लिङ्गवृत्ति । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

२ गोमूत्र गोमय क्षीर दधि सर्पिः कुशोदकम् ।

एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम् ॥

—मनु० ११।२।१२

३ सावित्रीपतिता व्रात्या व्रात्यस्तोमादृते, क्रतो ।

‘वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य’ [ मनु १०।८० ]

‘वेदमेवाभ्यसेन्नित्यम्’ [ मनु ४।१४७ ]

अनधीत्य तु यो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।

स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥

( द्वे खण्डितब्रह्मचर्यस्य )

अवकीर्णी क्षतव्रत. ॥५४॥

नष्ट ब्रह्मचर्य वाले व्यक्ति के २ नाम—( १ ) अवकीर्णिन् ( २ ) क्षतव्रत । ये ( १-२ ) पुंल्लिङ्ग हैं ॥ ५४ ॥

( एकैकमभिनिर्मुक्ताभ्युदितयोः )

सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ।  
अशुमानभिनिर्मुक्ताऽभ्युदिता च यथाक्रमम् ५.

जिसके सोने में सूर्य अस्त हो जाता है उस ( सूर्यास्त तक सोनेवाले ) का नाम—( १ ) अभिनिर्मुक्त ।

जिसके सोने में सूर्य उगा है उस ( सूर्योदय तक सोनेवाले ) का नाम—( १ ) अभ्युदित ॥ ५५ ॥

( एकं ज्येष्ठे विवाहरहिते विवाहितकनिष्ठस्य )  
परिवेत्ताऽनुजोऽनुदे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥

१ जिसका बड़ा भाई न व्याहा गया हो और पहिले छोटा व्याहा जाय उस छोटे भाई का नाम—( १ ) परिवेत्त ( पु० )

( एक कनिष्ठे विवाहितेऽविवाहितज्येष्ठस्य )  
परिविचिस्तु तज्ज्यायान्

उसके बिना व्याहे गए बड़े भाई का नाम—( १ ) परिविति ( पु० )

( षट् विवाहस्य )

विवाहोपयमौ समौ ॥५६॥

तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥

२ विवाहके ६ नाम—( १ ) विवाह ( २ ) उपयम ( ३ ) परिणय ( ४ ) उद्वाह ( ५ ) उपयान ( ६ ) पाणिपीडन । ये ( १-५ ) पु० ( ६ ) नपुं० ह ॥ ५६ ॥

१ ये प्रजेष्कलप्रेषु कुर्वन्ते दारमन्त्रणम् ।

ऐतान्ते परिवेत्तार परिविचिस्तु पूर्वज ॥

२ विवाह का शिवास अन्तर्गत दितुन एव मनोरथक है, किन्तु अन्तिमतरमन्त्र उल्लेख नहीं किया जायगा ।

मध्यमिन्मन्त्रास्तेन स्त्रीविवाहादिषोपत ।

शास्त्रे दैवस्तथैकार्प्यं प्राजापत्यन्तथाह्वयः ।

नान्येन सप्तस्वरैश्चैतान्तरश्चैतमोऽप्यन ॥

( मनु ३/११ )

( पञ्च मैथुनस्य )

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥५७॥

मैथुन के ५ नाम—( १ ) व्यवाय ( २ ) ग्राम्यधर्म ( ३ ) मैथुन ( ४ ) निधुवन ( ५ ) रत । इनमें ( १-२ ) पुंल्लिङ्ग, ( ३-५ ) नपुंसक हैं ॥ ५७ ॥

( एकं त्रिवर्गस्य )

त्रिवर्गो धर्मकामार्थैः

धर्म-अर्थ-काम के समुदाय का नाम—( १ ) त्रिवर्ग ।

( एकं चतुर्वर्गस्य )

चतुर्वर्ग समोक्षकैः ॥

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के समुदाय का नाम—( १ ) चतुर्वर्ग ।

( एकं चतुर्भद्रस्य )

सवलैस्तैश्चतुर्भद्रम्

मनुष्यों की अमितापात्रों ( वल, धर्म, सुख, धन ) का संयुक्त नाम—( १ ) चतुर्भद्र ।

( एकं वरवयस्यादीनाम् )

जन्त्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥५८॥

दलह के मित्र, सहवाला, सम्बन्धी आदि का नाम—( १ ) जन्य ॥ ५८ ॥

( इति ब्रह्मवर्गः ७ )

( पञ्च क्षत्रियस्य )

मूर्ध्नाभिपिक्तो राजन्यो वाहुज क्षत्रियो विगात्

क्षत्रिय के ५ नाम—( १ ) मूर्ध्नाभिपिक्त ( २ ) राजन्य ( ३ ) वाहुज ( ४ ) क्षत्रिय ( ५ ) विगात् ।

( सप्त राज्ञो नामानि )

राज्ञे राष्ट्रपार्थिवदमाभृन्नृपभृपमहीजित् ॥१॥

३ राजा के ७ नाम—( १ ) राजन् ( २ ) राष्ट्र

३ महाराज दुषिष्ठि, शान्तिपरे महामात ( ४२, १२१ )

में, नीचम विज्ञानह से पूछते हैं—

य एष राजन् गच्छेत्तु मन्त्रश्चास्ति सान्त्त ।

इत्यनेन समुत्तरमन्त्रेन यदि स्थितम् ।

( ३ ) पार्थिव ( ४ ) क्षमाभृत् ( ५ ) नृप ( ६ ) भूप ( ७ ) महीक्षित् ॥ १ ॥

( एकं सर्वसन्निहितनृपवशकारिणः )

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।

जिसकी देश-देशान्तरों के राजा नमस्कार कर अधीनता स्वीकार करते हैं उस महाराजा का नाम—( १ ) अधीश्वर ।

( द्वे भासमुद्रक्षितीशस्य )

चक्रवर्ती सार्वभौमः

जिसके रथ का पहिया प्रत्येक स्थल पर जा सके, या समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का शासन करनेवाले, या ( कौटिल्य की परिभाषा के अनुसार ) कन्या-कुमारी से काश्मीर तक राज्य करनेवाले महाराजा-विराज के २ नाम—( १ ) चक्रवर्तिन् ( २ ) सार्वभौम ।

( एक माण्डलिकस्य )

नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥२॥

‘माण्डलिक राजाओं ( कमिश्नरों ) का नाम—( १ ) मण्डलेश्वर ॥२॥

( एकमिष्टराजसूयादिविशेषणत्रयविशिष्टसार्वभौमस्य )  
येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।

शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः सः सम्राट्

<sup>१२</sup> राजसूय यज्ञ के करनेवाले, बारह मण्डलों

भीष्म पितामह का इस पर बड़ा लम्बा-चोड़ा उत्तर है किन्तु उसका सारांश अन्त में बतलाया गया है—

रञ्जिताश्च प्रजास्सर्वा तेन राजेति शब्दयते ।

शुक्रनोति ( १, १८८ ) में लिखा है—

स्वमागभृत्या दास्यन्ते प्रजाना च नृपः कृत ।

ब्रह्मणा स्वामिरूपस्तु पालनार्थं हि सर्वदा ॥

कौटिल्य महाराज कहते हैं—

विधाविनीतो राजा हि प्रजानां विनये रत ।

अनन्यां पृथिवीं भुक्ते सर्वभूतहिते रतः ॥

१ एक-एक मण्डल में १००० से ४००० तक गाँव होते थे । आठवीं सदी का एक शिलालेख हुणक ( वर्तमान पूना ) को सहस्र विषयवर्ती बतलाना है । ऐसे ऐसे तीन या चार मण्डलों ( कमिश्नरियों ) का अधिपति होता था ।

२ राजसूय यज्ञ लगभग २७ महीनों में समाप्त होता ।

का अधिपति और अपनी इच्छा से राजाओं पर शासन करनेवाले का नाम—( १ ) सम्राज् ।

( एकैकं नृपतिगणस्य क्षत्रियगणस्य च )

अथ राजकम् ॥३॥

राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गण्ये क्रमात् ।

<sup>३</sup> राजाओं के गण का नाम—( १ ) राजकम् ॥३॥

क्षत्रियों के गण का नाम—( १ ) राजन्यक ।

( त्रीणि धीसचिवस्य )

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यः

या । ऐतरेय ब्राह्मण ( ८, १२ ) के अनुसार इस यज्ञ के करनेवाले को साम्राज्य, भोज्य, स्वाराज्य, वैराज्य, पार-मेष्ठ्य, महाराज्य और दीर्घजीवनकी प्राप्ति होती थी । शतपथ ब्राह्मण ( ५, १, १, १२ ) के अनुसार केवल स्वाराज्य मिलता था ( राजा स्वाराज्यकामो राजसूयेन यजेत ) । शांख्यायन श्रौत सूत्र ( १५, १२, १ ) के अनुसार इसके द्वारा श्रेष्ठ्य, स्वाराज्य और आधिपत्य की प्राप्ति होती थी । आपस्तम्बश्रौतसूत्र ( १८, ८, १ ) में भी इसी तरह बतलाया गया है । राजा को क्रमशः सेनानी, पुरोहित, चक्र, महिषी, सूत, ग्रामणी, क्षत्र, समहित, भागदुष, अज्ञावाप, गोविकर्तन, पालागल और परिवृत्ति की पूजा करना पड़नी थी । महाभारत काल में परिवर्तन हुआ । दिग्विजय करने के बाद शूर वीर राजा राजसूय यज्ञ करते थे । महाभारत ( समापर्व, १३, ४७ ) में लिखा है—

यस्मिन् सर्वं सम्भवति यश्च सर्वत्र पूज्यते ।

यश्च सर्वेश्वरो राजा राजसूय स विन्दन्ति ॥

३ वीरमित्रोदय में लिखा है—‘कुलानां समूहस्तु गणः सम्प्रकीर्तितः ।’ सस्कृत साहित्य में प्रजातन्त्र के लिए ‘गण’ शब्द का प्रयोग किया गया है । बाद में गण राज्य असेम्बली द्वारा शासित गवर्नमेण्ट या पार्लियामेण्ट के अर्थ में व्यवहृत होने लगा । गणराज्य का वर्णन महाभारत शान्तिपर्व अध्याय १०७ में मिलता है । महाराज युधिष्ठिर ने प्रश्न किया है और भीष्मपितामह ने विस्तृत उत्तर दिया है । पाणिनि छ जातियों का वर्णन करते हैं जो उनके समय तक गणराज्य के रूप में थे । उनके नाम हैं राजन्य ( ४।२।५३ ), अन्धकवृष्णि ( ४।२।३४ ) मद्र ( ४।२।१३१ ), वृजि ( ४।२।५३ ), मर्ग ( ४।२।३४ )

वृष्णि राजन्यगण का एक सिका मिल है जो ई० पू० प्रथम शताब्दी का है ।

१ मन्त्री या वजीर के ३ नाम—(१) मन्त्रिन्  
(२) धीमन्त्रि (३) अमात्य ।

( एकं कर्मसचिवस्य )

अन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥४॥

मुनाहिव या छोटे वजीर का नाम—(१) कर्म-  
सचिव ॥४॥

( द्वे प्रधानस्य )

महामात्राः प्रधानानि

२ प्रधान के २ नाम—( १ ) महामात्र ( २ )  
प्रधान । इनमें ( १ ला ) पुँल्लिङ्ग, ( २ रा ) नपुंसक-  
पु० में है ।

( द्वे धर्माध्यक्षस्य )

पुरोधस्तु पुरोहितः ।

३ पुरोहित के २ नाम—( १ ) पुरोधस् ( २ )  
पुरोहित ।

( द्वे प्राड्विवाकस्य )

द्रष्टरिव्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ ॥५॥

४ व्यवहारो ( श्रृणादिकों ) के विषय में वादी-  
प्रतिवादी ( मुद्दे-मुद्दालेह ) द्वारा बनाए मुकदमे के  
निर्णय करनेवाले न्यायाधीश विचाराधीश के २  
नाम—( १ ) प्राड्विवाक ( २ ) अक्षदर्शक ॥५॥

१ नोतिग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता है कि मन्त्र  
का वही काय था जो आजकल परराष्ट्र मन्त्रि का है ।  
अमात्य की कार्यप्रणाली का विराट वर्णन शुक्लनीति  
( २, १०३-१०५ ) में मिलता है ।

२ प्रधान का कार्य आजकल के प्राश्म मिनिसटरों की  
तरह था ।

महती च भाषा येषा महामात्राश्च ते स्मृताः ।

अशोक के समय इन्हें 'धर्ममहामात्य', सामबाहनों के  
समय 'अभयानां महामात्य', गुप्तों के समय 'विनयस्थिति-  
स्थापक' राष्ट्रकुटों के समय 'धर्मकुग' आदि कहते थे ।

३ मन्त्रिमण्डल के १० मन्त्रियों में से एक का नाम  
पुरोपस्थ था । —पुनः नोति ।

४ विवाहानुगत पृष्ट्वा पूर्वशक्य प्रयत्नः ।

विचारयति येनासौ प्राड्विवाकस्ततः स्मृतः ॥

५ योः कः पश्चिम को हैसियत में राजधानी की सुग्रीव  
शेरे का गन्तव्य करने थे । बाद में ५६ एक स्वतन्त्र  
राज्य 'प्राद्विवाक' बन गया ।

( पञ्च द्वारपालस्य )

प्रतीहारौ द्वारपालद्वयः स्थद्वाः स्थितदर्शकाः ।

द्वारपाल के ५ नाम—( १ ) प्रतीहार ( २ )  
द्वारपाल ( ३ ) द्वा स्थ ( ४ ) द्वा स्थित ( ५ )  
दर्शक ।

( द्वयं राजरक्षकगणस्य )

रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थः

रक्षक ( राजाओं के अंगरक्षक ) के २ नाम—  
( १ ) रक्षिवर्ग ( २ ) अनीकस्थ ।

( द्वे अध्यक्षस्य )

अथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥६॥

अध्यक्ष या अधिकारी के २ नाम—( १ )  
अध्यक्ष ( २ ) अधिकृत ॥६॥

( एकमेकग्रामाधिकृतस्य )

स्यायुकोऽधिकृतो ग्रामे

७ एक गाँव के अधिकारी का नाम—( १ )  
स्यायुक ।

( एकं बहुग्रामाधिकृतस्य )

गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।

८ बहुत से गाँवों के अधिकारी का नाम—  
( १ ) गोप ।

( द्वे स्वर्णाध्यक्षस्य )

भौरिकः कनकाध्यक्षः

९ सुवर्णाध्यक्ष के २ नाम—( १ ) भौरिक  
( २ ) कनकाध्यक्ष ।

५ कुलाल जातक में लिखा है कि ग्रामाधिप देवस  
वसुन् परे ।

६ गोप नामक अधिकारी के मतहत पाँच से दस दूध-बंदे  
गाँवों का शासनाधिकार था । ये अपने रजिस्टर में गाँवों  
के रेत, गाँवों की सीमा, जंगल और गाँवों के मड़क आ  
मविस्तर दर्शन लिखते थे । अनेक स्थानों पर गोप का  
अधिकार क्षेत्र में काम या जालिम गाँव भी होते थे । भौदै  
राज्यपाल से लेकर गुप्त राज्यपाल तक यह पद बना रहा  
है । कौटिल्य अपने राज ( २-३४, ३६ ) में विस्तार पूर्वक  
लिखा है ।

७ खान में निकले हुए मोने प्रादि पातकों को रिम



( द्वे रूपाध्यक्षस्य )

रूपाध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥७॥

१रूपयों के अधिकारी के २ नाम—( १ )

रूपाध्यक्ष ( २ ) नैष्किक ॥७॥

( एकमन्तःपुराधिकृतजनस्य )

अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वेशिको जनः ।

रनिवास के अध्यक्ष का नाम—( १ ) अन्त-  
वैशिक ।

( चत्वारि राज्ञां स्यगारे बही रक्षाधिकृतस्य )

सौविदलः कञ्चुकिनः स्थापत्या सौविदाश्च ते

रनिवास पर बेंत की छड़ी लेकर पहरा देने-  
वाले के ४ नाम—( १ ) सौविदल ( २ ) कञ्चु-  
किन् ( ३ ) स्थापत्य ( ४ ) सौविद ॥८॥

( द्वे अन्तःपुरचारिणो क्लीबमात्रस्य )

परढो वर्षवरस्तुल्यौ

२रनिवास में रहनेवाले हिजड़े या खोजा के  
२ नाम—( १ ) परढ ( २ ) वर्षवर ।

( त्रीणि सेवकस्य )

सेवकार्यनुजीविनः ।

नौकर के ३ नाम—( १ ) सेवक ( २ )

अर्थिन् ( ३ ) अनुजीविन् ।

( एकं स्वदेशादन्यतरस्य राज्ञः )

विषयानन्तरो राजा शत्रुः

पड़ोसी राजा का नाम—( १ ) शत्रु ।

( एकं मित्रस्य )

मित्रमतः परम् । ६॥

स्थान पर सशोधन कर तैयार किया जाय उसे अक्षराला  
कहते हैं । इस कार्य का निरीक्षण करनेवाला जो अधिकारी  
पुरुष होता है उसका नाम सुवर्णाध्यक्ष है । इसके विषय  
में कौटिल्य अर्थ शास्त्र (२।१३) में सविस्तर लिखा गया है ।

१ 'निष्क' एक प्रकार का प्राचीन सिक्का था, जिसके  
अधिकारी को नैष्किक कहते थे । ऋग्वेद में पहले पहल  
निष्कका उल्लेख पाया जाता है यथा—शत राज्ञो नाधमानस्य  
निष्कान्द्रतमश्वान् प्रयतान्तस्य आदम् ( १, १२६, २ ) ।  
अहन्विमपि सायकानि धन्वाहं निष्कं यजत विश्वरूपम् ।

२ 'ये स्वल्पसत्त्वा प्रथमा ह्योवाश्च खीखमाविन ।

जात्या न दुष्टा कायपु ते वै वर्षवरा स्मृता ॥' ।

३ शत्रु से मित्र राजा का नाम—( १ ) मित्र ॥६॥

( एकं शत्रुमित्राभ्यां परस्य राज्ञः )

उदासीनः परतरः

तटस्थ रहनेवाले राजा का नाम—( १ )  
उदासीन ।

( एकं जिगीषोः पृष्ठभागस्थितस्य राज्ञः )

पार्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

शत्रु को जीतने के लिए राजा के आगे बढ़  
जाने पर पीछे से उसके राज्य पर हमला करने-  
वाले राजा का नाम—( १ ) पार्णिग्राह ।

( एकोनविंशतिः शत्रोः )

रिपौ वैरि-सपत्नारि-द्विषद्-द्वेषण-दुर्हृदः ॥१०॥  
द्विड्-विपत्ताऽहिताऽमित्र-दस्यु-शत्रवः-शत्रवः  
अभिघाति पराऽराति-प्रत्यर्थि-परिपन्थिन ॥

शत्रु, वैरी, दुश्मन के १९ नाम—( १ )  
रिपु ( २ ) वैरिन् ( ३ ) सपत्न ( ४ ) अरि ( ५ )  
द्विषत् ( ६ ) द्वेषण ( ७ ) दुर्हृद ( ८ ) द्विप् ( ९ )  
विपत् ( १० ) अहित ( ११ ) अमित्र ( १२ ) दस्यु  
( १३ ) शत्रव ( १४ ) शत्रु ( १५ ) अभिघातिन् ( १६ )  
परा ( १७ ) अराति ( १८ ) प्रत्यर्थिन् ( १९ ) परि-  
पन्थिन् । ये ( १-१९ ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१०-११॥

( त्रीणि तुल्यवयस्कप्रियस्य )

वयस्यः स्निग्धः सवयाः

तुल्य अवस्थावाले प्रिय, लंगोटिया थार,  
हमजोली दोस्त के ३ नाम—( १ ) वयस्य ( २ )  
स्निग्ध ( ३ ) सवयस् । ये ( १-३ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि मित्रस्य )

अथ मित्रं सखा सुहृत् ॥

४ मित्र के ३ नाम—( १ ) मित्र ( २ )  
सखिन् ( ३ ) सुहृद् ।

( एकं मैत्र्याः )

सखः सासपदीनं स्यात्

३ 'यावदुपकरोति तावन्मित्रं भवत्युपकारलक्षणमिति'  
कौटिल्य ( ७।६ )

४ अत्यागसहनो वन्धुः सदेवानुगतः सुहृत् ।

एकक्रिय भवेन्मित्रं समप्राणः सखा मतः ॥

मित्रता, मिताई के २ नाम—( १ ) सख्य  
( २ ) सासपदीन ।

( द्वे आनुकूल्यस्य )

अनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥१२॥

माफिक, मुलाहजा के २ नाम—( १ ) अनु-  
रोध ( २ ) अनुवर्तन ॥१२॥

( सप्त चारपुरुषस्य )

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।

चारश्च गूढपुरुषश्च

जासूस, मेदिआ, खुफिया के ७ नाम—(१)  
यथार्हवर्ण ( २ ) प्रणिधि ( ३ ) अपसर्प ( ४ )  
चर ( ५ ) स्पश ( ६ ) चार ( ७ ) गूढपुरुष ।  
ये ( १-७ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( विश्वासाधारस्य )

आप्त प्रत्ययितौ समौ ॥१३॥

विश्वासी, विश्वस्त व्यक्ति के २ नाम—(१)  
आप्त (२) प्रत्ययित । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-  
नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ॥१३॥

( भट्टौ ज्योतिषिकस्य )

सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञ-गणकावाप ।  
स्युमौहृत्किन्-मौहूर्त ज्ञानि-कार्तान्तिका अपि ॥

ज्योतिषी, जोशी के ८ नाम—( १ ) साव-  
त्सर ( २ ) ज्योतिषिक ( ३ ) दैवज्ञ ( ४ ) गणक  
( ५ ) मौहृत्किन् ( ६ ) मौहूर्त ( ७ ) ज्ञानिन् ( ८ )  
कार्तान्तिक ॥१४॥

( द्वे ज्ञातसिद्धान्तस्य )

तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः

ज्ञाततत्त्वज्ञ के २ नाम—( १ ) तान्त्रिक (२)  
ज्ञातसिद्धान्त ।

( द्वे गृहपतेः )

सत्त्री गृहपतिः समौ ॥

घर के मालिक के २ नाम—( १ ) सत्त्री (२)  
गृहपति ।

( पञ्चारि लेखकस्य )

लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचञ्चुश्च लेखके ॥१५॥

<sup>१</sup>लेखक के ४ नाम—( १ ) लिपिकर ( २ )

अक्षरचण ( ३ ) अक्षरचञ्चु ( ४ ) लेखक ॥१५॥

( चत्वारि लिखिताक्षरस्य )

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिलिखितमे द्वियौ ।

<sup>२</sup>लिखा हुआ, लेख के ४ नाम—(१) लिखित  
( २ ) अक्षरविन्यास ( ३ ) लिपि ( ४ ) लिखि ।  
इनमें ( १-२ ) नपुंसक, ( ३-४ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे संदेशहरस्य )

स्यात्संदेशहरो दूतः

<sup>३</sup>दूत, हलकारा, सन्देशिया के २ नाम—(१)  
सन्देशहर ( २ ) दूत ।

( एकं दूतकर्मणः )

दूत्यं तद्भावकर्मणि ॥१६॥

दूतकर्म का नाम—(१) दूत्य (नपुंसक) ॥१६॥

( पञ्च पथिकस्य )

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्य पान्थः पथिक इत्यपि

वटोही, यात्री, सुमाफिर, रास्ता चलनेवाला,  
राहगीर के ५ नाम—( १ ) अध्वनीन ( २ ) अध्वग  
( ३ ) अध्वन्य ( ४ ) पान्थ ( ५ ) पथिक ।

( सप्त राज्याङ्गानाम् )

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गवलानि च ॥१७॥

राज्याङ्गानि प्रकृतय पौराणाश्चेत्योऽपि च ॥

<sup>१</sup> कौटिल्य अर्थशास्त्र में लिखा है—

‘तस्मादमात्यसम्यग्दोषेन सर्वसमयविदाशुमन्यश्चर्वचरो  
लेखवाचनमर्थो लेखकः स्यात् ।’

दोष निकाय ( पाली टेक्स्ट सोमायटा का संस्करण,  
२२१ खण्ड, २२०-२२५ पृष्ठ ) में पता चलता है कि लेखक  
लोग सधरामन के पालियामेष्ट वा एक-एक अक्षर लिखते  
थे और उनकी बड़ी प्रशंसा थी ।

२ धाराही तन्त्र में लिखा है—

मुद्रालिपि शिल्पलिपिलिखितेनमममम ।

मुद्रालिपि शिल्पलिपिलिखितेनमममममम ।

पं० श्री गौरीशङ्कर दीराचन्द्र शोभाजी का ‘प्रान्त  
लिपि माला’ में ब्राह्मलिपि, खरोष्ठी लिपि आदि की  
विन्यास दिये हैं ।

३ कौटिल्य अर्थशास्त्र ( १, १६ ) में ‘दूतसु विविधः’

इत्यादि कहा है ।

<sup>१</sup> राज्य के अङ्ग और प्रकृति—( १ ) राज्याङ्ग ( २ ) प्रकृति का वर्णन—( १ ) स्वामिन् (राजा), ( २ ) अमात्य ( मन्त्री ) ( ३ ) सुहृद् ( मित्रराष्ट्र ), ( ४ ) कोष ( खजाना ), ( ५ ) राष्ट्र ( देश ), ( ६ ) दुर्ग ( किला ), ( ७ ) बल ( फौज ) ॥१७॥

नागरिकशासनका भी नाम—( १ ) प्रकृति ।

( एकं पदं गुणानाम् )

संधिर्ना विग्रहो यानमासन द्वैधमाश्रयः ॥१८॥  
षड्गुणाः

<sup>२</sup> सोना आदि देकर शत्रु के साथ मेल करने का नाम—( १ ) सन्धि ( पुँल्लिङ्ग )

शत्रु से झगड़ा मोल लेने का नाम—( १ ) विग्रह ( पुँ ) ।

शत्रु राज्य पर चढ़ाई करने का नाम—( १ ) यान ( नपु )

निज शक्ति की वृद्धि के निमित्त दुर्ग आदि में रहने का नाम—( १ ) आसन ( नपुंसक ) ।

बली के साथ सन्धि और निर्वल के साथ विग्रह करने का नाम—( १ )—द्वैध ( नपुंसक ) ।

दूमरे बलवान राजा के सामने अपने पुत्र, स्त्री, आत्मा तथा सर्वस्व समर्पण करने का नाम—( १ ) आश्रय ( पु ) ।

इन ६ ( सन्धि-विग्रह-यान-आसन-द्वैधीभाव-संश्रय ) का संयुक्त नाम—( १ ) गुण ( पुँ ) ॥१८॥

( एकं तिसृणां शक्तीनाम् )

शक्त्यस्तिस्र प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ॥

१ 'स्वाम्यमात्यक्ष राष्ट्रं दुर्गं कोशो बलं सुहृद् । परस्परपरोपकारोद सप्तङ्गं राज्यमुच्यते । इति कामन्दकीये ( ४।१ ) । कौटिल्य अर्थ शास्त्र ( ६।१ ) में—

स्वाम्यमात्य जनपद-दुर्ग-कोश-दण्ड-मित्राणि प्रकृतयः ।

२ कौटिल्य अर्थ शास्त्र ( ७।१ ) में—

'सन्धि-विग्रहासन-यान-संश्रय द्वैधीभावा पादगुणय-मित्याचार्याः । तत्र पणबन्ध. सन्धि. । अपकारो विग्रहः । उपेक्षणमासनम् । अभ्युच्चयो यानम् । परार्पणं संश्रयः । सन्धिविग्रहोपादानं द्वैधीभाव इति षड् गुणाः ॥'

<sup>३</sup> प्रभाव ( कोश-दण्ड से उत्पन्न हुआ तेज ), उत्साह ( पराक्रम-आदि करने से उत्पन्न ) और मन्त्रज ( सन्धि-विग्रह आदि को मन्त्र से यथावत् स्थापन करने ) का सामूहिक नाम—( १ ) शक्ति ( स्त्रीलिङ्ग )

( त्रीणि नीतिवेदिनां त्रिवर्गस्य )

क्षयःस्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम्

<sup>४</sup> नीतिजों के त्रिवर्ग का नाम—( १ ) क्षय ( २ ) स्थान ( ३ ) वृद्धि । इनमें ( १ ) पु, ( २ ) नपुं, ( ३ ) स्त्री है ॥१९॥

संयुक्त नाम—( १ ) त्रिवर्ग ( पुँ ) ॥ १९ ॥

( द्वे कोपदण्डजतेजसः )

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ॥

धनसमूह, दण्ड अर्थात् दम या सेना—इन दोनों से उत्पन्न हुए तेज के २ नाम—( १ ) प्रताप ( २ ) प्रभाव ।

( एकैकं नृपोपायचतुष्टयानाम् )

सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥२०॥

राजा के चारो उपायों—मीठी वाणी से अर्पण करने, वन देने, भेद पैदा करने और दण्ड देने—के एक-एक नाम—( १ ) सामन् ( २ ) दान ( ३ ) भेद ( ४ ) दण्ड । इनका संयुक्त नाम—( १ ) उपाय ( पुँ ) ॥ २० ॥

( त्रीणि दण्डस्य )

साहसं तु दमा दण्ड

३ कौटिल्य अर्थ शास्त्र ( ६।२ ) में लिखा है—

शक्ति-स्त्रिविधा—ज्ञानबल मन्त्रशक्ति, कोशदण्डबल प्रमुशक्ति, विक्रमबलमुरसादशक्ति ।

शिशुपालवध द्वितीयसर्ग में इसके सम्बन्ध में कहा गया है ।

४ 'युग्यपुरपापचयः क्षयः' ( कौ० अ० शा० ६।४ ) ।

अष्टवर्ग का लक्षण—

कृषिर्वणिग्पथो दुर्गं सेतुः कुञ्जरबन्धनम् ।

खनिर्वलं कलादानं शस्त्राणां च निवेशनम् ॥

दण्ड के ३ नाम—( १ ) साहस ( २ ) दम  
( ३ ) दण्ड ।

( द्वे साम्नः )

साम सान्त्वम् अथो समौ ।

<sup>१</sup>मनोहर वाणी से वर्ताव करने के २ नाम—  
( १ ) सामन् ( २ ) सान्त्व । ये दोनों ( १-२ )  
नपुसक हैं ।

( द्वे भेदस्य )

भेदोपजापौ

फूट डालने के २ नाम—( १ ) भेद ( २ )  
उपजाप ।

( एकं राज्ञा धर्मार्थकामभयैरमार्यादेः परीक्षणस्य )  
उपधा धर्मार्थैर्यत्परीक्षणम् ॥२१॥

<sup>२</sup>धर्म, अर्थ, काम और भय से मन्त्री आदि  
के आशय जानने का नाम—( १ ) उपधा ( स्त्री ) ।

पञ्च त्रिषु

ये पांच ( अपडत्तीण-विविक्त-विजन-छन्न-  
नि शलाक ) तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

( एकं द्वाभ्यामेव कृतस्य मन्त्रस्य )

अपडत्तीणो यस्तृतीयाद्यगोचर ॥

<sup>३</sup>दो आदमियों द्वारा की गयी सलाह का  
नाम—( १ ) अपडत्तीण ( पु-स्त्री-नपु )

( सप्त विजनस्य )

विविक्त-विजन छन्न-नि.शलाकास्तथा रह २५  
रहश्चोपांशु चालिङ्गे

एकान्त स्थल के ७ नाम—( १ ) विविक्त ( २ )

विजन ( ३ ) छन्न ( ४ ) नि शलाक ( ५ ) रहस्  
( ६ ) रह ( ७ ) उपाशु । इनमें ( १-४ ) पुं स्त्री.  
नपुसक, ( ५ ) नपुंसक, ( ६-७ ) अव्यय हैं ॥२२॥

( एक रहोभवस्य )

रहस्यं तद्भवे त्रिषु ॥

एकान्त की बात, गुप्त ( 'प्राइवेट' ) बात का  
नाम—( १ ) रहस्य ( पु-स्त्री-नपुसक ) ।

( द्वे विश्वासस्य )

समा विश्वम्भ-विश्वासौ

विश्वास के २ नाम—( १ ) विश्वम्भ ( २ )  
विश्वास । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे रूपाद्भ्रंशस्य )

भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥२३॥

मूल स्वरूप में पतन के २ नाम—( १ ) भ्रेष  
( २ ) भ्रंश ( पु ) ॥ २३ ॥

( पञ्च न्यायस्य )

अभ्रेष-न्याय-कल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।

न्याय के ५ नाम ( १ ) अभ्रेष ( २ ) न्याय  
( ३ ) कल्प ( ४ ) देशरूप ( ५ ) समञ्जस । इनमें  
( १-३ ) पुल्लिङ्ग ( ४-५ ) नपुसक हैं ।

( षट् न्यायादनरेतस्य द्रव्यादेः )

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानामिनीतवत् ॥२४॥  
न्यायं च त्रिषु षट्

न्याय से युक्त वस्तु के ६ नाम—( १ ) युक्त  
( २ ) औपयिक ( ३ ) लभ्य ( ४ ) भजमान ( ५ )  
अमिनीत ( ६ ) न्याय । ये ( १-६ ) तीनों लिङ्ग  
में होते हैं ॥२४॥

( द्वे युक्तयुक्तपरीक्षाया )

समधारणा तु समर्थनम् ।

उचित अनुचित की परीक्षा करने के २  
नाम—( १ ) समधारणा ( २ ) समर्थनम् ।

( पदाज्ञायाः )

अपवादस्तु निर्देशो निर्देशः शासनं च सा ॥२५॥

<sup>१</sup>यामन्दकीय नोतिमार ( १७, ४-५ ) में लिखा है—  
परस्परपेक्षायां दशन युक्तकीर्तनम् ।

<sup>२</sup>मन्त्रस्य समार्यान्मापत्याः सम्प्रकाशनम् ॥

पाचा पेशलया माधु तबाहमिति चार्पणम् ।

इति मानविधानम् । साम पक्षविधे स्मृतम् ॥

<sup>३</sup>कौटिल्य समर्थनम् ( १, १० ) में—

अग्निपुराणसिद्धयः सामान्येधधिकरणेषु रथापविस्था-

प्रमाणानुपधानिः शोभयेत् ।

<sup>४</sup>परीक्षा कदा गता है कि—षट्कलौ भिद्यते मय ।

**शिष्टिश्चाज्ञा च**

आज्ञा के ६ नाम—(१) अपवाद (२) निर्देश (३) निदेश (४) शासन (५) शिष्टि (६) आज्ञा । इनमें (१-३) पु, (४) नपु०, (५-६) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ २५ ॥

( चत्वारि न्यायमार्गस्थितेः )

**संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।**

मर्यादा के ४ नाम—(१) संस्था (२) मर्यादा (३) धारणा (४) स्थिति ।

( त्रीण्यपराधस्य )

**आगोऽपराधो मन्तुश्च**

अपराध के ३ नाम—(१) आगस् (२) अपराध (३) मन्तु । इनमें (१ ला) नपुंसक (२-३) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे बन्धनस्य )

**समे तूद्धानबन्धने ॥ २६ ॥**

बन्धन (कैद) के २ नाम—(१) उद्धान (२) बन्धन । ये समान लिंगवाले (नपुंसक) हैं ॥ २६ ॥

( एकं द्विगुणदण्डस्य )

**द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डः**

दूने दण्डका नाम—(१) द्विपाद्य ।

( त्रीणि कर्षकादिभ्यो राजग्राह्यभागस्य )

**भागधेयः करो वलिः ।**

कर ( मालगुजारी, टैक्स ) के ३ नाम—(१) भागधेय (२) कर (३) वलि । ये (१-३) पुल्लिङ्ग हैं ।

( एकं घट्टादिदेयराजग्राह्यभागस्य )

**घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री**

चुफ्फ़ी, घाट वगैरह में दिए जानेवाले महसूल का नाम—(१) शुल्क । यह पु०-नपुंसक है ।

( षट् नृपगुर्वादिदर्शनादौ समर्थमाणस्य वस्तुनः )

**प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥**

**उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।**

मित्र आदि को भेंट वा नजर देने के ६ नाम—(१) प्राभृत (२) प्रदेशन (३) उपा-

यन (४) उपग्राह्य (५) उपहार (६) उपदा ॥ २७ ॥

( द्वे कन्यादानकाले व्रतभिक्षादौ दीयमानद्रव्यस्य )  
**यौतुकादि तु यद्देयं सुदाया हरणं च तत् ॥ २८ ॥**

दहेज वा भाई-बन्धुओं के देने की वस्तु के

२ नाम—(१) सुदाय (२) हरण ॥ २८ ॥

( द्वे वर्तमानकालस्य )

**तत्कालस्तु तदात्वं स्यात्**

वर्तमान समय के २ नाम—(१) तत्काल

(२) तदात्वं ।

( एकमुत्तरकालस्य )

**उत्तरः काल आरतिः ।**

आनेवाले समय का नाम—(१) आरति (स्त्री०)

( एक व्यापारानन्तरं जायमानफलस्य )

**सादृष्टिकं फलं सद्यः**

तुरन्त के फल का नाम—(१) सादृष्टिक ।

( एकं भाधिकर्मफलस्य )

**उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥**

आगे के ( होनेवाले ) फल का नाम—(१)

उदर्क ॥ २९ ॥

( एकमग्न्यतिवृष्ट्यादिकृतभयस्य )

**अदृष्टं वह्नितोयादि**

आग लगने और अतिवृष्टि होने आदि उत्पातका नाम—(१) अदृष्ट ।

( एकं स्वपरराष्ट्रजन्यभयस्य )

**दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।**

अपने या पराये राज्य से चौरादि के भय का नाम—(१) दृष्ट ।

( एक राज्ञां स्वसहायजन्यभयस्य )

**महीभुजामहिभय स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥**

राजाओं को अपने सहायक से होनेवाले भय का नाम—(१) अहिभय ॥ ३० ॥

( द्वे व्यवस्थास्थापनस्य )

**प्रक्रिया त्वधिकारः स्यात्**

कानून चलाने के २ नाम—(१) प्रक्रिया

(२) अधिकार ।

( द्वे चामरस्य )

चामरं तु प्रकीर्णकम् ।

चैवर के २ नाम—(१) चामर (२) प्रकीर्णक

( द्वे मण्यादिकृतराज्यासनस्य )

नृपासनं यत्तद्भद्रासनम्

मणि आदि से बनी हुई राजगद्दी के २ नाम—(१) नृपासन (२) भद्रासन ।

( एकं सुवर्णनिर्मितासनस्य )

सिंहासनं तु तत् ॥३१॥

हैमम्

वही राजा के बैठने का स्थान कदाचित् सोने से बना हो तो उसका नाम (१) सिंहामन ॥३१॥

( द्वे छत्रस्य )

छत्रं त्वातपत्रम्

छतरी के २ नाम—(१) छत्र (२) आतपत्र ।

( एक नृपच्छत्रस्य )

राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।

राजा के छत्र का नाम—(१) नृपलक्ष्मन् ।

( द्वे पूर्णकलशस्य )

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः

भरे घड़े के २ नाम—(१) भद्रकुम्भ (२) पूर्णकुम्भ ।

( द्वे स्वर्णरचितपात्रविशेषस्य )

भृङ्गारः कनकालुका ॥३२॥

भंगारी या गडुवे के २ नाम—(१) भृङ्गार (२) कनकालुका ॥३२॥

( द्वे सैन्यवासस्थानस्य )

निवेशः शिविरं परादे

छावनी, पड़ाव, डेरा के २ नाम—(१) निवेश (२) शिविर ।

( द्वे सैन्यरक्षणाय नियुक्तप्रहरिकादिविन्यासस्य )

सज्जनं त्वपरक्षणम् ।

परदे के २ नाम—(१) सज्जन (२) उपरक्षणम् ।

( एकं हस्त्यद्वयपादादस्य )

हस्त्यद्वयपादान्तं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥३३॥

हाथी, घोड़ा, रथ, सिपाही इन सबका

सयुक्त नाम—(१) सेनाङ्ग ॥ ३३ ॥

( पञ्चदश हस्तिनः )

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।

मतंगजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥३४॥

इभः स्तम्भेरमः पद्मि

हाथी के १५ नाम—(१) दन्तिन् (२)

दन्तावल (३) हस्तिन् (४) द्विरद (५)

अनेकप (६) द्विप (७) मतंगज (८) गज

(९) नाग (१०) कुञ्जर (११) वारण (१२)

करिन् (१३) इभ (१४) स्तम्भेरम (१५)

पद्मिन् ॥३४॥

( द्वे यूथमुख्यगजस्य )

यूथनाथस्तु यूथपः ।

हाथियों के सरदार हाथी के २ नाम—(१)

यूथनाथ (२) यूथप ।

( द्वे मदोन्मत्तस्य )

मदोत्कटो मदकलः —

मदान्व हाथी के २ नाम—(१) मदोत्कट (२) मदकल ।

( द्वे करिपोतस्य )

कलभः करिशावकः ॥३५॥

हाथी के बच्चों के २ नाम—(१) कलभ (२) करिशावक ॥ ३५ ॥

( त्रीणि क्षरन्मदस्य )

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः

जिमके मट बहता हो उसके ३ नाम—(१) प्रभिन्न (२) गर्जित (३) मत्त ।

( द्वे गतमदस्य )

समाबुद्धान्तनिर्मदौ ।

बिना मदवाले हाथी के २ नाम—(१) उद्धान्त (२) निर्मद ।

( द्वे गजसमूहस्य )

हास्तिकं गजता वृन्दे

हाथियों के समूह के २ नाम—(१)

हास्तिक (२) गजता ।

( त्रीणि हस्तिन्याः )

करिणी धेनुका वशा ॥३६॥

हाथिनी के ३ नाम—( १ ) करिणी ( २ ) धेनुका ( ३ ) वशा ॥३६॥

( द्वे गजकपोलयोः )

गरुडः कटः

हाथी के गाल के २ नाम—( १ ) गरुड ( २ ) कट ।

( द्वे मदोदकस्य )

मदो दानम्

हाथी के मद के २ नाम—( १ ) मद ( २ ) दान ।

( द्वे करिकरान्निर्गतजलस्य )

वमथु करशीकर ।

हाथी की सूँड़ से पानी निकलने के २ नाम—  
( १ ) वमथु ( २ ) करशीकर ।

( एक गजशिरसो मासपिण्डस्य )

कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसः

हाथी के मस्तक के मास का नाम—  
( १ ) कुम्भ ।

( एकं गजकुम्भमध्यभागस्य )

तयोर्मध्ये विटु पुमान् ॥३७॥

दोनों कुम्भों के मध्य में जो खाली स्थान रहता है उसका नाम—( १ ) विटु ( पु ० ) ॥३७॥

( एकं गजललाटस्य )

अवग्रहो ललाटं स्यात्

हाथी के लिलार का नाम—( १ ) अवग्रह ।

( द्वे नेत्रगोलकस्य )

ईषिका त्वक्षिकूटकम् ।

उसके नेत्रों की गोलाई के २ नाम—( १ ) ईषिका ( २ ) अक्षिकूटक ।

( एकं गजस्यापाङ्गदेशस्य )

अपाङ्गदेशो निर्याणम्

उसके निहारने का नाम—( १ ) निर्याण ।

( एकं करिकर्णमूलस्य )

कर्णमूलं तु चूलिका ॥३८॥

हाथी के जहाँ से कान जमते हैं, उस जगह ( कान की जड़ ) का नाम—( १ ) चूलिका ॥३८॥

( एकं गजकुम्भधोभागस्य )

अथ कुम्भस्य वाहित्थम्

हाथी के लिलार के नीचे का १ नाम—  
( १ ) वाहित्थ ।

( एकं वाहित्थाधोभागस्य दन्तमध्यस्य )

प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।

वाहित्थ के नीचेका नाम—( १ ) प्रतिमान ।

( द्वे गजस्कन्धस्य )

आसन स्कन्धदेशः स्यात्—

हाथी के कन्धेका १ नाम—( १ ) आसन ।

( द्वे गजमुखादिस्थविन्दुसमूहस्य )

पद्मकं विन्दुजालकम् ॥३९॥

हाथी के मुख आदि पर स्थित विन्दुओं का नाम—( १ ) पद्मक ॥३९॥

( द्वे गजपाश्वर्धभागस्य )

पाश्वर्धभागः पक्षभागः

हाथी की बगल के २ नाम—( १ ) पार्श्वभाग ( २ ) पक्षभाग ।

( एकमग्रभागस्य )

दन्तभागस्तु याऽग्रतः ।

हाथी के आगे के भाग का नाम—( १ ) दन्तभाग ।

( एकैकं गजजघापूर्वापरभागयोः )

द्वौ पूर्वपश्चाज्जंघादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥४०॥

हाथी के आगे के जघादि भागका १ नाम—  
( १ ) गात्र ।

हाथी के पीछे के भाग का नाम—  
( १ ) अवरे ॥ ४० ॥

( द्वे तोदनदण्डस्य )

तोत्रं वैशुकम् ।

चावुक की डगड़ी के २ नाम—( १ ) तोत्र ( २ ) वैशुक ।

( एकं बन्धनस्तम्भस्य )

आलानं बन्धनस्तम्भे

हाथी के खूटे का नाम—( १ ) आलान ।

( त्रीणि शृङ्खलस्य )

अथ शृङ्खले ।

अन्दुका निगडोऽस्त्री स्यात्

हाथी की जंजीर के ३ नाम—( १ ) शृङ्खला ( २ ) अन्दुक ( ३ ) निगड । इनमें ( १ ) पुं० स्त्री० नपु०, ( २ ) पुं०, ( ३ ) पु०—नपु० है ।

( द्वे भकुशस्य )

अंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ११ ॥

अंकुश के २ नाम—( १ ) अंकुश ( २ )

सृणि । इनमें ( १ ) पुं०—नपुं०, ( २ ) स्त्रीलिङ्ग है ।

( त्रीणि मध्यबन्धनोपयोगिन्याश्चर्मरज्ज्वा )

दृष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्

हाथी की कमर में बाधने की रस्ती के ३ नाम—

( १ ) दृष्या ( २ ) कक्ष्या ( ३ ) वरत्रा ॥ ४१ ॥

( द्वे नायकारोहणार्थं गजसज्जीकरणस्य )

कल्पना सज्जना समे ।

मालिक के चढ़ने के वास्ते हाथी को तैयार करने के २ नाम—( १ ) कल्पना ( २ ) सज्जना ।

( पञ्च गजपृष्ठोपवांस्तरणस्य )

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोम कुथो हयोः ॥

गद्दी वा भूल के ५ नाम—( १ ) प्रवेणी ( २ ) आन्तरण ( ३ ) वर्ण ( ४ ) परिस्तोम ( ५ ) कुथ । इनमें ( १ ) स्त्री०, ( २ ) नपुं०, ( ३-४ ) पु० ( ५ ) पुं०—स्त्री० है ॥ ४२ ॥

( एकं वलरहितगजाश्वस्य )

धीत त्वसारं हस्त्यश्वम्

युद्धादि करने में असमर्थ हाथी घोड़े का नाम—( १ ) धीत ।

( एकं गजबन्धनशालाया )

वारी तु गजबन्धनो ।

हथियार ( जिस भूमे में तापी बाध जायें )

उसका नाम—( १ ) वारी ।

( प्रयोदश घोटवस्य )

घोटके धीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गना ॥ ४३ ॥

वाजिवाहार्वागन्धर्वहयसैन्धवसप्तय ।

घोड़े के १३ नाम—( १ ) घोटक ( २ )

वीति ( ३ ) तुरग ( ४ ) तुरङ्ग ( ५ ) अश्व ( ६ )

तुरङ्गम ( ७ ) वाजिन् ( ८ ) वाह ( ९ )

अर्वन् ( १० ) गन्धर्व ( ११ ) हय ( १२ ) सैन्धव

( १३ ) सप्ति ॥ ४३ ॥

( एक कुलीनाश्वानाम् )

आजानेयाः कुलीनाः स्युः

कुलीन घोड़े का नाम—( १ ) आजानेय ।

( द्वे सुशिक्षिताश्वानाम् )

विनीताः साधुवाहिनाः ॥ ४४ ॥

सीखे हुए घोड़े के २ नाम—( १ ) विनीत ( २ )

साधुवाहिन् ॥ ४४ ॥

( हयविशेषाणामेकैकम् )

वनायुजा पारसीका काश्योजा घाहिका हया ।

अरबी, खुरगानी, इराकी, यमनी, तुर्की, तातारी, खेतन, अदन के घोड़े ( वनायु देश में पैदा हुए घोड़े ) का नाम—( १ ) वनायुज ।

पारसदेशोत्पन्न घोड़े का नाम—( १ ) पारसीक ।

काबुली घोड़े का नाम—( १ ) घाहिक ।

( एकमश्वमेधीयाश्वस्य )

ययुरश्वोऽश्वमेधीय

अश्वमेध के श्यामकण्ठावाले घोड़े का नाम—

( १ ) ययु ।

( एकमधिकवेगशालिनोऽश्वस्य )

जवनस्तु जवाधिकः । ४५ ॥

जन्दी चलनेवाले घोड़े का नाम—( १ )

जवन ॥ ४५ ॥

( द्वे भारवाहिनोऽश्वस्य )

पृष्ठघः स्थौरी

लटुआ घोड़े के २ नाम—( १ ) पृष्ठघ ( २ )

स्थौरिन् । ने ( १-२ ) पुं लिङ्ग है ।

१ गालिभिर्निपट्टया शृङ्खलश्च धरे रदे ।

२ गजानन्ति यत्र शृङ्खलाजनेवागन्तः शृङ्खला

३ गालिभः शृङ्खलान्तरं यत्र गजानन्ति ॥ ४६ ॥

—२५५ ।



( एकं शुक्लाश्वस्य )

सितः कर्कः

उजले घोड़े का नाम—( १ ) कर्क ।

( एकं रथवाहकाश्वस्य )

रथ्यो वोढा रथस्य य ।

रथ के घोड़े का नाम—( १ ) रथ्य ।

( एकमश्वबालस्य )

बालः किशोरः

घोड़े के बच्चे का नाम—( १ ) किशोर ।

( त्रीण्यश्ववायाः )

वाम्यश्वा वडवा

घोड़ा के ३ नाम—( १ ) वामी ( २ ) अश्वा ( ३ ) वडवा ।

( एकमश्वसमूहस्य )

वाडवं गणे ॥४६॥

घोड़ी के समूह का नाम—( १ ) वाडव ।  
( नपुसक ) ॥४६॥

( एक अश्वेनैकदिनगम्यदेशस्य )

त्रिप्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।

घोड़े की एक दिन की मजिल का नाम—  
( १ ) आश्वीन ।

( एकमश्वमध्यभागस्य )

कश्यं तु मध्यमाश्वानां

घोड़े की विचली देह का नाम—( १ ) कश्य ।

( द्वे अश्वशब्दस्य )

हेषा हेषा च निःस्वनः ॥४७॥

घोड़े के हिनहिनाने के २ नाम—( १ ) हेषा ( २ ) हेषा । ये ( १-२ ) खालिङ्ग हैं ॥४७॥

( द्वे गलजघुसन्धेः )

निगालस्तु गलोद्देशे

१ घोड़े के गले का नाम—( १ ) निगाल ।

( द्वे अश्ववृन्दस्य )

वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।

१ घण्टाबन्धसमीपस्थो निगाल कीर्तितो बुधै ।

तस्मिन्नेव मणिर्नाम रोमज शुभकृन्मत्तः ॥

इत्यश्वशास्त्रम् ।

घोड़ों के झुण्ड के २ नाम—( १ ) अश्वीय ( २ ) आश्व । ये ( १-२ ) नपुंसक हैं ।

( ऐकैकमश्वगतिविशेषाणाम् )

आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं

वल्लितं प्लुतम् ॥४८॥

गतयोऽमूः पञ्च धारा

घोड़े की सरपट चाल ( जिसमें वेग से आर्त अश्व नहीं सुनता और न देखता है उस गति ) का नाम—( १ ) आस्कन्दित ।

घोड़े की टुलकी चाल ( जिसमें चतुराई से घोड़ा सीधा चलता है उस गति ) का नाम—  
( १ ) धौरितक ।

घोड़े की पोडया चाल ( जिसमें मध्यम वेग से घोड़ा चक्काकार घूमता है उस गति ) का १ नाम—( १ ) रेचित ।

घोड़े की उछलती हुई चाल ( जिसमें घोड़ा अगले शरीर को समेट कर कुत्तिसत स्थलादि में मुह टेढ़ा कर चलता है उस गति ) का १ नाम—  
( १ ) वल्लित ।घोड़े की चौकड़ी मारकर चलने का नाम—  
( १ ) प्लुत ।इन पांचो चालों का नाम—( १ ) धारा ( स्त्री० )  
॥४८॥

( द्वे नासिकायाः )

घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।

घोड़े की नाक के २ नाम—( १ ) घोणा ( २ ) प्रोथ । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग, ( २ रा ) पु०—नपुंसक हैं ।

( द्वे लोहादिनिर्मितस्य मुखमध्ये निहितस्य )

कविका तु खलीनोऽस्त्री

घोड़े की लगाम के २ नाम—( १ ) कविका ( २ ) खलीन । ( १ ला ) स्त्री०, ( २ रा ) पु० नपुंसक हैं ।

( द्वे खुरस्य )

शफं क्लीवे खुरः पुमान् ॥४९॥

घोड़े की टाप के २ नाम—( १ ) शफ ( २ ) खुर । इनमें ( १ ला ) नपुंसक ( २ रा ) पुंलिङ्ग हैं ॥४९॥

( ग्रीणि पुच्छस्य )

पुच्छोऽस्त्री लूमलागूले

पूछ के ३ नाम—( १ ) पुच्छ ( २ ) लूम ( ३ ) लाङ्गूल । इनमें ( १ ला ) पु०-नपुंसक ( २-३ ) नपुंसक है ।

( द्वे केशसमूहयुक्तस्य पुच्छाग्रभागस्य )

वालहतश्च वालधि ।

वालसहित पूँछ के २ नाम—( १ ) वालहस्त ( २ ) वालधि । ये ( १-२ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे श्रमशान्त्यर्थं मुहुर्भुवि पार्श्वार्भां परावृत्तस्य लुठिताश्वस्य )

त्रिपूपावृत्तलुठिता परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥५०॥

जमीन पर लोटने के २ नाम—( १ ) उपा-  
वृत्त ( २ ) लुठित । ये ( १-२ ) पु०-स्त्री-नपुंसक  
में होते हैं ॥५०॥

( ग्रीणि रथस्य )

याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्ग स्यन्दनो रथ ।

युद्ध के रथ के ३ नाम—( १ ) शताङ्ग ( २ )  
स्यन्दन ( ३ ) रथ ।

( एकं युद्धं विना यात्रोत्सवाक्षौ सुखभ्रमणार्थ-  
स्य रथस्य )

असौ पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥५१॥

हवाखोरी आदि के लिए सुनजित रथ  
( वरघी ) का नाम—( १ ) पुष्परथ ॥५१॥

( ग्रीणि खोणा वाहनार्थं कृतस्योपरि वस्त्रादिना  
विहितरथविशेषस्य )

कर्णोरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।

जनानी गादी ( डेला वगैर ) के ३ नाम—  
( १ ) कर्णोरथ ( २ ) प्रवहण ( ३ ) डयन ।  
इनमें ( १ ला ) पु० ( २-३ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे शकटस्य )

श्रीवेऽनः शफटोऽस्त्री स्यात्

नगर के २ नाम—( १ ) अनम् ( २ )  
शकट । इनमें ( १ ला ) नपुंसक ( २ ग ) पु०-  
नपुंसक हैं ।

( द्वे शकटिकायाः )

गन्त्रीकम्बलिवाहकम् ॥५२॥

बेलगाडी के २ नाम—( १ ) गन्त्री ( २ )  
कम्बलिवाहक । इनमें ( १ ला ) स्त्रीलिङ्ग ( २ ) नपुंसक  
हैं ॥५२॥

( द्वे पुरुषवाहयानविशेषस्य )

शिविका याप्ययानं स्यात्

पालकी के २ नाम—( १ ) शिविका ( २ )  
याप्ययान ।

( द्वे दोलायाः )

दोला प्रेखादिका स्त्रियाम् ।

डोली वा हिडोले के २ नाम—( १ ) दोला  
( २ ) प्रेखा ।

( द्वे वैयाग्रचर्मवेष्टितरथस्य )

उभौ तु द्वपवैयाग्रौ द्वीपिचर्मवृते रथे ॥५३॥

वाघ के चाम के परदे में टके रथ के २  
नाम—( १ ) द्वैत्र ( २ ) वैयाग्र । ये ( १-२ ) पु०  
स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥५३॥

( एकं शुक्लकम्बलवेष्टितरथस्य )

पाण्डुकम्बलसवीत स्यन्दन पाण्डुकम्बली ।

कुछ नफेद ( पीलापन लिए ) कम्बल के  
परदे में युत रथ का नाम—( १ ) पाण्डु-  
कम्बली । ( पु०-स्त्री-नपुंसक )

( एकैकं कम्बलाद्यावृत्तरथस्य )

रथे कम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ५४।

कम्बल युक्त परदेवाले रथ का नाम—( १ )  
कम्बल । कपड़ावाले परदेयुक्त रथ का नाम—  
( १ ) कम्बल । ये पु०-स्त्री-नपुंसक में हैं ॥५४॥

त्रिपु द्वैपादयोः—

ये द्वैप आदि ( से लेकर चाम्बन् ) शब्द  
तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

( द्वे रथसमूहस्य )

रथ्या रथकटवा रथयज्ञे ।

रथ के समूह के २ नाम—( १ ) रथ्या ( २ )  
रथकटवा ।

( द्वे वोढवन्धनस्थानस्य )

धूः स्त्री, क्लीबे यानमुखम्

धुरा या धुरी के २ नाम—(१) धुर् (२) यान-  
मुख । इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग और (२रा) नपुंसक है ।

( द्वे रथावयवमात्रस्य )

स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥५५॥

तागे के २ नाम—(१) रथाग (२) अप-  
स्कर ॥५५॥

( द्वे चक्रस्य )

चक्रं रथाङ्गम्

पहिये के २ नाम—(१) चक्र (२) रथाङ्ग ।

( द्वे चक्रस्यान्तस्य )

तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।

पुट्टी या हाल के २ नाम—(१) नेमि (२)  
प्रधि ।

( द्वे चक्रकाष्ठाधारभूतमण्डलाकारचक्रमध्यस्य )

पिरिडका नाभिः

नाह के २ नाम—(१) पिरिडका (२)  
नाभि ।

( द्वे अक्षाग्रकीलकस्य )

अक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥५६॥

कुलावा का नाम—(१) अणि (पुं०-स्त्री-  
लिङ्ग) ॥५६॥

( द्वे शस्त्रादिभ्यः परिरक्षणार्थं रथस्य  
लोहादिमयावरणस्य )

रथगुप्तिर्वरुथो ना—

शस्त्रादि से बचाने के लिए रथ के लोहमय  
परदे के २ नाम—(१) रथगुप्ति (२) वरुथ ।  
इनमें (१ला) स्त्री (२रा) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे युगकाष्ठवन्धनस्थानस्य )

कूवरस्तु युगन्धरः ।

जुए के काठ के २ नाम—(१) कूवर (२)  
युगन्धर ।

( एकं रथस्थाधःस्थलभागदारुणः )

अनुकर्षो दार्वधःस्थम्

रथ के नीचे के काठ का नाम—(१) अनुकर्ष ।

( एकमन्यवृषयुग्मस्य )

प्रासङ्गो ना युगाद्युगः ॥५७॥

जुए का नाम—(१) प्रासग ॥५७॥

( पञ्च वाहनमात्रस्य )

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ।

सवारी के ५ नाम—(१) वाहन (२) यान  
(३) युग्य (४) पत्र (५) धोरण ।

( एकं परम्परावाहनस्य )

परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥५८॥

जो परम्परा से वाहन है और कहार वगैर  
से ले जाने लायक है उस सवारी (पालकी,  
रिक्शा) का नाम—(१) वैनीतक ॥५८॥

( चत्वारि हस्तिपकस्य )

आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।

पीलवान्, महावत के ४ नाम—(१) आधोरणा  
(२) हस्तिपक (३) हस्त्यारोह (३) निषादिन् (४)  
(१-४) पुंलिङ्ग हैं ।

( अष्टौ रथकुटुम्बिनः )

नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः

सव्येष्टदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ॥५९॥

रथवान्, गाड़ीवान के ८ नाम—(१) नियन्तृ  
(२) प्राजितृ (३) यन्तृ (४) सूत (५) क्षत्तृ  
(६) सारथि (७) सव्येष्ट (८) दक्षिणस्थ ॥५९॥

( द्वे रथारूढस्य योद्धुः )

रथिनः स्यन्दनारोहा—

रथ पर चढ़कर लड़नेवालों के २ नाम—  
(१) रथिन् (२) स्यन्दनारोह । ये (१-२) पुंलिङ्ग हैं ।

( द्वे अश्ववाराणाम् )

अश्वारोहास्तु सादिनः ॥६०॥

घुड़सवारों के २ नाम—(१) अश्वारोह  
(२) सादिन् । ये (१-२) पुंलिङ्ग हैं ॥६०॥

( त्रीणि भटस्य )

भटा योधाश्च योद्धारः

लङ्घनेवाले के ३ नाम—( १ ) भट ( २ ) योध  
( ३ ) योद्ध ।

( द्वे सेनारक्षकस्य )

सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।

सेना के पहरा देनेवाले यानी गश्त देनेवाले के  
२ नाम—( १ ) सेनारक्ष ( २ ) सैनिक ।

( द्वे सेनायां मिलितस्यैकदेशीभूतस्य )

सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्चते॥६१॥

फौज में रहनेवाले के २ नाम—( १ ) सैन्य  
( २ ) सैनिक ॥६१॥

( द्वे सहस्रसंख्याकेन गजादिना बलवतः )

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ॥

हजार सिपाहियों के मालिक के २ नाम—  
( १ ) साहस्र ( २ ) सहस्रिन् ।

( द्वे रथगजादेशकपादादिरक्षकस्य )

परिधिस्थः परिचरः

सूवेदार मेजर के २ नाम—( १ ) परिविस्थ  
( २ ) परिचर ।

( द्वे सेनापतेः )

सेनानीर्वाहिनीपात ॥६२॥

सेनापति के २ नाम—( १ ) सेनानी ( २ )  
वाहिनीपति ॥६२॥

( द्वे सन्नाहस्य खोलकादे )

कञ्चुको धारवाणोऽस्त्री

जिरहयस्तर के २ नाम—( १ ) कञ्चुक ( २ )  
धारवाण । ( १ ला ) पुल्लिङ्ग ( २ रा ) पुं०-नपुंसक है ।

( द्वे कञ्चुकदादार्धं मध्यकाये निषट्स्य )

यत्तु मध्ये सकञ्चुका ।

षष्ठन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गः

कमरपेटी के २ नाम—( १ ) सारसन ( २ )  
अधिराग ।

( श्रीणि शीर्षकाय )

अथ शीर्षकम् ॥६३॥

शीर्षकं च शिरस्त्रे

शिरस के ३ नाम—( १ ) शीर्षक ( २ ) शीर्षण  
( ३ ) शिरस । ( १-३ ) नपुंसक हैं ॥६३॥

( सप्त कवचस्य )

अथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ।

उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ६४

कवच के ७ नाम—( १ ) तनुत्र ( २ ) वर्मन्  
( ३ ) दशन ( ४ ) उरश्छद ( ५ ) कंकटक ( ६ ) जगर  
( ७ ) कवच । इनमें ( १-३ ) नपुंसक ( ४-६ ) पुल्लिङ्ग  
( ७ ) पुं०-नपुंसक है ॥६४॥

( चत्वारि परिहितकवचादेः )

आमुक्तः प्रातमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।

फिल्लिम आदि पहिरे हुए सैनिक के ४ नाम—  
( १ ) आमुक्त ( २ ) प्रातमुक्त ( ३ ) पिनद्ध ( ४ ) अपिनद्ध ।  
ये ( १-४ ) पुं०-स्त्री०-नपुंसक हैं ।

( पञ्च कवचभृतः )

संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ६५

पहने हुए कवच के ५ नाम—( १ ) सनद्ध  
( २ ) वर्मित ( ३ ) सज्ज ( ४ ) दंशित ( ५ )  
व्यूढकंकट । ये ( १-५ ) पुं०-स्त्री०-नपुंसक हैं ॥६५॥

त्रिष्वामुक्तादयः

आमुक्त आदि से लेकर व्यूढकङ्कट तक के  
शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

( एकं धृतसन्नाहाना गणस्य )

वर्मभृतां कावचिकं गणं ।

कवचधारियों के समूह का नाम—( १ )  
कावचिक ( नपुंसक ) ।

( सप्त पदातैः )

पदाति-पत्ति पदग-पादानिक पदाजयः ॥६६॥

पट्टश्च पदिकश्च

पैदल सेना के ७ नाम—( १ ) पदाति ( २ )  
पत्ति ( ३ ) पदग ( ४ ) पादानिक ( ५ ) पदाजि  
( ६ ) पट्ट ( ७ ) पदिक । ये ( १-७ ) पुल्लिङ्ग हैं ॥६६॥

( द्वे पदातिष्वमूहभ्यः )

अथ पादातं पत्तिसंहतिः ।

पैदलगमूह के २ नाम—( १ ) पदात ( २ )  
पत्तिसंहति । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग ( २ रा )  
स्त्रीलिङ्ग है

( चत्वारि आयुधजीविनः )

शस्त्राजीवे कारण्डपृष्ठायायुधीयायुधिकाः समाः ६७

१ जो हथियार बाँधकर जीविका करते हैं,  
उनके ४ नाम—( १ ) शस्त्राजीव ( २ ) कारण्डपृष्ठ  
( ३ ) आयुधीय ( ४ ) आयुधिक ॥६७॥

( त्रीणि शरनिक्षेपनिष्णातस्य )

कृतहस्त सुप्रयोगविशिख. कृतपुखघत् ।

अच्छे तीरन्दाज निशाना मारनेवाले के  
३ नाम—( १ ) कृतहस्त ( २ ) सुप्रयोगविशिख  
( ३ ) कृतपुख ।

( एकं लक्ष्याप्राप्तशरस्य )

अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥६८॥

निशाना से चूके तीरन्दाज का नाम—( १ )  
अपराद्धपृषत्क ॥६८॥

( षट् धनुर्धरस्य )

धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्गधन्वी धनुर्धरः

धनुषधारी के ६ नाम—( १ ) धन्विन् ( २ )  
धनुष्मत् ( ३ ) धानुष्क ( ४ ) निषङ्गिन् ( ५ )  
अस्त्रिन् ( ६ ) धनुर्धर ।

( द्वे शरधारिणः )

स्यात्कारण्डवांस्तु कारण्डीरः

बाणधारी के २ नाम—( १ ) कारण्डवत् ( २ )  
कारण्डीर ।

( द्वे शक्त्यायुधधारकस्य )

शाक्तीक शक्तिहेतिक ॥६९॥

बछ्छाँधारी के २ नाम—( १ ) शाक्तीक ( २ )  
शक्तिहेतिक ॥६९॥

( एकैकं यष्टिपरशुधृतो )

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपर्वधहेतिकौ ।

लट्ठवाज का नाम—( १ ) याष्टीक ।

फरसेवाज का नाम—( १ ) पारश्वधिक ।

१ कौटिलीय अर्थशास्त्र ( अधिकरण ११, प्र० १, श्लो०  
५ ) में लिखा है—‘काम्बोजसुराष्ट्रत्रियश्रेण्यादयो वार्ताश-  
स्त्रोपजीविन ।’ अर्थात् काम्बोज और गुजरात के क्षत्रियों का  
सम्राज्य था और उनकी आजीविका सेती व लड़ाई-  
भिदाई थी ।

( द्वे खड्गायुधस्य )

नैस्त्रिंशकोऽसिहेतिः स्यात्

तरवरिहा (तलवार बाँधनेवाले) के २ नाम—  
( १ ) नैस्त्रिंशिक ( २ ) असिहेति । ये ( १-२ )  
पुल्लिङ्ग हैं ।

( एकैकं प्रासकुन्तायुधिनोः )

समौ प्रासिक-कौन्तिकौ ॥७०॥

बल्लमधारी का नाम—( १ ) प्रासिक ।

भालेवाले का नाम—( १ ) कौन्तिक ॥७०॥

( द्वे चर्मधारिणः )

चर्मौ फलकपाणिः स्यात्

ढाल बाँधनेवाले के २ नाम—( १ ) चर्मिन् ( २ )  
फलकपाणि ।

( द्वे ध्वजधारकस्य )

पताकी वैजयन्तिकः ।

झण्डावाले के २ नाम—( १ ) पताकिन्  
( २ ) वैजयन्तिक ।

( चत्वारि सहायस्य )

अनुप्लव. सहायश्चानुचरोऽभिचरः समा ७१

सहाय के ४ नाम—( १ ) अनुप्लव ( २ )  
सहाय ( ३ ) अनुचर ( ४ ) अभिचर ॥७१॥

( सप्त पुरोगामिनः )

पुरोगाऽग्नेसर-प्रष्टाऽग्रतःसरपुरःसराः ।

पुरोगम. पुरोगामी

आगे चलनेवाले ( अगुआ ) के ७ नाम—  
( १ ) पुरोग ( २ ) अग्नेसर ( ३ ) प्रष्ट ( ४ )  
अग्रत सर ( ५ ) पुर मर ( ६ ) पुरोगम ( ७ )  
पुरोगामिन ।

( द्वे शनैर्गामिनः )

मन्दगामी तु मन्थर. ॥७२॥

धीरे २ चलनेवाले के २ नाम—( १ ) मन्द-  
गामिन् ( २ ) मन्थर ॥७२॥

( द्वे भक्तिवेगवतः )

जंघालोऽतिजघस्तुल्यः

जल्द चलनेवाले के २ नाम—( १ ) जघाल  
( २ ) अतिजघ ।

( द्वे जंघाजीविनः )

जंघाकरिक-जाधिकौ ।

हरकारे के २ नाम—( १ ) जंघाकरिक ( २ ) जाधिक ।

( पृष्ठ वेगवन्माधुर्य )

तरस्वी त्वरितो वैगी प्रजवी जवनो जघ ॥७३॥

जल्दवाज के ६ नाम—( १ ) तरस्विन् ( २ ) त्वरित ( ३ ) वैगिन् ( ४ ) प्रजविन् ( ५ ) जवन ( ६ ) जघ । ये ( १-६ ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥७३॥

( एक जेतुं शक्यस्य )

जय्यो य शक्यते जेतुम्

जिते जीत सके उसका नाम—( १ ) जय्य ।

( एकं जेतु योग्यस्य )

जेयो जेतव्यमात्रके ।

जीतने लायक का नाम—( १ ) जेय ।

( द्वे जेतुः )

जैत्रम्नु जेता

जो जीत सके उग जीतनेवाले के २ नाम—( १ ) जैत्र ( २ ) जेतृ । ये ( १-२ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि सामर्थ्येन शत्रूणां सम्मुखं गच्छतः )

यो गच्छत्यलं विद्धिपत प्रति ॥७४॥

सोऽभ्यमिद्योऽभ्यमित्रोयोऽप्यभ्यमित्रोण इत्यपि

सामर्थ्य से शत्रुओंके सम्मुख लड़ने के लिए जानेवाले के ३ नाम—( १ ) अभ्यमित्र्य ( २ ) अभ्यमित्रोय ( ३ ) अभ्यमित्रोण । ये ( १-३ ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥७४॥

( द्वे यलातिविशेषतः )

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वित

पटलवान के २ नाम—( १ ) ऊर्जस्वल ( २ ) ऊर्जस्विन् ॥७५॥

( द्वे विशालपक्षः )

स्यादुरस्थानुरस्तिलः

पक्षी (लम्बी-सीढ़ी) आनीमले के २ नाम—( १ ) उरगान् ( २ ) उरगिन् ।

( त्रीणि रथस्वामिनः )

रथिनो रथिको रथी

रथ के स्वामी के ३ नाम—( १ ) रथिन् ( २ ) रथिक ( ३ ) रथी ।

( द्वे यथेच्छं गमनशीलस्य )

कामह्याभ्यनुकामीनः

मनमाना चलनेवाले का नाम—( १ ) अभ्यनुकामीन ।

( एकमतिगमनशीलस्य )

ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥७६॥

बारबार चलनेवाले का नाम—( १ ) अत्यन्तीन ॥७६॥

( त्रीणि शूरस्य )

शूरो वीरश्च विक्रान्तः

शूर वीर वहादुर के ३ नाम—( १ ) शूर ( २ ) वीर ( ३ ) विक्रान्त ।

( त्रीणि जयशीलस्य )

जेता जिष्णुश्च जित्वरः

जीतनेवाले के ३ नाम—( १ ) जेतृ ( २ ) जिष्णु ( ३ ) जित्वर ।

( एकं युद्धकृशब्दस्य )

सायुगीनो रणे साधुः

रणकुशल का नाम—( १ ) सायुगीन । शस्त्राजीवाद्यस्त्रिषु ॥७७॥

‘शस्त्राजीव’ ( जोर ६७ ) ने लेकर ‘सायुगीन’ शब्द तक तीनो लिङ्गों में होते हैं ॥७७॥

( एकादश सेनाया )

ध्वजिनो घाहिनी सेना पृतनानीकिनी चमू-धरुधिनी यन् सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम

सेना फौज के ११ नाम—( १ ) ध्वजिन ( २ ) घाहिनी ( ३ ) सेना ( ४ ) पृतना ( ५ ) चमू ( ६ ) धरुधिनी ( ७ ) यन् ( ८ ) सैन्य ( ९ ) चक्र ( १० ) चानीक ( ११ ) अस्त्रियाम । ये ( १-११ ) पुँल्लिङ्ग हैं ॥७८॥

( द्वे व्यूहस्य )

व्यूहस्तु बलविन्यासः

सेना की रचना किलेवन्दी के २ नाम—

( १ ) व्यूह ( २ ) बलविन्यास ।

( एकैकं सेनाविशेषभेदानाम् )

भेदा दण्डादयो युधि ।

१ सेना की रचना के अनेक भेद हैं । यथा—

( १ ) दण्ड आदि ।

( द्वे व्यूहपश्चाद्भागस्य )

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः

व्यूह के पिछले भाग के २ नाम—( १ )

प्रत्यासार ( २ ) व्यूहपार्ष्णि । ये ( १-२ ) पुंलिङ्ग हैं ।

( द्वे सेनायाः पश्चाद्भागस्य )

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥७९॥

फौज के पिछले भाग के २ नाम—( १ )

सैन्यपृष्ठ ( २ ) प्रतिग्रह ॥७९॥

( एकं सेनाविशेषस्य )

एकमैकरथा व्यश्वा पत्ति पञ्च पदातिका ।

३ जिममें १ हाथी २ रथ ३ घोड़े और ५

१ व्यूहलक्षणम्—

मुखे रथा हयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातयः ।

पार्श्वयोश्च गजाः कार्या व्यूहोय परिकीर्तितः ॥

व्यूह के विषय में कौटिलीय अर्थशास्त्र में ( अधिकरण १०, अ० ५७६ ) लिखा है ।

इसमें समव्यूह, विषमव्यूह, प्रकृतिव्यूह, दण्डव्यूह, भोगव्यूह, असहस्रव्यूह, प्रदरव्यूह, दृढकव्यूह, असस्यव्यूह, श्येनव्यूह, सजयव्यूह, विजयव्यूह, रत्नलक्षणव्यूह, विशाल-विजयव्यूह, चमूमुखव्यूह, मापाख्यव्यूह, सूचीव्यूह, बलव्यूह, दुर्जयव्यूह, शकटव्यूह, मकरव्यूह, मण्डलव्यूह, सर्वतोभद्र-व्यूह, आदि का उल्लेख है ।

२ कामन्दक ने दण्ड का लक्षण बतलाया है—

तिर्यग्वृत्तिस्तु दण्डः स्यद्भोगोऽन्वावृत्तिरेव च ।

मण्डलः सर्वतोवृत्तिः पृथग्शृत्तिरसहस्र ॥

३ पत्तिलक्षणम्—

एको रथो गजश्चैको नराः पञ्च पदातयः ।

त्रयश्च तुरगास्तज्ज्ञैः पत्तिरित्यभिधीयते ॥—मरत ।

पैदल हों उस सेना का नाम—( १ ) पत्ति ( स्त्री० )

( एकैकं सेनाविशेषस्य )

पत्त्यंगैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम्

सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।

अनीकिनी

क्रम से तिगुने पत्ति ( पैदलों ) के नाम ये हैं—तीन पत्ति का नाम—( १ ) सेनामुख ( पुं० )

तीन सेनामुख का नाम—( १ ) गुल्म ( पुं०-नपुंसक )

तीन गुल्म का नाम—( १ ) गण ( पुं० ) ।

तीन गण का नाम—( १ ) वाहिनी ( स्त्री० ) ।

तीन वाहिनी का नाम—( १ ) पृतना ( स्त्री० ) ।

तीन पृतना का नाम—( १ ) चमू ( स्त्री० ) ।

तीन चमू का नाम—( १ ) अनीकिनी ( स्त्री० )

॥ ८० ॥

( एकमक्षौहिण्याः )

दशानीकिन्यक्षौहिणी

१ दश अनीकिनी का नाम—( १ ) अक्षौहिणी ।

( चत्वारि सम्पदः )

अथ संपदि ॥८१॥

संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च

सम्पत्ति के ४ नाम—( १ ) सम्पद् ( २ )

४ अक्षौहिणी का प्रमाण अन्य ग्रन्थ से—

अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तत्या ह्यष्टमि शते ।

सयुक्तानि सहास्राणि गजानामेकविंशति । २१८७०

एवमेव रथानां तु संख्यान कीर्तितं युधे । २१८७० ।

पञ्चपाटसहस्राणि षट् शतानि दर्शय तु ॥

सख्यातास्तुरगास्तज्ज्ञैर्विना रथतुरगम् ६५६१० ।

नृणां शतसहस्राणि सहस्राणि तथा नव ।

शतानि त्रीणि चान्यानि पञ्चाशच्च पदातयः १०६३५०

अक्षौहिणीप्रमाणन्तु महामारते—

अक्षौहिणी प्रमाण तु खान्नाष्टैकद्विकैर्गणैः ।

रथैरेतैर्हयैस्त्रिघ्ने पञ्चघ्नैस्तु पदातयः ।

महाक्षौहिणी प्रमाणम्—

खड्ग ०० निधि ६ वेदा ४ क्षि २ चन्द्रा १ द्य २ मि

३ हिमाशुभि १ ।

महाक्षौहिणिका प्रोक्ता सख्या गणितकोविदैः ॥

गम्पति ( ३ ) श्री ( ४ ) लक्ष्मी । ( १-४ )  
स्त्रीलिङ्ग है ॥८१॥

( त्रीणि विपत्तेः )

विपत्त्यां विपदापदौ ।

विपत्ति के ३ नाम—(१) विपत्ति (२) विपद  
( ३ ) आपद् ।

( चत्वारि शस्त्रस्य )

आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रम्

शस्त्र के ४ नाम—(१) आयुध (२) प्रहरण  
(३) शस्त्र (४) अस्त्र ।

( सप्त धनुषः )

अथास्त्रियौ ॥८२॥

धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।

दृष्यासोऽपि

धनुष के ७ नाम—( १ ) धनुष् ( २ ) चाप  
( ३ ) धन्वन् ( ४ ) शरासन ( ५ ) कोदण्ड ( ६ )  
कार्मुक ( ७ ) दृष्यास । इनमें (१-२) नपुंसक तथा  
पुलिङ्ग (३-६) नपुंसक और (७) पुल्लिङ्ग हैं ॥८२॥

( एक कर्णस्य धनुषः )

अथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥८३॥

कर्ण के धनुष का २ नाम—( १ ) काल-  
पृष्ठ ॥ ८३ ॥

( द्वे अर्जुनस्य धनुषः )

कपिध्वजस्य गारुडीधगारिडवौ पुनपुंसकौ ।

अर्जुन के धनुष के २ नाम—( १ ) गारुडीध

१ काल २ पृष्ठ यस्यासौ कालपृष्ठ अथवा काल  
( कालवर्त्य ) पृष्ठ गयेति विग्रहः ।

( २ ) गारिड । ये ( १-२ ) दोनों पुल्लिङ्ग और  
नपुंसक हैं ।

( द्वे धनुषः प्रान्तस्य )

कोटिरस्याटनी

धनुष के नीचे-ऊपरवाले दो कोनों के २  
नाम—( १ ) कोटि ( २ ) अटनी ।

( द्वे ज्याघातवारणस्य )

गोधातले ज्याघातवारणे ॥८४॥

धनुष की डोरी से हाथ न कटे, इस लिए  
पहने जानेवाले दस्ताने के २ नाम—( १ )  
गोधा ( २ ) तला । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग तथा  
नपुंसक हैं ॥८४॥

( एकं धनुषो मध्यस्य )

लस्तकस्तु धनुर्मध्यम्

धनुष के बीचले भाग का नाम—(१) लस्तक ।

( धनुर्गुणस्य चत्वारि )

मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुण ।

धनुष की डोरी ( तौल ) के ४ नाम—( १ )  
मौर्वी ( २ ) ज्या ( ३ ) शिञ्जिनी ( ४ ) गुण ।  
इनमें ( १-३ ) स्त्रीलिङ्ग हैं और ( ४ ) पुल्लिङ्ग है ।

( पञ्च धनुर्धारिणामासनभेदानाम् )

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम्

२ धनुर्धारी वीरों के पाँच पैतरों के नाम-

= धनुर्धारियों के शेष ३ पैतरा इस प्रकार बँटे गये  
हैं—समपद, विशान और गण्डल । पैतों के लम्बाई  
रिधिति का नाम—( २ ) समपद ।

अजौहिणी सेना का प्रमाण

सेना	पति	सेनामुख	गुल्म	गण	वाहिनी	वृत्तना	चम्	अर्नाकिनी	अक्षौहिणी
हाथी, रथ	१	२	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	२१८७०
पोदे	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	६५६१	६५६१०
पैदर	५	१५	४५	१३५	४०५	१२१५	३६४५	१०९३५	१०९३५०



वार्यी जघा को फैलाने तथा दाहिनी जंघा के समेटने की स्थिति का नाम—( १ ) प्रत्यालीढ ।  
दाहिनी जंघा को फैलाने तथा वार्यी जंघा को समेटने की स्थिति का नाम—( १ ) आलीढ ।

( त्रीणि लक्ष्यस्य )

लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च

निशाने के ३ नाम—( १ ) लक्ष ( २ ) लक्ष्य ( ३ ) शरव्य ।

( द्वे बाणाक्षेपाभ्यासस्य )

शराभ्यास उपासनम् ।

बाण चलाना सीखने के २ नाम—( १ ) शराभ्यास ( २ ) उपासन ।

( बाणस्य द्वादश )

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्वगखगाशुगाः ॥८६॥  
कलम्बमार्गणशरा. पत्री रोप इषुर्द्वयो ।

बाण के १२ नाम—( १ ) पृषत्क ( २ ) बाण ( ३ ) विशिख ( ४ ) अजिह्वग ( ५ ) खग ( ६ ) आशुग ( ७ ) कलम्ब ( ८ ) मार्गण ( ९ ) शर ( १० ) पत्रिन् ( ११ ) रोप ( १२ ) इषु । इनमें ( १ से ११ तक ) पुल्लिङ्ग, तथा ( १२वाँ ) इषु शब्द पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों है ॥८६॥

( द्वे लोहमयबाणस्य )

प्रद्वेडनास्तु नाराचाः

लोहे के बाणों के २ नाम—( १ ) प्रद्वेडन ( २ ) नाराच ।

( द्वे बाणपक्षस्य )

पक्षो वाज

बाण में लगनेवाले ककादि पक्ष के २ नाम—( १ ) पक्ष ( २ ) वाज ।

त्रिपूत्तरे ॥८७॥

‘निरस्त’ शब्द से लेकर ‘लित्तक’ शब्द

वारह अगुल के अन्तर स पाँचों को ठहरा कर स्थित होने का नाम—( १ ) विशाख ।

मण्डलाकार करके स्थित होनेका नाम—( १ ) मण्डल ।  
इन्द्र से लड़ने के लिये रघु आलीढ पैतरे से खड़े हुए थे ।  
देखिए रघुवश ।

पर्यन्त सभी शब्द पुं-स्त्री-नपुंसक तीनों लिंगों में कहे गये हैं ॥ ८७ ॥

( एकं धनुषा ग्रहितबाणस्य )

निरस्तः ग्रहिते बाणे

धनुष से छूटे हुए बाण का नाम—( १ ) निरस्त ।

( त्रीणि विपाक्तबाणस्य )

विपाक्ते दिग्धलिप्तकौ ।

जहरीले बाणों के ३ नाम—( १ ) विपाक्त ( २ ) दिग्ध ( ३ ) लिप्तक ।

( षट् तूणीरस्य )

तूणोपासङ्गतूणीरनिपङ्गा इषुर्धिर्द्वयोः ॥८८॥

तूणयाम्

जिसमें बाण रखा जाता है, उस तरकस के ६ नाम—( १ ) तूण ( २ ) उपासङ्ग ( ३ ) तूणीर ( ४ ) निपङ्ग ( ५ ) इषुधि ( ६ ) तूणी । इनमें ( ५ वाँ ) शब्द पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों है और ( ६ वाँ ) केवल स्त्रीलिङ्ग है । शेष पुल्लिङ्ग हैं ॥ ८८ ॥

( नव खड्गस्य )

खड्गे तु निखिशचन्द्रहासासिरिष्ठ्य ।

कौक्षेयको मण्डलाग्र. करवाल\* कृपाणवत् ८९

खड्ग ( तलवार ) के ९ नाम—( १ ) खड्ग ( २ ) निखिश ( ३ ) चन्द्रहास ( ४ ) असि ( ५ ) रिष्टि ( ६ ) कौक्षेयक ( ७ ) मण्डलाग्र ( ८ ) करवाल ( ९ ) कृपाण ॥ ८९ ॥

( खड्गमुष्ट्यैरेकम् )

त्सरः खड्गादिर्मुष्टौ स्यात्

तलवार की मूठ का नाम—( १ ) त्सर ।

( एकं मेखलाया )

मेखला तन्निबन्धनम् ।

तलवार की म्यान का नाम—( १ ) मेखला ।

( त्रीणि 'ढाल' इति ख्यातस्य चर्मणः )

फलकोऽस्त्री फल चर्म

१ आदिना कटारखजारादीनां ग्रहणम् ।

ढाल के ३ नाम—( १ ) फलक ( २ ) फल ( ३ ) चर्मन् । इनमें ( १ ला ) शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसक ( २-३रा ) नपुंसकलिङ्ग हैं ।

( फलकस्य मुष्टरेकम् )

सग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥६०॥

जहाँ से ढाल पकड़ी जाती है, उस मूठ का नाम—( १ ) सग्राह ॥६०॥

( त्रीणि मुद्गरस्य )

दुग्धणो मुद्गरघना

मुद्गर के ३ नाम—( १ ) दुग्धण ( २ ) मुद्गर ( ३ ) घन ।

( द्वे ह्रस्वखड्गस्य )

स्यादौली करवालिका ।

१ साडे के २ नाम—( १ ) इली ( २ ) कर-वालिका ।

( द्वे भद्रमप्रक्षेपसाधनस्य )

भिन्दिपालः स्रगस्तुल्यौ

जिसमें पत्थर फेंका जाता है, उस ढेलवोम के २ नाम—( १ ) भिन्दिपाल ( २ ) स्रग ।

( द्वे परिघस्य )

परिघ पारघातन ॥६१॥

परिघ के २ नाम—( १ ) परिघ ( २ ) पारघातन ॥ ६१ ॥

( चत्वारि कुठारस्य )

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।

कुठार के ४ नाम—( १ ) कुठार ( २ ) स्वधिति ( ३ ) परशु ( ४ ) परश्वध ।

( चत्वारि लुरिकायाः )

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च लुरिका चासिधेनुका ॥

लुरी के ४ नाम—( १ ) शर्वा ( २ ) अस्त्रिपुत्री ( ३ ) लुरिका ( ४ ) आसिधेनुका ॥६२॥

( द्वे शल्यस्य )

पा पुंसि शल्यं मंशुर्ना

पा के २ नाम—( १ ) शल्य ( २ ) मंशुर्ना

शंकु । इनमें ( १ ला ) पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक दोनों हैं, और ( २रा ) केवल पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे तोमरस्य )

शर्वला तोमरोऽस्त्रयाम् ।

गडासे के २ नाम—( १ ) शर्वला ( २ ) तोमर । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग ( २ ) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे कुन्तस्य )

प्रासस्तु कुन्तः

भाले के २ नाम—( १ ) प्रास ( २ ) कुन्त ।

( चत्वारि खट्वादिप्रान्तभागस्य )

कोणस्तु स्त्रिय पात्यश्चिकोटयः ॥६३॥

खट्वादि की नोक के ४ नाम—( १ ) कोण ( २ ) पालि ( ३ ) अत्रि ( ४ ) कोटि । इनमें ( १ ) पुल्लिङ्ग ( २-३-४ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥६३॥

( त्रीणि चतुरङ्गसैन्यसंनहनस्य )

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।

सेना की जमाव के ३ नाम—( १ ) सर्वाभि-सार ( २ ) सर्वौघ ( ३ ) सर्वसन्नहन ।

( एरुमच्छभृतां नृपाणा महानवभ्यां दशम्या वा नीराजनासमये शस्त्रादिसमर्पणलक्षणस्य विधेः )

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः

शस्त्र धारण करनेवाले राजाओं के यहाँ महानवमी अथवा विजय दशमी के अवसर पर पूजन के समय अस्त्र आदि अर्पण के विधान का नाम—( १ ) लोहाभिसार ॥६४॥

( एकं सेनया शत्रौ गमनस्य )

तत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिप्रेणनम् ।

सेना लेकर शत्रु पर चढ़ाई करने का नाम—( १ ) अभिप्रेणन ।

( पटकं प्रयाणस्य )

यात्रा व्रज्याऽभिनिर्गणं प्रस्थान गमनं गम ६५

यात्रा के ६ नाम—( १ ) यात्रा ( २ ) व्रज्या ( ३ ) अभिनिर्गण ( ४ ) प्रस्थान ( ५ ) गमन ( ६ ) गम ॥६५॥

( द्वे सेनायाः प्रसरणस्य )

स्यादासारः प्रसरणम्

सेना की फैलाव के २ नाम—( १ ) आसार  
( २ ) प्रसरण ।

( द्वे प्रस्थितायाः सेनायाः )

प्रचक्रं चलितार्थकम् ।

प्रस्थित सेना के २ नाम—( १ ) प्रचक्र ( २ )  
चलित ।

( एकं रणे निर्भीकतया गमनस्य )

अहिताप्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥६६॥

निर्भीक भाव से संग्राम में गमन करने का  
नाम—( १ ) अभिक्रम ॥६६॥

( द्वे वैतालिकस्य )

वैतालिका बोधकराः

प्रातः काल स्तुति पाठ करके राजा को जगाने  
वाले भाट के २ नाम—( १ ) वैतालिक ( २ )  
बोधकर ।

( द्वे वन्दिविशेषस्य )

चाक्रिका घण्टिकार्थकाः ।

घण्टा बजानेवालों के २ नाम—( १ ) चाक्रिक  
( २ ) घण्टिक ।

( द्वे राजाग्रतो वशकमस्य स्तावकादीनाम् )

स्युर्मागधास्तु मगधाः

राजा के समक्ष राजवश का वर्णन करने  
वालों के २ नाम—( १ ) मागध ( २ ) मगध ।

( द्वे वन्दिन )

वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥६७॥

स्तुति करनेवाले वन्दीजनों के २ नाम—  
( १ ) वन्दी ( २ ) स्तुतिपाठक ॥ ६७ ॥

( शपथाद्ये संग्रामादनिवर्तिनो वीरास्तेषामेकम् )

संशप्तकास्तु समयत्संग्रामादनिवर्तिनः ।

शपथ करके संग्राम में जाकर पीछे न लौटने-  
वाले का नाम—( १ ) संशप्तक ।

१ महाभारत में संशप्तकों के युद्ध का हृदयग्राही  
वर्णन है ।

( चत्वारि रजसः )

रेणुर्द्वयोः स्त्रियं धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः

धूल के ४ नाम—( १ ) रेणु ( २ ) धूलि  
( ३ ) पासु ( ४ ) रजस् इनमें ( १ ) पु० स्त्री, ( २ )  
स्त्री०, ( ३ ) पु०, ( ४ ) नपुंसक है ॥६८॥

( द्वे पिष्टस्य रजसः )

चूर्णे क्षौद

चूर्ण के २ नाम—( १ ) चूर्ण ( २ ) क्षौद ।  
इनमें ( १ ) पु०-नपुंसक दोनों हैं ।

( द्वे अत्यन्तमाकुले सैन्यादौ )

समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

अतिशय भयभीत सेना आदि के २ नाम—  
( १ ) समुत्पिञ्ज ( २ ) पिञ्जल ।

( चत्वारि पताकायाः )

पताका वैजयन्ती स्यात्केतन ध्वजमस्त्रियाम्

झण्डे के ४ नाम—( १ ) पताका ( २ )  
वैजयन्ती ( ३ ) केतन ( ४ ) ध्वज । इनमें ( १-२ )  
स्त्रीलिङ्ग ( ३-४ ) नपुंसक और पुंलिङ्ग दोनों  
हैं ॥६९॥

( एकं या युद्धभूमिः खण्डितैर्गजादिभिरतिभयदातस्या )

सा वीराशसन युद्धभूमिर्यातिभयप्रदा ।

हाथी, घोड़े, पैदल आदि के कट जाने से  
जो युद्ध भूमि विशेष भयावनी मालूम पड़ती हो,  
उसका नाम—( १ ) वीराशसन ।

( एकं अहमग्रेभवामीत्याग्रहपुरःसरं युद्धकारिणः )

अग्रं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥७०॥

जिस संग्राम में वीर लोग 'पहले मैं लड़ूँगा  
पहले मैं लड़ूँगा' इस प्रकार का उत्साह दिखा  
रहे हों, उस संग्राम का नाम—( १ ) अग्रपूर्विका ।  
यह शब्द स्त्रीलिङ्ग है ॥७०॥

( अहं पुरुषः शक्तोहं इति भावाभिजयतां सैनिका-  
नामेकम् )

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ।

मैं पुरुष हूँ, इस प्रकार अभिमान के साथ

( द्वे संग्रामध्वनेः )

पटहाडम्बरौ समौ ।

जुझाऊ नगाड़े की ध्वनि के २ नाम—( १ )

पटह ( २ ) आडम्बर ।

( त्रीणि बलात्कारस्य )

प्रसभं तु बलात्कारो हठः ।

हठ के ३ नाम—( १ ) प्रसभ ( २ ) बलात्कार ( ३ ) हठ ।

( द्वे युद्धमर्यादाया उल्लंघनस्य )

अथ स्खलितं छलम् ॥१०८॥

युद्ध की मर्यादा को उल्लंघन करने (धोखा देने) के २ नाम—(१) स्खलित (२) छल ॥ १०८ ॥

( त्रीणि उत्पातस्य )

अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।

उत्पात के ३ नाम—( १ ) अजन्य ( २ ) उत्पात ( ३ ) उपसर्ग । इनमें ( १ ) नपुंसक तथा ( २-३ ) पुल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि मोहस्य )

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽपि

मोह के ३ नाम—( १ ) मूर्च्छा ( २ ) कश्मल ( ३ ) मोह । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग है ।

( द्वे शत्रुदेशपीडनस्य )

अवमर्दस्तु पीडनम् ॥१०९॥

धान्य आदि से पूर्ण शत्रु के देश को तहस-नहस करने के २ नाम—(१) अवमर्द (२) पीडन ॥१०९॥

( द्वे छलादाक्रमणस्य )

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनम्

धोखे से आक्रमण करने के २ नाम—( १ ) अभ्यवस्कन्दन ( २ ) अभ्यासादन ।

( द्वे जयस्य )

विजयो जयः ।

जीत के २ नाम—( १ ) विजय ( २ ) जय ।

( त्रीणि प्रतीकारस्य )

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥११०॥

वैर मिटाने के ३ नाम—( १ ) वैरशुद्धि

( २ ) प्रतीकार ( ३ ) वैरनिर्यातन ॥ ११० ॥

( अष्टौ पलायनस्य )

प्रद्रावोद्राव-सद्राव सदावा विद्रवो द्रव ।

अपक्रमोऽपयानं च

संग्राम से भागने के ८ नाम—( १ ) प्रद्राव ( २ ) उद्राव ( ३ ) सद्राव ( ४ ) सदाव ( ५ ) विद्रव ( ६ ) द्रव ( ७ ) अपक्रम ( ८ ) अपयान ।

( एकं पराजयस्य )

रणेभङ्गः पराजयः ॥१११॥

पराजय का नाम—(१) पराजय ॥ १११ ॥

( द्वे पराजितस्य )

पराजितपराभूतौ

हारे हुए के २ नाम—( १ ) पराजित ( २ ) पराभूत ।

( द्वे निलीनस्य )

त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।

छिपे हुए के २ नाम—(१) नष्ट (२) तिरोहित । तीनों लिंगों में इनका पाठ है ।

( त्रिंशद् वधस्य )

प्रमापणं निवर्हणं निकारणं विशारणम् ॥११२॥

प्रवासनं परासनं निषूदनं निर्हिसनम् ।

निर्वासनं सङ्गपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥११३॥

निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।

निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥११४॥

उद्वासनप्रमथनक्रथनोच्चासनानि च ।

आलम्भर्पिजविशरघातोन्माथवधाअपि ॥११५॥

वध के ३० नाम—(१) प्रमापण (२) निवर्हण (३) निकारण (४) विशारण (५) प्रवासन (६) परासन (७) निषूदन (८) निर्हिसन (९) निर्वासन (१०) सङ्गपन (११) निर्ग्रन्थन (१२) अपासन (१३) निस्तर्हण (१४) निहनन (१५) क्षणन (१६) परिवर्जन (१७) निर्वापण (१८) विशसन (१९) मारण (२०) प्रतिघातन (२१) उद्वासन (२२) प्रमथन (२३) क्रथन (२४) उच्चासन (२५)

आलम्ब ( २६ ) पिञ्ज ( २७ ) विशर ( २८ )  
घात ( २९ ) उन्माथ ( ३० ) वध ॥११२-११५॥

( मृत्योर्दश )

स्यात्पंचता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।  
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम्

मृत्यु के १० नाम—( १ ) पंचता ( २ )  
कालधर्म ( ३ ) दिष्टान्त ( ४ ) प्रलय ( ५ ) अत्यय  
( ६ ) अन्त ( ७ ) नाश ( ८ ) मृत्यु ( ९ ) मरण  
( १० ) निधन । इनमें ( ८ वाँ ) स्त्री-पुंल्लिंग  
दोनों है । ( १० ) पुंनपुंसक लिङ्ग है ॥ ११६ ॥

( सप्त मृतकस्य )

परासु-प्राप्तपञ्चत्व-परेत-प्रेत-सस्थिताः ।

मृत प्रमीतौ त्रिध्वेते

मरे हुए के ७ नाम—( १ ) परासु ( २ )  
प्राप्तपञ्चत्व ( ३ ) परेत ( ४ ) प्रेत ( ५ ) सस्थिता  
( ६ ) मृत ( ७ ) प्रमीत । तीनों लिंगों में इनका  
पाठ है ।

( चित्तेच्छीणि )

चिता चित्वा चिति स्त्रियाम् ॥११७॥

चिता के ३ नाम—( १ ) चिता ( २ ) चित्वा  
( ३ ) चिति । ये तीनों स्त्रीलिंग हैं ॥११७॥

( अपगतमूर्ध्ना कलेवरस्यैकम् )

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।

सिर कटे किन्तु तड़फबाते हुए बड़ का  
नाम—( १ ) कबन्ध ( पुं-नपुंसक ) ।

( द्वे श्मशानस्य )

श्मशानं स्यात्पितृवनम्

श्मशान के २ नाम—( १ ) श्मशान ( २ )  
पितृवन ।

( द्वे शवस्य )

कुणप शवमस्त्रियाम् ॥११८॥

सुदें के २ नाम—( १ ) कुणप ( २ ) शव ।  
इनमें ( २ ) पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों  
हैं ॥११८॥

( त्रीणि 'कैरी' इति ख्यातस्य )

प्रग्रहोपग्रहौ बन्ध्याम्

कैरी के ३ नाम—( १ ) प्रग्रह ( २ ) उपग्रह  
( ३ ) बन्दी ।

( एकं बन्धनगृहस्य )

कारा स्याद्बन्धनालये ।

जेल का नाम—( १ ) कारा ।

( द्वे प्राणधारणस्य )

पुंसि भूम्यसवः प्राणाश्चैवम्

प्राण के २ नाम—( १ ) असु ( २ ) प्राण । ये  
( १-२ ) पुंलिङ्ग और बहुवचनान्त होते हैं ।

( द्वे जीवस्य )

जीवोऽसुधारणम् ॥११९॥

जीव के २ नाम—( १ ) जीव ( २ ) असु-  
धारण ॥११९॥

( जीवितकालस्यैकम् )

आयुर्जीवितकालः

जीवित समय (उम्र) का नाम—( १ ) आयुप् ।  
( नपुं० )

( जीवितौपधस्यैकम् )

ना जीवातुर्जीवनौपधम् ।

जीवन की रक्षा करनेवाली औषधि का  
नाम—( १ ) जीवातु ( पुंलिङ्ग ) ।

( इति क्षत्रियवर्गः ८ )

अथ वैश्यवर्गः ९

( षट् वैश्यस्य )

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः

वैश्य के ६ नाम—( १ ) ऊरव्य ( २ ) ऊरुजा  
( ३ ) अर्य ( ४ ) वैश्य ( ५ ) भूमिस्पृश ( ६ ) विश ।

( षट् जीविकायाः )

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिवर्तनजीवने ॥१॥

रोजी के ६ नाम—( १ ) आजीव ( २ )  
जीविका ( ३ ) वार्ता ( ४ ) वृत्ति ( ५ ) वर्तन  
( ६ ) जीवन । इनमें ( १ ) पुं ( २-४ ) स्त्री ( ५-६ )  
नपुंसक हैं ॥१॥

( त्रीणि वृत्तिभेदस्य )

स्त्रियां रुपिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।

वृत्तिभेद के ३ नाम—खेती करना (१) कृषि=  
खी० (२) पशुओं को पालकर जीविका चलाना  
पाशुपाल्य=नपु० (३) व्यवहार अथवा देन लेन  
करना <sup>१</sup> वाणिज्य (नपुंसक)=कय-विकय ।

( द्वे सेवायाः )

**सेवा श्ववृत्तिः**

<sup>२</sup>नौकरी के २ नाम—(१) सेवा (२)  
श्ववृत्ति ।

( द्वे कृषेः )

**अनृत कृषिः**

खेती के २ नाम—(१) अनृत (२) कृषि ।

( त्रीणि उच्छ्वृत्तेः )

**उच्छ्वशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥**

उच्छ्वशिल वृत्ति का नाम—(१) ऋत ।

बाजार आदि में क्रय-विक्रय के अनन्तर गिरे हुए  
दानों के चुनने का नाम—(१) 'उच्छ्व' ।

खेत कट जाने के बाद खेत का स्वामी जिन  
दानों को खेत में छोड़ देता है, उनके नाम—(१)  
शिला ।

( एकं याञ्जालब्धवस्तुनः याञ्जाविरहित-  
वस्तुनोऽप्येकमेव )

**द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ।**

मॉगने पर मिली हुई वस्तु का नाम—  
(१) मृत और बिना मॉगे अपने आप मिली  
वस्तु का नाम—(१) अमृत ।

( वाणिज्यस्यैकम् )

**सत्यानृतं वणिग्भावः स्यात् ।**

वाणिज्य व्यवसाय (वनिज्य) का नाम—(१)  
सत्यानृत (नपु०) ।

१ महाभारत और गीता में भी लिखा है—

कृषिगोरक्षवाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम् ।

२ स्मृतियाँ भी सेवावृत्ति की निन्दा करती हुई  
कहती हैं—

मृतामृताभ्यां जीवेत मृतेन प्रमृतेन वा ।

मथानृताभ्यामपि वा न श्ववृत्त्या कथंचन ॥

शुना वृत्ति स्मृता सेवा गदित तदुद्दिजन्मनाम् ।

हिंसादोषप्रधानत्वादनृत कृषिरुच्यते ॥

( त्रीणि ऋणस्य )

**ऋणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥**

**उद्धार**

ऋण के ३ नाम—(१) ऋण (२) पर्यु-  
दञ्चन (३) उद्धार ॥३॥

( त्रीणि वृद्धिजीविकायाः )

**अर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ।**

सूद के ३ नाम—(१) अर्थप्रयोग (२)

कुसीद (३) वृद्धिजीविका ।

( एकं याञ्जया लब्धवस्तुनः )

**याञ्जयाऽऽप्तं याचितकम्**

मॉगे से मिली हुई वस्तु का नाम—(१)  
याचितक ।

( एकं परिवर्तादान्तवस्तुनः )

**नियमादापमित्यकम् ॥ ४ ॥**

विनिमय (लेनदेन, बदले) में मिली हुई वस्तु  
का नाम—(१) आपमित्यक ॥४॥

( ऋणदातुर्ग्राहकस्य चैकैकम् )

**उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ।**

ऋण देनेवाले साहूकार का नाम—(१) उत्तमर्ण ।

कर्ज लेनेवाले असामी का नाम (१) अधमर्ण ।

( चत्वारि ऋणं दत्त्वा तद्वृद्धया जीविनः )

**कुसीदिको वार्धुषिको वृद्धयाजीवश्च वार्धुषि-**

सूदखोर के ४ नाम—(१) कुसीदिक (२)

वार्धुषिक (३) वृद्धयाजीव (४) वार्धुषि ॥५॥

( चत्वारि कृपकस्य )

**क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषकश्च कृषीवलः ।**

किसान के ४ नाम—(१) क्षेत्राजीव

(२) कर्षक (३) कृपक (४) कृषीवल ।

( एकं ब्रह्मोद्भवोचितक्षेत्रस्य शाल्युद्भवोचितक्षेत्र-  
स्याप्येकमेव )

**क्षेत्रं त्रैहेयशाल्यं त्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥६॥**

धान के खेत का नाम—(१) त्रैहेय । (पुं-

खी-नपु० )

साठी के खेत का नाम—( १ ) शालेय  
( पुं-स्त्री-नपुं० ) ॥ ६ ॥

( एकं यवक्षेत्रस्य )

यत्नं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत् ।

जौ के खेत का नाम—( १ ) यव्य । ( पुं-स्त्री-नपुं० )

छोटे जौ के खेत का नाम—( १ ) यवक्य ।

( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

साठ रात में पकनेवाले जौ के खेत का नाम—

( १ ) षष्टिक्य । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

( द्वे द्वे तिल-माषोमाणुभंगक्षेत्राणां )

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभंगा द्विरूपता ॥ ७ ॥

तिल के खेत के २ नाम—( १ ) तिल्य ( २ )

तैलीन । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

उड़द के खेत के २ नाम—( १ ) माष्य

( २ ) माषीण । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

तीसी के खेत के २ नाम—( १ ) उम्य ( २ )

आमीन । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

अरवा चावल के खेत के २ नाम—( १ )

अणव्य ( २ ) आणवीन । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

भौंग के खेत के २ नाम—( १ ) भग्य ( २ )

भगीन ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ॥ ७ ॥

( मुद्गकोद्रवादिक्षेत्राणामप्येकैकम् )

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्याद्भवत्तमम् ।

भूग उत्पन्न होनेवाले खेत का नाम—

( १ ) मौद्गीन । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

कोदों उत्पन्न होनेवाले खेत का नाम—

( १ ) कोद्रवीण । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

इसी तरह और और खेतों के भी नाम समझ लें । जैसे—गेहूँ उत्पन्न होने योग्य खेत का नाम—( १ ) गोधूमीन ।

१ यह श्लोक कहीं २ अधिक पाया जाता है—

शाकचेनादिके शाकशाकट शाकशाकिनम् ।

साग के खेत के २ नाम—( १ ) शाकशाकट ( २ )

शाकशाकिन ।

चने उत्पन्न होने योग्य खेत का नाम—( १ )  
चाणकीन आदि ।

( द्वे उष्णक्षेत्रस्य )

बीजाकृतं तूष्णक्षेत्रम्

बीज बो कर जोते जानेवाले खेत का नाम—

( १ ) बीजाकृत । ( २ ) उष्णक्षेत्र । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

( त्रीणि कृष्टक्षेत्रस्य )

सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोते हुए खेत के ३ नाम—( १ ) सीत्य ( २ )

कृष्ट ( ३ ) हल्य । ये ( १-३ ) पुं-स्त्री-नपुं० हैं ॥ ८ ॥

( चत्वारि त्रिहल्यक्षेत्रस्य )

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं

त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।

तीन बार जोते हुए खेत के ४ नाम—( १ )

त्रिगुणाकृत ( २ ) तृतीयाकृत ( ३ ) त्रिहल्य

( ४ ) त्रिसीत्य । ये ( १-३ ) पुं-स्त्री-नपुं० हैं ।

( पञ्च द्विहल्यक्षेत्रस्य )

द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

दो बार जोते हुए खेत के ५ नाम—( १ )

द्विगुणाकृत ( २ ) द्वितीयाकृत ( ३ ) द्विहल्य

( ४ ) द्विसीत्य ( ५ ) शम्बाकृत ॥ ९ ॥

( द्रोणादिपरिमितधान्यस्यावापोचितक्षेत्रस्य )

द्रोणादिकादिवापादौ द्रौणिकादिकयादयः ।

१६ सेर बीज जिस खेत में बोया जाय,

उसका नाम—( १ ) द्रौणिक । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

४ सेर बीज जिस खेत में बोया जाय, उसका

नाम—( १ ) आदिकिक । ( पुं-स्त्री-नपुं० ) ।

इसी तरह एक सेर बीज जिस खेत में

बोया जाय, उसका नाम—( १ ) प्रास्थिक आदि ।

१ द्रोणादिलक्षणम्—

पल प्रकुधक मुष्टिं कुडवस्तचतुष्टयम् ।

खार कुडवाः प्रस्थश्चतुष्टयः तथादकम् ॥

अष्टादशो भवेद्द्रोणः द्विद्रोणः शर्षपं उच्यते ।

सायंशर्षो भवेत्तारो द्विशर्षो द्रोणमुदाहृतः ॥

तमेव भारं जानीयाद्वादो भारश्चतुष्टयम् ।

( एकं खारीवापक्षेत्रस्य )

**खारीवापस्तु खारीक**

जिस में १ खारी (१ मन ८ सेर) बीज बोया जाय, उस खेत का नाम—( १ ) खारीक ।

**उत्तमर्णदयस्त्रिषु ॥१०॥**

( ५ वे श्लोक के ) उत्तमर्ण शब्द से लेकर खारीक ( १० श्लोक में ) शब्द तक जितने नाम आये हैं, वे पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग इन तीनों ही लिङ्गों में कहे गये हैं ॥१०॥

( त्रीणि क्षेत्रस्य )

**पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रम्**

खेत के ३ नाम—( १ ) वप्र ( २ ) केदार ( ३ ) क्षेत्र । ये (१-२) पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों में कहे गये हैं । ( ३रा ) नपुंसक है ।

( चत्वारि क्षेत्रसमूहस्य )

**अस्य तु ।****कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गण्ये ॥११॥**

बहुत से खेतों के ४ नाम—( १ ) कैदारक ( २ ) कैदार्य ( ३ ) क्षेत्र ( ४ ) कैदारिक ॥११॥

( द्वे लोष्टस्य )

**लोष्टानि लेष्टवः पुंसि**

ढेले के २ नाम—(१) लोष्ट (२) लेष्ट । इनमें (१ ला) पुं-नपुंसक तथा (२ रा) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे लोष्टभेदनमुद्गरस्य )

**कोटिशो लोष्टभेदनः ।**

ढेला फोड़नेवाली मुँगरी के २ नाम—( १ ) कोटिश ( २ ) लोष्टभेदन ।

( त्रीणि वृषभादेस्ताडनोपयोगिनस्त्वोष्ठस्य )

**प्राजनं तोदनं तोत्रम्**

जिससे बैल आदि पशु हँके जाते हैं, उस पैंने के ३ नाम—(१) प्राजन (२) तोदन (३) तोत्र ।

( द्वे खनित्रस्य )

**खनित्रमवदारणे ॥१२॥**

कुदाल के २ नाम—( १ ) खनित्र ( २ ) अवदारण ॥१२॥

( द्वे लवित्रस्य )

**दात्रं लवित्रम्**

खुरपा, हँसुआ, फावड़ा आदि के २ नाम—( १ ) दात्र ( २ ) लवित्र ।

( त्रीणि युगबन्धनोपयोगिरज्जोः )

**आवन्धो योत्र योक्त्रम्**

जिससे बैल नाया जाता है, उस रस्ती के ३ नाम—( १ ) आवन्ध ( २ ) योत्र ( ३ ) योक्त्र ।

( पञ्च हलफालस्य )

**अथो फलम् ।****निरीशं कुटकं फालः कृषकः**

हल में लगनेवाले फाल के ५ नाम—( १ ) फल ( २ ) निरीश ( ३ ) कुटक ( ४ ) फाल ( ५ ) कृषक ।

( चत्वारि लाङ्गलस्य )

**लाङ्गलं हलम् ॥१३॥****गोदारणं च सीरः**

हल के ४ नाम—( १ ) लाङ्गल ( २ ) हल ( ३ ) गोदारण ( ४ ) सीर ॥१३॥

( द्वे युगकीलकस्य )

**अथ शम्भ्या स्त्री युगकीलकः ।**

जुए में लगनेवाली सैल के २ नाम—( १ ) शम्भ्या ( २ ) युगकीलक । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग और ( २ ) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे लाङ्गलदण्डस्य )

**ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्**

हल में लगनेवाली हरिस के २ नाम—( १ ) ईषा ( २ ) लाङ्गलदण्ड । इनमें ( १ ) स्त्री, ( २ ) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे लाङ्गलपद्धतेः )

**सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥१४॥**

जोतते समय खेत में हल की जो रेखा पड़ती है, उस ( कूँड़ ) के २ नाम—( १ ) सीता ( २ ) लाङ्गलपद्धति ॥१४॥

( द्वे पशुबन्धनघाटस्य )

**पुंसि मेधि खले दाढ न्यस्त यत्पशुबन्धने ।**



मेढी, खलिहान में पशुओं को बाँधने के निमित्त गाड़े हुए काष्ठ के २ नाम—( १ ) मेधि ( २ ) खलेदार । इनमें ( १ ) शब्द पुंलिङ्ग और ( २ ) नपुंसकलिङ्ग है ।

( त्रीणि ब्रीहे. )

आशुर्वीहिः पाटलः स्यात्

साठी धान के ३ नाम—( १ ) आशु ( २ ) वीहि ( ३ ) पाटल ।

( द्वे यवस्य )

शितशूक-यवौ समौ ॥१५॥

जौ के २ नाम—( १ ) शितशूक ( २ ) यव ॥१५॥

( एकं हरितयवस्य )

तोकमस्तु तत्र हरिते

हरे जौका नाम—( १ ) तोकम ( पु ० ) ।

( चत्वारि कलायस्य )

कलायस्तु सतीनिकः ।

हरेणुरेणुकौ चास्मिन्

मटर के ४ नाम—( १ ) कलाय ( २ ) सतीनिक ( ३ ) हरेणु ( ४ ) रेणुक ।

( द्वे कोद्वयस्य )

कोद्वयस्तु कोद्वयः ॥१६॥

कोदौ के २ नाम—( १ ) कोद्वय ( २ ) कोद्वय ॥ १६ ॥

( द्वे मसूरस्य )

मङ्गल्यको मसूरः

मसूर के २ नाम—( १ ) मङ्गल्यक ( २ ) मसूर ।

( त्रीणि मकुष्ठस्य )

अथ मकुष्ठकमयुष्टकौ ।

वनमुद्गे

मोथी, मोठ, वनमूग ( भेंटवास ) के ३ नाम—( १ ) मकुष्ठक ( २ ) मयुष्ठक ( ३ ) वनमुद्ग ।

( त्रीणि सर्पस्य )

सर्पे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ ॥१७॥

सरसों के ३ नाम—( १ ) सर्प ( २ ) तन्तुभ ( ३ ) दम्बक ॥१७॥

( एकं श्वेतसर्पस्य )

सिद्धार्थस्त्वेष धवलः

सफेद सरसों का नाम—( १ ) सिद्धार्थ ।

( द्वे गोधूमस्य )

गोधूमः सुमनः समौ ।

गेहूँ के २ नाम—गोधूम ( २ ) सुमन ।

( द्वे कुल्माषस्य )

स्याद्यावकस्तु कुल्माषः

कुल्मी के २ नाम—( १ ) यावक ( २ ) कुल्माष ।

( द्वे चणकस्य )

चणको हरिमन्थकः ॥१८॥

चने के २ नाम—( १ ) चणक ( २ ) हरिमन्थक ॥ १८ ॥

( द्वे फलहीनतिलस्य )

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिंजश्च निष्फले ।

फलविहीन ( बॉक ) तिल के २ नाम—( १ ) तिलपेज ( २ ) तिलपिंज ।

( पञ्च राजिकायाः )

क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी १६

राई के ५ नाम—( १ ) क्षुता ( २ ) क्षुताभिजनन ( ३ ) राजिका ( ४ ) कृष्णिका ( ५ ) आसुरी ॥१६॥

( द्वे प्रियगोः )

स्त्रियौ कंगुप्रियङ्गू द्वे

ककुनी के २ नाम—( १ ) कंगु ( २ ) प्रियङ्गु । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( त्रीणि अतस्या )

अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

अतसी के ३ नाम—( १ ) अतसी ( २ ) उमा ( ३ ) क्षुमा ।

( द्वे भङ्गायाः )

मातुलानी तु भङ्गायाम्

भाँग के २ नाम—( १ ) मातुलानी ( २ ) भगा ।

( ब्रीहिभेदस्यैकम् )

ब्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥२०॥

सौवाँ, धान्यविशेष का नाम—(१) अणु ।  
यह पुँल्लिङ्ग है ॥२०॥

( द्वे यवादीनां सूचितुल्याग्रभागस्य )

**किंशारुः सस्यशूकं स्यात्**

यव, धान आदि की वाल के सुई सदृश अग्र भाग (टूँडू) के २ नाम—(१) किंशारु (२) सस्यशूक ।

( द्वे सस्यमंजर्याः )

**कणिशं सस्यमञ्जरी ।**

धान्य आदि की वाल के २ नाम—( १ ) कणिश ( २ ) सस्यमंजरी ।

( त्रीणि धान्यस्य )

**धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः**

धान्य के ३ नाम—( १ ) धान्य (२) व्रीहि ( ३ ) स्तम्बकरि ।

( द्वे तृणयवादेर्गुच्छस्य )

**स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥२१॥**

तृण, यव आदि के गुच्छों के २ नाम—(१) स्तम्ब ( २ ) गुच्छ ॥२१॥

( द्वे गुच्छनालस्य )

**नाडी नालं च काण्डोऽस्य**

गुच्छा के डंठल, नरई के २ नाम—(१) नाडी ( २ ) नाल ।

( एकं गृहीतफलस्य काण्डस्य )

**पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।**

जिसका अनाज निकाल लिया गया है, उस पुश्ताल का नाम—(१) पलाल । यह पुँल्लिङ्ग है ।

( द्वे बुसस्य )

**कडङ्गरो बुसं क्लीबे**

भूसे के २ नाम—( १ ) कडङ्गर ( २ ) बुस । इनमें ( १ला ) पुँल्लिङ्ग ( २रा ) नपुंसक लिङ्ग है ।

( एकं धान्यत्वचः )

**धान्यत्वचि तुषः पुमावन् ॥२२॥**

धान्य की भूसी का नाम—( १ ) तुष । यह पुँल्लिङ्ग है ॥२२॥

( एकं यवादेरग्रस्य )

**शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे**

यव, धान्य आदि के चिकने और सुई की तरह तीखे अग्रभाग ( टूँडे ) का नाम—(१) शूक ।

( द्वे मापादिफलस्य )

**शमी शिम्बा**

छीनी उड़द-मटर आदि की फली के २ नाम—( १ ) शमी ( २ ) शिम्बा ।

**त्रिषूत्तरे ।**

आगे कहे जानेवाले २३वें श्लोक के सभी नाम पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक हैं ।

( द्वे भावसितधान्यस्य )

**ऋद्धमावसितं धान्यम्**

पुश्ताल से निकाले हुए धान्य के २ नाम—(१) ऋद्ध (२) आवसित (पुं-स्त्री-नपुं०) ।

( एकं बहुलीकृतधान्यस्य )

**पूतं तु बहुलीकृतम् ॥२३॥**

साफ करके एकत्रित किये हुए ओसाए धान्य के २ नाम—( १ ) पूत ( २ ) बहुलीकृत ॥२३॥

( शमीधान्यानि )

**माषादयः शमीधान्ये**

उड़द, मूँग, मटर आदि फली के भीतर रहनेवाले अन्न शमीधान्य कहे जाते हैं ।

( शूकधान्यानि )

**शूकधान्ये यवादयः ।**

जौ, मेहूँ तथा धान आदि वाल से उत्पन्न होनेवाले अन्न शूकधान्य कहलाते हैं ।

( शालिधान्यानि )

**शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी२४**

अगहनी, साठी तथा राजशालि आदि अन्न शालिधान्य कहे जाते हैं ।

ये माप, यव, कलम (अगहनी वान) षष्टिक आदि पुँल्लिङ्ग हैं ॥२४॥

( एकं तृणधान्यस्य )

**१ तृणधान्यानि नीवाराः**तिन्नी, सावो आदि तृणधान्य का नाम—  
( १ ) नीवार ।

( द्वे मुन्यन्नविशेषस्य )

**स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।**२कसेई, कौदिल्ला के २ नाम—( १ ) गवेधु  
( २ ) गवेधुका । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे मुसलस्य )

**अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्यात्**मुसल के २ नाम—( १ ) अयोग्र ( २ )  
मुसल । ( १-२ ) पुंलिङ्ग-नपुंसक दोनों हैं ।

( द्वे उलूखलस्य )

**उदूखलमुलूखलम् ॥२५॥**ओखली के २ नाम—( १ ) उदूखल ( २ )  
उलूखल ॥ २५ ॥

( द्वे शूर्पस्य )

**प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री**सूप के २ नाम—( १ ) प्रस्फोटन ( २ ) शूर्प ।  
ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं । ( केवल २रा ) पुंलिङ्ग है ।

( द्वे चालन्या )

**चालनी तितउः पुमान् ।**चलनी के २ नाम—( १ ) चालनी ( २ ) तितउ ।  
इनमें ( १ ) स्त्री तथा ( २ ) पुंलिङ्ग है ।

( द्वे धान्यभरणार्थं कृतवच्चभाण्डस्य )

**स्यूतप्रसेवौ**अन्न भरने के लिए सन या सूत के बने  
थैले, बोरे के २ नाम—( १ ) स्यूत ( २ ) प्रसेव ।

( द्वे 'दोकरी'ति ख्यातस्म पिटस्य )

**कण्डोलपिटौ**

दोकरी के २ नाम—( १ ) कण्डोल ( २ ) पिट ।

१ मुद्गो मापो राजमापः कुलित्यक्षयकस्तिल ।

कलायस्तुवर इति रामोधान्यगण स्मृत ॥

२ माषाण्यग्रन्थों के अनुसार रुद्र देवता के लिए  
गवेधुके के चरु को आहुति दी जाती थी ।

( द्वे कटस्थ )

**कटकिलिञ्जकौ ॥२६॥****समानौ**चटाई के २ नाम—( १ ) कट ( २ ) किलिञ्जक ।  
ये दोनों ही पुंलिङ्ग हैं ॥ २६ ॥

( त्रीणि महानसस्य )

**रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।**रसोई घर के ३ नाम—( १ ) रसवती ( २ )  
पाकस्थान ( ३ ) महानस ।

( द्वे महानसाध्यक्षस्य )

**पौरोगवस्तदध्यक्ष**रसोई घर के अध्यक्ष के २ नाम—( १- )  
पौरोगव ( २ ) महानसाध्यक्ष ।

( सप्त सूपकारस्य )

**सूपकारास्तु बल्लवाः ॥२७॥****आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः**रसोइये के ७ नाम—( १ ) सूपकार ( २ )  
बल्लव ( ३ ) आरालिक ( ४ ) आन्धसिक ( ५ )  
सूद ( ६ ) औदनिक ( ७ ) गुण ॥ २७ ॥

( त्रीणि आपूपिकस्य )

**आपूपिक. कान्दविका भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥२८॥**पुआ बनानेवाले के ३ नाम—( १ ) आपूपिक  
( २ ) कान्दविक ( ३ ) भक्ष्यकार । ये सब तीनों  
लिङ्ग हैं ॥ २८ ॥

( पच चुल्लिकायाः )

**अश्मन्तमुद्धानमधिभ्रयणी चुल्लिरन्तिका ।**चूल्हे के ५ नाम—( १ ) अश्मन्त ( २ )  
उद्धान ( ३ ) अधिभ्रयणी ( ४ ) चुल्लि ( ५ )  
अन्तिका । इनमें ( १-२ ) नपुंसक, ( ३-५ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।  
( चत्वारि अंगारधानिका 'बोरसी'ति ख्यातायाः )  
**अंगारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥२९॥****हसन्याप**बोरसी, अंगीठी के ४ नाम—( १ ) अंगार-  
धानिका ( २ ) अंगारशकटी ( ३ ) हसन्ती ( ४ )  
हसनी ॥ २९ ॥

( एकं अगारस्य )

अथ न स्त्री स्यादङ्गारः

अगारे का नाम—( १ ) अगार । यह पुँल्लिङ्ग-नपुंसक है ।

( द्वे उल्मुकस्य )

अलातमुल्मुकम् ।

जलती हुई लुआठी के २ नाम—( १ ) अलात ( २ ) उल्मुक ।

( द्वे आष्टस्य )

क्षीवेऽम्बरी भ्राष्ट्रः

भाष्ट्र के २ नाम—( १ ) अम्बरीष ( २ ) आष्ट्र । इनमें ( १ ) नपुंसक और ( २ ) पुँल्लिङ्ग है ।

( द्वे 'कडाही'ति ख्यातायाः स्वेदन्याः )

ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥३०॥

कडाही के २ नाम—( १ ) कन्दु ( २ ) स्वेदनी । इनमें ( १ ) पुँल्लिङ्ग-स्त्री-नपुंसक और ( २ ) केवल स्त्रीलिङ्ग है ॥३०॥

( द्वे 'कमोरा' इति ख्यातस्यालिञ्जरस्य )

अलिञ्जरः स्यान्मणिकः

कमोरे, मटके के २ नाम—( १ ) अलिञ्जर ( २ ) मणिक ।

( त्रीणि कर्कर्याः )

कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

कठवत के ३ नाम—( १ ) कर्करी ( २ ) आलु ( ३ ) गलन्तिका ।

( चत्वारि स्थाल्या )

पिठरः स्थाल्युखा कुरण्डम्

बटलोई के ४ नाम—( १ ) पिठर ( २ ) स्थाली ( ३ ) उखा ( ४ ) कुरण्ड ।

( चत्वारि कलशस्य )

कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥३१॥

घटः कुटनिपौ

कलश ( गगरे ) के ४ नाम—( १ ) कलश । ( २ ) घट । ( ३ ) कुट ( ४ ) निप । इनमें ( १ ) तीनों लिङ्ग ( २ ) पुनपुंसक लिङ्ग है ॥३१॥

( द्वे शरावस्य )

अस्त्री शरावो वर्धमानकः ।

कसोरे के २ नाम—( १ ) शराव ( २ ) वर्धमानक । ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे ऋजीपस्य )

ऋजीपं पिष्टपचनम्

तवे के २ नाम—( १ ) ऋजीष ( २ ) पिष्ट-पचन ।

( द्वे कंसस्य )

कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥३२॥

कटोरी के २ नाम—( १ ) कंस ( २ ) पान-भाजन । इनमें ( १ ) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक ( २ ) नपुंसकलिङ्ग है ॥३२॥

( एक कृत्तेः स्नेहपात्रस्य )

कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रम्

घी आदि रखने के लिए चमड़े के बने कुप्पे का नाम—( १ ) कुतू ( स्त्री० ) ।

( एकम् अल्पकृत्तिस्नेहपात्रस्य )

सैवालपः कुतुपः पुमान् ।

कुप्पी का नाम—( १ ) कुतुप । यह पुँल्लिङ्ग है ।

( पञ्च भाण्डस्य )

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ३३

वरतनों के ५ नाम—( १ ) आवपन ( २ ) भाण्ड ( ३ ) पात्र ( ४ ) अमत्र ( ५ ) भाजन ॥३३॥

( त्रीणि दूर्वाः )

दर्विः कम्बिः खजाका च

करछुल के ३ नाम—( १ ) दर्वि ( २ ) कम्बि ( ३ ) खजाका ।

( द्वे दारुनिर्मितदूर्वाः )

स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।

काठ की बनी कलछुल के २ नाम—( १ ) तर्दूर् ( २ ) दारुहस्तक । ( १ ) पुं० स्त्री ( २ ) पुं० है ।

( त्रीणि शाकस्य )

अस्त्री शाकं हरितकं शिशुः

शाक के ३ नाम—( १ ) शाक ( २ ) हरितक  
( ३ ) शिग्र । इनमें ( १-२ ) नपुसक ( २रा )  
पु० और ( ३ ) पुल्लिङ्ग है ।

( त्रीणि शाकनालस्य )

अस्य तु नाडिका ॥३४॥

कलम्बश्च कडम्बश्च

शाक के डठल के ३ नाम—( १ ) नाडिका  
( २ ) कलम्ब ( ३ ) कडम्ब ॥३४॥

( द्वे उपस्करस्य )

वेसवार उपस्कर ।

शाग-भाजी आदि में डाले जानेवाले गरम  
मसाले के २ नाम—( १ ) वेसवार ( २ ) उपस्कर ।

( त्रीणि चुक्रस्य )

तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लम्

चूक ( अमचुर आदि ) के ३ नाम—( १ )  
तिन्तिडीक ( २ ) चुक्र ( ३ ) वृक्षाम्ल ।

( षट् मरीचस्य )

अथ वेल्लजम् ॥३५॥

मरीचं कोलक कृष्णमूपणं धर्मपत्तनम् ।

काली मिर्च के ६ नाम—( १ ) वेल्लज ( २ )  
मरीच ( ३ ) कोलक ( ४ ) कृष्ण ( ५ ) ऊषण  
( ६ ) धर्मपत्तन ॥३५॥

( चत्वारि जीरकस्य )

जीरको जरणोऽजाजी कणा

जीरे के ४ नाम—( १ ) जीरक ( २ ) जरण  
( ३ ) अजाजी ( ४ ) कणा । ( १-२ ) पु०, ( ३-४ ) स्त्री० ।

( षट् कृष्णजीरकस्य )

कृष्णं तु जीरके ॥३६॥

सुषवी कारवी पृथ्वी पृथु कालोपकुंचिका ।

काले जीरे के ६ नाम—( १ ) सुषवी ( २ )  
कारवी ( ३ ) पृथ्वी ( ४ ) पृथु ( ५ ) काला ( ६ )  
उपकुंचिका ॥३६॥

( द्वे आर्द्रकस्य )

आर्द्रकं शृङ्गवेर स्यात्

अदरक के २ नाम—( १ ) आर्द्रक ( २ ) शृङ्गवेर ।

( चत्वारि धान्याकस्य )

अथ च्छत्रा वितुन्नकम् ॥३७॥

कुस्तुम्बुरु च धान्याकम्

धान्ये के ४ नाम—( १ ) छत्रा ( २ ) वितुन्नक ( ३ )  
कुस्तुम्बुरु ( ४ ) धान्याक ( १ ) स्त्री ( २-४ ) नपु० ॥३७॥

( पंच शुण्ठ्याः )

अथ शुण्ठी महौषधम् ।

स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ३८

सोंठ के ५ नाम—( १ ) शुण्ठी ( २ ) महौषध  
( ३ ) विश्व ( ४ ) नागर ( ५ ) विश्वभेषज ।  
इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग ( २-५ ) नपुसक तथा  
केवल ( ३ ) स्त्रीलिङ्ग में भी है ॥ ३८ ॥

( सप्त सौवीरस्य )

आरनालकसौवीरकुलमाषाभिषुतानि च ।

अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ३९

काजी के ७ नाम—( १ ) आरनालक ( २ )  
सौवीर ( ३ ) कुलमाषाभिषुत ( ४ ) अवन्तिसोम  
( ५ ) धान्याम्ल ( ६ ) कुञ्जल ( ७ ) काञ्जिक ॥ ३९ ॥

( पंच बाह्लीकस्य )

सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिङ्गु रामठम् ।

हींग के ५ नाम—( १ ) सहस्रवेधि ( २ ) जतुक  
( ३ ) बाह्लीक ( ४ ) हिङ्गु ( ५ ) रामठ ।

( पंच हिङ्गुनः पत्रकस्य )

तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथु ४०

हिङ्गुवृक्ष की पत्ती के ५ नाम—( १ ) कारवी  
( २ ) पृथ्वी ( ३ ) वाष्पिका ( ४ ) कवरी ( ५ )  
पृथु ॥ ४० ॥

( पंच हरिद्रायाः )

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।

हलदी के ५ नाम—( १ ) निशाख्या ( २ )  
काञ्चनी ( ३ ) पीता ( ४ ) हरिद्रा ( ५ ) वरवर्णिनी ।

( द्वे सामुद्रलवणस्य )

सामुद्रं यत्तु लवणमस्तीव वशिरं च तत् ४१ ॥

सामुद्र लवण के २ नाम—( १ ) अस्तीव ( २ )  
वशिर ॥ ४१ ॥

( चत्वारि सैन्धवस्य )

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे

सैन्धा नमक के ४ नाम—(१) सैन्धव ( २ )

शीतशिव ( ३ ) माणिमन्थ ( ४ ) सिन्धुज ।

( द्वे शाम्भरलवणस्य )

रौमकं वसुकम्

सौभरनमक के २ नाम—(१) रौमक (२) वसुक ।

( द्वे कृत्रिमलवणस्य )

पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ॥४२॥

बनावटी ( खारी ) नमक के २ नाम—( १ )

पाक्य (२) विड ॥ ४२ ॥

( त्रीणि सौवर्चलस्य )

सौवर्चलेऽक्षरुचके

सौचल नमक के ३ नाम—( १ ) सौवर्चल

( २ ) अक्ष ( ३ ) अक्षरुचक । ये ( १-३ ) नपुंसक हैं ।

( एकं कृष्णसौवर्चलस्य )

तिलकं तत्र मेचके ।

सौचल काले नमक का नाम—( १ ) तिलक ।

( द्वे खण्डविकारस्य )

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारे

राव के २ नाम—(१) मत्स्यण्डी (२) फाणित ।

( द्वे सितायाः )

शर्करा सिता ॥४३॥

मिश्री के २ नाम—(१) शर्करा (२) सिता ॥४३॥

( द्वे कूर्चिकायाः )

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्यात्

खोये के २ नाम—कूर्चिका (२) क्षीरविकृति ।

( द्वे श्रीखण्डस्य )

<sup>१</sup>रसाला तु मार्जिता ।

१ अर्धाङ्कः सुचिरपर्युषितस्य दध्म

खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभस्य ।

सर्पिष्पल मधु पल मरिच द्विकर्षं

शुण्ठ्या पलाधर्मपि चार्धपल चतुष्पणाम् ॥

सूक्ष्मे पटे ललनया मृदु पाणिघृष्टा

कर्पूरधूलिसुरमीकृतपात्रसंस्था ।

एषा वृकोदरकृता सरसा रसाला

यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥

शिखरन के २ नाम—( १ ) रसाला ( २ ) मार्जिता ।

( द्वे तेमनस्य )

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं

कढ़ी के २ नाम—(१) तेमन ( २ ) निष्ठान ।

त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥

‘शूलाकृत’ से ( ४६ श्लोक के ) वासित शब्द पर्यन्त सब शब्द स्त्री-पुं-नपुंसक तीनों लिङ्ग हैं ॥४४॥

( त्रीणि शूलाकृतस्य )

शूलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्यम्

लोहे की शलाका में पिरोकर पकाये मास के

३ नाम—(१) शूलाकृत (२) भटित्र (३) शूल्य ।

( द्वे स्थालीपक्वमासस्य )

उख्यं तु पैठरम् ।

वटलोई में पकाये हुए मास के २ नाम—

( १ ) उख्य ( २ ) पैठर ।

( द्वे सिद्धस्य व्यञ्जनादेः )

प्रणीतमुपसम्पन्नम्

बनाकर तैयार की हुई रसदार रसोई के २

नाम—( १ ) प्रणीत ( २ ) उपसम्पन्न ।

( द्वे प्रयत्ननिष्पन्नस्य घृतपक्वादेः )

प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥४५॥

बढ़ी मेहनत के साथ घी में बनाये हुए पक्वान

के २ नाम—(१) प्रयस्त (२) सुसंस्कृत ॥ ४५ ॥

( द्वे मण्डदध्यादियुक्तास्य )

स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं

दही, माद आदि युक्त पनीहाली रसोई के २

नाम—(१) पिच्छिल ( २ ) विजिल ।

( द्वे शोधितस्यान्नस्य )

संमृष्टं शोधितं समे ।

बीन कर साफ किये हुए अन्न के २ नाम—

( १ ) संमृष्ट ( २ ) शोधित ।

( त्रीणि चिकणस्य )

चिकणं मसृणं स्निग्धं

चिकने के ३ नाम—( १ ) चिकण ( २ )

मसृण ( ३ ) स्निग्ध ।

( द्वे भावितस्यान्नस्य )

तुल्ये भावितवासिते ॥४६॥

छौंकी-वधारी हुई चीज के २ नाम—( १ )

भावित ( २ ) वासित ॥ ४६ ॥

( त्रीणि अर्धस्विन्नयवादेः )

आपक्वं पौलिरभ्यूषः

घी आदि में अधपकी (तली हुई) वस्तु के ३ नाम—(१) आपक (२) पौलि (३) अभ्यूष ।

( एकं लाजायाः )

लाजा पुंभूञ्चि चाक्षता ।

धान के लावे का नाम—( १ ) लाजा । यह नित्य पुल्लिङ्ग है और सर्वदा बहुवचन ही रहता है । अक्षत शब्द भी इसी तरह सर्वदा पुल्लिङ्ग और बहुवचन है ।

( द्वे पृथुकस्य )

पृथुकः स्याच्चिपिटकः

चिउड़े के २ नाम—(१) पृथुक (२) चिपिटक ।

( द्वे भृष्टयवस्य )

धाना भृष्टयवे स्त्रिय ॥४७॥

भूनी हुई बहुरी के २ नाम—(१) धाना (२) भृष्टयव ॥ ४७ ॥

( त्रीणि अपूपस्य )

पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्

पुए के ३ नाम—(१) पूष ( २ ) अपूप (३) पिष्टक ।

( द्वे दधियुक्तसक्तुनः )

करम्भो दधिसक्तव ।

दही से सने सत्त के २ नाम—(१) करम्भ (२) दधिसक्तु । (२) यह शब्द नित्य पुल्लिङ्ग और बहुवचन है ।

( षट् ओदनस्य )

भिस्सा स्त्री भक्तमन्थोऽन्न-

मोदनोऽस्त्री सदादिविः ॥४८॥

भात के ६ नाम—(१) भिस्सा (२) भक्त (३) अन्धस् (४) अन्न (५) ओदन (६) दीदिवि । इनमें

(१) स्त्री, (२-४) नपुं०, (५) पुं-नपुंसक, (६) पुं० है ॥४८॥

( द्वे दग्धान्नस्य )

भिस्सटा दग्धिका

आँच की तेजी से जले हुए अन्न के २ नाम—

(१) भिस्सटा (२) दग्धिका ।

( एकं सर्वरसाग्रिमद्रवस्य )

सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।

मॉड का नाम—(१) मण्ड । यह पुं०-नपुंसक लिङ्ग है ।

( त्रीणि भक्तसमुद्भवमण्डस्य )

मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥४९॥

भात से निकलनेवाले मॉड के ३ नाम—

(१) मासर (२) आचाम (३) निस्त्राव ॥४९॥

( पंच द्रवदोदनस्य )

यवागूरुष्णिक्का श्राणा विलेपी तरला च सा ।

पनिहा भात के ५ नाम—( १ ) यवागू (२)

उष्णिक्का (३) श्राणा (४) विलेपी (५) तरला ।

( एकं गोभवद्रव्यस्य )

गव्यं त्रिषु गवां सर्वम्

गौ से उत्पन्न होनेवाली वस्तु ( गोबर, मूत्र, दुग्ध, घी आदि ) का नाम—(१) गव्य । यह तीनों लिङ्ग हैं ।

( द्वे गोमयस्य )

गोविट् गोमयमस्त्रियाम् ॥५०॥

गोबर के २ नाम—(१) गोविट् (२) गोमय ।

इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग और ( २ ) पुं०-नपुंसक लिङ्ग है ॥५०॥

( द्वे तैलस्य )

१ “अक्षणाभ्यञ्जने तैलं

तैल के २ नाम—(१) अक्षण (२) अभ्यञ्जन ।

( द्वे कृसरान्नस्य )

कृसरस्तु तिलोदनः ॥”

खिचड़ा के २ नाम—( १ ) कृसर ( २ ) तिलोदन ।

( एकं शुष्कगोमयस्य )

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री

सूखे गोवर ( गोहरे या कंडे ) का नाम—  
( १ ) करीष । यह पुंलिङ्ग और नपुंसक है ।

( त्रीणि दुग्धस्य )

दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।

दूध के ३ नाम—( १ ) दुग्ध ( २ ) क्षीर ( ३ ) पयस् । ये ( १-३ ) नपुंसक हैं ।

( एकं दुग्धोद्धवद्रव्यस्य )

पयस्यमाज्यदध्यादि

दूध से तैयार होनेवाली वस्तु घी, दही आदि का नाम—( १ ) पयस्य । ( नपुं० )

( एक द्रवदध्न )

द्रप्स दधि घनेतरत् ॥५१॥

पतले दही का नाम—( १ ) द्रप्स ॥५१॥

( चत्वारि घृतस्य )

घृतमाज्यं हविः सर्पिः ।

घी के ४ नाम—( १ ) घृत ( २ ) आज्य ( ३ ) हविष् ( ४ ) सर्पिष् । ये ( १-४ ) नपुंसक हैं ।

( द्वे नवनीतस्य )

नवनीतं नवोद्धृतम् ।

मक्खन के २ नाम—( १ ) नवनीत ( २ ) नवोद्धृत ।

( एकं पूर्वदिनप्रासगोक्षीरघृतस्य )

तत्तु हैयङ्गवीनं यद्ध्यो गोदोहोद्धवं घृतम् ॥५२॥

एक दिन पहले के दूध से निकले घी का नाम—( १ ) हैयङ्गवीन ॥ ५२ ॥

( चत्वारि गोरसस्य )

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ।

गोरस ( मूठे ) के ४ नाम—( १ ) दण्डाहत ( २ ) कालशेय ( ३ ) अरिष्ट ( ४ ) गोरस ।

( दण्डाहतस्य भेदाः )

तक्र ह्युदश्विन्मथितं पादाम्बुधार्मास्तु निर्जलम् ५३

जिस मूठे में एक चौथाई पानी मिलाया जाय, उसका नाम—( १ ) तक्र ।

जिस मूठे में दो चौथाई यानी आधे-आध पानी मिलाया जाय, उसका नाम—( १ ) उदश्वित् ।

जिसमें पानी बिल्कुल न मिलाकर केवल मथ भर दिया जाय, उसका नाम—( १ ) मथित ॥५३॥

( एकं दध्नो मण्डस्य )

मण्डं दधिभवं मस्तु

दही से निकलनेवाले पानी ( तोड़ ) का नाम—( १ ) मस्तु । यह नपुंसक लिङ्ग है ।

( एकं नवप्रसूताया गोदुग्धस्य )

पीयूषोऽभिनवं पयः ।

नई व्याई हुई गौ के सात दिन तक के दूध ( पेजेंस ) का नाम—( १ ) पीयूष ।

( त्रीणि बुभुक्षायाः )

अशना या बुभुक्षा क्षुद्

भूख के ३ नाम—( १ ) अशना ( २ ) बुभुक्षा ( ३ ) क्षुद् ।

( द्वे ग्रासस्य )

ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥५४॥

ग्रास ( कौर ) के २ नाम—( १ ) ग्रास ( २ ) कवल । ये दोनों पुंलिङ्ग हैं ॥ ५४ ॥

( द्वे सहपानस्य )

सपीति स्त्री तुल्यपानम्

साथ-साथ पी जानेवाली वस्तु के २ नाम—( १ ) सपीति ( २ ) तुल्यपान । इनमें ( १ ) स्त्री-लिङ्ग और ( २ ) नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( द्वे सहभोजस्य )

सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।

एक साथ भोजन के २ नाम—( १ ) सग्धि ( २ ) सहभोजन । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग और ( २ ) नपुंसकलिङ्ग है ।

( चत्वारि पिपासायाः )

उदन्या तु पिपासा तृट् तर्पः

प्यास के ४ नाम—( १ ) उदन्या ( २ ) पिपासा ( ३ ) तृट् ( ४ ) तर्प ।



( सप्त आहारस्य )

जग्धिस्तु भोजनम् ॥५५॥

जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।

भोजन के ७ नाम—(१) जग्धि (२) भोजन  
(३) जेमन (४) लेह (५) आहार (६) निघास (७)  
न्याद । इनमें (१) स्त्री, (२-३) नपुं, (४-७) पुं  
हैं ॥ ५५ ॥

( त्रीणि तृष्टेः )

सौहित्यं तर्पणं तृप्ति

तृप्ति के ३ नाम—(१) सौहित्य (२) तर्पण  
(३) तृप्ति ।

( एक मुक्तोत्सृष्टस्य )

फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥५६॥

भोजन करके छोड़ी हुई वस्तु, जूठन का  
नाम—(१) फेला ॥ ५६ ॥

( षट् ईप्सितस्य )

कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।

चाह, इच्छा के ६ नाम—(१) काम (२)  
प्रकाम (३) पर्याप्त (४) निकाम (५) इष्ट (६)  
यथेप्सित ।

( षट् आभीरस्य )

गापगोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ५७

व्यापारी ग्वाले के ६ नाम—(१) गोप (२)  
गोपाल (३) गोसंख्य (४) गोदुह (५) आभीर  
(६) वल्लव ॥ ५७ ॥

( एकं गोमहिष्यादिकस्य )

गोमहिष्यादिक पादबन्धनम्

गाय-भैस आदि चौपायों का नाम—(१)  
पादबन्धन ।

( द्वे गोस्वामिनोः )

द्वौ गवीश्वरे ।

गोमान् गोमी

गौ के मालिक के २ नाम—(१) गोमत  
(२) गोमिन् ।

( द्वे गोः समूहस्य )

गोकुलं गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥५८॥

गौओं के झुण्ड के २ नाम—(१) गोकुल  
(२) गोधन ॥५८॥

( यत्र पुरा गाव आशितास्तत्स्थानस्यैकम् )

त्रिष्वशित गवीनं तद्गावो यत्राशिताः पुरा ।

जहाँ कि पहले कभी गया खिलायी गयी हो,  
उस स्थान का नाम—(१) आशितङ्गवीन ।  
यह पु स्त्री-नपुंसक तीनों लिङ्ग है ।

( नव वृषभस्य )

उत्ता भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृष ॥५९॥

अनङ्गवान् सौरमेयो गौः

बैल के ९ नाम—(१) उत्तन् (२) भद्र  
(३) बलीवर्द (४) ऋषभ (५) वृषभ (६)  
वृष (७) अनङ्गान् (८) सौरमेय (९) गो ॥५९॥

( एकं वृषभसमूहस्य )

उदणं संहतिरौक्षकम् ।

बैलों के झुण्ड का नाम—(१) औक्षक ।

( द्वे गवां समुदायस्य )

गव्या गोत्रा गवाम्

गो के झुण्ड के २ नाम—(१) गव्या  
(२) गोत्रा ।

( एक वत्सस्य धेनोश्च समूहस्य )

वत्सधेन्वोर्वात्सक-धैनुके ॥६०॥

वृद्धों के झुण्ड का नाम—(१) वात्सक ।

धेनु के समुदाय का नाम—(१) धैनुक ॥६०॥

( एक महावृषस्य )

वृषो महान् महोक्षः स्यात्

बड़े बैल का नाम—(१) महोक्ष ।

( द्वे वृद्धवृषभस्य )

वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।

बूढ़े बैल के २ नाम—(१) वृद्धोक्ष (२)  
जरद्गव ।

( एकं प्राष्ठबलीवर्दभावस्य )

उत्पन्न उत्ता जातोक्षः

युवा बड़ड़े का नाम—(१) जातोक्ष ।

( एकं सद्योजातवत्सस्य )

सद्योजातस्तु तर्णकः ॥६१॥

तुरन्त के उत्पन्न बछड़े का नाम—( १ )

तर्णक ॥६१॥

( द्वे वत्सस्य )

शकृत्करिस्तु वत्सः स्यात्

बछड़े के २ नाम—( १ ) शकृत्करि ( २ ) वत्स ।

( द्वे स्पष्टतारुण्यस्य वत्सस्य )

दम्यवत्सतरौ समौ ।

जिसमें तरुणता भलकने लग गयी है, उस

बछड़े के २ नाम—( १ ) दम्य ( २ ) वत्सतर ।

( एकं षण्डतायोग्यस्य वृषभस्य )

आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः

वधिया करने लायक बैल का नाम—( १ )

आर्षभ्य ।

( त्रीणि स्वेच्छाचारिणो वृषभस्य )

षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥६२॥

छुटे हुए सोंढ़ के ३ नाम—( १ ) षण्ड

( २ ) गोपति ( ३ ) इट्चर ॥६२॥

( एकं वृषभस्कन्धदेशस्य )

स्कन्धदेशं त्वस्य वहः

बैल के कंधे का १ नाम—( १ ) वह । ( पु ० )

( द्वे कंठे लम्बमानचर्मणः )

सास्ना तु गलफम्बलः ।

गाय या बैल के गले में लटकनेवाले चमड़े

के २ नाम—( १ ) सास्ना ( २ ) गलफम्बल ।

( द्वे स्यूतनासिकस्य )

स्यान्नस्तिस्तस्तु नस्योत

नाथे हुए बैल के २ नाम—( १ ) नस्ति

( २ ) नस्योत ।

( द्वे दमनार्थं युग्येन सह स्कन्धे बद्धकाष्ठस्य )

प्रष्टवाङ् युगपार्श्वगः ॥६३॥

बैल को साधने के लिए लगे हुए जुए के २

नाम—( १ ) प्रष्टवाङ् ( २ ) युगपार्श्वग ॥६३॥

( वृषभभेदाः )

युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।

जुआ सम्हालनेवाले बैल का नाम—( १ )

युग्य ।

नये बछड़ों को ठीक करने के लिए उनके कन्धे पर एक प्रकार का काष्ठ लगाया जाता है, जिसका नाम है प्रासङ्ग्य । वह प्रासङ्ग्य ढोनेवाले बैल का नाम—( १ ) प्रासङ्ग्य ।

शकट ( बैलगाड़ी ) खींचनेवाले बैल का नाम—( १ ) शाकट ।

( खनतीत्याद्यर्थे भेदः )

खनति तेन तद्वोढाऽऽस्येदं हालिकसैरिकौ ६४

हल में जुतकर खेत जोतनेवाले बैल का नाम—( १ ) हालिक ।

हल अथवा सीर को ढोनेवाले का नाम—( १ ) हालिक अथवा सैरिक ॥६४॥

( पंच धुरन्धरवृषभस्य )

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधरा ।

बोभा ढोनेवाले बैल के ५ नाम—( १ )

धूर्वह ( २ ) धुर्य ( ३ ) धौरेय ( ४ ) धुरीण ( ५ ) सधुरंधर ।

( एकं धूर्वहस्य त्रीणि )

उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥६५॥

केवल एक बोभा ढोनेवाले बैल के ३ नाम—( १ ) एकधुरीण ( २ ) एकधुर ( ३ ) एकधुरावह ॥ ६५ ॥

( द्वे सर्वधुरावहवृषभस्य )

स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।

सब प्रकार के बोभा ढोनेवाले बैल के २ नाम—( १ ) सर्वधुरीण ( २ ) सर्वधुरावह ।

( नव गोः )

माहेयी सौरभेयी गौरुक्ता माता च शृङ्गिणी ६६  
अर्जुन्यन्त्या रोहिणी स्यात्गौ के ९ नाम—( १ ) माहेयी ( २ ) सौर-  
मेयी ( ३ ) गौ ( ४ ) उक्ता ( ५ ) माता ( ६ )

शृङ्गिणी ( ७ ) अर्जुनी ( ८ ) अघ्न्या ( ९ )  
रोहिणी ॥ ६६ ॥

( एकं उत्तमाया गोः )

उत्तमा गोषु नैचिकी ।

उत्तमा गौका नाम—( १ ) नैचिकी ।

( गोर्भेदाः )

वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शवरीधवलादयः ॥ ६७ ॥

रग के भेद से 'शवरी' 'धवला' आदि गौओं के अनेक नाम होते हैं ।

चितकवरी गाय का नाम—( १ ) शवरी ।

सफेद गाय का नाम—( १ ) धवला ॥ ६७ ॥

( द्वे द्विवर्षाया गोः )

द्विहायनी द्विवर्षा गौः

दो वर्ष की गाय के २ नाम—( १ ) द्विहायनी ( २ ) द्विवर्षा ।

( एकं एकवर्षाया गोः )

एकाब्दा एकहायनी ।

एक वर्ष की गौ के २ नाम—( १ ) एकाब्दा ( २ ) एकहायनी ।

( द्वे चतुर्वर्षाया गोः )

चतुरब्दा चतुर्हायणी

चार वर्ष की गौ के २ नाम—( १ ) चतुरब्दा ( २ ) चतुर्हायणी ।

( द्वे त्रिवर्षायाः )

एवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

तीन वर्ष की गौ के २ नाम—( १ ) त्र्यब्दा ( २ ) त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

( द्वे वंध्यया गोः )

वशा वन्ध्या

बॉझ गौ के २ नाम—( १ ) वशा ( २ ) वध्या ।

( द्वे स्रवद्गर्भायाः )

श्रवतोका तु स्रवद्गर्भा

जिसका गर्भ गिर गया हो, उस गौ के २ नाम—( १ ) श्रवतोका ( २ ) स्रवद्गर्भा ।

( एकं वृषभेणाक्रान्तायाः )

अथ सन्धिनी ।

आक्रान्ता वृषभेण

( एकं वृषभसंसर्गाद्गर्भोपघातिन्याः )

अथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥

सौंड के संसर्ग से गर्भ गिरा देनेवाली गौ का नाम—( १ ) वेहत् ॥ ६९ ॥

( एकं गर्भग्रहणप्राप्तकालायाः )

काल्योपसर्या प्रजने

बरधाने योग्य गाय का नाम—( १ ) काल्योपसर्या ।

( बालगर्भिण्या गोरेकम् )

प्रष्टौही बालगर्भिणी ।

बैल के साथ लगाई हुई गौ का नाम—( १ ) सन्धिनी ।

वचपन में ही गर्भिणी होनेवाली गाय का १ नाम—( १ ) प्रष्टौही ।

( द्वे अक्रोपनायाः )

स्यादचण्डी तु सुकरा

सीधी गाय के २ नाम—( १ ) अचण्डी ( २ ) सुकरा ।

( द्वे बहुवारं प्रसूतायाः )

बहुसूतः परेष्टुका ॥ ७० ॥

बहुत बार व्यायी हुई गाय के २ नाम—( १ ) बहुसूति ( २ ) परेष्टुका ॥ ७० ॥

( द्वे चिरप्रसूतायाः )

चिरप्रसूता वष्कयिणी

बहुत दिन की व्यायी हुई गाय के २ नाम—( १ ) चिरप्रसूता ( २ ) वष्कयिणी ।

( द्वे नवसूतिकायाः )

धेनुः स्यान्नवसूतिका ।

नयी व्यायी हुई गाय के २ नाम—( १ ) धेनु ( २ ) नवसूतिका ।

( सुखसन्दोद्याया गोर्द्वे )

सुवता सुखसन्दोद्या

बिना अङ्गुली के जो गौं दुही जा सकती हो,  
उसके २ नाम—(१) सुव्रता (२) सुखसन्दोहा ।

( द्वे स्थूलस्तन्याः )

पीनोन्नी पीवरस्तनी ॥७१॥

मोटे-मोटे स्तनवाली गाय के २ नाम—(१)  
पीनोन्नी (२) पीवरस्तनी ॥७१॥

( द्वे द्रोणपरिमितदुग्धदायिन्याः )

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा

द्रोण भर दूध देनेवाली गाय के २ नाम—  
( १ ) द्रोणदुग्धा ( २ ) द्रोणक्षीरा । १ द्रोण का  
परिमाण १२ सेर माना गया है ।

( एकं बन्धके स्थिताया । )

धेनुष्या बन्धके स्थिता ।

जो गाय किसी महाजन के यहाँ इस शर्त पर  
रखी जाय कि 'जब तक आपका रुपया न चुक जाय  
तब तक इस गौ का दूध आप अपने काम में लें ।'  
उस गाय का १ नाम—(१) धेनुष्या ।

( एक या प्रतिवर्षं प्रसूयते तस्याः )

समासमीना सा यव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥७२॥

हर साल व्यानेवाली गाय का नाम—( १ )  
समासमीना ॥७२॥

( द्वे गोस्तनस्य )

ऊधस्तु क्लीबमापीनम्

गौ के थन के २ नाम—( १ ) ऊधस् ( २ )  
आपीन । ये दोनों नपुसक लिङ्ग हैं ।

( द्वे बन्धनकीलकस्य )

समौ शिवककीलकौ ।

जिसमें गाय-बैल आदि पशु बाँधे जाते हैं,  
उस खूँटे के २ नाम—(१) शिवक (२) कीलक ।

( द्वे बन्धनरज्जोः )

न पुंसि दाम सन्दानं

पशु को बाँधने की रस्ती के २ नाम—(१)  
दाम (२) सन्दान । ये दोनों नपुसक लिङ्ग हैं ।

( द्वे पशुबन्धनरज्जोः )

पशुरज्जुस्तु दामनी ॥७३॥

जिस रस्ती में एक साथ बहुत से पशु बाँधे  
जाते हैं, उसके २ नाम—( १ ) पशुरज्जु ( २ )  
दामनी ॥७३॥

( मन्थनदण्डस्य पञ्च )

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।

मन्थनदण्ड के ५ नाम—( १ ) वैशाख (२)  
मन्थ (३) मन्थान (४) मन्था (५) मन्थदण्डक ।

( द्वे मन्थनदण्डस्तम्भस्य )

कुठरो दण्डविष्कम्भ

जिसमें मन्थनदण्ड बंधता है, उस स्तम्भ के  
२ नाम—(१) कुठर (२) दण्डविष्कम्भ ।

( मध्यमानदधिपात्रस्य द्वे )

मन्थनी गर्गरी समे ॥७४॥

जिसमें दही मया जाता है, उस पात्र के  
२ नाम—(१) मन्थनी (२) गर्गरी ॥७४॥

( चत्वारि उष्ट्रस्य )

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः

ऊँट के ४ नाम—( १ ) उष्ट्र ( २ ) क्रमेलक  
( ३ ) मय ( ४ ) महाङ्ग ।

( एकं षट्शिशोः )

करभः शिशु ।

ऊट के बच्चे का १ नाम—( १ ) करभ ।

( एकं पादबन्धनयुक्तकरभस्य )

करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ७५

जिस उष्ट्रशावक के पैर बाँधे जाते हों,  
उसका नाम—( १ ) शृङ्खलक ॥७५॥

( द्वे भजायाः )

अजा छागी

बकरी के २ नाम—( १ ) अजा ( २ )  
छागी ।

( पञ्च अजस्य )

शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे ।

बकरे के ५ नाम—( १ ) शुभ ( २ ) छाग  
( ३ ) वस्त ( ४ ) छगलक ( ५ ) अज ।

( सप्त मेपस्य )

मेढोरभोरणोर्णायुर्मेषवृष्णय एडके ॥७६॥

मेढ्रे के ७ नाम—( १ ) मेढू ( २ ) उरभ्र  
( ३ ) उरण ( ४ ) ऊर्णायु ( ५ ) मेष ( ६ )  
वृष्णि ( ७ ) एडक ॥७६॥

( एकं मेपोष्ट्राजसमुदायस्य )

उष्ट्रोष्ट्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।

ऊँट के भुराड का नाम—औष्ट्रक ।

मेढों के भुराड का नाम—( १ ) ओरभ्र ।

वकरो के भुराड का नाम—( १ ) आजक ।

( पञ्च गर्दभस्य )

चक्रीवन्तस्तु चालेया रासभा गर्दभा. खराः७७

गधे के ५ नाम—( १ ) चक्रीवान् ( २ )  
चालेय ( ३ ) रासभ ( ४ ) गर्दभ ( ५ ) खर ॥७७॥

( भष्टौ वणिजः )

वैदेहकः सार्धवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।

परयाजीवो ह्यापणिक. क्रयविक्रयिकश्च स.७८

‘साहूकार ( वनिये ) के ८ नाम—( १ )  
वैदेहक ( ३ ) नैगम ( ४ ) वाणिज ( ५ ) वणिक्  
( ६ ) परयाजीव ( ७ ) आपणिक ( ८ ) क्रय-  
विक्रयिक ॥ ७८ ॥

( द्वे विक्रेतुः )

विक्रेता स्याद्विक्रयिक.

अन्न-वस्त्रादि वस्तुएँ बेचकर जीविका करने  
वाले के २ नाम—( १ ) विक्रेता ( २ ) विक्रयिक ।

( द्वे क्रेतुः )

क्रायकक्रयिकौ समौ ।

खरीदार के २ नाम—( १ ) क्रायक ( २ )  
क्रयिक ।

( द्वे वाणिज्यस्य )

वाणिज्यं तु वणिज्या स्यात्

१ निगम—‘बहुपकारो देवरस चैव नेगमरस च—  
दिनयपिटक पहला खण्ड । निगम का अर्थ है ‘कारपोरेशन  
प्राचीनकाल में सार्धवाह और कुलिकों के निगम होते थे ।

व्यापार के २ नाम—( १ ) वाणिज्य ( २ )  
वणिज्या ।

( त्रीणि विक्रेयवस्तूनां मूल्यस्य )

मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥७९॥

किसी चीज के दाम के ३ नाम—( १ )  
मूल्य ( २ ) वस्न ( ३ ) अवक्रय ।

( त्रीणि मूलधनस्य )

नीवी परिपणो मूलधनं

पूँजी ( मूलधन ) के ३ नाम—( १ ) नीवी  
( २ ) परिपण ( ३ ) मूलधन ।

( एकं लाभस्य )

लाभोऽधिकं फलम् ।

मुनाफे का नाम—( १ ) लाभ ।

( चत्वारि परिवर्तनस्य )

परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥८०॥

वदले, लेनदेन के ४ नाम—( १ ) परिदान  
( २ ) परीवर्त ( ३ ) नैमेय ( ४ ) निमय ॥८०॥

( द्वे न्यासस्य )

पुमानुपधिर्न्यासः

धरोहर के २ नाम—( १ ) उपधि ( २ ) न्यास ।  
ये दोनों ही पुँल्लिङ्ग हैं ।

( एकं न्यस्तवस्तुनोऽपणस्य )

प्रतिदानं तदर्पणम् ।

धरोहर के लौटाने का नाम—( १ ) प्रतिदान ।

( एकं भापणे प्रसारितवस्तुनः )

क्रये प्रसारितं क्रयम्

बाजार में बेचने के लिये फैलायी वस्तु का  
नाम—( १ ) क्रय ।

( एकं क्रेतव्यवस्तुनः )

क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ॥८१॥

खरीदी जानेवाली चीज का नाम—( १ ) क्रेय ॥८१॥

( त्रीणि विक्रेयवस्तुनः )

विक्रयं पणितव्यं च परयं क्रय्यादयस्त्रियु ।

विकाऊ चीज के ३ नाम—( १ ) विन्नेय ( २ )  
पणितव्य ( ३ ) परय । उपर्युक्त ‘क्रय्य’ शब्द

२ वस्तुस्मिन् वस्तुप्राप्तिरिति वरनः ।

से लेकर 'पर्य' शब्द तक के सब शब्द तीनों लिङ्ग हैं ।

( त्रीणि मथैतत्क्रेतव्यमित्यादिरूपेण सत्यकरणस्य )  
 क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः पुमान् ८२

बयाना देने के ३ नाम—(१) सत्यापन (२) सत्यङ्कार ( ३ ) सत्याकृति । इनमें (१ला) नपुंसक (२रा) पुल्लिङ्ग तथा (३रा) स्त्रीलिङ्ग है ॥८२॥

( द्वे विक्रयस्य )

विपणो विक्रयः

विक्री के २ नाम—(१) विपण । (२) विक्रय ।

संख्या. संख्येये ह्यादश त्रिषु ।

एक से लेकर अष्टारह तक की संख्या संख्येय ( गिनी जानेवाली ) वस्तु में ही रहती है और वह स्त्री-पुं-नपुंसक तीनों लिङ्ग है ।

विंशत्याद्या सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ८३

विंशति आदि संख्यायें सदा एकवचन ही रहती हैं । संख्या और संख्येय ( गिनी जानेवाली वस्तु में ) रहती हैं ॥८३॥

संख्यार्थे द्विवचनत्वे स्तः

विंशति आदि शब्द जब संख्या के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, तब उनके द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं । जैसे—'द्वे विंशती' 'तिस्रो विंशतय' आदि ।

तासु चानवतेः स्त्रियः ।

'विंशति' से लेकर 'नवति' तक की सभी संख्यायें स्त्रीलिङ्ग हैं ।

पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमादशगुणोत्तरम् ॥८४॥

दश की संख्या से लेकर क्रमशः दसगुना करते जाने पर सौ, हजार आदि होते हैं । जैसे—दस पङ्क्ति (दस संख्या) के सौ, दस सौ का हजार आदि ॥८४॥

( त्रीणि मानार्थस्य )

यौतव द्रव्यं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ।

तौल या नाप के ३ नाम—(१) यौतव (२) द्रव्य (३) पाय्य ।

( मानस्य भेदाः )

मानं तुलांगुलिप्रस्थैः

वह मान तीन प्रकार का होता है । जैसे—(१) तुलामान—अर्थात् तौलने से जिसका मान किया जाय । (२) अंगुलिमान—गज आदि से नापना और प्रस्थमान अर्थात् किसी निर्दिष्ट वर्तन से नापना ।

( एक मापकस्य )

गुञ्जा. पञ्चाद्यमापकः ॥८५॥

पाँच घुँघचियों का १ मासा=(१) आयमापक ॥८५॥

( द्वे कर्षस्य )

ते षोडशाक्षाः कर्षोऽस्त्री

सोलह मासा का १ अक्ष, उसके २ नाम—(१) अक्ष ( २ ) कर्ष । ये दोनों ही पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( एक कर्षचतुष्टयस्य )

पलं कर्षचतुष्टयम् ।

उस चार अक्ष या कर्ष का नाम—( १ ) पल ।

( द्वे कर्षैकस्य )

सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे

कर्ष भर सुवर्ण के २-नाम—( १ ) सुवर्ण ( २ ) विस्त ।

( एकं सुवर्णपलस्य )

कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥८६॥

एक पल अर्थात् चार कर्ष सुवर्ण का नाम—( १ ) कुरुविस्त ॥ ८६ ॥

१ एकदशशतसहस्राद्युत्तरतलचप्रयुतकोट्य क्रमशः । अर्बुद-मञ्ज खर्वनिखर्व महापञ्चशङ्कवस्तस्मात् ॥ जलधिश्चान्त्य मध्य परार्धमिति दशगुणोत्तराः सङ्गाः । संख्याया स्थानाना व्यवहारार्थं कृता पूर्वैरिति ।

२ ऊर्ध्वमान किलोमान परिमाण तु सर्वतः । आया-मस्तु प्रमाण स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वतः ॥ मानापेक्षितमा-चार्या भेषजानां प्रकल्पनम् । मेनिरे यत्ततो मानमुच्यते पारिमाणिकम् । वैद्यकराव्दसिधुः ॥८१५॥

( एक पलानां शतस्य )

तुला स्त्रियां पलशतम्

सौ पल का नाम—( १ ) तुला । यह स्त्रीलिङ्ग है ।

( एकं तुलाया विंशते )

भारः स्याद्विंशतिस्तुला ।

बीस तुला का नाम—( १ ) भार ।

( एकं दशभारस्य )

आचितो दश भाराः स्युः

दस भार का नाम—( १ ) आचित ।

( एकं शकटेन वोढुं शक्यस्य भारस्य )

शकटो भार आचितः ॥८७॥

वैलगाड़ी से ढोये जानेवाले भार का भी नाम—  
( १ ) आचित ॥८७॥

( द्वे कार्पाणस्य )

कार्पाणः कार्षिकः स्यात्

कर्प भर चाँदी के बने सिक्के ( रुपये ) के  
२ नाम—( १ ) कार्पाण ( २ ) कार्षिक ।

( एक ताम्रिककार्पाणस्य )

कार्षिके ताम्रिके पण ।

कर्प भर तामे के बने सिक्के ( पैसे ) का  
नाम—( १ ) पण ।

( आढकद्रोणादीनां भेदाः )

अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारीवाहो निकुञ्चक ८८

कुडघ प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

ये आढक, द्रोण आदि शब्द परिमाणवाचक  
हैं और इनके भिन्न-भिन्न अर्थ हैं । जैसे चार सेर का  
१ आढक । आठ आढक का १ द्रोण । तीन द्रोण  
की १ खारी । आठ द्रोण का १ वाह । सुठी भर  
का १ निकुञ्च । पाव भर का १ कुडघ । एक सेर  
का १ प्रस्थ ॥ ८८ ॥

( एक चतुर्थांशस्य )

पादस्तुरीयो भागः स्यात्

चतुर्थांश ( जेसे रुपए का चौथा हिस्सा  
चवथी ) का नाम—( १ ) पाद ।

( त्रीणि अंशस्य )

अंशभागौ तु वण्टके ॥८९॥

वॉट के ३ नाम—( १ ) अंश ( २ ) भाग  
( ३ ) वण्टक ॥८९॥

( त्रयोदश धनस्य )

द्रव्यं वित्त स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।  
हिरण्यं द्रविणं युन्नमर्थरैविभवा अपि ॥९०॥धन के १३ नाम—( १ ) द्रव्य ( २ ) वित्त  
( ३ ) स्वापतेय ( ४ ) रिक्थ ( ५ ) ऋक्थ ( ६ )  
धन ( ७ ) वसु ( ८ ) हिरण्य ( ९ ) द्रविण ( १० )  
युन्न ( ११ ) अर्थ ( १२ ) रै ( १३ ) विभव ॥९०॥

( द्वे घटिताघटितयोर्हेमरूप्यस्य )

स्यात्कोषश्च हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृते ।

गढ़कर आभूषण बनाये हुए या बिना गढ़े  
हुए सोने और चाँदी के २ नाम—( १ ) हिरण्य  
( २ ) कोष ।

( एक हेमरूप्याभ्यामन्यत्ताम्रादिधातोः )

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं

सोने चाँदी के अतिरिक्त (ताँबा आदि) अन्य  
धातुओं का नाम—( १ ) कुप्य ।

( एक कुप्याकुप्यस्य )

रूप्यं तद्द्वयमाहतम् ॥९१॥

ताँबा और रूपा के मेल का नाम—( १ )  
आहत ॥९१॥

( चत्वारि मरकतमणेः )

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।

मरकत मणि ( पन्ना ) के ४ नाम—( १ )  
गारुत्मत ( २ ) मरकत ( ३ ) अश्मगर्भ ( ४ )  
हरिन्मणि ।

( त्रीणि पद्मरागमणेः )

शोणरत्न लोहितकं पद्मरागः

पद्मरागमणि ( माणिक्य ) के ३ नाम—( १ )  
शोणरत्न ( २ ) लोहितक ( ३ ) पद्मराग ।

१ कहा गया है कि

‘निहले तु नवेदत्त पद्मरागमनुत्तमम् ।’

( द्वे मौक्तिकस्य )

अथ मौक्तिकम् ॥६२॥

मुक्ता

मोती के २ नाम—( १ ) मौक्तिक ( २ )

मुक्ता ॥६२॥

( द्वे प्रवालस्य )

अथ विद्रुमः प्रवालं पुनपुंसकम् ।

मूंगे के २ नाम—( १ ) विद्रुम ( २ ) प्रवाल ।

ये दोनों क्रमशः पुल्लिङ्ग और नपुंसक हैं ।

( द्वे अश्मजातेर्मुक्तादिमणे )

रत्न मणिर्ययोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ६३

मरकत आदि अश्मजाति तथा मुक्तादि मणियों के २ नाम—( १ ) रत्न ( २ ) मणि ॥६३॥

( एकोनविंशतिः सुवर्णस्य )

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।

तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गे यं भर्मं कर्तुरम् ॥६४॥

चामीकर जातरूपं महारजतकाञ्चने ।

रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदाऽस्त्रियाम् ६५

२ सुवर्ण के १६ नाम—( १ ) स्वर्ण ( २ )

सुवर्ण ( ३ ) कनक ( ४ ) हिरण्य ( ५ ) हेम

( ६ ) हाटक ( ७ ) तपनीय ( ८ ) शातकुम्भ

( ९ ) गाङ्गेय ( १० ) भर्म ( ११ ) कर्तुर ( १२ ) चामी-

कर ( १३ ) जातरूप ( १४ ) महारजत ( १५ ) काञ्चन

( १६ ) रुक्म ( १७ ) कार्तस्वर ( १८ ) जाम्बूनद ( १९ )

अष्टापद । ये नपुंसक हैं और केवल १६व. पुन-

पुसकलिङ्ग हैं ॥६४॥६५॥

( एकं भलङ्कारसुवर्णस्य )

अलङ्कारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यद ।

२ स्वर्णोपत्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि—

पुरा निजाश्रमस्थानां सप्तर्षीणां जितात्मनाम् ।

मराचिरङ्गिरा अत्रि पुलस्त्य पुलहः क्रतु ॥

वसिष्ठश्चेति सप्तैते कीर्त्तिता परमर्षयः ।

परन्तोर्विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवना ॥

कन्दर्पादपविध्वस्तचेतसो जातवेदसः ।

पतित यद्वराष्ट्रे रेतस्तद्धेमतामगात् ॥

कुत्रिमधादि भवति तद्रसेन्द्रस्य वेधतः ।

सोने के गहने का नाम—( १ ) शृङ्गीकनक ।

( पञ्च रजतस्य )

दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥६६॥

चौदी के ५ नाम—( १ ) दुर्वर्ण ( २ )

रजत ( ३ ) रूप्य ( ४ ) खर्जूर ( ५ ) श्वेत ॥६६॥

( द्वे पित्तलस्य )

रीतं स्त्रियामारकूटो न स्त्रियाम्

पीतल के २ नाम—( १ ) रीति ( २ )

आरकूट । इनमें ( १ ) स्त्रीलिङ्ग और ( २ )

पुल्लिङ्ग है ।

( षट् ताम्रस्य )

अथ ताम्रकम् ।

शुल्बं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोदुम्बराणि च ६७

तामे के ६ नाम—( १ ) ताम्र ( २ ) शुल्ब

( ३ ) द्व्यष्ट ( ४ ) म्लेच्छमुख ( ५ ) वरिष्ठ ( ६ )

उदुम्बर ॥६७॥

( सप्त लोहस्य )

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।

अश्मसारः

लोहे के ७ नाम—( १ ) लोह ( २ ) शस्त्र

( ३ ) तीक्ष्ण ( ४ ) पिण्ड ( ५ ) कालायस ( ६ )

अयस् ( ७ ) अश्मसार । ये सभी नाम पुल्लिङ्ग

तथा नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( द्वे लोहमलस्य )

अथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥६८॥

लोह के मुर्चा, जंग के २ नाम—( १ )

'मण्डूर ( २ ) सिंहाण ॥६८॥

( एकं धातुमात्रस्य )

सर्वं च तैजस लोहं

सर्व धातुओं का १ नाम—( १ ) लोह ।

( एकं लोहफालस्य )

विकारस्त्वयसः कुशी ।

लोह के फाल का नाम—( १ ) कुशी ।

यह स्त्रीलिङ्ग है ।



( द्वे काचस्य )

काचः सारः

शीशे (काच) के २ नाम—( १ ) काच  
( २ ) सार ।

( चत्वारि पारदस्य )

अथ चपलो रसः सूतश्च पारदे ॥६६॥

पारे के ४ नाम—( १ ) चपल ( २ ) रस  
( ३ ) सूत ( ४ ) पारद ॥६६॥

( एक महिषशृंगस्य )

गवलं माहिषं शृङ्गं

भैंसे की सींग का नाम—( १ ) गवल ।

( त्रीणि अभ्रकस्य )

अभ्रकं गिरिजामले ।

अवरल के ३ नाम—( १ ) अभ्रक ( २ )  
गिरिज ( ३ ) अमल ।

( चत्वारि स्रोतोऽञ्जनस्य )

स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने १००

सुरमे के ४ नाम—( १ ) स्रोतोञ्जन ( २ )  
सौवीर ( ३ ) कापोताञ्जन ( ४ ) यामुन ॥१००॥

( चत्वारि तुत्थाञ्जनस्य )

तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीव वितुन्नकमयूरके ।

तूतिया ( नीला योया ) के ४ नाम—( १ )  
तुत्थाञ्जन ( २ ) शिखिग्रीव ( ३ ) वितुन्नक ( ४ )  
मयूरक ।

( तुत्थाञ्जनस्य भेदा )

कर्परी दार्विकाकाथोद्भवं तुत्थं

मोचरस का नाम—( १ ) कर्परी ।

दारुहरदी के वने हुए काथ में समभाग बकरी  
के दूध से संस्कार किये हुए तूतिया का नाम—( २ )  
दार्विकाकाथोद्भवं ।

रसाञ्जन का नाम—( ३ ) तुत्थ ।

( त्रीणि संस्कृततुत्थस्य )

रसाञ्जनम् ॥१०१॥

रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं

रशौत के ३ नाम—( १ ) रसाञ्जन ( २ )

रसगर्भ ( ३ ) तार्क्ष्यशैल ॥१०१॥

( त्रीणि गन्धाश्मनः )

गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।

सौगन्धिकश्च

गन्धिक के ३ नाम—( १ ) गन्धाश्मन् ( २ )  
गन्धिक ( ३ ) सौगन्धिक ।

( त्रीणि तुत्थविशेषस्य )

चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥१०२॥

काले सुरमे के ३ नाम—( १ ) चक्षुष्या  
( २ ) कुलाली ( ३ ) कुलत्थिका ॥१०२॥

( चत्वारि सन्तसपित्तलादुत्पन्नाञ्जनस्य )

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।

तपाये हुए पीतल के अञ्जन के ४ नाम—  
( १ ) रीतिपुष्प ( २ ) पुष्पकेतु ( ३ ) पौष्पक  
( ४ ) कुसुमाञ्जन ।

( पञ्च हरितालस्य )

पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके १०३

हरताल के ५ नाम—( १ ) पिंजर ( २ )  
पीतन ( ३ ) ताल ( ४ ) आल ( ५ ) हरिताल ॥१०३॥

( पञ्च शिलाजतुनः )

गैरेयमथर्थं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।

शिलाजीत के ५ नाम—( १ ) गैरेय ( २ )  
अथर्थ ( ३ ) गिरिज ( ४ ) अश्मज ( ५ ) शिलाजतु ।

( पञ्च गन्धरसस्य )

बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः १०४

गन्धरस के ५ नाम—( १ ) बोल ( २ )  
गन्धरस ( ३ ) प्राण ( ४ ) पिण्ड ( ५ ) गोपरसा ॥१०४॥

( चत्वारि सामुद्रफेनस्य )

डिण्डीरोऽन्धिकफः फेनः

समुद्रफेन के ३ नाम—( १ ) डिण्डीर ( २ )  
अन्धिकफ ( ३ ) फेन ।

१ उक्तं च ग्रन्थान्तरे—

मुवर्णं रजतं ताम्रं रौढिः कास्यं तथा शृषुः ।

सामं कालायसं चैवमथौ लोहानि च दत्ते ॥

( त्रीणि सिन्दूरस्य )

सिन्दूरं नागसम्भवम् ।

सिन्दूर के ३ नाम—( १ ) सिन्दूर ( २ )  
नागसम्भव ।

( चत्वारि सीसकस्य )

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि

सीसे के ४ नाम—( १ ) नाग ( २ ) सीसक  
( ३ ) योगेष्ट ( ४ ) वप्र ।

( चत्वारि वंगस्य )

त्रपु पिच्छटम् ॥१०५॥

रंगवंगे

रंगे के ४ नाम—( १ ) त्रपु ( २ ) पिच्छट  
( ३ ) रंग ( ४ ) वंग ॥ १०५ ॥

( द्वे तूलस्य )

अथ पिचुस्तूलः

रई के २ नाम—( १ ) पिचु ( २ ) तूल ।  
( चत्वारि कुसुमस्य )

अथ कमलोत्तरम् ।

स्यात् कुसुमं वह्निशिख महारजनमित्यपि १०६

कुसुम के ४ नाम—( १ ) कमलोत्तर ( २ )  
कुसुम ( ३ ) वह्निशिख ( ४ ) महारजन ॥ १०६ ॥

( द्वे कम्बलस्य )

मेषकम्बल ऊर्णायुः

कम्बल के २ नाम—( १ ) मेषकम्बल ( २ )  
ऊर्णायु ।

( द्वे शशलोमनः )

शशोर्णं शशलोमनि ।

खरगोश के ऊन के २ नाम—( १ ) शशोर्ण  
( २ ) शशलोम ।

( त्रीणि मधुनः )

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि

शहद के ३ नाम—( १ ) मधु ( २ ) क्षौद्र  
( ३ ) माक्षिक ।

( द्वे सिक्थकस्य )

मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥१०७॥

मोम के ३ नाम—( १ ) मधूच्छिष्ट ( २ )  
सिक्थक ॥ १०७ ॥

( सप्त मनःशिलायाः )

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्रा नागजिह्विका ।  
नैपाली कुनटी गोला

मैनसिल के ७ नाम—( १ ) मन शिला  
( २ ) मनोगुप्ता ( २ ) मनोह्रा ( ४ ) नागजिह्विका  
( ५ ) नैपाली ( ६ ) कुनटी ( ७ ) गोला ।

( त्रीणि यवक्षारस्य )

यवक्षारा यवाग्रजः ॥१०८॥

पाक्यः

जवाखार ( शोराविशेष ) के ३ नाम—( १ )  
यवक्षार ( २ ) यवाग्रज ( ३ ) पाक्य ॥ १०८ ॥

( त्रीणि सर्जिकाक्षारस्य )

अथ सर्जिकाक्षार. कापोतः सुखवर्चकः ।

सर्जोखार ( खारी मिट्टी ) के ३ नाम—( १ )  
सर्जिकाक्षार ( २ ) कापोत ( ३ ) सुखवर्चक ।

( द्वे क्षारभेदस्य )

सौवर्चलं स्याद्वृचक्रं

क्षारभेद ( सचलखार ) के २ नाम—( १ )  
सौवर्चल ( २ ) वृचक्र ।

( द्वे वंशरोचनायाः )

त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥१०९॥

वशलोचन के २ नाम—( १ ) त्वक्क्षीरी ( २ )  
वशरोचना ॥ १०९ ॥

( द्वे श्वेतमरिचस्य )

सिन्धुजं श्वेतमरिचं

सफेद मरिच के २ नाम—( १ ) सिन्धुज  
( २ ) श्वेत मरिच ।

( एकमिक्षुमूलस्य )

मोरटं मूलमैक्षुषम् ।

केल की जड़ का नाम—( १ ) मोरट ।

( त्रीणि पिप्पलीमूलस्य )

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ११०

पिपरामूल के ३ नाम—( १ ) ग्रन्थिक

पिप्पलीमूल ( ३ ) चटकाशिरस् ॥११०॥

( द्वे 'जटामासी' तिनाम्ना ख्यातायाः )

गालोमी भूतकेशो ना

जटामासी के २ नाम—(१) गोलोमी ( २ )

भूतकेश । इनमें (१) स्त्री (२) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे रक्तचन्दनसदृशवर्णपतंगस्य )

पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

पतंग के २ नाम—( १ ) पत्राङ्ग ( २ )

रक्तचन्दन ।

( त्रीणि शुण्ठीपिप्पलीमरिचाना समाहारस्य )

त्रिकटु त्र्यूपणं व्योषम्

सोंठ, काली मिर्च और पिप्पली, इनके समुदाय के ३ नाम—( १ ) त्रिकटु ( २ ) त्र्यूपण ( ३ ) व्योष ।

( त्रीणि त्रिफलायाः )

त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥१११॥

आंवला, हरर और वहेड़ा, इनके समुदाय के २ नाम—( १ ) त्रिफला (२) फलत्रिक ॥१११॥

इति वैश्यवर्ग ॥६॥

## अथ शूद्रवर्गः १०

( चत्वारि शूद्रस्य )

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।

<sup>१</sup>शूद्र के ४ नाम—( १ ) शूद्र (२) अवरवर्ण ( ३ ) वृषल ( ४ ) जघन्यज ।

( एकं चण्डालस्य )

आचण्डालास्तु संकीर्णा अभ्यष्टकरणादयः ॥१॥

किसी ब्राह्मणी का किसी शूद्र से ससर्ग हो जाय और उससे सन्तति उत्पन्न हो, उसका नाम—( १ ) चण्डाल । चण्डाल से लेकर अभ्यष्ट करण आदि सकर सन्तानों का नाम—(१)—संकीर्ण ॥१॥

१ 'शेषवैरमसूया च, भृत्य मदादप्यन् ।

पैशुन्य निर्दयत्व, जानायाच्छूद्रलक्षणम् ॥

( एकं शूद्राया विशो जातस्य )

शूद्राविशोस्तु करणः

<sup>२</sup>शूद्रा स्त्री और वैश्य पुरुष के ससर्ग से जायमान सन्तति का नाम—( १ ) करण ।

( एकं वैश्यायां ब्राह्मणाज्जातस्य )

अम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनो ।

वैश्या स्त्री और ब्राह्मण पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तति का नाम—( १ ) अम्बष्ठ ।

( एकं शूद्रायां क्षत्रियाज्जातस्य )

शूद्राक्षत्रिययोऽयम् ।

शूद्रा स्त्री में क्षत्रिय के ससर्ग से उत्पन्न सन्तान का नाम—( १ ) उग्र ।

( एक क्षत्रियायां वैश्याज्जातस्य )

मागधः क्षत्रियाविशोः ॥२॥

क्षत्रियाणी में वैश्य से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) मागध ॥२॥

( एकं वैश्यायां क्षत्रियाज्जातस्य )

माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः

वैश्य स्त्री और क्षत्रिय पुरुष के ससर्ग से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) माहिष्य ।

( एक वैश्यायां शूद्राज्जातस्य )

क्षत्र्याऽर्या शूद्रयोः सुतः ।

वैश्य स्त्री में शूद्र के ससर्ग से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) क्षत्र्या ।

२ याज्ञवल्क्य —

विषान्मूर्धावमिक्तस्तु क्षत्रियायां विरा. स्त्रियाम् ।

जातोऽम्बष्ठस्तु शूद्राया निषादः पार्श्वोऽपि वा ।

माहिष्योग्रौ प्रजायेते विटशूद्राक्षनयोर्नृपात् ।

शूद्राया करणो वैश्यादिनाश्वेप विधि. स्मृतः ॥

ब्राह्मण्या क्षत्रियात्सूतो वैश्याद्वैदेहकः स्मृतः ।

शूद्राज्जातस्तु चाण्डालः सर्वधर्मवहिष्कृतः ।

क्षत्रियामागधवैश्याच्छूद्राक्षत्तारमेव च ।

शूद्रादायोगवर्गं वैश्याज्जनयामास वै सुतम् ।

माहिष्येण करण्या तु रथकारः प्रजायते ।

भसत्सन्तस्तु विशेषा प्रतिलोमानुलोभनाः ॥

( एकं ब्राह्मण्यां क्षत्रियाज्जातस्य )

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतः

ब्राह्मणी में क्षत्रिय से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) सूत ।

( एकं ब्राह्मण्यां वैश्याज्जातस्य )

तस्यां वैदेहको विशः ॥३॥

ब्राह्मणी में वैश्य के संयोग से उत्पन्न सन्तान का नाम—(१) वैदेहक ॥३॥

( एकं करण्यां माहिष्याज्जातस्य )

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य सम्भवः ।

करणी ( शूद्रा में वैश्य के संयोग से उत्पन्न पुरुष की स्त्री ) में उत्पन्न माहिष्य (वैश्या में क्षत्रिय पुरुष के संयोग से उत्पन्न पुरुष) सन्तति का नाम—(१) रथकार ।

( एकं ब्राह्मण्यां वृषलेन जनितस्य )

स्याच्चरडालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥४॥

ब्राह्मणी में शूद्र के संयोग से उत्पन्न सन्तान का नाम—(१) चरडाल ॥४॥

( द्वे शिल्पिनः )

कारुः शिल्पी

कारीगर के २ नाम—(१) कारु (२) शिल्पिन् ।

( एकं शिल्पिनां संहतेः )

संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।

शिल्पियों के समुदाय का नाम—(१) श्रेणि ।

( द्वे शिल्पिकुलप्रधानस्य )

कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठौ

शिल्पियों के अध्यक्ष के २ नाम—(१) कुलक (२) कुलश्रेष्ठिन् ।

( द्वे मालाकारस्य )

मालाकारस्तु मालिकः ॥५॥

माली के २ नाम—(१) मालाकार (२) मालिक ॥५॥

( द्वे कुलास्य )

कुम्भकारः कुलालः स्यात्

कुम्हार के २ नाम—(१) कुम्भकार (२) कुलाल ।

( द्वे गृहादौ लेपनकर्मकारिणः )

पलगण्डस्तु लेपकः ।

पुताई का काम करनेवाले के २ नाम—(१) पलगण्ड (२) लेपक ।

( द्वे तन्तुवायस्य )

तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्

जुलाहे के २ नाम—(१) तन्तुवाय (२) कुविन्द ।

( द्वे सौचिकस्य )

तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥६॥

दरजी के २ नाम—(१) तुन्नवाय (२) सौचिक ॥६॥

( द्वे चित्रकारस्य )

रंगाजीवश्चित्रकरः

चित्रकार (रंगसाज) के २ नाम—(१) रंगाजीव (२) चित्रकर ।

( द्वे शस्त्रधर्षणोपजीविनः )

शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।

शिकिलीगर, शस्त्र साफ करनेवालों के २ नाम—(१) शस्त्रमार्ज (२) असिधावक ।

( द्वे चर्मकारस्य )

पादूकधर्मकारः स्यात्

चमार के २ नाम—(१) पादूक (२) चर्मकार ।

( द्वे लोहकारकस्य )

व्योकारो लोहकारकः ॥७॥

लोहार के २ नाम—(१) व्योकार (२) लोहकारक ॥७॥

( चत्वारि स्वर्णकारस्य )

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः

सोनार के ४ नाम—(१) नाडिन्धम (२) स्वर्णकार (३) कलाद (४) रुक्मकारक ।

( द्वे कङ्कणकारस्य )

स्याच्छाङ्गिकः काम्यविकः

चुरिहार के २ नाम—(१) शाङ्गिक (२) काम्यविक ।

( द्वे शौलिबकस्य )

शौलिबकस्ताम्रकुट्टकः ॥८॥

ठठरे के २ नाम—( १ ) शौलिबक ( २ ) ताम्रकुट्टक ॥८॥

( पंच रथकारस्य )

तत्ता तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट् ।

वढई के ५ नाम—( १ ) तत्ता ( २ ) वर्धकि ( ३ ) त्वष्टृ ( ४ ) रथकार ( ५ ) काष्ठतट् ।

( द्वे ग्राम्यरथकारस्य )

ग्रामाधीनो ग्रामतत्तः

ग्रामीण वढई के २ नाम—( १ ) ग्रामाधीन ( २ ) ग्रामतत्त ।

( द्वे स्वतंत्ररथकारस्य )

कौटतत्तोऽनधीनकः ॥९॥

स्वतंत्रतापूर्वक काम करनेवाले प्रधान वढई के २ नाम—( १ ) कौटतत्त ( २ ) अनधीनक ॥९॥

( पंच नापितस्य )

क्षुरी मुण्डो दिवाकीर्तिर्नापितान्तावसायिनः

नाई के ५ नाम—( १ ) क्षुरी ( २ ) मुण्डिन् ( ३ ) दिवाकीर्ति ( ४ ) नापित ( ५ ) अन्तावसायिन् ।

( द्वे रजकस्य )

निर्णोजकः स्याद्रजकः

धोची के २ नाम—( १ ) निर्णोजक ( २ ) रजक ।

( द्वे शौण्डिकस्य )

शौण्डिको मण्डहारकः ॥१०॥

कलवार के २ नाम—( १ ) शौण्डिक ( २ ) मण्डहारक ॥१०॥

( द्वे भजाजीवस्य )

जावालः स्यादजाजीवः

गगरिये के २ नाम—( १ ) जावाल ( २ ) अजाजीव ।

( द्वे देवलस्य )

देवाजीवस्तुदेवलः ।

परडे के २ नाम—( १ ) देवाजीव ( २ ) देवल ।

( द्वे इन्द्रजालस्य )

स्यान्माया शाम्बरी

इन्द्रजाल ( नजरबन्दी ) के २ नाम—( १ ) माया ( २ ) शाम्बरी ।

( द्वे इन्द्रजालिनः )

मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥११॥

मदारी, वाजीगर के २ नाम—( १ ) मायाकार ( २ ) प्रतिहारक ॥११॥

( षट् शैल्यस्य )

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कुशाश्विनः ।

भरता इत्यपि नटाः

नट के ६ नाम—( १ ) शैलालिन् ( २ ) शैलूष ( ३ ) जायाजीव ( ४ ) कुशाश्वी ( ५ ) भरत ( ६ ) नट ।

( द्वे चारणस्य )

चारणास्तु कुशीलवाः ॥१२॥

कथक, वन्दीजन के २ नाम—( १ ) चारण ( २ ) कुशीलव ॥१२॥

( द्वे मार्दङ्गिकस्य )

मार्दङ्गिका मौरजिकाः

मृदङ्ग बजानेवाले के २ नाम—( १ ) मार्दङ्गिक ( २ ) मौरजिक ।

( द्वे पाणिवादस्य )

पाणिवादास्तु पाणिघाः ।

ताली बजानेवाले के २ नाम—( १ ) पाणिवाद ( २ ) पाणिघ ।

( द्वे वैणविकस्य )

वैणुध्माः स्युर्वैणविकाः

वासुरी बजानेवाले के २ नाम—( १ ) वैणुध्म ( २ ) वैणविक ।

( द्वे वीणावादस्य )

वीणावादास्तु वैणिकाः ॥१३॥

वीणा बजानेवाले के २ नाम—( १ ) वीणावाद ( २ ) वैणिक ॥१३॥

१ बोधो, चमार आदि अगिर के मतानुसार अन्त्यज द्वे-  
रजकरचर्मकारश्च नद्यो गुरुद एव च ।

पेक्षतेनेश्मिल्लाम् सप्तोत्रे अन्त्यजा स्मृताः ॥

( द्वे जीवान्तकस्य )

जीवान्तक. शाकुनिकः

चिड़ीमार के २ नाम—(१) जीवान्तक (२) शाकुनिक ।

( द्वे व्याधस्य )

द्वौ वागुरिक-जालिकौ ।

बहेलिये के २ नाम—(१) वागुरिक (२) जालिक ।

( त्रीणि मांसिकस्य )

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् १४

कसाई के ३ नाम—(१) वैतंसिक (२) कौटिक (३) मांसिक ॥१४॥

( चत्वारि वैतनिकस्य )

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।

मजदूर के ४ नाम—(१) भृतक (२) भृति भुज् (३) कर्मकर (३) वैतनिक ।

( द्वे वार्ताहारिणः )

वार्तावहो वैवधिक

सन्देश लेजानेवाले (सन्देशिहा) के २ नाम—(१) वार्तावह (२) वैवधिक ।

( द्वे भारवाहस्य )

भारवाहस्तु भारिक ॥१५॥

बोम्हा डोनेवाले के २ नाम—(१) भारवाह (२) भारिक ॥१५॥

( दश नीचस्य )

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।

निहीनोऽपसदो जालम\* क्षुल्लकश्चेतरश्च स. १६

नीच के १० नाम—(१) विवर्ण (२)

पामर (३) नीच (४) प्राकृत (५) पृथग्जन (६) निहीन (७) अपसद (८) जालम (९) क्षुल्लक (१०) इतर ॥१६॥

( एकादश दासस्य )

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटका ।

नियोज्यकिंकरप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥१७॥

दास (टहलुआ) के ११ नाम—(१) भृत्य

(२) दासेर (३) दासेय (४) दास (५) गोप्यक

(६) चेटक (७) नियोज्य (८) किंकर (९)

प्रेष्य (१०) भुजिष्य (११) परिचारक ॥१७॥

( चत्वारि परैधितस्य )

पराचितपरिस्कंदपरजातपरैधिता ।

पराई कमाई पर जीनेवाले के ४ नाम—(१)

पराचित (२) परिस्कन्द (३) परजात (४)

परैधित ।

( षट् मन्दस्य )

मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्य. शीतकोऽल-  
सोऽनुष्ण. ॥१८॥

सुस्त, आलसी के ६ नाम—(१) मन्द (२)

तुन्दपरिमृज (३) आलस्य (४) शीतक (५)

अलस (६) अनुष्ण ॥१८॥

( षट् पटोः )

दत्ते तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।

चतुर के ६ नाम—(१) दत्त (२) चतुर

(३) पेशल (४) पटु (५) सूत्थान (६) उष्ण ।

( दश चाण्डालस्य )

चण्डालप्लवमातंगदिवाकीर्तिजनगमा. ॥१९॥

निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसा ।

३चाण्डाल के १० नाम—(१) चण्डाल

(२) प्लव (३) मातङ्ग (४) दिवाकीर्ति (५)

जनगम (६) निषाद (७) श्वपच (८)

अन्तेवासिन् (९) चाण्डाल (१०) पुक्कस ॥१९॥

( चाण्डालस्य भेदाः )

भेदा किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातय. ॥२०॥

३चाण्डाल के भेद—(१) किरात (२) शबर

(३) पुलिन्द । ये सभी म्लेच्छ हैं ॥२०॥

१ मनुस्मृति के अनुसार ७ प्रकार के दास होते हैं—

ध्वजाहृतो मज्जदास. गृहज क्रोतदग्निमौ ।

पैत्रिको दण्डदासश्च सप्तैते दासयोनयः ॥

२ उशाना महाराज कहते हैं—

ब्राह्मण्या शूद्रससर्गाज्जातश्चाण्डाल उच्यते ।

चाण्डालाद्वैश्यकन्याया जातः श्वपच उच्यते ॥

३ पहाड़ी भालों को 'किरात' कहते हैं । इन्हीं का

( चत्वारि मृगवधव्यवसायिनः )

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।

मृग मारनेवाले बहेलिये के ४ नाम—( १ )

व्याध (२) मृगवधाजीव (३) मृगयु (४) लुब्धक ।

( सप्त सारमेयस्य )

कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ॥२१॥

शुनको भषकः श्वा स्यात्

कुत्ते के ७ नाम ( १ ) कौलेयक (२) सारमेय

(३) कुक्कुर (४) मृगदंशक (५) शुनक (६) भषक

(७) श्वन् ॥२१॥

( एकं प्रयोगोन्मत्तशुनः )

अलर्कस्तु स योगितः ।

शिकार के लिए छोड़ने पर उन्मत्त हो जाने-  
वाले कुत्ते का नाम—(१) अलर्क ।

( एक मृगयापटो कुक्कुरस्य )

श्वा विश्वकटुर्मृगयाकुशल

शिकारी कुत्ते का नाम—(१) विश्वकटु ।

( द्वे शुन्याः )

सरमा शुनी ॥२२॥

कुतिया के २ नाम—( १ ) सरमा ( २ )

शुनी ॥२२॥

( एकं ग्राम्यसूकरस्य )

विट्चरः सूकरो ग्राम्य

गाँव के सूअर का नाम—(१) विट्चर ।

( एकं तरुणपशुमात्रस्य )

वर्करस्तर्णः पशुः ।

बकरा या तरुण पशु का नाम—(१) वर्कर ।

( चत्वारि आखेटस्य )

आच्छेदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगयास्त्रियाम् २३

शिकार के ४ नाम—( १ ) आच्छेदन (२)

मृगव्य (३) आखेट (४) मृगया । इनमें (४) स्त्री-

स्वरूप महादेवजी ने धारण किया था ( देखिए किराता-  
जुनीय ) । ये शिकार कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं ।  
प्रसिद्ध यूनानी लेखक एरियन ( Arrian ) ने इन  
Birrhadoo को भारत का मूल निवासी बताया है ।

लिङ्ग ( १-२ ) नपुंसक लिङ्ग ( ३ ) पुंलिङ्ग  
हैं ॥२३॥

( एकं दक्षिणाङ्गे व्रणवतः कुरङ्गस्य )

दक्षिणार्कलुब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।

व्याध द्वारा दहिने अङ्ग से घायल हिरन  
का नाम—(१) दक्षिणेर्मन् ।

( दश चौरस्य )

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥२४॥

प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमल्लिमुचाः ।

चोर के १० नाम—(१) चोर (२) ऐकागारिक  
(३) स्तेन (४) दस्यु (५) तस्कर ( ६ ) मोषक (७)  
प्रतिरोधिन् (८) परास्कन्दिन् ( ९ ) पाटच्चर (१०)  
मल्लिमुच ॥२४॥

( चत्वारि स्तेयस्य )

चारिका स्तेन्यचौर्यं च स्तेयम्

चोरी के ४ नाम—(१) चारिका (२) स्तेन्य  
(३) चौर्य (४) स्तेय ।

( एकं चौर्यासधनस्य )

लोप्त्रं च तद्धने ॥२५॥

चोरी के माल का नाम—(१) लोप्त्र ॥२५॥

( एकं मृगपक्षिणां बन्धनोपकरणस्य )

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ।

मृग और पक्षियों को बाँधने की सामग्री  
(पिजड़ा, जर्जर, जाल आदि) का नाम—(१) वीतस ।

( द्वे छलेन मृगपक्षिणा बन्धनजालस्य )

उन्मायः कूटयन्त्रं स्यात्

फन्दे के २ नाम—(१) उन्माय (२) कूटयन्त्र ।

( द्वे जालस्य )

वागुरा मृगबन्धनी ॥२६॥

जाल के २ नाम—( १ ) वागुरा ( २ ) मृग-  
बन्धनी ॥२६॥

( पञ्च रज्जोः )

शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।

रस्ती के ५ नाम—(१) शुल्व (२) वराटक  
( ३ ) रज्जु (४) वटी ( ५ ) गुण । इनमें (१-२)  
नपुंसक ( ३ ) स्त्री ( ४ ) तीनों लिंग हैं ।

और ( ५ ) पुँल्लिङ्ग है ।

( द्वे येन कृपाज्जलमूर्ध्वं बाह्यते तस्य )

उद्धाटनं घटीयंत्रं सलिलोद्धाहनं प्रहेः ॥२७॥

कुँ से जल निकालनेवाले रहट ( पुरवट ) के  
२ नाम--(१) उद्धाघटन ( २ ) घटीयंत्र ॥२७॥

( द्वे वस्त्रव्यूतिदण्डस्य )

पुंसि वेमा वायदण्डः

जिससे कि कपड़ा बुना जाता है उस करघे के  
२ नाम--(१) वेमन् (२) वायदण्ड । ये दोनों ही  
पुँल्लिङ्ग हैं ।

( द्वे सूत्रस्य )

सूत्राणि नरि तन्तवः ।

सूत के २ नाम--(१) सूत्र (२) तन्तु । इनमें  
(१) नपुंसक (२) पुँल्लिङ्ग है ।

( द्वे व्यूतेः )

वाणिव्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये

कपड़ा बुनने के २ नाम--(१) वाणि ( २ )  
व्यूति । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( एकं लेप्यादिकर्मणः )

पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥२८॥

लीपने-पोतने का नाम--(१) पुस्त ॥२८॥

( द्वे पान्चालिकायाः )

पान्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रवन्तादिभिः कृता ।

कपड़े या दाँत की बनी गुड़िया के २ नाम--  
(१) पान्चालिका (२) पुत्रिका ।

( एकैकं जतुना त्रपुणा वा निर्मितायाः )

जतुत्रपुचिकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ॥२९॥

लाख से बनी वस्तु का नाम--(१) जातुष ।  
रौंगा की बनी वस्तु का नाम--(१) त्रापुष ॥२९॥

( चत्वारि पेटकस्य )

पिटकः पेटकः पेटा मंजूषा

पेटारे के ४ नाम--(१) पिटक ( २ ) पेटक  
(३) पेटा (४) मंजूषा ।

( द्वे भारयष्टेः )

अथ विहङ्गिका ।

भारयष्टिः

वहँगी के २ नाम--( १ ) विहङ्गिका ( २ )  
भारयष्टि ।

( द्वे शिष्यस्य )

तदालम्बि शिष्यं काचः

वहँगी में लटकनेवाले छींके के २ नाम--  
(१) शिष्य (२) काच ।

( त्रीणि उपानहः )

अथ पादुका ॥३०॥

पादूरूपानत् स्त्री

जूते के ३ नाम--( १ ) पादुका (२) पादू  
(३) उपानह ॥३०॥

( एकमनुपदीनायाः )

सैवानुपदीना पदायता ।

मोजा का नाम--(१) अनुपदीना ।

( त्रीणि चर्मरज्जोः )

नध्री वध्री वरत्रा स्यात्

चमड़े की रस्ती के ३ नाम--(१) नध्री (२)  
वध्री (३) वरत्रा ।

( एकं भग्वादेस्ताडन्या रज्जोः )

अश्वादेस्ताडनी कशा ॥३१॥

चातुक ( जेरवन्द ) का नाम--(१) कशा ॥३१॥

( त्रीणि अन्यजवीणायाः )

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लक

किंगिरी बाजे के ३ नाम--(१) चाण्डालिका  
(२) कण्डोलवीणा (३) चण्डालवल्लकी ।

( द्वे स्वर्णकारलोहशलाकायाः )

नाराची स्यादेषणिका

सोनार के कौंटे तराजू के २ नाम--( १ )  
नाराची ( २ ) एषणिका ।

( त्रीणि निकषस्य )

शाणस्तु निकषः कषः ॥३२॥

सान, कसौटी के ३ नाम--( १ ) शाण (२)  
निकष (३) कष ॥३२॥

१ आदिना काष्ठपुत्तलिकाकर्मं गृह्यते । यदुक्तम्--  
मृदा वा दारुणा वाय वक्षेणाप्यथ चर्मणा ।  
लोहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते ॥



( द्वे व्रश्चनायाः )

व्रश्चना पत्रपरशुः

रेती के २ नाम—(१) व्रश्चना (२) पत्रपरशु ।

( द्वे ईषिकायाः )

ईषिका तूलिका समे ।

सलाई के २ नाम—(१) ईषिका (२) तूलिका ।

दोनों ही स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे मूषायाः )

तैजसावर्तनी मूषा

सोना-चाँदी गलाने की धरिया के ३ नाम—

( १ ) तैजसावर्तनी ( २ ) मूषा ।

( द्वे भस्त्रायाः )

भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥३३॥

घोंकनी, भाथी के २ नाम—( १ ) भस्त्रा (२)

चर्मप्रसेविका ॥३३॥

( द्वे आस्फोटन्याः )

आस्फोटनी वेधनिका

वर्मा के २ नाम—( १ ) आस्फोटनी ( २ )

वेधनिका ।

( द्वे कर्तर्याः )

कृपाणी कर्तरी समे ।

कतरनी, सोना चाँदी आदि धातु काटनेवाली

कैंची के २ नाम—(१) कृपाणी (२) कर्तरी ।

( द्वे वृक्षभेदन्याः )

वृक्षादनी वृक्षभेदी

बसूले के २ नाम—( १ ) वृक्षादनी ( २ )

वृक्षभेदी ।

( द्वे टकस्य )

टंकः पाषाणदारणः ॥३४॥

टोकी ( बड़ी छिनी ) के २ नाम—(१) टक

(२) पाषाणदारण ॥३४॥

( द्वे क्रकचस्य )

क्रकचोऽस्त्री करपत्रम्

आरा-आरी के २ नाम—( १ ) क्रकच ( २ )

करपत्र ।

( द्वे आरायाः )

आरा चर्मप्रभेदिका ।

चमार के चाकू के २ नाम—(१) आरा (२)

चर्मप्रभेदिका ।

( त्रीणि अयसः प्रतिमायाः )

सूर्मी स्थूणायःप्रतिमा

लोहे की मूर्ति के ३ नाम—(१) सूर्मी ( २ )

स्थूण (३) अय प्रतिमा ।

( एक कलादिकर्मणः )

शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥३५॥

कारीगरी के काम का नाम—(१) शिल्प ॥३५॥

( अष्टौ प्रतिमायाः )

प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतियातना

प्रतिच्छाया ।

प्रतिकृतिर्चा पुंसि प्रतिनिधिः

प्रतिमा के ८ नाम—( १ ) प्रतिमान ( २ )

प्रतिविम्ब ( ३ ) प्रतिमा ( ४ ) प्रतियातना

( ५ ) प्रतिच्छाया ( ६ ) प्रतिकृति ( ७ ) अर्चा

( ८ ) प्रतिनिधि । इनमें ( १-२ ) नपुंसक, (३-७)

स्त्रीलिङ्ग (८) पुल्लिङ्ग है ।

( द्वे उपमानस्य )

उपमोपमानं स्यात् ॥३६॥

उपमान ( मिसाल ) के २ नाम—(१) उपमा

( २ ) उपमान ॥३६॥

( सप्त सदृशस्य )

वाच्यलिङ्गाः समस्तुदयः सदृशः सदृश सदृक् ।

साधारणः समानश्च

वरावरी के ७ नाम—( १ ) सम ( २ )

तुल्य ( ३ ) सदृक् ( ४ ) सदृश ( ५ ) सदृक्

( ६ ) साधारण ( ७ ) समान । (१-७) सब तीनों

लिङ्ग हैं ।

( पंच समानस्य )

स्युस्त्वरपदे त्वमी ॥३७॥

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ।

समान के ५ नाम—( १ ) निभ ( २ )

सकाश ( ३ ) नीकाश ( ४ ) प्रतीकाश ( ५ ) उपमा ।  
[ विशेष करके उपमा के समय उत्तरपद में ही  
इनका प्रयोग होता है । जैसे—‘पितृनिभ पुत्र’  
पिता के समान पुत्र है इत्यादि ] ॥३७॥

( एकादश वेतनस्य )

कर्मण्या तु विधा भृत्या भृतयो भर्म वेतनम्  
भरणं भरणं मूल्यं निर्वेशं पण इत्यपि ।

वेतन, मजदूरी के ११ नाम—( १ ) कर्मण्या  
( २ ) विधा ( ३ ) भृत्या ( ४ ) भृति ( ५ ) भर्मन्  
( ६ ) वेतन ( ७ ) भरण ( ८ ) भरण ( ९ )  
मूल्य ( १० ) निर्वेश ( ११ ) पण ॥३८॥

( त्रयोदश मद्यस्य )

सुरा हलिप्रिया हाला परिस्तुद्रुणात्मजा ३६  
गन्धोत्तमा प्रसन्नेरा कादम्बरीः परिस्तुता ।  
मदिरा कश्यमद्ये चापि

शराब, मदिरा के १३ नाम—( १ ) सुरा  
( २ ) हलिप्रिया ( ३ ) हाला ( ४ ) परिस्तुत् ( ५ )  
वरुणात्मजा ( ६ ) गन्धोत्तमा ( ७ ) प्रसन्ना ( ८ )  
इरा ( ९ ) कादम्बरी ( १० ) परिस्तुता ( ११ ) मदिरा  
( १२ ) कश्य ( १३ ) मद्य ॥३९॥

( एकं पानरुचिजननाय यद्वयं जनादिक

मक्ष्यते तस्य )

अवदंशस्तु भक्षणम् ॥४०॥

पीते समय मदिरा के साथ खायी जानेवाली  
वस्तु का नाम—( १ ) अवदश ॥४०॥

( द्वे मदस्थानस्य )

शुराडापानं मदस्थानम्

कलवरिया, मद्यपान के स्थान के २ नाम—  
( १ ) शुराडापान ( २ ) मदस्थान ।

( द्वे मद्यपानसमयस्य )

मधुवारा मधुक्रमाः ।

मदिरा पीने के समय के २ नाम—( १ )  
मधुवार ( २ ) मधुक्रम ।

( द्वे धातकीपुष्पमधुसंहितमधूकपुष्पासवस्य )  
मध्वासवो माधवको मधुमाध्वीकमद्वयोः ४१

‘महुआ के शराब के ४ नाम—( १ ) मध्वा-  
सव ( २ ) माधवक ( ३ ) मधु ( ४ ) माध्वीक ॥४१॥

( त्रीणि धातकीपुष्पगुब्धान्याम्बुसंहितस्य  
सुराविशेषस्य )

मैरेयमासवः सीधुः

गुड़ शाकादि से बनी मदिरा के ३ नाम—  
( १ ) मैरेय ( २ ) आसव ( ३ ) सीधु । इनमें ( १ )  
नपुसक ( २ ) पुंल्लिङ्ग ( ३ ) पु-नपुसकलिङ्ग है ।

( द्वे सुराकल्कस्य )

मेदको जगलः समौ ।

शराब के काढ़े के २ नाम—( १ ) मेदक  
( २ ) जगल ।

( द्वे मद्यसंधानस्य )

संधानं स्यादभिषवः

मदिरा बनाने के २ नाम—( १ ) संधान  
( २ ) अभिषव ।

( तण्डुलादिद्रव्यकृतबीजस्य )

किण्वं पुंसि तु नम्रहः ॥४२॥

तण्डुलादि द्रव्य से बनी मदिरा के २ नाम—  
( १ ) किण्व ( २ ) नम्रह । इनमें ( १ ) नपुसक ( २ ) पुंल्लिङ्ग  
है ॥ ४२ ॥

( द्वे सुरामण्डस्य )

कारोत्तरः सुरामण्डः

मदिरा के माढ़ के २ नाम—( १ ) कारोत्तर  
( २ ) सुरामण्ड ।

( द्वे पानगोष्ठिकाया )

आपानं पानगोष्ठिका ।

मद्यपान के लिए एकत्र शराबियों की मण्डली  
के २ नाम—( १ ) आपान ( २ ) पानगोष्ठिका ।

( द्वे पानपात्रस्य )

चषकोऽस्त्री पानपात्रम्

शराब पीने के प्याले के २ नाम—( १ )  
चषक ( २ ) पानपात्र । इनमें ( १ ) पु-नपुंसक, ( २ )  
नपुसक है ।

१ शुद्धशौनक —

मध्वासव म विशेषो धातकीकाथमाचिक्रात् ।

( द्वे मद्यपानक्रियायाः )

सरकोऽप्यनुतर्षणम् ॥४३॥

मदिरा पीने के २ नाम—( १ ) सरक ( २ )  
अनुतर्षण ॥४३॥

( पंच द्यूतकृतः )

धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृतसमा ।

जुआरी के ५ नाम—( १ ) धूर्त ( २ )  
अक्षदेविन् ( ३ ) कितव ( ४ ) अक्षधूर्त ( ५ )  
द्यूतकृत ।

( द्वे ऋणादौ प्रतिनिधिभूतस्य )

स्युर्लशकाः प्रतिभुवः

जामीन, जमानतदार के २ नाम—( १ )  
लम्नक ( २ ) प्रतिभू ।

( द्वे द्यूतकारकस्य )

समिका द्यूतकारकाः ॥४४॥

जुआ खेलावेवाले ( नालिया, फद्दाज ) के  
२ नाम—( १ ) समिक ( २ ) द्यूतकारक ॥४४॥

( चत्वारि द्यूतस्य )

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ।

जुए के ४ नाम—( १ ) द्यूत ( २ ) अक्ष-  
वती ( ३ ) कैतव ( ४ ) पण । इनमें ( १ ला ) पु-  
नपुंसक है ।

( द्वे पणस्य )

पणोऽक्षेषु ग्लहः

वाजी लगाने के २ नाम—( १ ) पण ( २ )  
ग्लह ।

( त्रीणि पाशकस्य )

अक्षस्तु देवनाः पाशकाश्च ते ॥४५॥

पासे के ३ नाम—( १ ) अक्ष ( २ ) देवन  
( ३ ) पाशक ॥ ४५ ॥

( एकं शारीणामितस्ततो नयनस्य )

परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयने

पासे, गोटी को इधर-उधर फेंकने का नाम—  
( १ ) परिणाय ।

( द्वे शारिफलकस्य )

ऽस्त्रियाम्

अष्टापदं शारिफलम्

चौपड़ के २ नाम—( १ ) अष्टापद ( २ )  
शारिफल । ये ( १-२ ) पुनपुंसक हैं ।

( द्वे प्राणिद्यूतस्य )

प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥४६॥

मुरगा, तीतर आदि की लड़ाई पर जुआ  
खेलने के २ नाम—( १ ) प्राणिद्यूत ( २ ) समा-  
ह्वय ॥४६॥

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ।

तादृम्यादन्यतो वृत्तावृद्ध्या तल्लान्तरेऽपि तेऽत्र

इस शूद्रवर्ग में यौगिक ( कुम्भकार-माला-  
कार आदि ) बहुत से शब्द केवल एक ही लिङ्ग  
में कहे गये हैं । क्योंकि काव्य-पुराण आदि में  
ज्यादातर पुल्लिङ्ग में ही इनका प्रयोग देखा जाता  
है । सो जहाँ कहीं उन शब्दों को स्त्रीलिङ्ग आदि  
में प्रयोग करने का अवसर आ पड़े तो तद्धर्मा-  
नुसार प्रयोग कर लेना चाहिए । जैसे-मालाकार  
की स्त्री मालाकारी । कुम्भकार की स्त्री कुम्भकारी ।  
कुम्भकार का कुल कुम्भकारम् आदि ॥४७॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः साङ्ग पव समर्थितः ।

इस प्रकार श्रीअमरसिंह के बनाए हुए नाम  
और लिङ्गों को बतलानेवाले ग्रन्थ अमरकोष में  
भूमि आदि शब्दों का ऋण साङ्गोपाङ्ग कहा ॥१॥

इति धीमन्नालाल 'अभिमन्यु' एम० ए० विरचितायां 'धरा' ख्यामरकोपटीकाया

द्वितीयः काण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

# श्रमरकोषः

## तृतीयं काण्डम्

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।

लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥१॥

इस तृतीय काण्ड में विशेष्यनिघ्न, संकीर्ण, नानार्थ, अव्यय और लिङ्गादिसंग्रह वर्गों के द्वारा विविध शब्द कहे जायेंगे । इस काण्ड में कहे जानेवाले शब्द स्वतंत्र न होंगे, बल्कि पूर्व के काण्डों में जो कह आये हैं, उन्हींके आश्रित रहेंगे ॥१॥

स्त्रादाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।

गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदका २

स्त्री तथा दार आदि शब्दों का जहाँ विशेष्य-रूप से प्रयोग किया गया हो, वहाँ उसका जो गुण, द्रव्य, क्रिया लिंग और वचन हो उसीके अनुसार द्रव्य गुण क्रिया लिङ्ग और वचन युक्त उनके विशेषणीभूत शब्दों का भी प्रयोग होना चाहिए ।

गुणविशिष्ट वाक्य जैसे—सुकृतिनी स्त्री ।  
सुकृतिनो दारा । सुकृति कुलम् ।

द्रव्यविशिष्ट वाक्य जैसे—दरिडनी स्त्री ।  
दरिडनो दारा । दरिड कुलम् ।

क्रियाविशिष्ट वाक्य जैसे—पाचिका स्त्री ।  
पाचका दाराः । पाचक कुलम् आदि । अतएव आगे आनेवाले सभी शब्दों को त्रिलिङ्गी समझना ॥२॥

( त्रीणि भाग्यसम्पन्नस्य )

सुकृती पुण्यवान् धन्य

भाग्यवान् के ३ नाम—( १ ) सुकृतिन् ( २ ) पुण्यवत् ( ३ ) धन्य ।

( द्वे उदारचेतसः )

महेच्छस्तु महाशयः ।

उदार चित्तवाले दयालु के २ नाम—( १ ) महेच्छ ( २ ) महाशय ।

( द्वे प्रशस्तचेतसः )

हृदयालुः सुहृदयः

सीधा आदमी, प्रशस्त चित्तवाले पुरुष के २ नाम—( १ ) हृदयालु ( २ ) सुहृदय ।

( द्वे दुरापेऽपि कृत्येऽध्यवसितक्रियस्य )

महोत्साहो महोद्यमः ॥३॥

दु साध्य कार्य में भी प्रवृत्त होनेवाले उत्साही पुरुष के २ नाम—( १ ) महोत्साह ( २ ) महोद्यम ॥३॥

( दश प्रवीणस्य )

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥४॥

प्रवीण पुरुष के १० नाम—( १ ) प्रवीण ( २ ) निपुण ( ३ ) अभिज्ञ ( ४ ) विज्ञ ( ५ ) निष्णात ( ६ ) शिक्षित ( ७ ) वैज्ञानिक ( ८ ) कृतमुख ( ९ ) कृतिन् ( १० ) कुशल ॥४॥

( द्वे मान्यस्य )

पूज्यः प्रतीक्ष्यः

मान्य के २ नाम—( १ ) पूज्य ( २ ) प्रतीक्ष्य ।

( द्वे संशयापन्नचेतसः )

साशयिकः संशयापन्नमानसः ।

संशय युक्त चित्तवाले पुरुष ( शक्ती आदमी ) के २ नाम—( १ ) साशयिक ( २ ) संशयापन्नमानस ।

( त्रीणि दक्षिणाहंस्य )

दक्षिणीयो दक्षिणाहस्तत्र दक्षिण इत्यपि ॥५॥

दक्षिणा पाने योग्य पुरुष के ३ नाम—( १ ) दक्षिणीय ( २ ) दक्षिणार्ह ( ३ ) दक्षिण ॥५॥

( चत्वारि दानशूरस्य )

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।

दानवीर पुरुष के ४ नाम—( १ ) वदान्य

( २ ) स्थूललक्ष्य ( ३ ) दानशौण्ड ( ४ ) बहुप्रद ।

( द्वे आयुष्मतेः )

जैवातुकः स्यादायुष्मान्

दीर्घायु के २ नाम—( १ ) जैवातुक ( २ )

आयुष्मत् ।

( द्वे शास्त्रज्ञस्य )

अन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥६॥

शास्त्रज्ञ पुरुष के २ नाम—( १ ) अन्तर्वाणि

( २ ) शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

( द्वे परीक्षकस्य )

परीक्षकः कारणिक

परीक्षक, पारखी के २ नाम—( १ ) परीक्षक

( २ ) कारणिक ।

( द्वे वराणां दातुः )

वरदस्तु समर्थकः ।

वर देनेवाले पुरुष के २ नाम—( १ ) वरद

( २ ) समर्थक ।

( चत्वारि प्रसन्नचेतसः )

हर्षमाणो विकुर्वाण प्रमना हृष्टमानसः ॥७॥

प्रसन्न चित्त के ४ नाम—( १ ) हर्षमाण ( २ )

विकुर्वाण ( ३ ) प्रमनस् ( ४ ) हृष्टमानस ॥७॥

( त्रीणि व्याकुलचेतसः )

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः

उदास चित्त, अनमना के ३ नाम—( १ ) दुर्मनस्

( २ ) विमनस् ( ३ ) अन्तर्मनस् ।

( द्वे उत्कण्ठितस्य )

स्यादुत्क उन्मनाः ।

उत्कण्ठित के २ नाम—( १ ) उत्क ( २ )

उन्मनस् ।

( त्रीणि सरलस्य )

दक्षिणे सरलोदारौ

उदार, सीधे के ३ नाम—( १ ) दक्षिण ( २ )

सरल ( ३ ) उदार ।

( एकं दातृमोक्तः )

सुकलो दातृमोक्तः ॥८॥

दानी और भोग करनेवाले का नाम—( १ )

सुकल ॥८॥

( त्रीणि तात्पर्ययुक्तस्य )

तत्परे प्रसितासकौ

काम में व्यग्र पुरुष के ३ नाम—( १ )

तत्पर ( २ ) प्रसित ( ३ ) आसक्त ।

( द्वे अभिमतार्थे सोद्योगस्य )

इष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

अभिलषित वस्तु की प्राप्ति में लगे पुरुष

के २ नाम—( १ ) इष्टार्थोद्युक्त ( २ ) उत्सुक ।

( षट् ख्यातस्य )

प्रतीते प्रथितख्यातविचित्रिज्ञातविश्रुताः ॥९॥

विख्यात पुरुष के ६ नाम—( १ ) प्रतीत

( २ ) प्रथित ( ३ ) ख्यात ( ४ ) वित्त ( ५ )

विज्ञात ( ६ ) विश्रुत ॥९॥

( द्वे गुणर्विख्यातस्य )

गुरौः प्रतीते तु कृतलक्षणहतलक्षणौ ।

गुणों द्वारा ख्यात पुरुष के २ नाम—( १ )

कृतलक्षण ( २ ) आहतलक्षण ।

( त्रीणि धनिनः )

इभ्य आढ्यो धनी

धनी पुरुष के ३ नाम—( १ ) इभ्य ( २ )

आढ्य ( ३ ) धनिन् ।

( दश स्वामिनः )

स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥१०॥

अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिप ।

स्वामी के १० नाम—( १ ) स्वामिन् ( २ )

ईश्वर ( ३ ) पति ( ४ ) ईशितृ ( ५ ) अधिभू

( ६ ) नायक ( ७ ) नेतृ ( ८ ) प्रभु ( ९ ) परि-

वृढ ( १० ) अधिप ॥१०॥

( द्वे समृद्धस्य )

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्

समृद्ध पुरुष, नरे पूरे के २ नाम—( १ )

अधिकर्द्धि ( २ ) समृद्ध ।

( त्रीणि कुटुम्बपालनतत्परस्य )

कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥११॥

स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम्

कुटुम्ब का भरण-पोषण करने में तत्पर पुरुष के ३ नाम—(१) कुटुम्बव्यापृत (२) अभ्यागारिक (३) उपाधि । (३रा) पुंलिङ्ग है ॥११॥

( एकम् वराङ्गरूपयुक्तस्य )

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥१२॥

सुडौल और सुन्दर शरीरवाले आदमी का नाम—(१) सिंहसंहनन ॥१२॥

(यः सत्त्वसम्पदायुक्तोव्यसनेऽपि कार्यासक्तस्तस्य) निर्वार्यः कार्यकर्ता यः सम्पन्नः सत्त्वसपदा ।

विपत्ति में भी (खुशी मन) सात्विक भाव से जो अपना काम करता जाय, उसका नाम—(१) निर्वार्य ।

( द्वे मूकस्य )

अवाचि मूकः

गूंगे के २ नाम—(१) अवाच् (२) मूक ।

( द्वे पितृतुल्यस्य )

अथ मनोजवस पितृसन्निभः ॥१३॥

पिता के समान पुरुष के २ नाम—(१) मनोजवस (२) पितृसन्निभ ॥१३॥

( एकमादरपूर्वकालंकृतकन्याप्रदस्य )

सत्कृत्यालंकृता कन्या यो ददाति स कूकुदः ।

जो वरका सत्कार करके वस्त्राभूषण से सुसज्जित कन्यादान दे, उसका नाम (१) कूकुद ।

( चत्वारि लक्ष्मीवतः )

लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान्

लक्ष्मीवान् के ४ नाम—(१) लक्ष्मीवत् (२) लक्ष्मण (३) श्रील (४) श्रीमान् ।

( द्वे वत्सलस्य )

स्निग्धस्तु वत्सलः ॥१४॥

स्नेही पुरुष के २ नाम—(१) स्निग्ध (२) वत्सल ॥१४॥

( चत्वारि कृपालोः )

स्यादयालुः काराणकः कृपालुः सूरतः समा ।

दयालु के ४ नाम—(१) दयालु (२) काराणिक (३) कृपालु (४) सूरत । ये सभी पुंलिङ्ग हैं ।

( पंच स्वतंत्रस्य )

स्वतंत्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः

स्वतंत्र के ५ नाम—(१) स्वतंत्र (२) अपावृत (३) स्वैरिन् (४) स्वच्छन्द (५) निरवग्रह ॥१५॥

( चत्वारि पराधीनस्य )

परतन्त्र पराधीनः परवान्नाथवानपि ।

पराधीन के ४ नाम—(१) परतन्त्र (२) पराधीन (३) परवत् (४) नाथवत् ।

( पंच अधीनस्य )

अधीनो निम्न आयत्तोऽस्वच्छन्दोऽगृह्यकोऽप्यसौ

अधीन के ५ नाम—(१) अधीन (२) निम्न (३) आयत्त (४) अस्वच्छन्द (५) गृह्यक ॥१६॥

( द्वे सम्मार्जनादिकारिण )

खलपः स्याद्बहुकरः

झाड़ लगानेवाले के २ नाम—(१) खलप (२) बहुकर ।

( द्वे यः स्वल्पकालसाध्यं कार्यं चिरेण करोति तस्या-  
लसविशेषस्य )

दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।

थोड़े समय का काम बड़ी देर में पूरा करने वाले काहिल के २ नाम—(१) दीर्घसूत्र (२) चिरक्रिय ।

( द्वे गुणदोषानविमृश्यकारिणः )

जालमोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्

बिना विचारे काम करनेवाले के २ नाम—(१) जाल्म (२) असमीक्ष्यकारिन् ।

( एक क्रियासु मन्दस्य कुण्ठस्य वा )

कुराटो मन्दः क्रियासु यः ॥१७॥

काम करने में आलसी या कुन्द बुद्धि का नाम—(१) कुराट ॥१७॥

१ सत्त्व का लक्षण—

व्यसनेऽभ्युदये चापि ह्यविकारः सदा मनः ।

तत्सत्त्वमिति च प्रोक्तं नयविद्विषुषैः किल ॥

( द्वे कर्मणि शक्तस्य )

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः

काम करने में समर्थ पुरुष के २ नाम—( १ )

कर्मक्षम ( २ ) अलंकर्मीण ।

( एक कर्मण्युद्यत्तस्य )

क्रियावान्कर्मसूद्यतः ।

काम में लगे हुए पुरुष का नाम—( १ )

क्रियावत् ।

( द्वे नित्यं कर्मणि प्रवृत्तस्य )

सः कर्म. कर्मशीलो यः

सर्वदा काम में लगे रहनेवाले के २ नाम—

( १ ) कर्म ( २ ) कर्मशील ।

( द्वे य' प्रयत्नेनारब्धं कर्म समापयति तस्य )

कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥१८॥

जो प्रयत्नपूर्वक प्रारम्भ किये हुए कर्म को समाप्त करे, उसके २ नाम—( १ ) कर्मशूर ( २ ) कर्मठ ॥१८॥

( द्वे वेतनमादाय कर्मकारिणः )

भरण्यभुक्कर्मकर

मजदूर के २ नाम—( १ ) भरण्यभुज् ( २ ) कर्मकर ।

( एक वेतनं विनापि कर्मकारिणः )

कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।

जो विना वेतन के भी ( बेगार ) काम कर दे, उसका नाम—( १ ) कर्मकार ।

( द्वे मृतमुद्दिश्य स्नातस्य )

अपस्नातो मृतस्नात

किसी के मरने पर स्नान किये हुए मृतस्नानी पुरुष के २ नाम—( १ ) अपस्नात ( २ ) मृतस्नात ।

( द्वे मात्स्यमासभक्षणशीलस्य )

आमिषाशी तु शौष्कुल ॥१९॥

मास-मछली खाने वाले के २ नाम—( १ )

आमिषाशिन ( २ ) शौष्कुल ॥१९॥

( चत्वारि पुशुक्षितस्य )

वुमुक्षितः स्यात्पुक्षितो जिघत्सुरशनायितः ।

भूखे पुरुष के ४ नाम—( १ ) पुमुक्षित

( २ ) लुक्षित ( ३ ) जिघत्सु ( ४ ) अशनायित ।

( द्वे परान्नोपजीविनः )

परान्न परपिण्डादः

पराये अन्न पर जीनेवाले के २ नाम—( १ )

परान्न ( २ ) परपिण्डाद ।

( त्रीणि भक्षणशीलस्य )

भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥२०॥

खवैया के ३ नाम—( १ ) भक्षक ( २ )

घस्मर ( ३ ) अन्नर ॥२०॥

( द्वे बुभुक्षयात्यन्तपीडितस्य )

आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाचिर्वर्जिते ।

भरभूखे के २ नाम—( १ ) आद्यून ( २ )

ओदरिक ।

( द्वे स्वोदरभरणशीलस्य )

उभौ त्वात्मम्भरि कुक्षिम्भरि स्वोदरपूरके ॥२१॥

पेट पालनेवाले के २ नाम—( १ ) आत्मम्भरि

( २ ) कुक्षिम्भरि ॥२१॥

( द्वे सर्वान्नभोजिनः )

सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी

सर्वभक्षी के २ नाम—( १ ) सर्वान्नीन ( २ )

सर्वान्नभोजिन् ।

( पंच लुब्धस्य )

गृध्नस्तु गर्धनः ।

लुब्धोऽभिलापुकस्तृष्णक्

लोभी के ५ नाम ( १ ) गृध्न ( २ ) गर्धन ( ३ )

लुब्ध ( ४ ) अभिलापुक ( ५ ) तृष्णक् ।

( द्वे भतिशय लुब्धस्य )

समौ लोलुपलोलुभौ ॥२२॥

अतिशय लोभी के २ नाम—( १ ) लोलुप

( २ ) लोलुभ ॥२२॥

( द्वे उन्मादशीलस्य )

सोन्मादस्तृन्मादिष्णुः स्यात्

सन्धी, निडों, पागल के २ नाम—( १ )

सोन्माद ( २ ) उन्मादिष्णु ।

( द्वे दुर्विनीतस्य )

अविनीतः समुद्धतः ।

अक्खड् पुरुष के २ नाम—( १ ) अविनीत  
समुद्धत ।

( चत्वारि मत्तस्य )

मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः

मतवाले के ४ नाम—( १ ) मत्त ( २ ) शौण्ड  
( ३ ) उत्कट ( ४ ) क्षीव ।

( नव कामुकस्य )

कामुके कमितानुकः ॥२३॥

कम्रः कामयिताभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।

कामी पुरुष के ६ नाम—( १ ) कामुक ( २ )  
कमितृ ( ३ ) अनुक ( ४ ) कम्र ( ५ ) कामयितृ ( ६ )  
अभीक ( ७ ) कमन ( ८ ) कामन ( ९ ) अभिक ॥२३॥

( चत्वारि वचनग्राहिणः )

विधेय विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः २४॥

वात मानने वाले के ४ नाम—( १ ) विधेय  
( २ ) विनयग्राहिन् ( ३ ) वचनेस्थित ( ४ ) आश्रव ॥२४॥

( द्वे वशांगनस्य )

वश्यः प्रणोयः

वशीभूत पुरुष के २ नाम—( १ ) वश्य ( २ )  
प्रणोय ।

( त्रीणि विनीतस्य )

निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।

विनीत पुरुष के ३ नाम—( १ ) निभृत ( २ )  
विनीत ( ३ ) प्रश्रित ।

( त्रीणि अविनीतस्य )

धृष्टे धृष्णग्वियातश्च

ढीठ पुरुष के ३ नाम—( १ ) धृष्ट ( २ ) धृष्णाज्  
वियात ।

( द्वे सप्रतिभस्य )

प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥२५॥

अति निर्भीक के २ नाम—( १ ) प्रगल्भ ( २ )  
प्रतिभान्वित ॥२५॥

( द्वे सकृजस्य )

स्यादधृष्टे तु शालीनः

लज्जायुक्त पुरुष के २ नाम—( १ ) अधृष्ट ( २ )  
शालीन ।

( द्वे परकीयधर्मादौ प्राप्ताश्चर्यस्य )

विलक्षो विस्मयान्विते ।

विस्मय में पड़े हुए पुरुष के २ नाम—( १ )  
विलक्ष ( २ ) विस्मयान्वित ।

( द्वे कातरस्य )

अधीरे कातरः

घबड़ाये मनुष्य के २ नाम—( १ ) अधीर  
( २ ) कातर ।

( चत्वारि भीरोः )

त्रस्ते भीरुभीरुक्भीलुकाः ॥२६॥

डरपोक पुरुष के ४ नाम—( १ ) त्रस्त ( २ )  
भीरु ( ३ ) भीरुक् ( ४ ) भीलुक ॥२६॥

( द्वे वाञ्छाशीलस्य )

आशंशुराशंसितरि

अभीष्ट वस्तु प्राप्ति की इच्छावाले के २  
नाम—( १ ) आशंसु ( २ ) आशसितृ ।

( द्वे ग्रहणशीलस्य )

गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।

लेने वाले के २ नाम—( १ ) गृह्यालु ( २ )  
ग्रहीतृ ।

( एकं श्रद्धया युक्तस्य )

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते

श्रद्धावान् का नाम—( १ ) श्रद्धालु ।

( द्वे पतनशीलस्य )

पतयालुस्तु पातुके ॥२७॥

गिरनेवाले के २ नाम—( १ ) पतयालु ( २ )  
पातुक ॥२७॥

( द्वे लज्जावतः )

लज्जाशीलेऽपत्रपिण्डः

लज्जावान् के २ नाम—( १ ) लज्जाशील ( २ )  
अपत्रपिण्ड ।

( द्वे वन्दनशीलस्य )

वन्दारुरभिवादके ।



वन्दना करनेवाले के २ नाम—(१) वन्दार  
(२) अमिवादक ।

( त्रीणि हिंस्रस्य )

शरारुर्घातुको हिंस्र

हत्या, घातक के ३ नाम—(१) शरार (२)  
घातुक (३) हिंस्र ।

( द्वे वर्धनशीलस्य )

स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥२८॥

बढ़नेवाले के २ नाम—(१) वर्धिष्णु (२)  
वर्धन ॥२८॥

( द्वे उत्पतनशीलस्य )

उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता

उछलने, कूदने वाले के २ नाम—(१) उत्प-  
तिष्णु (२) उत्पतिवृत् ।

( द्वे अलङ्करणशीलस्य )

अलङ्करिष्णुस्तु मण्डनः ।

गहना की इच्छावाले के २ नाम—( १ )  
अलङ्करिष्णु ( २ ) मण्डन ।

( त्रीणि भवनशीलस्य )

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता

होने की इच्छा वाले के ३ नाम—(१) भूष्णु  
( २ ) भविष्णु ( ३ ) भवितृ ।

( द्वे वर्तनशीलस्य )

वर्तिष्णुर्वर्तनः समा ॥२९॥

वर्तनेवाले के २ नाम—( १ ) वर्तिष्णु (२)  
वर्तन ॥२९॥

( द्वे तिरस्करणशीलस्य )

निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्

निकालने वाले के २ नाम—(१) निराकरिष्णु  
( २ ) क्षिप्नु ।

( एकम् सपनचिक्कणस्य )

सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।

सपन और चिकनी चीज का नाम—(१) मेदुर ।

( त्रीणि ज्ञातुः )

ज्ञाता तु विदुरो विन्दुः

जाननेवाले के ३ नाम—(१) ज्ञातृ (२) विदुर  
(३) विन्दु ।

( द्वे विकसनशीलस्य )

विकासी तु विकस्वरः ॥३०॥

फूलनेवाले, विकाशशील के २ नाम—(१)  
विकासिन् (२) विकस्वर ॥३०॥

( चत्वारि प्रसरणशीलस्य )

विस्तृत्वरो विस्तृमरो प्रसारी च विसारिणि ।

फैलने के स्वभाववाले के ४ नाम—(१) वि-  
स्तृत्वरो (२) विस्तृमरो (३) प्रसारिन् (४) विसारिन् ।

( षट् क्षमाशीलस्य )

साहष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिताक्षमी ३१

सहनशील के ६ नाम—(१) साहष्णु ( २ )  
सहन ( ३ ) क्षन्तृ ( ४ ) तितिक्षु ( ५ ) क्षमितृ  
( ६ ) क्षमिन् ॥३१॥

( त्रीणि कोपशीलस्य )

क्रोधनोऽमपेणः कोपी

क्रोधी के ३ नाम—(१) क्रोधन (२) अमपेण  
(३) कोपिन् ।

( द्वे अतिक्रोधशीलस्य )

चण्डस्वत्यन्तकोपनः ।

अतिशय क्रोधी के २ नाम—( १ ) चण्ड  
(२) अत्यन्तकोपन ।

( द्वे जागरणशीलस्य )

जागरूको जागरिता

जागने के स्वभाववाले के २ नाम—( १ )  
जागरूक (२) जागरितृ ।

( द्वे निद्राघूर्णितस्य )

घूर्णितः प्रचलायितः ॥३२॥

नींद में आँखें नचाने के २ नाम—(१) घूर्णित  
(२) प्रचलायित ॥३२॥

( त्रीणि निद्राशीलस्य )

स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुः

निद्राशील पुरुष के ३ नाम—( १ ) स्वप्नक्  
(२) शयालु (३) निद्रालु ।

( द्वे सुप्तस्य )

निद्राणशयितौ समौ ।

सोये हुए पुरुष के २ नाम—( १ ) निद्राण  
( २ ) शयित ।

( द्वे विमुखस्य )

पराङ्मुखः पराचीनः

विमुख के २ नाम—( १ ) पराङ्मुख ( २ )  
पराचीन ।

( द्वे अधोमुखस्य )

स्यादवाङ्मध्यधोमुखः ॥३३॥

अधोमुख के २ नाम—( १ ) अवाच् ( २ )  
अधोमुख ॥३३॥

( एकं देवपूजकस्य )

देवानञ्जति देवद्यङ्

देवता की पूजा करनेवाले का नाम—( १ )  
देवद्यच् ।

( एकम् विष्वगगमनशीलस्य )

विष्वद्यङ् विष्वगञ्जति ।

जो चारो ओर जाय या पूजन करे, उसका  
नाम—( १ ) विष्वद्यच् ।

( एकम् सहगमनशीलस्य )

य. सहाञ्जति सध्यङ् स.

जो साथ-साथ चले, उसका नाम—( १ )  
सध्यच् ।

( एकम् यस्तिरोऽञ्जति तस्य )

स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्जति ॥३४॥

जो टेढा चले, उसका १ नाम—( १ ) तिर्यच् ॥३४॥

( त्रीणि वक्तुः )

वदो वदावदो वक्ता

वक्ता के ३ नाम—( १ ) वद ( २ ) वदावद  
( ३ ) वक्तृ ।

( द्वे अनवद्योद्गमवादिनः )

वागीशो वाक्पतिः समौ ।

जो स्पष्ट और उग्र रीति से भाषण करे,  
उसके २ नाम—( १ ) वागीश ( २ ) वाक्पति ।

( द्वे नैयायिकस्य )

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी

नैयायिक के २ नाम—( १ ) वाचोयुक्तिपटु  
( २ ) वाग्मिन् ।

( द्वे बहुभाषिकस्य )

वाघदूकोऽतिवक्त्रि ॥३५॥

ज्यादा वक्-वक् करनेवाले के २ नाम—( १ )  
वाघदूक ( २ ) अतिवक्त्र् ॥३५॥

( चत्वारि निद्यभाषणशीलस्य )

स्याजलपाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।

बुरी और न कहने लायक बातें बरुने वाले के  
४ नाम—( १ ) जलपाक ( २ ) वाचाल ( ३ ) वाचाट  
( ४ ) बहुगर्हवाच् ।

( त्रीणि अप्रियवादिनः )

दुर्मुखे मुखरावद्धमुखौ

कड़वी बात बोलनेवाले के ३ नाम—( १ )  
दुर्मुख ( २ ) मुखर ( ३ ) अवद्धमुख ।

( द्वे प्रियंवदस्य )

शक्ता प्रियंवदे ॥३६॥

मीठी बात बोलनेवाले के २ नाम—( १ ) शक्ता  
( २ ) प्रियवद ॥३६॥

( द्वे अस्पृष्टभाषिणः )

लोहल. स्यादस्फुटवाक्

साफ न बोलनेवाले के २ नाम—( १ ) लोहल  
( २ ) अस्फुटवाच् ।

( द्वे गर्हवादिनः )

गर्हवादी तु कद्ध ।

निन्दित बात बरुनेवाले के २ नाम—( १ )  
गर्हवादिन् ( २ ) कद्ध ।

( द्वे दोषरथनशीलस्य )

समौ कुवादकुचरौ

दूसरो के दोष कहनेवाले ( खुचर निकालने  
वाले ) के २ नाम—( १ ) कुवाद ( २ ) कुचर ।

( द्वे अपस्वरयुक्तस्य )

स्यादसौम्यस्वराऽस्वरः ॥३७॥

कर्णकटु स्वरवाले के २ नाम—(१) असौम्य-  
स्वर (२) अस्वर ॥३७॥

( द्वे शब्दशीलस्य )

रवणः शब्दनः

चिल्लानेवाले के २ नाम—( १ ) रवण (२)  
शब्दन ।

( द्वे स्तुतिविशेषवादिनः )

नान्दीवादी नान्दीकर. समौ ।

<sup>१</sup> नाटक के आरम्भ में मंगलाचरण करनेवाले  
के २ नाम—(१) नान्दीवादिन् (२) नान्दीकर ।

( द्वे अतिशयमूढस्य )

<sup>१</sup> जडोऽज्ञः

निपट गँवार ( मूर्ख ) के २ नाम—(१) जट  
(२) अज्ञ ।

( एक य श्रोतुं वक्तु च शिक्षितो न भवति तस्य )

एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥३८॥

जो सुनना या बोलना कुछ भी न जानता हो,  
उस (गूँगे वहरे) का नाम—(१) एडमूक ॥३८॥

( द्वे तूष्णीभाषयुक्तस्य )

तूष्णीशीलस्तु तूष्णीको

चुप रहनेवाले के २ नाम—( १ ) तूष्णीशील  
(२) तूष्णीक ।

( त्रीणि नम्रस्य )

नम्रोऽवासा दिगम्बरे ।

नगे पुरुष के ३ नाम—(१) नम्र (२) अवास्  
(३) दिगम्बर ।

( द्वे निष्कासितस्य )

निष्कासिताऽवकृष्टः स्यात्

निकाले हुए के २ नाम—(१) निष्कासित (२)  
अवकृष्ट ।

<sup>१</sup> भाशोर्वचनसमुदा स्तुतिर्यस्मात्प्रवर्तते ।

देशद्विजनृपादीनां तस्मान्निन्दाति कीर्त्यते ॥ इति भरतः ।

<sup>२</sup>—एष्ट वानिष्ट वा मुखदुःखे वा न चेद् यो मोहात् ।

विन्दति परवशान् स भेदिह जडतमकः पुरपः ॥

( द्वे धिक्कृतस्य )

अपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥३९॥

धिकारे हुए पुरुष के २ नाम—(१) अपध्वस्त  
(२) विक्कृत ॥३९॥

( द्वे भग्नदर्पस्य )

आत्तगर्वोऽभिभूतः स्यात्

जिसका घमड़ दूर किया जा चुका है, उसके  
२ नाम—(१) आत्तगर्व (२) अभिभूत ।

( द्वे धनादिक दापयित्वा वशीकृतस्य )

दापित साधितः समौ ।

धन आदि दिलाकर वश में किये हुए के २  
नाम—(१) दापित (२) साधित ।

( चत्वारि निरादृतस्य )

प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥

अपमानित मनुष्य के ४ नाम—(१) प्रत्यादिष्ट  
(२) निरस्त (३) प्रत्याख्यात (४) निराकृत ॥४०॥

( द्वे विवर्णीकृतस्य )

निकृतः स्याद्विप्रकृतः

जिसकी सूरत खराब कर दी गयी हो, उसके  
२ नाम—(१) निकृत (२) विप्रकृत ।

( द्वे वचितस्य )

विप्रलब्धस्तु वचितः ।

ठगाये हुए मनुष्य के २ नाम—(१) विप्रलब्ध  
(२) वचित ।

( चत्वारि मनसि हृतस्य )

मनोहृत प्रतिहृत. प्रतिवद्धो हृतश्च स ॥४१॥

मन मारे हुए मनुष्य के ४ नाम—(१) मनो-  
हृत (२) प्रतिहृत (३) प्रतिवद्ध (४) हृत ॥४१॥

( द्वे कृताक्षेपस्य )

अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तः

जिन पर किसी प्रकार का आक्षेप किया गया  
हो, उसके २ नाम—(१) अधिक्षिप्त (२) प्रतिक्षिप्त ।

( त्रीणि यद्धस्य )

यद्धे कालितसंयतो ।

यधे हुए पुरुष के ३ नाम—(१) यद्ध (२)

कीलित (३) सयत ।

( द्वे आपद्ग्रस्तस्य )

आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्

आपत्ति में पड़े हुए के २ नाम—(१) आपन्न  
(२) आपत्प्राप्त ।

( द्वे भयापलायितस्य )

कादिशीको भयद्रुतः ॥४२॥

भय से भागे हुए मनुष्य के २ नाम—(१)

कादिशीक (२) भयद्रुत ॥४२॥

( श्रीणि लोकापवादेन दूषितस्य )

आक्षारितः क्षारितोऽभिशास्ते

भूठ-भूठ मैथुन का दोष लगाये गये मनुष्य  
के ३ नाम—(१) आक्षारित ( २ ) क्षारित ( ३ )  
अभिशास्त ।

( द्वे चलप्रकृते )

संकसुकोऽस्थिरे ।

चंचल प्रकृतिवाले के २ नाम—(१) संकसुक  
(२) अस्थिर ।

( द्वे व्यसनपीडितस्य )

व्यसनार्तोपरकौ द्वौ

दैवी या मानुषी पीडा से पीडित मनुष्य के  
२ नाम—(१) व्यसनार्त (२) उपरक्त ।

( द्वे शोकादिभिरितिकर्तव्यतामूढस्य )

विहस्तव्याकुलौ समौ ॥४३॥

शोक आदि के कारण जिसकी बुद्धि मारी गई  
हो, उसके २ नाम—(१) विहस्त (२) व्याकुल ॥४३॥

( द्वे शोकादिना गात्रमहं प्राप्तस्य )

विक्रवो विह्वलः स्यात्

शोक आदि से जिसका अंगभग हो गया हो,  
उसके २ नाम—(१) विक्रव (२) विह्वल ।

( द्वे भासन्नमरणदूषितबुधेः )

विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।

मृत्यु समीप आ जाने से जिसकी बुद्धि खराब  
हो गयी हो, उसके २ नाम—( १ ) विवश ( २ )  
अरिष्टदुष्टधी ।

( द्वे कशाघातयोग्यस्य )

कश्यः कशाहं

कोड़े लगने योग्य मनुष्य के २ नाम—(१)  
कश्य (२) कशाहं ।

( एकं जिघांसोः )

सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥४४॥

किसी की हत्या करने पर उद्यत का नाम—  
(१) आततायिन् ॥४४॥

( द्वे द्वेषाहंस्य )

द्वेष्ये त्वक्षिगतः

द्वेष करने योग्य व्यक्ति के २ नाम—( १ )  
द्वेष्य (२) अक्षिगत ।

( द्वे वधाहंस्य )

वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ।

वध ( शिर काटने के ) योग्य मनुष्य के २  
नाम—( १ ) वध्य ( २ ) शीर्षच्छेद्य ।

( एकं विषेण वध्यस्य )

विष्यो विषेण यो वध्यः

जहर (माहुर) देने योग्य मनुष्य का नाम—  
(१) विष्य ।

( एकं मुसलेन वधाहंस्य )

मुसल्यो मुसलेन यः ॥४५॥

मूसर से मारने योग्य मनुष्य का नाम—(१)  
मुसल्य ॥४५॥

( द्वे पुण्यकर्मणः )

शिश्वदानोऽकृष्णकर्मा

पवित्र कार्य करनेवाले के २ नाम—(१) शि-  
श्वदान (२) अकृष्णकर्मन् ।

( द्वेऽविचार्य वधादिकर्मकतुः )

चपलश्चिकुरः समौ ।

बिना (दोषादि) विचार किये ही मार देनेवाले  
के २ नाम—(१) चपल (२) चिकुर ।

( द्वे दोषमात्र पश्यतः )

दोषैकदृक्पुरोभागी

केवल दोष देखनेवाले के २ नाम—(१)

दोषैकदृश् (२) पुरोभाग्निन् ।

( त्रीणि कुटिलहृदयस्य )

निकृतस्त्वन्नुजः शठः ॥४६॥

कपटी, कुटिल हृदयवाले मनुष्य के ३ नाम—

(१) निकृत (२) अन्नुज (३) शठ ॥४६॥

( द्वे परापवादं वदतः )

कणजपः सूचकः स्यात्

चुंगलखोर के २ नाम—( १ ) कर्णजप (२) सूचक ।

( त्रयं परस्पर भेदनशीलस्य )

पिशुनो दुर्जनः खलः ।

आपस में फूट डालनेवाले के ३ नाम—(१)

पिशुन (२) दुर्जन (३) खल ।

( चत्वारि क्रूरस्य )

नृशंसो घातुकः क्रूरः पापः

क्रूर मनुष्य के ४ नाम—( १ ) नृशंस (२) घातुक (३) क्रूर (४) पाप ।

( द्वे प्रतारणशीलस्य )

धूर्तस्तु वंचकः । ४७ ।

ठगहारी करनेवाले के २ नाम—( १ ) धूर्त (२) वंचक ॥४७॥

( पण्मुखस्य )

अक्षे मूढयथाजातमुखं वैधेयवालिशाः ।

मुख के ६ नाम—( १ ) अक्ष ( २ ) मूढ ( ३ ) यथाजात ( ४ ) मुख ( ५ ) वैधेय ( ६ ) बालिश ।

( पंच कृपणस्य )

कदर्ये कृपणभुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥४८॥

कंजूस के ५ नाम—( १ ) कदर्य ( २ ) कृपण (३) जुद्र (४) किंपचान (५) मितपच ॥४८॥

( पंच दरिद्रस्य )

निःस्पृहस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः

दरिद्र के ५ नाम—( १ ) निःस्पृह ( २ ) दुर्विध ( ३ ) दीन ( ४ ) दरिद्र ( ५ ) दुर्गत ।

( पंच याचकस्य )

वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥४९॥

याचक के ५ नाम—( १ ) वनीयक ( २ ) याचनक (३) मार्गण (४) याचक (५) आर्थिन् ॥४९॥

( द्वे अहंकारिणः )

अहंकारवानहंयुः

अहंकार युक्त पुरुष के २ नाम—( १ ) अहंकारवत् ( २ ) अहंयु ।

( द्वे शुभान्वितस्य )

शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

कल्याणयुक्त पुरुष के २ नाम—( १ ) शुभंयु ( २ ) शुभान्वित ।

( एकं देवानाम् )

दिव्योपपादुका देवाः

बिना माता-पिता के उत्पन्न देवों का नाम—( १ ) दिव्योपपादुक ।

( एकं नृगवादीनाम् )

नृगवाद्या जरायुजाः ॥५०॥

मनुष्य, गौ आदि गर्भाशय से उत्पन्न होनेवाले जीवों का नाम—( १ ) जरायुज ॥५०॥

( एकं कृमिदंशादीनाम् )

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः

कीड़े और मच्छर आदि का नाम—( १ ) स्वेदज ।

( एकं पक्षिसर्पादीनाम् )

पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।

पक्षी और साँप आदि का नाम—( १ ) अण्डज ।

( इति प्राणिवर्ग )

( एक तरुगुल्मादीनाम् )

उद्भिदस्तर्गुल्माद्याः

वृक्ष, लता और घास आदि का नाम—(१) उद्भिद ।

( त्रीणि उद्भिदः )

उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥५१॥

उद्भिद् के ३ नाम—( १ ) उद्भिद् ( २ )  
उद्भिज्ज ( ३ ) उद्भिद ।

( द्वादश सुन्दरस्य )

सुन्दर रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।  
कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥५२॥

सुन्दर के १२ नाम—( १ ) सुन्दर ( २ )  
रुचिर ( ३ ) चारु ( ४ ) सुषम ( ५ ) साधु ( ६ )  
शोभन ( ७ ) कान्त ( ८ ) मनोरम ( ९ ) रुच्य  
( १० ) मनोज्ञ ( ११ ) मञ्जु ( १२ ) मञ्जुल ॥५२॥  
( एकं यस्य दर्शनाद्दृढमनसोस्तृप्तिर्नास्ति तस्य )  
तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।

जिमको देखने से मन तथा नेत्रों की तृप्ति न  
हो, उसका नाम—( १ ) आसेचनक ।

( पद्मभीष्टस्य )

अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितवल्लभं प्रियम् ॥५३॥  
प्यारे के ६ नाम—( १ ) अभीष्ट ( २ )  
अभीप्सित ( ३ ) हृद्य ( ४ ) दयित ( ५ ) वल्लभ  
( ६ ) प्रिय ॥ ५३ ॥

( त्रयोदशाधमस्य )

निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरैफयाप्यावमाध्रमा ।

कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्हाणकाः समाः ॥५४॥

अधम के १३ नाम—( १ ) निकृष्ट ( २ )  
प्रतिकृष्ट ( ३ ) अर्वन् ( ४ ) रैफ ( ५ ) याप्य  
( ६ ) अवम ( ७ ) अधम ( ८ ) कुपूय ( ९ )  
कुत्सित ( १० ) अवद्य ( ११ ) खेट ( १२ ) गर्हा ( १३ )  
अणक ॥५४॥

( चत्वार्यनुज्ज्वलस्य )

मलीमसं तु मलिनं कच्चर मलदूषितम् ।

मैली वस्तु के ४ नाम—( १ ) मलीमस  
( २ ) मलिन ( ३ ) कच्चर ( ४ ) मलदूषित ।

( त्रीणि पवित्रस्य )

पूतं पवित्रं मेध्यं च

पवित्र, साफ के ३ नाम—( १ ) पूत ( २ )  
पवित्र ( ३ ) मेध्य ।

( एक स्वभावतो निर्मलस्य )

वीध्रं तु विमलार्थकम् ॥५५॥

स्वभाव से विमल का नाम—( १ ) वीध्र ॥५५॥

( पच मृष्टस्य )

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।

साफ किये हुए के ५ नाम—( १ ) निर्णिक्त  
( २ ) शोधित ( ३ ) मृष्ट ( ४ ) निःशोध्य ( ५ )  
अनवस्कर ।

( द्वे निर्बलस्य )

असारं फल्गु

सार रहित वस्तु के २ नाम—( १ ) असार  
( २ ) फल्गु ।

( चत्वारि शून्यस्य )

शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥५६॥

शून्य, सूना, खाली के ४ नाम—( १ ) शून्य  
( २ ) वशिक ( ३ ) तुच्छ ( ४ ) रिक्तक ॥५६॥

( सप्तदश प्रधानस्य )

क्लीवे प्रधान प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमा ।

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवरार्ध्यवत् ॥५७॥

परार्ध्याग्रप्राग्रहरप्राग्रघाग्रघाग्रीबमग्रियम् ।

प्रधान के १७ नाम—( १ ) प्रधान ( २ )  
प्रमुख ( ३ ) प्रवेक ( ४ ) अनुत्तम ( ५ ) उत्तम  
( ६ ) मुख्य ( ७ ) वर्य ( ८ ) वरेण्य ( ९ )  
प्रवर्ह ( १० ) अनवरार्ध्य ( ११ ) परार्ध्य ( १२ ) अग्र  
( १३ ) प्राग्रहर ( १४ ) प्राग्रघ ( १५ ) अग्रघ ( १६ )  
अग्रीय ( १७ ) अग्रिय । इनमें ( १ ) नित्य नपु-  
सक लिङ्ग है ॥५७॥

( पञ्चात्यन्तशोभनस्य )

श्रेयान् श्रेष्ठ पुष्कल स्यात्सत्तमश्चातिशोभने

अतिशय सुन्दर के ५ नाम—( १ ) श्रेयस्  
( २ ) श्रेष्ठ ( ३ ) पुष्कल ( ४ ) सत्तम ( ५ )  
अतिशोभन ॥५८॥

( एते श्रेष्ठार्थवाचकाः )

स्युर्दक्षरपदे व्याघ्रपुंगवर्षमकुञ्जराः ।

सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥५९॥

व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नाग आदि शब्द जब किसी शब्द के उत्तर पद में लग जाते हैं, तब वे श्रेष्ठार्थवाचक हो जाते हैं । जैसे—पुरुषव्याघ्र, नरपुंगव आदि । ये सभी शब्द पुँल्लिङ्ग हैं ॥५६॥

( त्रीण्यप्रधानस्य )

अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।

अप्रधान के ३ नाम—( १ ) अप्राग्र्य ( २ ) अप्रधान ( ३ ) उपसर्जन । इनमें (१) पुं-स्त्री-नपुंसक, (२-३) नपुंसक में होते हैं ।

( नव विशालस्य )

विशङ्कटं पृथु वृहद्विशालं पृथुल महत् ॥६०॥  
वड्रोऽविपुलम्

चौड़ाई के ६ नाम—( १ ) विशङ्कट ( २ ) पृथु ( ३ ) वृहत् ( ४ ) विशाल ( ५ ) पृथुल ( ६ ) महत् ( ७ ) वड् ( ८ ) उरु ( ९ ) विपुल ॥६०॥

( चत्वारि स्थूलस्य )

पीनपीन्नी तु स्थूलपीवरे ।

मोटे के ४ नाम—( १ ) पीन ( २ ) पीवन् ( ३ ) स्थूल ( ४ ) पीवर ।

( त्रीण्यल्पस्य )

स्तोकाल्पक्षुल्लकाः

शोड़े के ३ नाम—( १ ) स्तोक ( २ ) अल्प ( ३ ) क्षुल्लक ।

( एकादश सूक्ष्मस्य )

सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दध्रं कृशं तनु ॥६१॥

स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणव ।

सूक्ष्म, वारीक, महीन के ११ नाम—( १ ) सूक्ष्म ( २ ) श्लक्ष्ण ( ३ ) दध्र ( ४ ) कृश ( ५ ) तनु ( ६ ) मात्रा (स्त्री०) ( ७ ) त्रुटि (स्त्री०) ( ८ ) लव (९) लेश (१०) कण (११) अणु ॥६१॥

( पञ्चात्यटस्य )

अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीय कनीयोऽणीय इत्यपि ॥६२॥

बहुत शोड़े के ५ नाम—(१) अत्यल्प (२) अल्पिष्ठ (३) अल्पीयम् (४) कनीयम् (५) अणीयम् ॥६२॥

(द्वादश प्रभूतस्य)

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ।

पुरुहू-पुरु भूयिष्ठ स्फारं भूयश्च भूरि च ॥६३॥

अधिकता के १२ नाम—( १ ) प्रभूत ( २ ) प्रचुर ( ३ ) प्राज्य ( ४ ) अदभ्र ( ५ ) बहुल ( ६ ) बहु ( ७ ) पुरुहू ( ८ ) पुरु ( ९ ) भूयिष्ठ ( १० ) स्फार (११) भूयम् (१२) भूरि ॥६३॥  
(येषां संख्येयानां संख्या शतात् सहस्राच्च परास्ते-  
पामेकैकम् )

परः शताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ।

जिन सख्येय पदार्थों की संख्या सौ तथा सहस्रादि से अधिक हो, उनके एक-एक नाम—पर शत आदि ।

( द्वे गणयितुं शक्यस्य )

गणनीये तु गण्यम्

गिनने योग्य वस्तु के २ नाम—( १ ) गणनीय (२) गण्य ।

( द्वे गणितस्य )

संख्याते गणितम्

जिसकी गणना की जा चुकी है, उसके २ नाम—( १ ) संख्यात ( २ ) गणित ।

( चतुर्दश समग्रस्य )

अथ समं सर्वम् ॥६४॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि

नि.शेषम्

समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनुनके ॥६५॥

समग्र के १४ नाम—( १ ) सम ( २ ) सर्व ( ३ ) विश्व ( ४ ) अशेष ( ५ ) कृत्स्न (६) नमस्त (७) निखिल (८) अखिल (९) नि शेष (१०) समग्र (११) सकल (१२) पूर्ण (१३) अखण्ड (१४) अनुनक ॥६४॥६५॥

( त्रीणि निविदस्य )

घनं निरन्तरं सान्द्रम्

घने के ३ नाम—( १ ) घन ( २ ) निरन्तर ( ३ ) सान्द्र ।

( श्रीणि विरलस्य )

पेलवं विरलं तनु ।

विरले (अलग-अलग) के ३ नाम—(१) पेलव  
(२) विरल (३) तनु ।

( पञ्चदश समीपस्य )

समीपे निकटसन्नसन्निकृष्टसनीडवत् ॥६६॥

सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।

उपकरणान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोव्ययम्

समीप, पास के १५ नाम—(१) समीप  
(२) निकट (३) आसन्न (४) सन्निकृष्ट (५)  
सनीड (६) सदेश (७) अभ्याश (८) सविध  
(९) समर्याद (१०) सवेश (११) उपकरण  
(१२) अन्तिक (१३) अभ्यर्ण (१४) अभ्यग्रा  
(१५) अभितस् । इनमें “अभित” शब्द  
अव्यय है ॥ ६६॥६७॥

( श्रीणि संस्रस्य )

संस्रक्तं त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।

सटे हुए के ३ नाम—(१) संस्रक्त (२)  
अव्यवहित (३) अपदान्तर ।

( द्वे अतिनिकटस्य )

नेदिष्ठमन्तिकतमम्

अतिशय नजदीक के २ नाम—(१) नेदिष्ठ  
(२) अन्तिकतम ।

( द्वे दूरस्य )

स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम् ॥६८॥

दूर के २ नाम—(१) दूर (२) विप्रकृष्ट ॥६८॥

( श्रीण्यस्यन्तदूरस्य )

दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरम्

बहुत दूर के ३ नाम—(१) दवीयस् (२) दविष्ठ  
(३) सुदूर ।

( द्वे दीर्घस्य )

दीर्घमायतम् ।

लम्बा के २ नाम—(१) दीर्घ (२) आयत ।

( श्रीणि वर्तुलस्य )

वर्तुलं निस्तलं वृत्तम्

वर्तुल ( गोल ) के ३ नाम—(१) वर्तुल (२)

निस्तल (३) वृत्त ।

( एकं यस्त्वभावाद्गुणतमुपाधिवशादीपन्नतं तस्य )

बन्धुरं तून्नतानतम् ॥६९॥

जो स्वभावतः ऊँचा है, किन्तु उपाधि वश  
कुछ नीचा हो गया है, उसका नाम—(१)  
बन्धुर ॥६९॥

( षट् उन्नतस्य )

उच्चप्राशुन्नतोदगोच्छ्रितास्तुङ्गे

ऊँचाई के ६ नाम—(१) उच्च (२) प्राशु (३)  
उन्नत (४) उदग्र (५) उच्छ्रित (६) तुङ्ग ।

( पञ्च ह्रस्वस्य )

अथ वामने ।

न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युः

छोटाई के ५ नाम—(१) वामन (२) न्यच  
(३) नीच (४) खर्व (५) ह्रस्व ।

( श्रीण्यधोमुखस्य )

अवाग्रेऽवनतानतम् ॥७०॥

नीचे मुख ( ओंछे मुँह ) के ३ नाम—(१)  
अवाग्र (२) अवनत (३) आनत ॥७०॥

( एकादश वक्रस्य )

अरालं वृजिनं जिहामूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ।

आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेलितं वक्रमित्यपि ७१

टेढ़ाई के ११ नाम—(१) अराल (२) वृजिन  
(३) जिह्व (४) ऊर्मिमत् (५) कुञ्चित (६) नत (७)  
आविद्ध (८) कुटिल (९) भुग्न (१०) वेलित (११)  
वक्र ॥७१॥

( श्रीण्यवक्रस्य )

ऋजावजिह्वप्रगुणौ

सिधाई के ३ नाम—(१) ऋजु (२) अजिह्व  
(३) प्रगुण ।

( श्रीण्याकुलस्य )

व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।

आकुल के ३ नाम—(१) व्यस्त (२) अप्रगुण  
(३) आकुल ।



( पञ्च नित्यस्य )

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातना ७२

नित्य के ५ नाम—( १ ) शाश्वत ( २ ) ध्रुव  
( ३ ) नित्य ( ४ ) सदातन ( ५ ) सनातन ॥७२॥

( त्रीण्यतिस्थिरस्य )

स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेयान्

अतिशय स्थिर के ३ नाम—( १ ) स्थास्तु ( २ )  
स्थिरतर ( ३ ) स्थेयस् ।

( एकं निश्चलस्य )

एकरूपतया तु यः ।

कालव्यापी स कूटस्थः

१ जो सदा एकरूप से बहुत समय तक स्थिर  
रहे, उस आकाशादि का नाम—( १ ) कूटस्थ ।

( द्वे अघरस्य )

स्थावरो जङ्गमेतरः ॥७३॥

अचल वस्तु, वृक्ष आदि के २ नाम—( १ )  
स्थावर ( २ ) जङ्गमेतर ॥७३॥

( षट् चरस्य )

चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमिहं चराचरम् ।

चल वस्तु के ६ नाम—( १ ) चरिष्णु ( २ )  
जङ्गम ( ३ ) चर ( ४ ) त्रस ( ५ ) इह ( ६ )  
चराचर ।

( त्रीणि कम्पनशालस्य )

चलनं कम्पनं कम्पम्

झंपनेवाली वस्तु के ३ नाम—( १ ) चलन  
( २ ) कम्पन ( ३ ) कम्प ।

( सप्त चंचलस्य )

चल लोल चलाचलम् ॥७४॥

चञ्चलं तरल चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।

चंचलता के ७ नाम—( १ ) चल ( २ )  
लोल ( ३ ) चलाचल ( ४ ) चंचल ( ५ ) तरल  
( ६ ) पारिप्लव ( ७ ) परिप्लव ॥७४॥१—सारथ्य में 'कूटस्थ' ऐसे आत्मा-पुरुष को कहते हैं,  
जो परिणामरहित हो और जामद, रक्षस और सुषुप्त तीनों  
भगवत्प्रभो में एक समान रहे । न्याय में परमेश्वर को  
'कूटस्थ' कहा है और उसे अन्यगुणरहित माना है ।

( द्वे अधिकस्य )

अतिरिक्तः समधिकः

अधिक के २ नाम—( १ ) अतिरिक्त ( २ )  
समधिक ।

( द्वे दृढसन्धानयुक्तस्य )

दृढसन्धिस्तु संहत ॥७५॥

बड़ा मेली (मिलापी) या मजबूत जोड़वाली  
वस्तु के २ नाम—( १ ) दृढसन्धि ( २ ) संहत ॥७५॥

( नव कठिनस्य )

कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।

जठर मूर्तिमन्मूर्तम्

कठिना के ९ नाम—( १ ) कर्कश ( २ )  
कठिन ( ३ ) क्रूर ( ४ ) कठोर ( ५ ) निष्ठुर  
( ६ ) दृढ ( ७ ) जठर ( ८ ) मूर्तिमत् ( ९ ) मूर्त ।

( त्रीणि प्रवृद्धस्य )

प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥७६॥

बहुत बड़े हुए के ३ नाम—( १ ) प्रवृद्ध  
( २ ) प्रौढ ( ३ ) एधित ॥७६॥

( पञ्च पुरातनस्य )

पुराणे प्रतनप्रज्ञपुरातनचिरन्तनाः ।

पुरातन के ५ नाम—( १ ) पुराण ( २ )  
प्रतन ( ३ ) प्रज्ञ ( ४ ) पुरातन ( ५ ) चिरन्तन ।

( सप्त नूतनस्य )

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।  
नूतश्चनवीन के ७ नाम—( १ ) प्रत्यग्र ( २ )  
अभिनव ( ३ ) नव्य ( ४ ) नवीन ( ५ ) नूतन  
( ६ ) नव ( ७ ) नूत ॥७७॥

( चत्वारि कोमलस्य )

सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।

कोमल के ४ नाम—( १ ) सुकुमार ( २ )  
कोमल ( ३ ) मृदुल ( ४ ) मृदु ।

( चावायंनुगस्य )

अन्वगन्वत्तमनुगेऽनुपद क्लायमव्ययम् ॥७८॥

वाद, पीछे के ८ नाम—( १ ) अन्वद् ( २ )

अन्वक्त ( ३ ) अनुग ( ४ ) अनुपद । ये सभी शब्द नपुंसक एव अव्यय हैं ॥७८॥

( द्वे इन्द्रियग्राह्यस्य )

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकम्

इन्द्रियग्राह्य, प्रत्यक्ष वस्तु के २ नाम—( १ )

अप्रत्यक्ष ( २ ) ऐन्द्रियक ।

( द्वे इन्द्रियैरग्राह्यस्य धर्मादेः )

अप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

अप्रत्यक्ष ( धर्म आदि ) के २ नाम—( १ )

अप्रत्यक्ष ( २ ) अतीन्द्रिय ।

( सप्तैकाग्रस्य )

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥७९॥

अप्येकसर्गं एकाग्रयोऽप्येकायनगतोऽपि सः ।

एकाग्रता के ७ नाम—( १ ) एकतान ( २ )

अनन्यवृत्ति ( ३ ) एकाग्र ( ४ ) एकायन ( ५ )

एकसर्ग ( ६ ) एकाग्रय ( ७ ) एकायनगत ॥७९॥

( पञ्चकमाधस्य )

पुस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या

आदि के ५ नाम—( १ ) आदि ( २ ) पूर्व

( ३ ) पौरस्त्य ( ४ ) प्रथम ( ५ ) आद्य । इनमें

( १ ) पुल्लिङ्ग है । शेष ( २-५ ) पुं० स्त्री०

नपुंसक हैं ।

( षडन्त्यस्य )

अथास्त्रियाम् ॥८०॥

अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमा ।

अन्त के ६ नाम—( १ ) अन्त ( २ ) जघन्य

( ३ ) चरम ( ४ ) अन्त्य ( ५ ) पाश्चात्य ( ६ )

पश्चिम । इनमें ( १ ) पुनपुंसक है, ( २-६ )

त्रिलिङ्गी हैं ॥८०॥

( द्वे व्यर्थस्य )

मोघं निरर्थकम्

व्यर्थ के २ नाम—( १ ) मोघ ( २ ) निरर्थक ।

( चत्वारि स्पष्टस्य )

स्पष्ट स्फुटं प्रत्यक्तमुल्लवणम् ॥८१॥

साफ के ४ नाम—( १ ) स्पष्ट ( २ ) स्फुट

( ३ ) प्रव्यक्त ( ४ ) उल्लवण ॥८१॥

( द्वे सामान्यस्य )

साधारणं तु सामान्यम्

साधारण के २ नाम—( १ ) साधारण ( २ )

सामान्य ।

( त्रीण्यसहायस्य )

एकाकी त्वेक एककः ।

अकेले के ३ नाम—( १ ) एकाकिन् ( २ )

एक ( ३ ) एकक ।

( षड् भिन्नार्थकस्य )

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥८२॥

भिन्न के ६ नाम—( १ ) भिन्न ( २ ) अन्य-

तर ( ३ ) एक ( ४ ) त्व ( ५ ) अन्य ( ६ )

इतर ॥ ८२ ॥

( द्वे बहुविधस्य )

उच्चावच नैकभेदम्

बहुत तरह के २ नाम—( १ ) उच्चावच

( १ ) नैकभेद ।

( द्वे तूर्णस्य )

उच्चण्डं अविलम्बितम् ।

तुरन्त के २ नाम—( १ ) उच्चण्ड ( २ )

अविलम्बित ।

( द्वे मर्ममेदिन्य )

अरुन्तुदस्तु मर्मस्पृक्

मर्ममेदी के २ नाम—( १ ) अरुन्तुद ( २ )

मर्मस्पृक् ।

( द्वे निर्बाधस्य )

अबाध तु निरर्गलम् ॥८३॥

बिना अड़चन के २ नाम—( १ ) अबाध

( २ ) निरर्गल ॥८३॥

( चत्वारि विपरीतस्य )

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च ।

विपरीत, उलटा के ४ नाम—( १ ) प्रसव्य

( २ ) प्रतिकूल । ( ३ ) प्रतिसव्य ( ४ ) अपष्ठु ।

( एकं वामशरीरस्य )

वामं शरीरं सव्यं स्यात्

वायें अंग का नाम—( १ ) सव्य ।

( एकं दक्षिणवारीरस्य )

अपसव्यं तु दक्षिणम् ॥८४॥

दहिने अंग का नाम—( १ ) अपसव्य ॥८४॥

( द्वे अद्यावकाशस्य वर्त्मादेः )

संकटं ना तु संवाधः

गली आदि के सकरेपन के २ नाम—( १ ) संकट ( २ ) संवाध । इनमें ( १ ) तीनों लिङ्गों में और ( २ ) पुंलिङ्ग है ।

( द्वे दुरधिगम्यस्य )

कलिलं गहनं समे ।

कठिनाई से प्राप्त होने, दुष्प्रवेश के २ नाम—( १ ) कलिल ( २ ) गहन । जैसे—‘गहनं शास्त्रम्’ यानी शास्त्रज्ञान कठिनाई से प्राप्त होता है ।

( त्रीणि जनाग्निभिरत्यंतमिश्रस्य )

संकीर्णं संकुलाकीर्णं

मनुष्य आदि से खचाखच भरे हुए के ३ नाम—( १ ) संकीर्ण ( २ ) संकुल ( ३ ) आकीर्ण ।

( द्वे कृतमुण्डनस्य )

मुरिडतं परिधापितम् ॥८५॥

सिर मुकाये मनुष्य के २ नाम—( १ ) मुरिडत ( २ ) परिधापित ॥८५॥

( त्रीणि गुम्फितस्य )

ग्रन्थितं सन्दितां दृढम्

गुंथे हुए के ३ नाम—( १ ) ग्रन्थित ( २ ) सन्दिता ( ३ ) दृढ ।

( त्रीणि विस्तृतस्य )

विस्तृतं विस्तृतं ततम् ।

फैलाव के ३ नाम—( १ ) विस्तृत ( २ ) विस्तृत ( ३ ) तत ।

( द्वे विस्तृतस्य )

अन्तर्गतं विस्तृतं स्यात्

भूली गत के २ नाम—( १ ) अन्तर्गत ( २ ) विस्तृत ।

( द्वे लब्धस्य )

प्राप्तप्रणिहिते समे ॥८६॥

प्राप्त वस्तु के २ नाम—( १ ) प्राप्त ( २ ) प्रणिहित ॥८६॥

( षट् ईषत्कम्पितस्य )

वेल्लितप्रैखिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।

थोड़ा काँपने के ६ नाम—( १ ) वेल्लित ( २ ) प्रैखित ( ३ ) आधूत ( ४ ) चलित ( ५ ) आकम्पित ( ६ ) धुत ।

( सप्त प्रेरितस्य )

नुचनुष्मास्तनिष्ठयूताविद्धक्षिप्तेरिता समाः ॥८७॥

मेजे हुए के ७ नाम—( १ ) नुत्त ( २ ) नुन्न ( ३ ) अस्त ( ४ ) निष्ठयूत ( ५ ) आविद्ध ( ६ ) क्षिप्त ( ७ ) ईरित ॥८७॥

( द्वे प्राकारादिना सर्वतो वेष्टितस्य )

परिक्षिप्तं तु निवृतं

साई आदि के द्वारा चौतरफा घिरे स्थान के २ नाम—( १ ) परिक्षिप्त ( २ ) निवृत ।

( द्वे चोरितस्य )

मूपित मूपितार्थकम् ।

चोरी की हुई वस्तु के २ नाम—( १ ) मूपित ( २ ) मूपित ।

( द्वे प्रसरणयुक्तस्य )

प्रवृद्धप्रसृते

फैलायी हुई चीज के २ नाम—( १ ) प्रवृद्ध ( २ ) प्रसृत ।

( द्वे निक्षिप्तस्य )

न्यस्तनिस्तृष्टे

धरोहर में रखी हुई वस्तु के २ नाम—( १ ) न्यस्त ( २ ) निस्तृष्ट ।

( द्वे अभ्यावर्तितस्य )

गुणिताहते ॥८८॥

गुणा की हुई सख्या के २ नाम—( १ ) गुणित ( २ ) आहत ॥८८॥

( द्वे प्रसृतस्य )

निविन्ध्योपचिते

समृद्ध, बढे हुए के २ नाम—( १ ) निदिग्ध  
( २ ) उपचित ।

( द्वे गोपनयुक्तस्य )

गूढगुप्ते

छिपी वस्तु के २ नाम—( १ ) गूढ ( २ )  
गुप्त ।

( द्वे धूलिलिप्तस्य )

गुरिष्ठतरुषिते ।

धूल से सनी वस्तु के २ नाम—( १ ) गुरिष्ठ  
( २ ) रुषित ।

( द्वे द्रवीभूतस्य )

द्रुतावदीर्णे

रसीले के २ नाम—( १ ) द्रुत ( २ ) अवदीर्ण ।

( द्वे उत्तोलितस्य शस्त्रादेः )

उद्गूर्णोद्यते

किसी को मारने के लिये शस्त्र उठाये हुए के  
२ नाम—( १ ) उद्गूर्ण ( २ ) उद्यत ।

( द्वे शिक्मे स्थापितस्य )

काचितशिक्यते ॥८६॥

छीके ( शिकहर ) पर रखी हुई वस्तु के २  
नाम—( १ ) काचित ( २ ) शिक्यत ॥८६॥

( द्वे नासिकया गृहीतगन्धस्य पुष्पादेः )

घ्राणघाते

नासिका से सूँधी सुगन्धि के २ नाम—( १ )  
घ्राण ( २ ) घ्रात ।

( द्वे विलिप्तस्य )

दिग्धलिप्ते

पक्क आदि से सनी वस्तु के २ नाम—( १ )  
दिग्ध ( २ ) लिप्त ।

( द्वे उन्नीतस्य कृपादेर्जलादेः )

समुदकोद्भूते समे ।

ओगारे हुए कुए तथा जल आदि के २  
नाम—( १ ) समुदक ( २ ) उद्भूत ।

( पञ्च वेष्टितस्य )

वेष्टितं द्वाद्दलयितं संवीतं द्वाद्दमावृतम् ॥८७॥

नदी या सेना आदि से घिरे नगर आदि के  
५ नाम—( १ ) वेष्टित ( २ ) वलयित ( ३ )

सवीत ( ४ ) रुद्ध ( ५ ) आवृत ॥८७॥

( द्वे व्यथितस्य )

रुग्णं भुग्ने

रोगार्त व्यक्ति के २ नाम—( १ ) रुग्ण  
( २ ) भुग्न ।

( चत्वारि शाणादिना तीक्ष्णीकृतस्य शस्त्रादेः )

निशितक्षुतशातानि तेजिते ।

शान आदि पर चढाकर तीखे किये हुए  
शस्त्र आदि के ४ नाम—( १ ) निशित ( २ )  
क्षुत ( ३ ) शात ( ४ ) तेजित ।

( एकं विनाशोन्मुखस्य )

स्याद्विनाशोन्मुखं पक्कम्

जिसका विनाश समीप है, उस ( पक्के ) का  
नाम—( १ ) पक्क ।

( त्रीणि लज्जितस्य )

हीणहीतौ तु लज्जिते ॥८९॥

लज्जित व्यक्ति के ३ नाम—( १ ) हीण ( २ )  
हीत ( ३ ) लज्जित ॥८९॥

( त्रीणि कृतावरणस्य )

वृत्तं तु वृत्तव्यावृत्तौ

जिसका वरण किया जा चुका है, उसके ३  
नाम—( १ ) वृत्त ( २ ) वृत्त ( ३ ) व्यावृत्त ।

( द्वे सयोगं प्रापितस्य )

संयोजित उपाहितः ।

मिलाए हुए के २ नाम—( १ ) संयोजित  
( २ ) उपाहित ।

( त्रीणि प्राप्तुं शक्यस्य )

प्राप्यं गम्यं समासाद्यम्

मिलने के लायक चीज के ३ नाम—( १ )  
प्राप्य ( २ ) गम्य ( ३ ) समासाद्य ।

( चत्वारि प्रसृतस्य )

स्यन्नं रीणं स्नुतं स्नुतम् ॥९२॥

पिघल कर टपकती हुई वस्तु के ४ नाम—

( १ ) स्यन्न ( २ ) रीण ( ३ ) स्तुत ( ४ )  
स्तुत ॥६२॥

( द्वे योजितस्याङ्गादेः )

**संगूढः स्यात्संकलितः**

जोड़ी हुई सख्या आदि के २ नाम—( १ )  
संगूढ ( २ ) संकलित ।

( द्वे निन्दितस्य )

**अवगीतः ख्यातगर्हणः ।**

निन्दित मनुष्य आदि के २ नाम—( १ )  
अवगीत ( २ ) ख्यातगर्हण ।

( चत्वारि पृथग्विधस्य )

**विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥६३॥**

नाना प्रकार के ४ नाम—( १ ) विविध ( २ )  
बहुविध ( ३ ) नानारूप ( ४ ) पृथग्विध ॥६३॥

( द्वे निन्दितमात्रस्य )

**अवरीणो धिक्कृतश्चापि**

निन्दित मनुष्य, धिक्कारे हुए के २ नाम—( १ )  
अवरीण ( २ ) धिक्कृत ।

( द्वे चूर्णीकृतस्य )

**अवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।**

पीसी चीज के २ नाम—( १ ) अवध्वस्त  
( २ ) अवचूर्णित ।

( एकं अनायासकृतकपायविशेषस्य )

**अनायासकृतं फाण्टम्**

कूटे हुए १ पल द्रव्य को ४ पल गरम  
पानी में डाल मृत्भाण्ड में चूण भर रख कर  
मले और छाने हुए का नाम—( १ ) फाण्ट ।

( द्वे शब्दितस्य )

**स्वनितं ध्वनितं समे ॥६४॥**

किये हुए शब्द के २ नाम—( १ ) स्वनित  
( २ ) ध्वनित ॥६४॥

( षट् पदस्य )

**यदे संदानितं मृतमुद्धितं सदितं सितम् ।**

१ राक्षस संदिग्ध १५५ अतिरुद्धि ३५६ यदि वैपद्य  
मन्त्रों में रख का उल्लेख है ।

बँधे हुए के ६ नाम—( १ ) बद्ध ( २ )  
सदानित ( ३ ) मृत ( ४ ) उद्धित ( ५ ) सदित ( ६ ) सित ।

( द्वे साकल्येन पक्वस्य )

**निष्पक्वे कथितम्**

अच्छी तरह पकी वस्तु के २ नाम—( १ )  
निष्पक्व ( २ ) कथित ।

( क्षीरादीनां पाकस्यैकम् )

**क्षीराज्यहविषां शृतम् ॥६५॥**

२दूध, घी आदि से पकी वस्तु का नाम—  
( १ ) शृत ॥६५॥

( मुनिवह्नयादौ प्रयुज्यमानस्य शब्दविशेषस्यैकम् )

**निर्वाणो मुनिवह्नयादौ**

मुनि और अग्नि आदि के लिए प्रयुक्त होने-  
वाले शब्द का नाम—( १ ) निर्वाण ।

( एकं गतानिलस्य )

**निर्वातस्तु गतेनिले ।**

जिसमें से हवा निकल गयी है, उसका नाम—  
( १ ) निर्वात ।

( द्वे पाकं प्राप्तस्य )

**पकं परिणते**

पकी हुई चीज के २ नाम—( १ ) पक ( २ )  
परिणत ।

( द्वे कृतपुरीपोरसर्गस्य )

**गूतं हन्ते**

पुरीपोत्सर्ग किए के २ नाम—( १ ) गूत ( २ ) हन्त ।

( द्वे कृतमूत्रोत्सर्गस्य )

**मीढं तु मूत्रिते ॥६६॥**

पेशाव किए के २ नाम—( १ ) मीढ ( २ )  
मूत्रित ॥६६॥

( द्वे कृतपोषणस्य )

**पुष्टं तु पुषिते**

मोटे के २ नाम—( १ ) पुष्ट ( २ ) पुषित ।

( द्वे क्षमा प्रापितस्य )

**सोडे क्षान्तम्**

२ "सोडे" शब्द २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

जिसको क्षमा प्राप्त हो चुकी है, उसके २ नाम—( १ ) सोढ ( २ ) क्षान्त ।

( द्वे वमनेन त्यक्तस्यान्नादेः )

उद्धान्तं उद्गते ।

उल्टी कै किये हुए अन्न आदि के २ नाम—( १ ) उद्धान्त ( २ ) उद्गत ।

( द्वे दमं प्रापितस्य )

दान्तस्तु दमिते

इन्द्रियजीत के २ नाम—( १ ) दान्त ( २ ) दमित ।

( द्वे शमं प्रापितस्य )

शान्तः शमिते

मिट जाने के २ नाम—( १ ) शान्त ( २ ) शमित ।

( द्वे याचितस्य )

प्रार्थितेऽर्दितः ॥६७॥

मोंगी हुई वस्तु के २ नाम—( १ ) प्रार्थित ( २ ) अर्दित ॥६७॥

( द्वे बोधं प्रापितस्य )

ज्ञप्तस्तु ज्ञपिने

जिसको ज्ञान प्राप्त कराया गया हो, उसके २ नाम—( १ ) ज्ञप्त ( २ ) ज्ञपित ।

( द्वे भाषादितस्य )

छन्नश्छादिते

ढँकी वस्तु के २ नाम—( १ ) छन्न ( २ ) छादित ।

( द्वे पूजितस्य )

पूजितेऽञ्चितः ।

पूजित व्यक्ति के २ नाम—( १ ) पूजित ( २ ) अञ्चित ।

( द्वे पूर्णस्य )

पूर्णस्तु पूरितः

पूर्ण के २ नाम—( १ ) पूर्ण ( २ ) पूरित ।

( द्वे क्लेशं प्राप्तस्य )

क्लिष्टः क्लिशिते

क्लेशित के २ नाम—( १ ) क्लिष्ट ( २ ) क्लिशित ।

( द्वे समाप्तस्य )

अवसिते सितः ॥६८॥

समाप्त के २ नाम—( १ ) अवसित ( २ ) सित ॥६८॥

( चत्वारि दग्धस्य )

प्लुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे

जली हुई वस्तु के ४ नाम—( १ ) प्लुष्ट ( २ ) प्लुष्ट ( ३ ) उषित ( ४ ) दग्ध ।

( त्रीणि तनूकृतस्य )

तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।

छीलकर पतली की हुई चीज के ३ नाम—( १ ) तष्ट ( २ ) त्वष्ट ( ३ ) तनूकृत ।

( त्रीणि विद्धस्य )

वेधितच्छिद्रितौ विद्धे

बिंधी भयी या छेदी वस्तु के ३ नाम—( १ ) वेधित ( २ ) छिद्रित ( ३ ) विद्ध ।

( त्रीणि प्राप्तविचारस्य )

विश्ववित्ता विचारिते ॥६९॥

विचारित वस्तु के ३ नाम—( १ ) विन्न ( २ ) वित्त ( ३ ) विचारित ॥६९॥

( त्रीणि दीप्तिहीनस्य )

निष्प्रभे विगतारोकौ

निस्तेज के ३ नाम—( १ ) निष्प्रभ ( २ ) विगत ( ३ ) अरोक ।

( त्रीणि द्रवीभूतस्य घृतादेः )

विलीने विद्रुतद्रुतौ ।

पिघली, घी आदि वस्तु के ३ नाम—( १ ) विलीन ( २ ) विद्रुत ( ३ ) द्रुत ।

( त्रीणि सिद्धस्य )

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नः

सिद्ध वस्तु के ३ नाम—( १ ) सिद्ध ( २ ) निर्वृत्त ( ३ ) निष्पन्न ।

( श्रीणि भेदं प्रापितस्य )

दारिते भिन्नभेदिता १००॥

फाड़े गए के ३ नाम—( १ ) दारित ( २ ) भिन्न ( ३ ) भेदित ॥१००॥

( श्रीणि तन्तुसन्ततेः )

ऊतं स्यूतमुत चेति तन्तुसन्तते ।

वीने हुए सूत के ३ नाम—( १ ) ऊत ( २ ) स्यूत ( ३ ) उत ।

( पडर्चितस्य )

स्यादर्हिते नमस्यितं नमसितमपचायितार्चित-  
पचितम् ॥१०१॥

पूजित व्यक्ति के ६ नाम—( १ ) अर्हित ( २ ) नमस्यित ( ३ ) नमसित ( ४ ) अपचायित ( ५ ) अर्चित ( ६ ) अपचित ॥१०१॥

( चत्वारि शुभ्रूपितस्य )

वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरित च

सेवित पुरुष के ४ नाम—( १ ) वरिवसित ( २ ) वरिवस्यित ( ३ ) उपासित ( ४ ) उपचरित ।

( पञ्च सन्तापितस्य )

सन्तापितसन्तप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ।

सन्तापित मनुष्य के ५ नाम—( १ ) सन्तापित ( २ ) सन्तप्त ( ३ ) धूपित ( ४ ) धूपायित ( ५ ) दून ॥१०२॥

( षट् प्रमुदितस्य )

हृष्टे मत्तस्तुप्तः प्रहृन्नः प्रमुदित प्रीतः ।

प्रसन्न मनुष्य के ६ नाम—( १ ) हृष्ट ( २ ) मत्त ( ३ ) तुप्त ( ४ ) प्रहृन्न ( ५ ) प्रमुदित ( ६ ) प्रीत ।

( अष्टौ रण्डितस्य )

द्विभ्रं द्रातं लूनं कृतं दात दितं द्वितं वृक्षम्

चरित, फटे क = नाम—( १ ) द्विभ्र ( २ ) द्रात ( ३ ) लून ( ४ ) कृत ( ५ ) दात ( ६ ) दित ( ७ ) द्वित ( = ) वृक्ष ॥१०३॥

( सप्त च्युतस्य )

स्वस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।

गिरे, चूए के ७ नाम—( १ ) स्वस्त ( २ ) ध्वस्त ( ३ ) भ्रष्ट ( ४ ) स्कन्न ( ५ ) पन्न ( ६ ) च्युत ( ७ ) गलित ।

( षट् प्राप्तस्य )

लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च

प्राप्त वस्तु के ६ नाम—( १ ) लब्ध ( २ ) प्राप्त ( ३ ) विन्न ( ४ ) भावित ( ५ ) आसादित ( ६ ) भूत ॥१०४॥

( पञ्च गवेपितस्य )

अन्वेपितं गवेपितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।

खोजी हुई वस्तु के ५ नाम—( १ ) अन्वेपित ( २ ) गवेपित ( ३ ) अन्विष्ट ( ४ ) मार्गित ( ५ ) मृगित ।

( सप्त आर्द्रस्य )

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं

समुन्नमुत च ॥१०५॥

भीगी वस्तु के ७ नाम—( १ ) आर्द्र ( २ ) सार्द्र ( ३ ) क्लिन्न ( ४ ) तिमित ( ५ ) स्तिमित ( ६ ) समुन्न ( ७ ) उत ॥१०५॥

( षट् रक्षितस्य )

त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च

रक्षित वस्तु के ६ नाम—( १ ) त्रात ( २ ) त्राण ( ३ ) रक्षित ( ४ ) अत्रित ( ५ ) गोपायित ( ६ ) गुप्त ।

( पञ्च अपमानितस्य )

अवगणितमवमताघशातेऽवमानितं च परिभूतं

वेइज्जत किये हुए मनुष्य के ५ नाम—( १ ) अवगणित ( २ ) अवमत ( ३ ) अवज्ञात ( ४ ) अवमानित ( ५ ) परिभूत ॥१०६॥

( षट् दग्धस्य )

त्यकं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्क्षेपे ।

त्यागे हुए के ६ नाम—( १ ) त्यक्त ( २ ) हीन ( ३ ) विधुत ( ४ ) समुज्झित ( ५ ) धूत ( ६ ) उत्क्षेप ।

( षडभिहितवाक्यस्य )

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं  
लपितम् ॥१०५॥कही बात के ६ नाम—( १ ) उक्त ( २ )  
भाषित ( ३ ) जल्पित ( ४ ) आख्यात ( ५ )  
अभिहित ( ६ ) लपित ॥१०७॥

( सप्त अवगतस्य )

बुद्धं बुधतं मनितं विदितं

प्रतिपन्नमवसितावगते ।

समझी या जानी हुई बात के ७ नाम—(१)  
बुद्ध ( २ ) बुधित ( ३ ) मनित ( ४ ) विदित  
( ५ ) प्रतिपन्न ( ६ ) अवसित ( ७ ) अवगत ।

( एकादश अङ्गीकृतस्य )

ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं

प्रतिज्ञातम् ॥१०८॥

संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम्

अङ्गीकार के ११ नाम—( १ ) ऊरीकृत ( २ )  
उररीकृत ( ३ ) अङ्गीकृत ( ४ ) आश्रुत ( ५ )  
प्रतिज्ञात ( ६ ) संगीर्ण ( ७ ) विदित ( ८ ) संश्रुत  
( ९ ) समाहित ( १० ) उपश्रुत ( ११ ) उपगत ॥१०८॥

( द्वादश स्तुतार्थानाम् )

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुत-

पणितपनितानि ॥१०९॥

अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि

स्तुति के अर्थ में प्रयुक्त किये जानेवाले वाक्य  
के १२ नाम—( १ ) ईलित ( २ ) शस्त ( ३ )  
पणायित ( ४ ) पनायित ( ५ ) प्रणुत ( ६ )  
पणित ( ७ ) पनित ( ८ ) गीर्ण ( ९ ) वर्णित  
( १० ) अभिष्टुत ( ११ ) ईडित ( १२ ) स्तुत ॥१०९॥

( चतुर्विंश खादितस्य )

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगलितखादित-

प्सातम् ॥११०॥

अभ्यवहृतान्नजगधग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ।

खाये हुए अन्न के १४ नाम—( १ ) भक्षित  
( २ ) चर्वित ( ३ ) लीढ ( ४ ) प्रत्यवसित ( ५ )गलित ( ६ ) खादित ( ७ ) प्सात ( ८ ) अभ्य-  
वहृत ( ९ ) अन्न ( १० ) जगध ( ११ ) ग्रस्त ( १२ )  
ग्लस्त ( १३ ) अशित ( १४ ) भुक्त ॥११०॥

( क्षेपिष्ठादयः क्षिप्रादीनां प्रकृष्टार्थाः )

क्षेपिष्ठक्षोदिप्रप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठवंहिष्ठाः १११  
क्षिप्रसुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्थाः ।

बहुत जल्दवाजी का नाम—( १ ) क्षेपिष्ठ ।

अतिशय छिछोरे के नाम—( १ ) क्षोदिष्ठ ।

अत्यन्त प्रिय का नाम—( १ ) प्रेष्ठ ।

अतिशय बड़े का नाम—( १ ) वरिष्ठ ।

बहुत मोटे का नाम—( १ ) स्थविष्ठ ।

बहुत ज्यादा का नाम—( १ ) वंहिष्ठ ॥१११॥

( वाढादीनामतिशयार्थे साधिष्ठादयः स्युः )

साधिष्ठद्राधिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहृसिष्ठवृन्दिष्ठाः ११२

वाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ।

अतिशय वाढ (अच्छे) का नाम—( १ ) साधिष्ठ ।

बहुत बड़े का नाम—( १ ) द्राधिष्ठ ।

बहुत अधिक का नाम—( १ ) स्फेष्ठ ।

बहुत भारी का नाम—( १ ) गरिष्ठ ।

बहुत छोटे का नाम—( १ ) वृन्दिष्ठ ॥११२॥

इति विशेष्यनिम्नवर्ग ॥११॥

अथ सङ्कीर्णवर्गः २

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः सकीर्णै लिङ्गमुन्नयेत् ।

इस सकीर्णवर्ग में प्रकृति और प्रत्यय  
के अर्थ द्वारा लिङ्ग का विचार करना चाहिए ।  
जैसे—‘शान्ति’ यहाँ स्त्रीलिङ्ग में क्तिन् प्रत्यय  
हुआ है । ‘विधूनुनम्’ यहाँ नपुसक लिङ्ग में ल्युट्  
प्रत्यय हुआ है । कहीं-कहीं रूपभेद से भी लिङ्ग-  
निर्देश होता है ।

( द्वे क्रियायाः )

कर्म क्रिया

क्रिया के २ नाम—( १ ) कर्म ( २ ) क्रिया ।

( एकं नैरन्तर्येण क्रियायाः क्रियावत्तश्च )

तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्परः ॥११॥



निरन्तर चलनेवाली क्रिया और क्रियावान्  
का नाम—( १ ) अपरस्पर ॥ १ ॥

( एकैकं साकल्यासङ्गवचनयोः )

साकल्यासङ्गवचने पारायणपरायणे ।

साकल्य वचन का नाम—( १ ) पारायण ।

आसङ्ग ( आसक्ति ) वचन का नाम—( १ )  
परायण ।

( द्वे स्वच्छन्दतायाः )

यदच्छा स्वैरिता

स्वच्छन्दता के २ नाम—( १ ) यदच्छा  
( २ ) स्वैरिता ।

( एकं हेतुशून्यास्थायाः )

हेतुशून्या त्वास्था विलक्षणम् ॥२॥

बिना कारण की स्थिति का नाम—( १ ) विल-  
क्षण ॥२॥

( त्रीणि चित्तोपशमस्य )

शमथस्तु शमः शान्तिः

मन शान्ति के ३ नाम—( १ ) शमय ( २ )  
शम ( ३ ) शान्ति ।

( त्रीणीन्द्रियनिग्रहस्य )

दान्तिस्तु दमथो दमः ।

इन्द्रियदमन के ३ नाम—( १ ) दान्ति ( २ )  
दमय ( ३ ) दम ।

( द्वे प्रशस्तकर्मणः भूतपूर्वचरित्रस्य वा )

अवदानं कर्म वृत्तम्

भूतपूर्व चरित्र अथवा सुकर्म का नाम—( १ )  
अवदान ।

( द्वे काम्यदानस्य )

काम्यदानं प्रवारणम् ॥३॥

कामनापूर्ण दान के २ नाम—( १ ) काम्यदान  
( २ ) प्रवारण ॥३॥

( द्वे मणिमंत्रादिना वशीकरणस्य )

वशक्रिया संयतनम्

मणि-मन्त्र के द्वारा वश में करने ( वशीकरण )  
के २ नाम—( १ ) वशक्रिया ( २ ) संयतन ।

( एकमोपधादीनां मूलैरुच्चाटनकर्मणः )

मूलकर्म तु कर्मणम् ।

श्रौषधि आदि की जड़ से उच्चाटन का  
नाम—( १ ) कर्मण ।

( द्वे कम्पनस्य )

विधूननं विधुवनम्

कम्पन के २ नाम—( १ ) विधूनन ( २ )  
विधुवन ।

( त्रीणि तृप्तेः )

तर्पणं प्रीणनावनम् ॥४॥

तृप्ति ( अघाए ) के ३—नाम ( १ ) तर्पण ( २ )  
प्रीणन ( ३ ) अवन ॥४॥

( त्रीणि मारणोद्यतनिवारणस्य )

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।

किसी को मार डालने के लिए तैयार व्यक्ति  
को रोक देने के ३ नाम—( १ ) पर्याप्ति ( २ ) परित्राण  
( ३ ) हस्तवारण ।

( त्रीणि सूचीक्रियायाः )

सेवनं सीवनं स्यूतिः

सिलाई के ३ नाम—( १ ) सेवन ( २ ) सीवन  
( ३ ) स्यूति ।

( त्रीणि द्विधाभावस्य )

विदरः स्फुटनं भिदा ॥५॥

दो टुकड़े हो जाने के ३ नाम—( १ )  
विदर ( २ ) स्फुटन ( ३ ) भिदा ॥५॥

( द्वे गालिप्रदानस्य )

आक्रोशनमभीपन्नः

गाली देने के २ नाम—( १ ) आक्रोशन ( २ )  
अभीपन्न ।

( द्वे अनुभवस्य )

संवेदो वेदना न ना ।

अनुभव के २ नाम—( १ ) संवेद ( २ ) वेदना ।  
उनमें ( १ ) बुझिझ ( २ ) खोखिझ और नपुंसक है ।

( द्वे सर्वथो व्याप्तेः )

सम्पूदनमभिध्याति ।

चौतरफा फैलाव के २ नाम—(१) संमूर्छन  
(२) अभिव्याप्ति ।

( चत्वारि याच्यायाः )

याच्या भिक्षार्थनाऽर्दना ॥६॥

भीख मँगने के ४ नाम—(१) याच्या ( २ )

(३) अर्थना (४) अर्दना ॥६॥

( द्वे कर्तनस्य )

वर्धनं छेदने

काटने के २ नाम—(१) वर्धन (२) छेदन ।

( त्रीणि स्वागतसंप्रश्नादिना विहितस्यानन्दस्य )

अथ द्वे आनन्दनसभाजने ।

आप्रच्छन्नम्

स्वागत करके कुशल प्रश्न पूछने के ३ नाम—( १ ) आनन्दन ( २ ) सभाजन ( ३ ) आप्रच्छन्न ।

( द्वे गुरुपरम्परागतस्य समुपदेशस्य )

अधाम्नायः संप्रदायः

गुरुपरम्परा से प्राप्त उपदेश के २ नाम—

( १ ) अधाम्नाय ( २ ) संप्रदाय ।

( द्वे अपचयस्य )

क्षये क्षिया ॥७॥

घटती के २ नाम—(१) क्षय (२) क्षिया ॥७॥

( द्वे ग्रहणस्य )

ग्रहे ग्राहः

ग्रहण करने के २ नाम—( १ ) ग्रह ( २ ) ग्राह ।

( द्वे इच्छायाः )

वशः कान्ति

इच्छा के २ नाम—(१) वश (२) कान्ति (स्त्री०) ।

( द्वे रक्षणस्य )

रक्षणस्त्राणे

रक्षा करने के २ नाम—( १ ) रक्षण ( २ )

त्राण । इनमें (१) पुंलिङ्ग, (२) नपुंसक है ।

( द्वे शब्दकरणस्य )

रग्य. वचणे ।

शब्द करने के २ नाम—( १ ) रग्य ( २ ) वचण ।

( द्वे वेधनस्य )

व्यधो वेधे

वीधने के २ नाम—(१) व्यध (२) वेध ।

( द्वे पाकस्य )

पचा पाके

पकाने के २ नाम—( १ ) पचा ( २ ) पाक ।

( द्वे आह्वानस्य )

हवो हूतौ

पुकारने के २ नाम—( १ ) हव (२) हूति ।

( द्वे वेष्टनस्य संभक्तस्य च )

वरो वृतौ ॥८॥

वेष्टन अथवा चुनाव के २ नाम—( १ ) वर ( २ ) वृति ॥ ८ ॥

( द्वे दाहस्य )

ओष. प्लोषे

दाह के २ नाम—( १ ) ओष ( २ ) प्लोष ।

( द्वे नीतेः )

नयो नाये

नीति के २ नाम—( १ ) नय ( २ ) नाय ।

( द्वे जीर्णतायाः )

ज्यानिर्जीणौ

पुरानेपन के २ नाम—( १ ) ज्यानि ( २ )

जीर्णि । ये ( १-२ ) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

( द्वे आन्तेः )

अमो अमौ ।

भूल के २ नाम—(१) अम (२) अमि (स्त्री०) ।

( द्वे वृद्धेः )

स्फातिवृद्धौ

वृद्धि के २ नाम—( १ ) स्फाति (२) वृद्धि ।

( द्वे ख्यातेः )

प्रथा ख्यातौ

प्रसिद्धि के २ नाम—(१) प्रथा (२) ख्याति ।

( द्वे स्पशंस्य )

स्पृष्टिः पृक्तौ

स्पर्श के २ नाम—( १ ) स्पृष्टि ( २ ) पृक्ति ।

( द्वे प्रसवणस्य )

स्नवः स्रवे ॥६॥

झरने के २ नाम—( १ ) झव ( २ ) झव ॥६॥

( द्वे उपचयस्य )

एधा समृद्धौ

समृद्धि के २ नाम—( १ ) एधा ( २ ) समृद्धि ।

( द्वे स्फुरणस्य )

स्फुरणे स्फुरणा

फरकने के २ नाम—( १ ) स्फुरण ( २ ) स्फुरणा ।

( द्वे प्रमाज्ञानस्य )

प्रमितौ प्रमा ।

सचे ज्ञान के २ नाम—( १ ) प्रमिति ( २ ) प्रमा ।

( द्वे प्रसवनस्य प्रेरणस्य वा )

प्रसूतिः प्रसवे

गर्भत्याग ( प्रसव ) के २ नाम—( १ ) प्रसूति ( २ ) प्रसव । इनमें ( १ ) स्त्री ( २ ) पुं है ।

( द्वे घृतादेः क्षरणस्य )

श्च्योते प्राधारः ।

घी आदि के बहने के २ नाम—( १ ) श्च्योत ( २ ) प्राधार । ये ( १-२ ) पुं हैं ।

( द्वे ग्लानेः )

कृमयः कृमे ॥१०॥

ग्लानि के २ नाम—( १ ) कृमय ( २ ) कृम ॥१०॥

( द्वे प्रकर्षस्य )

उत्कर्षोऽतिशये

यकाई के २ नाम—( १ ) उत्कर्ष ( २ ) अतिशय ।

( द्वे संधानस्य )

सन्धिः श्लेषे

जोड़ने, मेल के २ नाम—( १ ) सन्धि ( २ ) श्लेष ।

( द्वे भाष्यस्य )

विषय आभये ।

सहारे के २ नाम—( १ ) विषय ( २ ) आश्रय ।

( द्वे प्रेरणस्य )

क्षिपाया क्षेपणम्

प्रेरणा के २ नाम—( १ ) क्षिपा ( २ ) क्षेपण ।

( द्वे निगरणस्य )

गार्णिगिरौ

निगलने के २ नाम—( १ ) गीर्णि ( २ ) गिरि ।

( द्वे भाराद्युद्यमनस्य )

गुरणमुद्यमे ॥११॥

बोझा आदि उठाने, उद्योग करनेके २ नाम—( १ ) गुरण ( २ ) उद्यम । इनमें ( १ ) नपुं ( २ ) पुं है ॥११॥

( द्वे ऊर्ध्वं नयनस्य ऊहस्य वा )

उन्नये उन्नाये

ऊपर उठाने अथवा तर्क के २ नाम—( १ ) उन्नाय ( २ ) उन्नय । ये ( १-२ ) पुं हैं ।

( द्वे सेवायाः )

श्रायः श्रयणे

सेवा के २ नाम—( १ ) श्राय ( २ ) श्रयण ( नपुं ) ।

( द्वे जयस्य )

जयने जय ।

जय के २ नाम—( १ ) जयन ( नपुं ) ( २ ) जय ।

( द्वे कथनस्य )

निगादो निगादे

कहने के २ नाम—( १ ) निगाद ( २ ) निगाद ।

( द्वे हर्षस्य )

मादो मदः

चुशी के २ नाम—( १ ) नाद ( २ ) मद ।

( द्वे उद्देगस्य )

उद्देग उद्देगमे ॥१२॥

उद्दिग करने के २ नाम—( १ ) उद्देग ( २ ) उद्देग ॥१२॥

( द्वे कुङ्कुमादिमर्दनस्य )

चिमर्दन परिमलः

कुङ्कुम आदि मलने के २ नाम—( १ ) चिमर्दन ( २ ) परिमल । इनमें ( १ ) नपुं ( २ ) पुं है ।

( द्वे अंगीकारस्य )

अभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।

अङ्गीकार के २ नाम—(१) अभ्युपपत्ति (२) अनुग्रह । ये (१-२) पुल्लिङ्ग हैं ।

( एकं तद्विरुद्धस्य )

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यात्

(अनुग्रह के विरुद्ध) विरोध का नाम—(१) निग्रह ।

( द्वे कलहाद्धानस्य )

अभियोगस्त्वभिग्रहः ॥१३॥

लड़ाई में पुकारने के २ नाम—(१) अभियोग (२) अभिग्रह ॥१३॥

( द्वे मुष्टिना दृढग्रहणस्य )

मुष्टिवन्धस्तु संग्राहः

मुठ्ठी से कसकर पकड़ने के २ नाम—(१) मुष्टिवन्ध (२) संग्राह ।

( त्रीणि नरलुण्ठनादेरुपसर्गविशेषस्य )

डिम्बे डमरविस्त्रवौ ।

मनुष्यों को लूटने के ३ नाम—(१) डिम्ब (२) डमर (३) विस्त्रव ।

( त्रीणि बन्धनस्य )

बन्धनं प्रसितिश्चारः

बन्धन के ३ नाम—(१) बन्धन (२) प्रसिति (३) चार । इनमें (२) स्त्रीलिङ्ग है ।

( त्रीणि उपतापाद्यरोगस्य )

स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तृ ॥१४॥

उपताप नामक रोगविशेष के ३ नाम—(१) स्पर्श (२) स्प्रष्टृ (३) उपतप्तृ ॥१४॥

( द्वे अपकारस्य )

निकारो विप्रकारः स्यात्

अपकार के २ नाम—(१) निकार (२) विप्रकार ।

( त्रीण्यभिप्रायानुरूपचेष्टितस्य )

आकारस्त्विक्क इङ्गितम् ।

अभिप्राय के अनुरूप इशारे के ३ नाम—(१)

आकार (२) इङ्ग (३) इङ्गित ।

( द्वे प्रकृतेरन्यथाभावस्य )

परिणामो विकारो द्वे समे

प्रकृति के परिवर्तन के २ नाम—(१) परिणाम (२) विकार ।

( द्वे विरुद्धक्रियायाः )

विकृतिविक्रिये ॥१५॥

विरुद्ध क्रिया के २ नाम—(१) विकृति (२) विक्रिया । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१५॥

( द्वे अपहरणस्य )

अपहारस्त्वपचयः

अपहरण (छीन लेने) के २ नाम—(१) अपहार (२) अपचय ।

( द्वे राशीकरणस्य )

समाहारः समुच्चयः ।

इकट्ठा करने के २ नाम—(१) समाहार (२) समुच्चय ।

( द्वे इन्द्रियाकर्षणस्य )

प्रत्याहार उपादानम्

इन्द्रियों को (विषयों की ओर से) समेटने के २ नाम—(१) प्रत्याहार (२) उपादान ।

( द्वे पदभ्यां गमनस्य )

विहारस्तु परिक्रमः ॥१६॥

पैर से चलने के २ नाम—(१) विहार (२) परिक्रम ॥१६॥

( द्वे चौर्यकर्मणः )

अभिहारोऽभिग्रहणम्

चोरी करने के २ नाम—(१) अभिहार (२) अभिग्रहण ।

( द्वे शब्दादेर्निष्काशनस्य )

निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।

काँटा आदि निकालने के २ नाम—(१) निर्हार (२) अभ्यवकर्षण ।

( द्वे विदम्बनस्य )

अनुहारोऽनुकारः स्यात्

नकल करने के २ नाम—(१) अनुहार  
(२) अनुकार ।

( धनादेरपगमस्यैकम् )

अर्थस्यापगमे व्ययः ॥१७॥

धन खर्च हो जाने का नाम—(१) व्यय ॥१७॥

( द्वे जळादीनां निरन्तरगमनस्य )

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्

जल आदि के निरन्तर बहाव के २ नाम—  
(१) प्रवाह (२) प्रवृत्ति ।

( एकं बहिर्गमनस्य )

प्रवहो गमनं बहिः ।

जल आदि के बाहर निकालने का नाम—  
(१) प्रवह ।

( षट् संयमस्य )

वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥१८॥

संयम के ६ नाम—(१) वियाम (२)  
वियम (३) याम (४) यम (५) संयाम (६)  
संयम ॥१८॥

( एकं हिंसात्मककर्मणः )

हिंसाकर्माऽभिचारः स्यात्

जारण-मारण आदि हिंसात्मक कर्म का नाम—  
(१) अभिचार ।

( द्वे जागरणस्य )

जागर्या जागरा द्वयोः ।

जागरण के २ नाम—(१) जागर्या (२) जागरा ।  
इनमें (१) पुं० (२) पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों हैं ।

( त्रीणि विप्रस्य )

विप्रोऽन्तरायः प्रत्यूहः

विप्र के ३ नाम—(१) विध्न (२)  
अन्तराय (३) प्रयूह ।

( द्वे आस्रस्य )

स्वादुपप्रोऽन्ति काश्रये ॥१९॥

सुनाप के निवास का नाम—(१) उपप्ल ॥१९॥

( द्वे उपभोगस्य )

निर्वेश उपभोगः स्यात्

उपभोग के २ नाम—(१) निर्वेश (२)  
उपभोग ।

( द्वे परिजनादिवेष्टनस्य )

पारसर्पः परिक्रिया ।

परिवारवालों को एक में समेट रखने के  
२ नाम—(१) परिसर्प (२) परिक्रिया ।

( द्वे अत्यन्तवियोगस्य )

विधुं तु प्रविश्लेषे

बड़े वियोग के २ नाम—(१) विधुर (२)  
प्रविश्लेष । इनमें (१) नपुं० (२) पुं० है ।

( त्रीण्यभिप्रायस्य )

अभिप्रायश्छन्द आशयः ॥२०॥

अभिप्राय के ३ नाम—(१) अभिप्राय (२)  
छन्द (३) आशय ॥२०॥

( द्वे अविस्तारस्य )

संक्षेपणं समसनम्

अविस्तार ( संक्षेप ) के २ नाम—(१)  
संक्षेपण (२) समसन ।

( द्वे विरोधस्य )

पर्यवस्था विरोधनम् ।

विरोध के २ नाम—(१) पर्यवस्था (२)  
विरोधन । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) नपुं० है ।

( द्वे परितः सरणस्य )

परिसर्या परीसारः

चौतरफा फैलाव के २ नाम—(१) परि-  
सर्या (२) परीसार ।

( त्रीणि आसनस्य )

स्यादास्या त्यासना स्थितिः ॥२१॥

बैठने के ३ नाम—(१) आस्या (२)  
आसन (३) स्थिति ॥२१॥

( त्रीणि विस्तारस्य )

विस्तारो विप्रशो व्यासः स च शुब्दस्य विस्तरः

विस्तार के ३ नाम—(१) विस्तार (२)  
विप्रद (३) व्यास ।

शब्द-विस्तार का नाम—(१) विस्तार

( द्वे अङ्गमर्दनस्य )

संवाहनं मर्दनं स्यात् ।

शरीर दवाने के २ नाम—( १ ) संवाहन  
( २ ) मर्दन ।

( द्वे तिरोधानस्य )

विनाशः स्याददर्शनम् ॥२२॥

विनाश के २ नाम—( १ ) विनाश ( २ )  
अदर्शन ॥२२॥

( द्वे परिचयस्य )

संस्तवः स्यात्परिचयः

परिचय के २ नाम—( १ ) संस्तव ( २ )  
परिचय ।

( द्वे व्रणादिप्रसरणस्य )

प्रसरस्तु विसर्पणम् ।

घाव के फैलने के २ नाम—( १ ) प्रसर  
( २ ) विसर्पण ।

( द्वे धनधान्यादिषु जनानामादरातिशयस्य )

नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्

धन-धान्यादि में समाज के आदराधिक्य के  
२ नाम—( १ ) नीवाक ( २ ) प्रयाम ।

( द्वे सांनिध्यस्य )

सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥२३॥

नजदीकी के २ नाम—( १ ) सन्निधि ( २ )  
सन्निकर्षण । इनमें ( १ ) पुं०, ( २ ) नपुं० है ॥२३॥

( त्रीणि धान्यादिच्छेदनस्य )

लवोऽभिलावो लवने

धान्य आदि काटने के ३ नाम—( १ ) लव  
( २ ) अभिलाव ( ३ ) लवन ।

( त्रीणि धान्यादीनां पूतीकरणस्य )

निष्पावः पवने पवः ।

धान्य आदि को साफ करने के ३ नाम—  
( १ ) निष्पाव ( २ ) पवन ( नपुं० ) ( ३ ) पव ।

( द्वे प्रस्तावस्य )

प्रस्तावः स्याद्वसरः

प्रसंग के २ नाम—( १ ) प्रस्ताव ( २ )

अवसर । जैसे 'अवसरपठिता वाणी' इत्यादि ।

( द्वे तन्नुवायकृतसूत्रवेष्टनभेदस्य )

त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥२४॥

जुलाहे के सूत लपेटने के भेदविशेष, नरी के  
२ नाम—( १ ) त्रसर ( २ ) सूत्रवेष्टन ॥२४॥

( द्वे गर्भग्रहणस्य )

प्रजनः स्यादुपसरः

गर्भ धारण करने के २ नाम—( १ )  
प्रजन ( २ ) उपसर ।

( द्वे प्रेम्णः )

प्रश्रयप्रणयौ समौ

प्रेम के २ नाम—( १ ) प्रश्रय ( २ ) प्रणय

( द्वे बुद्धिसामर्थ्यस्य )

धीशक्तिर्निष्क्रमः

'बुद्धिसामर्थ्य' के २ नाम—( १ ) धीशक्ति  
( २ ) निष्क्रम । इनमें ( १ ) स्त्री ( २ ) पुं० है ।

( द्वे दुर्गमार्गस्य )

अस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥२५॥

दुर्गम मार्ग के २ नाम—( १ ) संक्रम ( २ )  
दुर्गसंचर । ( १ ) पुं० नपुं०, ( २ ) पुंलिङ्ग है ॥२५॥

( युद्धार्थमतिशयोयोगस्य )

प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः

युद्ध के लिये अतिशय उद्योग के २ नाम—  
( १ ) प्रत्युत्क्रम ( २ ) प्रयोगार्थ ।

( द्वे प्रथमारम्भस्य )

प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।

प्रथम आरम्भ के २ नाम—( १ ) प्रक्रम  
( २ ) उपक्रम ।

( त्रीण्यारम्भमाश्रयस्य )

स्यादभ्यादानमुद्घात आरम्भः

आरम्भमात्र के ३ नाम—( १ ) अभ्या-  
दान ( २ ) उद्घात ( ३ ) आरम्भ ।

१ शुश्रूषा अवश्य चैव ग्रहण धारण तथा ।

ऊहापोहो च विज्ञान तत्त्वज्ञान च धोयुषा ॥

( द्वे संवेगस्य )

संभ्रमस्त्वरा ॥२६॥

जल्दवाजी के २ नाम—( १ ) सभ्रम ( २ )  
त्वरा ॥२६॥

( द्वे कार्यप्रतिघातस्य )

प्रतिबन्ध. प्रतिष्टम्भ

प्रतिघात ( रुकावट ) के २ नाम—( १ )  
प्रतिबन्ध ( २ ) प्रतिष्टम्भ ।

( द्वे अधोनयनस्य )

अवनायस्तु निपातनम् ।

नीचे गिराने के २ नाम—( १ ) अवनाय  
( २ ) निपातन ।

( द्वे साक्षात्कारस्य )

उपलम्भस्त्वनुभव.

साक्षात्कार के २ नाम—( १ ) उपलम्भ ( २ )  
अनुभव ।

( द्वे कुंकुमादिना लेपनस्य )

समालम्भो विलेपनम् ॥२७॥

कुमकुम आदि लेपन के २ नाम—( १ ) समा-  
लम्भन ( २ ) विलेपन ॥२७॥

( द्वे रागिणोर्वियोगस्य )

विप्रलम्भो विप्रयोग.

दो प्रेमियों के वियोग के २ नाम—( १ )  
विप्रलम्भ ( २ ) विप्रयोग ।

( द्वे अतिदानस्य )

विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।

अतिशय दान के २ नाम—( १ ) विलम्भ  
( २ ) अतिसर्जन ।

( द्वे अतिप्रसिद्धेः )

विश्रायस्तु प्रतिस्थातिः

अतिशय प्रसिद्धि के २ नाम—( १ ) विश्राय  
( २ ) प्रतिस्थाति ।

( द्वे वस्तुनां भवेक्षणस्य )

अवेक्षा प्रतिजागरः ॥२८॥

वस्तुओं की देख-भाव के २ नाम—( १ )  
अवेक्षा ( २ ) प्रतिजागर । ( १ ) अवेक्षण है ॥२८॥

( त्रीणि पठनस्य )

निपाठनिपटौ पाठे

पढ़ने के ३ नाम—( १ ) निपाठ ( २ )  
निपठ ( ३ ) पाठ । ये ( १-३ ) पुँल्लिङ्ग हैं ।

( त्रीण्यार्द्धभावस्य )

तेमस्तेमौ समुन्दने ।

नरम हो जाने के ३ नाम—( १ ) तेम ( २ )  
स्तेम ( ३ ) समुन्दन । इनमें ( ३रा ) नपुंसक है ।

( त्रीणि क्लेशस्य )

आदीनवात्तवौ क्लेशे

क्लेश के ३ नाम—( १ ) आदीनव ( २ )  
आस्रव ( ३ ) क्लेश । ये ( १-३ ) पु० हैं ।

( त्रीणि संगमस्य )

मेलके संगसंगमौ ॥२९॥

मेल-मिलाप के ३ नाम—( १ ) मेलक ( २ )  
मग ( ३ ) सगम ॥२९॥

( पंच तात्पर्येण वस्तूना गवेषणस्य )

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।

किसी मतलब से वस्तुओं की छान-बीन के  
५ नाम—( १ ) संवीक्षण ( २ ) विचयन ( ३ )  
मार्गण ( ४ ) मृगणा ( ५ ) मृग ।

( चत्वारि आलिङ्गनस्य )

परिरम्भ परिरिष्यद्ग. सङ्ग्लेप उपगूहनम् ॥३०॥

आलिङ्गन ( लिपटाने ) के ४ नाम—( १ )  
परिरम्भ ( २ ) परिरिष्यद्ग ( ३ ) सङ्ग्लेप ( ४ )  
उपगूहन ॥ ३० ॥

( पंच निराङ्गणस्य )

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम् ।

देखने के ५ नाम—( १ ) निर्वर्णन ( २ )  
निध्यान ( ३ ) दर्शन ( ४ ) आलोकन ( ५ ) देखना ।

( चत्वारि निराकरणस्य )

प्रत्याख्यान निरस्तनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ३१

निराकरण ( दूराने ) के ४ नाम—( १ )  
प्रत्याख्यान ( २ ) निरस्तन ( ३ ) प्रत्यादेश ( ४ )  
निराकृति । इनमें ( २रा ) अलिङ्ग है ॥३१॥

( द्वे प्रहरकादीनां शयनस्य )

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।

पहरा देनेवालों के वारी-वारी सोने के २ नाम—( १ ) उपशाय ( २ ) विशाय ।

( चत्वारि घृणायाः )

अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ३२

घिनाने के ४ नाम—( १ ) अर्तन ( २ ) ऋतीया ( ३ ) हृणीया ( ४ ) घृणा ॥३२॥

( चत्वारि व्यतिक्रमस्य )

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।

उलटा-पुलटा के ४ नाम—( १ ) व्यत्यास ( २ ) विपर्यास ( ३ ) व्यत्यय ( ४ ) विपर्यय ।

( चत्वार्यतिक्रमस्य )

पर्यायोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥३३॥

अतिक्रम के ४ नाम—( १ ) पर्याय ( २ ) अतिक्रम ( ३ ) अतिपात ( ४ ) उपात्यय ॥३३॥

( एकं मृत्यादिप्रेषणस्य )

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।

सिपाही आदि को बुलाकर कहीं भेजने का नाम—( १ ) प्रतिशासन ।

( एकं यज्ञे स्तावकद्विजावस्थानभूमेः )

स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूद्विजन्मनाम् ३४

यज्ञ में जहाँ बैठकर ब्राह्मण स्तुति करते हैं, उस स्थान का नाम—( १ ) संस्ताव ॥३४॥

( द्वे तृणादिगुच्छोन्मूलसाधनस्य )

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ।

जिससे घास छीली या काटी जाती है, उस खुरपे-हँसुये आदि के २ नाम—( १ ) स्तम्बघ्न ( २ ) स्तम्बघन ।

( एकं अमरसूच्यादेः )

आविधो विध्यते येन

जिससे लकड़ी आदि छेदी जाती है, उस बर्मे का नाम—( १ ) आविध ।

( एकं तुल्यारोहपरिणाहवृक्षादेः )

तत्र विष्वक्समे निघः ॥३५॥

जिसकी जड़ और ऊपरी भाग एक सा ऊँचा और चौड़ा हो, उस वृक्ष का नाम—( १ ) निघ ॥३५॥

( द्वे धान्यस्योक्षेपणार्थस्य )

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्ये क्षेपणार्थकौ ३६

अनाज आदि को फटकने के २ नाम—( १ ) उत्कार ( २ ) निकार ॥३६॥

( एकैकं गरणादिषु )

निगारोद्गारविज्ञावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ।

खाकर निगलने का नाम—( १ ) निगार ।

उगलने का नाम—( १ ) उद्गार ।

खोसने, छीकने का नाम—( १ ) विज्ञाव ।

उकारने का नाम—( १ ) उद्ग्राह ।

( चत्वार्युपरमणस्य )

आरत्यवरतिविरतय उपरामे

विश्राम के ४ नाम—( १ ) आरति ( २ ) अवरति ( ३ ) विरति ( ४ ) उपराम । ( १-३ ) स्त्री, ( ४ ) पुं है ।

( चत्वारि निष्ठीवनस्य )

अथास्त्रियां तु निष्ठेवः ॥३७॥

निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिधानि ।

थूकने के ४ नाम—( १ ) निष्ठेव ( २ ) निष्ठयति ( ३ ) निष्ठेवन ( ४ ) निष्ठीवन । इनमें ( १ ) पुं स्त्री ( २ ) स्त्री ( ३-४ ) नपुं हैं ॥३७॥

( द्वे वेगस्य )

जवने जूतिः

वेग के २ नाम—( १ ) जवन ( २ ) जूति । इनमें ( १ ) नपुं ( २ ) स्त्री है ।

( द्वे अन्तस्य )

सातिस्त्ववसाने स्यात्

अन्त के २ नाम—( १ ) साति ( २ ) अवसान । इनमें ( १ ) स्त्री, ( २ ) नपुं है ।

( द्वे ज्वरस्य )

अथ ज्वरे जूतिः ॥३८॥

ज्वर के २ नाम—( १ ) ज्वर ( २ ) जूति ॥३८॥

( एकं पशुप्रेरणस्य )

उदजस्तु पशुप्रेरणम्





चुके हैं । वहाँ उनका उल्लेख केवल उसी अर्थ में है कि जो अर्थ विशेषरूप से प्रयोग में आता है, किन्तु यहाँ उनके कई-कई अर्थ कहे जायेंगे ॥१॥

**आकाशे त्रिदिवे नाकः**

नाकः—आकाश, स्वर्ग ।

**लोकस्तु भुवने जने ।**

लोकः—जगत्, मनुष्य ।

**पद्ये यशसि च श्लोकः**

श्लोकः—पद्य, कीर्ति ।

**शूरे खड्गे च सायकः ॥२॥**

सायकः—बाण, तलवार ॥ २ ॥

**जम्बुकौ क्रोष्टुवक्ष्णौ**

जम्बुकः—सियार ( गीदड़ ), वक्ष्ण ।

**पृथुकौ चिपिटाभकौ ।**

पृथुकः—चिउड़ा, वच्चा ।

**आलोको दर्शनोद्योतौ**

आलोकः—दर्शन, दीप्ति ।

**भेरी पटहमानकौ ॥३॥**

आनकः—धौमा, नगाड़ा ॥३॥

**उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः**

अङ्कः—गोद, चिह्न ।

**कलङ्कोऽङ्कापवादयोः ।**

कलङ्कः—चिह्न, अपयश ।

**तक्षको नागवर्धकयोः**

तक्षकः—नागविशेष, बढई ।

**अर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥४॥**

अर्कः—स्फटिक, सूर्य ॥४॥

**मासते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनोः**

कः—(पुंलिङ्ग) वायु, ब्रह्मा, सूर्य ।

कं—(नपुंसकलिङ्ग) शिर, जल ।

**स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये सत्तेपे भक्तसिक्थकेऽ**

पुलाकः—तिन्नी चावल रहित धान (कटकरी),

सत्तेप, भात का सीथ ॥५॥

**उलुके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः**

पेचकः—उल्लू, हाथी की पूँछ के आस-पास का हिस्सा ।

**कमण्डलौ च करकः**

करकः—कमण्डल, (करवा) ओला ।

**सुगते च विनायकः ॥६॥**

विनायकः—बुद्ध भगवान्, गरुडराज, गरुड ॥६॥

**किङ्कुर्हस्ते धितस्तौ च**

किङ्कु—हाथ भर की नाप, वित्त, वालिरत ।

**शूककोटे च वृश्चिकः ।**

वृश्चिक—विच्छू, आठवीं राशि ।

**प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिचैकदेशे तु पुंस्ययम् ॥७॥**

प्रतीक—प्रतिकूल, अङ्ग । प्रतिकूल अर्थ

में यह पुं-स्त्री-नपुंसक लिङ्ग है,

किन्तु अङ्ग अर्थ में पुल्लिङ्ग है ॥७॥

**स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कचृणे भूस्तृणेऽपि च ।**

भूतिक—भूनिम्ब ( चिरायता ), रौहिण्य,

कुङ्कुमुत्ता ।

**उयोत्तिस्नकायां च घोषे च कोशातकी—**

कोशातकी—छोटा परवल, घोष (अपामार्ग) ।

**अथ कट्फलं ॥८॥**

**सिते च खदिरे सोमवल्कः स्यात्**

सोमवल्कः—कायफल, सफेद खैर ॥८॥

**अथ सिंहके ।**

**तिलकलके च पिण्याकः**

पिण्याकः—सेलड़ा, तिलकी खली ।

**बाह्लीकं रामटेऽपि च ॥९॥**

बाह्लीकम्—हींग, बाह्लीक देश का घोड़ा,

धैर्यशाली मनुष्य ॥९॥

**महेन्द्रगुग्गुलूलकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।**

कौशिकः—इन्द्र, गुग्गुलु, उल्लू, सँपेरा ।

**रुक्तापशंकास्वातङ्कः**

आतक—रोग, सन्ताप, शका ।

**स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥१०॥**

क्षुल्लकः—थोड़ा, नीच, छोटा दरिद्र । तीनों

लिङ्गों में इसका पाठ है ॥१०॥



मयूखस्त्विट् करज्वालासु

मयूखः—कान्ति, किरण, आग की लपट ।

अलिबाणौ शिलीमुखौ ।

शिलीमुखः—भौरा, बाण ।

शंखो निधौ ललाटास्थिन कम्बौ

शंखः—(पुं-नपुंसक) खजाना, मस्तक की हड्डी,

शंख ( आकाश ) ।

इन्द्रियेऽप खम् ॥१८॥

खम्—इन्द्रिय, नगर, खेत, शून्य, बिन्दु,

आकाश ॥१८॥

घृणिज्वाले अपि शिखे

शिखा—किरण, आग की लपट, चोटी ।

( इति खान्ता )

शैलवृक्षौ नगावगौ ।

नगः—पर्वत, वृक्ष । ये नग और अग दोनों कहलाते हैं ।

आशुगौ वायुविशिखौ

आशुगः—वायु, बाण ।

शराकंघ्रिहगाः खगाः ॥१९॥

खगः—सूर्य, शर, पक्षी ॥१९॥

पतगौ पक्षिसूर्यौ च

पतङ्गः—पक्षी, सूर्य ।

पूगे क्रमुकवृन्दयोः ।

पूगः—सुपारी, समूह ।

पशवोऽपि मृगाः

मृगः—हरिण आदि वन्य पशु, मृगशीर्ष नक्षत्र, खोजना ।

वेग प्रवाहजवयोरपि ॥२०॥

वेगः—प्रवाह, वेग, पुरीषोत्सर्ग का वेग ॥२०॥

परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ।

परागः—फूल की धूलि, स्नान करने का सामान उबटन आदि, धूल । आदिशब्द से कामशास्त्र में कथित कपूर आदि का चूर्ण । अपि शब्द से उपराग ।

गजेऽपि नागमातङ्गौ

नागः, मातङ्गः—हाथी चारुडाल ।

अपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥२१॥

अपाङ्गः—नेत्र का अन्तिम भाग, तिलक, अङ्गहीन ॥२१॥

सर्गं स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।

सर्गः—स्वभाव, त्याग, निश्चय, ग्रन्थ का अध्याय, सृष्टि ।

योगं संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥२२॥

योगः—कवच, उपाय यानी सामदानादि नीति, चित्त की चंचलता को रोकना, मिलाप, युक्ति ॥२२॥

भोगः सुखे रुयादिभृतावहेश्च फणकाययोः ।

भोगः—सुख, स्त्री या वेश्या, हाथी घोड़े आदि का मूल्य, सर्प का फन, शरीर ।

चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥२३॥

सारङ्गः—(पुं) पपीहा, हरिण ।

सारङ्ग—(पुं-स्त्री० नपुं०) चितकवरा ॥२३॥

कपौ च स्रवगः

स्रवगः—वानर, मेढक, कोचवान ।

शापे त्वभिष्वङ्गः पराभवे ।

अभिष्वङ्गः—शाप, पराभव (तिरस्कार) ।

यानाद्यङ्गे युगः पुंसि

युग (पुं)—रथ तथा शकट आदि का अङ्ग, दो की खया, कलियुग-सत्ययुग आदि, चार हाथ की नाप ।

युगं युग्मे कृतादिषु ॥२४॥

युगम्—औषधिविशेष (नपुं०) ॥२४॥

स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।

लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौः

गौ (स्त्री०, पुं०)—स्वर्ग, वाण, पशु (गाय-वैल) वचन, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, जल ।

लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥२५॥

लिङ्गम्—चिह्न, उपस्थ इन्द्रिय ॥२५॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च

शृङ्गम्—श्रेष्ठता, पर्वत की चोटी, पशु की सींग ।

वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः ।

वराङ्गम्—मस्तक, स्त्री की योनि ।

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नाकर्मकीर्तिपु॥२६॥

भगम्—लक्ष्मी, इच्छा, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रयत्न, सूर्य, यश ॥२६॥

( इति गान्ता । )

परिधः परिधातेऽस्त्रेऽपि

परिधः—चौतरफा की मार, गैबासा, लोहोंगी और अपिशब्द से योगविशेष ।

ओघो वृन्देऽम्भसां रये ।

ओघः—समूह, जल का प्रवाह, परम्परा, नृत्यविशेष ।

मूल्ये पूजाविधावर्ध

अर्थः—दाम, पूजा का सामान, खरीदी हुई वस्तु ।

अहो दुःखव्यसनेष्वधम् ॥२७॥

अधम्—पाप, दुःख, शिकार, जुआ या नशे की आदत ॥२७॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः

लघु—(पु०-स्त्री-नपु०) प्रिय, छोटा, योका ।

( इति घान्ता )

काचाः शिख्यमृन्देदृष्टुजः ।

काचः—खिफ्टर, एक विशेष प्रकार की मिथी, नेत्र का रोगविशेष ।

धिपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः

प्रपञ्चः—उलटा, विस्तार, फसाद ।

पावके शुचिः ॥२८॥

मास्यमात्ये चाप्युपधे पुंसि मेध्ये लिते त्रिषु ।

शुचिः—(पुं०) अग्नि, आपाद नहींना, मना, शुद्ध मन (पु०-स्त्री-नपु०) पवित्र, सफेद ॥२८॥

अभिप्यहो स्पृहायां च ममस्तां च रुचिः

स्त्वियाम् ॥२९॥

रुचिः—(स्त्रीलिंग) अतिशय आसक्ति, इच्छा भिरज, होना ॥२९॥

( इति गान्ता )

“प्रसन्ने भल्लुकेऽप्यच्छो गुच्छः स्तवकहारयोः ।

अच्छः—प्रमत्त, भालू, स्फटिक मणि ।

गुच्छः (त्रिलि - डठल, फूल का गुच्छा, समुदाय परिधानाञ्जले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः ॥३०॥”

कच्छः—(त्रिलिङ्ग) वस्त्र का अंचल (धोती की लॉग) कच्छ (त्रिलिङ्ग) कछार देश ॥३१॥

इति क्षेपकखान्त ।

केकिताक्ष्याविद्भिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।

द्विजः—अहिभुज् ( पुं० ) मोर, गरुड, दाँत, ब्राह्मण-क्षत्रिय वैश्य, पक्षी ।

अजा विष्णुहरच्छाया ।

अजः—विष्णु, शिव, चक्रा, रामदेव, ब्रह्मा, रघु के पुत्र ।

गोष्ठाध्वनिचहा व्रजाः ॥३०॥

व्रजः—गोशाला, रास्ता, समूह ॥३०॥

धर्मराजौ जितयमौ

धर्मराजः—बुद्ध भगवान्, यमराज, युधिष्ठिर ।

कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।

कुञ्जः—( पुंल्लिङ्ग-नपुंसक ) दाढ़ी का दात, लतागृह ।

वटजे क्षेपपूदरि वलजा वलगुदर्शना ॥३१॥

वलजम्—गैत, नगर का द्वार ।

वलजा—सुन्दरी स्त्री ॥३१॥

समे द्वाशे रणेऽप्याजि ।

आजि—(स्त्री०) समतल भूमि, मझान ।

प्रजा स्यात्सन्तती जने ।

प्रजाः (स्त्री०)—सन्तान, जनता ( २५२ ) ।

अञ्जौ शङ्खश्याको च

अञ्जः—शङ्ख, चन्द्रना, कमल ।

स्वके नित्ये विज त्रिषु ॥३२॥

विजम्—( त्रिलिङ्ग ) आता निय ॥३२॥

( इति गान्ता )

पुस्त्यान्मनि प्रयोरे च क्षुप्रक्षो घाच्यति शृङ्गः ।

क्षुप्रक्षः—( पुं० ) दुर्बल ( स्त्री० पुं० नपुं० ) शृङ्ग

संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचनम् ॥३३॥

संज्ञा—होश, हाथ भौ तथा नेत्र का संकेत,  
गायत्री, सूर्य की स्त्री ॥३३॥

(इति वान्ताः )

काकेभगराडौ करटौ

करटः—कौआ, हाथी का गराडस्थल ।

गजगराडकटी कटौ ।

कटिः (पुं०)—हाथी का गराडस्थल, कमर ।

शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥३४॥

शिपिविष्ट—खल्वाट (गंजा), खराब चमड़ा,  
शिवजी ॥३४॥

देवाशल्पिन्यपि त्वष्टा

त्वष्टः—विश्वकर्मा, सूर्यविशेष, वडई ।

दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ।

दिष्टम्—पूर्वजन्म का कर्म, भाग्य ।

दिष्टः—समय ।

रसे कटु कटुघकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ।

कटुः (पुं०)—पिप्पली आदि का रसविशेष

कटुं (नपुं०) खराब काम ।

कटु (त्रिलिङ्ग)—ईर्ष्या, तीखा ।

रिष्टं क्षेमाशुभाभावे

रिष्टम्—कल्याण, असंगल, अभाव ।

अरिष्टं तु शुभाशुभे ॥३५॥

अरिष्टम्—शुभ, अशुभ ॥३५॥

मायानिश्चलमंत्रेषु कैतवानृतराशिषु ।

अयोधने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ३६

कूटम् (पुं-नपुं०)—माया, निश्चल (जिसका कमी

नाश न हो), यंत्र (मृगों को फँसाने का जाल)

कपट, झुठाई, समूह, लोहे का धन, पर्वत की

चोटी, हल का अगला हिस्सा (फाल) ॥३६॥

सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे

संशयेऽपि सा

१ यह श्लोक छेपक है—

दोषज्ञौ वैश्वविदासौ ज्ञो विद्वान्मोमजोऽपि च ।

विशो प्रवीणकुशलौ कालज्ञो ज्ञानिकुलकुट्यौ ॥

त्रुटिः (स्त्री०)—छोटी (गुजराती) इलायची, समय,

केवल उतना समय कि जितनी देर में हस्व अक्षर  
की चौथाई मात्रा बोली जा सके, घोड़ा, सन्देह ।

आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यः

कोटिः (स्त्री०)—पीढ़ा, उन्नति, कोना ।

मूले लग्नकचे जटा ॥३७॥

जटा—जड़, उलझा केश, जटामांसी, वेद  
का पाठविशेष ॥३७॥

व्युष्टिः फले समृद्धौ च

व्युष्टिः—फल, बढ़ी हुई दौलत ।

दृष्टिर्ज्ञानेऽदिष्टिर्दर्शने ।

दृष्टिः—ज्ञान, आँख, देखना ।

इष्टिर्यागेच्छयोः

इष्टि—यज्ञ, इच्छा ।

सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ॥३८॥

सृष्टम्—निश्चित (तैं पायी हुई बात), अधिक  
(त्रिलिङ्ग) ॥३८॥

कष्टे तु कृच्छ्रगहने

कष्टम्—कठिनाई, (त्रिलिङ्ग) घना वन ।

दक्षामन्दागदेषु च ।

पटुः

पटुः—चलता-पुरजा, आरोग्य ।

द्वौ वाच्यलिङ्गौ च

उपर्युक्त कष्ट और पटु शब्द वाच्यलिङ्ग हैं  
यानी चाहे जिस लिङ्ग में इनका प्रयोग किया जा  
सकता है ।

( इति वान्ताः )

नीलकण्ठः शिवेऽपि च ॥३९॥

नीलकण्ठः—शिव, मयूर ॥३९॥

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा ।

कोष्ठः (पुं०)—पेट का भीतरी भाग, कोठिला,

घर का भीतरी हिस्सा ।

निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः

निष्ठा—उपपत्ति, गायब होना, विनाश ।

स्वाप्नाद्युदमप्रवागरलोऽमये मूलवर्णिग्वने ४३

भाण्डम्—पौके ५५ अतस्मात्, परतन, मूल  
धन, धाने ५५ पृष्ठा ॥४३॥

( ११३ अमर )

यणो द्विजादी शुद्धादी स्तुती वर्णं तु पादरे ४३

वर्णं (पु०)—अतस्मात् ( ११३ अमर ), शुद्धादी-  
दीर्घादि रय, स्तुति ।

वर्णम् ( ननु )—अतस्मात् ( ११३ अमर )

अथर्वो नास्तीति स्यादप्येनेतिऽपि च विदुः ।

अरुणः—सूर्य, ( त्रिलिङ्ग० ) सूर्य का सारथि, वर्णमेद ( प्रातः काल और सन्ध्या के समय आकाश की लालिमा ) ।

**स्थाणुः शर्वोऽपि**

स्थाणुः—शिव, थून ( खम्भा ), चिरस्थायी पर्वत, वृक्ष ( ढूँठ ) ।

**अथ द्रोणः काकेऽपि**

द्रोणः—कौआ, अपिशब्द से अश्वत्थामा के पिता, परिमाणविशेष ( ४ आढक=१ द्रोण )

**आजौ रवे रणः ॥४८॥**

रणः—संग्राम, शब्द ॥४८॥

**ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ।**

ग्रामणीः ( पुं० )—नाई, प्रधान, गाँव का मालिक ।

ग्रामणी—( त्रिलिङ्ग० ) ।

**ऊर्णा मेघादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रवोः ।**

ऊर्णा—मेढे आदि का रोआँ (ऊन), भौहों के बीच की भौरी ॥४९॥

**हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ।**

हरिणी—मृगी, सुवर्ण की बनी हरी प्रतिमा ।

**त्रिषु पाण्डौ च हरिणः ।**

हरिणः ( त्रिलिङ्ग० )—मृग, पाण्डुर वर्ण ।

**स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मन ॥५०॥**

स्थूणा—खूँटा, घर का खम्भा, लोह की बनी प्रतिमा ॥५०॥

**तृष्णा स्पृहा पिपासे द्व**

तृष्णा—कामना, प्यास ।

**जुगुप्साकरुणे घृणे ।**

घृणा—निन्दा, दया ।

**वणिकपथे च विपणिः**

१ ग्रामण्यो=गाँव का पटवारी ( शुक्रनीति ) । हाल की गाथासप्तशती से पता चलता है कि ग्रामणी गाँव का फौजी सरदार होता था । जिसका कार्य डाकुओं से गाँवों की रक्षा करना था ।

विज्झारुप्रणालाव पत्नी मा कुणी ग्रामणा ससै ।

पचुज्जोवई यदि कदवि मुणयिता जीवित मुअई ॥

विपणिः—वाजार की गल्ली, दूकान ।

**सुरा प्रत्यक् च वासुणी ॥५१॥**

वासुणी—शराब, पश्चिम दिशा । च शब्द से गरुडद्वी ॥५१॥

**करेणुरभ्यां स्त्री, नेभे**

करेणुः—हाथी, हयिनी । हाथी के अर्थ में 'करेणु' शब्द पुल्लिङ्ग है और हयिनी के अर्थ में स्त्रीलिङ्ग है ।

**द्रविणं तु बलं धनम् ।**

द्रविणम् ( नपु०-पुं० )—बल, धन ।

**शरणं गृहरक्षित्रोः**

शरणम्—घर, रक्षक ।

**श्रीपर्णं कमलेऽपि च ॥५२॥**

श्रीपर्णम्—कमल, अग्निमन्थ वृक्ष ॥५२॥

**विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीवे खरे त्रिषु ।**

तीक्ष्णम्—विष, युद्ध, लोह, अतिशय तीखा, सेंधा नमक ।

**प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ॥५३॥**

प्रमाणम्—कारण, मर्यादा ( सीमा ), शास्त्र की इयत्ता, ज्ञानी ॥५३॥

**करणं साधकतम क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ।**

करणम्—कार्यसिद्धि में प्रधान कारण, खेत, शरीर, इन्द्रिय । अपिशब्द से वैश्य के ससर्ग से शूद्रा स्त्री में उत्पन्न सन्तान ।

**प्राण्युत्पादे, संसरणमसंवाधचमूगतौ ॥५४॥**  
**घटापथे**

ससरणम्—प्राणियों का जन्म, जिधर से बिना रुकावट सेना चली जा सके, वह राजमार्ग ॥५४॥

**अथ वान्तास्ते समुद्गिरणमुन्नये ।**

समुद्गिरणम्—वमन किया हुआ अन्न, जल-पात्र आदि का ऊपर उठाना, उखाड़ना ।

**अतस्त्रिषु**

आगे कहे जानेवाले सब एान्त शब्द पुं० स्त्री० नपुंसक तीनों लिङ्ग हैं ।

**विपाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ॥५५॥**



विषाणम् (विलिङ्ग) — तशुओं की सींग, हाथी के दाँत ॥ ५५॥

प्रवणं कमनिमोर्व्यां प्रहे ना तु चतुष्पथे ।

प्रवणम् (विलिङ्ग) — रुमश डालुआ जमीन, नम्र, चाराहा ।

सकीर्णौ निचिताशुद्धौ

सकीर्ण ( विलिङ्ग ) — गहन, व्याप्त, अशुद्ध, वर्णमकर ।

ईरिणं शून्यमूपरम् ॥ ५६॥

ईरिणम् ( विलि ) — आश्रयहीन देश, ऊसर भूमि ॥ ५६॥

( इति शान्ता )

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ

विवस्वत् — देवता, सूर्य ।

सरस्वन्तौ नदार्णवौ ।

सरस्वत् — नद, समुद्र ।

पक्षितादर्थौ गरुत्मन्तौ

गरुत्मन् — रक्षी, गरुड ।

शकुन्तौ भासपक्षिणौ ॥ ५७॥

शकुन्त -- भास पक्षी, पक्षीमात्र ॥ ५७॥

अग्न्युत्पातो धूमकेतू

धूमकेतुः -- अग्नि, उत्तातसूचक ताराविशेष ।

जीमूतौ मेघपर्वतौ ।

जीमूत -- मेघ, पर्वत ।

हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे

हस्त -- हाथ, हस्तनक्षत्र ।

मरुतौ पवनामरो ॥ ५८॥

मरुत् -- वायु, देवता ॥ ५८॥

यन्ता हस्तिपके सूते

यन्तू -- शीपीयन्त, नारदी ।

मर्ता धातरि पोंष्टरि ।

मर्तू -- मर्त्य, दवान्ता ।

१-५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

१-५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

यानपात्रे शिशौ पोतः

पोत -- नाव, बालक ।

प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ॥ ५९॥

प्रेतः -- दूसरा जीवन, मृतक ॥ ५९॥

ग्रहभेदे ध्वजे केतुः

केतुः -- ग्रहविशेष, पताका ।

पार्थिवे तनये सुतः ।

सुत -- राजा, पुत्र ।

स्थपतिः कारुभेदेऽपि

स्थपतिः -- कारीगर । अपिशब्द से रुचुकी, जीवेष्टियाजी ।

भूभृद्भूमिधरे नृपे ॥ ६०॥

भूभृद् -- पर्वत, राजा ॥ ६०॥

मूर्धाभिपिक्तो भूपेऽपि

मूर्धाभिपिक्त -- राजा, क्षत्रियमात्र ।

श्रुतः स्त्रीकुसुमेऽपि च ।

श्रुतः ( पु० ) -- क्षीरज, यस्मिन् आदि छ श्रुतये ( स्त्री० )

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ

अजित अव्यक्त -- विष्णु भगवान्, अपराजित, शिव ।

सूतस्त्वष्टरि सारथो ॥ ६१॥

सूतः -- मर्त्य, नारदी, मर्त्यजन ॥ ६१॥

व्यक्तः प्राप्तेऽपि

व्यक्तः ( विलिङ्ग ) -- पण्डित, मर्त्य ( मृष्ट ) दृश्य, स्थूल ।

दृष्टान्ताद्युभौ शास्त्रनिर्द्देशे ।

दृष्टान्त -- दर्शित शब्द, उदाहरण ।

क्षत्ता स्यात्सारथी डा.स्ये क्षत्रियाथी च शूद्रजे

क्षत्तू -- क्षात्र, क्षात्र, शूद्र के मर्त्यों के क्षत्रिया के उदाहरण ॥ ६२॥

तृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारेण सूर्यचार्त्तयोः ।

तृत्तान्त -- प्रकरण, प्रकार, प्रकरण, प्रकरण ।

प्रान्तः मन्त्रे नृपस्थानतीतिप्रकरणे ॥ ६३॥

आनर्तः—संग्राम, नाट्यशाला, द्वारिकापुरी ॥६३॥  
कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ।

कृतान्तः—यमराज, सिद्धान्त, पूर्वजन्म का  
( प्रारब्ध ) कर्म, पाप ।

श्लेष्मादिरसरक्तादिमहाभूतानि तद्गुणा ।  
इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥६४॥

धातु —श्लेष्मा आदि ( वात, पित्त, कफ )  
रस, रक्त आदि ( आदि शब्द से वसा, मज्जा  
आदि महाभूत (पृथिवी, जल, तेज, वायु और  
पृथिवी आदि ) गुण (गन्ध आदि) इन्द्रियों, पत्थर  
का विकार ( शिलाजीत, सखिया आदि ), शब्दों  
की उत्पत्ति के कारण भू आदि धातु ॥६४॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ॥६५॥

शुद्धान्तः—राजा की राजधानी का स्थान-  
विशेष ( गुप्त स्थान ) रनिवास, आशौचान्त ॥६५॥

कासूसामर्थ्ययोः शक्तिः

शक्तिः—सोंगा, बछीं, सामर्थ्य ।

मूर्तिः काठिन्यकाययोः ।

मूर्तिः—मजबूती, शरीर ।

विस्तारवल्लयोर्व्रततिः

व्रतति.—फँलाव, लता ।

वसती रात्रिवेश्मनोः ॥६६॥

वसति. (स्त्री०)—रात्रि, मकान ॥६६॥

क्षयार्चयोरपचितिः

अपचितिः (स्त्री०)—नुकसान, पूजा ।

सातिर्दानावसानयोः ।

सातिः (स्त्री०)—दान, अन्त ।

अर्तिः पीडा धनुषकोट्योः

अर्तिः—पीडा, धनुष का अग्रभाग ।

जातिः सामान्यजन्मनोः ॥६७॥

जातिः—मनुष्य-पशु आदि जाति, जन्म,  
मालती, जायफल ॥६७॥

प्रचारस्यन्दयो रीतिः

रीतिः—प्रणाली, ऋणा, पीतल लोहे की कीट ।

ईतिर्दिग्प्रवासयोः ।

ईतिः—विगलव, परदेश ।

उदयेऽधिगमे प्राप्तिः

प्राप्तिः—उत्पत्ति, लाभ ।

त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥६८॥

त्रेता—दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय  
ये तीन प्रकार की अग्नि, त्रेतायुग ॥६८॥

वीणाभेदेऽपि महती

महती—नारद की वीणा, महिमामयी स्त्री  
आदि ।

भूतिर्भस्मनि सम्पदि ॥६९॥

भूतिः—अणिमा महिमा आदि सिद्धियाँ,  
भस्म, सम्पत्ति ॥६९॥

नदीनगयोनानां भोगवत्यः

भोगवती—नागों की नदी, सर्पों की पुरी ।

अथ संगरे ।

सङ्गे सभायां समितिः

समितिः—सग्राम, साथ, सभा ।

क्षयवासावपि क्षितिः ।

क्षितिः—नाश, निवासस्थान, पृथ्वी ।

खेरर्विश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ॥७०॥

हेतिः—सूर्य की किरण, हथियार, आग की  
लपट ॥७०॥

जगती जगतिच्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ।

जगती—ससार, एक प्रकार का छन्द, भूमि,  
जन-समुदाय ।

पङ्क्तिश्छन्दोऽपि दशमम्

पङ्क्ति—दस अक्षर के चरण का छन्द, श्रेणी ।

स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ॥७१॥

आयतिः—आगामी समय, प्रभाव, समय,  
विस्तार ॥७१॥

पत्तिर्गतौ च

पत्ति—पैदल सेना, गमन ।

१ इत्य सप्तविधा —

अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मृषिका शलमा. खगा ।

प्रत्यासन्नाथ राजान. सप्रेता रेतय. स्मृता. ॥

मूले तु पक्षति. पक्षभेदयोः ।

पक्षतिः—प्रतिपदा तिथि, पंख की जड़ ।

प्रकृतियोंनिलिङ्गे च

प्रकृतिः—स्वभाव, योनि, लिङ्ग, राजा के मंत्री आदि ।

कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ॥७२॥

वृत्तिः—नाट्य-शास्त्र की कैशिकी आदि वृत्ति, सूत्र का विवरण ॥७२॥

सिकताः स्युर्वालुकाऽपि

सिकताः—( श्रीलिङ्ग बहुवचनान्त ) बालू, बालुकामय देश ( रेगिस्तान )

वेदे श्रवसि च श्रुतिः ।

श्रुतिः—वेद, कान, सुनना ।

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योपिति ७३

वनिता—स्त्रीमात्र, वड़ी प्यारी स्त्री ॥७३॥

गुप्तिः क्षितिध्रुदासेऽपि

गुप्तिः—पृथ्वी के भीतर का गवहा, गुफा या जेलखाना ।

धृतिर्धारणधैर्ययोः ।

धृतिः—धारण करना, धैर्य ।

वृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि ॥७४॥

वृहती—बोटा भरवा, एक प्रकार का छन्द, वड़ी ॥७४॥

वासिता री करिणोश्च

वासिता—छो, दृष्टिनी ।

वार्ता वृत्तां जनश्रुतो ।

वार्ता—जीविदा, अफवाह, समाचार ।

पार्त फल्गुन्यारोगे च त्रिषु

पार्तम्—(त्रिलिङ्ग) दुःख, आरोग्य, अन्धार, तराहीन ।

अप्सु च पृथानृते ॥७५॥

अप्सु—पानी, जल ।

अमृतम्—अमृत, जल, मुक्ति, यज्ञ शेष का वाचक, विना मागे मिली भीख ॥७५॥

कलधौत रूप्यहेम्नोः

कलधौतम्—चौदी, सोना ।

निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ।

निमित्तम्—कारण, चिह्न ।

श्रुतं शास्त्रावधृतयोः

श्रुतम्—शास्त्र, सुनी बात ।

युगपर्याप्तयोः कृतम् ॥७६॥

कृतम्—सत्ययुग, पर्याप्त ॥७६॥

अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ।

अत्याहितम्—बड़ा भय, साहममय कर्म ।

युक्ते दमादावृते भूतं प्राणयतीते समे त्रिषु ॥७७॥

भूतम् (त्रिलिङ्ग)—न्याय, पृथिवी अर्त् तेज वायु आकाश, सत्य, प्राणी, पीता समय ॥७७॥

वृत्तं पथे चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ।

वृत्तम् (त्रिलिङ्ग)—छोंक, चरित्र, पीता समय, मजघूत, गोल ।

महद्रान्यं च

महत्—राज्य, यज्ञ ।

अवगीतं जन्ये स्याद्गृहिते त्रिषु ॥७८॥

अवगीतम् (त्रिलिङ्ग)—भदनाना, निन्दित व्यक्ति ॥७८॥

श्वेत रूप्येऽपि

श्वेतम्—चौदी, नफेद रंग, आरविद्योय ।

रजत हेमि रूप्ये स्तिन त्रिषु ।

रजतम् (त्रिलिङ्ग)—सोना, चौदी, नफेद रंग ।

त्रिष्वतः

इय 'रजत' शब्द से अने 'रजत' (७८वां श्लोक) से लेकर 'आहत' ( ८४वें श्लोक ) तक सब शब्द तीनों लिङ्ग हैं ।

अगदितेऽपि

अगद (त्रि०)—अन्धार, अन्ध (पलमे ५८४वें श्लोक) ॥७९॥

एवं गीत्यादि रागि च ७९५ ।

रक्तम् (त्रि०)—नील आदि रंग, रुधिर, प्रेमी ॥७६॥

अवदातः सिते पीते शुद्धे

अवदातः (त्रि०)—उज्ज्वल वस्तु, पीला रंग, शुद्ध ( निर्मल ) ।

बद्धार्जुनौ सितौ ।

सितः (त्रि०)—बँधुआ (कैदी), सफेद रंग ।

युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतः

अभिनीतः (त्रि०)—युक्त, न्यायसंगत, अतिश्रेष्ठ, क्षमावान् ।

अथ संस्कृतम् ॥८०॥

कृत्रिमे लक्षणोपेतोऽपि

संस्कृतम् (त्रि०)—संस्कारयुक्त, वनावटी, घड़े आदि रँगना, लक्षणयुक्त ॥८०॥

अनन्तोऽनवधावपि ।

अनन्तः (त्रि०)—नि सीम, शेषनाग, विष्णु भगवान् ।

ख्याते हृष्टे प्रतीतः

प्रतीतः (त्रि०)—प्रसिद्ध, प्रसन्न ।

अभिजातस्तु कुलजे बुधे ॥८१॥

अभिजातः (त्रि०)—कुलीन, पंडित ॥८१॥

विविक्तौ पूतविजनौ

विविक्तः (त्रि०)—पवित्र, एकान्त, निर्जन ।

मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ।

मूर्च्छितः (त्रि०)—बेहोश, वृद्धियुक्त ।

द्वौ चाम्लपक्षौ शुक्तौ

शुक्तः (त्रि०)—चूक, कठोर ।

शितौ धवलमेचकौ ॥८२॥

शितिः (त्रि०)—उज्ज्वल, काला ॥८२॥

सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ।

सत् (त्रि०)—सत्य, सज्जन, विद्यमान,

अच्छा, पूज्य ।

पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥८३॥

पुरस्कृतः (त्रि०)—अगुवा, पूजित, शत्रु से

दबोचा हुआ, आगे किया हुआ ॥८३॥

निघातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ।

निघातः (त्रि०)—निवासस्थान, वायुरहित, जो शस्त्र से न भेदन किया जा सके, वह कवच (जिरहबख्तर) ।

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिताः

उच्छ्रितः (त्रि०)—उत्पन्न, बढ़ा हुआ, ऊँचा, घमण्डी ।

उत्थितास्त्वमी ॥८४॥

वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्नाः

उत्थितः (त्रि०)—बढ़ता हुआ, उदयोन्मुख, उत्पन्न ॥८४॥

आदृतौ सादरार्चितौ ।

आदृतः (त्रि०)—आदर किया हुआ, पूजित ।

इति तान्ता ।

अर्थोऽभिधेय-रै-वस्तु-प्रयोजन-निवृत्तिषु ॥८५॥

अर्थः—अभिप्राय, धन, वस्तु, प्रयोजन,

निवृत्ति, विषय ॥८५॥

निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ।

तीर्थम्—पौंसरा, शास्त्र, ऋषिसेवित जल,

गुरु, अध्यापक ।

समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे सम्बद्धार्थे हितेऽपि च ॥८६॥

समर्थः (पुं-स्त्री-नपुं०)—बलवान्, सम्बन्ध

युक्त अर्थ, अनुकूल ॥८६॥

दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ

दशमीस्थः—रागविहीन, अतिवृद्ध ।

वीथी पदव्यपि ।

वीथी—रास्ता, पक्लि ।

आस्थानीयत्नयारास्था

आस्थानी—सभा, उपाय ।

प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः १ ॥८७॥

१ यह अर्थ श्लोक क्षेपक है—

शास्त्रद्विषययोर्मन्यः सस्थापारे स्थितौ मृतौ ॥१॥

मन्य—शास्त्र, धन ।

संस्था—आधार, स्थिति, मृत्यु ॥१॥

प्रस्थाः (पुं-नपुंसक) — पहाड़ की चोटी, एक  
सेर ॥८७॥

इति धान्ता ।

अभिप्रायवशौ छन्दौ

छन्दः — अभिप्राय, अधीन, पथ ।

अब्दौ जीमूतवत्सरौ ।

अब्दः — मेघ, वर्ष, एक पर्वत, मोघा, इन्द्र ।

अपवादौ तु निन्दाक्षे

अपवादः — निन्दा, आज्ञा ।

दायादौ सुतवान्धवौ ॥८८॥

दायादः — पुत्र, जाति, बन्धुजन, कुटुम्ब,  
सपिराट ॥८८॥

पादा रश्म्यघ्नितुयांशः

पादः — किरण, पैर, चौथाई हिस्सा, श्लोक का  
छा चतुर्थांश ।

चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः ॥

तमोनुदः — चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य ।

निर्वादो जनवादेऽपि

निर्वादः — लोकापवाद, सिद्धान्तवाद ।

शादो जम्वालशष्पयोः ॥८९॥

शादः — शीघ्र, डोही २ पात ॥८९॥

आराधे रुदिते प्रातयांस्तदो वाद्ये रणे ।

आकन्द — दयनीय स्तर, फूट २ कर रोना,  
रक्षक, कठोर सप्राप्त ।

स्थाप्रसादोऽनुरागेऽपि

प्रसादः — अनुग्रह, प्रसन्नता, कान्य छ गुण  
विशेष, भरोष ।

सुदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ॥९०॥

सुदः — रसोद्दि, रसोदया ॥९०॥

गोष्ठाप्येऽपि गोविन्दः

गोविन्द — गोष्ठाज्ञे आ साहिक, इहस्वर्ग,  
हृद्य ।

१. गोष्ठाप्येऽपि गोविन्दः  
गोविन्दः (गो-विन्द) का साहिक, इहस्वर्ग,  
हृद्य ।

हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ।

आमोद — हर्ष, दूर ही से मन हरनेवाली सुगन्धि ।

मदः — हर्ष, अभिमान, गज का मद, वीर्य ।

प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम्

ककुदः — ( पु-नपुंसक ) प्रधान, राजपिङ्ग,  
वैल का कंवा ॥९१॥

स्त्री संविज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजनामसु ।

संविद् — ( स्त्री० ) ज्ञान, सम्भाषण, कर्म का  
नियम, बुद्ध, सज्ञा, सकेत ।

धर्मे रहस्युपनिषद्

उपनिषद् — धर्म, एकान्त, वेदान्त ।

स्यादतौ वत्सरे शरत् ॥९२॥

शरद् ( स्त्री० ) — शरद् ऋतु, वर्ष ॥९२॥

पदं व्यवसितग्राणस्थानलक्ष्माघिवस्तुपु ।

पदम् — व्यवसाय, रक्षा, स्थान, निद्रा, पैर,  
वस्तु, सुवन्त-तिष्ठन्तरूप शब्दभेद ।

गोष्पदं सेविते माने

गोष्पदम् — गोसेवित देश, गोकुल गुर भर नाथ  
की तगीन ।

प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ॥९३॥

आस्पदम् — प्रतिष्ठा (स्थान), धर्म ॥९३॥

त्रिष्विष्टमधुरौ स्वाद्

स्वादुः ( पु-स्त्री नपु० ) — मीठा, मीत्र । रसो  
ये दमयन्त नम शब्द दोनों निष्ठ के होंगे ।

मृदु चातोदयकांमलौ ।

मृदु — ( पु-स्त्री नपु० ) शीतल, शीतल ।

मृदालापटुनिर्माग्या मन्दाः स्युः

मन्दः — ( पु-स्त्री नपु० ) सुगन्ध, मीठा, प्रमाणा,  
प्रमाणा ।

स्त्री तु शारदी ॥९४॥

प्रत्यग्रामनिभो

शारदः ( पु-स्त्री नपु० ) नमोन, शीतल ॥९४॥

विश्वस्तु प्रगल्भी विशारदी ।

विशारदः ( पु-स्त्री नपु० ) — विशारद, शर ।

( शरि शरणा )

**व्यामो वटश्च न्यग्रोधौ**

न्यग्रोधः—व्याम, अँकवार ( दोनों हाथ फैला कर टेढ़ा करके जोड़ना ) वरगद ।

**उत्सैधः काय उन्नतिः ॥६५॥**

उत्सैधः—शरीर, उँचाई ॥६५॥

**पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ।**

विवधः, वीवधः—ध्यान आदि, रास्ता, बोझा ।

**परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ॥६६॥**

परिधिः ( पुं० )—यज्ञीय वृत्त की शाखा (समिधा), चन्द्र-सूर्य का मंडल, वह रेखा जो किसी गोल पदार्थ के चारों ओर खींचने से बने ॥६६॥

**बन्धकं व्यसन चेत्पीडाधिष्ठानमाधय ।**

आधिः ( पुं० )—बन्धक ( गिरवी रखना ), व्यसन, मानसिक कष्ट, आश्रय ।

**स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ॥६७॥**

समाधिः ( पुं० )—शका का समाधान, चुप रह जाना, स्वीकार करना ॥६७॥

**दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ।**

**मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥६८॥**

अनुबन्धः—दोष की उत्पत्ति, प्रकृति-प्रत्यय-आगम-आदेश में जिस वर्ण का नाश हो गया हो वह, बड़ों का अनुसरण करनेवाला बालक, प्रकृत वस्तु की परम्परा से चलना ॥६८॥

**विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि**

विधुः—विष्णु भगवान्, चन्द्रमा, कपूर ।

**परिच्छेदे विलेऽवधिः ।**

अवधिः ( पुं० )—सीमा, गढ़वा, विल ।

**विधिर्विधाने दैवेपि**

विधिः ( पुं० )—विधान, भाग्य, ब्रह्मा ।

**प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥६९॥**

प्रणिधिः ( पुं० )—प्रार्थना, दूत ॥६९॥

**बुधवृद्धौ परिडतेऽपि**

बुधः—परिडत, विद्वान्, वृद्धजन, ग्रहविशेष ( चन्द्रमा का पुत्र बुध ) ।

**स्कन्धः समुदयेपि च ।**

स्कन्धः—समूह, कारण, राजा, कन्धा ।

**देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम्**

सिन्धुः ( पुंलिङ्ग )—सिन्ध देश, नदविशेष, समुद्र ।

सिन्धुः—( स्त्री० ) नदी ॥१००॥

**विधा विधौ प्रकारे च**

विधा ( स्त्री )—विधान, प्रकार ।

**साधू रम्येऽपि च त्रिषु ।**

साधुः ( पु-स्त्री—नपु० )—सज्जन, कुलीन, रमणीक ।

**वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च**

वधू—भार्या, पतोहू, स्त्रीमात्र ।

**सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ॥१०१॥**

सुधा—चूना, अमृत, सेंहुइ ॥१०१॥

**सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा**

सन्धा—प्रतिज्ञा, मर्यादा, स्वीकृति ।

**श्रद्धा सम्प्रत्ययः स्पृहा ।**

श्रद्धा—आदर, विश्वास, आकाक्षा ।

**मधु मद्ये पुष्परसे दौद्रेऽपि**

मधु—शराब, फूल का रस ( शहद ), अपि शब्द से चैत्र का महीना, महुआ ।

**अन्धं तमस्यपि ॥१०२॥**

अन्धम्—अन्धकार, अन्धा प्राणी ॥१०२॥

**अतस्त्रिषु**

यहाँ से लेकर धकारान्त सभी शब्द पुं० स्त्री०-नपुंसक तीनों लिङ्ग हैं ।

**समुन्नद्धौ परिडतम्मन्यगर्वितौ ।**

समुन्नद्धः—( त्रिलि ) अपने को पंडित मानने-वाला, अभिमानी ।

**ब्रह्मबन्धुरधिज्ञेपे निर्देशे**

ब्रह्मबन्धुः ( त्रिलि )—ब्राह्मण के प्रति निन्दा सूचक, आदेश ।

**अथावलम्बितः ॥१०३॥**

**अविद्रोऽप्यवपुः**

अवपुः ( त्रिलि० )—अधीन, समीपवर्ती,

रुका हुआ, बधा हुआ ॥१०३॥

प्रसिद्धौ ख्यातभूपितौ ।

प्रसिद्धः (त्रिलि) — विख्यात, अलंकृत ।

( इति धान्ता )

सूर्यवह्नौ चित्रभानु

चित्रभानुः (पुं०) — सूर्य, अग्नि ।

भानु रश्मिदिवाकरौ ॥१०४॥

भानुः (पुं०) — किरण, सूर्य ॥१०४॥

भूतात्मानौ धातुदेहौ

भूतात्मन् — (पुं०) ब्रह्मा, (नपुं०) शरीर ।

मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ।

पृथग्जनः — मूर्ख, नीच ।

प्राचाणौ शैलपापाणौ

प्राचिन् (पुं०) — पर्यंत, पर्यर ।

पत्रिणौ शरपक्षिणौ ॥१०५॥

पत्रिन् (पुं०) — बाण, पक्षी, दृक् ॥१०५॥

तरुशैलौ शिखरिणौ

शिखरिन् (पुं०) — शृङ्ग, पर्यंत ।

शिखिनौ वह्निर्वह्निणौ ।

शिखिन् (पुं०) — अग्नि, नयूर, केतुप्रह, बाण, मुर्गा ।

प्रतियत्ताधुमौ लिप्सोपग्रहौ

प्रतिययः — इच्छा, किरी हो पदाना अर्थात् अनुकूल करना ।

अथ सादिनी ॥१०६॥

प्रौ सारथिहयारोहौ

सादिन् — पुत्रसत्तर, सोचमान ॥१०६॥

पाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः ।

पाजिन् — पोरा, पाय, पक्षी ।

शुलेऽप्यभिघ्नो जम्भभूषामपि

अभिघ्नः — कुल, मित्र, प्रन्मन्त्रि ।

अथ हायनाः ॥१०७॥

पराविमोहिनेराध

हायनः — मने, किरण, अप्रतिष्ठेय ॥१०७॥

यन्त्रायन्त्रा विरोचना ।

विरोचनः — चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य, प्रह्लाद का पुत्र ।  
क्लेशेऽपि वृजिनः

वृजिनः — दुःख, विष्णु ( पु० ), पाप, टेका ( नपु० ) ।

विश्वकर्माऽकंसुरशिल्पिनोः ॥१०८॥

विश्वकर्म्मन् — सूर्य, देवताओं का बन्धु ॥१०८॥

आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्म च  
आत्मन् — उपाय, धैर्य, बुद्धि, स्वभाव, चित्त, ब्रह्म, देह ।

शक्रो घातुकमत्तेभो वपुर्कान्द्रो घनाघनः ॥१०९॥

घनाघनः — इन्द्र, पृथ्वी, मतवाला हाथी, वरसनेवाला मेघ ॥१०९॥

घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ।

घनः — (त्रि०) मेघ, मूर्ति का गुण, सेंटा हुआ, लोह का चक्र हथोड़ा ।

अभिमानोऽर्थादिदपे ज्ञाने प्रणयर्हिसयोः ॥११०॥

अभिमानः — धन आदि का घनपट, ज्ञान, प्रेम, दिया ॥११०॥

इनः सूर्ये प्रभौ

इनः — सूर्य, रत्नामी ।

राजा मृगाङ्गे क्षत्रिये नृपे ।

राजन् (पुं०) — चन्द्रमा, क्षत्रिय, वृष, रत्नामी, इन्द्र ।

याणिन्यौ नर्तकी दृत्यौ

याणिनी — नाचनेवाली पेरना, क्षत्री, इन्द्रनी ।

स्वकृत्यामपि याहिनी ॥१११॥

याहिनी — नर्त, उना ॥१११॥

हादिन्यौ यत्रतटिनी

हादिनी — यत्र, विजली ।

पन्दायामपि कामिनी ।

कामिनी — पन्दाय, कन्या, काम, यत्र

यत्रतटिनी

यत्रतटिनी

यत्रतटिनी — यत्रतटिनी

सूनाऽधोजिह्विकाऽपि च ॥११२॥

सूना—गले की घटी, वयस्थान, पुत्री ॥११२॥

क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके ।

मन्त्रे

वितानम्—( पुं-नपुंसक ) यज्ञ, विस्तार, आलसी (त्रिलिङ्ग) शून्य, ।

अथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमंत्रणे ॥११३॥

केतनम्—कार्य, ध्वजा, उपनिमंत्रण, घर ११३

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ।

ब्रह्मन्—वेद, तत्त्व, तपस्या, ब्रह्म ( नपुं० )

ब्रह्मा, ब्राह्मण, प्रजापति ( पुं० ) ।

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् ॥११४॥

गन्धनम्—प्रोत्साहन, हिंसा, आशय प्रकट करना ॥११४॥

आतञ्जनं प्रतीवाप-जवनऽप्यायनार्थकम् ।

आतञ्जनम्—दूध में जावन डालना, वेग, प्रसन्न करना ।

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ॥११५॥

व्यञ्जनम्—चिह्न, दाढी-मूँछ, भोजन, स्त्री, पुरुषों के गुह्यादि ॥११५॥

स्यात्कौलीन लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्

कौलीनम्—लोकनिन्दा, पशुओं, सापों और पक्षियों की लड़ाई ।

स्यादुद्यानं नि सरणे वनभेदे प्रयोजने ॥११६॥

उद्यानम्—निकलना, वगीचा, प्रयोजन ॥११६॥

अवकाशे स्थितौ स्थानम्

स्थानम्—अवकाश, ठिकाना, घर ।

क्रीडादावपि देवनम् ।

देवनम्—क्रीडा, व्यवहार ( वर्ताव ), जीतने की इच्छा ।

उत्थानं पौष्ट्ये तंत्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च ॥११७॥

उत्थानम्—उन्नति, पुरुषार्थ, उद्योग, कुटुम्ब-कार्य, सिद्धान्त, उत्तम औषधि, ऊँचे उठना ॥११७॥

व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ।

व्युत्थानम्—तिरस्कार, विरुद्ध व्यवहार, स्वतंत्र कार्य ।

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ॥११८॥  
निवर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ।

साधनम्—मारण ( पारा आदि शोधना )

मृतक का अग्निदाह, चलना, धन, धन दिलाना, धन कमाना, (औजार आदि) उपाय, अनुसरण ११८  
निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ॥११९॥

निर्यातनम्—बदला लेना, दान, धरोहर लौटाना ॥११९॥

व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ।

व्यसनम्—विपत्ति, विनाश, कामज दोष, ( शिकार, बूत, स्त्री, मदिरापान ) कोपज दोष ( वाक्पारुष्य आदि ) ।

पद्मानिलोन्निक्लिञ्जलके तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि

पक्षमन् (नपुं०)—आँख की वरौनी, केसर, सूत

का बहुत छोटा टुकड़ा ॥१२०॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व

पर्वन् ( नपुं० )—अष्टमी-अमावास्या आदि तिथि, उत्सव ।

वर्त्मं नेत्रच्छदेऽध्वनि ।

वर्त्मन् (नपुं०)—आँख की पलक, रास्ता ।

अकार्यगुह्ये कौपीनम्

कौपीनम्—अकार्य, लगोट ।

मैथुन संगतौ रते ॥१२१॥

मैथुनम्—स्त्री-पुरुष का ससर्ग, सुरत ॥१२१॥

प्रधानं परमात्मा धीः

प्रधानम्—परमात्मा, बुद्धि, सर्वश्रेष्ठ, राजा का मुख्य मंत्री ।

प्रक्षानं बुद्धिचिह्नयोः ।

प्रज्ञानम्—बुद्धि, चिह्न ।

प्रसूनं पुष्पफलयोः

प्रसूनम्—फूल, फल ।

निधनं कुलनाशयोः ॥१२२॥

निधनम्—वंश, नाश, हत्या, ज्योतिषोक्त लग्न से अष्टम स्थान ॥१२२॥

क्रन्दने रोदनाद्धाने





कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ।

कशिपु ( पुं-नपुं० )—भोजन, वस्त्र ।

तत्पुं शय्यादृदारेषु

तत्पुं ( पुं-नपुं० )—सेज, अटारी, छी ।

स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ॥१३०॥

विटपः—( पुं०-नपुं० ) घास का पूरा, डठल, डाली ॥१३०॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ।

भेद्यलिङ्गा अमी

प्राप्तरूपः, स्वरूपः, अभिरूपः ( त्रिलि० )—परिडत, सुन्दर ।

कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ॥१३१॥

कच्छपी—कछुई, सरस्वतीजी की वीणा ॥१३१॥

कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाहोऽष्टमैशके ।

कुतपः—हिरन के रोएँ का कपड़ा, दिन का आठवाँ हिस्सा ।

( इति पान्ता )

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने ॥१३२॥

गन्धर्वः—जन्म-मरण के बीच में स्थित प्राणी, घोड़ा, विश्वावसु आदि स्वर्ग के गायक, गायकमात्र, कस्तूरीमृग, नर कोयल ॥१३२॥

कम्बुर्ना वलये शंखे

कम्बुः—( पुं० ) कंगन, शंख, हाथी के दाँत का मध्य, सीपी ।

द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ।

द्विजिह्व—साँप, चुगलखोर ।

पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्रागाह पुंवद्वत्त्वेऽपि पूर्वजान् ॥१३३॥

पूर्वः—पूर्व दिशा ( त्रिलिङ्ग ) पूर्वज ( पुं० ) ब्रह्मा, पहला ॥१३३॥

( इति वान्ता )

कुम्भौ घटेभमूर्धाशौ

कुम्भः—घड़ा, हाथी का मस्तक, कुम्भकर्ण का बेटा, वेश्यापति, राशिविशेष ।

१ कुछ लोग इस श्लोक को दो एक मानते हैं ।

रवये पुंसि रेफः स्यात् कुरिमते वाच्यलिङ्गकः ।

डिम्भौ तु शिशुबालिशौ ।

डिम्भः—बच्चा, मूर्ख ।

स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ

स्तम्भः—खंभा, जड़ता ।

शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ॥१३४॥

शम्भुः—ब्रह्मा, शिव ॥१३४॥

कुक्षिन्न णार्भका गर्भाः

गर्भः—पेट, गर्भ का बच्चा, बालक, सन्धि, कटहल का काँटा ।

विस्मभः प्रणयेऽपि च ।

विस्मभः—प्रेम, शृङ्गार की प्रार्थना, विश्वास ।

स्याद्भेयां दुन्दुभिः पुंसि

स्यादत्ते दुन्दुभिः स्त्रियाम् ॥१३५॥

दुन्दुभिः—नगाड़ा ( पुं० ), लड़कों के खेलने की फिरकी ( स्त्री० ), वरुण, दैत्य ॥१३५॥

स्यान्महारजने क्लीवं कुसुम्भं करके पुमान् ।

कुसुम्भम्—कुसुम का फूल ।

कुसुम्भः—कमराडल ( करवा ) ।

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना

नाभिः—ढोढ़ी ( पुं० स्त्री० ), क्षत्रिय ( पुं० )

प्रधान राजा, पहिये का बिचला भाग ।

सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ॥१३६॥

सुरभिः—गौ ( स्त्री० ) वसन्त, जायफल,

चम्पा ( पुं० ), सुगन्धि, मनोहर ( त्रिलि० ), सुवर्ण, कमल ( नपुं० ) ॥१३६॥

सभा ससदि सभ्ये च

शिफा शिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि ॥१॥

शफ मूले तरुणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च ।

गुम्फ स्याद्गुम्फने बाह्योलङ्कारे च कीर्तित ॥२॥

( इति फान्ता )

रेफ—( पुं० ) बुरा ( वाच्यलिङ्ग ) ।

शिफा—चोट, नदी, जटामासी, माता ॥१॥

शफम्—वृषों की जड़, गौ आदि पशुओं की खुर ।

गुम्फः—गूँघना, मुजा का गढ़ना ।

सभा—(स्री०) सभाभवन, सभा के सदस्य,  
सामाजिक परिषद् ।

त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः ।

वल्लभः (त्रिलि०)—प्रिय, मालिक, सुल-  
क्षण घोड़ा (पुं०) ।

( इति भान्ता )

किरण-प्रग्रहौ रश्मौ

रश्मि (पुं०)—किरण, रस्ती (घोड़े आदि के  
बौंधने का पगहा) ।

कपिभेकौ सवङ्गमा ॥१३७॥

सवङ्गमः—(पुं०) वानर, मेढक ॥१३७॥

इच्छामनोमधौ कामौ

कामः—(पुं०) इच्छा, कामदेव ।

शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ।

पराक्रमः—(पुं०) बहादुरी, उद्योग ।

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपा. १३८

धर्म—(पुं०) पुण्य, यमराज, न्याय, स्वभाव,  
आचरण, सोमरस पान करनेवाले ॥१३८॥

उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाभ्युपक्रमः ।

उपक्रमः—(पुं०) उपाय नोचकर शान आरम्भ  
करना, नशी की प्रकृतिपरीक्षा या उपाय,  
इलाज, दल ।

वर्षिषपथः पुरं वेदो निगमः

निगमः—निगम, नगर, वेद ।

नामसो वर्षिष् ॥१३९॥

नेगमौ द्वौ

नेगमः—नगरक, बनेजा, वेदिकरसु, उर-  
निगम ॥१३९॥

बले रामो नीलचाकसिने त्रिषु ।

रामः—बलराम, परशुराम, राम (पुं०), काला  
रंग, सफेद, सुन्दर (त्रि०) ।

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः

ग्रामः—गाव, किसी शब्द के पूर्व रहने पर  
समूह ( जैसे-‘शब्दग्राम’), स्वर ।

क्रान्तौ च विक्रमः ॥१४०॥

विक्रमः—आक्रमण करना, बल ॥१४०॥

स्तामः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे

स्तोमः—स्तुति, यज्ञ, समुदाय ।

जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे ॥१४१॥

जिह्व—कुटिल, आलसी ॥१४१॥

गुल्मो ह्यस्तम्भसेनाश्च

गुल्मः—प्लीहा रोग, गुच्छा, सेना ।

जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।

जामिः—बहिन, कुल की स्त्री ।

क्षितिज्ञान्त्योः क्षमा

क्षमा—( स्त्री० ) पृथिवी, क्षमा ।

युक्ते क्षम शक्ते द्विते त्रिषु ॥१४२॥

क्षमम्—योग्य ( नपुं ), क्षम्य, दिनकारी  
( त्रिलि० ) ॥१४२॥

त्रिषु श्यामौ हस्तिरुष्णौ

श्यामः (त्रिलि०)—हल रंग काला रंग ।

श्यामा स्याच्छारिषा निशा ।

श्यामा—शाररन, शरर, रात, इन्दी ।

ललाम पुच्छपुट्टाश्चनूपापधान्यकेतुषु ॥१४३॥

ललामम्—(न०) पुच्छ, गाव या घोड़े के नाथ

नयने त्रिषु नयने नयने प्रत्येक ॥१४३॥

नयनः—नय, नयन, दृष्टि, नय, नय, नय ।

विद्यमानः—दृश्य, दृश्य, दृश्य ।

पर वने तिलक का चिह्न, घोड़ा, घोड़े का साज,  
प्रधान, पताका ॥१४३॥

**सूक्ष्ममध्यात्ममपि**

सूक्ष्मम्—आत्मा, कपट, बहुत छोटा ।

**आद्ये प्रधाने प्रथमः**

प्रथमः—आदि, प्रधान ।

**त्रिषु**

यहाँ से मान्त सब शब्द तीनों लिङ्ग में हैं ।

**वामौ वलगुप्रतीपौ द्वौ**

वामः—सुन्दर, विपरीत, बायाँ, स्तन या  
मेघ, शिव (पुं०) वामा (स्त्री०) ।

**अधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥१४४॥**

अधमः—कम, बदनाम ॥१४४॥

**जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ।**

यातयामम्—पुराना ( बासी ), खाने से बचा  
हुआ भोजन ।

( इति मान्ता । )

**तुरंगगरुडौ ताक्ष्यौ**

ताक्ष्यः—(पुं०) घोड़ा, गरुड़, रथ, वाहन ।

**निलयापचयौ क्षयौ ।**

क्षयः—(पुं०) घर, हास, कल्प का अन्त  
(प्रलय), रोग ।

**श्वशुर्यौ देवरश्यालौ**

श्वशुर्यः—(पुं०) देवर, साला ।

**भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥१४५॥**

भ्रातृव्यः—(पुं०) भतीजा, शत्रु ॥१४५॥

**पर्जन्यौ रसदवन्देन्द्रौ**

पर्जन्यः—गरजता हुआ मेघ, इन्द्र ।

**स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः ।**

अर्यः—(पुं०) स्वामी, वनिया ।

**तिथ्यः पुण्ये कलियुगे**

तिथ्यः—(पुं०) पुण्य नक्षत्र, कलियुग ।

**पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥१४६॥**

पर्यायः—प्रस्ताव, क्रम, निर्माण, मौका ॥१४६॥

**प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ।**

**रन्ध्रे शब्दे**

प्रत्ययः—(पुं०) अधीन, कमम, ज्ञान, विश्वास  
कारण, छिद्र, शब्द ( सन् प्रत्यय आदि ) ।

**अथानुशयो दीर्घद्वषानुतापयोः ॥१४७॥**

अनुशयः—पुराना वैर, पश्चात्ताप ॥१४७॥

**स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ।**

स्थूलोच्चयः—अपूर्ण, हाथी की मध्यम चाल,  
पहाड़ों से गिरे पत्थर के बड़े २ ढोंके ।

**समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः ॥१४८॥**

समयः—कसम, आचरण, समय, सिद्धान्त,  
संभाषण, सम्पत्ति, संकेत, गणराज्य के  
कानून ॥१४८॥

**व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः ।**

अनयः—बुरी आदत, अशुभ भाग्य, विपत्ति  
अन्याय ।

**अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽपि ।**

अत्ययः—उल्लंघन, कष्ट, दोष, दण्ड, नाश ।

**अथापदि ॥१४९॥**

**युद्धयात्योः सम्परायः**

संपरायः—आपत्ति, युद्ध, आनेवाला  
समय ॥१४९॥

**पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ।**

पूज्यः—पूजनीय, ससुर ।

**पश्चादवस्थायिबलं समवायश्च संनयौ ॥१५०॥**

संनयः—सेना के पीछे रहनेवाली सेना,  
समूह, अच्छा न्याय ॥१५०॥

**संघाते सनिवेशे च संस्त्यायः**

संस्त्यायः—समूह, स्थानविशेष, विस्तार ।

**प्रणयास्त्वमी ।**

**विद्वत्प्रभयाश्चाप्रेमाण**

प्रणयः—विश्वास, मॉगना, प्रेम ।

**विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥१५१॥**

समुच्छ्रयः—उन्नति, विरोध (वैर) ॥१५१॥

**विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ।**

विषयः--जो बात जिसे मालूम हो, शब्द  
( शब्दरूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि), देश ।

निर्यासेऽपि कपायोऽस्त्री

कपायः ( पुं-नपुं० )--काढ़ा, कसैला रस,  
गेहूँ का रंग ।

सभायां च प्रतिश्रयः ॥१५२॥

प्रतिश्रयः--सभा, अवलम्ब, स्वीकार ॥१५२॥

प्रायो भून्म्यन्तगमने

प्रायः--बहुतायत, अनशन, मृत्यु, समान,  
ज्ञान ।

मन्युर्दैन्ये क्रतुः क्रुधि ।

मन्युः--वीनता, यज्ञ, क्रोध, शोक ।

रहस्योपस्थयोगुह्यम्

गुह्यम्--गोपनीय, लिप्त, भग ।

सत्यं शपथसत्ययोः ॥१५३॥

सत्यम्--कसम, सचाई ॥१५३॥

वीर्यं वस्त्रे प्रभावे च

वीर्यम्--बल, प्रभाव, वीज (शुक्र), शक्ति ।

द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ।

द्रव्यम्--तत्त्व गुण का आश्रय, धन, आश्रय ।

धिषण्यं स्थाने गृहे भेऽसौ

धिषण्यम्--स्नान, पर, नरात्र, अग्नि ।

भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ॥१५४॥

भाग्यम्--जन्मान्तर का शुभ-अशुभ ज्ञान,

ऐश्वर्य ॥१५४॥

कशेरु हेमनोग्रिहम्

कशेरुम्--छेदक, गुर्गा, तीक्ष्ण पितामह (पुं०) ।

विश्रुत्या दन्तिनाऽपि च ।

विश्रुत्या--दन्तिना नाम वि श्रुत्या, ज्ञान-  
विद्या, गुण ।

पुष्पकपापी धीर्गोचरे

पुष्पकपापी--पुष्पी, चारों ओर ।

अभिप्राय नामशोभयोः ॥१५५॥

अभिप्रायः--बल, शोभा, शक्ति । ॥१५५॥

धारणा निष्ठिति विशापूर्वक समधारणम् ।

उपायः कर्म चेष्टा च किकित्सा च नव क्रियाः १५६

क्रिया--आरम्भ, प्रायश्चित्त, शिक्षा, पूजन,  
विचार, उपाय, कर्म, चेष्टा, चिकित्सा ॥१५६॥

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिविम्बमनातपः ।

छाया--शनैश्वर की माता, कान्ति, परछाई  
( 'focus' ), आतप ( धूप ) का अभान ( छाह )  
अन्धकार ।

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्या मध्येभवन्धने

कक्ष्या--महल की ज्योकी के भीतर, काची  
( जुद्धघटिका, करधन ) हाथी की कमर में बांधने का  
बन्धन ॥१५७॥

कृत्या क्रिया देवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ।

कृत्या--कार्य, भूत-प्रेत आदि अधन देनता,  
धन-श्री भूमि से भेद डाले जानेवाले प्राये राज्य के  
आदर्श ।

जन्यं स्याज्जनवादेऽपि

जन्यम्--अफलाह, पाजार, नमान ।

जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥१५८॥

जघन्य--अन्त्यज, अवन, निज ॥१५८॥

गर्हादीनां च चक्रवर्त्यौ

चक्रवर्त्य--निन्दनीय, अमीन, बदनेवा जी बात ।

कृत्यौ सज्जनितमयौ ।

कृत्यौ--नगरादि उपाय के रहित, नारोम,  
कनाइसल, अत कल ।

आत्मपाननपेतोऽर्थादर्थ्यः

अर्थ्यः--पुष्टि, नृ, पदार्थ, अर्थता अर्थ  
नाली जानेवाला वस्तु, नानाजन, अर्थ ।

पुण्यं तु चाप्यपि ॥१५९॥

पुण्यम्--गुण, अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ ॥१५९॥

कृत्यं प्रशस्तवर्ण्येऽपि

कृत्यम्--गुण, अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ  
॥१६०॥ अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ ॥१६०॥

पदान्तो बहुगुणान्तरि ।

पदान्तः--अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ

॥१६१॥

न्यायेऽपि मध्यम्

मध्यम्—उचित, बिचला भाग ।

सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ॥१६०॥

सौम्यम्—सुन्दर, सीधा, चन्द्रमा को निवे-  
दित वस्तु, बुध ( पुं० ) ॥१६०॥

इति यान्ताः ।

निवहावसरौ वारौ

वारः—समूह, पारी, सूर्य-चन्द्र आदि दिन ।

संस्तरां प्रस्तराध्वरौ ।

संस्तरः—जिसकी मुठ्ठी में कुशा हो या कुश  
का बिछौना, यज्ञ ।

गुरु गोष्पतिपित्राद्यौ

गुरुः—बृहस्पति, पिता, अध्यापक, मान्य,  
बड़े लोग ।

द्वापरौ युगसंशयौ ॥१६१॥

द्वापरः—युगविशेष, सन्देह ॥१६१॥

प्रकारौ भेदसादृश्ये

प्रकारः—विशेष, समानता ।

आकाराविक्रिताकृती ।

आकारः—चेष्टा, इशारा, सूरत ।

किंशारः सस्यश्लक्ष्णौ

किंशारः—धान-जौ आदि की वाल का ढूँझा,  
वाण, ककपत्त ।

मरु धन्वधराधरौ ॥१६२॥

मरुः—जलरहित भूमि, पर्वत ॥१६२॥

अद्रयो द्रुमशैलार्काः

अद्रिः—वृक्ष, पर्वत, सूर्य, इन्द्र ।

स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ।

पयोधरः—स्त्री का स्तन, मेघ, नारियल ।

ध्वान्तारिदानवा वृत्राः

वृत्रः—वृत्रासुर, अन्धकार, शत्रु ।

यलिहस्तांशवः कराः ॥१६३॥

करः—टैक्स, हाथ, किरण ॥१६३॥

प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणाः

प्रदरः—स्त्री का रोगविशेष, भाग, वाण ।

अस्त्राः कचा अपि ।

अस्त्रः—केश, आँसू, कोना, रुधिर ।

अजातशत्रुहो गौः कालेऽप्यशमश्रुर्ना च तूधरौ ।

तूधरः—(पुं०) विना सींग का बैल, समय पर  
जिसके मूछें न जमी हों, वह मनुष्य (खोभा) ॥१६४॥

स्वर्णेऽपि राः

रै—धन, सुवर्ण ।

परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ।

परिकर—बिछौना, परिवार, समूह, यत्न,  
आरम्भ ।

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्यात्

तारः—मोती की सफाई का काम, चोदी,  
ऊँचा स्वर, पारा उतरना ।

शारो वायौ स तु त्रिषु ॥१६५॥

कर्बुरे

शारः—(त्रिलिङ्ग) वायु, चितकवरा, चौसर  
खेलने की गोटी ॥१६५॥

अथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः ।

संगरः—प्रतिज्ञा, सभा, विपत्ति, संग्राम,  
विपत्ति, स्वीकृति ।

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रः

मन्त्रः—वेद का अंश, गुप्त सलाह, देवादि  
की साधना ।

मित्रो रवावपि ॥१६६॥

मित्रः—(पुं०) सूर्य, (नपुं०) मित्र ॥१६६॥

मस्त्रेषु यूपखण्डेऽपि स्वरः

स्वरः—यज्ञस्तम्भ छीलते समय निकला  
पहला टुकड़ा, इन्द्र का वज्र ।

गुह्येऽप्यवस्करः ।

अवस्करः—भग-लिङ्ग, विष्णु ।

आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ॥१६७॥

आडम्बरः—तुलसी का शब्द, हाथियों का  
गर्जन, तैयारी ॥१६७॥



कलत्रम्—कमर, स्त्री, राजाश्री के रहने का  
गुप्त स्थान ।

योग्यभाजनयोः पात्रम्

पात्रम्—योग्य, बर्तन, राजा का मंत्र, पत्ता,  
सुवा आदि यज्ञपात्र ।

पत्रं वाहनपत्नयोः ॥१७८॥

पत्रम्—सवारी, पंख, पत्नी ॥१७८॥

निदेशग्रन्थयोः शास्त्रम्

शास्त्रम्—आज्ञा, व्याकरण आदि के ग्रन्थ ।

शस्त्रमायुधलोहयोः ।

शस्त्रम्—हथियार, लोहा ।

स्याज्जटाशुकयोर्नेत्रम्

नेत्रम्—जटा वृक्ष, वस्त्र, आँख ।

क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ॥१७९॥

क्षेत्रम्—भार्या, शरीर, खेत ॥१७९॥

मुखाग्रे क्रोडहृदयोः पोत्रम्

पोत्रम्—शूकर, हल का मुखभाग ( फाल ) ।

गोत्रं तु नाम्नि च ।

गोत्र—नाम, कुल, पर्वत, ज्ञान, वन, खेत  
का रास्ता ।

सत्रमाच्छादने यज्ञ सदाशने वनेऽपि च ॥१८०॥

सत्रम्—वस्त्र, यज्ञ, सदावर्त, वन, दगा-  
वाजी ॥१८०॥

अजिरं विषये कायेऽपि

अजिरम्—रूप, रस आदि विषय, शरीर,  
आँगन ।

अम्बरं व्योम्नि वाससि ।

अम्बरम्—आकाश, वस्त्र, रुई, सुगन्धि ।

चक्रं राष्ट्रेऽपि

चक्रम्—राष्ट्र, रथ का पहिया, सेना, पानी  
की भँवरी, पाखण्ड ।

अक्षरं तु मोक्षेऽपि

अक्षरम्—मोक्ष, वर्ण ( क स आदि ) ब्रह्म,  
आकाश, धर्म, तप ।

क्षीरमप्सु च ॥१८१॥

क्षीरम्—दूध, जल ॥१८१॥

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ

भूरि—(नपुंसक) सुवर्ण, अधिक, (त्रिलि०)  
विष्णु भगवान्, शिव, ब्रह्मा ( पु० ) ।

चन्द्रः—सुवर्ण, कपूर, कवीला, जल, चन्द्रमा,  
हीरा ।

द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ।

गोपुरम्—द्वार, नगर का सदर फाटक,  
मोथा ।

गुहादग्भौ गह्वरे द्वे

गह्वरम्—गुफा, पाखण्ड, निकुञ्ज, गहन ।

रहोऽन्तिकमुपह्वरे ॥१८२॥

उपह्वरम्—एकान्त, पास ॥१८२॥

पुरोऽधिकमुपर्यग्राणि

अग्रम्—पहले, अधिक, ऊपर, एक पत्र की  
नाप, सहारा, समूह, प्रधान ।

अगारे नगरे पुरम् ।

मंदिरं च

पुरम्—घर, नगर, मन्दिर, शरीर ।

अथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ॥१८३॥

राष्ट्र—(पुं०-नपु०) देश, उपद्रव ॥१८३॥

दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे

दरः—(पुं०-नपु०) भय, गठ्ठा ।

वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ।

वज्र—(पु० नपु०) हीरा, वज्र ( शस्त्र ) ।

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छेदे ॥१८४॥

तन्त्रम्—प्रधान, सिद्धान्त, जुलाहा, वस्त्र,  
कुटुम्बसम्बन्धी कार्य, शास्त्रविशेष, सानान, वेद  
की शाखा ॥१८४॥

औशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ।

औशीरः—(पुं०) चँवर का डंडा, रस की टट्टी ।

औशीरम्—( नपु० ) शयन, आसन ।

पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभागडमुखे जले ।

व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौपधिविशेषयोः ॥१८५॥

पुष्करम्—हाथी की सूँढ़ का अग्रभाग, नगाड़ा



आदि बाजे का मुद्, जल, तलवार का विचला  
हिस्सा, आकाश, कमल, तीर्थविशेष, पोहकर  
आपधिविशेष, टापू, सर्प, गन्ध ॥१८५॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादृश्यं  
छिद्रात्मीयविनावहिरवसरमध्येन्तरात्मनि च

अन्तरम्—अवकाश (दूरी), अवधि, पहिने का कपड़ा, अदृश्य, भेद, तादर्थ्य, द्विद, आत्मीयता, विना, बाहर, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा, सादृश्य ।  
किन् अवसरो पर इमका किम तरह प्रयोग होता है, उसके उदाहरण — अवकाश अर्थ में—‘अन्तरे हिमम्’ । अवधि के अर्थ में—‘मासान्तरे देयम्’ । परिधान के अर्थ में—‘अन्तरेण शाटका परिधानीया’ । अन्तर्धि के अर्थ में—‘पर्वतान्तरितो रविः’ । भेद के अर्थ में—‘नदन्तरे सर्पपश्वनराजयो’ । तादर्थ्य के अर्थ में—‘त्वदन्तरेण अणुमेतत्’ । द्विद के अर्थ में—‘पसान्तरे प्रहृतव्यम्’ । आत्मीय अर्थ में—‘अग्रमत्यन्तरो नमः’ । विना अर्थ में—‘अन्तरेण पुण्यसरम्’ । बाह्य अर्थ में—‘अन्तरे चण्डाल-गृहा’ । अवसर के अर्थ में—‘अन्तरा-सर्वक’ । मध्य के अर्थ में—‘आयोरन्तरे जातः पर्यतः’ । अन्तरात्मा के अर्थ में—‘एषोऽन्तरे ज्योतीश्च’ । सादृश्य अर्थ में—‘दृशरस्य षष्ठोऽन्तरतमः’ ॥ १८६ ॥

मुस्तेऽपि पिटरम्

चिट्ठान्—मो ग, मय.ना, बटसीदे ।

राजशेखरपि नागरम् ।

नागरभू-राजभूमि, नागरभोज, को 5,  
धनु, नगरिद्ध ।

शार्परेण पञ्चतन्त्रेण पातुके मेघदिक्काम् । २५

संज्ञा—( वि० ) अथवा न. ए.,  
वि० अथवा

ਸੰਪੰਨਤਾ ਲਿਖੇ ਪੀਏ

ਸੀਮਾ-ਦੀਪ ਸਿੰਘ, ਡਾ. ਸਿਧੂ, ਸਿੰਘ  
ਸਿੰਘ, ਸਿੰਘ, ਸਿੰਘ, ਸਿੰਘ, ਸਿੰਘ

**အချက်အလက်**

**अरुणः**—घाव करनेवाला, मेलताया ।

जठर, कठिनेऽपि स्यात्

जठर—कठिन, पेट, बूढ़ा ।

अधस्तादपि चाधरः ॥१८॥

अधरः—नीचे, निचला होठ, हीन ॥१८८॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रः

एकाग्रः—स्वस्य, एकाग्रता, तत्पर ।

द्व्यग्रो व्यासक्त आकुले ।

व्यग्र — काम से परेशान, अनेक कामों में  
लगा हुआ, घबड़ाना ।

उपर्युदीच्यथेष्टेष्वप्युत्तरः स्यात्

उत्तर:—जवाब, ऊपर, उत्तर का देश, धेड़ ।

उदाहरण — ऊपर के श्रृंखला में जेठे—‘शु उत्तरम्’।

उत्तर देश के अर्थ में जैसे—'वर्गदातरे विकृत-  
शब्दः ।' कोष अर्थ में जैसे—'मुनिपूतरो वसिष्ठ ।

अनुत्तरः ॥१८॥

एषा विपर्यये श्रेष्ठे

અગ્રણ—જહા જાર એવુ પ્રારિ અર્થ નહીં  
દોરે, વહા—પ્રેર, અપ્રેર ।

अष्ट के अर्थ में—'न विद्यमान, अंगे तन्मात्र  
अथो अनुत्तरा' ऐसा विग्रह करना होगा पर = ४५

कुरानात्मोच्चमाः पयः ।

पदः—एह, इतना, उत्तम, अष्ट सप्त, ३५५।

स्वादित्रिधा सु मधुरा

1943-1944, 1945

करी कटिननिर्दयौ ॥६॥

20-254, 1547, 471-5, 2015, 1710.

अथारो नानुमहोः

2410-2411, 2412 5<sup>th</sup> fl - 1143

● 2010年10月10日

[illegible]

महाराजः सः

$\frac{1}{2} \left( \frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$

2015年12月14日

शुभ्रम्—(त्रिलिङ्ग) तेजस्वी, सफेद, अवरख  
(नपुं०) ॥१६१॥

( इति रान्ता )

जूड़ा किरोटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ।

मौलिः—( पु० स्त्री० ) जूड़ा, किरोट, वेधा  
हुआ केश ।

हुमप्रभेदमातङ्गकारण्डपुष्पाणि पीलवः ॥१६२॥

पीलुः—( पु० ) एक प्रकार का वृक्ष, हाथी,  
बाण, फूल, परमाणु, हड्डी का टुकड़ा, ताड़का  
तना ॥१६२॥

कृतान्तानेहसो काल

कालः—यमराज, समय, मृत्यु, महाकाल,  
कृष्णचन्द्रजी ।

चतुर्थेऽपि युगे कलिः ।

कलिः—चौथा युग, भगड़ा, फूल की कली,  
बहादुरों का युद्ध ।

स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः

कमलः—( पुं० ) द्विरन, ( नपुं० ) जल,  
तामा, कमल का फूल, आकाश ।

प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥१६३॥

कम्बलः—ओढने की लोई, गौ के गले में  
लटकनेवाला चमड़ा, वायु, नागराज वासुकी,  
कीड़ा ॥१६३॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राणयज्ञजे स्त्रियाम्

बलिः—( पुं० ) महसूल, सौगात, बुढापे  
की भुर्रिया ( स्त्री० ) प्रसिद्ध राजा बलि ।

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः

बलम्—मोटाई, पराक्रम, सेना, ( अ० ) कौआ,  
बलराम ( कृष्ण के बड़े भाई ) ( पुं० ) ॥१६४॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।

वातूलः—( पु० ) आँधी, बकवादी, वात  
विकार को सहने में असमर्थ (त्रिलिङ्ग) ।

भेद्यलिङ्गं शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ।

व्यालः—( पुं० ) शठ, सर्प, दुष्ट हाथी,  
सिंह ॥१६५॥

मलोऽस्त्री पापावट्किट्टानि

मलः—( पुं० नपुं० ) पाप, विष्ठा, कीट (मैल) ।

अस्त्री शूलं रगायुधम् ।

शूलम्—( पु० नपुं० ) रोगविशेष, शस्त्र-  
विशेष, मृत्यु, ध्वजा, योग ।

शङ्कावपि द्वयोः कीलः

कीलः—( पुं० स्त्री० ) लोह आदि की बनी  
शंकु, आग की लपट ।

पालः स्यथ्रयः किषु ॥१६६॥

पालिः—( स्त्री० ) तलवार की धार, गोद,  
चिह्न, पाँति ॥१६६॥

कला शिल्पे कालभेरेऽपि

कला—कारीगरी, तीस काष्ठा का समय,  
चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग ।

आली सख्यावली अपि ।

आलिः—( स्त्री० ) सहेली, श्रेणी, ( त्रि० )  
पुल, विशद आशय ।

अब्ध्यम्बुविकृतौवेला कालमर्यादयोरपि १६७

वेला—चन्द्रोदय आदि के कारण समुद्र का  
उमड़ना (ज्वार), समुद्र का तट, समय, मर्यादा,  
विना क्लेश के मरण ॥१६७॥

बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ शितौ त्रिषु

बहुलाः—( स्त्री० ) कृत्तिका नक्षत्र, गौ ।  
( पुं० ) आग, तीक्ष्ण, काला रंग, इलायची, स्त्री,  
( नपुं० ) आकाश (पुं०) कृष्णपक्ष ।

लीला विलासक्रिययोः

लीला—विलास, कार्य, क्रीड़ा, शृङ्गारभाव ।

उपला शर्कराऽपि च ॥१६८॥

उपलाः—( पु० ) पत्थर । ( स्त्री० ) सिकता ।

पौड ( चीनी ) ॥१६८॥

शोणितेऽम्भसि कीलालम्

कीलालम्—गानी, रुधिर ।

मूलमाद्ये शि श्वाभयोः ।

मूलम्—पहला, जड़, गिफा, वृक्ष की जड़, नक्षत्रविशेष, प्रतिष्ठा ।

जालं समूह आनायगवात्तत्तारकेष्वपि ॥२६६॥

जालम्—समुदाय, सूत या सनकी बनी जाल, रोशनदान, झरोखा, खिली हुई कली, दम ॥२६६॥  
शीलं स्वभावे सद्बृष्टे

शीलम्—स्वभाव, सदाचार ।

सस्ये हेतुकृते फलम् ।

फलम्—वृक्ष आदि का फल, किये हुए कार्य का परिणाम, वाण का अंगला भाग, जायफल, पटारा, अन्न, लिफला, कंसोल ।

द्यदिर्नेप्रकजो क्लीवं समूहे पटलं न ना ॥२००॥

पटलम्—( नपुं० ) समूह, द्वाजन, एक प्रकार का नेत्ररोग । ( पुं०-नपुं० ) नमूदार्थ में यह स्त्री-नपुंनक दोनों होता है ॥२००॥

अथः स्वरूपयोरस्त्री तलम्

तलम्—निची वस्तु का निचला भाग, ( जैसे 'रमानत') स्तम्भ, ( जैसे 'चक्षुस्तल') तलवार की मूठ, भण्ड, वन, कार्य या मूल कारण, तालरुख, वृक्षगात्र ।

स्याच्चामिणे पलम् ।

पलम्—( नपुं० ) मोटा, एक प्रकार का वजन ।

और्ध्वनिखेऽपि पातालम्

पातालम्—अदम्य, गिर, नाल झर ।

चैतं चस्पेऽधमे त्रिषु ॥२०१॥

चैतम्—( नपुं० ) करार, ( त्रिविध )

अधम ॥२०१॥

कुशुलं शकुभिः फीले श्वत्रे ना तु तुषानते ।

कुशुलम्—( नपुं० ) की । श्वत्रे ना तु तुषानते ।

श्वत्रे, ( पुं० ) मूढ़ी की श्वत्रे ।

निर्धति केपलमिति मिलिध्वं चैककस्तम्भो ॥

सम्पूर्ण । उदाहरण—निश्चित अर्थ में 'केवल मूर्ख' । एक अर्थ में—'केवलोऽयं प्रजति' । सम्पूर्ण अर्थ में जैसे—'केवल मित्तव' ॥२०२॥

पर्यासिद्धमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।

कुशलम्—( नपुं० ) पूण्यता, कल्याण, पुण्य, ( त्रिविध ) शिक्षित ।

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री

प्रवालम्—( पुं०-नपुंनक ) मृगा, नवीन कोपल, बीगा का दण्ड ।

त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥२०३॥

स्थूलम्—( लि० ) मोटा, गिर, बुद्धि-विहीन ॥२०३॥

करालो दन्तुरे तुष्टे

कराल—( लि० ) बड़े दोषपाता, ज्वा, भयानक, नर्जरम ।

चारो दक्षे च पेशलः ।

पेशल—( लि० ) मुन्दर, अपुण्य ।

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्यात्

बाल—( त्रिविध ) नुरा, फलक, केला, मोड़ या हाथी का मुँह, शङ्खेर ।

मोलधलमनृपण्यो ॥२०४॥

मोल—बन-बन, लान्ता ॥२०४॥

इति ज्ञान्ता ।

द्वयदायां पनारण्यवर्ग

द्वय, दावध—( पुं० ) दोपद, जगद्वय का भाग ।

अमदरी मयी ।

अमद—( पुं० ) अमद, हिरणी मय, अमद ।

मन्त्री मदायसन्धि

मन्त्री—( लि० ) मन्त्री, मन्त्री, मन्त्री ।

सहायक ( मित्र ) ।

**पतिशाखिनरा धवाः ॥२०५॥**

धवः--( पुं० ) पति, ववई वृक्ष, मनुष्य, धूर्त ॥२०५॥

**अवयः शैलमेषार्काः**

अविः--( पुं० ) पर्वत, भेंब, सूर्य, स्वामी, चूहा, कम्बल ।

**आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ।**

हवः--( पुं० ) आज्ञा, बुलाहट, यज्ञ ।

**भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु २०६**

भावः--सत्ता (वस्तुस्थिति), स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, क्रिया, लीला, विभूति, पडित, प्राणी । उदाहरण--सत्ता अर्थ में 'घटभावः, पटभाव' । आत्मा के अर्थ में जैसे--'स्वभावं भावयेद्योगी' आदि ॥२०६॥

**स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमाचने ।**

प्रसवः--( पुं० ) उत्पत्ति ( पैदाइश ), फल, पुष्प, गर्भत्याग ।

**अविश्वासेऽपह्वेऽपि निष्कृतावपि निह्वः २०७**

निह्वः--( पुं० ) अविश्वास, झूठी बकवाद, पाजीपन ॥२०७॥

**उत्सेकामर्षयोरिच्छा प्रसरे मह उत्सवः ।**

उत्सवः--( पुं० ) ऊपर उठना या सीचना, उत्साह, कोप, इच्छा का वेग, आनन्द का अवसर ।

**अनुभावः प्रभावे च सतां च मतनिश्चये २०८**

अनुभावः--( पुं० ) प्रभाव, सत्पुरुषों के ज्ञान का निश्चय, अमिप्रायसूचक ॥२०८॥

**स्याज्जन्महेतु प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये ।**

प्रभवः--( पुं० ) ज्ञानोत्पत्ति का आदि स्थान, जन्म का हेतुस्थान, जन्ममूल ।

**शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥२०९॥**

पारशवः--( पुं० ) शूद्रा में ब्राह्मण के वीर्य से उत्पन्न पुत्र, फारसी ( पारसी ) ॥२०९॥

**ध्रुवो भभेदे क्लीवं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।**

ध्रुवः--( पुं० ) नक्षत्रविशेष, ( नपुं० )

निश्चित, ( त्रि० ) नित्य, ( पुं० ) शिव, विष्णु, वटवृक्ष, उत्तानपाद राजा का पुत्र ।

**स्वो ज्ञातावात्मनिस्वं त्रिधात्मीये स्वोऽस्त्रियाधने**

स्वः--( पुं० ) जाति, आत्मा, ( त्रि० )

आत्मीय जन, ( पुं०-नपुं० ) धन ॥२१०॥

**स्त्रीकटीवस्त्रवन्धेऽपि दीवां परिपणेऽपि च ।**

नीवी--स्त्री की कमरबन्द ( इजारबन्द ),

वनिये का मूलधन, राजपुत्र के धन का विनिमय ।

**शिवा गौरी-फेरवयोः**

शिवा--पार्वती, आठ वर्ष की कन्या, दारुहल्ली, गोरोचन, भूमि, श्वेतदूर्वा फेरव ( सियार या राक्षस ) ।

**द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥२११॥**

द्वन्द्वम्--( नपुंसक ) लड़ाई, दो की संख्या, रहस्य, मिथुन ॥२११॥

**द्रव्याऽसु व्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।**

सत्त्वम्--( नपुं० ) द्रव्य, प्राण, बल की अधिकता, ( पुं०-नपुंसक ) प्राणी, गुण, चित्त, बल ।

**क्लीवं नपुंसकं षंढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥२१२**

क्लीबम्--( त्रि० ) नपुंसक लिङ्ग, हिजड़ा, पुरुषार्थहीन ॥२१२॥

इति वान्ता ।

**द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ**

विशः--( पुं० ) वनिया, मनुष्य, प्रवेश ।

**द्वौ चरामिमरौ स्पशौ ।**

स्पशः--( पुं० ) गुप्तदूत ( खुफिया ), युद्ध ।

**द्वौ राशौ पुञ्जमेवाद्यौ**

राशिः--( पुं० ) समूह, मेष-वृष आदि राशियाँ ।

**द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥२१३॥**

वंशः--( पुं० ) कुल, बौंस, समुदाय, पीठ आदि अंग ॥२१३॥

**रहः प्रकाशौ वीकाशौ**

वीकाशः--( पुं० ) एकान्त, प्रकाश ।

**निर्वेशो भृतिभोगयोः ।**

Q27. -- (5.1) 2014, TST 1.4.8, 2010

आकर्षः—(पु०) जुआ, पाँसा, चौसर आदि खेलने की बिसात, इन्द्रिय, खिंचाव ।

अथाक्षमिन्द्रिये ॥२२०॥

ना सुताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिट्टुमे ।

अक्षम्—(नपुसक) इन्द्रिय, (पुं०) गोटी, सेलह मासेकी तौल, रथ का पहिया, व्यवहार, वहेड़े का पेड़ ॥२२०॥

कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः

कुल्यामिधायिनि ॥२२१॥

कर्षूः—( स्त्री० ) जीविका, छोटी नदी, (पुं०) सूखे कडे की आग ॥२२१॥

पुम्भावे तत्क्रियायां च पौरुषम्

पौरुषम् (पुं०)—पुरुषत्व, पुरुष का कार्य, तेज ।

विषमप्सु च ।

विषम्—(नपुं०) जल, जहर ।

उपादानेऽप्यामिषं स्यात्

आमिषम्—(पुं-नपुंसक) घूस, मास, भोग्य-वस्तु, संभोग ।

अपराधेऽपि किल्बिषम् ॥२२२॥

किल्बिषम्—(नपुं०) अपराध, पाप ॥२२२॥

स्याद्बुधौ लोकधात्वशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ।

वर्षम्—( पु०-न० ) वृष्टि, जम्बूद्वीप के भारतवर्षादि खण्ड, सवत्सर ।

प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा

प्रेक्षा—नाच देखना, बुद्धि ।

मिक्षा सेवार्थना भृतिः ॥२२३॥

मिक्षा—सेवा, भीख माँगना, नौकरी करना, मजदूरी करना ॥२२३॥

त्विट् शोभाऽपि

त्विप्—(स्त्री०) शोभा, कान्ति, बोलना रुचि ।

त्रिषु परे

यहाँ से आगे के 'न्यत्' से लेकर 'रुत्' तक के शब्द तीनों लिङ्ग हैं ।

न्यत्तं कास्त्यनिकृष्टयो ।

न्यक्षम्—(त्रि०) सम्पूर्ण, निकृष्ट, परशुराम ।  
प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षः

अध्यक्षः—( त्रि० ) प्रत्यक्ष, अधिकारी, सभापति ।

रुत्तस्त्वप्रेमयचिक्कणे ॥२२४॥

रुक्षः—(त्रि०) रूखा, प्रेमका अभाव ॥२२४॥

( इति षान्ता )

रविश्वेतच्छदौ हसौ

हस—सूर्य, सफेद पंख का पक्षी, हंस, निस्पृह, विष्णु, शरीर ।

सूर्यवह्नौ विभावसू ।

विभावसू—( पुं० ) सूर्य, अग्नि ।

वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ

वत्सः—बछड़ा, वर्ष, बेटा ।

सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥२२५॥

दिवौकस—( पुं० ) चातक, देवता ॥२२५॥

शृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।

रस—( पुं० ) शृङ्गार-करुणा-बीभत्स-आदि नौ रस, जहर, तेज, खट्टा-मीठा आदि गुण, द्रव पदार्थ ।

पुंस्युत्तंसावतसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ॥२२६॥

उत्तस, अवतसश्च—(पुं-नपुं०) कर्णफूल, चूड़ामणि ॥२२६॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्न धने वसु ।

वसु—( पुं० ) पुराणोक्त अष्टवसु, अग्नि, किरण, ( नपु सक ) रत्न, धन, वृद्धि, औषधि ।

विष्णौ च वेधाः

वेधस—( पुं० ) विष्णु, ब्रह्मा, पंडित ।

स्त्रा त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयो ॥२२७॥

आशिस—( स्त्री० ) कल्याणकामना, मीठी बात, साँप का दाँत ॥२२७॥

लालसे प्रार्थनौःसुक्ये

लालसा—(स्त्री०) प्रार्थना (माँगना), उत्सुकता, अधिक लालच ।

हिंसा चौर्यादिकर्म च ।

हिंसा—( स्त्री० ) चोरी आदि कुकर्म, वध,  
किसी की रोजी मारना ।

प्रसुरश्वापि

प्रसू—( स्त्री० ) घोड़ी, माता, कन्दली,  
लता ।

भूद्यावौ रोदस्या रोदसी न ते ॥२२८॥

रोदम्—<sup>१</sup>रोदसी ( स्त्री ) ( नपुं० ) पृथ्वी,  
आकाश ॥२२८॥

ज्वालाभासां च पुंस्यर्चिः

अर्चिस्—( नपुं० ) लपट, दीप्ति ।

ज्योतिर्भयोतदष्टिषु ।

ज्योतिस्—( नपुं० ) नक्षत्र, प्रकाश, पुतली  
या मध्य भाग ( पुं० ) अग्नि, सूर्य ।

पापापराधयोरान.

आगस्—( नपुं० ) पाप, अपराध ।

खगवाह्यादिनोर्यय ॥२२९॥

ययस्—( नपुं० ) पक्षी, कल्य-वृद्ध आदि  
अवस्थापे ॥२२९॥

तेज पुगीयोर्यर्च्य.

ययस्—( नपुं० ) तेज, पुगीय ( विष्टा )  
( पुं० ) अग्निना या पुत्र ।

मदस्त्वंस्वयतेजसो ।

मदस्—( नपुं० ) उत्सव, तेज ।

रजो गुणं च स्त्रीपुणं

रजस्—तेज आदि गुण, स्त्री या स्त्रीत्व,  
पुत्र या रज, पुंलि ।

राक्षो ध्यान्ते गुणं तम. ॥२३०॥

तमस्—अन्धकार, अज्ञान, रज, तम,  
आदि ॥२३०॥

एतत् पथंमिदमेव

तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।

तपस्—( नपुं० ) चान्तपन आदि कठिन  
व्रत, लोक विशेष, धर्म ।

सहो बलं सहो मार्गः

सहस्—( नपुं० ) बल, ( पुं० ) अगहन का  
महीना ।

नभः खं श्रावणो नभाः ॥२३१॥

नभस्—( नपुं० ) आकाश ।

नभः ( पुं० ) श्रावणमास, नासिका, कमल-  
नालकी तन्तु, गिरता हुआ नक्षत्र ॥२३१॥

श्रोक् सन्नाश्रयश्चोक्ताः

ओक्स्—( नपुं० ) पर ।

ओक्—( पुं० ) आश्रय ।

पयः क्षीर पयोऽम्बु च ।

पयस्—( नपुं० ) दूध, जल ।

श्रोत्रो दीप्तौ बले

ओजस्—( नपुं० ) तेज, पन्ना, धातु ।

श्रोत्र इन्द्रिये निम्नगारये ॥२३२॥

श्रोत्रम्—( नपुं० ) इन्द्रिय तथा नष्ट का  
तेज ॥२३२॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽपि

तेजस्—( नपुं० ) प्रकाश, इन्द्रिय, पञ्च,  
तम, नक्षत्र, अय ।

अतस्त्रिषु ।

तस्मै च शब्दो 'विद्वान्' से 'विद्वान्' 'विद्वान्' 'विद्वान्'  
शब्द वह पद जो 'विद्वान्' शब्द को 'विद्वान्' है ।

विद्वान् विद्वान्

विद्वान्-विद्वान् विद्वान्, विद्वान्, विद्वान्

विद्वान् विद्वान्

विद्वान्-विद्वान् विद्वान् विद्वान्, विद्वान्

कनीयास्तु युवाल्पयो ।

कनीयान्—( त्रि० ) अतिशय, युवा, बहुत छोटा ।

वरीयास्तूरुवरयो.

वरीयस्—बहुत बड़ा, बहुत अच्छा ।

साधीयान् साधुवाढयो. ॥२३४॥

साधीयान्—बहुत दृढ, बहुत अच्छा ॥२३४॥  
इति सान्ता ।

द्रुलेऽपि वर्हम्

वर्हम्—( पु०-नपुं० ) पत्ता, मोर के पख ।

निर्वन्धोपरागाकार्दयो ग्रहा. ।

ग्रहः—विशेष आग्रह, सूर्य-चन्द्रग्रहण, सग्राम का उद्योग ।

द्वार्यापीडे काथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥२३५॥

निर्व्यूहः—( पु० ) द्वार, शिरोभूषण, पका हुआ काढा, खूँटी ॥२३५॥

तुलासूत्रेऽश्वादिशमौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च ।

प्रग्राहः, प्रग्रहः—( पु० ) तराजू की डोरी, घोड़ा आदि पशु बाँधने की रस्सी, कंठी ।

पत्नीपरिजनादानमूलशापा. परिग्रहाः ॥२३६॥

परिग्रहः—( पु० ) स्त्री, परिवार के लोग, दान लेना, जड़, स्वीकृति, शाप, राहुग्रस्त सूर्य ॥२३६॥

दारेषु च गृहाः

गृहाः ( पु० बहुवचनान्त )—पत्नी, घर ।

श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रिया. ।

आरोहः—( पु० ) सुन्दरी स्त्री की कमर, चढ़ना, लम्बाई ।

व्यूहो वृन्देऽपि

व्यूहः—( पु० ) समूह, सेना की मोर्चेबन्दी ।

अहिर्वृत्रेऽपि

अहिः—( पु० ) सर्प, वृत्रासुर ।

अग्नीन्द्रर्कास्तमोऽपहाः ॥२३७॥

तमोऽपहः—( पु० ) अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य ॥२३७॥

परिच्छदे नृपाहोऽर्थे परिवर्हः

परिवर्हः—( पुं० ) राजा की छत्र-चमर आदि सामग्री, राजा के योग्य द्रव्य, सामान ।

इति हान्ता ।

अव्ययाः परे

अगले सभी शब्द अव्यय होंगे । यानी ये तीनों लिङ्ग, सात विभक्ति और तीनों वचन में एक-से रहेंगे ।

आडोषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे॥

आडू—थोड़ा, संपूर्ण, व्याप्त, सीमा, क्रिया-योगज । ईषदर्थ में जैसे—‘आपिङ्गल’ । अभि-व्याप्ति अर्थ में जैसे—‘आसत्यलोकादापातात्तात्’ । सीमा के अर्थ में—‘आसमुद्र राजदण्ड’ । क्रिया-योगज अर्थ में—‘आहरति, आक्रामति’ ॥२३८॥

आ प्रगृह्य स्मृतौ वाक्येऽपि

आ—( यह प्रगृह्यसङ्ग है ) स्मरण, वाक्य-पूर्ति, अनुकम्पा, समुच्चय । स्मरण अर्थ में जैसे—‘आ एवं किल तत् ।’

आस्तु स्यात् कोपपीडयोः ।

आ—कोप, पीड़ा, स्मरण, अपाकरण । कोप अर्थ में जैसे—‘आ पाप किं विरुध्यसे’ । पीड़ा अर्थ में जैसे—‘आ शीतम्’ ।

पापकुत्सेषदर्थे कु

कु—पाप, निन्दा, योद्धा । पापअर्थ में जैसे—‘कुर्म’ । निन्दा अर्थ में—‘कापथ’ । अल्प अर्थ में—‘कवोष्णम्’ ।

धिङ्निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥२३९॥

धिक्—धमकाना, लानत देना, निन्दा ॥२३९॥

चान्वाचयसमाहारेतरतरसमुच्चये ।

च—अन्वाचय ( किसी वाक्य में वाक्यान्तर का समावेश ) जैसे ‘भित्ता मट गाचानय’ ) समूह, अलग अलग करना, परस्पर निरपेक्ष शब्दों का

१ अव्ययलक्षणान्तु—सदृश त्रिपु लिंगेषु सर्वास्तु च विभक्तिषु ।  
वचनेषु च सर्वेषु यत्र व्योत तदव्ययम् ॥



एक में श्रन्वय करना, पादपूरण, पदान्तर, हेतु, विनिश्चय ॥

स्वस्त्याशोः क्षेमपुरयादौ

अस्ति—आशीर्वाद, कुराल, पुण्य ।

प्रकरणे लङ्घनेऽप्यति ॥२४०॥

अति—प्रकरणे, लापना, निश्चित, स्तुति ।

प्रकरणे अर्थ में अति का उदाहरण—‘अत्युत्तमो विष्णु’ । लपन अर्थ में—‘अतिरेक जलधि-नलम्’ ॥२४०॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च

स्वित्—प्रश्न, तर्क-वितर्क, पादपूरण । प्रश्न अर्थ में अने—‘किंस्वित्कुरालमस्ति’ । वितर्क अर्थ में—‘नन्दिवरः प्रिण्णोराहोम्विच्छिन्नस्व’ ।

तु स्याद्देदेऽवधारणे ।

तु—नेद, ( वृत्तपूरण ) अनुवय, प्ररधारण ( निधय ) ।

सकृत्सद्वैकपारे चापि

सकृत्—साम, एक बार । अने—‘उक्तयान्ति’ ‘सकृदपि कुर्वन्त्येवम्’ ।

आराद्दूरसमीपयोः ॥२४१॥

आरात्—दूर, समीप । अने—‘आरात्तद्वया वशा वसेत्’ ‘नराय स्वानवेदायम्’ ॥२४१॥

प्रतीच्या चरमे पथात्

वत—खेद, कृपा, मुन्तोष, आश्चर्य, बुलावा ।

इन्त हर्षेऽनुकम्पायो वाक्यारम्भविपादयो ॥२४२॥

इन्त—हर्ष, दया, वाक्यारम्भ, विपाद, निधय, प्रमोद ॥२४२॥

प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ।

प्रति—प्रतिनिधि, व्याप्त होने की इच्छा, लक्षणा, प्रतिदान ।

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादित्तमाप्तिषु ॥२४३॥

इति—हेतु, प्रकरण ( प्रचार ), प्रकाश, इन तरह, अन्त, नातिथ्य, प्रकरणे ॥२४३॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थेऽप्रव इत्यपि ।

पुरस्तात्—पहला, पूर्वदिशा, प्रथम, मूल-काल, आगे ।

यावत्तावच्च नाकृत्येऽवधौ मानेऽवधारणे ॥२४४॥

यावत् तावत्—तन्मूर्त्यु, सोना ( सवधि ), तैल, निधय, ॥२४४॥

संगलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येऽप्यथो अथ ।

अथो, अथ—संगल बाद, आरम्भ, प्रश्न, तन्मूर्त्यु, संगल का आरम्भ, प्रतीक्षा ।

नृथा निरर्थकाधिभ्यो.

नृथा—नरपथ, विधिहीन ।

नानार्थकोभयार्थयो ॥२४५॥

नाना—अनेक, अनर्थार्थ । अनेक अर्थ में—‘नानार्थको भवति’ । अनर्थार्थ में—‘नानार्थको भवति’ ।

प्रश्न अर्थ में—‘तनु किमेतत्’ । निश्चयार्थ में—  
‘नन्वयं योगी’ । अनुज्ञा के अर्थ में—‘तनु गच्छ’ ।  
अनुनय के अर्थ में—‘तनु कोप मुञ्च दया  
कुरु’ । संबोधन अर्थ में—‘तनु राजन्, ॥२४८॥

गर्हासमुच्चयप्रश्नशकासंभावनास्वपि ।

अपि—निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शंका,  
संभावना ।

**उपमायां विकल्पे वा**

वा—उपमा, विकल्प, एव । उपमा अर्थ में—  
‘आशीविषो वा संक्रुद्धः’ । विकल्प अर्थ में—‘शिव  
वा यदि वा विष्णुम्’ ।

सामि त्वर्थं जुगुप्सिते ॥२४८॥

सामि—आधा, निन्दित ॥२४८॥

**अमा सह समीपे च**

अमा—साथ, समीप । सहार्थ में जैसे—  
‘पुत्रेणाऽमा भु क्ते’ । समीपार्थ में ‘अमात्य’ ।

कं वारिणि च मूर्धनि ।

कम्—जल, मस्तक, सुख ।

**इवेत्यमर्थयोरेवम्**

एवम्—तुल्य, इस तरह । तुल्य अर्थ में  
जैसे—‘अग्निरेवं द्विज’ । प्रसारार्थ में ‘एव वादि-  
नि देवर्षौ’ ।

नूनं तर्कंऽथ निश्चये ॥२४९॥

नूनम्—तर्क, अर्थ का निश्चय । तर्क अर्थ  
में जैसे—‘नूनमयमतियज्वना प्रिय’ अर्थ के  
निश्चय में—‘क्षुद्रेऽपि नूनं शरण प्रपन्ने’ ॥२४९॥

**तूष्णीमर्थं सुखे जोषम्**

जोषम्—चुपचाप, सुख । मौन अर्थ में—  
‘जोष तिष्ठ’ । सुख के अर्थ में—‘जोषमासीत् वर्षासु’ ।  
किं पृच्छायां जुगुप्सने ।

किम्—प्रश्न, निन्दा करना ।

नामप्रकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥२५०॥

नाम—प्रसिद्धि, किसी तरह, क्रोध, उपगम,  
निन्दा ॥२५०॥

अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ।

अलम्—भूषण, परिपूर्ण, पराक्रम, रोकना,  
निरर्थक ।

**हुं वितर्के परिप्रश्ने**

हुम्—विकल्प, फिर से पूछना ।

समयान्तिकमध्ययोः ॥२५१॥

समया—समीप, मध्य । जैसे—‘समया  
पत्तनं नदी’ ‘समया शैलयोर्ग्रामः’ । ॥२५१॥

**पुनरप्रथमे भेदे**

पुनर्—प्रथम के बाद, भेद । जैसे—‘पुनरु-  
क्तम्’ ‘किं पुनर्वाह्याणां पुरया’ ।

निर्निश्चयनिषेधयोः ।

निर्—निश्चय, निषेध । जैसे—‘निरुक्तम्’  
‘निर्धनो राजा’ ।

स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा २५२

पुरा—प्रबन्ध, बहुत दिन की बात, निकट,  
आगामी । प्रबन्ध अर्थ में जैसे—‘पुराधीते’ अविरत-  
मपाठीदित्यर्थ । पुराने अर्थ में—‘पुरातनम्’ ॥२५२॥

ऊर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।

ऊररी-ऊरी-उररी—विस्तार, अङ्गीकार ।

**स्वर्गे परे च लोके स्वः**

स्वर्—स्वर्ग, परलोक ।

वार्ता संभाव्ययोः किल ॥२५३॥

किञ्च—वार्ता, संभावना । वार्ता अर्थ में—  
‘जघान कसं किल वासुदेव’ । वड़ाई के अर्थ में—  
‘गुरुन् किलातिशेते शिष्य’ ॥२५३॥

**निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासानुनये खलु ।**

खलु—निषेध, वाक्य का अलङ्कार, जानने  
की इच्छा, अनुनय ।

समीपोभयत शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽमित. २५४

अमित—समीप, दोनों तरफ, शीघ्र,  
सम्पूर्ण, सम्मुख । समीप अर्थ में जैसे—‘वाराण-  
सीमभित भागीरथी’ । उभयार्थ में—‘अभित  
कुरु चामरं’ । शीघ्र अर्थ में—‘अभितोऽधीष्व’ ।  
सम्पूर्ण अर्थ में—‘अभितो वनदाह’ । सम्मुख  
अर्थ में—‘अभितो हिंसको हन्ति’ । ॥२५४॥



विकल्पवाचक ६ नाम—(१) आहो (२) उताहो (३) किमुत (४) किम् (५) किमु (६) उत ।

(षट् पादपूरणार्थकाः)

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे

पादपूरणार्थक ६ नाम—(१) तु (२)

हि (३) च (४) स्म (५) ह (६) वै ।

(द्वे पूजार्थके)

पूजने स्वति ॥५५॥

पूज्य अर्थ के २ नाम—(१) सु (२) अति ॥५॥

(( एकं दिनवाचकस्य )

दिवाहोति

(दिनवाचक अव्यय का नाम—(१) दिवा ।

(द्वे रात्रिवाचकस्य )

अथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ।

रात्रिवाचक ३ नाम—(१) दोषा (२) नक्तम् ।

(द्वे तिर्यगर्थकस्य )

तिर्यगर्थे साचि तिरोऽपि

टेढा अर्थवाचक २ नाम—(१) साचि (२) तिर ।

( षट् सम्बोधनार्थकस्य )

अथ सम्बोधनार्थकाः ॥६॥

स्युः प्याट् पाडङ् हे है भोः

सम्बोधनवाचक ६ नाम—(१) प्याट् (२)

पाट् (३) अङ् (४) हे (५) है (६) भो ॥६॥

(( त्रीणि सामीप्यार्थकस्य )

समया निकर्षा हिक् ।

समीप वाचक ३ नाम—(१) समया (२)

निकषा (३) हिक् ।

(( एकमतर्कितस्य )

अतर्किते तु सहसा

अकस्मात् का नाम—(१) सहसा ।

(( त्रीणि 'अग्रे' इत्यर्थकस्य )

स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥७॥

आगे के ३ नाम—(१) पुरः (२) पुरतः (३)

अग्रतः ॥७॥

( पञ्च देवपितृभ्यो हविर्दानस्य )

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा

देवताओं तथा पितरों को हवि देते समय कहे

जानेवाले) ५ नाम—(१) स्वाहा (२) श्रौषट् (३)

वौषट् (४) वषट् (५) स्वधा । इनमें 'स्वधा' शब्द

पितृसम्बन्धी दान में ही प्रयुक्त होता है ।

( त्रीण्यल्पस्य )

किचिदीषन्मनागल्पे

थोड़े के ३ नाम—(१) किञ्चित् (२)

ईषत् (३) मनाक् ।

( द्वे जन्मान्तरस्य )

प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥८॥

जन्मान्तर के २ नाम—(१) प्रेत्य (२)

अमुत्र ॥८॥

( षट् साम्यस्य )

व वा यथा तथैवेवं साम्ये

समानता के ६ नाम—(१) व (२) वा

(३) यथा (४) तथा (५) इव (६) एवम् ।

( द्वे विस्मये )

अहो ही च विस्मये ।

विस्मयवाचक २ नाम—(१) अहो (२) ही ।

( द्वे मौनार्थके )

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकम्

मौनवाचक २ नाम—(१) तूष्णीम् (२)

तूष्णीकम् ।

( द्वे तत्कालस्य )

सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥९॥

तत्कालवाचक २ नाम—(१) सद्यः (२)

सपदि ॥९॥

( द्वे आनन्दवाचकस्य )

दिष्ट्या समुपजोष चेत्यानन्दे

आनन्दवाचक २ नाम—(१) दिष्ट्या (२)

समुपजोषम् ।

( त्रीणि मध्यार्थकानि )

अथान्तरेऽन्तरा ।

अन्तरेण च मध्ये स्युः

मध्यवाचक ३ नाम—( १ ) अन्तरे ( २ ) अन्तरा ( ३ ) अन्तरेण । जैसे—‘अनयोरन्तरे तिष्ठ’ ‘त्वा ना चान्तरा अन्तरेण वा कमण्डलु’ ।

( एकं वृत्तार्थकम् )

( १५ ) प्रसह्य तु वृत्ताकथम् ॥१०॥

वृत्तवाचक नाम—( १ ) प्रसह्य ॥१०॥

( द्वे युक्तार्थके )

युक्ते द्वे साप्रतं स्थाने

न्यायसंगतवाचक २ नाम—( १ ) साप्रतम् ( २ ) स्थाने । जैसे—‘स्थाने ह्यो कश । तव प्रदीर्घा’ ।

( द्वे नैरन्तर्ये )

अनीक्षणं शश्वदनारते ।

निरन्तरवाचक २ नाम—( १ ) अनीक्ष्यं ( २ ) शश्वत् । जैसे—‘अनीक्ष्यमुष्णेरपि तस्य शोष्मण’ ‘शरत्काला’ ।

( वाच्यारि भभावे )

अभावे नह्यनो नापि

अभावावाचक ४ नाम—( १ ) नाहं ( २ ) न ( ३ ) नो ( ४ ) न ।

( प्राणि पारणार्थे )

मास्म माडलं च पारणे ॥११॥

निषेधवाचक १ नाम—( १ ) नास्म ( २ ) मा ( ३ ) अस्म । जैसे—‘माता कदाहं पुत्र’ ‘आ पुत्र’ ‘ब्रह्म महीरज । तव जनेषु’ ॥११॥

( द्वे पक्षान्तरे )

पक्षान्तरे चेद्यदि च

पक्षान्तरवाचक २ नाम—( १ ) चेद्यदि ( २ ) यदि ।

( द्वे वृत्तार्थके )

सत्ये स्वप्नादप्रसक्तं वृत्तम् ।

वृत्तवाचक ४ नाम—( १ ) प्रसक्तं ( २ ) वृत्तम् ।

वृत्तवाचक ।

( द्वे वृत्तार्थके )

प्रसक्तं प्रसक्तं स्थितम्

प्रसक्तवाचक २ नाम—( १ ) प्रादुः ( २ )

आवि । जैसे ‘प्रादुरासीत्’ ‘आविर्भव’ ।

( श्रीष्वङ्गीकारार्थे )

ओमेवं परमे मते ॥१२॥

अङ्गीकारवाचक ३ नाम—( १ ) ओम् ( २ )

एवम् ( ३ ) परमम् ॥१२॥

( चत्वारि सर्वजोऽर्थे )

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।

चौत्तरफावाचक ४ नाम—( १ ) समन्तत ( २ ) परितः ( ३ ) सर्वत ( ४ ) विष्वक् ।

( एकं अनिष्टमानुमतौ )

अकामानुमतौ कामम्

अनिष्टा ये ही दुष्टे वृत्ताद का नाम—( १ ) कामम् । जैसे—‘तं दनिष्यति चे. कामम्’ ।

( एकमप्यापूर्वस्वीकारे )

असुयोपगमेऽस्तु च ॥१३॥

इष्टोप्येक स्वीकृति का नाम—( १ ) अस्तु । जैसे—‘तयोऽपि न्यायदर्शयमस्तु च’ ॥१३॥

( एक विरोधोक्ते )

ननु च स्याद्विरोधोक्ते

विरोधोक्तवाचक १ नाम—( १ ) ननु ।

( एकनिष्ठविग्रहने )

कथितकामप्रवेदने ।

आनयति प्रवृत्तवाचक नाम—( १ ) वृत्तम् । जैसे—‘कथितकामप्रवेदने ननु’ ।

( द्वे वृत्तार्थे )

विपक्षं कृपणं गरी

विपक्षवाचक २ नाम—( १ ) विपक्षम् ( २ ) कृपणम् ।

( द्वे वृत्तार्थके )

वृत्तवाचक तु वृत्तवाचकम् ११३१

वृत्तवाचक २ नाम—( १ ) वृत्तम् ( २ ) वृत्तवाचकम् ।

( द्वे वृत्तार्थके )

वृत्तं विपक्षं च विपक्षं

असत्यवाचक २ नाम—( १ ) मृषा ( २ )  
मिथ्या ।

( द्वे यथार्थेऽर्थे )

यथार्थं तु यथातथम् ।

यथार्थवाचक २ नाम—( १ ) यथार्थम् ( २ )  
यथातथम् ।

( पञ्च निश्चयार्थकाः )

स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥१५॥

निश्चयार्थवाचक ५ नाम—( १ ) एवम् ( २ )  
तु ( ३ ) पुनः ( ४ ) वै ( ५ ) वा ॥१५॥

( एकमतीतार्थकम् )

प्रागतीतार्थकम्

भूतकालवाचक नाम—( १ ) प्राक् । यथा—  
'प्राक्कर्म ।'

( द्वे निश्चितार्थे )

नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।

निश्चितवाचक २ नाम—( १ ) नूनम् ( २ )  
अवश्यम् ।

( एकं सम्प्रसारार्थं )

संवत्सरे

वर्षवाचक नाम—( १ ) संवत् ।

( एकमवरेऽर्थे )

अवधरे त्वर्वाक्

प्रथमवाचक नाम—( १ ) अर्वाक् ।

( द्वे अङ्गीकारे )

आमेवम्

अङ्गीकारवाचक २ नाम—( १ ) आम् ( २ )  
एवम् ।

( एकमात्मार्थे )

स्वयमात्मना ॥१६॥

आत्म (अपना) वाचक नाम—( १ ) स्वयम् ॥१६॥

( एकमल्पे )

अल्पे नीचैः

अल्प (छोटा) वाचक नाम—( १ ) नीचैः ।

( एकं महद्वाचके )

महत्युच्चैः

ऊँचावाचक नाम—( १ ) उच्चैः ।

( एकं बाहुल्येऽर्थे )

प्रायो भूमि

बाहुल्य (अक्सर) वाचक नाम—( १ )

प्रायः ।

( एकं मन्देऽर्थे )

अद्भुते शनैः ।

मन्द (धीरे-धीरे) अर्थ में १ नाम—( १ )

शनैः ।

( एकं नित्येऽर्थे )

सना नित्ये

नित्यवाचक नाम—( १ ) सना ।

( एकं बाह्येऽर्थे )

बहिर्वाह्ये

बाह्य (बाहर) अर्थ में १ नाम—( १ ) बहिः ।

( एकमतीतार्थं )

स्मातीते

अतीत (भूतकाल) अर्थ में १ नाम—( १ )

स्म । यथा—'वह्निस्म व्यास' ।

( एकमदर्शनेऽर्थे )

अस्तमदर्शने ॥१७॥

अदर्शन (गायब होना, दिखाई न देना, अस्त  
होना) अर्थ में १ नाम—( १ ) अस्तम् ॥१७॥

( एकं भावार्थं )

अस्ति सत्त्वे

विद्यमान अर्थ में १ नाम—( १ ) अस्ति ।

( एक कोपोक्तौ )

रूपोक्ताधु

कोपयुक्त वाक्य का नाम—( १ ) उ ।

( एकं प्रबनेऽर्थे )

ऊँ प्रश्ने

प्रश्न अर्थ में—( १ ) ऊँ । यथा—'ऊँ गच्छसि

बहिर्ध्वं ?'

( एकमनुनयार्थे )

अनुनये त्वयि ।

अनुनय अर्थ में—(१) अवि । यथा—‘अवि  
वद राघवा तथ्यम्’ ।

( एकं तर्कार्थे )

तुं तर्कं स्यात्

तर्क अर्थ में—( १ ) हुम् ।

( एकं रात्रेरवसाने )

उपा रात्रेरवसाने

रात्रि के अन्त का नाम—( १ ) उपा ।  
नपा—‘उपातनो वायु’ ।

( एक नमस्कारे )

नमो नतौ ॥१८॥

नमस्कार अर्थ में—( १ ) नम । यथा—  
‘नमो ब्रह्मण्यदेवाय’ ॥१८॥

( एकं पुनरर्थे )

पुनरर्थेऽहं

पुन. अर्थ में—(१) अहं । जैसे—‘मृगोऽपि  
भावनेनो विनम विद्वान्’ ।

( एक निन्दायाम् )

कुप्यु निन्दायाम्

निन्दा अर्थ में—( १ ) कुप्यु । यथा—  
‘कुप्यु यत्नम्’ ।

( एक प्रशंसायाम् )

कुप्यु प्रशंसने ।

प्रातः । जैसे—‘प्रगे नृपालामध तोरणाद्वहि ।’ ‘यः  
पठेन्प्रातस्तथाय’ ।

( एकं सानीष्ये )

निकपाऽन्तिके ॥१९॥

सनीष अर्थ में १ नाम—(१) निकपा ॥१९॥

( आग्नि वर्षस्य )

पक्ष्मपरार्यपमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।

वीति परसाल का नाम—( १ ) पक्ष्म ।

गत वर्ष में भी पड़ने वर्ष परितार साल का  
नाम—( १ ) परारि ।

वर्तमान वर्ष का १ नाम—( १ ) ऐषमम् ।

( एकं नस्तिष्वहनीष्यर्थे )

अद्याद्यादि

‘आज के दिन’ दिन अर्थ में १ नाम—(१)  
अद्य ।

( सप्त पूर्वमिन् दिने श्रावणार्थे )

अथ पूर्वोद्योत्यादौ पूर्वोत्तरापरा ॥२०॥

तथाऽप्रान्यान्यतरेतरात्पूर्वोदरादयः ।

‘पूर्वोदित’ अदि अर्थ में पूर्व अदि सप्त में  
यस प्रकाश होने पर पूर्वोद अदि आ । सप्त  
दिने हैं । में पूर्वोदित का अर्थ में—(१) पूर्वोद ।  
‘प्रगते दिन क अर्थ में—( १ ) उन्मत्त । अदि  
दिन के अर्थ में—(१) अन्तर्यामि । २ ती । ३ अहं—  
‘अन्तर्यामि’ ‘अन्तर्यामि’ ‘अन्तर्यामि’ ‘अन्तर्यामि’ २०

( ३ उन्मत्तमपदार्थार्थे )

उन्मत्तमपदार्थार्थः

असत्यवाचक २ नाम—( १ ) मृषा ( २ ) मिथ्या ।

( द्वे यथार्थेऽर्थे )

यथार्थं तु यथातथम् ।

यथार्थवाचक २ नाम—( १ ) यथार्थम् ( २ ) यथातथम् ।

( पञ्च निश्चयार्थकाः )

स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥१५॥

निश्चयार्थवाचक ५ नाम—( १ ) एवम् ( २ )

तु ( ३ ) पुनः ( ४ ) वै ( ५ ) वा ॥१५॥

( एकमतीतार्थकम् )

प्रागतीतार्थकम्

भूतकालवाचक नाम—( १ ) प्राक् । यथा—  
'प्राक्कर्म ।'

( द्वे निश्चितार्थे )

नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।

निश्चितवाचक २ नाम—( १ ) नूनम् ( २ ) अवश्यम् ।

( एकं सन्वत्सरार्थं )

संवत्सरं

वर्षवाचक नाम—( १ ) संवत् ।

( एकमवरेऽर्थे )

अवरे त्वर्वाक्

प्रथमवाचक नाम—( १ ) अर्वाक् ।

( द्वे अङ्गीकारे )

आमेवम्

अङ्गीकारवाचक २ नाम—( १ ) आम् ( २ ) एवम् ।

( एकमात्मार्थं )

स्वयमात्मना ॥१६॥

आत्म (अपना) वाचक नाम—( १ ) स्वयम् ॥१६॥

( एकमल्पे )

अल्पे नीचैः

अल्प (छोटा) वाचक नाम—( १ ) नीचैः ।

( एकं महद्वाचके )

महत्त्युच्चैः

ऊँवाचक नाम—( १ ) उच्चैः ।

( एकं बाहुल्येऽर्थे )

प्रायो भूमि

बाहुल्य (अक्सर) वाचक नाम—( १ )

प्रायः ।

( एकं मन्देऽर्थे )

अद्भुते शनैः ।

मन्द (धीरे-धीरे) अर्थ में १ नाम—( १ ) शनैः ।

( एकं नित्येऽर्थे )

सना नित्ये

नित्यवाचक नाम—( १ ) सना ।

( एकं बाह्येऽर्थे )

बहिर्वाह्ये

बाह्य (बाहर) अर्थ में १ नाम—( १ ) बहिः ।

( एकमतीतार्थं )

स्मातीते

अतीत (भूतकाल) अर्थ में १ नाम—( १ ) स्म । यथा—'वक्तुस्म व्यास' ।

( एकमदर्शनेऽर्थे )

अस्तमदर्शने ॥१७॥

अदर्शन (गायब होना, दिखाई न देना, अस्त होना) अर्थ में १ नाम—( १ ) अस्तम् ॥१७॥

( एक भावार्थं )

अस्ति सत्त्वे

विद्यमान अर्थ में १ नाम—( १ ) अस्ति ।

( एकं कोपोक्तौ )

रूपोक्तायु

कोपयुक्त वाक्य का नाम—( १ ) उ ।

( एकं प्रबनेऽर्थे )

ऊं प्रश्ने

प्रश्न अर्थ में—( १ ) ऊं । यथा—'ऊं गच्छसि वहिर्ध्वम् ?'



( एकमनुनयार्थं )

अनुनये त्वयि ।

अनुनय अर्थ में—(१) अयि । यथा—‘अयि वद राघवा तथ्यन्’ ।

( एकं तर्कैऽर्थं )

तुं तर्कं स्यात्

तर्क अर्थ में—( १ ) हुम् ।

( एकं रात्रेरवसाने )

उपा रात्रेरवसाने

रात्रि के अन्त का नाम—( १ ) उपा ।

यथा—‘उपातनो वायुः’ ।

( एक नमस्कारे )

नमो नतौ ॥१॥

नमस्कार अर्थ में—( १ ) नम । यथा—

‘नमो नक्षत्रचक्रवाय’ ॥१॥

( एकं पुनरर्थं )

पुनरर्थेऽहम्

पुन. ‘प्रप मे—(१) अहम् । जैसे—‘मूर्खोऽपि नावमन्ताते क्षिमेण विद्वान्’ ।

( एकं निन्दायाम् )

दुष्टु निन्दायाम्

निन्दा अर्थ में—( १ ) दुष्टु । यथा—

‘दुष्टु नतयम्’ ।

( एकं प्रशंसायाम् )

सुष्टु प्रशंसने ।

प्रातः । जैसे—‘प्रगे नृपाणामय तोरणादहिः’ । ‘चः पठेत्प्रातरुत्थाय’ १

( एकं सामीप्ये )

निकृषाऽन्तिके ॥१॥

समीप अर्थ में १ नाम—(१) निकृषा ॥१॥

( त्रोग्नि वर्षस्य )

परुत्परार्थेऽपमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।

वीते परसाल का नान—( १ ) परत् ।

गत वर्ष से भी पहले वर्ष परितर का नाम—( १ ) परारे ।

वर्तमान वर्ष का १ नान—( १ ) देवन्तु ।

( एकं अस्मिन्वर्तमाने )

अद्याप्राहि

‘आज के दिन’ इस अर्थ में १ नान—(१)

अद्य ।

( सप्त पूर्वमिन् दिने इत्यादि )

अथ पूर्वोक्त्यादी पूर्वोत्तराभ्याम्

तथाऽध्वराभ्याम्यतरेतराभ्याम्युत्तराभ्याम्

‘पूर्वेऽहि’ आदि अर्थ में जैसे आदि अर्थ में

यत् प्रत्यय कर्त्ते अहं पूर्वोक्त्या आदि अर्थ में होते हैं । जैसे पूर्वदिन के अर्थ में—(१) पूर्वोक्त्या ।

अगले दिन के अर्थ में—( १ ) अगले ।

दिन के अर्थ में—( १ ) अगले ।

‘अगले’ ‘अगले’ ‘अगले’ ‘अगले’

( इति इत्यादि )

उभययुक्त्याभ्याम्

( एकमागामिन्यहनि )

अनागतेऽहि श्वः

अनेवाले कल का नाम—( १ ) श्व ।

( एकं श्वःपरेऽहनि )

परश्वस्तु परेऽहनि ।

अनेवाले परसों का नाम—( १ ) परश्व ।

जैसे—‘अथश्चो वा परश्चो वा सर्वं कार्यं भविष्यति ।’

( द्वे तस्मिन्काले इत्यर्थे )

तदा तदानीम्

उस समय के अर्थ में २ नाम—( १ ) तदा

( २ ) तदानीम् ।

( द्वे एकस्मिन्काले इत्यर्थे )

युगपदेकदा

( एक समय के अर्थ में २ नाम—( १ ) युग-

पत् ( २ ) एकदा ।

( द्वे सर्वस्मिन्काले इत्यर्थे )

सर्वदा सदा ॥२२॥

सब समय के अर्थ में २ नाम—( १ ) सर्वदा

( २ ) सदा ॥२२॥

( पञ्च भस्मिन्काले इत्यर्थे )

पतर्हि सम्प्रतीदानीमधुना साम्प्रतं तथा ।

इस समय के अर्थ में ५ नाम—( १ )

पुतर्हि ( २ ) सम्प्रति ( ३ ) इदानीम् ( ४ )

अधुना ( ५ ) साम्प्रतम् ।

दिग्देशकाले पूर्वार्धौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥२३॥

पूर्व आदि देश, पूर्व आदि दिशा, पूर्व आदि

काल के अर्थ में प्रत्यक् आदि शब्द होते हैं ।

जैसे पूर्व देश, पूर्व दिशा और पूर्वकाल के अर्थ

में—प्राक् ।

उत्तर देश, उत्तर दिशा और उत्तरकाल के

अर्थ में—उदक् ।

पश्चिम दिशा और पश्चिम काल के अर्थ

में—प्रत्यक् ॥२३॥

इत्यव्ययवर्गः ॥४॥

अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥५॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृच्छ्रितसमासजैः ।

अनुक्तैः सग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥१॥

पाणिनि आदि व्याकरणशास्त्र के रचयिता मुनियों ने ‘सन्’ आदि प्रत्यय से बने हुए ‘चिकीर्षा’ आदि शब्दों से, कृदन्त प्रत्यय से बने ‘क्षपाक’ आदि शब्दों से, तद्धित प्रत्यय से बने ‘अदन्तोत्तर पदो द्विगु’ आदि से समास करके बने शब्दों तथा इनके अतिरिक्त—जिनके लिङ्ग के विषय में अबतक स्पष्ट लिङ्ग निर्देश नही किया गया था, उन शब्दों का—इस ‘लिङ्गसंग्रहादिवर्ग’ में सग्रह किया जा रहा है । जिस तरह कि संकीर्णवर्ग में प्रकृति-प्रत्यय आदि से लिङ्ग की कल्पना की जा चुकी है, उसी तरह इस वर्ग में भी कल्पना करनी चाहिए । प्रकृति के अर्थ में जैसे—‘अर्धर्चा पुंस्ति’ । प्रत्ययार्थसे जैसे—‘स्त्रिया क्तिन्’ । इसी प्रकार जो शब्द क्रियाविशेषण के हैं, उनका एकत्व तथा नपुंसकलिङ्गता होती है । जैसे—‘शोभन पृचति’ इत्यादि ॥१॥

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यवाधितः ।

पहले के वर्गों में कृदन्त, तद्धित तथा समास के प्रत्ययों से बने हुए जिन शब्दों का लिङ्गनिर्देश किया जा चुका है, उनके अतिरिक्त लिङ्ग लिङ्गशेष कहे जाते हैं । यदि यहाँ और पूर्वोक्त विशेष इसमें बाधक न हों तो उस लिङ्गशेष का विधान व्यापक होगा । यानी पूर्वोक्त तीनों कारणों में उसकी पहुँच होगी । कहने का मतलब यह कि इस उत्सर्गभूत लिङ्गविशेषविधि में स्वर्गादिवर्ग अपवादस्वरूप हैं । पुनरुक्तिदोष से बचने के लिए और विस्तार भय से यहाँ पूर्व में कहे हुए विशेषों को नहीं दुहराया जा रहा है । जैसे कि स्वर्ग के पर्यायवाचक शब्द यहाँ पुंलिङ्ग कहे जायेंगे । यह पूर्वोक्त ‘यौर्दिबो द्वे, स्त्रिया स्त्रीवे त्रिविष्टपम्’ का अपवाद है । यद्यपि पहले भी लिङ्गनिर्देश कर आये

हैं, किन्तु जिन शब्दों की लिङ्गविवेचना नहीं हो  
सकी थी, वहाँ उनकी विवेचना की जायगी । इस  
तरह इस वर्ग में लिङ्गसंग्रह ही प्रधान विषय है ।  
स्त्रियाम्नीदृष्टिरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च । २

‘स्त्रियाम्’ यह अधिकार १० वें श्लोक के  
मर्मी शब्द पर्यन्त चलेगा । जिन शब्दों के अन्त  
में देशर या ऊकार है और जो शब्द एक अच्  
के हैं, वे स्त्रीलिङ्ग हैं । जैसे—पी. धी भू. ध्रु  
आदि । नी आदि में ‘कृत कर्तरि’ से वाधितत्त्व के  
कारण वाच्यलिङ्गत्व है । और जो प्राणी योनि-  
युक्त हैं, वे भी स्त्रीलिङ्ग ही होंगे । जैसे—नाना  
दृष्टिः, धेनु आदि में ‘दारा’ पुंभूति कलत्र शब्द  
के विषय में ‘कलत्र श्रोत्रिभार्ययो’ यह नपुंसक-  
लिङ्ग का पाठ साधक है । इसी प्रकार अन्यत्र भी  
विचार कर लीनिष्ठा ॥२॥

नामविशमिश्रावल्लीषीणादिभनदीद्वियाम् ।

भाव, कर्म, समूह तथा स्वार्थ अर्थ में नन्प्रत्य-  
यान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । भाव अर्थ में जैसे—  
शुद्धता । कर्म अर्थ में जैसे—वाग्मरता । समूह अर्थ  
में—ग्रामता । स्वार्थ अर्थ में—देवता । इन्द्र अर्थ  
में य, इनि, कव्य और अ प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग  
होते हैं । जैसे—‘पाशाना समूह’ इसमें ‘पाशा-  
दिभ्यो य’ इस पाणिनीय सूत्र से य प्रत्यय होने  
पर स्त्रीलिङ्ग में ‘पाशना’ यह रूप होता है । इसी  
तरह चाल्या । ‘गलाना समूह’ इसमें ‘गलादिभ्य  
इनि’ इस सूत्र से इनि प्रत्यय होने पर स्त्रीलिङ्ग में  
गलिनी रूप होता है । रथ शब्द से ‘रथादिभ्य  
इत्यच्’ इस सूत्र से इत्यच् प्रत्यय होनेपर  
स्त्रीलिङ्ग में रथइत्या रूप होता है । इसी  
तरह गोप्रा भी जानना । और तथा मैथुन  
अर्थ में प्रयुक्त पुन प्रत्ययान्त शब्द भी  
स्त्रीलिङ्ग होता है । जैसे—‘मैथुनस्य कर्म

अर्थ में जैसे—नारी, शिवा, ब्रह्मवधू । स्थावर अर्थ में जैसे—कदली, माला, कर्कन्धू ।

**तत्कीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टापाल्लवाणदिक् ५**

यहाँ 'तत्' शब्द से मुष्ट्यादिका संकेत है । इससे इसका यह अर्थ है कि मुक्का मारना आदि खेलवाड़ के अर्थ में ए प्रत्यय प्रयुक्त हो तो वह स्त्रीलिङ्ग हो जाता है । यहाँ 'तदस्या प्रहरणं कीडाया ए' इस सूत्र से ए प्रत्यय होता है । स्त्रीलिङ्ग में 'दाण्डा, मौसला' यह रूप होता है । इसी तरह 'पल्लव प्रहरणमस्या क्रियाया पाल्लव' ॥५॥

**घोजोत्रः सा क्रियास्यां चेदाण्डपाता हि फाल्गुनी श्यैनपाता च मृगया तैलम्पाता स्वधेति दिक् ६**

फाल्गुन्यादि अर्थ में घञन्त से विहित ज-प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे—दाण्डपातोऽस्या फाल्गुन्या दाण्डपाता फाल्गुनी । इसी तरह—श्यैनपातोऽस्या क्रियाया श्यैनम्पाता मृगया, तिलपातोऽस्या स्वधाक्रियाया तैलम्पाता, मुसलपातोऽस्या क्रियाया मौसलम्पाता भूमि । बहुतेरे देशों में फाल्गुन की पूर्णिमा को लोग डंडे से खेलते हैं, इसलिए दिक् शब्द से 'दाण्डपाता' आदि उदाहरण भी होते हैं, यह सूचित किया है ॥६॥

**स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिविवक्षापचये यदि ।**

यदि किसी वस्तु की अल्पता विवक्षित हो तो मृणाली आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे—अल्पं मृणालं मृणाली । आदिशब्द से—ह्रस्वो वंशो वंशी । इसी तरह—कुम्भी, प्रणाली, छत्री, पटी, तटी, मठी आदि भी जानना चाहिए । ह्रस्व अर्थ में 'कन्' प्रत्यय होने पर भी स्त्रीलिङ्ग होता है । जैसे—पेटिका । इस लोक में 'कचित्' शब्द इसलिए पड़ा है कि जिससे 'कल्पो वृत्तो वृत्तकः' आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग न मान लिये जायें ।

**लंका शेफालिका टीका धातकी**

**पञ्जिकाऽऽढकी ॥७॥**

पहले 'ड्यावूडन्तम्' आदि कह आये हैं, इसलिए कान्त आदि क्रम से स्त्रीलिङ्ग में कहे हुए कुछ शब्दों का संग्रह करते हैं । जैसे—लंका ( रावण की नगरी ), शेफालिका, टीका ( विषम पद की व्याख्या ), धातकी ( आँवला ), पञ्जिका ( सब पदों की व्याख्या ) आढकी ( तरोई ) ॥७॥

**सिध्रका सारिका हिका प्राचिकोल्कापिपीलिका तिन्दुकी कणिका भगिः सुरंगासूचिमाढयः ॥**

सिध्रका ( एक प्रकार का वृक्ष ), सारिका ( मैना ), हिका ( हिचकी ), प्राचिका ( वनमक्खी ), उल्का ( तेज का समूह ), पिपीलिका ( चींटी ), तिन्दुकी ( तेंदु ), कणिका ( परमाणु ), भगि ( कुटिलता ), सुरंगा ( बिल या सुरग ), सूचि ( सुई ), माढि ( पत्ते का सिरा, ढेपुनी ) ॥८॥

**पिच्छा वितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत् ।**

**सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी नामी**

**राजसभाऽपि च ॥९॥**

पिच्छा ( सेमर की गोंद या भात का माड़ ), वितण्डा ( बकवास ), काकिणी ( एक तोले की चौथाई ), चूर्णि ( चूर्णिका ), शाणी ( सन का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा—टसर ), द्रुणि ( कछुही ), दरत् ( म्लेच्छ जाति ), साति ( अन्न-दान ), कन्था ( बिछौना ), आसन्दी ( बेंत की चटाई व कुर्सी ), नामि ( ढोंढ़ी, अज्ञविशेष ), राजसभा ( कचहरी ) ॥९॥

**भल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च**

**सिध्मला ।**

**लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी**

**मसी ॥१०॥**

भल्लरी ( भॉभ ), चर्चरी ( ताली बजाना ), पारी ( हाथी के पैर में बंधा हुआ रस्सा ), होरा ( लग्न का आधा ), लट्वा ( नर गँदिया ), सिध्मला ( सूखी मछली ), लाक्षा ( लाख-लाह ) लिक्षा ( लीख—जूँ का अण्डा ), गण्डूषा ( जल-दूध

आदि मुत्र में गरकर कुल्ला करना), गृध्री ( एक प्रघर या वानरों, जो जीव की जोड़ में होता है ) चर्मसी (यज्ञाग्नविशेष = पीठी) नसी (स्याही) ॥१०॥

( इति श्रीसिद्धसंग्रह । )

पुस्त्ये समेवानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।  
स्वर्गयानाद्रिमेघाच्चिद्रुकालासिशरारयः ॥११॥

आने के २१ वे लोक तक 'पुस्त्ये' इस वाक्य का अभिघर है । देवता या दैत्यों के पर्यायाची जिनने भी शब्द तथा भेद हैं और उनके जो अनुचर हैं, वे सब पुलित्त हैं । देवताओं के पर्यायाची शब्द—अमर, निर्जर, देव, मरुत आदि हैं । इनके भेद तुषित, साध्य, दन्द, मरुतान्, मयया, मृर, नृय, अर्यना, दाहा, दृह, तुम्बुक

आदि इनके पुस्त्य में बाधक हैं । कल, शिष्ट, समय और इनके भेद, मान, पक्ष, अस्तु आदि ह । दिन और निधि आदि इनके बाधक ह । अग्नि, खड्ग, नगडलप्र और इनके भेद नन्दक, चन्द्रहास आदि ह । 'मरिचम्' यह इनके पुस्त्य में बाधक है । खर, वाण, विजिग और इनके भेद नाराच, दाल, गज आदि ह । 'दुष्टुयो' यह वाक्य इनके पुस्त्य में बाधक है । अरि, शत्रु, अरानि आदि और इनके भेद आत्मायी आदि हैं । बाधक सम्भे के अतिरिक्त नव शब्द पुलित्त ह ॥११॥

कर-गण्डोष्ठ-दादन्त-कण्ठ केश नल-स्वनाः ।  
ग्रहाहान्ताः क्षेममेदा राधान्ताः प्रागसंययकाः २२  
कर, ( राज-धरा 111९, किरण और पाप )

और अन्नन्त जैसे—कृष्णवर्मा, प्रतिदिवा, मघवा, लोम, साम, वर्म आदि । अप्सरस् और जलौकस् ये दो स्त्रीलिङ्ग के शब्द तथा सुमनस्, लोम, साम, वर्म, ये नपुंसक लिङ्ग के शब्द पुँस्त्व के बाधक हैं । 'तु' और 'रु' जिन शब्दों के अन्त में हैं, वे भी पुल्लिङ्ग होते हैं । किन्तु कशेरु और जतु शब्द को छोड़कर ही पुँस्त्व होता है । जैसे—हेतुः, सेतुः, धातुः, कुरुः, मेरुः, त्सरुः । कसेरु (अस्थिविशेष) जतु (लाक्षा) यहा पुँस्त्व न होकर नपुंसकता ही रहती है ॥१३॥

**कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ ।**

**पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥१४॥**

क ष ण भ म र ये अक्षर जिन अदन्त शब्दों के अन्त में हैं तो वे पुल्लिङ्ग होते हैं । कान्त जैसे—अङ्कः लोकः, अर्कः, स्फटिकः आदि । षान्त—माषः, तुषः, रोषः आदि । णान्त—पाषाणः, गुणः, घुणः, आदि । भान्त—दर्भः, सरभः, गर्दभः आदि । मान्त—होमः, ग्रामः, गुल्मः, धूमः आदि । रान्त—भर्भरः, समीरः, शीकरः, आदि ।

इसी तरह प थ न य स ट ये छ अक्षर जिन शब्दों के अन्त में हैं, वे भी पुल्लिङ्ग होते हैं । पान्त शब्द जैसे—यूपः, कूपः, सूपः, कलापः आदि । थान्त—सार्थः, नाथः, शपथः आदि । नान्त—इनः, अपघनः, जनः आदि । यान्त—अपनय, विनय, प्रणय आदि । सान्त—रसः, हासः, पनसः आदि । टान्त—पटः, सटः, करटः आदि । जिनसे वंश की प्रसिद्धि हो, वे भी पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—भरद्वाजः, कश्यपः, वत्सः । वेद की शास्त्रार्थों के सभी नाम पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—कठ, कलापः, वहूचः आदि ॥१४॥

**नाम्यकर्तरि भावे घञ् ज्वन्ङ्यघाथुच ।**

**ल्यु कर्तरीमनिजभावे को घाः किः प्रादितोऽन्यतः ।**

कर्ता से भिन्न कारक, संज्ञा या भाव में विहित घञ् आदि सात प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । घञ्प्रत्ययान्त जैसे—'प्रसीदन्त्यस्मिन्मनासि

प्रासादः' 'प्रास्यत इति प्रास' 'विदन्त्यनेन वेद' 'प्रपतत्यस्मात्प्रपात' आदि । भावप्रत्ययान्त जैसे—पाक, त्याग, रोग आदि । अच्प्रत्ययान्त—जय, चय, नय आदि । अप्रप्रत्ययान्त—कर, गर, जव, लव आदि । नङ् प्रत्ययान्त जैसे—यज्ञ, प्रश्न आदि । नङ् यह उपसङ्गण है, इस लिए 'स्वप्न' भी पुल्लिङ्ग ही माना गया है । णप्रत्ययान्त—'न्याद' आदि । घप्रत्ययान्त—'उरश्छद' आदि । अथुच् प्रत्ययान्त—'वेपथु' आदि । कर्ता में प्रयुक्त ल्यु प्रत्यय भी पुल्लिङ्ग होता है । जैसे—नन्दनः, रमण, मधुसूदन आदि । भाव अर्थ में प्रयुक्त इमनिच् प्रत्यय भी पुल्लिङ्ग हैं । जैसे—प्रथिमा, महिमा, आदि । भाव में प्रयुक्त क प्रत्ययान्त जैसे—आखुत्थ, प्रस्थ आदि । प्र आदि उपसर्ग अथवा कोई भी शब्द आदि में हो तो घुसङ्गक धातु से विहित कि प्रत्यय पुल्लिङ्ग होता है । दारूप और धारूप धातु घुसङ्गक माने जाते हैं । जैसे—प्रधि, निधि, आदि । 'अन्यत' इस वाक्य से 'जलधि' यहा भी कि प्रत्यय पुल्लिङ्ग ही है ॥१५॥

**द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते ।**

**कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयः पूर्वकोऽपि च ॥**

समाहार के अतिरिक्त द्वन्द्व समास में अश्ववडव शब्द पुल्लिङ्ग होता है । समाहार में 'अश्ववडवम्' यही होता है । सूर्य या चन्द्रमा के पर्यायवाचक शब्दों के अन्त में कान्त शब्द पडा हो तो वह पुल्लिङ्ग होता है । जैसे—सूर्यकान्तः, चन्द्रकान्त, अर्ककान्त, इन्दुकान्त, सोमकान्त आदि । अयस् शब्द या इसके पर्यायवाची शब्दों के अन्त में कान्त शब्द पडा हो तो वह भी पुल्लिङ्ग होता है । जैसे—अयस्कान्त, लोहकान्तः आदि ॥१६॥

**वटकश्चानुवाकश्च रत्नकश्च कुडङ्गकः ।**  
**पुहो न्युहः समुद्रश्च विटपट्टधटाः खटः ॥१७॥**

अब योड़े से ककारान्त क्रम से पुल्लिङ्ग शब्दों का संग्रह करते हैं । जैसे—वटक ( वडा ) ।

अनुवाकः ( वेदका अंग ) । रत्नकः ( कम्बल ) ।  
कुट्टकः ( वृक्ष और लताओं की झाड़ी ) । पुंनः  
( बाणका मूलभाग ) । न्युङ्ग ( सामवेदका  
श्रोतार ) । ससुङ्गः ( संपुटक, पेडारा ) । विटः  
( धूर्त ) । पटः ( पीड़ा ) । धट ( तराजू ) । लट  
( अंधकारपूर्ण दूर ) ॥१७॥

कोटारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।

गडुः कण्डो लगुडो परण्डश्च किणो पुणः ॥२०॥

कोट ( नागर, कूप, दुर्गपुर ) । अरघट ( पाट,  
रहट ) । हट ( बाजार ) । पिण्डः ( मिठा आदि  
मृद्विन्न करके बाँचना, शरीर ) । गोण्ड ( नाभि,  
नीच जाति का मनुष्य ) । पिचण्ड ( उदर ) । वे  
और आगे कई जाने वाले गडु आदि शब्द भी  
पुनिष्ठ हैं । गडु ( गलगण्ड, कुबड़ा ) । कण्ड  
( मधुरोप, बौंग का बनी जातीली ) । लगुड  
( पीस का लाठी ) । परण्डः ( बुढ़ का राग ) ।  
किणः ( मातृप्रतिप, पाप का निस्तान ) । पुण  
( पुन, पाठ का पीड़ा ) ॥२०॥

टलिस्मिन्नाहदितो रोमन्धोऽप्युदुदुदा ।  
कासमर्दीऽर्बुदः कुन्दः फेनस्पर्पो सगुर्वी ॥२१॥

बुकः ( एक प्रकार की भाजी, चूक, अमलौन ) ।  
गोनः ( गोलाकार पिण्ड ) । हिनुनः ( मेढार या  
रंगने का सामान ) । पुटलः ( आन्ना, कुन्दर  
ग्राहति ) ।

घेतालभल्लमल्लाध पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ।  
कुलमापो रभसश्चैव सकटाहः पतद्प्रदः ॥२२॥

'ये वायो तालः प्रतिष्ठा यस्मातो देवान्' इत्यने  
जिन शब्द में भूत का प्रयोग होता है । भन्ना  
भान् । मल्लः ( बाहु बुद्ध न निपुण, पद्मवान ) ।  
पुरोडाशः ( एक प्रकार का हवि, जाडरि, मोनरक,  
दहनयोग नामघी ) । पट्टिशः ( एक प्रकार का बन्ध,  
पटा बनेटी ) । कुलप ( आस पछा दुःखा जो,  
यस्य उदर, माता ) । रभस ( शूरे, देव ) । सकटाहः  
( कटती बने ) । पट, इ ( पीडाका ) ॥२२॥

( टी पुनिष्ठमप्रदः )

द्विहीनेऽन्यथा धारगवपण्डवन्नदिमोऽकम् ।  
शोतोऽप्यमोवदपिरनुभाजिद्रिणिं पलम् ॥२३॥

इयं श्लोक के द्विहिने इयं श्लोक का, च भाषा  
२२३-श्लोक के 'अपि हिम्' इयं २२३-२४

फलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम् ।

जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥२३॥

फलम्, कपित्थम्, आदि फलवाचक सभी शब्द । हेम, सुवर्णम्, कनकम् आदि । शुल्बम् (तामा) ताम्रम् आदि । लोहम्, कालायसम् आदि । सुखम्, शर्म, शातम् आदि । दुःखम्, कृच्छ्रम्, कष्टम् आदि । शुभम्, कल्याणम्, कुशलम् आदि । अशुभम्, अकल्याणम् आदि । जल मे उत्पन्न होनेवाले फूल-कुमुदम्, कल्लारम्, उत्पलम् आदि । लवणम्, सैन्धवम् आदि । व्यञ्जनम् (दाढी-मूँछ, चिह्न, भोजनविशेष) तेमनम्, निष्ठानम् आदि । अनुलेपनम्, कुकुमम् आदि सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं ॥२३॥

कोट्या शतादिसंख्याऽन्या वा लक्षा नियुतं च तत्  
द्व्यचकमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि ॥२४॥

कोटि (करोड़) से भिन्न शतं सहस्रं आदि जितने भी संख्यावाचक शब्द हैं, वे सभी नपुंसकलिङ्ग हैं । लक्षाशब्द विकल्प से नपुंसक लिङ्ग होता है । लक्षशब्द का पर्यायवाची नियुत शब्द नित्य नपुंसक लिङ्ग है । इनके अतिरिक्त असन्त, इसन्त, उसन्त और अन्नन्त जितने भी दो अच् वाले शब्द हैं, वे सब नपुंसक लिङ्ग हैं । असन्त में जैसे—पय, यश, तेज, तम आदि । इसन्न-सर्पि, हवि, शोचि आदि । उसन्त-वपु, यजु, आदि । अन्नन्त-चर्म, शर्म, साम, नाम आदि । कर्तृवर्जित अर्थ में अनान्त (अन्त+अन्त) शब्द हैं, वे भी नपुंसक लिङ्ग हैं । जैसे—गमनम्, मरणम्, दानम्, करणम्, वरणम् आदि । यदि इसमें 'अकर्तरि' यह वाक्य न कहते तो 'इधमन्नश्चन, नन्दन रमण' आदि भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते २४ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुलक्षानुसारतः ॥२५॥

जिन शब्दों के अन्त में 'त्र' अक्षर पड़े, वे सब शब्द नपुंसक लिङ्ग होते हैं । जैसे—पात्रम्, वहित्रम्, गात्रम्, वस्त्रम्, मित्रम् आदि । अन्तिम

अक्षर के पूर्व वर्ण को उपधा कहते हैं । जो जिन शब्दों में 'स' उपधा में हो, वे नपुंसक लिङ्ग होते हैं । जैसे—विसम्, अन्धतमसम्, आदि जिन शब्दों के उपधा में 'ल' हो वे भी नपुंसक होते हैं । जैसे—कुलम्, मूलम् आदि । 'शिष्टम्' इस पद का तात्पर्य यह है कि जो पहले नहीं गिनाये हैं वे, और जो गिनाये जा चुके हैं, वे सभी अवाधित त्रान्त शब्द नपुंसक लिङ्ग होते हैं । सख्या युक्त रात्र शब्द भी नपुंसक होता है । जैसे—त्रिरात्रम्, पञ्चरात्रम् । 'संख्ययान्वितम्' न कहते तो 'अर्धरात्र, मध्यरात्र' आदि शब्द भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते । अदन्त पात्र आदि शब्दों के साथ शब्दार्थ में जो द्विगुसमास होता है, वह भी नपुंसकलिङ्ग ही होता है । जैसे—पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, त्रिभुवनम् आदि । इस श्लोक में 'एकार्थ' न कहते तो 'पञ्चकपाल पुरोडाश' भी यह नपुंसक लिङ्ग हो जाता । क्योंकि यहा एकार्थ में नहीं, बल्कि तद्वितीय में द्विगु समास हुआ है । 'लक्षानुसारत' न कहते तो 'त्रिपुरी, पञ्चमूली, त्रिवली' ये शब्द भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते ॥२५॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।  
षष्ठ्याच्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा २६

जहा द्वन्द्वसमास की एकता हो और अव्ययी-भाव समास हो, वहा भी नपुंसकलिङ्ग होता है । द्वन्द्व की एकता जैसे—पाणिपादम्, शिरोग्रीवम्, मार्दङ्गिकपाणविकम् । अव्ययीभाव समास जैसे—अधिक्षि, उपगङ्गम् । सख्या और अव्यय से परे पथिन्शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है । जैसे—द्विपथम्, त्रिपथम्, चतुष्पथम्, विपथम्, कापथम् । यदि 'संख्याव्ययात्' ऐसा न कहते तो 'धर्मपथ, योगपथ' यह भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते । समास में षष्ठीविभक्त्यन्त से परे छाया शब्द यदि बहुतों से सम्बन्ध रखनेवाला हो तो नपुंसक लिङ्ग होता है । जैसे—'बीना पक्षिणा छाया विच्छायम्' इच्छुच्छायम् आदि । 'बहूनाम्' ऐसा न कहते तो





‘राजसूयम् (जिस यज्ञ में कि राजा सोमलता के रससे स्नान करता है) । वाजपेयम् (जिस यज्ञ में राजा अन्न से वनी मदिरा से स्नान करता है) । कवि की बनायी हुई पदसमूहात्मक ‘गद्य’ कविता और श्लोकात्मक ‘पद्य’ कविता । माणिक्यम् (मणि या मणिपुर नामक नगर में उत्पन्न होने वाली वस्तु) । भाष्यम् (जिसमें सूत्र के अर्थ का वर्णन किया जाता है) । सिन्दूरम् । चीरम् (साड़ी) । चीवरम् (मुनियों के पहनने का वस्त्र) । पिञ्जरम् (पिंजड़ा) । ये सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं ॥३१॥

**लोकायतं हरितालं विदलस्थालबाह्लिकम् ।**

लोकायतम् (चार्वाक का शास्त्र) । हरितालम् (एक प्रकार की धातु) । विदलम् (बोंस की पत्ती का बना हुआ पात्रविशेष) । स्थालम् (वड़ा भदेला) । बाह्लिकम् (कुंकुम आदि) ये भी शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं ।

( इति नपुंसकलिङ्गसंग्रहः )

**पुंनपुंसकयोः शेषाऽर्धचपिण्याककण्टकाः ३२**

यहाँ से अगले ‘चमसचिकसौ’ इस ३५वें श्लोक तक पुंनपुंसकयोः इस वाक्य का अधिकार रहेगा अर्थात् इसके अन्तर्गत सभी शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसक दोनों होंगे । पहले जो शब्द गिनाये जा चुके हैं, उनसे बाकी बचे पुंनपुंसक लिङ्ग होंगे । जैसे—निधिवाची शङ्ख और पद्म शब्द एकमात्र पुंलिङ्ग होंगे, किन्तु कम्बु और कमल-वाची शंख और पद्म शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसक दोनों होंगे । पहले गिनाये हुए शब्दों में भी जहाँ पर्याय में भेद पड़ेगा, वह शब्द पुंनपुंसक दोनों होगा । अर्धच (ऋचा का आधा भाग) । पिण्या-

कम् (कुटे तिलका तिलकुट) । कण्टकम् (लोम-हर्ष, लुद्रशत्रु) ॥३२॥

**मोदक स्तण्डकटङ्कः शाटक. कर्पटोऽर्बुदः ।**

**पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥३३॥**

मोदक. (लड्डू, प्रसन्न करनेवाला) । तण्डक (दण्ड) । टङ्क (पत्थर काटने की टाकी छीनी) । शाटक (साड़ी) । कर्पटम् (स्थानविशेष) । किसी किसी पुस्तक में ‘खर्वटम्’ यह पाठ है जिसका मतलब है, किसी शहर के नजदीक पर्वत और नदी के समीप का गाव । अर्बुदम् (दस करोड़ की सख्या, पर्वत विशेष) । पातकम् (ब्रह्म हत्या आदि अपराध) । उद्योग (उत्साह) । चरकम् (वैद्यक का शास्त्रविशेष) । ‘वरकम्’ पाठ में ‘सिला हुआ कपड़ा’ यह मतलब होता है । तमालम् (वृक्ष विशेष, तमाखू) । आमलकम् (आवला) । नड (बिल का भीतरी भाग, एक प्रकार की नरई घास) ॥३३॥

**कुष्ठं मुण्डं शीघ्रं वुस्तं च्वेडितं क्षेम कुट्टितम् ।**  
**संगमं शतमानाम् शम्भलाव्ययताण्डवम् ॥**

कुष्ठम् (रोगविशेष) । मुण्डम् (मस्तक) शीघ्र (मदिरा) । वुस्तम् (भुना हुआ मांस, कटहल आदि फल का सार भाग) च्वेडितम् (वीर द्वारा किया हुआ सिंहनाद) । क्षेमम् (कुशल, प्राप्त वस्तु की रक्षा करना) । कुट्टितम् (एक प्रकार की दीवार, फर्शवन्दी) । शतमानम् (१०० गुब्जा की

२ प्राचीन भारत का प्राचीन सिक्का ‘शतमान’ था जो सुवर्ण का होता था । इसका उल्लेख न केवल पाणिनि की अष्टाध्यायी (५, १, २७) और कात्यायन श्रौतसूत्र (१५, १८१-१८३) में पाया जाता है बल्कि स्थल-स्थल पर शतपथ ब्राह्मण (५, ४, ३, २४, २६, ५, ५, ५, १६) में । उपरोक्त ब्राह्मण के १२, ७, २, १३ में कहा गया है कि ‘सुवर्णं क्षिरय्य भवति रूपस्यैवावसदयै शतमान भवति शतायुव पुरुष.’ तथा (१३, २, ३, २) में ‘क्षिरय्य दक्षिणा सुवर्णं शतमान तस्योक्तम् ।’ आदि । कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीयसंहिता (३, २, ६, ३, २, ३, ११, ५) ने शतमान का उल्लेख किया है । मनु और याज्ञवल्क्य के समय यह सिक्का सम्भवतः चौदी का हो गया था ।

१ ‘राजा स्वाराज्यकामो राजसूयेन यजेत ( शतपथ ब्रा० ५, १, १, १२ ) ‘परिमन् सर्वे सम्भवति यश्च सर्वत्र पूज्यते । यश्च सर्वेश्वरो राजा राजसूय स विन्दति ॥’ ( महा० समा० १३, ४ ) माष्यलक्षणम्—सूत्रार्थो वय्यंते यत्र वाक्यैः सूत्रानुकारिभिः । १ स्वपदानि च वय्यन्ते भाष्य माष्यविदो विदुः ॥

तोल्य स सुगणं का गोल निष्ठा । अर्मम (आरु का रोग) । शम्बल (रग विशेष और पायेच) । अन्ययम (न्यादिनिपातवाचक शब्द) । ताण्डवम् (एक प्रकार का नाच) ॥ ३८ ॥

कथिय कन्दकर्पासं पारावारं युगन्धरम् । यूपं प्रप्रीषपात्रोवे यूपं चमसचिक्कसो ॥ ३९ ॥

रियम् (घोंद की लगाम) । कन्दम् (सूरन, कमल की जड़ आदि) । कर्पासम् (मती कपड़ा) । पारावारम् (तगुद, नदी का इमवार और उसवार का तट) । युगन्धरम् (हजर) यूपम् (चक्र का आभूषण) । प्रप्रीषम् (प्रेम की कृपणा या कुरोणा) पात्रोवम् (चक्र का पात्र विशेष) । यूपम् (नौका) । चमसम् नियसम् (पात्रविशेष) ॥ ३९ ॥

अधर्चदी पृतादीनां पुंस्त्वाद्यवैदिकं ध्रुवम् । तत्रोक्तमिह लोकेऽपि नष्टोदस्त्यस्त शेषवत् ३६

हो जाते हैं । जैसे—इन्द्र इन्द्राणी । मनुजः मानुषी । मल्लघादि शब्द स्त्रीपुंलिङ्ग दोनों होते हैं । मल्लकः (बेल फूल) स्त्रीलिङ्ग न मलिङ्ग ॥ ३७ ॥  
ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको भाटलिर्मनु । मूपा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शटी कटी कुटी ३८

ऊर्मिः (लहर) । वराटकः (कौड़ी) । स्त्रीलिङ्ग में—वराटिका । स्वाति (नक्षत्रविशेष) । वर्णकः (चन्दन) । भाटलि (नोरवावृक्षविशेष) । मनुः (स्वात्मन् आदि चौदह मनु अवतार मन्त्र) । मूपा (मोना आदि गलानि की परिना) । सृपाटी (पांशुविशेष) । कर्कन्धूः (मेर) । शटी (उशी) । शटी (मादा) । कटी (शरीर का अङ्ग) । कुटी (गली का बना घर) ॥ ३८ ॥

(इति आपुनशेषप्रसङ्गः)  
स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः पञ्चविधः पुंश्च ।

आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुलि नश्च लुप् ।  
त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितत्त्वं च त्रितदयपि ४१

जहाँ आवन्त और अन्नन्त शब्द उत्तरपद में हों, ऐसा द्विगु समास पुल्लिङ्ग न होकर स्त्री अथवा नपुंसकलिङ्ग होता है । अन्नन्त उत्तर पद का अन्तिम नकार लुप्त भी हो जाता है । आवन्तोत्तर पद का उदाहरण जैसे—तिस्रः खट्वाः समाहता त्रिखट्वम् । त्रिखट्वी च । अन्नन्तोत्तर पद का उदाहरण जैसे—त्रयस्तक्षाण समाहतात्रितत्त्वं । त्रितत्त्वी च । यहाँ तत्त्वं शब्द का अन्तिम नकार लुप्त है ॥४१॥

(इति स्त्रीनपुंसकसंग्रहः)

त्रिषु पात्रो पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ ।

पात्र पत्ता, राजा का मंत्री, वर्तन शब्द से डाडिम शब्द पर्यन्त सभी शब्द पुं-स्त्री-नपुंसक तीनों लिङ्गहोंगे । जैसे—पात्री, पात्रं, पात्रम् आदि । इसी तरह, पुटी, पुटा, पुटम् । वाटी, वाटः ( रास्ता, वरण किया हुआ ) वाटम् । पेटी, पेटः, पेटम् (बेत या बोंस का बना पिटारा) । कुवली (बैर) कुवलः, कुवलम् । दाडिमी, दाडिमः ( अनार ) दाडिमम् ।

(इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः)

परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ४२

उभयपद प्रधान इतरेतर द्वन्द्व तथा तत्पुरुष 'समास में अग्रिम पद जिस लिङ्ग में हो उस शब्द का वही लिङ्ग मानना चाहिए । द्वन्द्व समास में जैसे—कुक्कुटमयूर्याविमे । मयूरी कुक्कुटाविमौ । तत्पुरुष समास में जैसे—वान्येनार्यो धान्यार्थः । सर्पाद्धीर्तिः सर्पभीतिः । सर्पभयम् । वाप्यश्वः आदि ॥४२॥

अर्थान्ता प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वा परोपमा ।

तद्वितार्थो द्विगु सख्यासर्वनामतदन्तका ४३

जिनके अन्त में 'अर्थ' शब्द हो, वे सभी शब्द परगामी शब्द के लिङ्ग विशेष्यालिंगवाले हो जायेंगे । जैसे—द्विजायाय सूपः । द्विजार्था यवागू । द्विजार्थ पयः । प्रादि उपसर्ग, अल, प्राप्त और आपन्न शब्द

पूर्व में हों वे सभी शब्द पर शब्द के लिङ्ग की तरह हो जाते हैं । प्रादि पूर्ववाले शब्द जैसे—अतिक्रान्तो मालामतिमालो हरः । अतिक्रान्ता मालामतिमालेयम् । अतिमालमिदम् । अवकुष्टः कोकिलया अवकोकिलः । अलपूर्व वाला शब्द जैसे अल कुमार्यै इत्यलकुमारिरयम् । अलकुमारिरयम् । अलकुमारि इदम् । प्राप्तजीविको द्विजः । प्राप्तजीविका स्त्री । प्राप्तजीविकमिदम् । इसी तरह आपन्नजीविक आदि । तद्वितार्थ द्विगु भी परवल्लिङ्ग होता है । जैसे—पचकपालः पुरोडाशः । पचकपाल हविः । सभी संख्यावाचक, सर्वनाम सङ्गक तथा जिनके अन्त में सर्वनाम सङ्गक शब्द हो, वे शब्द परवल्लिङ्ग होते हैं । संख्यावाची जैसे—एकः पुमान् । एक कुलम् । एका स्त्री । द्वौ पुमासौ । द्वे स्त्रियौ कुले च । त्रय पुरुषाः । तिस्रः स्त्रियः । स्त्रीणि कुलानि । सर्वनाम जैसे—सर्वो देशः । सर्वा जातिः । सर्व जलम् । जिनके अन्त में संख्यावाचक शब्द हैं—ऊनत्रय, ऊनतिस्र, ऊनस्त्रीणि । सर्वनामान्तक शब्द जैसे—परमसर्वं, परमसर्वा, परमसर्वम् ॥४३॥ बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् ।

गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ४४

दिग्वाचक नाम से भिन्न बहुव्रीहि अन्य लिङ्ग का हो जाता है । इसके उदाहरण की कल्पना स्वयं कर लीजिए । जैसे—वृद्धा भार्या यस्य स वृद्धभार्यः बहुधनः । बहुधनम् । बहुधना इत्यादि । यदि इस श्लोक में 'अदिङ्नाम्नाम्' यह वाक्य न रखते तो 'दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दिक् दक्षिणपूर्वी' यहाँ की बहुव्रीहि में अन्यलिङ्गता हो जाती । वास्तव में यहाँ परवल्लिङ्गता होती है । गुणयोग, द्रव्ययोग या क्रियायोग से जो विशेषण होता है, वह जब जिस धर्मा में प्रयुक्त होता है तो धर्मा का ही लिङ्ग उस विशेषण का भी हो जाता है । गुणयोग से जैसे—गन्धवती पृथिवी । गन्धवानश्म । गन्धवत्कुसुमम् । द्रव्ययोग से जैसे—दण्डिनी स्त्री । क्रियायोग से जैसे—पाचिका स्त्री ॥४४॥

॥ श्रीः ॥  
अथ मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण  
शब्दानुक्रमणिका

शब्दः	पृष्ठे	दोके	शब्दः	पृष्ठे	दोके	शब्दः	पृष्ठे	दोके
अ	२९१	११	अक्षिष्टक	१८०	२८	अन्नुवात	{ १९	१०
अं	२१३	८९	अक्षिगत	२३४	४५		{ २३३	१८
अनु	१७	३३	अक्षीय	{ ७२	३१	अप्र	{ २३७	१८
अनुक	१५१	११५	अक्षीय	{ २०३	४१		{ २३८	१८३
अंशुमती	९३	११५	अक्षीय	७२	२९	अप्रज	१२९	३३
अंशुमता	९३	११३	अक्षीयिणी	१८८	८१	अप्रजम्बु	११८	४
अंस	१४३	८८	अक्षय	२३७	३५	अप्रज मर	१८६	४२
अंसुल	१३४	४४	अक्षय	५०	२०	अप्रजम्	{ २८१	२८५
अन्ति	१६४	३०	अक्षय	२३७	३५		{ २९०	४
अन्त	२३	२३	अक्षय	२५८	१९	अप्रजाल	१३७	३४
अन्ति	१४०	४१	अक्षय	१३३	१०	अक्षय	{ १३९	३३
अक्षयि	२५५	३९	अक्षयकार	१३५	५७		{ २३३	४८
अक्षय	४५	१	अक्षय	९६	५	अक्षय	२३७	५५
अक्षयमै	२६४	२६	अक्षय	१५	२५	अक्षयिनि	१३३	३३
	{ २८	५८	अक्षय	४८	३५	अक्षय	१८३	३३
अक्ष	{ २३५	८३	अक्षय	३०	२	अक्षय	३३७	५६
	{ २८२	४३	अक्षय	{ १५३	३३३	अक्ष	{ ५९	५३
	{ २९५	४५	अक्षय	{ १५३	३३३		{ ११५	५३
अक्षय	२०५	४३	अक्षय	{ ८०	३३	अक्षयमै	१६५	२८
अक्षयक	१७३	५	अक्षय	१६३	३३	अक्षय	१०८	३३
			अक्षय	५	३३		१३	३३



॥ श्रीः ॥

अथ मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

शब्दः	पृष्ठे	दंडोके	शब्दः	पृष्ठे	दंडोके	शब्दः	पृष्ठे	दंडोके
अ	२९१	११	अक्षिष्टक	१८०	३८	अम्युत्सवात्	{ १९ २९३	{ १० १८
अंश	२१३	८९	अक्षिगत	२३७	४५	अम	{ २३३ २३८	{ ५८ १८३
अंशु	१७	३३	अक्षीय	{ ७२ २०३	{ ३१ ४१	अमत्र	१२९	४३
अंशुक	१५१	११५	अक्षोर	३२	२९	अममन्त्रम्	१२८	४
अंशुमती	९३	११५	अक्षोदिणो	१८८	८१	अमन मर	१८९	३२
अंशुमत्कटा	९३	११३	अमण्ड	२३७	५५	अम म्	{ १८३ २९०	{ २४५ ७
अंश	१४३	८८	अमरात	५०	२०	अमनीय	१३७	५४
अमण्ड	१३०	४४	अमिष्ट	२३७	५५	अमिष	{ १२९ २३७	{ ८३ १८
अमणि	१६४	३०	अम	२५८	१२	अमय	२३०	१८८
अमम्	२३	३३	अमद	१३३	५०	अमिदिधि	१२४	२३
अमि	१४७	७१	अमदंकर	१३५	५३	अमिना	१३३	४७
अमराणि	२९५	३९	अमम	६९	५	अमि	२३७	५४
अमृपार	४७	३	अमराय	१५	७०	अमि	२३७	५४
अमृत्पुष्पकम्	२३५	२६	अमाध	८८	१५	अमि	२३७	५४
अमृ	{ ३८ २३२ २८२ २९५	{ ५८ ८६ ४३ ४७	अमा	६०	५	अमि	{ २३७ २९५	{ ५४ ५४
अमृत्	२०५	४७	अमृद	{ १५३ १५३ ६०	{ १५३ १५३ ६०	अममन्त्रम्	१२९	४३
अमृदंकर	१०३	५	अमृपा	१६३	४३	अमृपा	१६८	५४
अमृपेदि	२९५	४६	अमृ	९	५३	अमृ	{ १६८ २९३	{ ५४ ५४

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
अंगना	{ १२ ११९	५ ३	अजस्र	१०	६९	अणु	{ २९९ २३७	२० ६२
अंगविक्षेप	३७	१६	अजहा	८७	८६	अण्ड	११८	३७
अंगसंस्कार	१५२	१२१	अजा	२१०	७६	अण्डकोश	१४२	७६
अंगहार	३७	१६	अजाजी	२०३	३६	अण्डज	{ ४८ ११७ २३५	१७ ३३ ५१
अंगार	२०२	३०	अजाजीव	२१९	११	अतट	६४	४
अंगारक	१६	२५	अजित	२६३	६१	अतर्कित	२९०	७
अंगारधानिका	२०१	२९	अजिन	१६८	४७	अतलरूपार्श	४८	१५
अंगारवल्लरी	७६	४८	अजिनपत्रा	११६	२६	अतसी	२९९	२०
अंगारवल्लरी	८७	९०	अजिनयोनि	११०	८	अति	{ २८७ २८९ २९०	२४० २ ५
अंगारवाकटी	२०१	२९	अजिर	{ ६१ २७८	१३ १८१	अतिक्रम	{ २५४ २७४	३३ १५०
अंगीकार	२५	५	अजिह्वा	२३८	७२	अतिचरा	१०२	१४६
अंगीकृत	२४६	१०८	अजिह्वाग	१९०	८६	अतिच्छन्न	१०७	१६७
अंगुलीमान	२१२	८५	अज्जुका	३६	११	अतिच्छन्ना	१०३	१५२
अंगुलिमुद्रा	१४६	१०८	अज्जुटा	९७	१२७	अतिजव	१८६	७३
अंगुली	१४३	८२	अज्ज	{ २३३ २३५	३८ ४८	अतिथि	१६६	३४
अंगुलीयक	१४९	१०७	अज्ञान	२५	७	अतिनिर्हारिन्	२६	१०
अंगुष्ठ	१४३	८२	अभिचित	२४४	९८	अतिनु	४७	१४
अघ्ननामक	६७	१२	अभिन	१२	३	अतिपथिन्	५८	१६
अघ्नपर्णिका	८८	९२	अभिन	१२	३	अतिपात	{ १६६ २५४	३७ ३३
अचण्डी	२०९	७०	अंजनकेशी	९८	१३०	अतिप्रसिद्ध	२८३	२१८
अचल	६३	१	अंजनावती	१२	५	अतिमात्र	१०	७०
अचला	५५	२	अंजलि	१४४	८५	अतिमुक्त	८६	७६
अचिक्कण	२८४	२२५	अंजसा	{ २८९ २८७	१२ २	अतिमुक्तक	७०	२३
अच्छ	४७	१४	अटनी	१८९	८४	अतिरिक्त	२३९	७५
अच्छमल्ल	१०९	४	अटरूप	९०	१०३	अतिवक्तृ	२३२	३५
अच्युत	४	१९	अटवी	६५	१	अतिवाद	३०	१४
अच्युताग्रज	४	२४	अटा	१६६	३६	अतिविषा	८९	९९
अज	{ २१० २५९	७६ ३०	अट्ट	{ ६१ २७२	१२ १३१	अतिवेल	१०	७०
अजगन्धिका	१००	१३९	अट्ट्या	१६६	३६	अतिशक्तिता	१९३	१०२
अजगर	४३	५	अणक	२३६	५४	अतिशय	{ १० २४९	६९ ११
अजगव	६	३७	अणव्य	१९७	७			
अजन्य	१९४	१०९	अणि	१८४	५६			
अजमोदा	१०२	१४५	अणिमन्	६	३८			
अजश्रृंगी	९५	११९	अणीयस	२३७	६२			





शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
अनीक {	१८७	७८	अनुवर्तन	१७५	१२	अन्तर्वेशिक	१७४	८
	१९३	१०४	अनुवाक	२९८	१७	अन्तावसायिन्	२१९	१०
अनीकरथ	१७३	६	अनुशाय	२७४	१४७	अन्तिक	२३८	६७
अनीकिनी {	१८७	७८	अनुष्ण	२२०	१८	अन्तिकतम	२३८	६८
	१८८	८१	अनुहार	२५३	१७	अन्तिका	२०१	२९
अनु	२८७	२४७	अनूक	२५७	१३	अन्तेवासिन् {	१६०	११
अनूक	२३०	२३	अनूचान	१६०	१०		२२०	२०
अनूकरूपा	१७	१८	अनूनक	२३७	६५	अन्त्य	२४०	८१
अनूकर्ष	१८४	५७	अनूप	५७	१०	अन्त्र	१३८	६६
अनूकल्प	१६७	४०	अनूरु	१७	३२	अन्दुक	१८१	४१
अनुकामीन	१८७	७६	अनृजु	२३५	४६	अन्ध {	१३६	६१
अनुकार	२५०	१७	अनृत	{ ३२	२१		२६८	१०२
अनुक्रम	१६६	३७		{ १९६	२	अन्धकरिपु	६	३६
अनुक्रोश	३७	१८	अनेकप	१७९	३४	अन्धकार	४२	३
अनुग	२३९	७८	अनेहस्	१७	१	अन्धतमस	४३	३
अनुग्रह	२५१	१३	अनोक्त	६६	५	अन्धस्	२०५	४८
अनुवर	१८६	७१	अन्त {	१९५	११६	अन्धु	५०	२६
अनुज	१२९	४३		{ २४०	८१	अन्न {	२०५	४८
अनुजीविन्	१७४	९	अन्तःपुर	६१	११		२४६	१११
अनुतपण	२२५	४३	अन्तक	९	४२	अन्य	२४०	८२
अनुताप	४०	२५	अन्तर	२७९	१८६	अन्यतर	२४०	८२
अनुत्तम	२३६	५७	अन्तरा	२९०	१०	अन्वक्ष	२३९	७८
अनुत्तर	२७९	१८९	अन्तराभवसरव	२७२	१३३	अन्वक्	२३९	७८
अनुनय	२९३	१८	अन्तराय	२५१	१९	अन्वय	१५८	१
अनुपद	२३९	७८	अन्तराल	१२	६	अन्ववाय	१५८	१
अनुपदीना	२२२	३०	अन्तरिक्ष	११	१	अन्वाहार्य	१६५	३१
अनुपमा	१२	४	अन्तरीप	४६	८	अन्विष्ट	२४५	१०५
अनुप्लव	१८६	७१	अन्तरीय	१५१	११७	अन्वेषणा	१६५	३२
अनुबन्ध	२६८	९८	अन्तरे	२९०	१०	अन्वेषित	२४५	१०५
अनुबोध	१५२	१२२	अन्तरेण {	२८९	३	अप् ( आप )	४५	३
अनुभव	२५३	२७		{ २९०	१०	अपकारगिर्	३०	१४
अनुभाव {	३८	२१	अन्तर्गत	२४१	८६	अपक्रम	१९४	१११
	२८२	२०८	अन्तर्धा	१४	१२	अपघन	१४०	७०
अनुमति	१९	८	अन्तर्धि	१४	१२	अपचय	२५०	१६
अनुयोग	३०	१०	अन्तर्द्वार	६१	१४	अपचायित	२४५	११०
अनुरोध	१७५	१२	अन्तर्मनस्	२२७	८	अपक्षित	२४५	१०१
अनुलाप	३१	१६	अन्तर्वत्नी	१२४	२२	अपचिति {	१६६	३५
अनुलेपन	३००	२३	अन्तर्वाणि	२२७	६		२६४	६७



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
अलि	११२	१४	अवदान	२४७	३	अववाद	१७७	२५
अलिक	११६	२९	अवदाह	१०७	१६५	अवश्यम्	२९२	१६
अलिन्	१४६	९२	अवदारण	१९८	१२	अवश्याय	१४	१८
अलिञ्जर	११६	२९	अवदीर्ण	२४२	८९	अवष्टब्ध	२६८	१०४
अलिन्द	२०२	३१	अवद्य	२३६	५४	अवसर	२५२	२४
अलीक	६१	१२	अवधारण	२७७	१७७	अवसान	२५४	३८
अल्प	२५७	१२	अवधि	२६८	९९	अवसित	५९	४
अल्पतनु	२३७	६१	अवध्वस्त	२४३	९४	अवसित	२४४	९८
अल्पमारिष	१३१	४८	अवन	२४७	४	अवसित	२४६	१०८
अल्पसरस्	९८	१३६	अवनत	२४७	४	अवसर	१३९	६७
अल्पसरस्	५०	२८	अवनाट	२३८	७०	अवसर	२७६	१६७
अल्पिष्ठ	२३७	६२	अवनाय	१३०	४५	अवस्था	२३	२९
अल्पीयस्	२३७	६२	अवनाय	२५३	२७	अवहार	४९	२१
अवकर	६२	१८	अवनि	५५	३	अवहित्था	४१	३४
अवकीर्णिन्	१७१	५४	अवन्तिसोम	२०३	३९	अवहेलन	३९	२३
अवकृष्ट	२३३	३९	अवन्ध्य	६६	६	अवाक्	२३२	३३
अवकेशिन्	६६	७	अवभृथ	१६४	२७	अवाक्	२२८	१३
अवक्रय	२११	७९	अवभृथ	१६४	२७	अवाक्पुष्पी	१०३	१५२
अवगणित	२४५	१०६	अवभृथ	१३०	४५	अवाग्र	२३८	७०
अवगत	२४६	१०८	अवम	२३६	५४	अवाची	१२	१
अवगीत	२४३	९३	अवमत	२४५	१०६	अवाच्य	३२	२१
अवगीत	२६५	७९	अवमर्द	१९४	१०९	अवार	४६	८
अवग्रह	१३	११	अवमानना	३९	२३	अवासस्	२३३	३९
अवग्रह	१८०	३८	अवमानित	२४५	१०३	अवि	१२४	२०
अवग्राह	१३	११	अवयव	१४०	७०	अवि	२८२	२०६
अवचूर्णित	२४३	९४	अवर	१८०	४०	अविग्र	८१	६७
अवज्ञा	३९	२३	अवरज	१२९	४३	अवित	२४५	१०६
अवज्ञात	२४५	१०६	अवरति	२५४	३८	अविद्या	२५	७
अवट	४२	२	अवरवर्ण	२१७	१	अविनीत	२३०	२३
अवटीट	१३०	४५	अवरीण	२४३	९४	अविरत	१०	६९
अवटु	१४५	८८	अवरोध	६१	१२	अविरत	१०	६९
अवतंस	२८४	२२७	अवरोधन	६१	११	अविलम्बित	१०	६८
अवतमस	४३	३	अवरोह	६७	११	अविलम्बित	२४०	८३
अवतोका	२०९	६९	अवर्ण	३०	१३	अविस्पष्ट	३२	२१
अवदश	२२४	४०	अवलक्ष	२६	१३	अवीचि	४४	१
अवदात	२६	१३	अवलम्ब	१४३	७९	अवीरा	१२२	११
अवदात	२६६	८०	अवलम्बित	२६८	१०४	अवेक्षा	२५३	२८
			अवलम्बित	८८	९५	अव्यक्त	२६३	६२

[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके
आकीर्ण	२४१	८५	आजक	२११	७७	आत्रेयी	१२४	२०
आकुल	२३८	७२	आजानेय	१८१	४४	आथर्वण	२५५	४३
आकृति	२७६	१६२	आजि	१९३	१०६	आदर्श	१५७	१४०
आक्रन्द	२६७	९०	आजि	२५९	३२	आदि	२४०	८०
आक्रीड	६५	३	आजीव	१९५	१	आदिकारण	२३	२८
आक्रोश	३०	१५	आजू	४५	३	आदितेय	३	८
आक्रोशन	२४७	६	आशा	१७८	२६	आदित्य	३	८
आक्षारणा	३०	१५	आश्रय	२०६	५२	आदित्य	३	१०
आक्षारित	२३४	४३	आटि	११५	२५	आदित्य	१६	२८
आक्षेप	३०	१३	आडम्बर	१९४	१०८	आदीनव	२५३	२९
आखण्डल	७	४७	आडम्बर	२७६	१६८	आहत	२६६	८५
आखु	१११	१२	आडि	११५	२५	आवेष्ट (ष्ट)	१६०	७
आखुभुज्	११०	६	आडक	२१३	८८	आद्य	२४०	८०
आखेट	२२१	२३	आडकिक	१९७	१०	आद्यमाषक	२१२	८५
आख्या	२९	८	आडकी	९८	१३०	आधून	२२९	२१
आख्यात	२४६	१०७	आडकी	२९६	७	आधार	५१	२९
आख्यायिका	२८	५	आढ्य	२२७	१०	आधि	४०	२८
आगन्तु	१६६	३४	आतङ्क	२५६	१०	आधि	२६८	९७
आगस्	१७८	२६	आतञ्जन	२७०	११५	आधूत	२४१	८७
आगस्	२८५	२२९	आततायिन्	२३४	४४	आधोरण	१८४	५९
आगू	२५	५	आतप	१७	३४	आध्यान	४०	२९
आग्नीध्र	१६२	१७	आतप	२९९	२०	आनक	३५	६
आग्रहायणिक	२०	१४	आतपत्र	१७९	३२	आनक	२५६	३
आग्रहायणी	१५	२३	आतर	४७	११	आनकदुन्दुभि	४	२३
आह	२८६	२३८	आतर	४७	११	आनत	२३८	७०
आहिक	३७	१६	आतायिन्	११४	२१	आनद	३४	४
आहिरस	१५	२४	आतिथेय	१६५	३३	आनन	१४५	८९
आचमन	१६६	३६	आतिथ्य	१६५	३३	आनन्द	२२	२५
आचाम	२०५	४९	आतुर	१३५	५८	आनन्दधु	२२	२५
आचार्य	१६०	७	आतोद्य	३४	५	आनन्दन	२४८	७
आचार्या	१२२	१४	आतगर्व	२३३	४०	आनत	२६३	६३
आचार्यानी	१२३	१५	आत्मगुप्ता	८७	८६	आनाय	४८	१६
आचित	२१३	८७	आत्मघोष	११४	२०	आनाय्य	१६३	२१
आच्छादन	१४	१३	आत्मज	११६	२७	आनाह	१३४	५५
आच्छादन	१५१	११५	आत्मन्	२३	२९	आनुपूर्वी	१६६	३७
आच्छादन	१७१	१२४	आत्मन्	२६९	१०९	आन्धसिक	२०१	२८
आच्छुरितक	४१	३४	आत्मन्	४	१६	आन्वीक्षिकी	२८	५
आच्छोदन	२२१	२३	आत्मन्	५	२६	आपव	२०५	४७
			आत्मन्मरि	२२९	२१			



शब्दः	पृष्ठे	प्रलोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
आविध	२५४	३६	आवृत्ति	१८२	४०	आहो	२८९	५
आविल	४८	१४	आषाढ	२०	१६	आहोपुरुषिका	१९२	१०१
आविस्	२९१	१२	आसक्त	१६८	४६	आह्वय	२९	७
आवुक	३६	११	आसन्न	२२७	९	आह्वान	२९	८
आवुत्त	३६	१२	आसन	१५७	१३८	इ		
आवृत्	१६६	३६	आसना	१७६	१८	इक्षु	१०६	१६३
आवृत	२४२	९०	आसना	१८०	३९	इक्षुगन्धा	८९	९८
आवेगी	९९	१३७	आसना	२५१	२१	इक्षुर	९०	१०४
आवेशन	६०	७	आसन्दी	२९६	९	इक्षुगन्धा	९२	११०
आवेशिक	१६६	३४	आसन्न	२३८	६६	इक्षुगन्धा	१०६	१६३
आशंसितृ	२३०	२७	आसव	२२४	४१	इक्षुर	९०	१०४
आशंसु	२३०	२७	आसादित	२४५	१०४	इक्षुवाकु	१०४	१५६
आशय	२५१	२०	आसार	१३	११	इंग	२३९	७४
आशर	९	६२	आसुरी	१९९	१९	इंगित	२५०	१५
आशा	१२	१	आसेचनक	२३६	५३	इंगुदी	७६	४६
आशितंगवीन	२०७	५९	आस्कन्दन	१९३	१०४	इच्छा	४०	२७
आशीविष	४३	७	आस्कन्दित	१८२	४८	इच्छावती	१२१	९
आशिस	२८४	२२७	आस्तरण	१८१	४२	इज्याशील	१६०	८
आशु	१०	६८	आस्था	२६६	८७	इट्चर	२०८	६२
आशुग	१९९	१५	आस्थान	१६१	१५	इडा	२६१	४२
आशुग	१०	६५	आस्थानी	१६१	१५	इतर	२२०	१६
आशुग	१९०	८६	आस्पद	२६७	९३	इतरेयस्	२७९	१९१
आशुग	२५८	१९	आस्फोट	८५	८०	इतरेयस्	२९३	२१
आशुगुक्षणि	९	५८	आस्फोटनी	२२३	३४	इति	२८०	२४४
आश्रय	३८	१९	आस्फोटनी	८२	७०	इतिह	१६१	१२
आश्रम	१५८	४	आस्फोटनी	९०	१०४	इतिहास	२८	४
आश्रय	१७६	१८	आस्थ	१४५	८९	इत्तरी	१२१	१०
आश्रय	२४९	११	आस्था	२५१	२१	इदानीम्	२९४	२३
आश्रयाश	९	५७	आस्रव	२५३	२९	इधमा	६८	१३
आश्रव	२५	५	आहत	३२	२१	इन	२६९	१११
आश्रव	२३०	२४	आहतलक्षण	२४१	८८	इन्दीवर	५२	३७
आश्रत	२४६	१०८	आहव	२२७	१०	इन्दीवरी	८९	१००
आहव	१८२	४८	आहव	१९६	१०५	इन्दु	१४	१३
आहवथ	६९	१८	आहवनीय	१६२	१९	इन्द्र	७	४४
आहवयुज्	२१	१७	आहार	२०७	५६	इन्द्र	१२	२
आह्विन	२१	१७	आहाव	५०	२६	इन्द्रह	७५	४५
आह्विनेय	८	५४	आह्वेय	४४	९			



[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
उत्तरीय	१५१	११८	उदपान	५०	२६	उद्वव	४२	३८
उत्तरेद्युस्	२९३	२०	उदय	६३	२	उद्धान	२०१	२९
उत्तान	४८	१५	उदर	१४२	७७	उद्धार	१९६	४
उत्तानशय	१२९	४१	उदकं	१७८	२९	उद्धृत	२४२	९०
उत्थान	२७०	११७	उद्वसित	५९	४	उद्भव	२२	३०
उत्थित	२६६	८५	उद्विषत्	२०६	५३	उद्भिज्ज	२३५	५१
उत्पत्तिवृ	२३१	२९	उदात्त	२८	४	उद्भिद्	२३५	५१
उत्पत्ति	२२	३०	उदान	१०	६७	उद्भिद्	२३५	५१
उत्पत्तिष्णु	२३१	२९	उदार	{ २२७ २७९	{ ८ १९१	उद्भ्रम	२४९	१२
उत्पन्न	२६६	८५	उदासीन	१७४	१०	उद्यत	२४९	८९
उत्पल {	{ ५२ ९६	{ ३७ १२६	उदाहार	२९	९	उद्यम	२४९	११
उत्पलधारिवा	९२	११२	उदित	२४६	१०७	उद्यान	२७०	११६
उत्पात	१९४	१०९	उद्दीची	१२	२	उद्योग	३०२	३३
उत्फुल्ल	६६	७	उदीक्ष्य {	{ ५६ ९६	{ ७ १२२	उद्ग	४९	२०
उत्स	६४	५	उदीक्ष्य {	{ ५६ ९६	{ ७ १२२	उद्गतं	१५२	१२१
उत्सर्जन	१६४	२९	उदुम्बर {	{ ७० २१४	{ २२ ९७	उद्गन्त	{ १७९ २४४	{ ३६ ९७
उत्सव {	{ ४२ २८२	{ ३८ २०८	उदुम्बरपर्णी	१०१	१४४	उद्गासन	१९४	११५
उत्सादन	१५२	१२१	उदुम्बर	२०१	२५	उद्गाह	१७१	५६
उत्साह {	{ ४० १७६	{ २९ १९	उदुम्बर	१५०	११२	उद्गेग {	{ १०८ २४९	{ १६९ १२
उत्साहन	२७०	११५	उद्गाढ	१०	७०	उद्गुरु	१११	१२
उत्साहवर्धन	३७	१८	उद्गातृ	१६२	१७	उन्नत	२३८	७०
उत्सुक	२२७	९	उद्गार	२५४	३७	उन्नतानत	२३८	६९
उत्सृष्ट	२४५	१०७	उद्गीथ	२९९	१९	उन्नद	२६६	८४
उत्सेध {	{ ६७ २६८	{ १० ९६	उद्गीर्ण	२४२	८९	उन्नय	२४९	१२
उदक्	२९४	२३	उद्ग्राह	२५४	३७	उन्नाय	२४९	१२
उदक	४५	४	उद्ग	२२	२७	उन्मत्त {	{ ८४ १३६	{ ७७ ६०
उदक्या	१२४	२१	उद्घाटन	२२२	२७	उन्मदिष्णु	२२९	२३
उद्गम	२३८	७०	उद्घात	२५२	२६	उन्मनस्	२२७	८
उद्ग	२५४	३९	उद्धान	१३८	२६	उन्माय {	{ १९४ २२१	{ ११५ २६
उद्धि	४५	१	उद्हाल	७३	३४	उन्माद {	{ ३९ २२९	{ २६ २३
उद्भि	२९	७	उद्दित	२४३	९५	उन्मादवत्	१३६	६०
उद्भ्या	२०६	५५	उद्भ्राव	१९४	१११			
उद्भ्राव	४५	१	उद्भ्रं	४२	३८			

नामः	पृष्ठे	श्लोके	नामः	पृष्ठे	श्लोके	नामः	पृष्ठे	रकोके
उपकण्ठ	२३८	१०	उपनृत्	१६३	२५	उपस्कर	२०३	३१
उपकारिका	६१	१०	उपभोग	२५१	२०	उपस्थ	१४१	७५
उपकार्या	६१	१०	उपमा	{ २२३ २२३	३६ ३६	उपस्पृश	१६६	३६
उपकुम्भिका	{ ९६ २०३	१२५ ३७	उपमानृ	२७७	१०९	उपहार	१७८	२८
उपकुम्भ्या	८८	९६	उपमान	२२३	३६	उपहार	२७८	१८३
उपक्रम	{ १६१ २५२ २७३	११३ २६ १३९	उपयन	१०१	५६	उपानु	१००	२३
उपक्षोभा	३०	१३	उपयान	१०१	५६	उपाकरण	१६७	४०
उपगण	२४६	१०९	उपरक्त	{ १९ २३४	१० ४३	उपाकृत	१३३	२५
उपगृहक	२५३	३०	उपरक्षण	१०९	३३	उपाखन	{ १६६ २५४	३७ ३३
उपग्रह	१९५	११०	उपराग	१९	९	उपादान	२५०	१३
उपमाद्य	१७८	२८	उपराम	२५४	३०	उपाधि	{ ४० २१८	१८ १९
उपाग	२५३	१९	उपरि	२७८	१८३	उपाध्याय	१२९	७
उपचरित	२४५	१०२	उपल	६४	४	उपाध्याया	१३२	१७
उपचार्य	१६२	२०	उपलब्धार्थ	२८	५	उपाध्यायाली	१६३	१५
उपचित	२४३	८९	उपलब्धि	२४	१	उपाध्यायी	{ १३३ १३३	१६ १५
उपदिष्टा	८७	८०	उपलभ	२५३	२०	उपाध्याय	२२३	३३
उपभाष	१७७	२१	उपला	२८०	१९८	उपाध्याय	१०६	२८
उपभाषा	१६३	१३	उपयन	६५	२	उपाध्याय	१०८	३८
उपलभ्य	२५०	१४	उपययन	५६	८	उपाध्याय	३०	१७
उपलभ्य	१३३	५३	उपायय	१६०	३८	उपाध्याय	१८३	१०
उपाध्याय	६५	७	उपाविधा	८९	४९	उपाध्याय	१५०	६८
उपाध्या	१०८	२८	उपाविध	१६६	५०	उपाध्याय	१९०	६३
उपाध्या	१०७	२३	उपाध्याय	२५७	३७	उपाध्याय	१६६	३५
उपाध्याय	१५७	१३०	उपाध्याय	२४६	१०९	उपाध्याय	२४७	१०३
उपाधि	{ ४० १३३	३० ८३	उपाध्याय	१५३	१३३	उपाध्याय	{ ३९ २४९	३० ९५
उपाध्याय	३५	७	उपाध्याय	{ १६३ १५४	१६ ४५	उपाध्याय	४	९०
उपाध्याय	१६०	९३	उपाध्याय	२५३	३५	उपाध्याय	१०७	१०८
उपाध्याय	५८	३०	उपाध्याय	१५३	१३३	उपाध्याय	२९	९
उपाध्याय	६६	९	उपाध्याय	२६७	३५	उपाध्याय	१९७	१
उपाध्याय	१५७	३५	उपाध्याय	२०३	३०	उपाध्याय	२९३	८३
उपाध्याय	१५७	१३०	उपाध्याय	३०	३५	उपाध्याय	८५३	२३

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
उमा {	६	३८	उषणा	८८	९७	ऊर्ध्वजानु	१३०	४७
उमापति	१९९	२०	उषर्बुध	९	५४	ऊर्ध्वजु	१३०	४७
उम्य	१९७	७	उषस्	१८	२	ऊर्मि	४६	५
उरःसूत्रिका	१४८	१०४	उषा	२९३	१८	ऊर्मिका	१४९	१०७
उरग	४३	८	उषापति	५	२८	ऊर्मिमत्	२३८	७१
उरण	२११	७६	उषित	२४४	९९	ऊप	५५	४
उरणाख्य	१०२	१४७	उष्ट्र	२१०	७६	ऊपण	२०३	३६
उरभ्र	२११	७६	उष्ण {	२१	१९	ऊपर	५५	५
उररी	२८८	२५३	उष्णरश्मि	१६	२९	ऊपवत्	५५	५
उररीकृत	२४६	१०८	उष्णिका	२०५	५०	ऊष्मागम	२१	१९
उरषछद	१८५	६४	उष्णीष	२८३	२१९	ऊह	२४	३
उरसू	१४२	७८	उष्णोपगम	२१	१९	ऊ		
उरसिल	१८७	७६	उष्मक	२१	१८	ऊक्थ	२१३	९०
उरस्य	१२५	२८	उत्त	१७	३३	ऊक्ष {	१५	२१
उरस्वत्	१८७	७६	उत्ता	२०८	६६	ऊक्ष	७८	५७
उरु	२३७	६१	ऊ			ऊक्षगन्धा	९९	१३७
उरुचूक	७७	५१	ऊत	२४५	१०१	ऊक्षगन्धिका	९२	११०
उर्धरा	५५	४	ऊधस्	२१०	७३	ऊच्	२८	३
उर्धशी	८	५५	ऊन	२०१	१२७	ऊजीष	२०२	३२
उर्वाह	१०४	१५५	ऊम्	२९२	१८	ऊजु	२३८	७२
उर्वी	५५	३	ऊररी	२८८	२५३	ऊजुरोहित	१३	१०
उरुप	६७	९	ऊरव्य	१९५	१	ऊण	१९६	३
उल्लूक {	११२	१५	ऊरी	२८८	२५३	ऊत {	३२	२२
उल्लूक	२५६	६	ऊरीकृत	२४६	१०८	ऊत	१९६	२
उल्लूखल	२०१	२५	ऊरु	१४०	७३	ऊतीया	२५४	३२
उल्लूखलक	७३	३४	ऊरुज	१९५	१	ऊतु {	२०	१३
उल्लूपिन्	४८	१८	ऊरुपर्वन्	१४०	७२	ऊतु	२६३	६१
उल्लूका	२९६	८	ऊर्ज	२१	१८	ऊतुमती	१२४	२१
उल्लुमुक	२०२	३०	ऊर्जस्वल	१८७	७५	ऊते	२८९	३
उल्लव	१२८	३८	ऊर्जस्विन्	१८७	७५	ऊस्विज्	१६२	१७
उल्लवण	२४०	८१	ऊर्जनाम	११२	१३	ऊख	२००	२३
उल्लाघ	१३५	५७	ऊर्णा	२६२	४९	ऊदि	९२	११२
उल्लोच	१५२	१२०	ऊर्णायु {	२११	७६	ऊमु	३	८
उल्लोल	४६	६	ऊर्णायु	२१६	१०७	ऊमुक्षिन्	७	४७
उशनस्	१६	२५	ऊर्ध्वक	३४	५	ऊप्य	१११	१०
उशारि	१०७	१६४				ऊप्यकेतु	५	२६



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
क	२५६	५	कटक	{ ६४ ५	५	कण्डूरा	८७	८६
कंस	२०२	३२	कटभी	{ १४९ १०७	१०७	कण्डोल	२०१	२६
कंसाराति	४	२१	कटभरी	{ ८६ ८५	८५	कण्डोलवीणा	२२२	३२
ककुद	२६७	९१	कटाक्ष	{ १४९ ९४	९४	कत्तण	१०७	१६६
ककुग्रति	१४१	७४	कटाह	{ २९९ २१	२१	कथा	२८	६
ककुम्भ	१२	१	कटि	{ १४१ ७४	७४	कदध्वन्	५८	१६
ककुम्भ {	३५ ७६	७ ४५	कटिप्रोथ	{ १४१ ७५	७५	कदम्ब	७५	४२
(कक्कोलक)	१५४	१३०	कटी	{ ३०३ ३८	३८	कदम्बक {	११८ १९९	४० १७
कक्ष {	१४३ २८३	७९ २१८	कटु {	२६ ८६ २६०	९ ८५ ३५	कदर	७७	५०
कक्ष्या {	१८१ २७५	४२ १५७	कटुतुम्बी	{ १०४ ८६	१५६ ८५	कदर्य	२३५	४८
कङ्क	११३	१६	कटुरोहिणी	{ ८६ ८५	८५	कदली {	९३ १११	११३ ९
कङ्कटक	१८५	६४	कटफल	{ ७४ ४०	४०	कदाचित्	२८९	४
कङ्कण	१४९	१०८	कटुङ्ग	{ ७८ ५६	५६	कदुष्ण	१७	३५
कङ्कतिका	१५७	१३९	कठिञ्जर	{ ८५ ७९	७९	कटु	२७	१६
कङ्कोल	१३९	६९	कठिन	{ २३९ ७६	७६	कट्टद	२३२	३७
कङ्कोलक	१५४	१३०	कठिलक	{ १०४ १५४	१५४	कनक	२१४	९४
कङ्कु	१९९	२०	कठोर	{ २३९ ७६	७६	कनकाभ्यक्ष	१७३	७
कच	१४६	९५	कठ्ठर	{ २०० २२	२२	कनकालुका	१७९	३२
कचर	२३६	५५	कठम्ब	{ २०३ ३५	३५	कनकाह्वय	८४	७७
कचित्	२९१	१४	कठार	{ २७ १६	१६	कनिष्ठ {	१२९ २६१	४३ ४१
कच्छ {	५७ ९७	१० १२८	कण {	२३७ २६१	६२ ४५	कनिष्ठा	१४१	८२
कच्छप	४९	२१	कणा {	८८ २०३	९६ ३६	कनीनिका	१४१	९२
कच्छपी	२७२	१३१	कणिका {	८१ २९६	६६ ८	कनीयस् {	२३७ २८६	६२ २३४
कच्छुरा	८७	९२	कणिश	{ २०० २१	२१	कन्था	२९६	९
कच्छुर	१३४	५८	कण्टक	{ ३०२ ३२	३२	कन्द {	१०४ ३०३	१५७ ३५
कच्छू	१३३	५३	कण्टकारिका	{ ८८ ९३	९३	कन्दर	६४	६
कच्छुक {	४४ १८५	९ ६३	कण्टकिफल	{ ८८ ६१	६१	कन्दराल {	७५ ७२	४३ २९
कच्छुकिन्	१७४	८	कण्ट	{ १४५ १४८	८८	कन्दर्प	५	२६
कट {	१४१ १८० २०१ २६०	७४ ३७ २६ ३४	कण्टभूषा	{ १४८ ८७	१०४ ८६	कन्दली	१११	९
			कण्डुरा	{ ८७ १३३	५३	कन्दु	२०२	३०
			कण्डू	{ १३३ १३३	५३	कन्दुक	१५७	१३८
			कण्डूया	{ १३३ ५३	५३	कण्डूरा	१४४	८८

[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
कर्णजलौकम्	११२	१३	कलङ्क	१४	१७	कल्पना	१८१	४२
कर्णधार	४७	१२	कलङ्क	२५६	४	कल्पवृक्ष	८	५३
कर्णपूर	२८५	२२६	कलत्र	२७७	१७८	कल्पान्त	२२	२२
कर्णवेष्टन	१४८	१०३	कलधौत	२६५	७६	कल्मष	२२	२३
कर्णिका	१४८	१०३	कलम्ब	१९०	८७	कल्माष	२७	१७
कर्णिकार	२५७	१५	कलम्ब	२०३	३५	कल्प	१८	२
कर्णोत्थ	७९	६०	कलभ	१७९	३५	कल्प	१३४	५७
कर्णोत्थ	१८३	५२	कलम	२००	२४	कल्प	२७५	१५९
कर्णोजप	२३५	४७	कलम्बी	१०५	१५७	कल्या	३१	१८
कर्तरी	२२३	३४	कलरव	११२	१४	कल्याण	२२	२५
कर्दम	४६	९	कलल	१२८	३८	कल्लोल	४६	६
कर्पट	१५१	११५	कलविक	११३	१८	कवच	१८५	६४
कर्पट	३०२	३३	कलश	२०२	३१	कवल	२०६	५४
कर्पर	१३९	६८	कलशी	८८	९३	कवि	१६	२५
कर्परी	२१५	१०१	कलहंस	११५	२३	कवि	१५९	५
कर्पूर	१५५	१३०	कलह	१९३	१०४	कविका	१८२	४९
कर्पूर	९	६३	कला	१४	१५	कविय	३०३	३५
कर्पूर	२७	१७	कला	१९	११	कवोष्ण	१७	३५
कर्पूर	२१४	९४	कला	२८०	१९७	कव्य	१६३	२४
कर्मन्	२४६	१	कलाद	२१८	८	कशा	२२२	३१
कर्मकर	२२०	१५	कलानिधि	१४	१४	कशार्ह	२३४	४४
कर्मकर	२२९	१९	कलाप	२७१	१२९	कशिपु	२७२	१३०
कर्मकार	२२९	१९	कलाय	१९९	१६	कशेरु	२९७	१३
कर्मक्षम	२२९	१८	कलि	१९३	१०५	कशेरुका	१४०	६९
कर्मठ	२३९	१८	कलि	२८०	१९३	कसमल	१९४	१०९
कर्मण्या	२२४	३८	कलिका	६८	१६	कस्य	१८२	४७
कर्मनिदन्	१६७	४२	कलिङ्ग	८१	६७	कस्य	२२४	४०
कर्मशील	२२९	१८	कलिङ्ग	११३	१६	कस्य	२३४	४४
कर्मशूर	२२९	१८	कलिद्रुम	७८	५८	कप	२२२	३२
कर्मसचिव	१७३	४	कलिमारक	७६	४८	कपाय	२५	९
कर्मार	१०६	१६०	कलिल	२४१	८५	कपाय	२७५	१५३
कर्मेन्द्रिय	२५	८	कल्लुप	२२	२३	कष्ट	४५	४
कर्प	२१२	८६	कल्लुप	४८	१४	कष्ट	२६०	३९
कर्पक	१९६	६	कलेवर	१४०	७०	कस्तूरी	१५४	१२९
कर्पफल	७९	५८	कलक	२५७	१४	कह्लार	५२	३६
कर्प	२८४	२२१	कल्प	२३	२१	कह्ल	११४	२३
कल	३४	२	कल्प	२२	२२	काह्ल	४०	२७
कलकल	३३	२५	कल्प	१६७	४०	करियताळ	३४	४
			कल्प	१७७	२४			



सङ्ख्या	पृष्ठे	सङ्केत	सङ्ख्या	पृष्ठे	सङ्केत	सङ्ख्या	पृष्ठे	सङ्केत
आह	११४	२०	आह्वय	२२४	४०	आह्वय	२२४	१
आह्वयिनी	८९	९८	आह्वयिनी	११	८	आह्वय	११०	११
आह्वयिनी	७४	१९	आह्वय	८२	४	आह्वय (गोप्य)	११०	११
आह्वयिनी	९२	११८	आह्वय	६५	१	आह्वय	७५	७०
आह्वय	१४७	९५	आह्वय	१२१	२२	आह्वय	७२	७८
आह्वय	७४	१९	आह्वय	२१५	५०	आह्वय	८२	१
आह्वय	१०१	१५१	आह्वय	९३	१२८	आह्वय	८२	१
आह्वय	९२	१११	आह्वय	११५	५	आह्वय	८२	१
आह्वय	१३	-	आह्वय	{ ७८	१०	आह्वय	११०	१२
आह्वय	९४	११८	आह्वय	{ ७८	११०	आह्वय	७२	७०
आह्वय	७२३	-	आह्वय	१०९	१११	आह्वय	{ ७८	१११
आह्वय	१०	१०	आह्वय	{ १४	११	आह्वय	{ १०१	१५०
आह्वय	१४१	-१	आह्वय	{ २२८	-	आह्वय	{ ७८	१५०
आह्वय	१४	१०	आह्वय	७०१	-८	आह्वय	{ ७८	१५०
आह्वय	८०	८१	आह्वय	७११	-८	आह्वय	१०४	१०४
आह्वय	८०	८१	आह्वय	७११	-८	आह्वय	१०४	१०४
आह्वय	८३	१	आह्वय	७११	-८	आह्वय	१०४	१०४
आह्वय	{ ४४	१०	आह्वय	{ ११५	१२८	आह्वय	७२	७०
आह्वय	{ ११८	११	आह्वय	{ ७११	१००	आह्वय	७२	७०
आह्वय	९८	१११	आह्वय	{ ७८	-८	आह्वय	७२	७०
आह्वय	{ ७१५	१५	आह्वय	{ ७८	५०	आह्वय	७२	७०
आह्वय	{ ७२४	१८	आह्वय	{ ७८	५०	आह्वय	७२	७०
आह्वय	{ ७५९	२१	आह्वय	{ ७८	५०	आह्वय	७२	७०
आह्वय	४८	७४	आह्वय	{ ७८	५०	आह्वय	७२	७०

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
काल	{ ९ १७ २६ २८०	{ ६२ १ १४ १९३	काश्मीर	१०२	१४५	किम्	{ २८८ २९०	{ २५० ५
कालक	१३१	४९	काश्मीरजन्मन्	१५३	१२४	किमु	२९०	५
कालकण्टक	११४	२१	काश्यपि	१४	३२	किमुत	{ २८९ २९०	{ २ ५
कालकूट	४४	१०	काश्यपी	५५	२	किम्पचान	२३५	४८
कालखण्ड	१३८	६६	काष्ठ	६८	१३	किम्पुरुष	११	७४
कालधर्म	१९५	११६	काष्ठकुहाल	४७	१३९	किरण	१७	३३
कालपृष्ठ	१८९	८३	काष्ठतक्ष	२१९	९	किरात	२२०	२०
कालमेषिका	८७	९०	काष्ठा	{ १२ १९ २६१	{ १ ११ ४०	किराततिक	१०१	१४३
कालमेषिका	९१	१०९	काष्ठांशुवाहिनी	४७	११	किरि	१०९	२
कालमेषी	८८	९६	काष्ठीला	९३	११३	किरीट	१४८	१०९
कालशेय	२०६	५३	कास	१३२	५२	किर्मीर	२७	१७
कालसूत्र	४४	२	कासमर्द	२९९	१९	किल	१२८८	२५३
कालस्कन्ध	{ ७४ ८२	{ ३८ ६८	कासर	११०	४	किलास	१३२	५३
काला	{ ८८ ९१ २०३	{ ९४ १०९ ३७	कासार	५०	२८	किलासिन्	१३६	६१
कालागुरु	१५३	१२७	कासू	२६४	६६	किलिजक	२०१	२६
कालानुसार्य	{ ९६ १५३	{ १२२ १२६	किवदन्ती	२९	७	किल्बिष	{ २२ २८४	{ २३ २२३
कालायस	२१४	९८	किवारु	{ २०० २७६	{ २१ १६३	किशोर	१६८	४६
कालिका	२५७	१५	किशुक	७१	२९	किष्कु	२५६	७
कालिन्दी	५१	३२	किकीदिवि	९४	१६	किसलय	६८	१४
कालिन्दीभेदन	५	२५	किंकर	२२०	१७	कीकस	१३९	६८
काली	६	३८	किंकिणी	१५०	११०	कीचक	१०६	१६१
कालीयक	{ ८९ १५३	{ १०१ १२६	किंचित्	२९०	८	कीनाश	२८३	२१४
काव्यक	९९	१३५	किंचुलक	४९	२२	कीर	११४	२१
काव्या	२०९	७०	किजल्क	५३	४३	कीर्ति	३०	११
कावचिक	१८५	६६	किटि	१०९	२	कील	{ ९ २८०	{ ६० १९६
कावेरी	५२	३५	किट्ट	१३८	६५	कीलक	२१०	७३
काव्य	१६	२५	किण	२९९	१८	कीलाल	{ ४५ २८०	{ ३ २९९
काश	१०६	१६२	किणिही	८७	८९	कीलित	२३४	४२
काश्मरी	७३	३५	किण्व	२२४	४२	कीश	१०९	३
काश्मर्य	७३	३६	कितव	{ ८४ २२५	{ ७७ ४४	क	{ ५५ २८६	{ ३ २३९
			किन्नर	{ ३ ११	{ ११ ७४	कुकर	१३१	४८
			किन्नरेश	११	७२	कुन्दर	१४१	७५

पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
२८१	२०२	कुट्टमल	३९	१६	कुत्त	१३१	४८
११३	१७	कुट्ट	५२	४	कुत्त	७	४३
११४	३५	कुत्त	१२५	११८	कुत्त	३६	१२
९८	१३०	कुत्त	२५९	२०	कुत्त	७०	२५
२२१	२१	कुत्त	९७	१२८	कुत्त	८३	३३
१४२	७७	कुत्त	१३१	४८	कुत्त	१२१	८
२२९	२१	कुत्त	२२८	१७	कुत्त	१२	३
१०३	१२३	कुत्त	१२७	३३	कुत्त	५२	३७
१४२	४७	कुत्त	२०२	३१	कुत्त	७६	२
१५५	१३२	कुत्त	१४८	१०३	कुत्त	१४	१३
२३२	३७	कुत्त	४३	७	कुत्त	१२	१०
१४२	७७	कुत्त	१६८	३६	कुत्त	५३	३२
२३८	७१	कुत्त	१६५	३१	कुत्त	५६	९
१६	२५	कुत्त	२७२	१३२	कुत्त	१३	३८
६५	८	कुत्त	४१	३१	कुत्त	१६२	१८
२५९	३१	कुत्त	२०२	३३	कुत्त	३३	३६
१३९	३८	कुत्त	२०२	३३	कुत्त	१८०	३७
२३६	५९	कुत्त	४१	३१	कुत्त	३७२	१३३
६३	२०	कुत्त	३०	१३	कुत्त	३३८	९
२०३	१६	कुत्त	२३६	५६	कुत्त	१५	५७
३६	५	कुत्त	५९	१३६	कुत्त	३८	३८
२०३	३०	कुत्त	१८१	७०	कुत्त	७९	३७
६५८	१३	कुत्त	४०	७८	कुत्त	४२	५१
८१	६६	कुत्त	२३६	१०८	कुत्त	३१०	८
४८	५७	कुत्त	८७	९३	कुत्त	३९९	१८
५८	१३३	कुत्त	१३१	५३	कुत्त	५३	३६
५३५	४१	कुत्त	१८६	५७	कुत्त	५७	३६
६०	६	कुत्त	८३	८३	कुत्त	५३	३७
२०३	३१	कुत्त	९०	१३३	कुत्त	३३०	३८
५९८	११	कुत्त	५९९	३६	कुत्त	३५०	३९
१३०	८	कुत्त	९५	१९९	कुत्त	५९९	४०
१३७	१२	कुत्त	९०	१९९	कुत्त	५९९	४०
३०३	३२	कुत्त	५३६	५७	कुत्त	३३५	४१
१३७	८०	कुत्त	५३३	७६	कुत्त	३५०	४२
३६९	५६	कुत्त	९३	७१	कुत्त	३५५	४३
८९	४८	कुत्त	३५	८	कुत्त	३५५	४४
५९८	२७	कुत्त	५५	३५५	कुत्त	३५५	४५
५३६	५६	कुत्त	५५	५५	कुत्त	५५	४६

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
कुलपालिका	१२१	७	कुसृति	४०	३०	कृतहस्त	१८६	६८
कुलश्रेष्ठिन्	२१८	५	कुस्तुम्बुरु	२०३	३८	कृतान्त	९	६१
कुलसंभव	१५८	२	कुहना	१७०	५३	कृतान्त	२६४	६४
कुलस्त्री	१२१	७	कुहर	४२	१	कृताभिषेका	१२०	५
कुलाय	११८	३७	कुहू	१९	९	कृतिन्	१५९	६
कुलाली	२१८	६	कुकुद	२२८	१४	कृतिन्	२२६	४
कुलाली	२१५	१०२	कुकुद	६४	४	कृत्	२४५	१०३
कुलिश	८	५०	कूट	११९	४२	कृत्ति	१६८	४७
कुली	८८	९४	कूट	२६०	३७	कृत्तिवासस्	६	३३
कुलीन	१५८	३	कूटयन्त्र	२११	२६	कृत्या	२७५	१५८
कुलीर	४९	२१	कूटशालमलि	७६	४७	कृत्रिमधूपक	१५४	१२८
कुलमाष	१९९	१८	कूटस्थ	२३९	७३	कृस्त्र	२३७	६५
कुलमाष	२९९	२१	कूप	५०	२६	कृपण	२३५	४८
कुलमाषाभिपुत	२०३	३९	कूप	४६	१०	कृपा	३७	१८
कुल्य	१३९	६८	कूपक	४७	१२	कृपाण	१९०	८९
कुल्या	५२	३४	कूपक	१४१	७५	कृपाणी	२२३	३४
कुवल	७३	३६	कूघर	१८४	५७	कृपालु	२२८	१५
कुवल्य	५२	३७	कूचं	१४६	९२	कृपीटयोनि	९	५६
कुवाद	२३२	३७	कूचंशीर्षं	१०१	१४२	कृमि (क्रिमि)	११२	१३
कुविन्द	२१८	६	कूर्चिका	२०४	४३	कृमिकोशोत्थ	१५०	१११
कुवेणी	४८	१६	कूर्दन	४१	३३	कृमिघ्न	९१	१०६
कुश	१०७	१६६	कूर्पर	१४३	८०	कृमिज	१५३	१२६
कुश	२८३	२१६	कूर्पासक	१५१	११८	कृश	२३७	६१
कुशल	२२	२६	कूर्म	४९	२१	कृशानु	९	५७
कुशल	२२६	४	कूल	४६	७	कृशानुरेतस्	६	३५
कुशल	२८१	२०४	कूष्माण्डक	१०४	१५५	कृशानिवन्	२१९	१२
कुशी	२१४	९९	कृक्कण	११३	१९	कृपक(कृषिक)	१९६	६
कुशीलव	२१९	१२	कृकलास	१११	१२	कृपक	१९८	१३
कुशेशय	५३	४०	कृकवाकु	११३	१७	कृषि	१९५	२
कुशेशय	९७	१२६	कृकाटिका	१४५	८८	कृषीवल	१९६	६
कुष्ठ	१३३	५४	कृच्छ्र	४५	४	कृष्ट	१९७	८
कुष्ठ	३०२	३४	कृच्छ्र	१७०	५२	कृष्टि	१९५	६
कुसीद	१९६	४	कृत	२६५	७७	कृष्ण	४	१८
कुसीदिक	१९६	५	कृतपुंख	१८६	६८	कृष्ण	२०	१२
कुसुम	६९	१७	कृतमाल	७०	२१	कृष्ण	२६	१४
कुसुमांजल	२१५	१०३	कृतमुख	२२६	४	कृष्ण	२०३	३६
कुसुमेष्टु	५	२७	कृतलक्षण	२२७	१०	कृष्णपाकफल	८१	६७
कुसुम्भ	२१६	१०६	कृतसापलिका	१२०	७	कृष्णफला	८८	९६
कुसुम्भ	२७२	१३६						

शब्दः	पृष्ठं	प्रसंगे	शब्दः	पृष्ठं	प्रसंगे	शब्दः	पृष्ठं	प्रसंगे
कृष्णमेदी	८३	८१	कैत्र	४०	३०	कौटुम्ब	१९९	११
कृष्णला	८३	९८	कैत्र	२२५	२५	कौटुम्ब	४३	११
कृष्णलोहित	२६	१६	कैत्रारक	१९८	११	कौटुम्ब	४३	३६
कृष्णरामन्	९	१३	कैत्रारिक	१०८	११	कौटुम्ब	१०९	०
कृष्णवृत्ती	७८	५५	कैत्रार्य	१९८	११	कौटुम्ब	१९४	१५२
कृष्णसार	१११	१०	कैत्र	५२	३०	कौटुम्ब	२०३	३१
कृष्णा	८८	६३	कैत्राम	१३	३४	कौटुम्ब	२०३	३१
कृष्णिका	१९९	१९	कैत्रो	२८	१५	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकर	१३१	५९	कैत्रोत्पुम्बक	५८	१३०	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	११६	३१	कैत्रपय	०५	६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकिन्	११६	३०	कैत्रिक	१८६	९६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकी	१०९	११०	कैत्र	१४६	०३	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकन	१९२	९९	कैक	११०	०	कौटुम्ब	२०३	३१
कैक	२००	११३	कैक	११५	२२	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकु	२९३	९०	कैकनद	५३	५२	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकर	२१५	००	कैकनदप्रमि	२७	१५	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकार	१९८	११	कैकिक	११५	१९	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकिवाक	५३	१३	कैकिवाक	९०	१०८	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकर	१४९	१०३	कैकर	९८	१३	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकि	५१	३२	कैकि	१३३	१३	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकि	१८१	२०३	कैकि	१८५	८८	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	१४६	९५	कैकि	१२१	९६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकापुत्राय	५६	१०२	कैकि	२६०	३८	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकावर्ज	८३	८५	कैकि	९८	१३६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैकावर्ज	१४३	९०	कैका	१५८	१६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	२	१०	कैका	२९५	१८	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	१२५	४५	कैका	१३१	०६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	१५३	५०	कैका	२९	३	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	१२५	८५	कैका	१८५	५३	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	१३०	८५	कैका	२०५	०३	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	२५	१०६	कैका	१९८	१३	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	५६	८३	कैका	४०	१६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	४०	२६	कैका	११०	४	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	८०	६५	कैका	१३३	२०	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	२१	६५	कैका	०६५	००	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	१०५	३	कैका	१३०	३५	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	०	४६	कैका	२८	१६	कौटुम्ब	२०३	३१
कैका	४४	८०	कैका	५६	१८०	कौटुम्ब	२०३	३१

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
कौलीन	२७०	११६	क्रेतव्य	२११	८१	क्षत्तृ	१८४	५९
कौलेयक	२२१	२१	क्रेय	२११	८१	क्षत्र	२१७	३
कौशिक	{ ७३ २५६	३४ १०	क्रोड	{ १०९ १४२	२ ७७	क्षत्रिय	१७१	१
कौशेय	१५०	११	क्रोध	३९	२६	क्षत्रिया	१२२	१४
कौस्तुभ	५	३०	क्रोधन	२३१	३२	क्षत्रिया	१२३	१५
क्रकच	२२३	३५	क्रोशयुग	५८	१८	क्षत्रियाणी	१२२	१४
क्रकर	{ ८४ ११३	७७ १९	क्रोष्टु	११०	५	क्षपा	१९	२
क्रतु	१६१	१३	क्रोष्टुविन्ना	८८	९३	क्षपाकर	१३	१५
क्रतुध्वंसिन्	६	३६	क्रोष्टी	९२	११०	क्षम	२७३	१४२
क्रतुभुज्	३	९	क्रौञ्च	११४	२२	क्षमा	२७३	१४२
क्रथन	१९४	११५	क्रौञ्चवारण	७	४३	क्षमितृ	२३१	३१
क्रन्दन	{ १९३ २७०	१०७ १२३	क्लम	२४९	१०	क्षमिन्	२३१	३१
क्रन्दिता	४१	३५	क्लमथ	२४९	१०	क्षन्तृ	२३१	३१
क्रम	१६७	४०	क्लिन्न	२४५	१०५	क्षय	{ २२ १३२	२२ ५१
क्रमक	{ ७५ १०९	४१ १६९	क्लिन्नाक्ष	१३६	६०	क्षय	{ १७६ २४८	१९ ७
क्रमेलक	२१०	७५	क्लिशित	२४४	९८	क्षय	{ २७४ १३२	१४५ ५२
क्रयविक्रयिक	२११	७८	क्लिष्ट	{ ३२ २४५	१९ ९८	क्षय	{ १९९ १९९	१९ १९
क्रयिक	२११	७९	क्लीतिक	९१	१०९	क्षय	{ १३२ २४४	५२ ९७
क्रय	२११	८१	क्लीतिकिका	८८	९४	क्षय	{ ३९ २४४	२४ ९७
क्रय	१६७	६३	क्लीब	{ १२८ २८२	३९ २१३	क्षय	{ ३९ २४४	२४ ९७
क्रव्याद्	९	६२	क्लेश	२५३	२९	क्षय	{ २१५ ६८	५९ १६
क्रव्याद्	९	६२	क्लोम	१३८	६५	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रायिक	२११	७९	क्वण	{ ३३ २४८	२४ ४८	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रिया	{ २४६ २७५	१ १५७	क्वणन	३३	२४	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रियावत्	२२९	१८	क्वयित	२४३	९५	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रोडा	{ ४१ ४१	३२ ३३	क्वण	३३	२४	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रु	११४	२२	क्ष	{ १९ ४२	११ ३८	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रु	३९	२६	क्षण	{ २६१ २६१	४७ ४७	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रु	४१	३५	क्षणदा	१८	४	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
क्रु	{ २३५ २३९ २७९	४७ ७६ १९०	क्षणन	१९४	११४	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
			क्षणप्रभा	१३	९	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
			क्षतज	१३७	६४	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३
			क्षतवत	१७१	५४	क्षय	{ ५५ २३४	४ ४३

[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
खेय	५१	२९	गण्डशैल	६३	६	गम्भारी	७३	३५
खेला	४१	३३	गण्डाली	१०५	१५९	गम्भीर	४८	१५
खोढ	१३१	४९	गण्डीर	१०४	१५७	गम्य	२४२	९२
ख्यात	२२७	९	गण्डूपद	४९	२२	गरल	४४	९
ख्यातगर्हण	२४३	९३	गण्डूपदी	५०	२४	गरण	२५४	३७
ख्याति	२४४	९८	गण्डूषा	२९६	१०	गरा	८२	६९
ग.			गतनासिक	१३०	४६	गरिष्ठ	२४६	११२
गगन	१२	१	गद	१३१	५१	गरी	८२	६९
गङ्गा	५१	३१	गद्य	३०२	३१	गरुड	५	३१
गङ्गाधर	६	३६	गन्त्री	१८३	५२	गरुडध्वज	४	१९
गज	१७९	३४	गन्ध	२५	७	गरुडाग्रज	१७	३२
गजता	१७९	३६	गन्धकुटी	९६	१२३	गरुत्	११७	३६
गजबन्धनी	१८२	४३	गन्धन	२७०	११५		५	३१
गजभक्ष्या	९६	१२३	गन्धनाकुली	९३	११४	गरुमत्	११७	३४
गजानन	७	४१	गन्धफली	{ ७८	५६		२६३	५७
गक्षा	६०	८		{ ८०	६४	गर्गरी	२१०	७४
गढक	४८	१७	गन्धमादन	६३	३	गर्जित	{ १२	८
गडु	२९९	१८	गन्धमूली	१०४	१५४		१८०	३६
गडुल	१३०	४८	गन्धरस	२१५	१०४	गर्त	४२	२
गण {	११८	४०		{ ३	११	गर्दभ	२११	७७
	१८८	८१	गन्धर्व	{ १११	११	गर्दमाण्ड	७५	४३
	२६१	४५		{ १८१	४४	गर्धन	२२९	२२
गणक	१७५	१४		{ २७२	१३३	गर्भ	{ १४६	३९
गणदेवता	३	१०	गन्धर्वहस्तक	७७	५०		२७२	१३५
गणनीय	२३७	६४	गन्धवह	१९	६५	गर्भक	१५६	१३५
गणरात्र	१८	६	गन्धवहा	१४५	८९	गर्भागार	६०	८
गणरूप	८५	८०	गन्धवाह	१०	६५	गर्भाशय	१२८	३८
गणहासक	९७	१२८	गन्धसार	१५१	१३१	गर्भिणी	१२४	२२
गणाधिप	७	४०	गन्धादमन्	२१५	१०२	गर्भोपघातिनी	२०९	६९
गणिका {	८४	७४	गन्धिक	२१५	१०२	गर्भुत्	१०७	१६५
	१२३	१९	गन्धिनी	९६	१२३	गर्व	३९	२२
गणिकारिका	८१	६६	गन्धोत्तमा	२२४	४०	गर्हण	३०	१३
गणित	२३७	६४	गन्धोली	११६	२७	गर्ह्य	२३६	५४
गण्य	२३७	६४	गभस्ति	१७	३३	गर्ह्यवादिन्	२३२	३७
गण्ड {	१४५	९०	गभीर	४८	१५	गल	१४४	८८
	१८०	३७	गम	१९१	९५	गलकम्बल	२०८	६३
गण्डक	११०	४	गमन	१९१	९५			
गण्डकारी	१००	१४१						





शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
गृह्यालु	२३०	२७	गोधिका	४९	२२	गोष्ठपति	२७२	१३०
गृहस्थूण	३११	३०	गोधिकात्मज	११०	६	गोष्ठी	१६१	१५
गृहागत	१६६	३४	गोधूम	१९९	१८	गोष्पद	२६७	९३
गृहाराम	६५	१	गोनर्द	९८	१३२	गोसंख्य	२०७	५७
गृहावग्रहणी	६१	१३	गोनस	४३	४	गोस्तन	१४९	१०५
गृहिन्	१५८	३	गोप	१७३	७	गोस्तनी	८९	१०७
गृह्यक	११९	४३	गोप	२०७	५७	गोस्थानक	५७	१३
गोत्रक	२२८	१६	गोपति	२७२	१३०	गौतम	३	१५
गेन्दुक	१५७	१३८	गोपरस	२०८	६२	गौधार	११०	६
गेह	५९	४	गोपानसी	२१५	१०४	गौधेय	११०	६
गैरिक	६५	८	गोपायित	६२	१५	गौधेर	११०	६
गैरेय	२५७	१२	गोपाल	२४५	१०६	गौर	२६	१३
गौरेय	२१५	१०४	गोपाल	२०७	५७	गौर	२६	१४
गो (गौ)	२०७	६०	गोपी	९२	११२	गौरव	२७९	१८८
गो (गौ)	२०८	६६	गोपी	६२	१६	गौरी	१६६	३४
गो (गौ)	२५८	२५	गोपुर	९८	१३२	गौरी	१२१	८
गोकण्टक	८९	९९	गोपुर	२७८	१८२	गोष्ठीन	५७	१३
गोकर्ण	१११	१०	गोप्यक	२२०	१७	ग्रन्थि	१०६	१६२
गोकर्ण	१४४	८३	गोमत्	२०७	५८	ग्रन्थित	२४१	८६
गोकर्णी	८६	८४	गोमय	२०५	५०	ग्रन्थिक	२१६	११६
गोकुल	२०७	५८	गोमायु	११०	५	ग्रन्थिपण	९८	१३२
गोक्षुरक	८९	९९	गोमिन्	२०७	५८	ग्रन्थिपण	७४	३७
गोचर	२५	८	गोरस	२०६	५३	ग्रन्थिल	८	७७
गोजिह्वा	९४	११९	गोर्द	१३८	६५	ग्रन्थिल	१२	२०
गोहुम्बा	१०४	१५६	गोल	२९९	२०	ग्रस्त	२४६	१११
गोण्ड	२९९	१८	गोलक	१२७	३६	ग्रस्त	१९	९
गोत्र	६३	१	गोला	२१६	१०८	ग्रह	२४८	८
गोत्र	१५८	१	गोलीढ	७४	३९	ग्रह	२८६	२३५
गोत्र	२७८	१८०	गोलीढ	८९	१०२	ग्रहणीकृज्	१३४	५५
गोत्रमिद्	७	४५	गोलीढ	१०५	१५९	ग्रहपति	१६	३०
गोत्रा	५५	३	गोलीढ	२१७	१११	ग्रहीवृ	२३०	२७
गोत्रा	२०७	६०	गोलीढ	७८	५५	ग्राम	६३	१९
गोदाहरण	१९८	१४	गोलीढ	४	१९	ग्राम	२७३	१४१
गोदुह्	२०७	५७	गोलीढ	२६७	९१	ग्रामणी	२६२	४९
गोधन	२०७	५८	गोलीढ	२०५	५०	ग्रामतक्ष	२१९	९
गोधा	१८९	८४	गोलीढ	३०३	४०	ग्रामता	२५५	४३
गोधापदी	९४	११९	गोलीढ	१५५	१३१	ग्रामाधीन	२१९	९
गोधि	१४६	९२	गोलीढ	५७	१३			



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
चतुःशाल	६०	६	चय	{ ५९	३	चाटकैर	११३	१८
चतुर	२२०	१९		{ ११८	४०	चाण्डाल	२२०	२०
चतुरङ्गुल	७०	२३	चर	{ १७५	१३	चाण्डालिका	२२२	३१
चतुरानन	४	१६		{ २३९	७४	चातक	११३	१७
चतुर्भद्र	१७१	५८	चरक	३०२	३३	चातुर्वर्ण्य	१५८	२
चतुर्भुज	४	२०	चरण	१४०	७१	चाप	१८९	८३
चतुर्वर्ग	१७१	५८	चरणायुध	११३	१७	चामर	१७९	३१
चतुष्पथ	५८	१७	चरम	२४०	८१	चामीकर	२१४	९५
चतुर्हायणी	२०९	६८	चरमक्षमाभृत्	६३	२	चान्पेय	{ ८०	६३
चत्वर	{ ६१	१३	चराचर	२३९	७४		{ ८१	६५
	{ १६२	१८	चरिणु	२३९	७४	चार	{ १७५	१३
चन	२८९	३	चरु	१६३	२२		{ २५०	१४
चन्दन	१५५	१३१	चर्चरी	२९६	१०	चारटी	१०२	१४६
	{ १४	१३	चर्चा	{ २४	२	चारण	२१९	१२
चन्द्र	{ १०२	१४६		{ १५२	१२२	चारु	२३६	५२
	{ २७८	१८२	चर्मकपा	१०१	१४३	चार्त्तिक्य	१५२	१२२
चन्द्रक	११६	३१	चर्मकार	२१८	७	चालनी	२०१	२६
चन्द्रभागा	५२	३४	चर्मन्	{ १६८	४७	चाप	११३	१६
चन्द्रमस्	१४	१३		{ १९१	९०	चिकित्सक	१३५	५७
चन्द्रवाला	९६	१२५	चर्मप्रभेदिका	२२३	३५	चिकित्सा	१३१	५०
चन्द्रशेखर	६	३२	चर्मप्रसेविका	२२३	३३	चिकुर	{ १४६	९५
(चन्द्रसंज्ञ)	१५५	१३०		{ ७६	४६		{ २३४	४६
चन्द्रहास	१९०	८९	चर्मिन्	{ १८६	७१	चिक्रण	२०४	४६
चन्द्रिका	१४	१६	चर्या	१६६	३६	चिक्रस	३०३	३५
	{ १०	६८	चर्वित	२४६	११०	चिञ्चा	७५	४३
चपल	{ २१५	९९	चल	२३९	७४	चित्	{ २४	१
	{ २३४	४६	चलदल	६९	२०		{ २८९	३
चपला	{ १३	९	चलन	२३९	७४	चिता	१९५	११७
	{ ८८	९६	चलाचल	२३९	७४	चिति	१९५	११७
चपेट	१४४	८४	चलित	{ १९२	९६	चित्त	२४	३१
चमर	१११	१०		{ २४१	८७	चित्तविभ्रम	४०	२६
चमरिक	७०	२२	चविका	८९	९८	चित्तसमुन्नति	३९	२२
चमस	३०३	३५	चव्य	८९	९८	चित्ताभोग	२४	२
चमसी	२९६	१०	चपक	२२४	८३	चित्या	१९५	११७
चमू	{ १८७	७८	चपाल	१६२	१८		{ २७	१७
	{ १८८	८१	चाक्रिक	१९२	९७	चित्र	{ ३८	१९
चमूरु	१११	९	चाक्रेरी	१००	१४०		{ २७७	१७८
चम्पक	८०	६३						

[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
जगती {	५६ २६४	६ ७१	जनन {	२३ १५८	३० १	जयन	२४९	१२
जगत्प्राण	१०	६५	जननी	१२६	२९	जयन्त	८	४९
जगर	१८५	६४	जनपद	५६	८	जयन्ती	८१	६५
जगल	२२४	४२	जनयित्री	१२६	२९	जया	८१	६५
जग्ध	२४६	१११	जनश्रुति	२९	७	जय्य	१८७	७४
जग्धि	२०६	५५	जनादन	४	१९	जठर	२३९	७६
जघन	१४१	७४	जनाश्रय	६०	९	जरण	२०३	३६
जघनेफला	८०	६१	जनि	२३	३०	जरत्	२९	४२
जघन्य {	२४० २७५	८१ १५८	जनी {	१०३ १२१	१५३ ९	जरद्रव	२०७	६१
जघन्यज {	१२९ २१७	४३ १	जनुष्	२३	३०	जरा	१२९	४१
जङ्गम	२३९	७४	जन्तु	२३	३०	जरायु	१२८	३८
जङ्गमेतर	२३९	७३	जन्तुफल	७०	२२	जरायुज	२३५	५०
जङ्घा	१४०	७२	जन्मन्	२३	३०	जल	४५	३
जङ्घाकरिक	१८७	७३	जन्मिन्	२३	३०	जलजन्तु	४९	२०
जङ्घाल	१८७	७३	जन्मिन्	२३	३०	जलधर	१३	७
जटा {	६७ १४७ २६०	११ ९७ ३८	जन्य {	१७१ १९३ २७५	५८ १०३ १५८	जलनिधि	४५	२
जटामांसी	९८	१३४	जन्यु	२३	३०	जलनिर्गम	४६	७
जटिन्	७२	३२	जप	१६९	४७	जलनीली	५३	३८
जटिला	९८	१३४	जप्य	१६६	४८	जलपुष्प	३००	२३
जठर {	१४२ २७९	७७ १८८	जपापुष्प	८४	७६	जलप्राय	५७	१०
जड {	१५ २३३	१९ १८९	जपपती	१२८	३८	जलमुच	१३	७
जडल	१३१	४९	जम्वाल	४६	९	जलन्याल	४३	५
जतु	१५३	१२५	जम्बीर {	७० ८५	२४ ७९	जलशायिन्	४	२३
जतुक	२०३	४०	जम्बु	६९	१९	जलशुक्ति	४९	२३
जतुका	११५	२६	जम्बुक {	११० २५६	५ ३	जलाधार	५०	२५
जतुकृत्	१०३	१५३	जम्बू	६९	१९	जलाशय {	५० १०७	२५ १४४
जतूका	१०३	१५३	जम्भ	७०	२४	जलोच्छ्वास	४६	१०
जत्रु	१४३	७८	जम्भमेदिन्	७	४६	जलौकस्	४९	२२
जनक	१२६	२८	जम्भल	७०	२४	जलौका	४९	२२
जमङ्गम	२२०	१९	जम्भीर	७०	२४	जम्पाक	२३२	३६
जनता	२५५	४३	जय {	८१ १९४ २४९	६६ ११० १२	जतिपत	२४६	१०७
						जघ {	१० १८७	६८ ७३
						जवन {	१८१ १८७ २५४	४५ ७३ ३८

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
वचनिका	१५२	१२०	जाल	२२०	१६	जगन्नाथ	१०	१२
वद्वतनया	५१	३१	जाल	२२८	१७	जग	१९	११०
जागरा	२५१	१३	जिवातु	२२९	२०	जग	१९१	२५
जागरितु	२३१	३०	जिह्वी	८३	९०	जग	२५२	२६
जागरूक	२३१	३२	जिह्वर	१८३	११	जग	२५३	३६
जागर्षा	२५१	१९	जिन	३	१२	जग	२५४	३७
जाद्वृत्तिक	४४	११	जिष्णु	३	१३	जग	२५५	३८
जाद्विक	१८३	३३	जिष्णु	१८३	१४	जग	२५६	३९
जात	२३	३१	जिष्णु	२३८	१५	जग	२५७	४०
जातरूप	२१३	२५	जिष्णु	२३९	१६	जग	२५८	४१
जातपेदस्	९	५६	जिष्णु	४३	८	जग	२५९	४२
जानापाया	१०३	१८	जिष्णु	१८३	२१	जग	२६०	४३
जाति	२४	३१	जिष्णु	१८३	२२	जग	२६१	४४
जाति	८३	३२	जिष्णु	१८३	२३	जग	२६२	४५
जाति	२६४	६३	जिष्णु	२६९	२४	जग	२६३	४६
जातीकोय	१५५	१३२	जिष्णु	२७३	२५	जग	२६४	४७
जातीकल	१५५	१३२	जिष्णु	३५३	२६	जग	२६५	४८
जाति	२८९	४	जिष्णु	३५३	२७	जग	२६६	४९
जानुष	२२२	२९	जिष्णु	३५३	२८	जग	२६७	५०
जाति	२०३	६३	जिष्णु	३५३	२९	जग	२६८	५१
जानु	१८०	३२	जिष्णु	३५३	३०	जग	२६९	५२
जाति	३१९	१३	जिष्णु	३५३	३१	जग	२७०	५३
जामातु	१८३	३५	जिष्णु	३५३	३२	जग	२७१	५४
जामि	२८३	१६२	जिष्णु	३५३	३३	जग	२७२	५५
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	३४	जग	२७३	५६
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	३५	जग	२७४	५७
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	३६	जग	२७५	५८
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	३७	जग	२७६	५९
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	३८	जग	२७७	६०
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	३९	जग	२७८	६१
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४०	जग	२७९	६२
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४१	जग	२८०	६३
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४२	जग	२८१	६४
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४३	जग	२८२	६५
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४४	जग	२८३	६६
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४५	जग	२८४	६७
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४६	जग	२८५	६८
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४७	जग	२८६	६९
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४८	जग	२८७	७०
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	४९	जग	२८८	७१
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५०	जग	२८९	७२
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५१	जग	२९०	७३
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५२	जग	२९१	७४
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५३	जग	२९२	७५
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५४	जग	२९३	७६
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५५	जग	२९४	७७
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५६	जग	२९५	७८
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५७	जग	२९६	७९
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५८	जग	२९७	८०
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	५९	जग	२९८	८१
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	६०	जग	२९९	८२
जामि	६९	१९	जिष्णु	३५३	६१	जग	३००	८३

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
ज्योत्स्ना	१४	१६	डिम्ब	२५०	१४	तनुत्र	१८५	६४
ज्यौतिषिक	१७५	१४	डिम्भ	११८	३८	तनू	१४०	७१
ज्यौस्त्री	१८	५	डिम्भा	२७२	१३४	तनूकृत	२४४	९९
ज्वर	९४	११८	डुण्डुभ	१२९	१४	तनूनपात्	९	५६
ज्वर	१३४	५६	डुलि	४३	५	तनूरुह	११७	३६
ज्वलन	२५४	३८	डुलि	५०	२४	तनु	१४७	९९
ज्वाल	९	६०	डुलि	५०	२४	तन्नु	२२२	२८
झा.			डुलि	५०	२४	तन्नुभ	१९९	१७
झम्झावात	१०	६६	डुलि	५०	२४	तन्नुवाय	११२	१३
झटामला	९७	१२७	डुलि	५०	२४	तन्नुवाय	२१८	६
झटिति	२८९	२	डुलि	५०	२४	तन्नु	२७८	१८२
झर	६४	५	डुलि	५०	२४	तन्नुक	१५०	११२
झर्झर	३५	८	डुलि	५०	२४	तन्नुका	८५	८२
झल्लर	२९६	१०	डुलि	५०	२४	तन्नुदी	४२	३७
झष	४८	१७	डुलि	५०	२४	तन्नुदी	२७७	१७५
झष	४८	१९	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झषा	९४	११७	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झाटल	७४	३९	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झाटलि	३०३	३८	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झावुक	७४	४०	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झिण्डी	८४	७५	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झिबिलका	१२८	२८	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झीरुका	१२८	२८	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झ.			डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झ	२२३	३४	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
झ	३०२	३३	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
टिड्डिमक	११७	३५	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
टीका	२९६	७	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
टुण्डुक	७८	५६	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
ड.			डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
डमर	२५०	१४	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
डमरु	३५	८	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
डयन	१८३	५२	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
डहु	७९	६०	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
डिण्डिम	३५	८	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९
डिण्डीर	२१५	१०५	डुलि	५०	२४	तन्नु	२०	१९



शब्दः	पृष्ठे	प्रकोष्ठे	शब्दः	पृष्ठे	प्रकोष्ठे	शब्दः	पृष्ठे	प्रकोष्ठे
तरङ्ग	४६	५	तात	१२६	२८	तिष्ठक	१०५	१५५
तरङ्गिणी	५१	३०	तान्त्रिक	१३५	१५	तिष्ठन्नाक	३०	३५
तरणि	१६	३०	तापस	१६७	४२	तिष्ठम्	१३	३५
	४७	११	तापसवत्	३६	४६	तिष्ठव	२०१	२६
तरणी	८३	०३	तापिष्ठ	८२	६८	तिष्ठिषा	३९	२१
तरपण्य	४०	११	तामरस	५३	४०	तिष्ठिषु	२३१	३३
तरज	१५८	१००	तामरुकी	९३	१२०	तिष्ठिरि	११३	३५
	२३९	७५	तामसी	१८	१	तिष्ठि	१८	१
तरका	२०५	५०	ताम्रकवल्ली	९५	१२०	तिष्ठि	३१	२६
तरस	१०	६३	ताम्रली	९५	१२०	तिष्ठिनी	३५	४३
	१२३	१०२	ताम्रक	२१४	९३	तिष्ठिनीक	२०३	१३
तरस	१३०	६३	ताम्ररुर्णा	१२	१	तिष्ठु	७४	३०
तरस्विन्	१८३	७३	ताम्रकुष्ठ	२१५	९	तिष्ठुष	१६९	६
	२३१	१२३	ताम्रभूष	११३	१३	तिष्ठि	२८	१३
तरि	४७	१०	तार	३४	२	तिष्ठिष्व	४७	६०
तद	६५	५	तारकजिह्व	१०३	११०	तिष्ठि	२८५	१०५
तदण	१२५	४२		०	४५	तिष्ठि	४३	३
तदणी	१२१	८	तारका	११	२३	तिष्ठु	१०३	३५५
तद	३४	३		१३५	९२		२९०	४
तद्विद्या	२८	५	तारा	१५	२३	तिष्ठिनी	१५०	१३०
तद्विही	४१	६५	तारुण्य	१२८	४०	तिष्ठिनी	३५	४६
तद्विनी	१४३	४३	तारु	१	२३	तिष्ठि	२५	३३
तद्विज	२०८	६५		२०४	१५५		३५१	३०
तद्वि	२०२	६४	तारुणी	२१५	१५५	तिष्ठिनी	१४	१६
तद्वि	१५१	३३	तारु	३६	१	तिष्ठि	१६०	१११
	२०४	५६		१०८	१५०		२३५	३३
तद्वि	३५३	४	तारु	१०४	१५	तिष्ठि	५६	०५
	३६५	१३		५३५	३३		३६३	९३
तद्वि	३०	५०	तारुण्य	२४८	१३६	तिष्ठि	३६०	६५
	६५६	५६	तारुणी	२६	३५०		३५५	१५३
तद्वि	१६५	७५	तारुणी	१५	३३५	तिष्ठि	३५०	३६
	६०३	६०३	तारुणी	३५०	३५५		३५५	३५५
तद्वि	२०५	१३३	तारुणी	३५५	३५५	तिष्ठि	३५५	३५५
तद्वि	२३	६५	तारुणी	३५५	३५५	तिष्ठि	३५५	३५५
तद्वि	२५५	३	तारुणी	३५५	३५५	तिष्ठि	३५५	३५५
तद्वि	३५३	२६	तारुणी	३५५	३५५	तिष्ठि	३५५	३५५
तद्वि	३५३	३५	तारुणी	३५५	३५५	तिष्ठि	३५५	३५५
तद्वि	३५३	३५	तारुणी	३५५	३५५	तिष्ठि	३५५	३५५

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
तिष्ठ	{ १५ २७४	२२ १४६	तुरङ्गम	१४८	४२	तृप्त	२४५	१०३
तिष्ठ्यफला	७८	५७	तुरङ्गवदन	११	७४	तृप्ति	२०७	५६
तीक्ष्ण	{ १७ २१४ २६२	३५ ९८ ५३	तु(प)रायण	२४७	२	तृप्	{ ४० २०६	२७ ५५
तीक्ष्णगन्धक	७२	३१	तुरासाह	७	४७	तृष्णक	२२९	२२
तीर	४६	७	तुरस्क	१५४	१२८	तृष्णा	२६२	५१
तीर्थ	२६६	८६	तुला	२१३	८७	तेजन	१०६	१६१
तोत्र	१०	७०	तुलाकोटी	१४९	१०९	तेजनक	१०६	१६२
तीव्रवेदना	४५	३	तुलामान	२१२	८५	तेजनी	८६	८३
तु	{ २८७ २९० २९२	२४१ ५ १५	तुल्य	२२३	३७	तेजस्	{ १३६ २८५	६२ २३३
तुङ्ग	{ ७० २३८	२५ ७०	तुल्यपान	२०६	५५	तेजित	२४२	९१
तुङ्गी	१००	१३९	तुवर	२५	९	तेम	२५३	२९
तुङ्ग	२३६	५६	तुष	{ ७९ २००	५८ २२	तेमन	२०४	४४
तुण्ड	१४५	८९	तुषार	{ १५ १४	१९ १८	तैजसावर्तिनी	२२३	३३
तुण्डी	७	४३	तुषित	३	१०	तैत्तिर	११९	४३
तुण्डिकेरी	{ ९३ १००	११६ १३९	तुद्दिन	१४	१८	तैलपणिक	१५५	१३१
तुस्था	{ ८८ ९६	९५ १२५	तूण	१२०	८८	तैलपायिका	११५	२६
तुस्थाञ्जन	२१५	१०१	तूणी	१९०	८८	तैलीन	१९७	७
तुन्द	१४२	७७	तूणीर	१९०	८८	तैप	२०	१५
तुन्दपरिमृज	२२०	१८	तूर्ण	१०	६८	तोक	१२५	२८
तुन्दिन्	१३०	४४	तूल	{ ७२ २१६	४२ १०६	तोकक	११३	१७
तुन्दिभ	{ १३० १३६	४४ ६१	तूलिका	२२३	३३	तोकम	१९९	१६
तुन्दिक	{ १३० १३६	४४ ६१	तूवर	२७६	१६५	तोटक	३०१	३०
तुष	९७	१२७	तूष्णोशील	२३३	३९	तोत्र	{ १८० १९८	४१ १२
तुषवाय	२१८	६	तूष्णीक	२३३	३९	तोदन	१९८	१२
तुव (य) रिका	९८	१३१	तूष्णीकाम्	२९०	९	तोमर	१९१	९३
तुमुल	१९३	१०६	तूष्णीम्	२९०	९	तोय	४५	४
तुम्बी	१०४	१५६	तृण	१०८	१६७	तोयपिप्पली	९२	१११
तुरग	१८१	४३	तृणहुम	१०८	१७	तोरण	६२	१६
तुरङ्ग	१८१	४३	तृणधान्य	२०१	८५	तौर्यत्रिक	३६	१०
			तृणध्वज	१०६	१६०	त्यक्त	२४५	१०७
			तृणराज	१०८	१६८	त्याग	१६४	२९
			तृणशून्य	८२	६९	त्रपा	३९	२३
			तृष्या	१०८	६८	त्रपु	२१६	१०५
			तृतीयाप्रकृति	१२८	३९	त्रयी	{ २८ २८	३ ३
			तृतीयाकृत	१९७	९			



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
दन्वशूक	४३	८	दशा	{ १५१	११४	दारुहरिद्रा	८९	१०२
दञ्ज	२३७	६१		{ २८३	२१५	दारुहस्तक	२०२	३४
दम	{ १७६	२१	दशानीकिनी	१८८	८१	दार्वाघाट	११३	१७
	{ २४७	३	दस्यु	{ १७४	११	दार्विका	९५	११९
दमथ	२४७	३		{ २२१	२४	दार्वी	८९	१०२
दमित	२४४	९७	दस्त	८	५४	दाव	२८१	२०५
दमुनस्	९	५९	दहन	९	५८	दाविक	५२	३६
दम्पती	१२८	३८	दाक्षायणी	{ ७	४०	दाश	४८	१५
दम्प	४०	३०		{ १५	२१	दाशपुर	९८	१३१
दम्भोलि	८	५०	दाक्षाय्य	११४	२१	दास	२२०	१७
दम्भ	२०८	६२	दाडिम	{ ८१	६४	दासीसम	३०१	२७
दया	३८	१८		{ ३०४	४२	दासी	८४	७४
दयालु	२२८	१५	दाडिमपुष्पक	७७	४९	दासेय	२२०	१७
दयित	२३४	५३	दाण्डपात	२९६	६	दासेर	२२०	१७
	{ ३८	२१	दात	२४५	१०३	दिगम्बर	२३३	३९
दर	{ २७८	१८४	दात्यूह	११४	२१	दिगाज	१२	४
दरत्	२९६	९	दात्र	१९८	१३	दिरध	{ १९०	८८
दरिद्र	२३५	४९		{ १६४	२९		{ २४२	९०
दरी	६४	६	दान	{ १७६	२०	दित	२४५	१०३
ददुर	५०	२४		{ १८०	३७	दितिसुत	३	१२
दर्पक	५	२६	दानघ	३	१२	दिधिषु	११४	२३
दर्पण	१५७	१४०	दानवारि	३	९	दिधिषू	१२४	२३
दर्भ	१०७	१६६	दानशौण्ड	२२१	६	दिन	१८	२
दर्वि	२०२	३४	दान्त	{ १६८	४३	दिनान्त	१८	३
दर्वीकर	४३	८		{ २४४	९७	दिव्	{ ३	६
दर्श	{ १९	८	दान्ति	२४७	३		{ १२	१
	{ १६९	४८	दापित	२३३	४०	दिवस	१८	२
दर्शक	१७३	६	दाम	२१०	७३	दिवस्पति	७	४५
दर्शन	२५३	३१	दामनी	२१०	७३	दिवा	२९०	६
दल	६८	१४	दामोदर	४	१८	दिवाकर	१६	२८
दव	२८१	२०५	दार्मिक	२५७	१७	दिवाकीर्ति	{ २१९	१०
दविष्ठ	२३८	६९	दायाद	२६७	८९		{ २२०	१९
दवीयस्	२३८	६९	दार	१२०	६	दिविषद्	३	८
दशन	१४५	९१	दारद	४४	११		{ ३	७
दशनवासस्	१४५	९०	दारित	२४५	१००	दिवौकस	{ २८४	२२५
दशबल	३	१४		{ ६८	१३	दिव्योपपादुक	२३५	५०
दशभिन्	१२९	४३	दारु	{ ७७	५३	दिध	१२	१
दशमीस्थ	२६६	८७	दारुण	३८	२०			

[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
देह	१४०	७१	द्विगुण	{ १९३ १०२		द्रापर	{ २६ ३	
देहली	६१	१३		२१३ ९०			२७६ १६१	
दैतेय	३	१२		२६२ ५२		द्वार	६२ १६	
दैत्य	३	१२		२९९ २२		द्वार्	६२ १६	
दैत्यगुर	१६	२५	द्रव्य	{ २१३ ९०		द्वारपाल	१७३ ६	
दैत्या	९६	१२३		२७५ १५४		द्रास्थ	१७३ ६	
दैत्यारि	४	१९	द्राक्	२८९ २		द्रा स्थित	१७३ ६	
दैर्घ्य	१५२	११४	द्राक्षा	९१ १०७		द्विगुणाकृत	१९० ९	
दैव	२३	२८	द्राघिष्ट	२४६ ११२		द्विज	{ ११७ ३२	
दैव ( तीर्थ )	१६६	५१	द्रविडक	९९ ११५			२५९ ३०	
दैवज्ञ	१०५	१४	हु	६६ ५		द्विजराज	१४ १५	
दैवज्ञा	१२४	२०	हुकिलिम	७७ ५३		द्विजा	९५ १२०	
दैवत	{ ३ ९	{ २१ २१	हुघण	१९१ ९१		द्विजाति	१५८ ४	
	२१	२१	हुण	११२ १४		द्विजिह्व	२७२ १३३	
दोला	{ ८८ १८३	{ ९५ ५३	हुणी	२९६ ९		द्वितीया	१२० ५	
दोषज्ञ	१५९ ५		हुत	{ १० ६८		द्विप	१७९ ३४	
दोषा	२९० ६			२४२ ८९		द्विपाथ	१७८ २७	
दोषैकदश	२३४ ४६		द्रुम	६६ ५		द्विरव	१७९ ३४	
दोस्	१४३ ८०		द्रुमामय	१५३ १२५		द्विरेफ	११६ २९	
दोहद	४० २७		द्रुमोत्पल	७९ ६०		द्विप्	१७४ ११	
दोहदवती	१२४ २१		द्रुवय	२१२ ८५		द्विपत्	१७४ १०	
धः ( स् )	१२ २		द्रुहिण	४ १७		द्विहायनी	२०९ ६८	
धृति	{ १४ १७	{ १७ ३४	द्रोण	{ २१३ २६२		द्वीप	४६ ८	
धुमणि	१६ ३०			८८ ४८		द्वीपिन्	१०९ १	
धम्म	२१३ ९०		द्रोणकाक	११४ २१		द्वेषण	१७४ १०	
धूत	२२५ ४५		द्रोणक्षीरा	२१० ७२		द्वेष्य	२३४ ४५	
धूतकारक	२२५ ४४		द्रोणदुग्धा	२१० ७२		द्वैध	१७६ १८	
धूतकृत	२२५ ४४		द्रोणी	{ ४७ ८८		द्वैप	१८३ ५३	
धो	{ ३ १२	{ ६ १		९५ ४		द्वैमातुर	७ ४०	
धोत	१७ ३४		द्रोहवित्तन	२४ ४		द्वयष्ट	२१४ ९७	
द्रव्य	२०६ ५१		द्रौणिक	१९० १०		ध.	२९८ १७	
द्रव	{ ४१ १९४	{ ३२ १११	द्रन्द	{ ११८ २८२		धट्ट	८४ ७७	
				२१२ ४५		धत्तूर	२१३ ९०	
द्रव्यती	८७ ४७		द्रयातिग	१६८ ८४		धन	२१३ ९०	
			द्रादशाक	१४४ ८४		धनंजय	९ ५६	
			द्रादशात्मन्	१६ २८		धनद	११ ७२	

[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
ध्रुव	{ १४ ६७ २३९ २४२	२० ८ ७२ २११	नट	{ १०६ ३०२	१६३ ३३	नर	११९	१
ध्रुवा	{ ९३ १६३	११५ २५	नटमाय	५६	९	नरक	४४	१
ध्रुवज	१९२	९९	नटसंहति	१०८	१६८	नरकान्तक	१४	२२
ध्रुविनी	१८७	७८	नट्या	१०८	१६८	नरवाहन	११	७२
ध्रुवि	६३	२२	नट्यत्	५६	९	नर्तक	३६	११
ध्रुवित	२४३	९४	नट्यल	५६	९	नर्तकी	३५	८
ध्रुवस्त	२४५	१०४	नत	२३८	७१	नर्तन	३६	१०
ध्रुवाक्ष	{ ११४ २८७	२० २१८	नतनासिक	१३०	४५	नर्मदा	५१	३२
ध्रुवान	३३	२२	नदी	५१	२९	नर्मन्	४१	३२
ध्रुवान्त	४३	३	नदीमातृक	५७	१२	नलकृवर	११	७३
न.			नदीसर्ज	७६	४५	नलद	१०७	१६४
न	२९१	११	नद्यी	२२२	३१	नलमीन	४८	१८
नकुलेष्टा	९३	११५	ननान्द न्द)	१२६	२९	नलिन	५३	३९
नक्तक	१५१	११५	ननु	{ २८७ २९१	२४७ १४	नलिनी	५३	३९
नक्तम्	२९०	६	नन्दक	५	३०	नली	९७	१२९
नक्तमाल	७६	४७	नन्दन	७	४८	नल्व	५८	१८
नक्त	४९	२१	नन्दिक	७	४३	नव	२३९	७७
नक्षत्र	१५	२१	नन्दिकेश्वर	७	४३	नवदल	५३	४३
नक्षत्रमाला	१४९	१०६	नन्दिवृक्ष	९७	१२८	नवनीत	२०६	५२
नक्षत्रेश	१४	१५	नन्धावत	६१	१०	नवमालिका	८३	७२
नक्ष	{ ९८ १४४	१३० ८३	नपुंसक	१२८	३९	नवसूतिका	२०९	७१
नक्षर	१४४	४३	नप्री	१२६	२९	नवान्धर	१५०	११२
नग	२५८	१९	नभस्	{ १२ १२० २८५	१ १६ २३१	नवीन	२३९	७७
नगरी	५९	१	नभसङ्गम	११७	३४	नवोदित	२०६	५२
नगौकस्	११७	३३	नभस्य	२१	१७	नव्य	२३९	७७
नग्न	२३३	३९	नभस्वत्	१०	६६	नष्ट	१९४	११२
नग्नहू	२२४	४२	नमस्	२९३	१८	नष्टचेष्टता	४१	३३
नग्निका	१२१	८	नमसित	२४५	१०१	नष्टाग्नि	१७०	५३
नट	{ ७८ २१९	५६ १२	नमस्कारी	१००	१४१	नष्टेन्दुकला	१९	९
नटन	३६	१०	नमस्या	१६६	३५	नस्तित	२०८	६३
नदी	९८	१२९	नमस्थित	२४५	१०१	नस्योत	२०८	६३
			नमुचिसूदन	७	४६	नहि	२९१	११
			नय	२४८	९	नाक	{ ३ २५६	{ ६ २
			नयन	१४६	९३	नाकु	५८	१४
						नाकुली	९३	११४





शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके
निदाघ	{ २१	१९	नियम	{ २५	५	निर्मुक्त	४३	६
	४१	३३		१६७	३८	निर्मोक्ष	४४	९
निदान	२३	२८		१६९	४९	निर्याण	१८०	३८
निदिग्ध	२४१	८९	नियामक	४७	१२	निर्यातन	२७०	११९
निदिग्धिका	८८	९३	नियुत	३००	२४	निर्युद्ध	२८६	२३६
निदेश	१७७	२५	नियुद्ध	१९३	१०६	निर्वपण	१६४	३०
निद्रा	४२	३६	नियोज्य	२२०	१७	निर्वर्णन	२५३	३१
निद्राण	२३२	३३	निर्	२८८	२५२	निर्वहण	३०	१५
निद्रालु	२३१	३३	निरन्तर	२३७	६६	निर्वाण {	२५	६
निधन {	१९५	११६	निरय	४४	१		२४३	९६
	२७०	१२२	निरर्गल	२४०	८३	निर्वात	२४३	९६
निधि	११	७५	निरर्थक	२४०	८१	निर्वाद {	३१	१३
निधुवन	१७१	५७	निरवग्रह	२२८	१५		२६७	८९
निध्यान	२५३	३१	निरसन	२५३	३१	निर्वाण	१९४	११४
निनद	३३	२२		३३	२०	निर्वाय	२२८	१३
निनाद	३३	२२	निरस्त {	१९०	८८	निर्वासन	१९४	११३
निन्दा	३०	१३		२३३	४०	निर्वृत्त	२४४	१००
निप	२०२	३२	निराकरिणु	२३१	३०		२२४	३९
निपठ	२५३	२९	निराकृत	२३३	४०	निर्देश {	२५१	२०
निपाठ	२५३	२९	निराकृति {	१७०	५४		२८२	२१४
निपातन	२५३	२७		२५३	३१	निर्व्यथन	४२	२
निपान	५००	२६	निरामय	१३५	५७	निर्द्धार	२५०	१७
निपुण	२२६	४	निरीक्षा	१९८	१३	निर्द्धारिन्	२६	११
निबन्धन	३५	७	निर्कृति	४५	२	निर्द्वाद	३३	२३
निबर्हण	१९४	११२	निर्गुण्डि {	८२	६८	निकय	५९	५
निभ	२३३	३८		८२	७०	निवह	११८	३९
निभृत	२३०	२५	निर्ग्रन्थन	१९४	११३	निवात	२६६	८४
निमय	२११	८०	निर्घोष	३३	२३	निवाप	१६४	३१
निमित्त	२६५	७६	निर्जर	३	७	निवीत {	१५०	११३
निमेष	१९	११	निर्जितेन्द्रियग्राम	१६८	४४		१७०	५०
निम्न	४८	१५	निर्क्षर	६४	५	निवृत्त	२४१	८८
निम्नगा	५१	३०	निर्णय	२५	३	निवेश	१७९	३३
निम्न	८०	६२	निर्णित	२३६	५६	निशा	१८	४
निम्नतरु	७०	२६	निर्णोजक	२१९	१०	निशान्त	५९	५
नियति	२३	२८	निर्देश	१७७	२५	निशापति	१४	१४
नियन्तृ	१८४	५९	निर्वन्ध	२८६	२३६	निशाख्या	२०३	४१
			निर्भर	१०	७०	निशित	२४२	९१
			निर्मद	१७९	३६	निशीथ	१८	६

नाम	पृष्ठ	पत्राङ्के	नाम	पृष्ठ	पत्राङ्के	नाम	पृष्ठ	पत्राङ्के
निर्वाहिका	१८	३	निर्वाह	२०३	८८	निर्वाह	१५३	११८
निर्वाह	२५	३	निर्वाह	२३८	१९	निर्वाह	१५	१८
निर्वाह (निर्वाह)	१०	१८	निर्वाह	१२३	११३	निर्वाह	२८०	२२०
निर्वाह	१२०	८८	निर्वाह	१९०	८३	निर्वाह	३०	३३
निर्वाह	१८३	१३	निर्वाह	२०९	१९	निर्वाह	२३३	८०
निर्वाह	५३	३	निर्वाह	३३	१३	निर्वाह	२३९	३३
निर्वाह	२५	९	निर्वाह	१९३	११८	निर्वाह	२३९	३८
निर्वाह	३३	३	निर्वाह	२३	१३	निर्वाह	२०९	२३
निर्वाह {	१३	३	निर्वाह	१२३	११०	निर्वाह {	२८८	२२३
निर्वाह {	१२०	८०	निर्वाह	२९०	१६	निर्वाह {	२९३	१९
निर्वाह	१८३	५२	निर्वाह {	३३	१३	निर्वाह	१८३	१०९
निर्वाह	१२३	११३	निर्वाह {	२८३	१००	निर्वाह	११३	१
निर्वाह	२५०	१३	निर्वाह	२३३	२३	निर्वाह	१३	१३
निर्वाह	१२३	२३	निर्वाह {	२९०	१६	निर्वाह	१०३	३
निर्वाह	२३३	२९	निर्वाह {	२२८	१०	निर्वाह	१०९	३३
निर्वाह	३३	३	निर्वाह	२९३	१०	निर्वाह	१०३	३०
निर्वाह	२३	१२३	निर्वाह	११८	३३	निर्वाह	१३३	२०
निर्वाह	३८	१३	निर्वाह	३३	१३	निर्वाह	१३३	८०
निर्वाह	२५०	१९	निर्वाह	२३	१३	निर्वाह	२३३	१९
निर्वाह {	३०	१९	निर्वाह	२३	१३	निर्वाह {	१३३	१३
निर्वाह {	२९०	८३	निर्वाह	२३	१३	निर्वाह {	२३३	१३०
निर्वाह	२८३	८०	निर्वाह	१३	१३	निर्वाह	१३३	१३
निर्वाह	२९३	३०	निर्वाह	११३	१३	निर्वाह	१३३	१३
निर्वाह {	३३	१३	निर्वाह	१३३	१३	निर्वाह	१३३	१३
निर्वाह {	३३३	८३	निर्वाह	१३३	१३	निर्वाह	१३३	१३

शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके
नैबिकक	१७४	७	पक्षिणी	१८	५	पट्टिषा	२९९	२१
नैबिशिक	१८६	७०	पक्षमन्	२७०	१२०	पण	२१३	८८
नो	२९१	११	पक्ष	२२	२३		२२४	३९
नौ	४७	१०		४३	९		२३१	४३
नौकादण्ड	४७	१३	पक्षेरुह	५३	४०		२३५	४५
नौतार्य	४६	१०	पक्षि	६३	४	पणव	३५	८
न्यक्ष	२८४	२२४		२३५	७२	पणायित	२४३	१०९
न्यग्रोध	७२	३३	पङ्गु	१३१	४८	पणित	२४३	१०९
	२६८	९५	पचंपचा	८९	१०२	पणितव्य	२११	८२
न्यग्रोधी	८७	८७	पचा	२४८	८	पण्डा	१२८	३९
न्यच्	२३८	७०	पञ्चजन	११९	१	पण्डित	१५९	५
न्यङ्कु	१११	१०	पञ्चता	१९५	११३	पण्य	२११	८२
न्यस्त	२४१	८८	पञ्चदशी	१९	७	पण्यवीधिका	५९	२
न्याद्	२०७	५६	पञ्चम	३३	१	पण्या	१०३	१५०
न्याय	१७७	२४	पञ्चलक्षण	२८	५	पण्याजीव	२११	७८
न्याय्य	१७७	२५	पञ्चशर	५	२३	पतग	११७	३३
न्यास	२११	८१	पञ्चशास्त्र	१४३	८१	पतङ्ग	११६	२८
न्युद्ध	२९८	१७	पञ्चाङ्गुल	७७	५१		२५८	२०
न्युज्ज	१३३	६१	पञ्चास्य	१०९	१	पतङ्गिका	११६	२७
न्यून	२७१	१२७	पञ्जिका	२९६	७	पतत्	११७	३३
प			पट	१५१	११६	पतस्त्र	११७	३३
पक्वण	६३	२०	पटञ्जर	१५१	११५	पतमिन्	११७	३३
पक्व	२४२	९१	पटल	६१	१४	पतद्ग्रह	१५७	१३९
	२४३	९६		२०१	२००		२९९	२१
पक्ष	११७	३६	पटलप्रान्त	६१	१४	पतयालु	२३१	२७
	१४७	९८	पटवासक	१५७	१३९	पताका	१९२	९९
	१९०	८७	पटह	३५	६	पताकिन्	१८६	७१
	२८३	२१९		१९४	१०८	पति	१२७	३५
पक्षक	६१	१४	पटु	१०४	१५५		२२७	१०
पक्षति	१७	१		२२०	१९	पतिवरा	१२१	७
	११७	३६	पटुपर्णो	२६०	३९	पतिवल्ली	१२२	१२
	२६५	७२		१००	१३८	पतिव्रता	१२०	३
पक्षद्वार	६१	१४	पटोल	१०४	१५५	पत्तन	५९	१
पक्षभाग	१८०	४०	पटोलिका	९४	११८	पत्ति	१८५	६६
पक्षमूल	११७	३६	पट्ट	२९८	१७		१८८	८०
पक्षान्त	१९	७	पट्टिका	७५	४१		२६५	७२
पक्षिन्	११७	३२	पट्टिन्	७५	४१	पत्तिसंहति	१८५	६७

पदार्थ	दूध	दही	गन्ध	दूध	दही	पदार्थ	दूध	दही
पदार्थ	१२०	५		१	२८	पदार्थ	२३०	६०
पदार्थ	६८	१८	पदार्थ	८०	८५	पदार्थ	१२३	१००
	११०	३६		१०३	१३६		३०३	१३८
	१८३	५८	पदार्थ	१०	२८		३५	१०
	२०८	१०८	पदार्थ	१०३	१३२		३१८	३१
पदार्थ	२२३	३३	पदार्थ	५	२८	पदार्थ	३३३	३३
पदार्थ	१४८	१०३	पदार्थ	१०३	३३	पदार्थ	३३०	३८
पदार्थ	११३	३३	पदार्थ	५३	३३	पदार्थ	३३३	३३
पदार्थ	१५२	१०२	पदार्थ	२०३	३३	पदार्थ	१५२	३३३
पदार्थ	१५५	१३२	पदार्थ	५८	३५	पदार्थ	१५४	३३३
	२३३	१३३	पदार्थ	८०	३३	पदार्थ	२३२	३३
पदार्थ	१५३	१३५	पदार्थ	३४३	१०५	पदार्थ	२३५	३०
पदार्थ	११५	३५	पदार्थ	३०३	१०५	पदार्थ	१३५	३३०
	११३	८३	पदार्थ	३४५	१०५	पदार्थ	३३०	३
	१३०	८०	पदार्थ	८३	८	पदार्थ	३५३	००
	२३५	१०३	पदार्थ	९	३३	पदार्थ	३३३	०८
पदार्थ	१२०	१३३	पदार्थ	३५	३	पदार्थ	३५३	३३३
पदार्थ	१०५	३०	पदार्थ	३०३	०३	पदार्थ	३५५	३३०
पदार्थ	५८	३५	पदार्थ	३५०	३३३	पदार्थ	३५३	३३३
पदार्थ	७५	५८	पदार्थ	२०३	५३	पदार्थ	३५३	३३३
पदार्थ	३००	०३	पदार्थ	२०३	३३३	पदार्थ	३५३	३३०
पदार्थ	३५५	५३	पदार्थ	५३	०	पदार्थ	३५५	३३
पदार्थ	३५५	५३	पदार्थ	३०३	३३	पदार्थ	३५५	३३
पदार्थ	३५५	५३	पदार्थ	३०३	३५०	पदार्थ	३५५	३३
पदार्थ	५८	३३	पदार्थ	३०३	३५	पदार्थ	३५५	३३
पदार्थ	३५५	५३	पदार्थ	३५५	३३	पदार्थ	३५५	३३





शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दा	पृष्ठे	ब्लोके
पारी	२९६	१०	पिचुल	७४	४०	पित्त	१३६	६२
पारुष्य	३०	१४	पिघट	२१६	१०५	पित्र्य (तीय)	१७०	५१
पार्थिव	१७१	१	पिच्छ	११६	३१	पिरसत्	११७	३४
पावती	६	३९	पिच्छ	३०१	३०	पिधान	१४	१३
पावतीनन्दन	७	४३	पिच्छा	७६	४७	पिनद्ध	१८५	६५
पाश्व	१४३	७९	पिच्छिल	२०४	४६	पिनाक	६	३७
पाश्वभाग	२५५	४२	पिच्छिला	७६	४६	पिनाकिन्	२५७	१४
पापवर्धि	१४०	४०	पिच्छिला	८०	४२	पिपासा	२०३	५५
पार्ष्णि	१४०	७२	पिष्ठ	१९४	११५	पिपीलिका	२९६	८
पार्ष्णिग्राह	१७४	१०	पिष्ठर	२१५	१०३	पिप्पल	६९	२०
पालघ्न	१०७	१६७	पिष्ठक	३०१	२१	पिप्पली	८८	९७
पालङ्गी	९५	१२१	पिट	२०१	२६	पिप्पलीमूल	२१६	११०
पालाश	३६	१४	पिटक	२२२	३०	पिष्ट	१३१	४९
पालि	१९१	९३	पिटक	१३३	५३	पिष्ट	१३६	६०
पालिन्दी	२८०	१९६	पिठर	२०२	३१	पिशाङ्ग	२७	१६
पाल्वा	९१	१०८	पिठर	२७९	१८८	पिशाच	३	११
पाल्वा	२९६	५	पिठ	२१४	९८	पिशित	१३७	६३
पाचक	९	५७	पिठ	२१५	१०४	पिशित	१५३	१२४
पाश	१४७	९६	पिठक	२९६	१८	पिशुन	२३५	४७
पाशक	२२५	४५	पिठक	१५४	१२८	पिशुन	२७१	१२७
पाशिन्	१०	६४	पिठिका	१८४	५६	पिशुना	९८	१३३
पाशुपत	८५	८१	पिठितक	७७	५२	पिष्टक	२६५	४८
पाशुपाल्य	१९५	२	पिठितक	२५६	९	पिष्टपचन	२०२	३२
पाश्या	२५५	४३	पिण्याक	३०२	३२	पिष्टात	१५७	१३९
पाश्चात्य	२४०	८१	पितरौ	१२८	३७	पीठ	१५७	१३८
पाषाण	२४	४	पितामह	४	१६	पीठन	१९४	१०९
पापाणदारण	२२३	३४	पितृ	१२७	३३	पीठा	४५	३
पिक	११३	१९	पितृ	१२८	३७	पीत	२६	१४
पिङ्ग	२७	१६	पितृदान	१२६	२८	पीतदारु	७७	५३
पिङ्गल	१७	३१	पितृपति	१६४	२१	पीतहु	७९	६०
पिङ्गला	२७	१६	पितृपति	१२	२	पीतहु	८१	१०१
पिङ्गला	१२	४	पितृपति	१२	२	पीतहु	७१	२७
पिचण्ड	१७२	७७	पितृपति	१२७	३३	पीतन	१५३	१२४
पिचण्ड	२९९	१८	पितृपति	१८	३	पीतन	२१५	१०३
पिचिण्डिल	१३०	४४	पितृपति	१९५	११८	पीतसारक	७५	४३
पितु	२१६	१०६	पितृपति	१२६	३१	पीता	२०३	४१
पितुमन्द	८०	६२	पितृपति	२२८	१३	पीताम्बर	४	१९



[illegible]

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
पूग	{ १०८	१६९	पृथक्	२८९	३	पेलव	२३८	३३
पूजा	१६६	३५	पृथक्पर्णी	८८	९२	पेदाळ	{ २८१	२०५
पूजित	२४४	९८	पृथगात्मता	{ २४	३१	{ २६०	१९	
पूज्य	{ २२६	५	पृथग्जन	{ २२०	१३	पेशी	११८	३७
	{ २७४	१५०	{ २६९	१०५	पैठर	२०४	४५	
पूत	{ १६८	४५	पृथग्विध	२४३	९३	पैतृष्वसेय	१३५	२५
	{ २००	२३	पृथिवी	५५	३	पैतृष्वस्त्रीय	१३५	२५
	{ २३६	५५				पैत्र (अहोरात्र)	२१	२१
पूतना	७९	५९	पृथु	{ २०३	३७	पोटागळ	{ १०६	१६२
पूतिक	७६	४८	{ २०३	४०	{ १०६	१६३		
पूतिकाष्ठ	{ ७७	५४	{ २३७	६०	पोटा	१२३	१५	
	{ ७९	६०	{ २४६	११२	पोत	{ ११८	३८	
पूतिगन्धि	२६	१२	पृथुक	{ ११८	३८	{ २३३	५९	
पूतिकली	८८	९६	{ २०५	४७	पोतवणिज्	४७	१२	
पूप	२०५	४८	{ २५६	३	पोतवाह	४७	१२	
पूर	२९९	२०	पृथुरोमन्	४८	१७	पोताधान	४८	१९
पूरणी	७६	४६	पृथुल	२३७	६०	पोत्र	२७८	१८०
पूरित	२४४	९८	पृथ्वी	{ ५५	३	पोत्रिन्	१०९	२
पूरुष	११९	१	{ २०३	३७	पौत्री	१२६	२९	
पूर्ण	{ २३७	६५	{ २०३	४०	पौर	१०७	१६६	
	{ २४४	९८	पृथ्वीका	९६	१२५	पौरस्य	२४०	८०
पूर्णकुम्भ	१७९	३२	पृदाकु	४३	६	पौरुष	{ १४३	८०
पूर्णिमा	१९	७	पृक्षि	१३१	४८	{ २८४	२९२	
पूर्त	१६४	२८	पृक्षिपर्णी	८८	९२	पौरोगव	२०१	२७
पूर्व	{ २४०	८०	पृषत्	४६	६	पौर्णमास	१६९	४८
	{ २७२	१३३	पृषत	{ ४६	६	पौर्णमासी	१९	७
पूर्वज	१२९	४३	पृषत्	{ १११	१०	पौलस्य	११	७२
पूर्वदेव	३	१२	पृषत्क	१९०	८६	पौलि	२०५	४७
पूर्वपर्वत	६३	२	पृषद्वव	१०	६५	पौष	२०	१५
पूर्वा	१२	१	पृषदाज्य	१६२	२४	पौष्पक	२१५	१०३
पूर्वेषुस्	२९३	२१	पृष्ठ	१४३	७८	प्याट्	२९०	७
पूषन्	१६	२९	पृष्ठवंशाधर	१४२	४६	प्रकम्पन	१०	६६
पूक्ति	२४८	९	पृष्ठ्य	{ १८१	४६	प्रकर्ष	२४४	११२
पृच्छा	३०	१०	{ २५५	४२	{ १५	{ ६७	१०	
पूतना	{ १८७	७८	पेचक	{ १११	६	{ ६३	२७	
	{ १८८	८१	पेटक	{ २५६	३०	प्रकाण्ड	२०७	५७
			पेडा	२२२	३०			
			पेटी	२०४	४२			



वाचस्पतिकमणिका	पृष्ठे	श्लोके	वाचस्पतिकमणिका	पृष्ठे	श्लोके	वाचस्पतिकमणिका	पृष्ठे	श्लोके
प्रतीकाश	२१३	३८	प्रथा	२४८	९	प्रमथन	१९४	११५
प्रतीक्ष्य	२२४	५	प्रथित	२२७	९	प्रमथाधिप	६	३३
प्रतीची	१२	१	प्रदर	२७६	१६४	प्रमद	२३	२४
प्रतीत	{ २२७ २४६	९ ८१	प्रदीप	१५०	१३८	प्रमदवन	६६	३
प्रतीपवर्णिनी	११९	२	प्रदीपन	४४	१०	प्रमदा	११९	३
प्रतीर	४६	७	प्रदेशन	१७८	२७	प्रमनस्	२२७	७
प्रतीहार	{ ६२ १७३ १७७	१६ ६ १६९	प्रदेशिनी	१४३	{ ८१ ८२	प्रमा	२४९	१०
प्रतीहारी	२७७	१६९	प्रदोष	१८	६	प्रमाण	२६२	५३
प्रतीली	५९	३	प्रशुभ	५	२६	प्रमाद	४०	३०
प्रत्न	२६९	७७	प्रवाव	१९४	१११	प्रमापण	१९४	११२
प्रत्यक्	२९४	२३	प्रघन	१९३	१०३	प्रमिति	२४९	१०
प्रत्यक्पर्णी	८७	८९	प्रधान	{ २३ १७३ २३६ २७०	२९ ५ ५७ १२२	प्रमीत	{ १६४ १९५	२६ ११७
प्रत्यक्श्रेणी	{ ८७ १०१	८८ १४४	प्रधि	१८४	५६	प्रमीला	४२	३७
प्रप्रक्ष	२४०	७९	प्रपञ्च	२५३	२८	प्रमुञ्ज	२३६	५७
प्रत्यग्र	२३९	७७	प्रपद	१४०	७१	प्रमुदित	२४५	१०३
प्रत्यन्त	५६	७	प्रपा	६०	७	प्रमोद	२३	२४
प्रत्यन्तपर्वत	६५	७	प्रपात	६४	४	प्रयत	१६८	४५
प्रत्यय	२७४	१४७	प्रपितामह	१२७	३३	प्रयस्त	२०४	४५
प्रत्ययिक्त	१७५	१३	प्रपुन्नाढ	१०२	१४७	प्रयाम	२५२	२३
प्रत्यर्थिन्	१७४	११	प्रपौण्डरीक	९७	१२४	प्रयोगार्थ	२५२	२६
प्रत्यवसित	२४६	११०	प्रफुल्ल	६६	७	प्रकम्बज	५	२४
प्रत्याख्यात	२३३	४०	प्रबन्धकल्पना	२८	६	प्रलय	{ २२ ४१ १९५	२२ ३३ ११६
प्रत्याख्यान	२५३	३१	प्रबोधन	१५२	१२२	प्रलाप	३१	१५
प्रत्यादिष्ट	२३३	४०	प्रभञ्जन	१०	६६	प्रवण	२६३	५६
प्रत्यादेश	२५३	३१	प्रभव	२८२	२०९	प्रवयस्	१२९	४२
प्रत्याकीर्त	१८९	८५	प्रभा	१७	३४	प्रवह	२३६	५७
प्रत्यासार	१८८	७२	प्रभाकर	१६	२८	प्रवह	२५१	१८
प्रत्याहार	२५०	१६	प्रभात	१८	३	प्रवहण	१८३	५२
प्रत्युक्रम	२५१	२६	प्रभाव	१७६	२०	प्रवहिका	२९	६
प्रत्युषस्	१८	२	प्रभिन्न	१७९	३६	प्रवारण	२४७	५
प्रत्युष	१८	२	प्रभु	२२०	११	प्रवाल	{ ३५ २१४ २८१	७ ९३ २०३
प्रत्युह	२५१	१९	प्रभूत	२३७	६३	प्रवाह	२५१	१८
प्रथम	{ २४० २७४	८० १४४	प्रअष्टक	१५६	१३५	प्रवासन	१९४	११३
			प्रमथ	६	३७			



वाङ्मयः	पृष्ठे	श्लोके	वाङ्मयः	पृष्ठे	श्लोके	वाङ्मयः	पृष्ठे	श्लोके
प्रतीकाश	२१३	३८	प्रथा	२४८	९	प्रमथन	१९४	११५
प्रतीक्ष्य	२२४	५	प्रथित	२२७	९	प्रमथाधिप	६	३३
प्रतीची	१२	१	प्रदर	२७६	१६४	प्रमद	२३	२४
प्रतीत	{ २२७ २४६	९ ८१	प्रदीप	१५०	१३८	प्रमदवन	४४	३
प्रतीपदर्शिनी	११९	२	प्रदीपन	४४	१०	प्रमदा	११९	३
प्रतीर	४६	७	प्रदेशन	१७८	२७	प्रमनस्	२२७	७
प्रतीहार	{ ४२ १७३ १७७	१६ ६ ११९	प्रदेशिनी	१४३	{ ४१ ८२	प्रमा	२४९	१०
प्रतीहारी	२७७	१६९	प्रदोष	१८	६	प्रमाण	२६२	५३
प्रतीली	५९	३	प्रशुभ	५	२६	प्रमाद	४०	३०
प्रत्न	२६९	७७	प्रद्राव	१२४	१११	प्रमापण	१९४	११२
प्रत्यक्	२९४	२३	प्रधन	१९३	१०३	प्रमिति	२४९	१०
प्रत्यक्पर्णी	८७	८९	प्रधान	{ २३ १७३ २३६ २७०	२९ ५ ५७ १२२	प्रमीत	{ १६४ १९५	२६ ११७
प्रत्यक्श्रेणी	{ ८७ १०१	८८ १४४	प्रधि	१८४	५६	प्रमीला	४२	३७
प्रतिक्ष	२४०	७९	प्रपञ्च	२५३	२८	प्रमुख	२३६	५७
प्रत्यग्र	२३९	७७	प्रपद	१४०	७१	प्रमुदित	२४५	१०३
प्रत्यन्त	५६	७	प्रपा	६०	७	प्रमोद	२३	२४
प्रत्यन्तपर्वत	६५	७	प्रपात	६४	४	प्रयत	१६८	४५
प्रत्यय	२७४	१४७	प्रपितामह	१२७	३३	प्रयस्त	२०४	४५
प्रत्यग्नित	१७५	१३	प्रपुन्नाढ	१०२	१४७	प्रयाम	२५२	२३
प्रत्यर्थिन्	१७४	११	प्रपौण्डरीक	९७	१२४	प्रयोगार्थ	२५२	२६
प्रत्यवसित	२४६	११०	प्रफुल्ल	६६	७	प्रलम्बज्ञ	५	२४
प्रत्याख्यात	२३३	४०	प्रबन्धकल्पना	२८	६	प्रलय	{ २२ ४१ १९५	२२ ३३ ११६
प्रत्याख्यान	२५३	३१	प्रबोधन	१५२	१२२	प्रलाप	३१	१५
प्रत्यादिष्ट	२३३	४०	प्रमञ्जन	१०	६६	प्रवण	२६३	५६
प्रत्यादेश	२५३	३१	प्रमव	२८२	२०९	प्रवयस्	१२९	४२
प्रत्याकीढ	१८९	८५	प्रभा	१७	३४	प्रवर्ह	२३६	५७
प्रत्यासार	१८८	७२	प्रभाकर	१६	२८	प्रवह	२५१	१८
प्रत्याहार	२५०	१६	प्रभात	१८	३	प्रवहण	१८३	५२
प्रत्युक्रम	२५१	२६	प्रभाव	१७६	२०	प्रवहिका	२९	६
प्रत्युषस्	१८	२	प्रसिन्न	१७९	३६	प्रवारण	२४७	६
प्रत्युष	१८	२	प्रभु	२२७	११	प्रवाल	{ ३५ २१४ २८१	७ ९३ २०३
प्रत्युह	२५१	१९	प्रभूत	२३७	६३	प्रवाह	२५१	१८
प्रथम	{ २४० २७४	८० १४४	प्रभटक	१५६	१३५	प्रवासन	१९४	११३
			प्रमथ	६	३७			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
प्रवाहिका	१३४	५५	प्रसित	२२७	९	प्राग्दक्षिणा	४६	७
प्रविदारण	१९३	१०३	प्रसिति	२५०	१४	प्राग्वंश	१६१	१६
प्रविहलेष	२५१	२०	प्रसिद्ध	२६९	१०४	प्राग्रहर	२३४	५८
प्रवीण	२२६	४	प्रसू	२८५	२२८	प्राग्रय	२३६	५८
प्रवृत्ति	{ २९	७	प्रसूता	१२३	१६	प्राधार	२४९	१०
	{ २५१	१८	प्रसूति	२४९	१०	प्राघुणक	१६६	३४
प्रवृद्ध	{ २३९	७६	प्रसूतिका	१२३	१६	प्राघूर्णिक	१६६	३४
	{ २४१	८६	प्रसूतिज	४५	३	प्राचिका	२९६	८
प्रवेक	२३६	५७	प्रसून	{ ६९	१७	प्राची	१२	१
प्रवेणी	{ १४७	९८		{ २७०	१२२	प्राचीन	५९	३
	{ १८१	४२	प्रसूननयितारी	१८	३७	प्राचीना	८६	८५
प्रवेष्ट	१४३	८०	प्रसूत	२४१	८८	प्राचीनावीत	१३९	५०
प्रव्यक्त	२४०	८१	प्रसूता	१४०	७२	प्राच्य	५६	७
प्रक्ष	३०	१०	प्रसूति	१४४	८५	प्राजन	१९८	१२
प्रश्रय	२५२	२५	प्रसेव	२०१	२६	प्राजितृ	१८४	५९
प्रभित	२३०	२५	प्रसेवक	३५	७	प्राज्ञ ( प्रज्ञ )	१५९	५
प्रष्ठ	१८६	७२	प्रस्वर	६४	४	प्राज्ञा	१२२	१२
प्रष्ठवाह	२०८	६३	प्रस्ताव	२५२	२४	प्राज्ञी	१२२	१२
प्रष्ठौही	२०९	७०	प्रस्थ	{ ६४	५	प्राज्य	२६७	८७
प्रसन्न	४८	१४		{ २१३	८९	प्राडिवाक	१७३	५
प्रसन्नता	१४	१६		{ २६६	८७	प्राण	{ १०	६७
प्रसर्ज	२२४	१०	प्रस्थगुष्प	८५	७२		{ १९३	१०२
प्रसभ	१९४	१०८	प्रस्थमान	२१२	८५		{ १९५	११२
प्रसर	२५२	२३	प्रस्थान	१९१	९५		{ २१५	१०३
प्रसरण	१९२	९६	प्रस्थोदन	२०१	२६	प्राणिन्	२३	३०
प्रसय	{ २४९	१०	प्रस्रवण	६४	५	प्रावर्	२९६	१२
	{ २८९	२०७	प्रस्राव	१३९	६७	प्रातिहारिक	२१९	११
प्रसबन्धन	६८	१५	प्रहर	१८	६	प्रायमकक्षिक	१६०	११
प्रसम्प	२४०	८४	प्रहरण	१८९	८२	प्रादुम्	{ २८९	२५५
प्रसङ्ग	२९१	१०	प्रहृष्ट	१४४	८४		{ २९१	१२
प्रसाद	{ १४	१६	प्रहि	५०	२६	प्रादेश	१४४	८३
	{ २६७	९१	प्रहेलिका	२९	६	प्रादेशन	१६५	३०
प्रसाधन	१४७	९९	प्रहृष्ट	२४५	१०३	प्राधनम्	२८३	४
प्रसाधनी	१५७	१३९	प्राप्ति	२३८	४०	प्राधर	५८	१०
प्रसाधित	१४०	१००	प्रसृ	{ २९२	१६	प्राध	{ २४१	८६
प्रसादिनी	१०३	१५२		{ २९४	२३		{ २८९	१०४
प्रसारिन्	२३१	३१	प्राकार	५९	३	प्रासरञ्ज	१९५	११७
			प्राकृत	२२०	१६	प्रातर	०७९	१३३

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
प्राप्ति	२६४	६८	प्रेक्षित	२४१	८७	फणिन्	४३	७
प्राप्य	२४२	९२	प्रेत	{ १९५ २६३	{ ११७ ५९	फल	{ १९१ १९८ २८१ ३००	{ ९० १३ २०० २३
प्राभृत	१७८	२७	प्रेता	४४	२	फलक	१९०	९०
प्राय	{ १७० २७५	{ ५३ १५३	प्रेत्य	२९०	८	फलकपाणि	१८६	७१
प्रायस्	२९२	१७	प्रेमन्	{ ४० २७४	{ २७ १५१	फलत्रिक	२१७	१११
प्रार्थित	२४४	९७	प्रेष्ठ	२४६	१११	फलपूर	८५	७८
प्रालम्ब	१८६	१३६	प्रेष	२८३	२१९	फलवत्	६६	७
प्रालम्बिका	१४८	१०४	प्रेष्य	२२०	१७	फलाभ्यक्ष	७६	४५
प्रालेय	१४	१८	प्रोक्षण	१६४	२६	फलिन्	६६	७
प्रारार	१५१	११७	प्रोक्षित	१६४	२६	फलिन	६६	७
प्रावृत्त	१५१	११३	प्रोथ	१८२	४९	फलिनी	{ ७८ ९९	{ ५५ १३६
प्रावृष्	२१	१९	प्रोधपदा	१६	२२	फली	७८	५५
प्रावृषायणी	८७	८६	प्रोष्ठी	४८	१८	फलेग्रहि	६६	६
प्रास	१९१	९३	प्रौष्ठपद	२१	१७	फलेग्रहा	७८	५४
प्रासङ्ग	१८४	५७	प्रौढ	२३९	७६	फल्गु	{ ८० २३६	{ ६१ ५६
प्रासङ्ग्य	२०८	६४	लक्ष	{ ७२ ७५	{ ३२ ४३	फाणित	२०४	४३
प्रासाद	६१	९	लव	{ ४७ ५० ११७ ९८ १२०	{ ११ २४ ३४ १३३ १९	फाण्ट	२४३	९४
प्रासिक	१८६	७०	लवग	{ १०९ २५८	{ ३ २४	फाल	{ १५० १९८	{ १११ १३
प्राह	१८	३	लवङ्ग	१०९	३	फाल्गुन	२०	१५
प्रिय	{ १२७ २३६ ७५ ७५ ७८ १११	{ ३५ ५३ ४२ ४४ ५६ ९	लवङ्गम	२७३	१३७	फाल्गुनी	२९६	६
प्रियङ्गु	{ ७८ १९९	{ ५५ २०	ल्लाक्ष	६९	१८	कुल्ल	६७	८
प्रियता	४०	२७	लीडन्	१३८	६६	फेन	{ २१५ २९९	{ १०५ १९
प्रियाल	७३	३५	लीडशत्रु	७७	४९	फेनिल	{ ७२ ७४	{ ३१ ३८
प्रियंवद	२३२	३६	प्लुत	१८२	४८	फेरव	११०	५
प्रीणन	२४७	४	प्लुष्ट	२४४	९९	फेरु	११०	५
प्रीत	२४५	१०३	प्लोष	२४८	९	फेला	२०७	५६
प्रीति	२२	२४	प्लात	२४६	११०	सक	११४	२३
प्रष्ट	२४४	९९	फ.	४३	८०	सकुल	८०	४६
प्रेक्षा	{ २४ १८४	{ १ २२४	फणधर	४३	९			
प्रेक्षा	१८३	५३	फणा	४४	९			
			फणिज्जक	८५	४९			



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
बलिश	४८	१६	बलभद्र	५	२४	बहुल	२३७	३३
बल	२८७	२४३	बलभद्रिका	१०३	१५०	बहुल	२४६	११२
बलर	७३	३७	बलवत्	१३०	४४	बहुल	२६०	१९८
बलरा	९३	११६	बलवत्	२८९	२	बहुला	९३	१२५
बलरी	७४	१५१	बलविन्यास	१८८	७९	बहुला	२८०	१९८
बल	२३३	४२	बला	९१	१०७	बहुलीकृत	२००	२३
बल	२४३	९५	बलाका	११५	२५	बहुवारक	७४	३४
बधिर	१३१	४८	बलाकार	१९४	१०८	बहुविध	२४३	९३
बन्दिन्	१९२	९७	बलाराति	५	४६	बहुवेतस	५६	९
बन्दी	१९५	११९	बलाहक	१३	६	बहुसुता	८९	१००
बन्धकी	१२१	१०	बलि	१६१	१४	बहुसूति	२०९	७०
बन्धन	१७८	२६	बलि	१७८	२७	बाकुची	८८	९६
बन्धु	१२७	३४	बलिध्वंसिन्	४	२१	बाढ	१०	७०
बन्धुजीवक	८३	७३	बलिन	१३०	४५	बाढ	२६१	४४
बन्धुता	१२७	३५	बलिपुष्ट	११४	२०	बाण	१९०	८६
बन्धुर	२३८	६९	बलिभ	१३०	४५	बाण	२६१	४५
बन्धुल	१२५	२६	बलिमुज्	११४	२०	बाणा	८४	७४
बन्धूक	८३	७३	बलिर	१३१	४९	बादर	१५०	१११
बन्धूकपुरष	७५	४४	बलिसन्न	४२	१	बाधा	४५	३
बभ्र	२७७	१७०	बलीवर्द्ध	२०७	५९	बान्धकितेय	१२५	२६
बबर	८७	९०	बलव	२०१	२७	बान्धव	१२७	३४
बबरा	१००	१३९	बलव	२०७	५७	बाहंत	६९	१९
बह	११६	३१	बल्वज	१०६	१६३	बाह	९६	१२३
बहिः	२८६	२३५	बल्वयिणी	२०९	७१	बाह	१२९	४२
बहिः	९	५७	बस्त	२१०	७६	बाह	२८१	२०५
बहिण	११६	३०	बस्ति	१४१	७३	बाहगर्मिणी	२०९	७०
बहिन्	११६	३०	बदिर्द्वार	६२	११	बाहसनय	७७	४९
बहिपुष्प	९८	१३३	बदिष्ठ	२४६	१११	बाहमृण	१०८	१६०
बहिमुष	३	९	बहिस	२९२	१७	बाहमृषिका	१११	१२
बहिष	९६	१२३	बहु	२३०	६३	बाहा	३३	१३
बहिष	५	२५	बहुकर	२२८	१७	बालिश	२३५	४८
बल	१८७	७८	बहुगर्वाक	२३२	३६	बालेय	२३१	३७
बल	१९६	१०२	बहुपाद्	७२	३२	बालेयपाक	८७	९०
बल	२८८	१९४	बहुप्रद	२२६	६	बाल्य	१२८	४०
बलदेव	५	२३	बहुमूल्य	१५०	११३	बाल्य	२०१	१३०
			बहुरूप	१५६	१२८	बाल्य	३०३	४७
						बाहु	१८३	८७

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
बाहुज	१७१	१	बुका	१३७	६४	ब्रह्मबिम्बु	१६७	६९
बाहुदा	५१	३३	बुद्ध	{ ३	१३	ब्रह्मभूय	१७०	५२
बाहुमूल	१४३	७९	बुद्धि	{ २४६	१०८	ब्रह्मयज्ञ	१६१	१४
बाहुयुद्ध	१९३	१०६	बुद्धि	२४	१	ब्रह्मवर्चस	१६७	३९
बाहुल	२१	१८	बुद्बुद	२९९	१९	ब्रह्मसायुज्य	१७०	५२
बाहुलेय	७	४२	बुध	{ १६	२६	ब्रह्मस्	५	२८
बाह्य	{ १८१	४५	बुध	{ १५९	५	ब्रह्मसूत्र	१७०	५०
बाह्यिक	{ ३०२	३२	बुधित	{ २६८	१००	ब्रह्माञ्जलि	१६७	६९
"	{ १५३	१२४	बुधित	२४६	१०६	ब्रह्मासन	१६७	४०
बाह्यिक	{ १८१	४५	बुध्न	६७	१२	ब्राह्म	{ २२	२१
"	{ २०३	४०	बुभुक्षा	२०६	५४	ब्राह्म	{ १७०	५१
"	{ २५६	९	बुभुक्षित	१२०	२०	ब्राह्मण	१५८	४
बाह्य	२९२	१७	बुस	२००	२२	ब्राह्मणयष्टिका	८७	८९
बिदाल	११०	६	बुस्त	३०२	३४	ब्राह्मणी	८७	८९
बिदौजस्	७	४४	बृंहित	१९३	१२७	ब्राह्मण्य	२५५	४१
बिन्दु	४६	६	बृपी ( सी )	१६८	४६	ब्राह्मणी	{ ६	३७
बिन्दुजालक	१८०	३९	बृहत्	२३७	६०	ब्राह्मी	{ २७	१
बिम्ब	१४	१५	बृहत्तिका	१५१	११७	ब्राह्मी	{ १००	१३७
बिम्बिका	१००	१३९	बृहती	{ ८८	९३	भ		
बिल	४२	१	बृहती	{ २६५	७४	भ	१५	२१
बिलेशय	४३	८	बृहत्कुक्षि	१३०	४४	भक्त	२०५	४८
बिल्व	७२	३२	बृहन्नानु	९	५७	भक्षक	२२९	२०
बिस	{ ५३	४१	बृहत्पति	१५	२४	भक्षित	२४६	११०
"	{ ५३	४२	बोधकर	१९२	९७	भक्ष्यकार	२०१	२८
बिसकण्ठिका	११५	२५	बोधितुम	६९	२०	भग	{ १४२	७६
बिसप्रसून	५३	४१	बोल	११५	१०४	भग	{ २५९	२६
बिसिनी	५३	३९	ब्रध्न	१६	२८	भगन्दर	१३४	५६
बिस्त	२१२	८६	ब्रध्न	१६	२८	भगवत्	३	३३
बीज	{ २३	२८	ब्रह्मचारिन्	{ १५८	१	भगिनी	१२६	२९
"	{ १३६	६२	ब्रह्मचारिन्	{ १६८	१३	भक्त	४६	५
बीजकोश	५३	४३	ब्रह्मण्य	७५	४१	भक्ता	१९९	२०
बीजपुर	८५	७८	ब्रह्मत्व	१७०	५२	भक्ति	१९६	८
बीजाकृत	१९७	८	ब्रह्मदर्भा	१०१	१४५	भक्त्य	१९७	७
बीज्य	१५८	२	ब्रह्मदारु	७५	४१	भजमान	१७७	२४
"	{ ३७	१७	ब्रह्मन्	{ ४	१६	भट	१८४	६१
बीभत्स	{ ३८	१९	ब्रह्मन्	{ २७०	११४	भट्टिन्	२०४	४५
"	{ २८५	२३३	ब्रह्मपुत्र	{ ४४	१०	भट्टारक	३६	१३
शुक	६५	८१	ब्रह्मवन्धु	२६८	१०४			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
भट्टिनी	३४	१३	भव	{ ६ ३६ २८१ २०५		भार्गवी	१०५	१५८
भण्टाकी	९३	११४	भवन	५९	५	भार्गी	८७	८९
भण्डल	८०	६३	भवानी	३	३९	भार्या	१२०	६
भण्डी	८७	९१	भविक	२२	२३	भार्यापती	१२८	३८
भण्डीरी	८७	९१	भवितृ	२३१	२९	माव	{ ३६ १२ ३८ २१	
भद्र {	२२ २०७	२५ ५९	भविष्णु	२३१	२९	माव	{ २८२ २०७	
भद्रकुम्भ	१७९	३२	भव्य	२२	२६	भावित	{ १५६ १३४ २०५ ४६	
भद्रदारु	७७	५३	भयक	२२१	२२	भावित	{ २४५ १०४	
भद्रपर्णी	७३	३६	भय्या	२२३	३३	भावुक	२२	२६
भद्रबला	१०३	१५३	भस्मगन्धिनी	९५	१२०	भाषा	२७	१
भद्रमुस्तक	१०५	१६०	भस्मगर्भा	८०	६३	भाषित {	२७ १ २४६ १०७	
भद्रयव	८१	६७	भा	१७	३४	भाष्य	३०१	३१
भद्रश्री	१५५	१३१	भाग	२१३	८९	भास्	१७	३४
भद्रासन	१७९	३१	भागधेय {	२३ १७८	२८ २७	भास्कर	१६	२८
भय	३८	२१	भागिनेय	१३६	३२	भास्वत्	१६	२९
भयंकर	३८	२०	भागीरथी	५१	३१	भिक्षा {	२४८ ६ २८४ २२४	
भयहृत्	२३४	४२	भाग्य {	२३ २७५	२८ १५४	भिक्षु {	१५८ ३ १६७ ४२	
भयानक {	३७ ३८	१७ २०	भाजन	२०२	३३	भिक्ष	१४	१६
भर	१०	६९	भाण्ड {	२०१ २४१	३१ ४३	भित्ति	५९	४
भरण	२२४	३९	माद्र	२१	१७	भिदा	२४७	५
भरण्य	२२४	३९	माद्रपद	२१	१७	भिदुर	८	५०
भरण्यभुज्	२२९	१५	माद्रपदा	१५	२३	भिन्विपाळ	१९१	९१
भरत	२१९	१२	मानु {	१६ १७	३३ १०४	भिन्	{ २४० ८२ २४४ १००	
भरद्वाज	११२	१५	मासिनी	१२०	४	भिपन्	१३५	५७
भर्ग	६	३५	भार	२१३	८७	भिरस्तटा	२०५	४९
भर्तृ {	१२७ २६३	३५ ५९	भारत	५६	३	भिरसा	२०५	४८
भर्तृदारक	३६	१२	भारती	२७	१	भो	३८	९१
भर्तृदारिका	३६	१३	भारद्वाजी	९३	११६	भोधि	३८	३१
भर्त्सन	३०	१४	भारपटि	२२२	३०	भोन {	३८ २०	
भर्मन् {	२१४ २२४	९४ ३८	भारवाह	२२०	१५	भो	{ ३८ २०	
भष्ट	२९९	२१	भारिक	२२०	१५	भो	{ ३८ २०	
भष्टावली	७५	४९	भार्य	३६	२५	भो	{ ३८ २०	
भक्तुक	१०५	३						
भक्तक	१०५	४						

शाब्दः	पृष्ठे	बलोके	शाब्दः	पृष्ठे	बलोके	शाब्दः	पृष्ठे	बलोके
मीरुक	२३०	२६	भूमि	५५	२	भैरव	३८	१९
मीलुक	२३०	२६	भूमिजम्बुक {	७४	३८	भैषज्य	१३१	५०
मीषण	३८	२०	भूमिस्पृक्	९४	११८	भोग	२५८	२३
मीष्म	३८	२०	भूयस्	१९५	१	भोगवती	२६४	७०
मीष्मस्	५१	३१	भूयिष्ठ	२३७	६३	भोगिन्	४३	८
मुक्त	२४६	१११	भूरि {	२३७	६३	भोगिनी	१२०	५
भुम्भ {	२३९	७१	भूरि	२७८	१८२	भोस्	२९०	७
भुम्भ	२४९	९१	भूरिकेना	१०१	१४३	भौम	१६	२५
भुज	१४३	८०	भूरिमाय	११०	५	भौरिक	१४६	७
भुजग	४३	६	भूरुण्दी	८२	६९	भंवा	१४७	२३
भुजंग	४३	६	भूर्ज	७६	४६	भकुंस	३६	११
भुजंगभुज	११६	३०	भूषण	१४८	१०१	भुकुटि	४३	१७
भुजंगम	४३	६	भूषित	१४७	१००	भ्रम {	२४	४
भुजंगाक्षी	९३	११५	भूषणु	२३१	२९	भ्रम	४६	७
भुजगिरस्	१४३	७८	भूस्तृण	१०७	१६७	भ्रम	२४८	९
भुजान्तर	१४३	७७	भृगु	६४	४	भ्रमर	११६	२९
भुजिष्य	२२०	१७	भृङ्ग {	९८	१३४	भ्रमरक	१४६	९६
भुवन {	४५	३	भृङ्ग	११३	१६	भ्रमि	२४८	९
भुवन	५६	६	भृङ्गराज	११६	२९	भ्रष्ट	२४५	१०४
भू {	५५	२	भृङ्गार	१०३	१५१	भ्राजिष्णु	१४८	१०१
भूत {	३	११	भृङ्गार	१७९	३२	भ्रातरौ	१२८	३६
भूत	२४५	१०४	भृङ्गारी	११६	२८	भ्रातृज	१२८	३६
भूतकेश	२४५	७७	भृङ्गिन्	७	४३	भ्रातृनाया	१२६	३०
भूतवेशी	२१७	१११	भृत्तक	२९०	१५	भ्रातृभगिन्यौ	१२८	३६
भूतवेशी	८२	७१	भृत्ति	२२४	३८	भ्रातृव्य	२७४	१४५
भूतात्मन्	२६९	१०५	भृत्तिभुज	२२०	१५	भ्रात्रीय	१२८	३६
भूतावास	७९	५८	भृत्या	२२४	३८	भ्रान्ति	२४	४
भृति {	६	३८	भृत्य	२२०	१७	भ्राष्ट्र	२०२	३०
भृति	२६४	६९	भृश	१०	७०	भ्रकुंस	३६	११
भृत्तिक	२५६	८	भृशयव	२०५	४७	भ्रकुडी	४२	३७
भृतैक्ष	६	३३	भेक	५०	२४	भ्रू	१४६	९२
भूदार	१०९	२	भेकी	५०	२४	भ्रुकुंस	३६	११
भूवेश	६	३३	भेद {	१७६	२०	भ्रुकुडी	४२	३७
भूमिम्भ	१०१	१४३	भेद	१७७	२१	भ्रू	१४६	९२
भूप	१०१	१	भेदित	२४५	१००	भ्रू	१४६	९२
भूपदी	८२	७०	भेरी	३५	६	भ्रू	१४६	९२
भूस्पृ	२६३	६०	भेषज	१३१	५०	भ्रू	१४६	९२
भूमन्	२९२	१७	भैक्ष	१६९	४७	भ्रू	१४६	९२

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
श्रेय	१००	२३	मण्डलक	१३३	५४	मद्गुर	४८	१९
म.			मण्डलाम्र	१९०	८९	मद्य	२२४	४०
मकर	४९	२०	मण्डलेश्वर	१०२	२	मधु	२०	१५
मकरध्वज	५	२७	मण्डहारक	२१९	१०	मधु	२१४	१०७
मकरन्द	६९	१७	मण्डित	१४७	१००	मधु	२२४	४१
मकुष्ठक	१९९	१३	मण्डूक	५०	२४	मधुक	२४८	१०२
मकुलक	१०१	१४४	मण्डूकपर्ण	७८	५६	मधुक	९१	१०९
मक्षिका	११६	२६	मण्डूकपर्णी	८७	९१	मधुकर	११६	२९
मक्ष	१६१	१३	मण्डूर	२१४	९८	मधुक्रम	२२४	४१
मगाध	१९२	९७	मतङ्गज	१७९	३४	मधुद्रुम	७१	२७
मघवन	७	४४	मतल्लिका	२३	२७	मधुप	७२	२९
मङ्गु	२८९	२	मति	२४	१	मधुपर्णिका	७३	३५
मङ्गल	२२	२५	मत्त	१७९	३६	मधुपर्णी	८६	९४
मङ्गल्यक	१९९	१७	मत्त	२३०	२३	मधुपर्णी	८६	८३
मङ्गल्या	१५४	१२७	मत्त	२४५	१०३	मधुमक्षिका	११६	२६
मन्त्रिका	२३	२७	मत्तकाशिली	१२०	४	मधुमष्टिका	९१	१०९
मञ्ज	६७	१२	मत्तसर	२७७	१०२	मधुर	२५	९
मञ्ज	१५७	१३८	मत्स्य	४८	१७	मधुर	२७९	१९०
मञ्जरी	६८	१३	मत्स्यण्डी	२०४	४३	मधुरक	१०१	१४२
मञ्जिष्ठा	८७	९०	मत्स्यपित्ता	८०	८६	मधुरसा	८६	८३
मञ्जोर	१४९	१०९	मत्स्यवेधन	४८	१६	मधुरसा	९१	१००
मञ्जु	२३६	५२	मत्स्याक्षी	१००	१३७	मधुरा	१०३	१५२
मञ्जुक	२३६	५२	मत्स्यास्थग	२८३	२१८	मधुरिका	४	२०
मञ्जुषा	२२२	३०	मत्स्याधानी	४८	१६	मधुरिषु	९०	१०५
मठ	६०	८	मयित	२०६	५३	मधुलिह	११६	२९
मद्ध	३५	८	मयिन्	२१०	७४	मधुवार	२३४	४०
मणि	२१४	९३	मद	१८०	३७	मधुमत	११६	२९
मणिक	२०२	३१	मद	२४९	१२	मधुनिम्ब	७२	३३
मणिबन्ध	१४३	८१	मदकक	१७९	९१	मधुश्रेणी	८६	८४
मण्ड	७७	५१	मदन	१७९	३५	मधुष्टिक	७१	२८
मण्डन	२०९	४९	मदन	५	२५	मधुखवा	१०१	१४२
मण्डन	१४८	१०२	मदन	७३	५३	मधु	७१	२३
मण्डप	२३१	२९	मदन	८४	७८	मधुष्टिष्ट	२१६	१००
मण्डप	६०	९	मदस्थान	२२४	४१	मधुलक	७१	२८
मण्डल	१३	३	मदिरा	२२४	४०	मधुलिका	८६	८४
मण्डल	१४	१५	मदिरागृह	६०	८	मधु	११६	७९
मण्डल	१०	३२	मदोत्कट	१०९	३५	मधु	२७९	१६०
			मद्गु	११०	३२	मधुरेण	५१	०

शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके
मध्यम	{ ३३ ५६ १४३	{ १ ७ ७९	मन्दगामिन्	१८६	७२	मर्कट	१०९	३
मध्यमा	{ १२१ १४३	{ ८ ८२	मन्दाकिनी	८	५२	मर्कटक	११२	१३
मध्याह्न	१८	३	मन्दाक्ष	३९	२३	मर्कटी	{ ७८ ८७	{ ४८ ८७
मध्वासव	२२४	४१	मन्दार	{ ७१ ७१	{ ५३ २६	मर्त्य	११९	१
मनःशिला	२१६	१०८	मन्दिर	६०	५	मर्दन	२५२	२२
मनस्	२४	३१	मन्दुरा	६०	७	मर्दल	३५	८
मनसिज	५	२७	मन्दोष्ण	१७	३५	मर्मन्	३०१	३०
मनस्कार	२४	२	मन्त्र	३४	२	मर्मर	३३	२३
मनाक्	२९०	८	मन्मथ	{ ५ ७०	{ २६ २१	मर्मस्युद्ग	२४०	८३
मनित	२४६	१०८	मन्या	१३८	६५	मर्यादा	१७८	२६
मनीषा	२४	१	मन्यु	{ ३९ २०५	{ २५ १५३	मल	{ १३८ २८०	{ ६५ १९७
मनीषिन्	१५८	५	मन्वन्तर	२२	२२	मलवूषित	२३६	५५
मनु	३०३	३८	मय	२१०	७५	मलयज	१५५	१३१
मनुज	११९	१	मयु	११	७४	मलयू	८०	६१
मनुष्य	११९	१	मयुष्टक	१९९	१७	मलिन	२३६	५५
मनुष्यधर्मन्	११	५२	मयूख	{ १७ २५८	{ ३३ १८	मलिनी	१२४	२०
मनोगुप्ता	२१६	१९८	मयूर	{ ९१ ११६	{ १११ ३०	मलिमल्लुच	२२१	२५
मनोजवस	२२८	१३	मयूरक	{ ८७ २१५	{ ८८ १०१	मलीमस	२३६	५५
मनोज्ञ	२३६	५२	मरकत	२१३	९२	मल्ल	२९९	२१
मनोरथ	४०	२७	मरण	१९५	११६	मल्लुक	३०३	३७
मनोरम	२३६	५२	मरीच	२०३	३६	मल्लिका	८२	६९
मनोहत	२३३	४१	मरीचि	{ १६ १७	{ २७ ३३	मल्लिकाक्ष	११५	२४
मनोह्ला	२१६	१०८	मरीचिका	१७	३५	मल्लिगन्धि	१५४	१२७
मन्तु	१७८	२६	मरु	{ ५५ २०६	{ ५ १६२	मसी	२९१	१०
मंत्र	२०६	१६६	मरुत्	{ १० १२	{ ४५ २	मसूर	१९९	१७
मंत्रव्याख्याकृत्	१०	७	मरुत्व	{ १२ २६३	{ २ ५८	मसूरविदला	९१	१०९
मन्त्रिन्	१७२	४	मरुत्वत्	७	४४	मसृण	२०४	४६
मन्थ	२१०	७४	मरुन्माळा	९८	१३३	मस्कर	१०६	१६१
मन्थदण्डक	२१०	७४	मरुवक	{ ७७ ८५	{ १६२ ७९	मस्करिन्	१६७	४२
मन्थन्	२१०	७४				मस्तक	१४६	९५
मन्थनी	२१०	७४				मस्तिष्क	१३८	६५
मन्थर	१८६	७२				मस्तु	२०६	५४
मन्थान	२१०	७४				मह	४२	३८
मन्द	{ २२० २६७	{ १८ ९४				महत्	{ २३६ २६५	{ ६० ७८
						महती	३६४	६९

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
महस्	२८५	२३०	महोद्यम	२२६	३	मातुलुङ्गक	८५	७८
महाकन्द	१०२	१४८	महौषध	{ ८९ १०२ २०३	{ १०० १४८ ३८	मातृ	{ ४ ३७ १२६ २०८	{ ३७ १४ २९ ६६
महाकुल	१५८	३	मा	{ ५ २९१	{ २९ ११	मातृष्वस्त्रीय	१२५	२५
महाङ्ग	२१०	७५	मांस	{ १३७ २९९	{ ६३ २२	मातृष्वसेय	१२५	२५
महाजाली	९४	११७	मांसल	१३०	४४	मात्रा	{ २३७ २७७	{ ६२ १७७
महादेव	६	३४	मांसास्पशु	२६१	४२	माद	२४९	१२
महाधन	१५०	११३	मासिक	२२०	१४	माधव	{ ४ २०	{ १८ १९
महानस	२०१	२७	माक्षिक	२१६	१०७	माधवक	२२४	४१
महामात्र	१७३	५	मागध	{ १९२ २१७	{ ९७ २	माधवी	८४	७२
महायज्ञ	१६१	१४	मागधी	{ ८३ ८८	{ ७१ ९६	माध्वीक	२२४	४१
महारजत	२१४	९५	माघ	२०	१५	मान	{ ३९ २१२	{ २२ ८५
महारजन	२१६	१०६	माध्य	८३	७३	मानव	११९	१
महारण्य	६५	१	माठर	१७	३१	मानस	२४	३१
महाराजिक	३	१०	माठि	२९६	८	मानसौकस	११५	३३
महारौरव	४४	१	माणवक	{ १२९ १४९	{ ४२ १०६	मानिनी	११९	३
महाशय	२१६	३	माणव्य	२५५	४१	मानुष	११९	१
महाशूद्री	१२२	१३	माणिक्य	३०१	३१	मानुष्यक	२५५	४२
महाश्वेता	९२	११०	माणिमन्थ	२०४	४२	माया	२१९	११
महासहा	{ ८४ १००	{ ७३ १३८	मातङ्ग	{ २२० २५८	{ १९ २१	मायाकार	२१२	११
महासेन	७	४१	मातरपितरौ	१२८	३७	मायादेवीसुत	४	१५
महिला	११९	२	मातरिष्वन्	१०	६४	मायु	१३६	६२
महिलाङ्गया	७८	५५	मातङ्गि	७	४८	मायूर	११९	४३
महिष	११०	४	मातापितरौ	१२८	३७	मार	५	२६
महिषी	१२०	५	मातामह	१२७	३३	मारजित्	३	१३
मही	५५	३	मानुल	{ ८५ १२६	{ ७८ ३१	मारण	१९४	११४
महीक्षित्	१७१	१	मानुजपुत्रक	८५	७८	मारिष	३७	११
महीध्र	६३	१	मानुकारी	{ १२६ १५९	{ ३० २०	मारुत	१०	६५
महीरुह	६६	५	मानुकाहि	४३	६	मारुय	१०३	१५१
महीक्षता	४९	२१	मानुकी	१२६	३०	मार्ग	{ २० ५८	{ १४ १५
महीसुत	१८	२५				मार्गन	{ १९० २६५ २५३	{ ८७ ४९ ३०
महेश्व	२२६	३						
महेश्वरा	९६	१२४						
महेश्वर	६	३२						
महोक्ष	२०७	६१						
महोषल	५३	३२						
महोसाह	२५३	३						

शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके
मार्गशीर्ष	२०	१४	मिथ्याभिज्ञान	३०	१००	मुनि	३	१
मार्गित	२४५	१०५	मिथ्यामति	२४	४	मुनि	१६७	४
मार्जन	७२	३३	मिश्रयेया	९०	१०५	मुनि	३०३	३
मार्जिना	१५२	१२१	मिश्री	९८	१३४	मुनीन्द्र	३	१
मार्जार	११०	६	मिसी	९०	१०५	मुरज	३४	२
मार्जिता	२०४	४४	मिसी	१०३	१५२	मुरमर्दन	४	२
मार्तण्ड	१६	२९	मिहिका	१४	१८	मुरा	९६	१२
मार्तङ्गिक	२१९	१३	मिहिर	१६	२९	मुपित	२४१	८
मार्ष्टि	१५२	१२१	मीव	२४३	९६	मुष्क	१४२	७
मालक	८०	६२	मीन	४८	१७	मुष्कक	७४	३
मालती	८३	७२	मीनकेतन	५	२६	मुष्टिवन्ध	२५०	१
माला	१५६	१३५	मुकुट	१४८	१०२	मुसल	२०१	२
मालाकार	२१८	५	मुकुट	४	२३	मुसलिन	४	२
मालावृणक	१०७	१६७	मुकुट	९५	१२१	मुसली	९५	११०
मालिक	२१८	५	मुकुर	१५७	१४०	मुसली	१११	११
मालुधाम	४३	६	मुकुल	६९	१६	मुसल्य	२३४	४
मालूर	७२	३२	मुकुकुचुक	४३	६	मुस्तक	१०५	१५९
माल्य	१५६	१३५	मुक्ता	२१४	९३	मुस्ता	१०५	१५९
माल्यवत्	६३	३	मुक्तावली	१४८	१०५	मुहुस्	२८९	१
माषपर्णी	१००	१३८	मुक्तास्फोट	४९	२३	मुहुर्माषा	३१	१६
माषीण	१९७	७	मुक्ति	२५	६	मुहूर्त	१९	११
माष्य	१९७	७	मुख	६२	१९	मूक	२२८	१३
मास	२०	१२	मुख	१४५	८९	मूठ	२३५	४८
मासर	२०५	४९	मुख	२९९	२२	मूत	२४३	९५
मासिक	१६५	३१	मुखर	२३२	३६	मूत्र	१३९	६७
मासम	२९१	११	मुखवासन	२८	११	मूत्रकृच्छ्र	१३४	५६
माहिष्य	२१७	३	मुख्य	१६७	४०	मूत्रित	२४३	९६
माहेयी	२०८	६६	मुख्य	२३६	५७	मूर्ख	२३५	४८
मितरूपव	२३५	४८	मुण्ड	१३१	४८	मूर्च्छा	१९४	१०९
मिघ्र	१६	३०	मुण्ड	३०२	३४	मूर्च्छाल	१३६	६१
मिघ्र	१७४	९	मुण्डित	१३१	४८	मूर्च्छित	१३६	६१
मिघ्र	१७४	१२	मुण्डित	२४१	८५	मूर्च्छित	२६६	८२
मिघ्र	२७६	१६६	मुण्डित	२१९	१०	मूर्च्छित	१३६	६१
मिथस्	२८९	२५५	मुद्	२२	२४	मूर्च्छित	२३९	७६
मिथुन	११८	३८	मुद्गिर	१३	७	मूर्ति	१४०	७१
मिथ्या	२९१	१५	मुद्गपर्णी	९३	११३	मूर्ति	२६४	६६
मिथ्यादृष्टि	२४	४	मुद्गर	१९१	९१	मूर्तिमत्	२३९	७६
मिथ्याभियोग	३०	१०	मुधा	२८९	४	मूर्द्धन्	१४६	९५



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
मूर्द्धाभिपिक्त	{ १७१ २१३	१ ६१	मृदानी	६	३९	मेदक	२२४	४२
मूर्वा	८६	८३	मृणाल	५३	४१	मेदस्	१३७	६४
मूल	{ ६८ १८०	१२ २००	मृणाढी	२९६	७	मेदिनी	५५	३
मूलक	१०५	१५७	मृत	{ १९५ १९६	११७ ३	मेदुर	२३१	३०
मूलकमन्	२४७	४	मृतस्नात	२२९	१९	मेघा	२४	२
मूलधन	२११	७९	मृत्	५४	४	मेघि	१९८	१५
मूल्य	{ २११ २२४	७९ ३९	मृत्तलक	९८	१३१	मेघ्य	२३६	५५
मूपक	१११	१२	मृत्तिका	५४	४	मेनकारमजा	७	४०
मूपी	{ २२३ ३०३	३३ ३८	मृत्त्यु	१९५	११६	मेरु	८	५२
मूपिकपर्णी	८७	८८	मृत्युजय	६	३३	मेलक	२५३	२९
मूपित	२४१	८८	मृत्सा	५५	४	मेप	{ १६ २११	२७ ७६
मृग	{ ११० २५३ २५८	८ ३० २०	मृत्स्ना	{ ५५ ९८	४ १३१	मेपकम्बल	२१६	१४७
मृगणा	२५३	३०	मृत्त	३५	५	मेह	१३४	५६
मृगतृष्णा	१७	३५	मृदु	{ २३९ २६७	७८ ९४	मेहन	१४२	७६
मृगदंशक	२२१	२१	मृदुवच्	७६	४६	मैत्रावरुणि	१५	२०
मृगभूर्तक	११०	५	मृदुल	२३९	७८	मैत्री	३०३	३९
मृगनाभि	१५४	१२९	मृद्वीका	९१	१०७	मैथ्य	३०३	३९
मृगवधाजीव	२२१	२१	मृध	१९३	१०४	मैथुन	{ १७१ ३७०	५७ १२१
मृगबन्धनी	२२१	२६	मृषा	२९१	१५	मैरेय	२२४	४२
मृगमद्	१५४	१२१	मृपार्थक	३२	२१	मोक्ष	{ २५ ७४	७ ३९
मृगया	२२१	२३	मृष्ट	२३६	५६	मोघ	२४०	८१
मृगयु	२२१	२१	मेकलकन्यका	५१	३२	मोघा	७८	५४
मृगरोमज	१५०	१११	मेघाद्या	{ १४९ १९०	१०८ ९०	मोचक	७२	११
मृगय्य	२२१	२३	मेघ	१३	६	मोघा	{ ७६ ७३	४६ १११
मृगपिरस्	१५	२३	मेघपोतिस्	१३	१०	मोक्षक	३०२	३३
मृगदीर्घ	१५	२३	मेघनादानुकासिन्	११६	३०	मोक्ष	२१६	११०
मृगाङ्ग	१४	१४	मेघनामन्	१०५	१५९	मोक्षटा	८६	८३
मृगादन	१०९	१	मेघनिर्घोष	१३	८	मोषक	२२१	२४
मृगित	२४५	१०५	मेघपुङ्गव	४५	५	मोद	११४	१०९
मृगोद्	१०९	१	मेघमाढा	१३	४	मोदिहक	२१४	५२
मृग्या	१५२	१२१	मेघपादन	७	४०	मोक्षान	१२७	८
मृष्ट	६	३३	मेचक	{ २९ ११०	१४ ३१	मोन	१६६	३६
			मेष्ट	{ १४३ २११	७६ ७१	मोक्षिक	२१९	११
						मोक्षी	१८९	८१

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
मौलि	२८०	१९२	यन्तु	{ १८४	५९	यातृ	१२३	३०
मौष्टा	२९१	५		{ २६३	५९	यात्रा	{ १९१	९५
मौहूर्त	१७५	१४		{ ९	६१		{ २७७	१७५
मोहूर्तिक	१७५	१४	यम	{ १६९	४९	यादःपति	४५	२
म्लिष्ट	३२	२१		{ २५१	१८	यादस्	४९	२०
म्लेच्छदेश	५६	७	यमराट्	९	६१	यादसाम्पति	१०	६४
म्लेच्छमुख	२१४	९७	यमुना	५१	३२	यान	{ १७६	१८
य.			यमुनाभ्रातृ	९	६१		{ १८४	५८
यकृत्	१३८	६६	ययु	१८१	४५	यानमुख	१८४	५५
यक्ष	{ ३	११	यव	१९९	१५	याप्	२३६	५४
	{ ११	७३	यवक्य	१९७	७	याप्ययान	१६३	५३
यक्षकर्म	१५५	१३३	यवक्षार	२१६	१०८	याम	{ १८	६
यक्षधूप	१५४	१२७	यवफल	१०६	१६१		{ २५१	१८
यक्षराज्	११	७१	यवस	१०८	१६७	यामिनी	१८	४
यक्षमन्	१३२	५१	यवागू	२०५	५०	यामुन	२१५	१००
यजमान	१६०	८	यवाग्रज	२१६	१०८	यायजूक	१६०	८
यजुस्	२८	३	यवानिका	१०२	१४५	याव	१५३	१२५
यज्ञ	१६१	१३	यवास	८७	९१	यावक	१९९	१८
यज्ञपुरष	४	१२	यवीयस्	१२९	४३	यावत्	२८७	२४५
यज्ञाङ्ग	७०	२२	यव्य	१९०	७	यावन	१५४	१२८
यज्ञिय	१६४	१७	यज्ञपटह	३४	६	याष्टीक	१८६	७०
यज्वन्	१६०	८	यज्ञस्	३०	११	यास	८७	९१
यत्	२८९	३	यष्टि	३०३	३८	युक्त	१७७	२४
यतस्	२८९	३	यष्टीमधुक	९१	१०९	युक्तरसा	१००	१४०
यति	१६८	४४	यष्ट	१६०	८	युग	{ ११८	३८
यतिन्	१६८	४४	यार्ग	१६१	१३		{ २५८	२४
यथा	२९०	९	याचक	२३५	४९	युगकीलक	१९८	१४
यथाजात	२३५	४८	याचनक	२३५	४९	युगन्धर	{ १६४	५७
यथातथम्	२९२	१५	याचना	१६५	३२		{ ३००	२५
यथायथम्	२९१	१४	याचित	१९६	३	युगपत्	२९४	२२
यथार्थम्	२९२	१५	याचितक	१९६	४	युगपन्नक	७०	२२
यथाह्वर्ण	१७५	१३	याचना	{ १६५	३२	युगपाद्वर्ग	२०८	६३
यथास्वम्	२९१	१४		{ २४८	६	युगल	११८	३८
यथेप्सित	२०७	५७	याजक	१६२	१७	युग्म	११८	३८
यदि	२९१	१२	यातना	४४	३	युग्य	{ १८४	५८
यदृच्छा	२४७	२	यातयाम	२७४	१४५		{ २०८	६४
			यातृ	९	६३	युद्ध	१९३	१०३
			यातृधान	९	६३	युध्	१९३	१०६

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
युवति	१२१	८	रक्तचन्दन	१५५	१३२	रत्न	२१४	९३
युवन्	१२९	४१		२१७	१११		२७१	१२४
युवराज	३४	१२	रक्तपा	४९	२२	रत्नसानु	८	५२
यूथ	११९	४१	रक्तफला	१००	१३९	रत्नाकर	४५	२
यूथनाथ	१७९	३५	रक्तसन्ध्यक	५२	३६	रत्ति	१४४	८४
यूथप	१७९	३५	रक्तसरोरुह	५३	४१	रथ	७२	३०
यूथिका	८३	७१	रक्ताक्ष	१०२	१४६		१८३	५१
यूप	७५	४१	रक्तोत्पल	५३	४२	रथकट्या	१८३	५५
	३०३	३५	रक्ष'सभ	३०१	२७	रथकार	२१८	४
यूपक	२९९	१९		३	११		२१९	९
यूपकटक	१६२	१८	रक्षस्	९	६३	रथगुप्ति	१८४	५७
यूपखण्ड	२७४	१६७	रक्षित	२४५	१०६	रथहु	७१	२४
यूपाम्र	१४२	१९	रक्षिवर्ग	१७३	६	रथाक्ष	११५	३२
यूप	३०३	३५	रक्षण	२४८	८		१८४	५५
योगत्र	१९८	१३	रक्षु	१११	१६		१८४	५६
योग	२५८	२२	रक्ष	२१४	१०४	रथिक	१८७	७६
योगेष्ट	२१६	१०५	रक्षाजीव	२१८	७	रथिन्	१८४	६०
योग्य	९२	११२	रचना	१५४	१३७		१८७	७६
योजन	३०१	३०	रजक	२१९	१०	रथिन	१८७	७६
योजनवल्ली	८७	९१	रजत	२१४	९६	रथ्य	१८२	४४
योत्र	१९८	१३		२४५	७९	रथ्या	५९	३
योद्ष्ट	१८४	६१	रजनी	१८	४		१८४	५५
योध	१८४	६१		१०३	१५३	रद	१४५	९१
योधसराव	१९३	१०७	रजनीमुप	१८	६	रदन	१४५	९१
योनि	१४१	७४		२३	२९	रदनच्छद	१४५	९०
योषा	११९	२	रजस्	१२४	२१	रग्ध्र	४३	२
योषित्	११९	२		१९२	९८	रगस	२९९	२१
योतक	१७८	२८		२८५	२३०	रमणी	१२०	४
योतव	२१२	८५	रजस्वला	१२४	२०	रम्भा	९३	११३
योधत	१२४	१२	रज्जु	२२१	२७	रय	१०	६७
योधन	१२८	४०	रज्जन	१५५	१३२	रकटक	१५१	११६
र.			रजनी	८८	९५		२९८	१७
रदस्	१०	६७		१९३	१०४	रय	२१	३१
	२७	१५	रण	२४६	८	रयन	२३३	३८
रक	१३०	६४		२६३	४८	रयि	११	३१
	१५३	१२४	रण्या	८७	८८	रय्या	१४९	१०८
	३६५	७९	रत	१७१	७७	रयि	१०	३३
रक	८६	७३	रविपति	५	२०	रयिन	३७३	१३०

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
रस	२५	७	राजलिङ्ग	२६७	९२	राहु	१६	२६
	२६	९	राजवंश्य	१५८	१	रिक्तक	२३६	५६
	३७	१७	राजवत्	५७	१३	रिक्थ	२१३	९०
	२१५	९९	राजवृक्ष	७०	२३	रिक्थ	४२	३६
	२८४	२२६	राजसदन	६१	१०	रिटि	७	४३
रसगर्भ	२१५	१०२	राजसभा	२९६	९	रिपु	१७४	१०
रसज्ञा	१४५	९१	राजसूय	३०१	३१	रिष्ट	२६०	३६
रसना	१४५	९१	राजहंस	१३५	२४	रिष्टि	१९०	८९
रसाञ्जन	२१५	१०१	राजादन	७३	३५	रीढा	३९	२३
रसवती	२०५	२७		७६	४५	रीण	२४२	९२
रसा	५५	२	राजाहं	१५३	१२६	रीति	२१४	९७
	८६	८४	राजि	६६	४	रीतिपुष्प	२६४	६८
	९६	१२३	राजिका	१९९	१९		२१५	१०३
रसातल	४२	१	राजिल	४३	५	रुक्मप्रतिक्रिया	५०	५०
रसाल	७३	३३	राजीव	४८	१९	रुक्म	२१४	९५
	१०६	१६३		५३	४१	रुक्मकारक	२१८	८
रसाला	२०४	४४	राज्याङ्ग	१७५	१८	रुक्म	२८४	२२५
रसित	१३	८	राजि	१८	४	रुक्म	२४२	९१
रसोनक	१०२	१४८	राजिचर	९	६३	रुक्म	१७	३४
रह	१७७	२३	राजिचर	९	६३	रुक्मक	७७	५१
रहस	१७७	२२	राजान्त	२४	४		८५	७८
रहस्य	१७७	२३	राध	२०	१६		२०४	४३
राका	१९	८	राधा	१५	२२	रुचि	२१६	१०९
राक्षस	९	६२	राम	४	२४		१७	३४
राक्षसी	९७	१२८		१११	११	रुचिर	२५९	२९
राक्षा	१५३	१२५	रामठ	२७३	१४०	रुचिर	२३६	५२
राङ्गव	१५०	१११		२०३	४०		२३६	५१
राज्	१७१	१	रामा	१२०	४	रुच्य	२३६	५१
राजक	१७१	३	राम्भ	१६८	४६	रुज्	१३१	५१
राजकशेरु	२७९	१८८	राल	१५४	१२७	रुजा	१३१	५१
राजन्	१७१	१	राशि	११९	४२	रुत	३३	२५
	२६९	१११		२८२	२१३	रुदित	४१	३५
राजन्य	१७१	१	राष्ट्र	२७८	१८३	रुद्ध	२४२	९०
राजन्यक	१७१	४	राष्ट्रिका	८८	९४	रुद्र	३	१०
राजन्वत्	५७	१३	राष्ट्रिय	३६	१४		६	३६
राजबला	१०३	१५३	रासभ	२११	७७	रुद्राणी	१	२९
राजबीमिन्	१५८	२	राज्ञा	९३	११४	रुधिर	१३७	६४
राजराज	११	७२		१००	१४०		२९९	२२
						रुक्	१११	१०

शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके
रुशती	३१	१८	रोमाञ्च	४१	३५	लङ्का	२९६	७
रूप	४०	२६	रोष	३९	२६	लङ्कापिका	९८	१३३
रुहा	१०५	१५८	रोहिणी	२०८	६७	लज्जा	३९	२३
रूप	२५	७	रोहिष	१३	१०	लज्जाशील	२३०	२८
रूपाजीवा	१२३	१९	रोहित	२७	१५	लज्जित	२४२	११
रूप्य	२१३	९१	रोहितक	४८	१९	लटा	२९६	१०
रूप्य	२१३	९१	रोहितक	१११	१०	लटा	३७	९
रूप्याध्यक्ष	२७५	१३०	रोहिताश्व	७७	४९	लटा	६७	११
रूपित	१७४	७	रोहित	९	५८	लटा	७८	५५
रूपित	२४२	८९	रोहित	७७	४९	लटा	८३	७२
रेचित	१६९	४८	रोद्र	३७	१७	लटा	९८	१३३
रेणु	१९२	९८	रोद्र	३८	२०	लताकं	१०३	१५०
रेणुक	१९९	१६	रौमक	२०४	४२	लताकं	१०२	१४८
रेणुका	९५	१२०	रौरव	४४	१	लपन	१४५	८९
रेतस्	१३६	६२	रौहिण्य	५	२५	लपित	२७	१
रेफ	२३६	५४	रौहिण्य	१६	२६	लपित	२४६	१०७
रेवतीरमण	२७२	टि.	रौहिण्य	१०७	१६६	लप्य	२४५	१०४
रेवा	५	२४	रौहिण्य	१११	१०	लप्यवर्ण	११९	६
रेवा	५१	३३	ल.	ल.	ल.	लप्यवर्ण	१६०	१०
रे (राः)	२१३	९०	लकुच	७९	६०	लप्य	१०६	२४
रे (राः)	२७६	१३५	लक्ष	१९०	८६	लप्यन	१४८	१०४
रोक	४२	२	लक्षग	१४	१७	लप्योदर	६	३१
रोग	१३१	५१	लक्षमग	२३८	१४	लप्य	३६	९
रोगहारिन्	१३५	५७	लक्षमणा	११५	२५	लप्य	११९	३
रोचन	७६	४७	लक्षमन्	१४	१७	लप्यन्तिका	१४८	१०४
रोचनी	६३	१०८	लक्षमन्	२७१	१२४	लप्यन्तिका	१४६	९३
रोचिष्णु	१०२	१४६	लक्ष्मी	५	२८	लप्यन्तिका	१४८	१०३
रोचिष्	१४८	१०१	लक्ष्मी	९३	११२	लप्यन्तिका	२०३	१४३
रोचिष्	१७	३४	लक्ष्मीवत्	१४८	८२	लप्यन्तिका	१५६	१३५
रोदन	१४६	९३	लक्ष्मीवत्	२२८	१४	लप्यन्तिका	४०	३१
रोदनी	८८	९२	लक्ष्म	४१	३३	लप्य	२३७	६३
रोदसी	२८५	२२९	लक्ष्म	१९०	८६	लप्य	२५२	३४
रोदसी	२८५	२२९	लक्ष्म	२९९	१८	लप्य	१५३	१३५
रोपस्	४६	५	लक्ष्म	१६	१७	लप्य	२६	५
रोप	१२०	८७	लक्ष्मक	२२५	७१	लप्य	१०३	४१
रोमन्	१४०	९२	लक्ष्मक	१७	३८	लप्य	१००	२३
रोमन्ध	२९९	१९	लक्ष्म	९८	१३३	लप्य	४५	२
रोमन्ध	४३	३५	लक्ष्म	२५९	२८	लप्य	२५२	२४
रोमन्ध	४३	३५	लक्ष्म	१००	१३५	लप्य	१९८	१६

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
लशुन	१०२	१४८	लुठित	१८३	५०	लोहकारक	२१८	७
लस्तक	१८९	८५	लुब्ध	२२९	२२	लोहपृष्ठ	११३	१६
लाक्षा	{ १५३ २९६	१२५ १०	लुब्धक	२२१	२१	लोहक	२३२	३७
लाक्षाप्रसादन	७५	४१	लुलाय	११०	४	लोहाभिसार	१९१	९४
लाङ्गल	१९८	१३	लूना	२४५	१०३	लोहित	{ २७ १३७	१५ ६४
लाङ्गलदण्ड	१९८	१४	लूम	१८३	५०	लोहितक	२१३	९२
लाङ्गलपद्धति	१९८	१४	लेख	३	८	लोहितचन्दन	१५३	१२४
लाङ्गलिकी	९४	११८	लेखक	१७५	१५	लोहिताङ्ग	१६	२५
लाङ्गली	{ ९२ १०८	१११ १६८	लेखपत्र	७	४५	व.		
लाङ्गुल(लाङ्गुल)	१८३	५०	लेखा	६६	४	व	२९०	९
लाजा	२०५	४७	लेपक	२१८	६		{ १०६ १५८ २८२	१६० १ २१३
लाञ्छन	१४	१७	लेश	२३७	६२	वंश		
लाभ	२११	८०	लेष्टु	१९८	१२	वंशरोचना	२१६	१०९
लामज्जक	१०७	१६५	लेह	२०७	५६	वंशिक	१५३	१२६
लालसा	{ ४० २८४	२८ २२८	लोक	{ ५६ २५६	६ २	वक्तव्य	२७५	१५९
लाला	१३९	६७	लोकजित्	३	१३	वक्तृ	२३२	३५
लालाटिक	२५७	१७	लोकमाता	५	२९	वक्त्र	१४५	८९
लाद	११७	३५	लोकायत	३०२	३२	वक्र	२३८	७१
लासिका	३५	८	लोकालोक	६३	२	वक्षस	१४२	७८
लास्य	३६	१९	लोकेश	४	१६	वंक्षण	१४०	७३
लिकुच	७९	६०	लोचन	१४६	९३	वङ्ग	२१६	१०६
लिक्षा	२९६	१०	लोचमस्तक	९२	१११	वचन	२७	१
लिखित	१७५	१६	लोघ	७२	३३	वचनेस्थित	२३०	२४
लिङ्ग	२५८	२५	लोपासुद्रा	१५	२०	वचस्	२७	१
लिङ्गवृत्ति	१७०	५४	लोप्त्र	२२१	२५	वचा	८९	१०२
लिपि	१७५	१६	लोमन्	१४०	९९		{ ८ ९० २७८	५० १०५ १८४
लिपिकर	१७५	१५	लोमशा	९८	१३४	वज्र		
लिप्त	२४२	९०	लोल	{ २३९ २८१	७४ २०४	वज्रनिर्घोष	१३	१०
लिप्तक	१९०	८८	लोलुप	२२९	२३	वज्रपुरष	८४	७६
लिप्सा	४०	२७	लोलुभ	२२९	२३	वज्रिन्	७	४५
लिबि	१७५	१६	लोष्ठ	१९८	१२	वज्रक	{ ११० २३५	५ ४७
लीढ	२४६	११०	लोष्टमेदन	१९८	१२	वज्रित	२३३	४१
लीला	{ ४१ ४१ २८०	३२ ३२ १९८	लोह	{ १५३ २१४ २१४ ३००	१२६ ९८ ९९ २३	वज्जुल	{ ७१ ७२ ८१	२७ ३० ६४

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
वट	७२	३२	वनशृङ्गाट	८९	९९	वरवर्णिनी	{ १२०	४
वटक	२९८	१७	वनस्पति	६६	६		{ २०३	४१
वटी	२२२	२७	वनायुज	१८१	४५	वराङ्ग	२५५	२६
वडवा	१८२	४६	वनिता	{ ११९	२	वराङ्गक	९८	१३४
वडवानल	९	५९		{ २४५	७३		{ ५३	४३
वडू	२३७	६१	वनीयक	२३५	४९	वराढक	{ २२१	२७
वणिक्	२११	७८	वनौकस्	१०९	३		{ १०३	३८
वणिक्पथ	२६२	५२	वन्दा	८६	८२	वरारोहा	१२०	४
वणिज्या	२११	७९	वन्दाक	२३०	२८	वरात्रि	१५१	११६
वण्टक	२१३	८९	वन्ध्य	६६	७	वराह	१०९	२
	{ १४२	७८	वन्ध्या	२०९	६९	वरिवसित	२४५	१०२
वरस	{ २०८	६२	वन्या	६६	४	वरिवस्या	१६६	३५
	{ २८४	२२५	वपा	{ ४२	२	वरिवस्थित	२४५	१४२
वरसक	८१	६६		{ १३७	६	वरिष्ठ	२१४	९७
वरसतर	२०८	६२	वपुस्	१४०	७०	वरिष्ठ	२४६	१११
वरसनाभ	४४	११		{ ५९	३	वरी	८९	१००
वरसर	{ २०	१३	वप्र	{ १९८	११	वरीयस्	२८६	२३३
	{ २१	२०		{ २१६	१०५		{ १०	३४
वरसल	२२०	१४				वरुण	{ १२	२
वरसादनी	८६	८२	वमयु	{ १३४	५५		{ ७०	२५
वद	२३२	३५		{ १८०	३०	वरुणारमजा	२२३	३९
वदन	१४५	८९	वमि	१३४	५५	वरुध	१८३	५७
वदान्य	{ २२६	६	वयस्	२८५	२२९	वरुधिनी	१८७	७८
	{ २७५	१६०	वयस्थ	१२९	४२	वरुण्य	२३६	५०
वदावद	२३२	३५		{ ५९	५८	वरुं	२२१	११
वध	१९४	११५	वयरथा	{ १००	१३७	वर्य	५१८	४१
	{ ९८	१३३		{ १०१	१४७	वर्धस्	२८५	१३०
वधू	{ ११९	२	वयस्य	१७४	१९	वर्धस्क	१३३	४८
	{ १२१	९	वयस्या	१२२	१२		{ ११८	१
	{ २६८	१०१		{ १५३	१२४	वर्ज	{ १८१	३२
वधू	२३४	४५	व	{ २४८	८		{ २६१	४३
	{ ४५	२		{ २७७	१०२	वर्जक	{ ११६	१२३
वध	{ ३५	१	वार्ता	{ ११५	२५		{ १०३	३८
	{ २७१	१२६		{ ११६	२३	वर्जित	२४१	११०
वनविशिका	८६	८५	वरुण	{ ५९	३	वर्जित	१६८	६३
वनप्रिय	११३	१९		{ ७७	२५	वर्जित	११७	६१
वनमक्षिका	११६	२७	वरुण	२९९	१०	वर्जित	१०७	११
वामाजिन्	४	२१	वरुण	{ १८१	४३	वर्जित	{ ११५	१
वनजुद्ध	१९५	१०	वरुण	२२३	३	वर्जित	{ २६१	४७

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
वर्तनी	५८	१५	वस्तु	६८	१२	वस्त्रयोनि	१५०	११०
वर्ति	१५६	१३३	वस्तुकल	६८	१२	वस्त्रवेष्टमन्	१५२	१२०
वर्तिका	११७	३५	वस्तिगत	१८२	४८	वस्तु	२११	७९
वर्तिष्णु	२३१	२९	वस्तुगु	२०४	१४४	वस्तुसत्ता	१३८	६६
वर्तुल	२३८	६९	वस्तुमीक	५८	१४	वह	२०८	६३
वर्त्मन्	५८	१५	वस्तुकी	३४	३	वह्नि	९	५६
वर्धक	२७०	१२१	वस्तुभ	२३६	५३	वह्नि	१२	२
वर्धक	८७	९०	वस्तुभ	२७३	१३७	वह्निसंज्ञक	८५	८०
वर्धकि	२१९	९	वस्तुीर	६८	१३	वह्निशिक्ष	२१६	१०६
वर्धन	२३१	२८	वस्तुी	६७	९	वह्निशिक्ष	२८८	२४८
वर्धन	२४८	७	वस्तुी	६७	९	वा	२९०	९
वर्धमान	७७	५१	वस्तुी	१३०	६३	वा	२९२	१५
वर्धमानक	२०२	३२	वस्तुी	२४८	८	वा	२९२	३५
वर्धिष्णु	२३१	२८	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
वध्री	२३२	३१	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
वसन्	१८५	६४	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
वसित	१८५	६५	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
वयं	२३६	५७	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
वयं	१२१	७	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्णा	११३	२६	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	१३	११	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	५६	६	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	२८४	२२३	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	१०४	९	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	२१	१९	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	५०	२४	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	५०	२४	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	१२९	४३	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	१४	१२	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	१४०	७०	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	२७१	१२३	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	२५९	३१	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	२५९	३१	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	६२	१५	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	१४९	१०७	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	२४२	९०	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	६१	१४	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५
ववर्ण	१०९	३	वस्तुी	२४७	४	वा	२९२	३५



शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके
वाहव	{ ९ १५८ १८२	५९ ४ ४६	वामन	{ १२ १३० २३८	३ ४६ ७०	वाधुपिक	१९६	५
वाहवानळ	९	५९	वामलूर	५८	१४	वामण	२५५	४३
वाहव्य	२५५	४१	वामलोचना	११९	३	वार्षिक	१०३	१५०
वाणि	२२२	२८	वामा	११९	२	वाल	१४६	९५
वाणिज	२११	७८	वामी	१८२	४६	वालधि	१८३	५०
वाणिज्य	{ १९५ २११	१ ७९	वायदण्ड	२२२	२८	वालपावया	१४८	१०३
वाणिनी	२६९	११२	वायस	११४	२०	वालहस्त	१८३	५०
वाणी	२७	१	वायसाराति	११२	१५	वालुक	९५	१२१
वात	१०	६६	वायसी	१०३	१५१	वायक	१५०	१११
वातक	१०२	१४९	वायसोली	१०१	१४४	वावकूक	२३२	१५
वातकिन्	१३५	५९	वायु	१०	६४	वाशिका	९०	१०३
वातपोथ	७२	२९	वायुसख	९	५८	वाशित	३३	२५
वातप्रेमी	११०	७	वार	४५	३	वास	६०	६
वातमृग	११०	७	वार्	{ ११८ २७६	३९ १६१	वासक	९०	१०३
वातरोगिन्	१३५	५९	वारण	१७९	३४	वासगृह	६०	८
वातायन	६१	९	वारणनुसा	९३	११३	वासन्ती	८३	७२
वातायु	११०	८	वारवाण	१८५	६३	वासयोगा	१५३	१३४
वानूक	२८०	१९५	वारमुष्या	१२४	१९	वासर	१८	२
वाय्या	२८०	१९५	वारस्त्री	१२३	१९	वासव	७	४५
वासक	२०७	६०	वाराही	१०३	१५१	वासस्	१५१	११५
वादिश	३४	५	वारि	४५	३	वासित	{ १५६ २०५	१३४ ४६
वाय	३४	५	वारिव	१३	७	वासिता	१२१५	७५
वान	६८	१५	वारिपर्णी	५३	२८	वासुकि	४३	४
वानप्रस्थ	{ ७१ १५८	२८ ३	वारिप्रवाह	६४	७	वासुदेव	४	२०
वानर	१०९	३	वारिवाह	१३	६	वासु	३०	१४
वानस्पत्य	६४	६	वारी	१८१	४३	यास्तु	६३	१९
वानीर	७२	१०	वारुणी	२६२	५१	यास्तुक	१०५	१५८
वानेय	९८	१३१	वार्त	{ १३५ २६५	५७ ७५	यास्तोपति	७	४६
वापी	५०	२८	वार्ता	{ २९ १६५ २६५	७ १ ७५	वाय	{ १८३ १८१	५४ ४४
वाप्य	९६	१२६	वार्ताही	९३	११४	वाह	{ २१३ २१३	४६ ४६
वान	२७४	१४४	वार्तावद	१२०	१५	वाहद्विपत्	११०	४
वानदेव	१	३३	वार्धक	१२९	४०	वाहन	१८४	५८
			वाधुपि	१९६	५	वाहस	८३	१
						वाहिय	१८०	३९
						वाहिनी	{ १८७ १८८	४८ ४३

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
वाहिनीपति	१८५	६२	विघ्नराज	७	४०	वित्त	२१३	९०
वि	११७	३३	विचक्षण	१५९	६	वित्त	२२७	९
विंशति	२१२	८३	विचयन	२५३	३०	वित्त	२४४	९९
विकङ्कत	७४	३७	विचर्चिका	१३२	५३	विद्व	२४७	५
विकच	६४	७	विचारणा	२४	२	विदल	३०२	३९
विकर्तन	१४	२९	विचारित	२४४	९९	विदला	९१	१०९
विकलाङ्ग	१३०	४४	विचिकित्सा	२४	३	विदारक	४६	१०
विकसा	८७	९०	विच्छन्दक	६१	११	विदारी	९२	११०
विकसित	६४	८	विच्छाय	३००	२६	विदारिगन्धा	९३	११५
विकस्वर	२३०	३०	विजन	१७७	२२	विदित	२४६	१०८
विकार	२५०	१५	विजय	१९५	११०	विदित	२४६	१०९
विकासिन्	२३१	३०	विजिल	२०४	४४	विदिश	१२	५
विकिर	११७	३३	विज्ञ	२२६	४	विदु	१८०	३७
विकीरिण	८५	६०	विज्ञात	२२७	९	विदुर	७२	३०
विकुर्वाण	२२७	७	विज्ञान	२५	६	विदुर	२३०	३०
विकृत	३९	१९	विट्	१९५	१	विदुल	७२	३०
विकृति	१३५	५८	विट	२९८	१७	विदुल	२४४	९९
विक्रम	१९३	१०२	विटक	६२	१५	विद्वकर्णी	८६	८४
विक्रम	२७३	१४०	विटप	६८	१४	विद्याधर	३	११
विक्रय	२१२	८३	विटप	२७२	१३०	विद्यत्	१३	९
विक्रयिक	२११	७९	विटपिन्	३६	५	विद्वधि	१३४	५६
विक्रान्त	१८७	७७	विट्स्वदिर	७७	५०	विद्वव	१९९	१११
विक्रिया	२५०	१५	विट्चर	२२१	२३	विद्वत	२४४	१००
विक्रेतृ	२११	७९	विट्	२०४	४२	विद्वम	२१४	९३
विक्रेय	२११	८२	विडङ्ग	९१	१०६	विद्वमलता	९७	१२९
विक्रव	२३४	४४	वितण्डा	२९६	९	विद्वस्	१५९	५
विक्षाव	२५४	३७	वितथ	३२	२१	विद्वस्	२८५	२३३
विगत	२४४	१००	वितरण	१६४	२९	विद्वेष	३९	२५
विगतातेवा	१२४	२१	वितर्दि	६२	१६	विधवा	१२२	११
विग्र	१३०	४६	वितस्ति	१४४	८४	विधा	२२४	३६
विग्रह	१४०	७०	वितान	१४४	८४	विधा	२३८	१०१
विग्रह	१७६	१८	वितान	१५२	१२०	विधातृ	४	१७
विग्रह	१९३	१०४	वितुम्भ	१०२	११३	विधि	४	१७
विग्रह	२५१	२२	वितुम्भ	१०२	११३	विधि	३३	२८
विग्रह	१६४	२८	वितुम्भक	९७	१२६	विधि	१६७	४०
विग्रह	२५१	१९	वितुम्भक	२०३	३७	विधि	२६८	१०१
				२१५	१०१	विधिर्धर्मिन्	१६१	१६

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
विधु	४	२२	विपुल	२३७	६१	विरति	२५४	३७
विधुत	१४	१४	विप्र	१५८	४	विरल	२३८	६६
विधुनृद	२४८	९९	विप्रकार	२५०	१५	विराज्	१७१	१
विधुर	२४५	१०७	विप्रकृत	२३३	४१	विराव	३३	२३
विधुवन	१६	२६	विप्रकृतक	२३८	६१	विरिञ्चि	४	१७
विधूनन	२५१	२०	विप्रतीसार	३९	२५	विरूपाक्ष	६	३४
विधेय	२४०	४	विप्रयोग	२५३	२८	विरोचन	१६	३०
विनयग्राहिन्	२४७	४	विप्रलब्ध	२३३	४१	विरोध	३९	२५
विना	२३०	२४	विप्रलम्भ	४१	३६	विरोधन	२५१	२१
विनायक	२३०	२४	विप्रलाप	३१	१६	विरोधोक्ति	३१	१६
विनाश	२८९	३	विप्रश्रिका	१२४	२०	विरक्ष	२३०	२६
विनाशोन्मुख	३	१४	विप्रुप्	४६	६	विरक्षण	२४७	२
विनीत	७	४०	विप्रुव	२५०	१४	विरुन्वित	१५	९
विन्दु	२५६	६	विबंध	१३३	५४	विरुम्भ	२५३	२८
विन्ध्य	२५२	२२	विबुध	३	७	विराज	३१	१६
विन्न	१८१	४४	विभव	२१३	९०	विरास	४१	३१
विपक्ष	२३०	२५	विभाकर	१६	२८	विरलीन	२४४	१००
विपक्ष	२३१	३०	विभावरी	१८	४	विरुपेण	१५६	१३३
विपक्ष	६३	३	विभावसु	९	५९	विरुपेपी	२५३	२७
विपक्ष	२४४	९९	विभीतक	१६	३०	विवध	२०५	५०
विपक्ष	२४४	१०४	विभूति	७९	५८	विवध	२६८	५६
विपक्ष	१७४	११	विभूषण	६	३८	विवर	४२	१
विपक्ष	३४	३	विभूषण	१४८	१०१	विवर्ण	२२०	१६
विपक्ष	२१२	८३	विभ्रम	४०	३१	विवशा	२३४	४४
विपक्ष	५९	२	विभ्राज्	१४८	१०१	विघस्यत्	१६	२५
विपक्ष	२३३	५१	विमनस्	२२७	८	विवाद	२९	०
विपक्ष	१८९	८२	विमर्दन	२४९	१३	विवाह	१७१	१६
विपक्ष	५८	१६	विमला	१०१	१०३	विविक्त	१७७	२७
विपक्ष	१८९	८२	विमातृज	१२५	२५	विविक्त	२६६	८५
विपक्ष	२५४	३३	विमान	८	५१	विविध	२८३	३३
विपक्ष	२५४	३३	वियत्	१२	२	विष्किर	११७	३३
विपक्ष	१५९	५	वियत्	८	५२	विदेक	१६०	३८
विपाट	५१	३३	वियम	२५१	१८	विद्योक्त	४५	३१
विपाटिका	१३२	५२	वियात	२३०	२५	विज्ञ	२८३	२१३
विपाटिका	५१	३३	वियाम	२५१	१२	विशङ्क	२३०	३२
विपिन	६५	१	विराजस्वसू	१६८	४५	विशद	६६	१०

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
विशर	१९४	११५	विषय	२५	७	विस्तर	२५१	२२
विशय्या	८०	६३	विषय	५६	८	विस्तार	१८	१४
विशसन	९९	१३६	विषयिन्	२४८	११	विस्तृत	२५१	२२
विशास	२४५	१५५	विषयिन्	२७४	१५२	विस्फार	२४१	८६
विशास	१९४	११४	विषयैव	२५	८	विस्फोट	१९३	१०८
विशास्त्र	७	४२	विषय	४४	११	विस्फोट	१३३	५३
विशाखा	१५	२२	विषा	८८	९९	विस्मय	३८	१९
विशाय	२५४	३२	विषाक्त	१९०	८८	विस्मयान्वित	२३०	२६
विशारण	१९४	११२	विषाण	२६२	५५	विस्तृत	२४१	८६
विशारद	२६७	९५	विषाणी	९५	११९	विस्त्र	२६	१२
विशाल	२३४	६०	विषुव	२०	१४	विस्त्रम्भ	१७७	२३
विशालता	१५१	११४	विषुवत	२०	१४	विस्त्रसा	२७२	१३५
विशालत्वच्	७०	२३	विष्कम्भ	६२	१७	विस्त्रसा	१२९	४१
विशाला	१०४	१५६	विष्टप	५६	६	विहग	११७	३२
विशिख	१९०	८६	विष्टर	२७७	१६९	विहंग	११७	३२
विशिखा	५९	३	विष्टरश्रवस्	४	१८	विहङ्गम	११७	३२
विशेषक	१५२	१२३	विष्टि	४५	३	विहङ्गिका	२२२	३०
विश्राणन	१६४	२९	विष्टा	१३९	६८	विहसित	४१	३५
विश्राव	२५३	२८	विष्णु	४	१८	विहस्त	२३४	४३
विश्रुत	२२७	९	विष्णुकान्ता	९०	१०४	विहापित	६४	२९
विदध	३	१०	विष्णुपद	१२	२	विहायस्	१२	२
विदधकहु	२०१	३८	विष्णुपदी	५१	३१	विहायस	११७	३२
विदधकर्मन्	२३७	६५	विष्णुरथ	५	३१	विहार	१२	२
विदधभेषज	२२१	२२	विष्य	२३४	४५	विहार	२५०	१६
विदधवर्भर	२६९	१०८	विष्वक्	२९१	१३	विहल	२३४	४४
विदधवर्भरा	२०३	३८	विष्वक्सेन	४	१९	वीकाश	२८२	२१५
विदधवर्भर	४	२२	विष्वक्सेन	२३२	३४	वीचि	४६	५
विदधवर्भरा	५५	२	विष्वक्सेनप्रिया	१०३	१५१	वीणा	३४	३
विदधवर्भर	४	२३	विष्वक्सेना	७८	५६	वीणावाद	१८९	१३
विदधवर्भर	४	१७	विसंवाद	४२	३६	वीति	१८१	४३
विदधवर्भर	१३२	११	विसर	११८	३९	वीतंस	२२१	२६
विदधवर्भर	८८	९९	विसर्जन	११८	२९	वीति	१८१	४३
विदधवर्भर	१७७	२३	विसर्पण	२५२	२३	वीतिहोत्र	९	५६
विदधवर्भर	१३९	६८	विसार	४८	१७	वीथी	६६	४
विदधवर्भर	४४	९	विसारिन्	२३१	३१	वीथी	२६६	८७
विदधवर्भर	२८४	२२३	विस्त	२४१	८६	वीथ	२३६	५५
विदधवर्भर	४३	७	विस्तर	२३१	३१	वीनाह	५०	२७
विदधवर्भर	७०	२३	विस्तर	२३१	३१			

शब्द	पृष्ठ	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके
वीर	{ ३७ ३७ १८७	{ १७ १८ ७७	वृत्तान्त	{ ७९ २६३	{ ७ ६३	वृषण	१४२	७६
वीरण	१०६	१६४	वृत्ति	{ १९५ १९५ २६५	{ १ २ ७३	वृषदशक	११०	६
वीरतर	१०६	१६४	वृष	२७६	१६३	वृषध्वज	६	३६
वीरतरु	७५	४५	वृषहन्	७८	४५	वृषन्	७	४५
वीरपत्नी	१२३	१६	वृथा	{ २८७ २८९	{ २४६ ४	वृषभ	२०७	५९
वीरपान	१९३	१०३	वृद्ध	{ ९६ १२९ २६८	{ १२२ ४२ १००	वृषल	२१७	१
वीरभार्या	१२३	१६	वृद्धस्व	१२९	४०	वृषस्यन्ती	१२१	९
वीरमातृ	१२३	१६	वृद्धवारक	९९	१६७	वृषा	८७	८७
वीरबुद्ध	७५	४२	वृद्धनाभि	१३६	६१	वृषाकपायी	२७५	१५५
वीराशासन	१९२	१००	वृद्धश्रवस्	७	४४	वृषाकपि	२७१	१९९
वीरसु	१२३	१६	वृद्धसक्त	१२९	४०	वृषी	१६८	४६
वीरहन्	१७०	५३	वृद्धा	१२२	१२	वृष्टि	१३	११
वीरुध	६७	९	वृद्धि	{ १७६ २४८	{ १९ ९	वृष्टिणि	२११	७६
वीर्य	{ ४० १३६ २७५	{ २९ ६२ १५४	वृद्धिजीविका	१९६	४	वेग	२५६	२०
वीरध	२६८	९६	वृद्धिमत्	२६६	८५	वेगिन्	१८७	७३
वृक	११०	७	वृद्धिजीविका	१९६	४	वेणि	१४७	९८
वृकभूप	{ १५४ १५४	{ १२८ १२९	वृद्धिमत	२६६	८५	वेणी	८६	६९
वृकण	२४५	१०३	वृद्धिजीविका	१९६	४	वेणु	१०६	१६१
वृक्ष	६६	५	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेणुधम	२१९	१३
वृक्षमेदिन्	२२३	३४	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेतन	२२४	३८
वृक्षरहा	८६	८२	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेतस	७२	२९
वृक्षवाटिका	६५	२	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेतस्वत्	५६	९
वृक्षाशनी	{ ८६ २२३	{ ८२ ३४	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेताळ	२९९	२१
वृक्षाम्ब	२०३	३५	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेतवती	५२	३४
वृक्षिव	{ २३ २३८ २६९	{ २३ ७१ १०८	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेव	२६	३
वृत्त	२४२	९२	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेदना	२४०	६
वृत्ति	{ ५९ २४८	{ ३ ८	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेदि	१६२	१८
वृष	{ २३८ २४२ २६५	{ ६९ ९२ ७८	वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेदिका	६२	१६
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेव	२४८	८
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेधनिका	२२३	३४
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेधमुषपट	९९	१३५
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेधस्	{ ८ २८४	{ १० २६०
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेधित	२४४	९९
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेधु	४२	३८
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वधन्	२२६	२८
			वृद्धिजीविका	२०७	६१	वेका	१८०	१९८

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
वेळ	९१	१०६	वैधान्न	८	५४	व्यवाय	१७१	५
वेळज	२०३	३५	वैधेय	२३५	४८	व्यसन	२७०	१२
वेष्टित	{ २४१ २९९	८७ ७१	वैनतेय	५	३१	व्यसनात	२३४	४
वेष्टा	५९	२	वैनीतक	१८४	५८	व्यस्त	२३८	७
वेष्टान्त	५०	२८	वैमात्रेय	१२५	२५	व्याकुल	२३४	४
वेष्टमन्	५९	४	वैयाघ्र	१८३	५३	व्याकोश	६६	
वेष्टमभू	६३	१९	वैर	३९	२५	व्याघ्र	{ १०९ २३६	५
वेष्टया	१२३	१९	वैरनिर्यातन	१९४	११०	व्याघ्रनख	९७	१२
वेष्टयाजनसमाधाय	५९	२	वैरशुद्धि	१९४	११०	व्याघ्रपाद	७४	३
वेष्ट	१४७	९९	वैरिन्	१७४	१०	व्याघ्रपुच्छ	७७	५
वेष्टवार	२०३	३५	वैवधिक	२२०	१५	व्याघाट	११२	१५
वेष्टित	२४२	९०	वैवस्वत	९	६२	व्याघ्री	८८	९
वेष्ट	२०९	६९	वैशाख	{ २० २१०	१६ ७४	व्याज	{ ४० ४१	३० ३३
वै	{ २९० २९२	५ १५	वैश्य	१९५	१	व्याज	२६१	४२
वैकक्षिक	१५६	१३६	वैश्रवण	११	७२	व्याजयुध	९७	१२९
वैकुण्ठ	४	१८	वैश्वानर	९	५६	व्याध	२२१	२१
वैजनन	१२८	३९	वैसारिण	४८	१७	व्याधि	{ ९७ १३१	१२६ ५१
वैजयन्त	८	४९	वैषट्	२९०	८	व्याधिघात	७०	२४
वैजयन्तिक	१६६	७१	वैषक	२६३	६२	व्याधित	१३५	५८
वैजयन्तिका	८१	६५	वैषक्ति	२४	३१	व्यान	१०	६७
वैजयन्ती	१९१	९९	वैषग्र	२७९	१९०	व्यापाद	२४	४
वैज्ञानिक	२२६	४	वैषज्ञा	२७७	१७६	व्याप्य (वाप्य)	९७	१२६
वैणव	{ ६९ १६८	१८ ४६	वैषजन	१५७	१४०	व्याम	१४४	८७
वैणविक	२१९	१३	वैषज्जक	३७	१६	व्याल	{ ४३ २८०	७ १९५
वैणिक	२१९	१३	वैषजन	{ २७० ३००	११५ २३	व्यालगाहिन्	४४	११
वैणुक	१८०	४१	वैषत्यय	२५४	३३	व्यावृत्त	२४२	९२
वैतसिक	२२०	१४	वैषत्यास	२५४	३३	व्यास	२५१	२२
वैतनिक	२२०	१५	वैषथा	४४	३	व्याहार	२७	१
वैतरणी	४५	२	वैषध	२४८	८	व्युत्थान	२७०	११८
वैतालिक	१९२	९७	वैषध्व	५८	१६	व्युष्टि	२६०	३८
वैदेहक	{ २११ २१८	७८ ३	वैषय	२५१	१७	व्यूढ	२६१	४४
वैदेही	८८	९६	वैषलीक	२५७	१२	व्यूढककट	१८५	६५
वैद्य	१३५	५७	वैषवधा	१४	१२	व्यूति	२२२	२८
वैमारु	९०	१०३	वैषवसाय	२८२	२१३			
			वैषवहार	२९	९			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
व्यूह	{ ११८ १८८ २४७	{ ३९ ७९ २३७	शकुलादनी	{ ८७ ९२	{ ८६ १११	शतपर्वन्	१०६	१६१
व्यूहपारिण	१८८	७९	शकुलामंल	४८	१७	शतपर्विका	{ ८९ १०५	{ १०२ १५८
व्योकार	२१८	७	शकुत्	१३९	६७	शतपुष्पा	१०३	१५२
व्योमकेषा	६	३६	शकुत्करि	२०८	६२	शतप्रास	८४	७६
व्योमन्	१२	१	शक्ति	{ १७६ १९३ २६४	{ १९ १०२ ६३	शतमन्यु	६७	४५
व्योमयान	८	५१	शक्तिधर	७	४३	शतमान	३०२	३४
व्योष	२१७	१११	शक्तिहेतिक	१८६	६९	शतमूली	८९	१००
घन	{ ११८ २५९	{ ३९ ३०	शक्ति	{ ७ ८१	{ ४५ ६६	शतयष्टिका	१४९	१०५
घग्ना	{ १६६ १९१	{ ३६ ९५	शक्त	{ ७ ८१	{ ४५ ६६	शतवीर्या	१०५	१५९
घग	१६३	५४	शक्तधनुस्	१३	१०	शतवेधिन्	१००	१४१
घगकारि	२७९	१८८	शक्तशब्द	७७	५३	शतह्रस्वा	१३	९
घत	५६७	३८	शक्तपुष्पिका	९९	१३६	शताङ्ग	१८३	५१
घतति	{ ६७ २६४	{ ९ ६६	शक्त	२३२	३६	शतावरी	८९	१०१
घतिन्	१६०	७	शकर	६	३२	शतृ	{ १७४ १७४	{ ९ ११
घञन	२२३	३३	शकु	{ ४२ ६७ १९१	{ २० ८ ९३	शनैश्चर	१६	२६
घात	११८	३९	शङ्ख	{ ११ ४९ ९८ २५८	{ ७५ २३ १३० १८	शनैस्	२९२	१७
घात्य	१७०	५४	शङ्खनक्ष	४९	२३	शपथ	२९	९
घोषा	३९	२३	शङ्खिनी	९७	१२६	शपन	२९	९
घोहि	{ १९९ २००	{ १५ २१	शवी	७	४८	शक्त	१८२	४९
घोहिभेद	१९९	२०	शवीपति	७	४६	शक्ती	४८	१८
घोहेय	१९६	६	शशी	१०४	१५४	शवर	२१०	२०
श.			शश	२३५	४६	शवराकष	६३	२०
शङ्क	१८३	५२	शगपर्णा	१०२	१४९	शनक	२०	१७
शङ्क	१४	१६	शगपुष्पिका	९१	१०७	शधकी	२०९	६७
शङ्कन्	४८	१७	शगसूत्र	४८	१६	शङ्ख	{ २१ २७ ३१	{ ७ २ २२
शङ्कत	११७	३२	शत	२१२	८४	शङ्खग्रह	१४६	९७
शङ्कति	११७	३२	शतकोटि	८	५०	शङ्खन	२३३	३८
शङ्कुर	{ ११७ २६३	{ ३३ ५०	शतद्व	५१	३३	शर्मा	२४७	३
शङ्कुरि	११७	३२	शतपत्र	५३	४०	शमय	२४७	३
शङ्कुर	४८	१९	शतरश्मि	११३	१६	शमन	{ ९ १३४	{ ६१ २६
शङ्कुराश्रय	१०५	१५२	शतरश्मी	११२	१३	शमनस्वरसू	५१	३२
						शमन	१३९	६४
						शमित	२४४	२०

शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके	शब्दः	पृष्ठे	बलोके
शमी	७७	५२	शराव	२०२	३२	शास्त्रमार्ज	२१८	
शमी	२००	२३	शरावती	५२	३४	शास्त्राजीव	१८६	३
शमीधान्य	२००	२४	शरासन	१८९	८३	शास्त्री	१९१	९
शमीर	७७	५२	शरीर	१४०	७०	शाक	९९	१३
शम्पा	१३	९	शरीरिन्	२३	३०	शाक	२०२	३
शम्भ	८	५०	शरीरिन्	५७	११	शाकट	२०८	६
शम्बर	४५	४	शर्करा	२०४	४३	शाकुनिक	२२०	१
शम्बर	१११	१०	शर्करा	२७७	१७५	शाकीक	१८६	६
शम्बरारि	५	२७	शर्करावत्	५७	११	शाक्यमुनि	३	११
शम्बरी	८७	८७	शर्करिक	५७	११	शाक्यसिंह	३	१५
शम्बल	३०२	३४	शर्मन्	२२	२५	शास्त्रा	६७	११
शम्बाकृत	१९७	९	शर्व	३	३२	शास्त्रानगर	५९	२
शम्बूका	४९	२३	शर्वरी	१८	३	शास्त्राष्टग	१०९	३
शम्भली	१२४	१९	शर्वला(सर्वला)	१९१	९३	शास्त्राशिफा	६७	११
शम्भु	३	३३	शर्वाणी	३	३६	शाखिन्	६४	५
शम्भु	२७२	१३४	शल	११०	७	शाङ्गिक	२१८	८
शम्पा	१९८	१४	शलभ	११३	२८	शाटक	३०९	३३
शम्पाक	७०	२३	शलल	११०	७	शाटी	३०३	३८
शाय	१४३	८१	शलली	११०	७	शाठ्य	४०	३०
शायन	४२	३६	शल्लाटु	६८	१५	शाण	२२२	३२
शायन	१५७	१३८	शलक	२५७	१३	शाणी	२९६	९
शायनीय	१५७	१३७	शलक	७३	५३	शाण्डिल्य	७२	३२
शयालु	२३१	३३	शलक्य	११०	७	शात	२२	२५
शयित	२३२	३३	शलक्य	१९१	९३	शात	२४२	९१
शयु	४३	५	शलव	१९५	११८	शातकुम्भ	२१४	९४
शय्या	१५७	१३७	शलवा	१११	११	शातला	१०१	१४३
शय्या	१०६	१६३	शलवाधर	१४	१५	शात्रव	१७४	११
शर	१९०	८७	शलालोमन्	२१६	१०७	शाद	४६	९
शरजन्मन्	७	४१	शलालुन	११२	१४	शाद	२६७	८९
शरण	२६२	५३	शलशोर्ण	२१६	१०७	शादहरित	५७	१०
शरद	२१	१९	शलवत्	२८७	२४३	शाद्रक	५७	१०
शरद	२१	२०	शलवत्	२८९	१	शास्त्र	२४४	९७
शरद	२६७	९२	शलवत्	२९१	११	शास्त्र	२४७	३
शरभ	१११	११	शलवत्	१०८	१६७	शाबर	७२	३३
शरभ	१९०	८६	शलवत्	२२	२६	शास्वरी	२१९	११
शराभ्यास	१९०	८६	शलवत्	२४६	१०९	शार	२७६	१६५
शरारि	११५	२५	शलवत्	१८९	८२	शार	७	३३
शराव	२३१	३८	शलवत्	२७८	१७९	शारव	२६७	९४
			शलवत्	२१४	९८			



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
शारदी	९२	१११	शाखरिन्	६३	१	शिला	६१	१३
शारिफली	२२५	४६	शाखरिन्	२६२	१०६	शिला	६५	४
शारिवा	९२	११२	शाखा	९	६०	शिलाजतु	२१५	१०४
शाकर	५७	११	शाखा	११६	३१	शिली	५०	२४
शाङ्ग	५	३०	शाखा	१४७	९७	शिलीमुख	२५६	१८
शाङ्गिन्	४	१९	शाखा	२५८	१९	शिलोच्चय	६३	१
शाङ्गल	१०९	१	शाखावत्	९	५८	शिल्प	२२३	३५
शाङ्गल	२३६	५९	शाखावत्	११६	३०	शिल्पिन्	२१८	५
शाङ्गर	२७९	१८७	शाखिग्रीव	२१५	१०१	शिल्पिशाला	६०	७
शाल	४८	१९	शाखिन्	११६	३०	शिव	६	३२
शाल	६६	५	शाखिन्	२६९	१०६	शिव	२२	२५
शाला	६०	६	शाखिवाहन	९	४२	शिवक	२१०	७३
शाला	६७	११	शाम्र	७२	३१	शिवक	२१०	७३
शालावृक्ष	२५७	१२	शाम्र	२०९	३४	शिवमल्ली	८५	८१
शालि	२००	२४	शाम्रज(सिन्धुज)	२१६	११०	शिवमल्ली	६	३९
शालीन	२३०	२६	शाम्रज	३३	२४	शिवमल्ली	७७	५२
शालक	५३	३८	शाम्रिनी	१८९	८५	शिवमल्ली	७९	५९
शालूर	५०	२४	शाम्रिनी	१९९	१५	शिवमल्ली	९७	१२०
शालेय	९०	१०५	शाम्रिनी	२६६	८२	शिवमल्ली	११०	५
शालेय	१९६	६	शाम्रिनी	२६६	८२	शिवमल्ली	२८२	२११
शावमलि	७६	४६	शाम्रिनी	३	३४	शिवमल्ली	१५	१९
शावमल्लीवेष्ट	७६	४७	शाम्रिनी	७४	३८	शिवमल्ली	२१	१८
शावक	११८	३८	शाम्रिनी	२६०	३४	शिवमल्ली	११८	३८
शावक	२३९	७२	शाम्रिनी	६७	११	शिवमल्ली	४८	१८
शावकुलिक	२५५	४०	शाम्रिनी	५३	४३	शिवमल्ली	१२८	४०
शासन	१७७	२५	शाम्रिनी	१८३	५३	शिवमल्ली	४९	२०
शास्तु	३	१४	शाम्रिनी	१७९	३३	शिवमल्ली	१४९	७६
शास्त्र	२७८	१७९	शाम्रिनी	२००	२३	शिवमल्ली	२३४	४६
शास्त्रविद्	२३७	६	शाम्रिनी	१४३	९५	शिवमल्ली	१०८	२६
शिक्षापा	८०	६२	शाम्रिनी	१८५	६४	शिवमल्ली	१६०	११
शिक्षक	२२२	३०	शाम्रिनी	१७७	९८	शिवमल्ली	१३	११
शिक्षित	२४२	८९	शाम्रिनी	१३७	६५	शिवमल्ली	१०	६८
शिक्षा	२८	४	शाम्रिनी	८०	६३	शिवमल्ली	१५	१९
शिक्षित	२२६	४	शाम्रिनी	६७	१२	शिवमल्ली	१५	१९
शिक्षण	११६	३१	शाम्रिनी	१४४	८८	शिवमल्ली	७२	३२
शिक्षणक	१४७	९६	शाम्रिनी	१४८	१०२	शिवमल्ली	७३	३२
शिक्षण	६४	४	शाम्रिनी	१४३	९५	शिवमल्ली	२९९	२६
शिक्षण	६७	१२	शाम्रिनी	१९६	२	शिवमल्ली	२२०	३८

शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके
गीतल	{ १५ १०३	१९ १४९	शुनी	२२१	२२	शृङ्गवेर	२०३	३७
गीतशिव	{ ९ ९६ २०४	१०५ १२२ ४२	शुभ	{ २२ २१० ३००	२५ ७६ २३	शृङ्गाटक	५८	१७
गीधु	३०३	३४	शुभंयु	२३५	५०	शृङ्गार	३७	१७
गीर्ष	१४६	९५	शुभान्वित	२३५	५०	शृङ्गिणी	२०८	६६
गीर्षक	१८५	६३	शुभ	{ २६ २७९	१२ १९१	शृङ्गिन्	७	४३
गीर्षच्छेद्य	२३४	४५	शुभदन्ती	१२	५	शृङ्गी	{ ५० ८९	२५ १००
गीर्षण्य	{ १४७ १८५	९८ ६४	शुभांशु	१४	१४	शृङ्गीकनक	२१५	९६
गील	{ ३७ २८१	२६ २००	शुक्क	{ १७८ २१४	२७ ९७	शृत	२४३	९५
शुक	{ ९८ ११४	१३२ २१	शुक्ल	{ २२१ ३००	२७ २३	शेखर	१५६	१३६
शुकनास	७८	५७	शुश्रूषा	१६६	३५	शेफस्	१४२	४६
शुक्त	२६६	८२	शुष्कमांस	१३७	६३	शेफालिका	{ ८२ २९६	७० ७
शुक्ति	{ ४९ ९८	२३ १३०	शुष्म	१९३	१०२	शेमुषी	२४	१
शुक्र	{ ९ १६ ३० १३६	५९ २५ १६ ६२	शुष्मन्	९	५७	शेख	७३	३४
शुक्रल	२८३	२२०	शुक	२००	२३	शेवधि	११	७५
शुक्रशिष्य	३	१२	शुककीट	१३२	१४	शेवाल	५३	३८
शुल	{ २० २६	१२ १२	शुकधान्य	२००	२४	शेष	४३	४
शुच	३९	२५	शुकशिखि	८७	८७	शैक्ष	१६०	११
शुचि	{ ९ २० २६ ३७ २५९ २०३	५९ १६ १२ १७ २८ ३८	शुद्ध	२१७	१	शैखरि	८७	८८
शुण्डापान	२२४	४१	शुद्धा	१२२	१३	शैल	६३	१
शुतदि	५१	३३	शुद्धी	१२२	१३	शैलालिन्	२१९	१२
शुदान्त	{ ६१ २६४	१२ ६५	शुन्य	२३६	५६	शैलप	{ ७२ २१९	३२ १२
शुनक	२२१	२१	शुर	१८७	७७	शैलेय	९६	१२३
शुनासीर	७	४४	शूर्प	२०१	२६	शैवल	५३	३८
			शूल	२८०	१९६	शैवलिनी	५१	३०
			शूलकृत	२०४	४५	शैवाव	१२८	४०
			शूलिन्	६	३२	शोक	३९	२५
			शूल्य	२०४	४५	शोचिक्केश	९	५७
			शृगाल	११०	५	शोचिस्	१७	३४
			शृङ्गल	१४९	१०९	शोण	{ २७ ५२	१५ ३४
			शृङ्गलक	२१०	७५	शोणक	७८	५७
			शृङ्गला	१८१	४१	शोणरत्न	२१३	९२
			शृङ्ग	{ ६४ १०१	४ १४२	शोणित	१३७	६४
				{ २५८	२६	शोध	१३२	५२
						शोधघ्नी	१०२	१४९
						शोधनी	६२	१८

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
शोभित	{ २०४ २३६	४६ ५६	श्रवस	१४६	९४	श्रेयसी	{ ७९ ८६ ८८	५९ ८४ ९७
शोक	१३३	५२	श्रविष्ठा	१५	२२	श्रेष्ठ	२३६	५८
शोमन	२३६	५२	श्राणा	२०५	५०	श्रोण	१३१	४६
शोभा	१४	१७	श्राद्ध	१६४	३१	श्रोणि	१४१	७४
शोष	१३३	५१	श्राद्धदेव	९	६२	श्रोणिफलक	१४१	७४
शोक	११९	४३	श्राय	२४९	१२	श्रोत्र	१४६	९४
शौमिलकेय	४४	१०	श्रावण	२०	१६	श्रोत्रिय	१५९	६
शौक्य	१२९	४१	श्रावणिक	२०	१६	श्रौपट्	२९०	८
शौण्ड	२३०	२३	श्री	{ ५ १८८	२६ ८२	श्लक्ष्ण	२३७	६१
शौण्डिक	२१९	१०	श्रीकण्ठ	६	३४	श्लेष	२४९	११
शौण्डी	८६	९७	श्रीधन	३	१४	श्लेषमण	१३६	६०
शौद्धोदनि	४	१५	श्रीद	११	७३	श्लेषमन्	१३६	६२
शौरि	४	२१	श्रीपति	४	२१	श्लेषमल	१३६	६०
शौर्य	१९३	१०२	श्रीपर्ण	{ ८१ २६२	६६ ५३	श्लेषमातक	७३	३४
शौस्विक	२१९	८	श्रीपर्णी	७३	३६	श्लोक	२५६	२
शौकुल	२३९	१९	श्रीफल	७२	३२	श्वःश्रेयस्	२२	२५
श्च्योत	२४९	१०	श्रीफली	८८	९५	श्वदंष्ट्रा	८९	९८
श्मशान	१९५	११८	श्रीमत्	२२६	१४	श्वन्	२२०	२२
श्मश्रु	१४७	९९	श्रीमान्	७४	४०	श्वनिश	३०३	४०
श्माम	{ २६ २७३	१४ १४३	श्रील	२२८	१४	श्वपच	२२०	२०
श्मामल	{ २६ ७८ ९१ ९४ २७३	१४ ५५ १०६ ११२ १४३	श्रीवस	५	३०	श्वभ	{ ४२ २०८ २९९	२ १८४ २२
श्मामा	{ ९१ ९४ २७३	१०६ ११२ १४३	श्रीवसुलान्ठन	४	२३	श्वयधु	१३२	५३
श्मामाक	१०७	१६५	श्रीवास	१५४	१२९	श्ववृत्ति	१९१	२
श्माल	१२६	३२	श्रीवेष्ट	१५४	१२९	श्वशुर	१२६	३१
श्माव	२७	१६	श्रीसञ्ज	१५३	१२५	श्वशुरो	१२८	३७
श्मेत	२६	१२	श्रीहस्तिनी	८२	६९	श्वशुर्य	२७४	१४६
श्मेत	११२	१५	धृत	२६५	७७	श्वश्रु	१२६	३१
श्मेतस्यावा	२९६	६	धृति	{ २८ १४६ २५५	३ ९४ ७३	श्वश्रुश्वशुरो	१२८	३७
श्मेत	२६८	१०२	ध्रेणि	२१८	५	श्वस	२१४	३३
श्मेत	{ १२४ २३०	२१ २७	ध्रेणी	६६	४	श्वसन	{ १० ७७	६२ ५३
श्मेत	२४९	३२	ध्रेयस्	{ २५ २३६	३ ५६	श्वश्रिध	११०	७
श्मेत	१४६	९४				श्वश्र	१३३	५४

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
श्वेत	{ २४ २१४ २४५	{ १२ ९६ ७९	संवसथ	६३	१९	संहनन	१४०	७०
श्वेतगरुत्	११५	२३	संवाहन	२५२	२२	संहृति	२९	८
श्वेतमरिच	२१६	११०	संविद्	{ २४ २५ २६७	{ १ ५ ९२	सकळ	२३७	६५
श्वेतरक्त	२७	१५	संवीक्षण	२५३	३०	सकृत्	२८३	२४१
श्वेतसुरसा	८३	७१	संवीत	२४३	९०	सकृत्प्रज	११४	२०
ष			संवेग	४१	३४	सक्तुफला	७७	५३
षट्कर्मन्	१५९	४	संवेद	२४७	६	सक्थि	१४१	७३
षट्पद	११६	२९	संवेश	४२	३६	सखि	१७४	१२
षट्भिज्ञ	४	१४	संव्यान	१५१	१०८	सखी	१२२	१२
षष्ठानन	७	४१	संशसक	१९२	९६	सख्य	१७४	१२
षड्ग्रन्थ	७६	४८	संशय	२४	३	सगर्भ्य	१२७	३४
षड्ग्रन्था	८९	१०२	संशयापन्नमानस	२२६	५	सगोत्र	१२७	३४
षड्ग्रन्थिका	१०४	१५४	सश्रव	२५	५	सग्धि	२०६	५५
षड्ज	३३	१	संश्रुत	२४६	१०९	संकट	२४१	८५
षण्ड	{ १२८ २०८	{ ३९ ६२	संश्लेष	२५३	३०	संकर	६२	१८
षण्ड	{ १२८ १७४	{ ३९ ९	संसक्त	२३८	६८	संकर्षण	५	२५
षष्टिक	२००	२४	संसद्	१६१	१५	संकलित	२४३	९३
षष्टिकथ	१९७	७	संस्मरण	{ ५६ २६२	{ ५४ ५४	संकल्प	२४	२
षाण्मातुर	७	४३	संसिद्धि	४२	३७	संकसुक	२३४	४३
स,			संस्कारहीन	१७०	५४	संकाश	२२३	३८
संयत्	१९३	१०६	संस्कृत	२६६	८०	संकीर्ण	{ २१७ २४१ २६३	{ १ ८५ ५६
संयत्त	२३३	४२	संस्तर	२७६	१६१	संकुल	{ ३२ २४१	{ १९ ८५
संयम	२५१	१८	संस्तव	२५२	२३	संकोच	१५३	१२४
संयाम	२५१	१८	संस्ताव	२५४	३४	संक्रन्दन	७	४७
संयुग	१९३	१०५	संस्त्याय	२७४	१५१	संक्रम	२५२	२५
संयोजित	२४२	९२	संस्था	१७८	२६९	संक्षेपण	२५१	२१
संराव	३३	२३	संस्थान	२७१	१२४	संस्थ	१९३	१०४
संलाप	३१	१६	संस्थित	१९५	११७	संस्था	२४	२
संवत्	२९२	१६	संस्पर्शा	१०३	१५४	संख्यात	२३७	६४
संवासर	२१	२०	संस्फोट	१९३	१०५	संख्यावत्	१५९	५
संवन्न	२४७	४	संहत	२३९	७५	संख्येय	२१२	८३
संवर्त	२३	२२	संहतजानुक	१३०	४७	सङ्ग	२५३	२९
संवर्तिका	५३	४२	संहृति	११८	४०	सङ्गत	३१	१८
			संहृतक	१४४	८५			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
सङ्गम	{ २५३	२९	सत्यंकार	२१२	८२	संदान	२१०	७३
	{ ३०३	३४	सत्यवचस्	१३८	४३	संदानित	२४३	९५
सङ्गर	२७४	१६६	सत्याकृति	२१२	८२	संदाव	१९४	१११
सङ्गीर्ण	२४४	१०९	सत्यानृत	१९४	३	संदित	{ २४१	८६
संगूढ	२४३	९३	सत्यापन	११२	८२		{ २४३	९५
संग्रह	२९	६	सम	२७८	१८०	सदेशवाच्	३१	१७
संग्राम	१९३	१०५	सम्रा	२८९	४	सदेशहर	१७४	१६
संग्राह	{ १९१	९०	सन्निन्	१७५	१५	सन्देह	२४	३
	{ २५०	१४	सत्वर	१०	६८	संदोह	११८	३९
संघ	११८	४१	सदन	५९	५	संद्राव	१९४	१११
संघात	{ ४४	२	सवस्	१६१	१५	संधा	२४८	१०२
	{ ११८	३९	सदस्ये	१६१	१६	संधान	२२४	४२
सचिव	२८१	२०६	सदा	२९३	२२	सन्धि	{ १७४	१८
सज्ज	१८५	६५	सदागति	१०	६४		{ २४९	११
सज्जन	{ १५८	३	सदातन	२३९	७२	सन्धिनी	२०९	६९
	{ १७९	३३	सदानेरा	५१	३३	सन्ध्या	१८	३
सज्जना	१८१	४२	सदक	२२३	३७	सन्नकटु	७३	३५
संचय	११८	३९	सदश	२२३	३७	सयद्	१८५	६५
संचादिका	१२३	१७	सदश	२२३	३७	समनय	२७४	१५०
संभवन	६०	६	सदेश	२३८	६७	सन्निधि	२५२	२३
संभवर	९	६०	सधन्	५५	४	सन्निकर्षण	२५२	२३
संज्ञपन	१९६	११३	सधस्	२९०	९	सन्निकृष्ट	२६८	६६
संज्ञा	२६०	३३	सधयच्	२३२	३४	सन्निवेदा	६२	१९
संज्ञु	१३०	४७	सनकुमार	८	५४	सपत्न	१७४	१०
सदा	१४०	९७	सना	२९२	१७	सपदि	{ २८९	२
सण्डीन	११८	३०	सनातन	२३९	७२		{ २९०	५
सत्	{ १५९	५	सनाभि	१२८	३३	सपया	{ १६१	१४
	{ २६६	८३	सनि	१६५	३२		{ १६६	३१
सत्त	१०	६९	सनिष्ठीय	३२	२०	सपिण्ड	१२७	२३
सती	१२०	१	सनीह	२३८	६१	सपीति	२०६	५५
सतीनक	१९५	१६	संतत	१०	६९	ससंधी	१४२	१०८
सतीर्ष्य	१६१	१२	सन्तति	१५८	१	ससन्तु	१६१	१३
सत्तन	२३६	५८	सन्तस	२४५	१०३	ससर्पण	३०	२३
सत्त	{ २३	२९	सन्तस	४३	४	सस्रष्टा	{ ८३	७२
	{ २८७	११३	सन्तान	{ ८	५३		{ १०१	१२३
सत्तभ	५८	१६	सन्तान	{ १५८	१	ससर्पिस्	९	५५
सत्त	{ ३२	२२	सन्तान	{ ९	६०	सस्राह	१६	२२
	{ ३७५	१५३	सन्तानि	२४५	१०३	सस्रि	१८६	८२

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
सम्राज्ञाचारिन्	१६०	११	समसन	२५१	२१	समुदाय	{ ११८	४०
समर्तुका	१२२	१२	समस्त	२३७	६५		{ १९३	१०६
	६०	६	समस्या	२९	७	समुद्र	२९९	१७
सभा	{ १६१	१५	समाः	२१	२०	समुद्रक	१५७	१३९
	२७२	१३७	समांसमीना	२१०	७२	समुद्रिण	२६२	५५
सभाजन	२४८	७	समाकर्षिन्	२६	११	समुद्धत	२३०	२३
सभासद	१६२	१६	समावात	१९३	१०५	समुद्र	४५	१
सभास्तार	१६२	१६	समाज	११८	४२		{ ८७	९२
सभिक	२२५	४४	समाधि	{ २५	५	समुद्रान्ता	{ ९३	११६
	{ १५८	३		{ २६८	९७		{ ९८	१३३
सम्य	{ १६२	१६	समान	{ १०	६७	समुद्दन	२५३	२९
	{ २२३	३७		{ २२३	३७	समुद्र	२४५	१०५
सम	{ २३७	६४		{ २७१	१२६	समुन्नत	२६९	१०३
समग्र	२३७	६५	समानोदय	१२७	३४	समुपजीवम्	२९०	१०
समक्षा	{ ८७	९०	समालम्भ	२५३	२७	समूह	१११	९
	{ १००	१४१	समावृत्त	१६०	१०		११८	३९
समज	११९	४२	समासाय	२४२	९२	समूह	१६२	२०
समज्ञा	३०	११	समासार्था	२९	७	समूह	२२७	११
समज्या	१६१	१५	समाहार	२५०	१६	समृद्धि	२४९	१०
समजस	१७७	२४	समाहित	२४६	१०९	समृष्टि	२०४	४६
समधिक	२३९	७५	समाहृति	२९	६	सम्पत्ति	१८८	८२
समन्ततस्	२९१	१३	समाह्वय	२२५	४६	सम्पद	१८८	८१
समन्तदुग्धा	९०	१०६	समित्	१९३	१०६	सम्पराय	२७४	१५०
समन्तभद्र	३	१३		{ १६१	१५	सम्पिधान	२७१	१२४
समन्वितलय	३४	३	समिति	{ १९३	१०६	सम्पुटक	१५७	१३९
समम्	२८९	४		{ २६४	७०	सम्प्रति	२९४	२३
समय	{ १७	१	समिध	६८	१३	सम्प्रदाय	२४८	७
	{ २७४	१४८	समीक	१९३	१०४	सम्प्रधारण	२७५	१५६
समया	{ २२८	२५१	समीप	२३८	६६	सम्प्रधारणा	१७७	२५
	{ २९०	७	समीर	१०	६५		{ १९३	१०
समर	१९३	१०४	समीरण	{ १०	६५		{ ६६	३५
समर्थ	२६६	८७		{ ८५	७७		{ २४१	८५
समर्थन	१७७	२५	समुच्चय	२५०	१५		{ ५३	३५
समर्थक	२२७	७	समुच्छ्रय	२७४	१५		{ ४१	३४
समर्थाद्	२३८	६७	समुज्झित	२४५	१०			२६
समवर्तिन्	९	६१	समुत्पिञ्ज	१९२	९९			२४
समवाय	११८	४०	समुदक	२	९०			२४
समहिता	१०४	१५७	समुदय		४०			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
समाजनी	६२	१८	सर्वतोभद्रा	७३	३५	सहस	२०	१४
सम्मुखन	२४७	६	सर्वतोमुख	४५	४	सहस	१९३	१०२
सम्पद्	३२	२२	सर्वदा	२९४	२२	सहसा	२६५	२३२
सन्नाज	१०१	३	सर्वधुरावह	२०८	६६	सहसा	२९०	७
सरक	२२५	४३	सर्वधुरीण	२०८	६६	सहस्य	२०	१५
सरवा	११६	२६	सर्वमङ्गला	६	३९	सहज	२१३	८४
सरट	१११	१२	सर्वरस	१५४	१२७	सहजदंष्ट्र	४८	१८
सरणा	१०३	१५३	सर्वलिङ्गिन्	१६८	४५	सहजपत्र	५३	४०
सरणि	५८	१५	सर्ववेदस्	१६०	९	सहजवीर्या	१०५	१५८
सरति	१४४	८६	सर्वसन्नहन	१९१	९४	सहजवेधि	२०३	४०
सरमा	२२१	२२	सर्वानुभूति	९१	१०८	सहजवेधिन्	१००	१४१
सरक	७९	६०	सर्वान्नभोजिन्	२२९	२२	सहजांशु	१६	३१
सरकद्रव	१५४	१२९	सर्वान्नीन	२२९	२२	सहजाक्ष	७	४७
सरला	९१	१०८	सर्वाभिसार	१९१	९४	सहजिन्	१८५	६३
सरस्	५०	१२४	सर्वार्थसिद्ध	४	१५	सहा	८३	७३
सरसी	५०	१२८	सर्वोद्य	१९१	९४	सहा	९३	११३
सारीरुह	५३	४०	सर्वप	१९९	१७	सहाय	१८६	७१
सरस्वत्	४५	१	सल्लि	४५	३	सहायता	२५५	४१
सरस्वती	२७	१	सल्लकी	९६	१२४	सहिष्णु	२३१	३१
सरित्	५२	३४	सव	१६१	१३	सांघात्रिक	४७	१२
सरित्पति	४५	३४	सवन	१६९	४७	सांयुगीन	१८७	७७
सरीसृप	४३	७	सवयस्	१७४	१२	सांवरसर	१७५	१४
सर्ग	२५८	२२	सवितृ	१८	११	सांघायिक	२२६	५
सर्ज	७५	४४	सविध	२३८	६७	साकम्	२८९	४
सर्जक	७५	४४	सवेष्ट	२३८	६७	साकव्य	२४७	२
सर्गस	१५४	१२७	सव्य	२४०	८४	साक्षात्	२८७	२४२
सर्जिकाक्षार	२१६	१०९	सव्येष्ट	१८४	६०	सागर	४५	१
सर्प	४३	६	सस्य	६८	१५	साधि	२८८	६
सर्पशाल	४३	४	सस्यमञ्जरी	२००	२१	साधि	२५५	३९
सर्पिस्	१०६	५२	सस्यशृङ्ग	२००	२१	साति	२६४	६७
सर्प	२१७	६४	सस्यसंवर	७५	४४	साति	२९६	९
सर्पसहा	५५	३	सह	२८९	४	सातिसार	१३५	५९
सर्पश	३	१३	सहकार	७३	३३	सात्त्विक	३७	१६
सर्पशृङ्ग	१९१	१३	सहचरी	८४	७५	सादिन्	१८४	६०
सर्पशृङ्ग	१९१	१३	सहज	१२७	३४	सादिन्	२६९	१०७
सर्पशृङ्ग	१९१	१३	सहधर्मिणी	१२०	५	साधन	२७०	११९
सर्पशृङ्ग	१९१	१३	सहन	२३	३३१	साधारण	२२३	१७
सर्पशृङ्ग	१९१	१३	सहभोजन	२०६	५५	साधारण	२४०	८२

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
सम्राट्पारिन्	१६०	११	समसन	२५१	२१	समुदाय	११८	४०
समर्तुका	१२३	१२	समस्त	२३७	६५	समुद्र	१९३	१०६
सभा	६०	६	समस्या	२९	७	समुद्रक	२९९	१०
सभा	१६१	१५	समाः	२१	२०	समुद्रिक	१५७	१३९
सभाजन	२७२	१३७	समांसमीना	२१०	७३	समुद्रिरण	२६२	५५
सभाजन	२४८	७	समाकर्षिन्	२६	११	समुद्रित	२३०	२३
सभासद	१६२	१६	समावात	१९३	१०५	समुद्र	४५	१
सभास्तार	१६२	१६	समाज	११८	४२	समुद्रान्ता	८७	९२
समिक	२२५	४४	समाधि	२५	५	समुद्रान्ता	९३	११६
सम्य	१५८	३	समान	२६८	९७	समुद्रान्ता	९८	१३३
सम्य	१६२	१६	समान	१०	६७	समुद्रन	२५३	२९
सम	२२३	३७	समान	२२३	३७	समुद्र	२४५	१०५
सम	२३७	६४	समान	२७१	१२६	समुन्नद	२६९	१०३
समप्र	२३७	६५	समानोदय	१२७	३४	समुपजोषम्	२९०	१०
समझा	८७	९०	समाकर्म	२५३	२७	समूह	१११	९
समझा	१००	१४१	समावृत्त	१६०	१०	समूह	११८	३९
समज	११९	४२	समासाद्य	२४२	९२	समूह	१६२	२०
समज्ञा	३०	११	समासार्था	२९	७	समूह	२२७	११
समज्ञा	१६१	१५	समाहार	२५०	१६	समृद्धि	२४९	१०
समज्ञस	१७७	२४	समाहित	२४६	१०९	समृद्धि	२०४	४६
समधिक	२३९	७५	समाहति	२९	६	समृष्टि	१८८	८३
समन्ततस्	२९१	१३	समाह्वय	२२५	४६	सम्पत्ति	१८८	८३
समन्तदुग्धा	९०	१०६	समित्	१९३	१०६	सम्पद्	१८८	८३
समन्तभद्र	३	१३	समिति	१६१	१५	सम्पराय	२७४	१५०
समन्वितकर्म	३४	३	समिति	१९३	१०६	सम्पिधान	२७१	१२४
समम्	२८९	४	समिति	२६४	७०	सम्पुटक	१५७	१३९
समम	१७	१	समिध	६८	१३	सम्प्रति	२९४	२३
समम	२७४	१४८	समीक	१९३	१०४	सम्प्रदाय	२४८	७
समया	२२८	२५१	समीप	२३८	६६	सम्प्रधारण	२७५	१५६
समर	२९०	७	समीर	१०	६५	सम्प्रधारणा	१७७	२५
समर्थ	१९३	१०४	समीर	१०	६५	सम्प्रहार	१९३	१०५
समर्थ	२६६	८७	समीरण	१०	७९	सम्प्रहार	६६	७
समर्थन	१७७	२५	समुच्चय	२५०	१६	सम्कुल	२४१	८५
समर्थक	२२७	७	समुच्छ्रय	२७४	१५१	सम्मेद	५३	३५
समर्थद	२३८	६७	समुच्चित	२४५	१०७	सम्भ्रम	४१	३४
समवर्तिन्	९	६१	समुत्पिम्बज	१९२	९९	सम्भ्रम	२५३	२६
समवाय	११८	४०	समुदक	२४२	९०	सम्भ्रम	२२	२४
समविका	१०४	१५०	समुदय	११८	४०			



शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
सम्मार्जनी	६२	१८	सर्वतोभद्रा	७३	३५	सहस	२०	१४
सम्मुखन	२४७	६	सर्वतोमुख	४५	४	सहस	१९३	१०३
सम्पद्	३२	२२	सर्वदा	२९४	२२	सहसा	२६५	२३२
सम्राज्	१७१	३	सर्वधुरावह	२०८	६६	सहसा	२९०	७
सरक	२२५	४३	सर्वधुरीण	२०८	६६	सहस्य	२०	१५
सरधा	११६	२६	सर्वमङ्गला	६	३९	सहस्र	२१३	८४
सरट	१११	१२	सर्वरस	१५४	१२७	सहस्रवर्ष	४८	१८
सरणा	१०३	१५३	सर्वकिङ्किन्	१६८	४५	सहस्रपत्र	५३	४०
सरणि	५८	१५	सर्ववेदस्	१६०	९	सहस्रवीर्या	१०५	१५८
सरति	१४४	८६	सर्वसन्नहन	१९१	९४	सहस्रवेधि	२०३	४०
सरमा	२२१	२३	सर्वानुभूति	९१	१०८	सहस्रवेधिन्	१००	१४१
सरक	७९	६०	सर्वान्नभोजिन्	२२९	२२	सहस्रांशु	१६	३१
सरलद्रव	१५४	१२९	सर्वान्नीन	२२९	२२	सहस्राक्ष	७	४७
सरला	९१	१०८	सर्वामिसार	१९१	९४	सहस्रिन्	१८५	६२
सरस्	५०	१२८	सर्वार्थसिद्ध	४	१५	सहा	८३	७३
सरसी	५०	१२८	सर्वोघ	१९१	९४	सहाय	९३	११३
सरसीकह	५३	४०	सर्वप	१९९	१७	सहायता	१८६	७१
सरस्वत्	४५	१	सलिल	४५	३	सहायता	२५५	४१
सरस्वती	२६३	५०	सल्लकी	९६	१२४	सहिष्णु	२३१	३१
सरस्वती	२७	१	सव	१६१	१३	सांघात्रिक	४७	१२
सरित्	५२	३४	सवन	१६९	४७	सांयुगीन	१८७	७७
सरिपति	४५	१	सवयस्	१७४	१२	सांवरसर	१७५	१४
सरीसृप	४३	७	सवितृ	१८	११	सांघायिक	२१६	५
सर्ग	२५८	२२	सविध	२३८	६१	साकम्	२८९	४
सर्ज	७५	४४	सवेष्टा	२३८	६३	साकस्य	२४७	२
सर्जक	७५	४४	सम्य	२४०	८४	साक्षात्	२८७	२४२
सर्जस	१५४	१२७	सम्येष्ट	१८४	६०	सागर	४५	१
सर्जिकाधार	२१३	१०९	सस्य	६८	१५	साधि	२८८	६
सर्प	४३	६	सस्यमञ्जरी	२००	२१	साधि	२८८	६
सर्पशाय	४३	४	सस्यशूक	२००	२१	साति	२५५	३९
सर्पिस्	२०३	५२	सस्यसंवर	७५	४४	साति	२६४	६७
सर्प	२३७	६४	सह	२८९	४	साति	२९६	९
सर्पसहा	५५	३	सहकार	०२	३३	सातिसार	१३५	५९
सर्वज्ञ	३	१३	सहचरी	८४	७५	सात्त्विक	३७	१६
सर्वज्ञस्	२९१	१३	सहज	१२७	३४	सादिन्	१८४	६०
सर्वतोभद्र	६१	१०	सहपत्नी	१२०	५	साधन	२७०	११९
सर्वतोभद्र	८०	६२	सहन	२१	३३१	साधारण	२२३	१७
	१२		सहमोक्षण	२०६	५५	साधारण	२४०	८२

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
साधित	२३३	४०	सारमेय	२२१	२१	सिताभ	१५५	१३०
साधिष्ठ	२४६	११२	सारव	५२	३६	सिताम्भोज	५३	४१
साधीयस्	२८६	२३५	सारस	५३	४०	सिद्ध	३	११
साधु	१५८	३	सारसन	११४	२२	सिद्धान्त	२४४	१००
साधुवाहिन	१८१	४४	सारसन	१४९	१०९	सिद्धार्थ	३४	४
साध्य	३	१०	सारिका	१८५	६३	सिद्धि	१९९	१८
साध्वस	२८	२१	सार्थ	२९६	८	सिद्धि	९२	११२
साध्वी	१२०	६	सार्थवाह	२१८	४१	सिद्धि	१३२	५३
साधु	६४	५	सार्थवाह	२११	४८	सिद्धम	१३६	६१
साधुपन	१७०	५२	सार्ध	२४५	१०५	सिद्धमल	२९६	१०
सानव	३१	१८	सार्धम्	२८९	४	सिद्धय	१५	२२
सान्द्रष्टिक	१७७	२१	सार्वभौम	१२	४	सिद्धका	२९६	८
सान्द्र	२३७	६६	सार्वभौम	१७२	२	सिनीवाली	१९	९
सान्द्ररिगध	१३१	३०	साक	५९	३	सिन्दुक	८२	६८
सान्नाय	१६४	२७	साकपर्णी	७५	४४	सिन्दुवार	८२	६८
सासपदीन	१७४	१२	साक्ष	९३	११५	सिन्दूर	२१६	१०५
सामन्	२८	३	साक्ष	२०८	६३	सिन्दूर	३०१	३१
सामाजिक	१७७	२१	साहस	१८५	६२	सिन्धु	४५	२
सामाजिक	१६२	१६	साहस	२५५	४३	सिन्धु	४५	१
सामान्य	२३	३१	साहस	१०९	१	सिन्धुज	२६८	१००
सामि	२८८	२४८	साहस	२३६	५९	सिन्धुज	२०४	४३
सामिधनी	१६३	२२	साहस	१९३	१०७	सिन्धुसङ्गम	५२	३५
सामुद्र	२०३	४१	साहस	८८	९३	सिह	१५४	१२८
सापरायिक	१९३	१०४	साहस	२२८	१२	सीता	१९८	१४
साम्प्रतम्	२९१	११	साहस	२१४	९८	सीत्य	१९७	८
सायम्	१८	३	साहस	१७९	३१	सीधु	२२४	४२
सायक	२५६	२	साहस	९०	१०३	सीमन्	६३	२०
सार	६७	१२	साहस	९०	१०३	सीमन्त	२९९	१९
सार	२०६	१०१	साहस	९३	११४	सीमन्तिनी	११९	२
सारङ्ग	११३	१७	साहस	२६५	१३	सीमा	६३	२०
सारङ्ग	२५८	२३	साहस	४६	९	सीर	१९८	१४
सारङ्ग	२८४	२२५	साहस	५७	११	सीरपाणि	४	३५
सारङ्ग	१८४	५९	साहस	२१६	१०७	सीवन	२४७	५
सारङ्ग	१८४	५९	साहस	२३६	१३	सीसक	२१६	१०५
सारङ्ग	१८४	५९	साहस	२४३	९५	सीहृष्ट	९०	१०५
सारङ्ग	१८४	५९	साहस	२४४	९८	सु	२८९	२
सारङ्ग	१८४	५९	साहस	२४५	६०	सु	२९०	५
सारङ्ग	१८४	५९	साहस	१०३	१५२	सुकन्दक	१०२	१४७
सारङ्ग	१८४	५९	साहस	२०४	४३			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
सुकरा	२०९	७०	सुप्रतीक	१२	४	सुवहा	४२	७०
सुकक	२२७	८	सुप्रयोगविशिष्ट	१८६	६८	सुवासिनी	९३	११५
सुकुमार	२३९	७६	सुप्रलाप	३१	१७	सुप्रता	९५	११९
सुकृत	२२	२४	सुभगासुत	११५	२४	सुप्रम	९६	१२३
सुकृतिन्	२२६	३	सुभिक्षा	९६	१२४	सुप्रमा	१००	१४०
सुख	२२	२५	सुम	६९	१६	सुप्रवी	१११	९
सुखवर्षक	२१६	२३	सुमन	१९९	१८	सुप्रि	२०९	७१
सुखसम्प्रदा	२१६	५०९	सुमनस्	३	७	सुप्रि	२३६	५२
सुगत	२०९	७१	सुमनसः	६९	१७	सुप्रि	१४	१७
सुगता	३	१३	सुमना	८३	७२	सुप्रि	१०४	१५५
सुगम्भा	९३	११४	सुमनोरजस्	६९	१७	सुप्रि	२०३	३०
सुगम्भि	२६	११	सुमेरु	८	५३	सुप्रि	४२	२
सुगरिजा	११०	१२१	सुर	३	७	सुप्रि	३४	४
सुवेळक	१५१	१११	सुरङ्गा	२९६	८	सुप्रि	४२	३
सुत	११६	२७	सुरज्येष्ठ	४	१६	सुप्रि	४२	२
सुतभेजो	२१३	६०	सुरशीर्विका	८	५२	सुप्रि	९०	१२९
सुतात्मजा	८०	८८	सुरद्विप्	३	१२	सुप्रि	१५	१९
सुतात्मजा	११६	२९	सुरशीर्विका	८	५२	सुप्रि	८१	६३
सुर्या	१६९	४७	सुरनिम्नगा	५१	३१	सुप्रि	९१	१०८
सुश्रामन्	७	४५	सुरपति	७	४६	सुप्रि	२८९	२
सुश्रान्	१६०	१०	सुरभि	२१	१८	सुप्रि	२२३	१९
सुशान	५	२५	सुरभि	२६	११	सुप्रि	२०४	४५
सुराभ	१०८	२८	सुरभी (मि)	२७२	१३६	सुप्रि	१०४	१२
सुदूर	२३८	६९	सुरभी (मि)	९६	१२३	सुप्रि	२२६	६
सुधर्मा	८	५१	सुरभि	८	५१	सुप्रि	१०९	२
सुधा	८	५१	सुरलोक	३	६	सुप्रि	२३०	६१
सुधांशु	१६८	१०	सुरवामन्	३	१	सुप्रि	२०४	१४४
सुधी	१५९	१४	सुरसा	९३	११४	सुप्रि	२२५	४०
सुनासीर	८	४४	सुग	२२४	३९	सुप्रि	२९६	७
सुनिष्ठा	१०२	१४९	सुग	१५	२४	सुप्रि	१८४	१९
सुनर	२१६	५२	सुराध्याप	२२४	२३	सुप्रि	२१५	९९
सुनरी	११०	४	सुराध्याप	२२४	२३	सुप्रि	२१५	९९
सुपविद्	५८	१६	सुराध्याप	२२४	२३	सुप्रि	२१५	९९
सुपर्व	५	३१	सुराध्याप	२२४	२३	सुप्रि	२१५	९९
सुपर्व	३	७	सुराध्याप	२२४	२३	सुप्रि	२१५	९९
सुपर्व	७५	४३	सुराध्याप	२२४	२३	सुप्रि	२१५	९९

शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके	शब्दः	पृष्ठे	ब्लोके
सूच	२०१	२८	सैहिकेय	१६	२६	सौरभेयी	२०८	६६
सूना	२७०	११२	सैकत	४६	९	सौराष्ट्रिक	४४	१०
सूनु	१२५	२७	सैतुवाहिनी	५१	३६	सौरि	१६	२६
सूनुत	३२	१९	सैनिक	१८५	६१	सौवर्चक	२०४	४३
सूपकार	२०१	२७	सैन्धव	१८१	४४	सौविद	२१६	१०९
सूर	१६	२८	सैन्य	२०४	४२	सौविद	१७४	८
सूरण	१०४	१५७	सैन्य	१८५	६१	सौविदक	१७४	८
सूरत	२२८	१५	सैन्यपृष्ठ	१८७	७८	सौवीर	७४	३७
सूरसूत	१७	३२	सैरन्धी	१८८	७९	सौवीर	२०३	३९
सुरि	१५९	६	सैरिक	११३	१८	सौहित्य	२१५	१००
सूर्मी	२२३	३५	सैरिम	२०८	६४	सौहित्य	२०७	५६
सूर्य	१६	२८	सैरेयक	११०	४	स्कन्द	७	४२
सूर्यतनया	५१	३२	सोढ	८४	७५	स्कन्ध	६७	१०
सूर्यप्रिया	२७५	१५७	सोदय	२४४	९७	स्कन्ध	१४३	७८
सूर्यम्बुसङ्गम	१९	८	सोन्माद	१२६	३४	स्कन्धशाला	२६८	१००
सुक्लिणी	१४५	९१	सेपल्लव	२२९	२३	स्कन्द	६७	११
सुग	१९१	९१	सोपान	१९	१०	स्कन्द	२४५	१०४
सुजि	१८१	४१	सोमाञ्जन	१२	१८	स्खलन	४२	३६
सुजिका	१३९	६७	सोम	७२	३१	स्खलित	१९४	१०८
सुति	५८	१५	सोमपा	१४	१४	स्तन	१४२	७७
सुपाटी	३०३	३८	सोमपीथिन	१६०	९	स्तनन्धयी	१२९	४१
सुमर	१११	११	सोमराजी	१६०	९	स्तनपा	१२९	४१
सुष्ट	२६०	३८	सोमवल्कि	८८	९५	स्तनयिस्तु	१३	६
सुकपात्र	४७	१३	सोमवल्ली	७०	५०	स्तनित	१३	८
सेचन	४७	१३	सोमवल्कि	२५६	९	स्तवक	६९	१६
सेतु	५७	१४	सोमवल्ली	१००	१३७	स्तवक	१०९	२
सेना	१८७	७८	सोमोद्भवा	८८	९५	स्तवक	६७	९
सेनाङ्ग	१७९	३३	सौगन्धिक	८६	८३	स्तम्भ	१००	२१
सेनानी	१८५	६२	सौगन्धिक	५१	३२	स्तम्भकरि	२००	२१
सेनामुख	१८८	८१	सौगन्धिक	५२	३६	स्तम्भघन	२५४	३५
सेनारक्ष	१८५	६१	सौगन्धिक	१०७	१६६	स्तम्भघ्न	२५४	३५
सेवक	१०४	२	सौचिक	२१५	१०२	स्तम्भेरम	१०९	३५
सेवन	२७७	५	सौचिक	२१८	६	स्तम्भ	२७२	१३४
सेवा	१९६	२	सौदामिनी	३३	९	स्तव	३०	११
सेव्य	१०७	१६४	सौध	१२५	२४	स्तिमित	२४५	१०५
			सौम्य	१२५	२४	स्तुत	२४६	११०
			सौरभेय	२०७	६०	स्तुति	३०	११
						स्तुतिपाठक	१९२	९७

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
स्तृप	२९९	१९	स्थास्तु	२३९	७३	स्पृका	९८	१३३
स्तेन	२११	२४	स्थिति	{ १७८ २५१	२६ २१	स्पृशो	८२	९३
स्तेम	२५३	२९	स्थिरतर	२३९	७३	स्पृष्टि	२४८	९
स्तेय	२२१	२५	स्थिरा	{ ५५ ९३	३ ११५	स्पृष्टा	४०	२७
स्तैन्य	२२१	२५	स्थिरायु	७६	४६	स्फट	२५०	१४
स्तोक	२३७	६१	स्थूणा	{ २२३ २६२	३५ ५०	स्फटा	४४	९
स्तोत्र	३०	११	स्थूल	{ २३७ २८१	६१ २०३	स्फाति	२४८	९
स्तोम {	{ ११८ २७३	३९ १४१	स्थूललक्ष	२२६	१	स्फार	२३७	६३
स्त्री	११९	२	स्थूलशब्दक	१५१	१११	स्फिष्	१४१	७५
स्त्रीधर्मिणी	१२४	२०	स्थूलोन्मय	२७४	७३	स्फुट	{ ६६ २४०	७ ८१
स्त्रीपुंस	११८	३८	स्थेयस्	२३९	७३	स्फुटन	२४७	५
स्पण्डिल	१६२	१८	स्थौणेय	९८	१३२	स्फुरण	२४९	१०
स्पण्डिलशामिन्	१६८	४४	स्थौरिन्	१८१	४६	स्फुरणा	२४२	१०
स्पपति {	{ १६० २६३	९ ६०	स्थौख्य	२८०	१९४	स्फुलिङ्ग	९	६०
स्थल	५५	५	स्त्रव	२४८	९	स्फूर्जक	७४	३८
स्थली	५५	५	स्नातक	१६८	४३	स्फूर्जथु	१३	१०
स्थिर	१२९	४२	स्नान	१५२	१२२	स्फोट	२४६	११२
स्थविष्ठ	२४६	१११	स्नायु	१३८	६६	स्म	{ २९० २५२	५ १७
स्थाणु {	{ ६ ६७ २६२	३६ ८ ४८	स्त्रिगु	{ १७४ २०५ २२८	१२२ ४६ १४	स्मर	५	२६
स्थाण्डिक	१६८	४५	स्तु	६४	५	स्मरहर	६	३५
स्थान {	{ १७६ २७०	१९ ११७	स्तुत	२४३	९२	स्मित	४१	३८
स्थानीय	५९	१	स्तुपा	१२१	९	स्मृति	{ २९ ४०	६ २९
स्थाने	२९१	११	स्तुह	९०	१०५	स्पद	१०	६७
स्थापय	१७४	८	स्तुही	९०	१०५	स्पन्दन	{ ७१ १८३	२६ ११
स्थापयि	८६	८४	स्नेह	४०	२७	स्पन्दनारोह	१८४	६०
स्थामन्	१९३	१०२	स्पर्श	{ २५ २५०	७ १४	स्पन्दनी	१३३	६७
स्थापुक	१७३	७	स्पर्शन	{ १० १६४	४४ २९	स्पष्ट	२४२	३२
स्थाव	३०९	३२	स्पर्श	{ १७५ २८३	१३ २१३	स्पृत	{ २०३ २४५	२६ १०१
स्थावी	२०९	३१	स्पष्ट	२४०	८१	स्पृति	२४७	५
स्थावर	२३९	७३				स्पृष्टा	७८	५७
स्थाविर	१२९	४०				स्पृष्टि	७१	३८
स्थावुक	१५२	१२२				स्त्रज	१५६	१३५

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
स्रव	२४९	९	स्वर्ग	३	६	हंस	{ १६ ११५ २८४	{ ३१ २३ ३२५
स्रवद्गर्भा	२०९	६९	स्वर्ण	२१४	९४	हंसक	१४९	११०
स्रवन्ती	५१	३०	स्वर्णकार	२१८	८	हजिका	८७	८९
स्रवा	८६	८३	स्वर्णक्षीरी	१००	१३८	हजे	३७	१५
स्रष्ट	४	१*	स्वर्णदी	८	५२	हट्ट	२९९	१८
स्रस्त	२४५	१०४	स्वर्मानु	१६	२६	हट्टविकासिनी	९७	१३०
स्राक्	२८९	२	स्वर्ध्वया	८	५५	हठ	१९४	१०८
स्रत	२४२	९२	स्वर्ध्व	८	५४	हण्डे	३०	१५
स्रव	१६३	२५	स्वस्त	१२६	२९	हत	२३३	४१
स्रवावृक्ष	७४	३७	स्वस्ति	२८७	२४०	हनु	{ ९७ १४५	{ १३० ९०
स्रोतस्	{ ४७ २८५	{ ११ २३२	स्वस्तिक	६१	१०	हन्त	२८७	२४३
स्रोतस्विनी	५१	३०	स्वस्त्रीय	१२६	३२	हन्न	२४३	९६
स्रोतोञ्जन	२१५	१००	स्वाति	३०३	३८	हय	१८१	४४
स्व	{ १२७ २८२	{ ३४ २१०	स्वादु	२६७	९४	हयपुच्छी	१००	१३८
स्वच्छन्द	२२८	१५	स्वादुकण्टक	{ ७४ ८९	{ ३७ ९८	हयमारक	८४	७६
स्वजन	१३७	३४	स्वादुरसा	१०१	१४४	हर	६	३५
स्वतन्त्र	२२८	१५	स्वाद्री	९१	१०७	हरण	१ ८	२८
स्वधा	२९०	८	स्वाध्याय	१६९	४७	हरि	{ १०९ २७७	{ १ १७४
स्वधिति	१९१	९२	स्वान	३३	२३	हरिचन्द्रन	{ ८ १५५	{ ५३ १३१
स्वन	३३	२२	स्वान्त	२४	३१	हरिण	{ २६ ११० २६२	{ १३ ६ ५०
स्वनित	२४३	९४	स्वाप	४२	३६	हरिणी	२६२	५१
स्वप्न	४२	३६	स्वापतेय	२१३	९०	हरित	{ १३ २६ २९९	{ १ १४ १९
स्वप्नज्	२३१	३३	स्वामिन्	{ १७५ २२७	{ १७ १०	हरितक	२०२	३४
स्वभाव	४२	३८	स्वाराज् (टु)	७	४६	हरिताल	२०२	३२
स्वभू	४	१८	स्वाहा	{ १६३ २९०	{ २१ ८	हरितालक	२१५	१०३
स्वयंवरा	१२१	७	स्वित्	२८७	२४१	हरिद्वय	०१६	२९
स्वयम्	२९२	१६	स्वेद	४१	३३	हरिद्रा	२०३	४१
स्वयम्भू	४	१६	स्वेदज	२३५	५१	हरिद्राभ	२२६	१४
स्वर्	{ ३ २८८	{ ४ २५३	स्वेदनी	२०२	३०			
स्वर	{ २८ ३३	{ ४ १	स्वैर	२०९	१९१			
स्वरु	{ ८ २७६	{ ५० १६७	स्वैरिणी	१२१	११			
स्वरूप	{ ४२ २७२	{ ३८ १३१	स्वैरिता	२४७	२			
			स्वैरिन्	२२८	१५			
			ह	२९८	५			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
हरिदु	८९	१०१	हस्तिनस	६२	१०	हिमावती	१००	१३८
हरिन्मणि	२१३	९२	हस्तिपक	१८४	५९	हिरण्य {	२१३	९०
हरिप्रिय	७५	४३	हस्यारोह	१८४	५९		२१३	९१
हरिप्रिया	५	२८	हा	२८९	२५५		२१४	९४
हरिमन्थक	१९९	१८	हाटक	२१४	९४	हिरण्यगर्भ	४	१६
हरिवालुक	९७	१२८	हायन {	२१	२०	हिरण्यवाह	५१	३४
हरिहय	७	४६	२६९	१०९	हिरण्यरेतस	९	५८	
हरीतकी	७९	५९	हार	१४८	१०५	हिरक {	२८९	३
हरेणु {	९५	१२०	हारीत	११७	३४		२९०	७
	१९९	१६	हार्द	४०	२७	हिकमोचिका	१०५	१५७
हस्यं	६०	०	हाला	२२४	३९	ही	२९०	९
हस्यंक्ष	१०९	१	हालिक	२०८	६४	हीन {	२४५	१०७
हयं	२२	२४	हाव	४१	३२		२११	१२७
हयमाण	२२७	७	हास	३८	१९	हुवभुक्प्रिया	११३	२१
हल	१९८	१३	हास्तिक	१७९	३६	हुतभुज्	९	५८
हला	३७	१५	हास्य {	३७	१७	हुम् {	२८८	१५१
हलायुध	५	२४		३८	१९		२९२	१८
हलाहल	४४	१०	हाहा	९	५५	हुति {	२९	८
हलिन्	५	२५	हि {	२८९	२५६		२४८	८
हलिप्रिया	२२४	३९		२९०	५	हुह	९	५५
हल्य	१९७	८	हिसा	२८४	२२१	हुणीया	२५४	३२
हल्य	२५५	४१	हिसाकर्मन्	२५१	१९	हुद {	२४	३१
हलुक	५२	३६	हिस्र	२३१	२८		१३७	३४
हव {	२४८	८	हिका	२९६	८	हुय {	२४	३१
	२८२	२०६	हिकु	२०३	४०		१३७	३३
हविस् {	१६४	२७	हिकुनिर्यास	८०	६२	हुदयप्रम	३१	१८
	२०६	५२	हिकुली	९३	११४	हुदमालु	२२६	३
हव्य	१६३	२४	हिकुक	२९९	२०	हुय	२३६	५३
हव्यपाक	१६३	२२	हिज्जक	८०	६१	हुयीक	३६	८
हव्यवाहन	९	५८	हिस्ताक	१०८	१६९	हुयीकेन	४	१८
हव	३८	१८	हिम {	१४	१८	हुष्ट	२४५	११३
हवनो	२०१	३०		१५	१९	हुष्टमानस	२२७	७
हवल्ली	२०१	२९	हिमवत् {	२९९	२२	हु	२३०	७
हल {	१४४	८६		३३	३	हुति {	९	३७
	१४७	९८	हिमवालुका	१५५	१३०		२१५	७७
	१६३	५८	हिमसंहति	१४	१८	हुड	८३	९८
हव्यकल्प	२४७	५	हिमांशु	१४	१३	हुमष्ट	६३	३
हस्तिम्	१७९	३४	हिमानी	१४	१८			

शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके	शब्दः	पृष्ठे	श्लोके
हेमदुग्ध	७०	२२	हैमवती	४	३८	ह्रस्वगवेधुका	९४	११७
हेमन्	२१४	९४	हैमवती	७७	५९	ह्रस्वाङ्ग	१०१	१४२
	३००	२३		९०	१०३			
हेमन्त	२१	१८	हैमवती	१००	१३८	हादिनी	६	५०
हेमपुष्पक	८०	४३	हैमवती	२०४	५२		१३	९
हेमपुष्पिका	८३	७१	होतु	१६२	१७		५१	३०
हेमाद्रि	८	५२	होम	१६२	१४		१६९	११२
हेमम्ब	७	४१	होरा	२९६	१०	ही	३९	२३
हेला	४१	३१	ह्यस्	२९३	२२	हीण	२४२	९१
हेषा	१८२	४७	ह्रद	५०	२५	हीत	२४२	९१
है	२९०	७	ह्रसिष्ठ	२४६	११२	हीबेर	९६	१२२
			ह्रस्व	१३०	४६	हेषा	१८२	४७
				२३८	७०	ह्लादिनी	९६	१२४

इति शब्दानुक्रमणिका ।

